



VIDYÁSĀGAR—NYĀYRATNA—SHREEMAT

SHĀNTIVIJAYJĪ—MAHĀRĀJ

JAIN SHWETĀMBAR—SĀDHU

मानवधर्मसंहिता.

(दुसरा नाम-)

शांतसुधानिधिः-

(जिसको)

जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायर-
त्न-महाराज-शांतिविजयजीने-बनाया.

[शार्दूलविकीर्णितं]

धन्या भारतवर्षसंभविजना-येद्यापिकालेकलौ,
निस्तीर्थेश्वरकेवले निरवधौ नश्यन्मनःपर्यये,
उद्यत्सूत्रविशेषसंपदिभवदौर्गत्यदुःखापदि,
श्रीजैनेन्द्रवचोनुरागवशतःकुर्वति धर्मोद्यमं, १,

(प्रथमआवृत्तिः १०००)

प्रकटकर्ता

गुजरात-मारवारु-मालवा-और रा-
जपुतानाका-जैनसमाज,

मुद्रितकर्ता

युनियनप्रिंटिंगप्रेसकंपनीलिमीटेड-अमदावाद.

(मूल्य ३ रूपये.)

सन-१८९८.

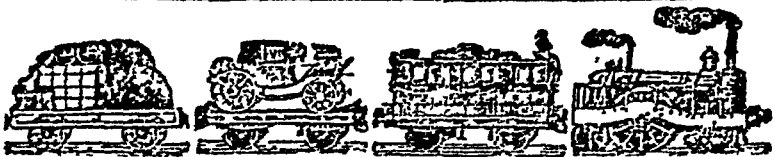
संवत् १९५५-

(दोहा,)

क्या देखो तनकी छबी-चित्रलिखि बहुभांति,
निरखो मुजमनकी छबी-मानवधर्म विख्यात, १,
चतराइकी बांतमें-बातबातमें बात,
ज्युं केलेके पातमें-पातपातमें पात, २

(सुवाल)-कौन किसकों नही चाहता ? (जवाब)
निचेलिखीइवारत पढो.

- | | |
|-----------------------------|-----------------------------|
| १ मित्र-वियोगकोंनहीचहाता. | १७ जैन-असंगत वचनकों. |
| २ सिंह-नौकरीकों. | १८ दंपती-फूटकों. |
| ३ चौर-दीपककों. | १९ अभव्य-मोक्षकों. |
| ४ तामसी-छलकपटकों. | २० उमदा घोडा-चाबकको. |
| ५ दुर्विदग्ध-सदुपदेशकों. | २१ पवन-एकत्रस्थितिकों. |
| ६ गुरु-पठित शिष्यको. | २२ पापी-धर्मको. |
| ७ कामी-धैर्यताको. | २३ रासभ-मिश्रीकों. |
| ८ पतिव्रता स्त्री-उपपतिकों. | २४ विजली-अधकारकों. |
| ९ बहादूर-शिकस्तकों. | २५ काग-दाखकों. |
| १० विद्वान्-ताबेदारीकों. | २६ सत्यवादी-प्रतिज्ञाभंगको. |
| ११ रोगी-पथ्यकों. | २७ अन्नाविक्रेता-सुकालकों. |
| १२ अनाडी-चतुरताकों. | २८ कृतघ्न-प्रत्युपकारको. |
| १३ वेश्या-अपत्यको. | २९ नकटा-भारसीकों. |
| १४ निर्मोही-स्त्रीसंगकों. | ३० प्रीति-भिन्नताको. |
| १५ महात्मा-निजस्तुतिकों. | ३१ शत्रु-मित्र के मित्रको. |
| १६ निर्वल-कुस्तिकों. | ३२ पक्षपाती-युक्तिकों. |



[धन्यवाद.]

(जिनजिनमहाशयोंने इसग्रंथके संग्रहकरते वस्तु सहायता दिई उनकों धन्यवाद—और ग्राहकहोकर ब्रह्म जेजा उनके नाम प्रकाशित करता हू.)

(किताब.)— (ग्राहकोंके नाम.)

- १२५ गुजरातदेशनिवासी एक श्रावक,
- १०० मध्यप्रदेश राजपुतानानिवासी एक श्रावक,
- ५१ शहरअमदावादनिवासी एक श्रावक,
- ५२ झहोरी मगनमलजी जोरावरमलजी मुणोत—(मालिक हीरालालजी.)—शहर इंदोर देश मालवा,
- ५१ शेट मगनीराम भभुतसिंह (मालिक चांदमलजी) शहर रतलाम देश मालवा,
- ५१ श्रीयुत खेमचंदजी दीपचंदजी सुरत नानपुरा,
- ५१ श्रीयुत लहेरचंदजी डाह्याचंदजी वकील शहर पाटण देश गुजरात,
- ५० मुहता जुगराजजी लक्ष्मणराजजी वगेरा, शहर जोधपुर देश मारवाड,
- १५ शा. कपुरचंदजी उमाजी, मुकाम देलदर, जीला शीरोही देश मारवाड,

- १३ शेट कुंदराजी कपुरचंदजी. घीया. (मालिक लक्ष्मीचंदजी,) परतपागढ, देश मालवा राजपुताना.
- ११ शेट नथमलजी गंभीरमलजी छाजेड, शहर इंदोर (मालवा)
- ११ शेट वालचंदजी कनीरामजी, शहर वंबइ,
- १० शा. केशरीमलजी धन्नाजी, मुकाम जावाल जीला शीरोही, देश मारवाड,
- ९ शहर जेशलमेरके श्रावकोंकी तर्फसें,
- ७ मुहता-चंपालालजी हरखचंदजी झहोरी. शहर इंदोर देश मालवा,
- ६ शेट मुन्नालालजी चंपालालजी मारवी, शहर इंदोर देश मालवा,
- ४ शा. छीतरजी रूपजी, शहर इंदोर देश मालवा,
- ४ श्रीयुत जमनालालजी कोठारी, मुकाम जावद, जीला निमचकी छावणी, मालवा राजपुताना.
- ४ गांधी वरधाजी छोगालालजी, मुकाम रतलामदेश मालवा,
- ४ मारवी उदयचंदजी मूलचंदजी मुकाम रतलाम देश मालवा,
- ४ श्रीयुत भाउसाहव सिरदारमलजी, मेनेजर मकसीकार-खाना, देश मालवा,
- ३ शा. लुंबचंदजी, मुकाम रोहिडा राजपुताना आवुरोड,

(शहर इंदोर.)

- ४ श्रीयुत गुलाबचंदजी खजानची,
- ३ श्रीयुत वैद्य गणपतजी भगवान्जी,
- २ श्रीयुत सुरजमलजी सकलेचा,

- १ श्रीयुत-मूलचंदजी दलीचंदजीवोथरा, (मालिकहजारीमलजी.)
१ श्रीयुत जोरावरमलजी बागमलजी साणसुखा,
१ श्रीयुत हीराचंदजी कोठारी,
१ श्रीयुत सिरदारमलजी पारख,
१ श्रीयुत लखमीचंदजी मारु,

(शहर रतलाम.)

- १ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी भागीरथजी पोरवाड.
२ श्रीयुत खुबाजी फकीरचंदजी पोरवाड,
२ वकील भगजी केशरीमलजी मारवी,
१ पींपाडा वीरचंदजी कारुजी,
२ काठेड हीराजी,
२ शा. लधाभाइ जेठाभाइ, कच्छी,
१ घुघरीया हीरालालजी नानालालजी,
१ श्रीयुत छगनभाइ गुजराती.
१ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी पोपटचंदजी, खंभातवाला,
१ शेठ मोकमभाइ केशरीमलजी, गुजराती,
१ शेठ पेमचंदजी जयचंदजी, गुजराती,
१ लुणीया सरुपचंदजी,
१ मोदी धंनजी,
१ वोथरा गजाजी,
१ पीचोलीया सरुपचंदजी,
१ खीमेसरा पंन्नाजी हरखाजी,

- १ मारवी मयाचंदजी बुलचंदजी,
- १ विनायका हीराजी,
- १ चौधरी नेमाजी,
- १ नाहार नंदाजी,
- १ कांसवा जगवान्जी गवुजी,
- १ नाहर रताजी केशरीमलजी,
- १ मेता रतिचंदजी,
- १ पारख ताराजी भागीरथजी,
- १ तलेरा देपालजी चुनीलालजी,
- १ मारवी रायचंदजी रिखवाजी,
- १ पोरवाड सुरजमलजी,
- १ पावेचा नाथाजी चपालालजी,
- १ तिलोकचंदजी मोतीलालजी, पंचेवावाला,
- १ कटारिया लखाजी निहालजी,
- १ सुराणां रूपचंदजी जडावचंदजी,
- १ घुघरीया हरखचंदजी केशरीमलजी,
- १ वगाणी जवरचंदजी चुनीलालजी,
- १ दलाल खुवाजी वाघमार.
- १ पोरवाड खुवाजी पुनाजी,
- १ कटारिया मंछारामजी केशरीमलजी,
- १ पंड्याजी भोलीरामजी कालुरामजी,

(कसबा वरुनगर—माखवा.)

- ३ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी मोहनलालजी वैद्य, (कुशलगढवाले)

- २ श्रेष्ठ कालुजी तिलोकचंदजी, (मालिक रिखवदासजी,)
 २ श्रीयुत यतिजी ऊत्तमविजयजी,
 १ श्रेष्ठ मंगलजी नथमलजी पारख,
 १ श्रेष्ठ माणाजी कस्तूरचंदजी,

(शहर मंदसौर—मालवा.)

- २६ श्रीयुत सौभाग्यचंदजी मुणोत सेक्रीटरी अफीम गोदाम
 सरकारी,
 (तथा) श्रीयुत छगनमलजी बांठिया वगेरा,—

(शीरोही—देश मालवा.)

- | | |
|---------------------------|------------------------------------|
| १ रा.रा. मिलापचंदजीदिवान, | १ शा. नानचंदजी खुशाल-
चंदजी, |
| १ शृंगीजी धनराजजी, | ३ शा. हंसराजजी बनाजी, |
| १ शृंगीजी अखेचंदजी, | १ शा. हिंमतमलजी जयचंदजी, |
| १ शृंगीजी कस्तूरचंदजी, | १ कोठारीनवलमलजी पंन्नाजी, |
| १ शृंगीजी रूपचंदजी, | १ कांगठाणी भूरमलजी ता-
राचंदजी, |
| १ शा. उमेदमलजी, | १ चौधरी हुकमीचंदजी म-
नरूपजी, |
| १ शा. हुकमीचंदजी, | १ शा. पंनेचंदजी देवीचंदजी, |
| १ शा. आंवाजी प्रेमाजी, | १ शा. नगीनदासजी सुरतवाले |
| १ शा. मूलचंदजी भुराजी, | १ संघवी नथमलजी चेनमलजी, |
| १ शा. गोवाजी हुकमाजी, | |
| १ शा. रूपचंदजी हिंदुमलजी, | |
| १ शा. जालमचंदजी जेताजी, | |

- १ शृंगीजी जवानमलजी,
 १ शृंगीजी मिलापचंदजी,
 १ शृंगीजी हीराचंदजी,
 १ शृंगीजी रिखवदासजी,
 १ शा. खूबचंदजी.
 १ शा. शिरेमलजी,
 १ शा. चिमनमलजीनानचंदजी
 १ शा. हिंदुमलजी भानाजी,
 १ शा. रूपचंदजी प्रेमाजी,
 १ शा. गुलाबचंदजी शवाजी,
 १ शा. लखमीचंदजी जेताजी
 १ शा. वजेराजजी,

- १ शा. नथमलजी रूपचंदजी,
 १ शा. जवेरचंदजी प्रेमाजी,
 १ शा. खुबचंदजी ताराचंदजी,
 १ कोठारी शिरेमलजी नव-
 लमलजी,
 १ दोशी तिलोकचंदजी सां-
 कलचंदजी,
 १ चौधरी मोतीचंदजी नेमाजी
 १ शा. कस्तूरचंदजी कानाजी,
 १ शा. हुकमीचंदजी मया-
 चंदजी,

(शिवगंज-देश मारवाड़)

- २ शा. वाहलाजी नाथाजी,
 १ शा. श्रीचंदजी दीपाजी,
 १ शा. गोमाजी केरिंगजी,
 १ शा. मनरूपजी केरिंगजी,
 १ शा. चेनाजी सदाजी,
 १ शा. धंनाजी गोविंदजी,
 १ शा. कुपाजी सुजाजी, वा-
 लीवाला,
 १ शा. भगाजी वनाजी,
 १ शा. वेलानी फताजी,

- १ शा. हेमराजजी,
 १ शा. मोतीजी मेघाजी,
 १ शा. ओटाजी फवाजी, क-
 लापुरा,
 १ शा. जैसाजीकी स्त्री,
 १ शा. ललुभाइकी स्त्री,
 शा. तेजाजीकी स्त्री,
 १ शा. जीताजी धंनाजी,
 १ शा. गुलाबचंदजी हीराजी,
 १ शा. दलिचंदजी चांपाजी,

- | | |
|---------------------------------|-------------------------------------|
| १ शा. भगाजी लालाजी, | लापुरा, |
| १ शा. हेमराजजी सादरी-
वाला, | १ शा. लुंबाजी चेनाजी वा-
लीवाला, |
| १ शा. हंसराजजी शीरोही-
वाला, | १ शा. वनाजीकी स्त्री, |
| १ शा. धनरूपजी गलाजी क- | १ शा. जोधाजीकी स्त्री, |
| | १ सेवक चिमनाजी धूलाजी, |

- २३ देश मारवाड--मुकाम मठारके-श्रावकोंकी तरफसें,
१ मुता जोरावरमलजी मुकाम सोजत देश मारवाड,
१ शा. लुंबाजी देवराज, मुकाम जावाल,
२ श्रीयुत अबीरचंदजी जालोरी, मुकाम वासोदा, (रियासत
गवालियर,)
२ श्रीयुत नंदलालजी पारख, मुकाम भेलसा, (रियासत
गवालियर,)
१ श्रीयुत नथमलजी पारख, शहर उज्जेन, (रियासत
गवालियर,)

(जूमिका.)

— ग्रंथरचना उसको कहना जिसमें अपूर्ववातोंका संग्रह किया गयाहो, और वह संग्रहभी ऐसाहोना जो हमेशाके लिये सबको फायदेमंदहो, व्यर्थकागज कालेकरना क्याजरुरत ! अच्छे लोग फरमायाकरतेहैकि—चतराइसें बोलना बहुतमुश्किल बातहै लेकिन ! असल पुछोतो चतराइके लेख लिखना उससेंभी ज्यादा मुसीबत समझो—थोडेहफोंमें बहुत कुच्छ लिखना और भाषाको रसीलीबनाना उससेंभी ज्यादा मुश्किलहै—अगर उक्त बातें तुमने पुरीतौरसें हासिल नही किइहै—तो—ग्रंथबनाना फिजूल समझो. ग्रंथतयारकरके—छपवाना चाहो तो—बहेत्तर लेकिन ! मूल्य उतना रखो जो लागतसें ज्यादा नहो, लिखाणको प्रेसमें रवाना किये पहिले दोतीनदफे फिरफिरकर पढ जाओ, ऐसा नहोकि—पीछेसें तुमको रंज उठाना पडे, जैसे धनुष्यसें छुटाहुंवा बाणफिर हाथमें नहि आता लिखेहुवे लेख छपगये बाद फिर मिटा नही सकते, इसीसें कहा जाता है फिर सौचलो,

— ग्रंथ—छपेबाद दूसरा शरूश उसमें भूल बतलावे—और वह—सच्ची होतो—दूसरी आवृत्तिमें उसको सुधारलो, तुमारीतारीफ होगी, बुराइ नही, भूलना सबकेपीछे लगा है, जहांतकबनें ऐसा लेख लिखो—जो—अत्युक्तिसें रहितहो, बहुत—रौचक—या—भयानक बनादोगे—तो—सच्चको धक्कापहुंचकर कमजोरी—आजायगी, जहां खंडनमंडनका मौका आनवने युक्तिसें—लडो, कुत्रचन लिखना—बहादूरी नही, बहादूरी उसीका नामहै जो शास्त्रीयकानुनसें बखिल्लाफ बात—नवोली जाय—तारीफ उनकी समझो जिनकेलेखोंको दुश्मन सराहे, दुनिया दिवानीहै, लेकिन, ! नही, ! जिनको अकलमंद लोग सराहे वही ठीक है, इसग्रंथमें—मुजे—कइचमत्कारीबातें

ऐसी लिखना-था-जो-निमित्त ज्ञानके तालुकथी, लेकिन ! इस-लिये नहींलिखीकि-जमाना बदला हुआ है-अधर्म वृद्धि दुनियाके तीनाहिस्सोंपर छागइ और-गुणकेपीछे अवगुण बोलने वाले कदम कदमपर खडेहै इसलिये यही मुनासिव समझागयाकि-समयदेख-कर बात बतलाना.—

मैं-नहीं कहसकताकि-इसग्रंथमें कहीं-बगेर चुकके लिखगयाहूँ कइजगह गलतीयां रहगइ होगी, अपनी भूल अपने आपको जब तकदूसरा न कहे-मालूम नहीं देती, इसग्रंथके पांचौतरंगमें जोजो बातें लिखीहै सबका शूचीपत्र न्यारान्यारा बनायाजातातो बहुत बडा फैलाव होता. इस लिये आगे जो संक्षिप्तशूचीपत्र लिखा गयाहै-उसको पढकर मतलब निकाललेना, देशाटनवृत्तांतके लेखमें पृष्ठ (४१)पर-जहां फरुखनगरका बर्नन देखोगे-पंक्ति (१२) में मेरीउमर (३३) वर्षकी छपगइहै वहांपे (३१) वर्ष जानना, श्वे तांवर दिगंबरकीभिन्नतानामके विषयमें-पृष्ठ (२५३)-पंक्ति १-पर जहां-त्रिलोकसारमें ऐसा क्यों कहा लिखाहै, वहांपर-गोमटसारमें ऐसा क्यों कहा-जानना, पृष्ठ (३२६) पंक्ति (१७) में-जहां आमगंधतोला-दो-ऐसा छपगयाहै वहां-आसगंधतोला-दो-एसा पाठ जानना, पृष्ठ (३२८) पर-जहां-सर्पकाटनेपर आरामहोनेके उपाव बतलायेहै-वहांपे पंक्ति (८) में-जहां फाटकरी लिखीदेखो, वहां-सवातोलेफाटकरी-ऐसापाठ जानना,-(४८७)पंक्ति-पांचपर जर्मनीवालोंके हिसाबसें दुनियामे जो एक अबज (७०) करोडको आवादी लिखीहै उसके साथ आम यूरोपवालोंके-जानेहुवे-भूगोलके अनुमानसें (१५) अबज मनुष्यकी आवादी दुनियामेंहै एसा जानो.

(हस्ताक्षर,—)

मुनि-शांतिविजय,—

(संवत् १९५५,—)



[मानवधर्मसंहिता-(शातसुधानिधि)ग्रंथका- संक्षिप्त सूचीपत्र,]

(तरंगपहिलेका बयान.)

(विषय)	(पृष्ठ.)
१—देशाटनवृत्तांत,	१-१४०.
॥—यतिजी-पं-जयचंद्रजीके सवाल्लोंका जवाब,	१९-२१
॥—तीनथुइवाले-मलीनांवरी-मुनिधनविजयजीकी- कुतर्कोंका-खंडन,	२१-३९
॥—दिगंबरक्षुल्लक-धर्मदासजीरचित-श्वेतांबर न्यायांकुश ग्रंथका-खंडन.	४३-७०
॥—श्वेतांबराचार्य-श्रीमद्-हीरविजयसूरिके फुरमान पत्रकी-नकल.	८४-८६.
॥—मूर्त्तिपूजापर-व्याख्यान,	९८-१२४
॥—यतिजी-पं-माधवचंद्रजीके-सवाल्लोंका-जवाब,	१२५-१४०
२—जैन-बौधका-भेद,(बुधगौतमकी उत्पत्ति-और- तीर्थंकर महावीरका जीवनचरित,	१४१-१८०
३—श्वेतांबरदिगंबरकीभिन्नता-दिगंबरमतकी उत्प- त्ति-भेदानुभेद-चौराशीवल्लोंका-जवाब.	१८४-२७५
४—मुल्ताननिवासी-दिगंबरश्रावकोके(१६)सवा- ल्लोंका जवाब,	२७५-२८१
५—लश्करगवालियरनिवासी-दिगंबरश्रावक फ- तेहलालजीके-सवाल्लोंका-जवाब,	२८१-३०६

६—चिकित्साविद्या-वैद्यकेलक्षण-बीमारकीहिफाज-
त-अजीर्ण-कोषवृद्धि-खुनीषवासीर वगेरारोगके
मिटानेकाउपाव,स्त्रीकों रक्तविकारशांत होकर
गर्भस्थितिहोनेकी चिकित्सा-औरतकों-और-
मर्दकों किसतरह शरीरकी रक्षा करना-सर्पके
काटनेपर आरामहोनेकी चिकित्सा, ३०६-३३०

(तरंगदूसरेकाबयान.)

- १—स्वरोदयज्ञान, ३३१-३४१
- ११—योगशास्त्रका वर्नन, ”
- ११—सूर्य-और-चंद्रनाडीचलतेवख्त-क्याक्याकरना ”
- ११—तत्त्वोंकी पहिचान-प्राणायाम, ”
- २—अष्टांगनिमित्त, ३४१-३९१
- ११—अंगफुरकनेका फल, ”
- ११—स्वप्नोंका फल, ”
- ११—स्वरविज्ञान-मनुष्य-पशु-और पक्षीकीबोलीसँथुभाथुभ-११
- ११—जमीनकंपनेका फल, ”
- ११—देश-नगर-और ग्रामोंपरजब आफतआनेवाली }
हो-क्याक्या बनावबने, ”
- ११—आकाशमेंधुम्रकेतुका उदय-उल्कापात-और- }
तारोंकाखिरना, ”
- ११—शरीरके तिल-मसे-और लहसनका फल, ”
- ११—हाथपांवकी रेखाका फल, ”
- २—शकुनशास्त्र, ३९२-३९६
- ३—कालज्ञान, ३९६-४०२

(तरंग तिसरेका बयान,)

१—मानवधर्मसंहिता,

४०३-६३३

२—सवेरे उठकर मंत्राधिराजका स्मर्ण-दातूनकरनेकी विधि-जिनमंदिरजानेकी विधि-शास्त्रसुननेका वखत-खानपानकी विधि-तांबुल-मकानकीसफाई-नशाकरनेसेनुकशान-वंश-और-गोत्रका वर्नन-क्षत्रीय-ब्राह्मण-और-वैश्यके कर्त्तव्य-अकलकेफव्वारे-पद्मनी-चित्रिणी-हस्तिनी-और-शंखिनीस्त्रीके लक्षण-(कामविकार-मोह-कर्मका एकभेद) ब्रह्मचर्यपालनेका उपदेश-गर्भवतीस्त्रीको शिक्षा-गर्भाधान वगेरा सोलहसंस्कार-जैनशास्त्रानुसार विवाहका वर्नन-जैन तीर्थोका बयान-हेमचंद्राचार्यरचित-अर्हनीतिके मुताबिक-दायभागऔर-वसीयतनामा-वगेराकइ बातोंका खुलासा.

११

(तरंग चौथेका बयान.)

१—ज्योतिषशास्त्रका बयान,

६३४-६४६

२—मंत्रशास्त्रका खुलासा,

६४६-६५२.

३—छंदशास्त्रका वर्नन,

६५२-६५५

४—जैन-और-दयानंदसरस्वती, इसमें दयानंदसरस्वतीकी कुतर्कोका-खंडन-और-वेदकी उत्पत्तिका बयान है,—

६५५-७४७

- ५—दुनियाके मतमतांतर—(धर्मतत्व-प्रदर्शिनी)—
 जैन-बौध-सांख्य- } ७४३-७९७
 योग-मीमांसक-नैयायिक-वैशेषिक-(आर्यदे-
 शीय मतमतांतर-)मुसल्मान-और-इशाइयोंके
 धर्मपुस्तकका सार—(अनार्यदेशीय मतमतांतर-)
 काल-स्वभाव-नियति-उद्यम-और-कर्मवादी-
 का बर्नन-ज्ञानावरणीय वगेरा आठतरहके क-
 र्मोंका बयान-चौदहवाक्यरत्न,, ,
 ६—मकसीतीथके मेनेजर-भाउसाहबके सवाल्लोका-
 जवाब-(कलंकीका बयान-और क्षयवृद्धिति-
 थिका निर्णय.)- } ७९७-८०३
 ७—जैनका संक्षिप्तइतिहास-ग्रंथकी पूर्णता, ८०४-८१२

(तरंग पाचवेका बयान.)

- १-धर्म-अर्थ-काम-और-मोक्ष,.....८१७-८२४
 ,, जिनप्रतिमाका समवतुरस्नानाप-मूलनायक
 प्रतिमा अचलरखना-उनकी दृष्टि-दरवजेके
 कौनसें भागमे रहना ठीक-घरदेरासर
 की विधि-जिनमंदिरमें घंटानाद-और शिखरपर
 ध्वजा रखनेके फायदे..... ,,



Manav Dharma Sanhita.

By Vidyasagar-nyaratna Maharaj Santibijoji—a Jain Swetambar Sadhu. The book is full of varied and manifold informations and contains a description of the vorious sects and their views. Everybody should keep a copy of this work with him. The different subjects treated in this book if studied carefully would undoubtedly win the esteem and approbation of the readers. The other productions of the author published upto date have all been praised by scholars. In fact he has put forward the substance of several *Sashtras* in his work. The paper and printing is neat. Demy 8 vo. of nearly 825 pages. The language is simple enough to be uuderstood by ordinary men. Readers of limited capacity can easily grasp the the subject independently of any help from without. It is also known as *Santa-sudha nidhi* (lit. ocean of nector of peace). It consist of fiva parts. The different matters are so interestingly represented that if once begun, the reader can hardly leave aside the book. The following are in brief the principal subjects treated in this work.

The first part contains—an account of a travel—answers to queries of Jatiji Joy Chandraji of Dehli—Criticisms upon Malinambari Muni Dhanbijoyji speaker of three verses of prayer and upon *Swetambarnyan-*

kus of Dharma Dās of Digambar sect—a copy of the *Farman* granted by Akbar the Great to Swetambaracharya Srimat Hira Bijoy Suri—Lecture upon idol worship—answers to questions of Jati Madhav Chandraji of Gualior—Difference between Jainism and Buddhism with origin of Budh Goutam and a short life of Tirthankar Mahavira—Distinction between Swetam-bars and Digambaras—Origin of Digambarism—Point of similarity and difference—Solution of their 84 queries—answers to the 16 questions of the Digambar Sravaks of Mooltan and of Mr. Fateh Lalji, a Digambar Sravak of Gwalior.—Medical Science—qualifications of a medical practitioner—Art of nursing and looking after the patients—treatment of various diseases e. g indigestion, blood poisoning, barrenness &c.—rules for preservation of health—treatment of snake bites.

The Second Part contains—Science of nasal breathing—description of the *Yoga Sastra*—enumeration of acts to be done at the presence of *Surya* and *Chandra Nadi*—*Pranayam*—eight kinds of omens—effects of the throbbing sensation at the different parts of the body and of dreams—vocal knowledge—knowledge of the futurity from the voices of birds, animals and men—effects of an earth-quake—signs which foretell evils to countries, cities or towns—Rise of a comet, falling of a star or meteor—effects of the various red-black spots over the body and Palmistry—Sakunsastra—knowledge of time.

The third part deals with the duties of human beings—rules for going to the temple of *Jains*—time for hearing *Sastras*—rules for eating and drinking—house cleansing—injury from the use of intoxicating drugs—description of the different class and creeds—kinds of females—fountain of intelligence—Duties of a Brahmin, a Kshatrya and a Baishya—Total abstinence from intercourse—advice for pregnant women—Account of the Jain sacred place—Sixteen *Sanskars* from Garvadhan to marriage according to Jain *Sastra*. Copious notes on Jain law of succession according to *Arhan Niti* of Hemacharya—of wills.

The fourth part contains—Astrology—Mantra-viḍyas—Rhetoric—criticism upon the tenets of Dayanand Saraswati—the origin of the present *Vedas*—account of other religious tenets and views of Jain, Bouddha, Sankhya, Joga, Mimansak, Naiyayik, Vaisesik of Arya country and of Mahomedans and Christians of Anarya Country—eight different kinds of *Karmas*—14 *Bakya ratna*—Description of the Kalanki King—answers to question of Bhao Shahib Manager of Makshiji—the cause of increase and decrease of *tithis*—a short history of Jainism.

The fifth part concludes with a description of 4 *Margas* Dharma, Artha, Kam, Moksh (i. e. from religion to final liberation of our souls)—Rules and observances to be performed at the construction of the temples and the consecration of the statue of Gods in them.

Thus it will be found that these pages contain so many useful as well as thoughtful informations and all my labours shall be deemed to be well rewarded if the work is appreciated by the readers and if they profit anything by it.

It is impossible to get so valuable a work at such a low price. Strongly bound in cloth, illuminated with gilt letters, it contains a portrait of the author. The price of the book Rs. 2 exclusive of postage and it can be had cash or V. P. Post at—

The Union Printing Press Company Limited
at the old Mint—Ahmedabad.

Gatalal Mansukhram Manager Jain Divakar
Ahmedabad.

Bhimsing Manek Jain book-sellers—Bombay.



(श्रीजिनायनमः)

[मानवधर्मसंहिताग्रंथ.]

—वा—

[शांतसुधानिधि.—]

(मंगलाचरणसमीक्षा,)

(दोहा.)

स्तवी देवअरिहंतकों—जांकलु कोजे काम,
स्वतः सिद्ध सो होतहै—कहां? विघ्नकों नाम, १

(सवैया,)

आत्मज्ञान प्रकाश विना—खद्योतसमान भया टिमकारा,
तापर मान कहा करना—दिनचारगये फिर न्है अंधियारा,
अतिवल्लभ प्राणप्रिया जगमें—निजस्वारथका सवाहि संसारा,
चित्तशांतकिये संतोष मिले—कर शांतदसा सुखहोत अपारा, २,

जोशरूश देशाटनकरके पृथ्वीमंडलमें नहींफिरा—परायेदेशोंकी
भाषा नहींसमझा—भूगोलखगोलका ज्ञान और नीतिवाक्य नहीं
पढा—बुद्धिमान् उसकों चतराइके बडे हिस्ससैं वंचितरहा फरमाते
है, दशाटनसैं—देशदेशका चालचलन—व्यवहार—मजहब—विद्या—भाषा
कारिगरी—तिजारत—तवारीख—पहाड—नदी—नहर—झील—वनास्पति
जीवजंतु—और मौसिमवगेराका हाल—बखूबी मालूम हो सकता है,
अगरतुम अनार्यदेशमें अटनकरना चाहतेहो—तो—अैसेप्रबंधसैं करो
कि—धर्मभ्रष्ट—न—वनना पडे, धर्मका नाशकरके कोईकार्य किया
जाय—बुद्धिमान् उसकों अच्छानहीफरमाते, हमेशासैं यहवात हो-

तीचली आईकी-आर्योकी हकुमतमें अनार्य लोग रहतेचलेआये, सबवकि-आर्योका तकदीर अक्सर सदातेज रहा, लेकिन! आज आर्योकासितारा कमजोरहै-अनार्यदेशीयराजोकी हकुमतमें आज आर्यलोग-निवासकररहेहै-चक्रवर्तीराजे-अबनहीरहे जिनका पुन्य सर्वत्रछा रहाथा, इसीसे कहाजाता हैकि-सभी दिन एक सरोखे किसीके नही होते, देखतेनहीहो-सवेरकी धूप-श्यामको-कहां चलीजातीहै?-समझसको तो समझ लो ! जिसकी तकदीरवली उमकी-ततवीर वली-और-जिसकी तकदीर-कमजोर-उसकी ततवीरभी कमजोर,-अच्छा !-अब जो कुछ देशोकी बात सुनाते है-सुनो, !

पहिले यह वतलाओकि-जिसदेशवालोके मुखमें मिश्री और दिलमें जहर हो-वह पसंद है-या-दिलमें मिश्री-और-मुखमे कटुता पसंद है, (जवाब.) हमको-जिसके दिलमें मिश्री हो वही पसंद होगा, अच्छा ! तो-यह वतलाओकि-जो-लोग-अनाज-घी-और दुग्ध वगेरा खाते है-वह-पसंद है-या-मांस-मदिरा और पनीर ? (जवाब.) अनाज खाना पसंद है, अच्छा ! तो-यह वतलादो ! कुर्सिपर बैठके मेजपर खाना पसंद है-या-जमीनपर बैठकर ? (जवाब.)-इसमें हम किसीका पक्ष नही करेगें, - जिसको जैसा योग मिले वैसा करे, हां ! अभक्ष्य भोजन कभी-पसंद न करेगें, अच्छा ! यहभी वतालादोकि-पाजामा-कोट-और-टोपी-पसंदहै या-अंगरखा-धोती-दुपट्टा-और-पघडी ?-(जवाब.) इसमेंभी वही कहेगें जिसको जैसा रुचे-यैसा पहने, लेकिन ! हां ? यह जरूर कहेगें चालचलन बुरा न चले,

कोशलदेशकी राजधानी अयोध्या-जिसका नाम-विनीता-

नगरी था—रिपभदेव तीर्थकर इसीमें हुवे—और—सबसे पुरानी नगरी भी यही है,—कुरुक्षेत्र—जहां—कौरव पांडव दिल खोलकर लडेथे, देखकर किसको वीररस नहीं छाजाता ?—हस्तिनापुर—रिपभदेवके वरुतका वसाहुवा बहुतपुराना शहर—लेकिन ! आजकल विल्कुल विरान पडा है, द्वारिका—पश्चिमसमुद्रका शिगार—यदुवंशीयोंकी निवासभूमि—आजकल वैसि नहीं रही लेकिन ! जमीनवही है, मालवादेशकी राजधानी उज्जैन—वडेवडे आश्रयोंकी भूमि किसीसे छीपीहुइ नहीं, लंका—जिसका दूसरा नाम सिंहलद्वीप वही है जो सेतुबंधके—ठीकसामने देखते हो, शास्त्रोंमें जो—सोनेकी लंका—लिखी उसका अर्थ—यह नहीं समझनाकि—उसके घरोंकी दिवारमें इंटचूनाभी सोनेका लगाथा, असलमें घरघर—सोनेकी कलसियां—और दिवारोंपर सोनहरी चित्रकारी एसीथी जां तीनहिस्से सोनाही सोना दिखताथा, दारचीनी—कालीमीर्च और—इलायची यहां आजकल ज्यादा होती है, यहांका हाथी चालाकी और मजबूतीमें सबसे बढकर देखोगे,

सौराष्ट्रदेशके लोग—धर्मज्ञ—दोलतमंद—और—दिलके दलेर किसीसे छीपेहुवे नहीं, तीर्थ शत्रुंजय गिरनार इसीदेशके शिगारहै, बंबइके आम—सबमेवोंका शिरताज—मीठे और—बजनमें शेरसेंभी अधिक उतरेगें, हिमालयपहाड तरहतरहकी जडीबूटीयोंका भंडार नेत्रजे—देवदार—भोज पत्र—और—कस्तूरीयामृग—इसीमें होता है, कश्मिरके दुशाले देशोंमें मशहूर—अंग्रेजोंने बहुतसी कलें बनाई—लेकिन ! यहतो उनसेंभी न बनपडा, केशर—बादाम—पिस्ते—अंगूर आलूबुखारा—शाहदाना—अखरोट—बेदमुश्क और—कचनार—वगेरा यहां—ज्यादे होता है, मारवाडमें पानीकी कमती—लेकिन—खानपान

उमदा,—कुंकण—कर्णाटक—और—मलवारके लोग—सदाचारी मथुरा—
त्रजके—लालची—पंजाबी आपम्ब्वार्थी—लेकिन !—सिखलोग—याँद्रे
मगधके प्रेमी—गुजरातके दातार—बंगालके विनयवान् और—नेपा-
लके बडे सख्त होते है,

वनारसकी साडी—अहमदावादका—कमरुवाव—काठियावाडके घोडे
जामनगरके औढने—मारवाडके ऊंट—ढाकाबंगालकी मल्मल—जय-
पुरकी चित्रकारी—सुरतका किस्वीकाम—अजमेरका गुंलाव—जहां-
सीका केवडा—तीरहुतकी नील—लखनउका कसीदा—और—आग-
राका पेठा—देशोंमें मशहूर है, दिल्लीआगरा—लखनउ—और—बंगाल
प्रदेशका—खानपान—बोलचाल—पुशाक—अच्छा,—मेवाडके शूरवीर
विराटके मिलनसार—होतेहै, सारवाड और पूरववाले अपनी ओर-
तोंकों पर्देमें रखते है, मुसलमानी अमल्दारी जब पुरीतेजीपरथी
लोगोंकों बहुवेटीयोंकों अकेली फिरना खौफकी जगहथा—तबसें
पर्देकी—रसम जारी हुइ—वर्तमानमें वह खौफ मिटगया लेकिन ! न
मालूम ! फिरभी उक्तरसम क्यों नही उठादिइ जाती, ? पर्देसें
ओरतोंकों देवदर्शन—और शास्त्र श्रवणमें—न्यूनता पहुचतीहै, अस-
लपर्दा नेत्रोंका रखना चाहिये, जिसराजाकी रानीयोंका पर्दा
शास्त्रोंमें सुनते हो—वह—ऐसा नही था—जो तुमने जारी कररखाहै?
दूसरे तुम—राजेलोग नही—जो उनकी बरावरी करो, बरादरीके
लोग—एकडे होकर जिसवातकों घटाना बढ़ाना चाहे—तो हो सकता
है, कलिंग भोट—आभीर—गौड—द्रवीड—सुरसेन—सिंध—तैलंग—वत्स
मेंवात—गंधार—कच्छ—कामरुप—बब्बर—और वैदर्भ—बगेरा देशोंकी
अलग अलग रमम कहांतक लिखे ? जिसदेशमें जो कोइ रहता
है उसकेलिये वहीवर्ताव अच्छामालूम देगा,

इंग्लंड-अमरिका-रुम-फ्रांस-और-जर्मनी-आजकल सभ्यता और-इशाइ मतके जोरशोरमें अवल मोरचेपर खडे है, लंडन-न्यु-यॉर्क-सैन्यपिटर्सवर्ग-और-पेकिन-अलवते! बडेशहर है, लेकिन! फ्रांसकी राजधानी पेरिसनगर अपनीकतावजा और-सुंदरतामें सवसें निराला है, चीनदेशकी जमीन उपजाउ-चायकी पैदाश ज्यादा-रेशमी कपडे देशोंमें मशहूर-कापूरकेपेंड चीनहीमें देखोगे, हाथीदांत कचकडेके खिलौने-और-चीनीके बर्तन-यहांसे देशोंमें जाते है, कस्तूरीयेहिरन-शालकी बकरी-और-जंगली गधे-तिब्बतमें देखोगे, एशियाइरुसमें हजार बरसोंके पुराने जानवरोंकी लाशें बर्फके तलेसें निकलती है, जापानदेशके लोग घोडेकी लगाम हाथमें लेना बेइज्जती समझते है, इसीलिये सवारहोतेवरत लगाम नोकरोंके हाथमें रहती है, अफगानिस्तानमें मेवोंकी पैदाश ज्यादा राजधानी काबुल तिजारतके लिये अवलदर्जेपर, बलूचिस्तान और हिरात अलग अलग मुल्क-लेकिन! पश्चिमहिरातकों खुरासान कहदो कोइहर्जकीवात नही, सोनाचांदी-लसनिया-लाजवर्द-सीसा लोहा-सुरमा-हरताल-फिटकरी-और-गंधक वगेरा-यहांकी खानोंसें निकलते है, अरबस्तानमें पानी-कम-बिल्कुल रेगिस्तान है, लेकिन! घोडा यहांका तमाम देशोंमें मशहूर-उंट-और-गधाभी वहां अच्छा होता है, गधेकी सवारीसें वहांवाले एंभ नही गिनते, बल्किन्! बडेचावसें चढते है, देशदेशका चलन व्यवहार सुनोतो पार नही, कहांतक कोइ लिखे!-लेकिन! हां! जबतुम खुददेशाटन जाओ तो इतनाजरुर लिखलिया करोकि-वहांपर बडा-शहर कौनसा है?-विद्याका प्रचार कैसा देखा?-मशहूर चीजे कौनकौनसी देखी?-आबहवा कैसी मलूम हुइ?-कितने आद-

मीकी आवादी-और-व्यापारकी तेजी कैसी है ?-राजा-मंत्री-ज्योतिषी-वैद्य-हाथी-घोडे-गवैये-साजंदे-नदी-सरोवर--वाग-वगीचे-कोटकिला--प्राचीनशिलालेख-देवालय-पाठशाला-और-बाजारकी रजानक-कैसी है ?-पतेवार उसका वयान लिखलो, कइतरहके संसारी फायदे होंगे,

जवाहिरातमें (१) मानक-सवरत्नोंका शिरताजहै वम्हा श्याम-काबुल-लंका-और-रुसकी अमल्दारीमें यह पैदा होता है, [२] हीरा-जिसका नाम शास्त्रोंमें वज्ररत्न लिखा यहभी सवरत्नोंमें प्रधान रत्न है, इरान-कॅंप-निझामकी-राजधानी कीस्नानदी-और झरना परनावगेरामें पैदा होता है, (३)-पंन्ना-जिसका नाम शास्त्रोंमें वैडूर्यरत्न-कहा-मिश्र-अमरिका-मरगज-इरान--और-रुसमें उत्पन्न होता है, (४)-मोती-वेहरेन-जददा-मस्कद-लंका-तूत-खाडी-दरभंगा-ढाका-और-चूनाखाडी वगेरामें पैदा होतेहै, बडेसें बडा मोती-आजकल आवले प्रमाण मिलेगा, (५) मूंगा-समुद्रकिनारे और इंग्लंडकी जमीनमें उत्पन्न होता है, (६) गोमेदकरत्न लंका-और-वम्हामें-(७)-लसनिया-जिसकानाम शास्त्रोंमें-कर्केत-नरत्न लिखा-लंका-और-वम्हामें निकलता है, (८) निलम-श्यामके मुल्कमें-वम्हा-और-कश्मिरकी अमल्दारी कुलुपहाडमें पैदा होता है, (९)-पुखराज-लंका-और-वम्हामें-(१०) पीरोजा-निशापुर-आरकजइ-और इजिसमें-पैदा होता है, (११) लाल रत्न-रूम वम्हा-लंका-और-निझामकी अमल्दारीमें निकलता है, अकीक-खंभातके पास-और-तामडा-सरवाडमें पैदा होता है, शं-गेसमपथ्थर सफेद और हरेरंगका-लाजवर्द-आस्मानी-और वि-छोर-सफेद-होता है,-

सिंह-व्याघ्र-हाथी-घोडे-गधे-उंट-खच्चर-गौ-भैंस-बकरी-कुत्ते
 रीछ-सूवर-हिरन-रौझ-गोंदड-खरगोस-बंदर-नेवला-बिल्ली-सांप
 गिर्गट-चकोर-तीतर-बटेर-मुर्ग-सारस-बुगला-चीडिया-तोता-मेंना
 मोर-कोयल-पपीहा-वाज-शिकरा-चील-कव्वा-कवूतर-वीछू-म-
 ख्खी और मच्छर-बगेरा जीवजंतु-सब देशमें होते हैं, लेकिन !
 हां ! किसीदेशमें ज्यादा-किसीमें कम, कइ देशकी ताहसीर सर्द
 और कइकी गर्म-होती है,-विद्या और-धनमें-भारतमध्यखंड-स-
 वसें अवलदजेपर रहता चला आया, दूसरे देशके बेपारी इसदे-
 शकी आशालगाये एकही सफरमें जन्मभरका दरिद्र दूरकर जातेथे,
 कौनसी औसी अधिक उपयोगी चीज है-जो-इस देशमें-न-होती
 हो ?-भाषा सुनो तो-गुजरातमें गुजराती-बंगालमें बंगाला-पंजा-
 बमें पंजाबी-कश्मीरमें कश्मीरी-तिरहूतमें मैथिली-सिंधमें सिंधी
 राजपुतानमें देशवाली-कर्णाटकमें कर्णाटकी-तिलंगमें तैलंगी-महा-
 राष्ट्रमें महराठी-और द्राविडमें द्राविडी-बेगरा तरहतरहकी मिलेगी.
 एक कविने (१०) देशकी भाषा-एकही काव्यमें दर्सा दिइहै-सुनिये !

(स्त्रग्धरावृत्तम्.)

प्राणार्थीशोगतोमे-बहुरिनबगदे-श्युंकरु ? रे ! हवेहुं ?
 माचेकम्माँचीगोष्ठी-हिवकुणसुणसी-गांठधेँलोनदी छे,
 मारें तीरां सुणोरा-खरच बहुत है-इहरां टाबरां रो,
 दीठी तेंडेदिलोँदी-इशकइलफतें-होतवो वीचनाडु, १

जानना चाहिये-इस जमीनका एकछत्र राज्यकरनेवाला क-
 भीतो चक्रवर्ती हुवा, कभी वासुदेव-महामंडलीक-और-कभी-मं-
 डलीकराजा-इस तरह अनेक मालिक हो चुके, चारचार दिनकी
 हुकुमत-कर सबचले गये-किसीका इरादा पुरा नहीं हुवा, जहां

जवाहिरातके ढेर लगतेथे. वहां कभी कंकरभी देखे गये-किसकी तारीफ-और-किसकी बेइजाती कहे ?-जिसमुल्कमें तिजारत कम हो-वहां-रवंन्नकभी कम रहेगी, बडे शहरोंमें अक्सर हरवातका सुख रहता है, लेकिन ! गांवके लोग शहरका रहना कभी पसंद न-करेंगे, पहाडीलोग-पहाडमें-जंगली जंगलमें-और-मेंदानके मेंदानमेंही राजी रहेंगे, कइ नदीयां ऐसी देखोगे--जिसमें वाराह-महिने जल भरारहता है और कइ चार महिनेभी खजानेमें जल नही रखती, कइ एसी है. जिसमें पूरीवालू रेतभी--नही--और--किसी-किसीमें झलाझलसोना निकलता है, इसीसे कहागयाकि-देशाटन करनेहीसे सबमाहीतगारी मिलेगी, आजकल बंबइ-कलकत्ता-दोनों बडेशहर--भारतमध्यखंडमें-आवादी--व्यापार--और-रवंन्नककोलिये पूरीतेजीपर है, जींदगीके जरूरी और आराम दोनोंतरहके अस-बाव-यहां मिल सकते है, सबकिस्मके कारीगर यहांपर मौजूद नगरकी शैरकरनाचाहोतो विनासवारी नहोसकेगी, कहांतक कोइ पैदल चले-?-बडेशहरोंमें यहीतो बडीवातेंहै, इसीसे कहागया कि-देशाटन करनेसे सबतरहकी माहीतगारी मिल सकेगी.

कइलोग कहेंगे मुनिजनोंको ऐसीऐसी बातें लिखना क्या जरूरतथी ?-(जबाब.) ग्रंथमें सभीरस बयान किये जाते है, बुद्धिकी कचाइसे कोइ न समझे तो उसके लिये क्या कहाजाय ? शास्त्रोंमें विधिवाद-चरितानुवाद-और-यथास्थितवाद--जहांजैसा मुनासिवहुवा बयान किया जाता है, बुद्धिमान जानतेसब-लेकिन! बर्ताव उसीका रखते है जो मुनासिव हो. सज्जन लोग गुन और दुर्जन अवगुन लेयेंगे-ग्रंथकर्त्ताकों लाजिमहै किसीका पक्ष-न-करे, जो बात जैसीहो-वैसी-लिख देवे, उपादेयकों उपादेय-

त्यागनेयोग्यकों हेय—और—उपेक्षाकरने योग्यकों उपेक्षणीय लिखे,

(?) ~~आदमी~~ आदमी जब जन्मताहै शिवायपुन्यपापके और कुच्छ शाय नहींलाता, जीवनका फल यहीहैकि—दुनियामें आकर कुच्छकरनीकरे, मनुष्यजन्म बारबार नहीं, पूर्वजन्ममें पुन्यकियाथा तो नरदेह मिला, जिसजमानेमें जोचीज आरामकी मिले सबलोग जमाकरतेहै, कोईऐसा नहीं देखा जो आरामकों नचाहताहो, अच्छेशहरमें उमदामकान बनाकर रहना कौन नहीं चाहते ?—शीश-महेल और सजेहुवे कमरे किसकों नापसंद होतेहै,—बाग बगीचे फुलवारी और गर्मीयोंमें हवादार मकान किसकों नागवार गुजरेगें ? मर्दकों खूवसुरत औरत-और-औरतकों खूवसुरत मर्द-हमेशासँ पसंदहोते चले आये, ईतरफुलेल फुलोंकीसेज-और-उमदाग-हने सबकों प्यारे लगतेहै, रेशमी पुशाक शालदुशाले और गर्मीयोंमें वारीकवस्त्र किसके लिये नापसंदहोसकते है ? ताजी मीठाई और तुर्तकी बनी रसोइ किसकों अच्छी नहीं लगती ?—सब चाहतेहैकि-हम-खुशमिजाज रहे और आराम हासिल करे, लेकिन ! याद रखो !! जब तुमारे घर खुशीके नकारे बजेगें सबहाजिर रहेगें जबरंज तबकोईनहीं, ईसीसँ कहाजाताहै सब मतलबके साथी है, धन दौलत मिथ्या—और—संसार जानहार है, ईसमें कोई कायम नहीं रहा, जोशरूश ज्ञानीके कहने मुआफिकचलेगा चैन उठायगा और बडा नाम पायगा, मुलाहिजा करलोकि—यहबात सच्चहै—या जूठ ?

(२)—धर्मात्मा—रहेमदिल—परोपकारी और दलेर होना सबकेलिये लाजिमहै, यहमीठीका पुतला नमालूम किसरौज मीटोमें मिलजायगा ?—यहखयाल अपने दिलसँ जलदी उठालोकि—हम—कुच्छचोजहै, मन लगाकर कहो ! तुमने पुन्य कितना और पाप कि-

तना किया ? अगर पुन्य कम किया है तो उसके बढ़ानेकी खायेस क्यों छोड बैठे हो ? जैसे ख्वावमें तुम तरहतरहके कौतुक देखते हो संसार उसीका नमुना है, ईसमें आकर धर्मकरना सारतत्व है, हीरेकी बराबरी काच नहीं करसकता सुन्नेके सामने पीतल-और-चंदनकेसामने नींव जैसे कुच्छ चीजनही, संसार धर्मके आगे कुच्छ चीज नहीं, शास्त्रकीबातें सुनकर जो तुम हंसदेतेहो बडीभूल है, जबतुम मुसाफरीकों चलतेहो साथमें औरतकों-दोस्तकों-और-नोकरचाकरकों जरुरलेजातेहो. तरहतरहके मेंवेमीठाई-ईतरफुलेल-विछोना-पंखा-छाता-और कई किस्मकीदवाओंसे भराहुवा-दवा-खानाभी साथ लेतेहो, उमदागाडीमें सवार होकर चलते हुवेभी जब भूखलगती है ईसमजेसे खातेहो मानो ! घरमें बैठकरखानाखारहेहै, यहसबधर्मरूपी कल्पवृक्षके फल है,—लेकिन ! ईतनाहरवखतयादर-खो-परलोककेलियेभी कुच्छबंदोबस्त करना चाहिये,

(३)—धर्मकीवदौलत सुखपाया-औरपाओगे,—अगर कहा जायकि-हम-धर्मधुर्म-नही मानते, आपही बतलाईये ! ईसकेहोनेमें सवतीही क्या है ?—(जवाब.) सुनिये ! अगर धर्म नहीं है-तो-बतलाओ ! एकसुखी-एक दुखी क्यों नजरआते है ?—सब एक साही क्योंनही ? अगर कहाजाय पैदाकरनेवालेकी मरजी ऐसी-हीथी-तो-बतलाओ ! उसमें सवव क्या ! असलमें ईश्वर किसीका भलाबुरा नहींकरता, तुमारे कियेहुवेकर्मानुसार फल मिलताहै, ना-हक ! ईश्वरकों दोषदेतेहो, एक ईश्वरवादी एक शहरमें घूमनेकों जारहा था— सामने एकहाथी चलाआताथा—और उसपर वैठाहुवा महावत दूरसे पुकारताथाकि—हटो—हटो !—मगर ईश्वरवादी नहींहटा कहनेलगा जोईश्वर चाहताहै—वहीहोताहै, महावतनै कहा ईनबातों-

कौतो छोडदो, और हटजाओ, ईश्वरवादी कहनेलगा हाथीमें ईश्वरकी वैसीही प्रेरणाहोगी तो तुजेक्या मालूम ! महावतबोला मेरे-मेंभी ईश्वरकी प्रेरणा क्यौंनहीमानते ? वह प्रेरणाकहरहीहैकि-हटो ! ईश्वरकी एकप्रेरणा तुमकोंमारना चाहतीहै एक बचाना ? तुमकों कौनबात मंजूरहै ?-ईश्वरवादी शर्मादा होकरहटगया, और समझगया कि-अपनेअपने कर्मही सवमें प्रधान है, न ईश्वर किसीकों मारे-न जीलावे, करोडयत्न करो कियेहुवेकर्म भोगेविदून नहीं छुटते,—

(४)—संसारमें दौलतमंद गंजहे लेकिन बुद्धिमानोंका गंज नहीं, ज्ञानके सामने-दौलत कमजोर-और जहां ज्ञान वहां दौलत कम-यहवात किसीसँ छोपी नहीं. ज्ञान और दौलतका वादानु-वादभो होचूकाहै, रुपये पैसेपरभो हफोंकी महोरहोगी तभी चल-सकते है सबुतहुवा लक्ष्मीपरभी ज्ञानका प्रभाव छाया है, लक्ष्मी खर्चकरनेपर कम होजायगी ज्ञान कम नहोगा. तीनलोक और चौ-दहभुवनमें फिराहुवाजीव-दौलतमंदकों नहीं पुछने जाताकि-मेरे किस्मतमें क्यालिखाहै ? जैसे सिंहकी बराबरी सियार-और-हं-सकी बराबरी कौवा नहींकरसकता-ज्ञानकी तुलना दौलत नहीं करसकती, जितनी लियाकत ज्ञानसँ हासिलहोतीहै, दौलतसँ कभी नहीं होती, तुमकों जब बडा ओहदा मिले सौच समझकर चलो, और दिलमें रहेम रखो,—एकशरूशकों बडा ओहदा मिला तब-उसके दोस्तने सौचा मुजे कुच्छ इससँ फायदाहोगा, बडी उमेदसँ इसके घर गया, उधर ओहदेदारके चश्मे पहिलेही बद-लेहुवेथे-पहुंचतेही उसने पुछा-तूं-कौन है ?-और क्यौं आया ? दोस्तने कहा-खूब हुआ ! अब पहिचाननाभी गया, वहदिन भूल गया ! जो खानेकोभी तंगथा-और-सँकडोंदफे हाथजोडे थे ?

वस ! इतना कहकर दोस्त चला गया, अच्छेलोगोंका यह काम नहीं कि. ओहदामीलनेपर गर्मीमें आजाय-और-दोस्तकों भूल जाय. नफा-नुक़्शान-तकलीफ-और आराम-सबकों लगेहुवेहै, अपनी तरकीमें दूसरोंपर रहेमरखना सबकों मुनासिब है,

(५)-यहवात बहुतठाकहैकि-ओछे लोग-दोस्तकोभी दगादिये विदून नहीं रहते, लेकिन ! अपने जीमें इसवातका अचरीज मत-लाओकि-इसने असा क्यों किया ?-जिसका जैसा स्वभावहोगा मुश्किलसे छुटेगा, असलमें दगावाजोंने अपनी उमर बेफायदे ग-वाइ, जैसे ओछेजलकी मछली-उछलने लगती है-छोटे आदमी अमीरीपाकर उछलतेहै, लेकिन ! तुम सुजानहो ! छोटेकी सोव-तसे छोटा इरादा क्यों कियेहुवेहो ?-यहवात सच्चहैकि-कौवेके गलेमें मोतीयोकी माला नहीं सोहती लेकिन ! क्या कहा जाय !! जमानेकी खूबीही असीहै, सिंह अगर सात उपवास करे तोभी उसको देखकर कोई भरुसा नहीं लाताकि-समताधारी बनगया, दगावाज कितनाही शांतवने लेकिन ! उसका भरुसा नहीं आता. यह एक स्वाभाविक नियम है, एक वक्रजड शिष्यकों गुरुने फर-माया-तूं-हमेशांसैं उलटे रस्ते चलता आया-अवतो-समझकर चल, और-असे कर्म-मतकर जिससे नरके कुंडमें जापडे, शिष्य बोला, महाराज ! रास्तादिखलानेकों आपही चलेगें जब ठीक होगा-मैं नहीं जाणता हूं-रास्ता किसतर्फहै ?-और यहभी कृपाकरके बत-लाइयेकि यह-जो-हमेशा भूख लगती है-न-लगे, रौजका झगडा मिट जाय, गुरुने कहा एसीही कुतकोंसे तेरी अकलमंदी झलक रही है. हमेशां असीही तर्क कियेकर-इसमें तेरी तारीफ बढेगी,-

(६)-[~~इस~~ रसिक-और-दोस्तोंका संवाद.]-एक दफे

रसिक-अपने दोस्तोंसे कहने लगे-एक बात मुजे तुमलोगोंसे कहना है, दोस्त बोले ! कहिए ! वहक्या है, ?

रसिक-प्रेम किसीसे मत करना,

दोस्त-खुब कहा !-नही करेंगे तो काम कैसे चलेगा ?

रसिक-खैर ! परदेशीसे तो कभी मत करना,

दोस्त-कभी परदेशीसेही-होगया-तो ?

रसिक-खैर ! फिर उससे बिगाड मत करना अच्छे आद-

मीयोंका काम है,-दोस्तीमे सदा एक समान रहना,

दोस्त-कभी बिगाड हो जाय तो ?

रसिक-रुबरु मिलकर माफी मांगना-या-पत्रद्वारा अपनी भूल

मंजूर करना,

दोस्त-अगर वह-न-माने-तो,-?

रसिक-दोस्तानेकी गुजरी हुई बात-बिगाडमें दुसरोके सामने

जाहिर मत करना और-सच्चे दिलसे उनके साथ बर्ताव

रखना मोहब्बतफिर शुरूहोगी-मित्रतामें निरभियान-

और-द्वेषरहित बर्ताव रखनेहीसे सबकाम ठीक होतहै,

(७)-जो-मनुष्य-तुमारेसाथ नही बोलता-और-तुमारामन

उससे प्रीतिकरनाचाहताहै, वस ! तुम उसमें प्रीतिकी भावना करो,

जरूर आपसे प्रीति करनेलोगेगा, जिसमनुष्यका दूरदेशमें होनेसे

पता मालूम नहीदेता उसपर ध्यानकरनेसे-वह-जरूर आजाताहै,

ईसका निश्चय उसीसे होसकताहैकि-तुमको घरआनेकी क्व ईच्छा

हुईथी-?-तो-वह-वहीसमय बतलायगा जबसे तुमारा खयाल उस-

परहुवाथा, दूसराप्रमाण यहहैकि जबकिसी स्नेहीका दूरदेशमें अं-

तकालहोजाताहै और समाचारभी अवतक नहीआयेहै-उससेप-

हिलेही स्नेहीके मनमें रंज पैदा होजाताहै, ईससें मालूमहुवाकि-
जिसपर मोहब्बत हो-उसपर मनमनका आकर्षक यंत्र जरूर लगा
रहतहै, लेकिन ! पूर्वभवका तुमारे और उनके संबंध होगा-या-
नया संबंधलगना ज्ञानीयोंने देखाहोगा-तभी बनावनेगा, नहीतो
हर्गिज न बनेगा, अगर एकपक्षीराग होगातो एकका राग-और-
दूसरेको कुच्छ खयाल नही, मनमें दुर्ध्यानरखनेसें अशुभकर्मोका
बंधहोताहै, ईसलियेहरवरुतमनको साफ रखना चाहिये, जिसको
तुमचाहतेहो वह दुसरेसें खुशहै-और-जिसपर तुमनाखुशहो वहतु-
मारेपर खुशहै, जिनसें तुममिलनाचाहतेहो-वे-दुसरोसें मिलतेहै-
और-जिनसें तुम अलगरहना चाहते-हो-वे खुद आनकर मिलते-
है,-क्याकहाजाय ! संसारकी यहीस्थितिहै, यहवात कभी मतभूलो-
किस्मतकी बात कोईमिटा नही सकता, याद रखो ? एकदिन दे-
शनगर-राज-रैयत-अपने-पराये-सबको छोडनाहै;

(८)-हरेकचीजमेंसें समयसमयपर परमाणु निकसतेरहतेहै, कई
चीजे ऐसीहैकि-हाथमें रखकर कुच्छदैरतक स्पर्शकरोतो शरीरमें
उसकाअसर पहुंचजाताहै, बर्फको हाथमें रखोतो ठंडकेमागे हाथ-
कांपनेलगतेहै, पांवके तलवोंमें लेंपकरनेसें मस्तकमें असर पहुंच-
ताहै, गुलाबचमेलीबगेराके फुलोंकी जोखुशबू आती है असलमें
उनके परमाणु नाशिकामें जालगतेहै, शरीर-जवान-नाक और-कान
प्राप्यकारी, मन-और-चक्षु-अप्राप्यकारीहै, रागभावसें जिसके श-
रीरपर स्पर्शकियाजाय उससें उसकोखुशी पैदाहोतीहै, जैसेकि-
घोडेके शरीरपर कोईमोहब्बतसें थापदे-तो-वहखुशहोकर इनहना-
ताहै वैसे औरोंकाभी ढाल जानना चाहिये-सांप-और-विंछूकेस्पर्-
शसें जो तकलीफहोतीहै-सब-उनके परमाणु जहरीलेहै, जवान-

पर-कोईचीज रखो-या-नाकसें-सुंघो-तुर्त्त उसके आठ स्पर्शी पर-
माणुं-स्पर्शहोकर असर करतेहै, कोईशरूख अंधेरेमें बैठाहो-शिवाय
चुपचापके औरकुच्छ वहांपरनहीहै उसवखत अगर वहांकोईस्त्री-
आजाय-और-उसके गहनेकी अवाज कानोंमें सुनाईदे-तो-मालूम
होजाताहै कोईस्त्री यहां-आरहीहै, कानोंमें आठस्पर्शीपरमाणुलग-
नेहीसें यह मालूम हुवा, ज्ञानावरणीयवगेराआठकर्म-मन-वचनके-
योग-और-कार्माणशरीर-इनके परमाणुं चारस्पर्शीहोतेहै-शब्द-
अंधकार उद्योत-धूप-छांव-और-प्रभाके-परमाणु-आठस्पर्शी होतेहै,
चारस्पर्शी परमाणुं इंद्रियगोचर नहीं होसकते, आठस्पर्शी-
होसकतेहै, आरीसेमें अपना मुखदेखनेवाला-शरूख-आरीसेंको
और उसपर पडे हुवे-अपनेशरीरके आठस्पर्शी परमाणुंको देख-
ताहै,-फोटोग्राफकी-तस्वीरभी शरीरसें निकसेंहुवे आठस्पर्शीपर-
माणुका एकसमुहहै, तारमें जो समाचार दिये जातेहै-वें भी-आठ
स्पर्शी परमाणुके खुटकेद्वारा जो संज्ञावांधरखीहै, उसको समझकर
पिनसलद्वारा लिखदिये जातेहै, रैलका प्रबंधभी-जल और अग्नि
केसंयोगद्वारा है.

(९)-तुमको अखवार पढनेका शौकहै-तोकइलेख देखेहोगें
सोवर्ष पहिले दुनियामें रैल नहीथी-न-तारथा, इस्वीसन (१८१८)
मे पहिलपहिली विलायतमें रैल जारी हुइ, फ्रांसमें-सन (१८३८)
चली, अमरिकामें (१८३८) में-जर्मनीमें (१८३५) में-रुसमें
(१८३८)-स्पेनमें-(१८४१)-भारतमध्यखंडमें(१८५२)-और-रुममें
(१८६८) में-रैल जारी हुइ, कुल (१००) वर्षके इधरही इसकी
शुरुआतहै, शास्त्रोंमें पढतेहोकि-पूर्वकालमें आकाशगामी विमान
विद्याधर लोग चलातेथे सोठीकहै, इस जमानेमें विद्याधरलोग

रहे नहीं-न-वैसाधन-विद्या-और-पुन्यवानो रही. जैसा-समय
वैसी-सामग्री रह गई, इसवख्त जानेआनेके लिये रैलहीका साधन
उमदा समझ लो. यह स्वाभाविकनियमहै कि-जिस जमानेमे जि-
सकी वरावरी दुसरी चीज नहो-उसवख्त वही उमदा गिनना चाहिये,

(१०)-एकगुरुकों तीन शिष्य थे,-लेकिन !उनमें कौन कैसा
है उसका इस्तिहान लेनेकेलिये-एकएककों अलगबुलाकर कहा,
मुजे आम्रफल खानेकी इच्छा हुई है,-शिष्य-नाकमें बलडालकर
कहने लगा-आपकी बुद्धि आजकल किसहालमेंहै ?-गुरुकों कुच्छ
इच्छा तो-थी नहीं-फक्त उसका इस्तिहानलेनाथा-सो-होगया,
और अपना अभिप्राय उसकों विदित नहो इसलिये कहदिया
हां ! आज मेरी तबीयत कुच्छ ऐसीही है. जाओ ! दूसरेकों भे-
जदो-उसने दुसरेकों भेजा, गुरुने उसेभी यही बात कही, उसने
कहा, ठीकहै-सौचकर-जवाब दुंगा, इसकोंभी कुच्छ योग्य-और
कुच्छ अयोग्य जानलिया, और कहा ! जाओ ! ! तीसरेकों भे-
जदो, तीसरा आया-गुरुने उसेभी यहीबात कही, शिष्यने कहा !
बहुत अच्छा ! लाता हूं,-गुरुने इसीको योग्य समझा, बतलाओ !
तुमकों कैसा बननाहै-सौचकर जवाब दो ?

(१३)-कुसंग-और-सत्संगपर एक कविका वचन सुनो,

[सवैया.]

विगरे पय कांजीकीछांट पडें-कलधौत कुथातपडें विगरे,
विगरे कुलजात कलंक लगे-नृपराज अनीतकिये विगरे,
विगरे तपपुंजकषाय चढे-पद ऊंच कुमंगतसं विगरे,
विगरे द्वितमित्र जहांछलहै-युभयर्म मृपामतसं विगरे,

सुधरे शठ पंडितसंगतसें-अविनीत कलाधरसें सुधरे,
 सुधरे मिलपारस लोहसही-और ताम्र रसायनसें सुधरे,
 सुधरे विषऔषध वैदनसें-मलयागिरिसें वरवा सुधरे,
 सुधरे अघहिंसक साधुथकी-भवकोटि अगाधतपें सुधरे, २,

[घमंडकरना बुराहै,]

मान ! रे ! मानव ! मानबुरो-मतिमान-गुमान-न-मान-न-नीकों,
 मानकिये अपमान लहे-न विमानलहे वरदेवपुरीकों,
 मान मीटे सन्मान बढे-परमान करो शुभवाक्य मुनिकों,
 मानसजन्म समान नहीकछु-धर्म समान नही और नीकों, ३,

(१४)-विना चीज लडाईलडे-वहभी-एक मूर्खोंका शिरता-
 जहै, एक शख्श-अपनी औरतसें कहनेलगा-कलरौज-मैं-एकभेंस
 लाउगा औरतनेकहा बहुतठीक ! मलाई-मैं-खाउंगी, मर्द बोला-
 मलाई तुजे नही मिलेगी, मेरेलिये मलाई और तेरे लीये-कोरादुध-
 दुंगा, बस ! ईसपर खूब जिद हुईयहांतककि-लडाई होगई-और-
 दूसरोंने आनकर फैसलाकिया, हरेकशख्शकों मुनासिबहै नाहक
 लडाई नलडे, एकशख्श अपनी औरतकों-सुसरालसें लेकर अपने
 गांव आताथा, रास्तेमे एक नदी आई, औरतनेकहा मेरेपांवमें रंग
 था, नदीके जलसें उतर जायगा, इसका क्या करना ?-पतिने कहा
 तेरेपांवकों जलसें कुच्छ उंचे रखकर इसतरकीबसें घसीटकर ले
 जाउगाकि-रंग-न-बिगडेगा, औरतने कहा-मेरी जान जायगी,
 मर्द बोला-जानजाओतो क्याहर्ज है ? लेकिन ! रंग-तो-रहेगा,
 देखिये ! जैसेभी मूर्ख दुनियामें है-जो-औरतकी जान गमानेकों
 आंमादा हुवे-परंतु रंगगमाना नही चाहा, औरतने पतिका बेहु
 दापन देखकर आप पांवोंसें चलकर पारहोगई और रंगकी कुच्छ

परवाह नहीं किइ, मूर्खोंकी लीलापर खयाल नहीं करना और अपनी जानकों बचाना चाहिये,

(१५)-जितनेदोस्त तुमने किये-या-करतेहोसब तुमसें अपना मतलब निकाल लेतेहै-और यश नहीं देते, इसीसें कहाजाता हैकि-सौचसमझकर दोस्त बनाओ, तुमारा मन हजारंहतरहके सोच फिकरमें हमेशां लगा रहता है-कभीपारनहीं पाते, इसका उपाव सुनोतो हम बतलावे-असल इसका यही उपाव हैकि-गइ वस्तुका सोच मतकरो और वर्त्तमानमें खयालरखकर बर्त्तो, इसीसें सबकाम ठीक होगा, दुसरेके औरत देखकर तुम अपना मन लोभातेहो, सौचो ! इससे क्याफायदा मिलेगा ? जो चीज अपनी नहीं उससे मन लोभाना बेकारहै, जहांसें बहुत फायदा होनेकी उमेदथी-वहां थोडाहुवा-तो-उसीमें सबरकरनामुनासिव है, नफानुकशान अपनी तकदीरके तालुक है, तुमारे भाइयोंसे तुमकों हमेशां तकली रहती है लेकिन ! क्या कहा जाय ! तुम लाइकवर हो गम खाओ, तुमने अपने कुटुंबकी बहुत पाळनाकिइ-और करतेभी हो-लेकिन ! उनलोगोंका मन तुमसें राजी नहीं, यही तो जमानेकी खुबीहै, नयामकान बनानेका कइदिनोंसें तुम इरादा करतेहो-लेकिन ! अब उस इरादेकों छोडदो, मकान बहुतहै, जरूरतसें ज्यादा बनाना क्या फायदा ?-तुमारी औरतसें अलवते ! तुमारामन राजी नहींहै उसका यही उपाव हैकि-नसीयत देतेरहो, और विद्यापढाओ-आप-लियाकत हासिल करेगी,

(१६)-प्रायःतुम झूठनहींबोलतेहो-यह तुममें वडा गुणहै, ईसी गुणसें तुमारी तरकी हुइ औरहौगी, धर्मकाममें तुम खर्चभी करते हो-लेकिन ! पीछेसें पस्तातेहो-यहअच्छानहीं, यहखूब यादरखो

दौलत धर्मकी दासी है, तुमको धन बहुत मिला-लाख हांरुपये आये गये, लेकिन ! पासमें कुछ नही रहा, इसका सोच-न-लाओ, खायपिया और धर्ममें लगाया यही सार है, जिसको यहां छोड़ जाना है उससे ज्यादा ममत्व क्यों करना ?-तुमारा काम जब फतेह होने पर आता है दुश्मन लोग विगाड डालते है, लेकिन ! इसमें किसीका दोष नही समझो--विगाड सुधार अपनी तकदीरका है, तुम हर वख्त दिलमें डरते रहते हो-यह-आदत बिल्कुल छोड दो, डरनेसे आदमीकी बुद्धि मारी जाती है, शास्त्रोंका फरमाना है कि-दिलके बहादूरको सब चीज आन मिलेगी, दुश्मन तुमारे कदम कदम पर खडे है लेकिन ! सामने हुये वाद कुछ नही कर सकते यह तकदीर हीकी तारीफ है, तुमारी बुद्धि-अलबते ! बडी तेज है-बिगडे हुवे कार्यको भी सुधार देते हो-लेकिन ! वख्त पर-अपने काममें गाफिल रह जाते हो-यह ठीक नही, किसीकी जमानत मत देना तकलीफ पाओगे, अत्यंत प्यारेके लिये देना पडे-उसका हर्ज नही,-लेकिन ! जमाना बदला हुवा है इसको पहिले सोच लेना चाहिये, वकाल तपठकर ऐसामत करना कि-सच गवाहको झूठा-और-झूठको सचा बना दो, घरका भेद-और-दिलका ईरादा किसीके आगे बयान मत करो, जिसकी सलाह लेना मुनासिब समझो उसके सामने कहना हर्ज नही, अगर तुमसे नयी विद्या पढना नही बनसकता-तो-खैर ! हर वख्त किसी पुस्तकको वाचते रहो, लेकिन ! ऐसा पुस्तक वाचना ठीक नही जिसमे कुछ समझ ही न पडे, ग्रंथ-वो-वाचना चाहिये जिससे मनको आनंद मिले और नयी वात भी हासिल हो, इस पुस्तकमें कई बातें नयी मिलेगी. गौर करके देखते जाओ,-ग्रंथकर्ताकी तारीफ जब है कि-उसके ग्रंथको लोग-मुन्नबर्गके हफोंसे लिखाकर पास रखना चाहे, यह खूब याद रखो ! धर्मकी उत्तम शि-

क्षा पाये विना कोई शख्स अपना-या-संसारका-उपकार कभी नहीं करसकता,—

संवत् (१९४७) में-हमारा चातुर्मास-दिल्लीमें हुआ, दिल्लीशहर कइदफे उजाड हुआ और बसा. दशदशकोसकेघैरेमें टूटीफूटी इम्मारतें और मकबरे यहां इतने खडे है जिनको देखते थकजाय, जमनानदी इसके नीचे बहरही है, बागवगीचे-तालाब-दरखत-नयेनयेमकान-और-वाजार देखने लाइक है, दुकानोंमें तरहतरहके मालअसवाब-कहीं मेंवा नाशपाती-और-कहीं-मिठाइ-वेचनेवाले बेचरहे और लेनेवाले ले रहे है, श्वेतांवर श्रावकोंके घर-यहां (१००)-और-मंदिर (२)-एक नवघरेमें और एक चेलपूरीमें.-हमाराठहरना मालीवाडेमें हुआथा,

[इनदिनोंमें-यतिजी-पं-जयचंड़जीने-नि-
म्लिखित प्रश्न-हमसेपुछे-उनका जवाब
इस तरह दियागया.-]

(प्रश्न पहिला.)-केवलज्ञानी समुद्घात करे-या-नहीं ? करें तो कितनी दफे करे ?

(जवाब.)-केवली दो तरहके-एक-सर्वज्ञकेवली-दुसरे श्रुतकेवली सर्वज्ञकेवली समुद्घात करे तो एकही दफा करे, जिसमें आठसमयतक दैर लगे, दूसरे श्रुतकेवली-छह समुद्घातमें कोइसीभी एकदफे-या-अनेक दफे करे, जिसमें अंतर्मुहूर्त्तकालदैर लगे,

(प्रश्न दुसरा)-नवनिदानोंमेंसे कितनेनिदानोंमें धर्मप्राप्ति हो ? और कितनोंमें नहो,

(जवाब.)-प्रथमके छह-निदानोंमें धर्मप्राप्ति न होसके-पीछले तीनमें हो.

(प्रश्न तीसरा,)-सामायिक करनेवाला श्रावक-विना गुरु-आज्ञा किसकी लेवे, ?

(जवाब.)-गुरुके अभावमें उनकी स्थापनासें आज्ञा लेवे.

(प्रश्न चौथा.) दीक्षा लेनेवाला मनुष्य-विना गुरु अपनेआप दीक्षा ले सके-या-नहीं ?

(जवाब.)-न लेसके, क्योंकि-सर्वविरति चारित्र-विद्यमान गुरुके प्रासही लेना शास्त्र वचन है, विना गुरु शिष्य किसका बनेगा ? मनकल्पनासें दीक्षा लेना-प्रमाणीक नहीं.

(प्रश्न पांचवा.) गणधरकों केवलज्ञान होवे-या-नहीं ?

(जवाब.)-क्यों नहीं ? केवलज्ञान हुये बादभी गणधरपदवी वनी रहती है,

(प्रश्न छठा) आजकल भारतवर्षमें कितने गुणस्थानवर्ती मनुष्य मिल सके.

(जवाब.)-सातगुणस्थानतक मिलसके, इसके बढकर न मिलेंगे,-

(प्रश्न सातवा.) रिषभदेवकेवरुत-सम्मत्शिखरतीर्थ-था ?

(जवाब.) नहीं था, उसवरुत-फक्त शत्रुंजय तीर्थही था, पीछें ज्युंज्युं तीर्थकरणोंके निर्वाण वगेराहोते गये-तीर्थोंकीस्थापना होती गइ, यह कोई नियम नहींकि-सभीतीर्थ-प्रथम तीर्थकरके वरुतही स्थापित हो जाय.

(प्रश्न आठवा.) चतुर्थ गुणस्थानवर्तीकों पंचमगुण स्थानवर्ती-नमस्कार करे-या-नहीं, ?

(जवाब.) चतुर्थगुणस्थानवर्ती देवता-या-मनुष्य-कोइ हो-उसको

पंचम गुणस्थायी श्रावक-स्वधर्मी भ्राता समझकर नमस्कार करेतो क्या हर्ज है, ? क्या सम्यक्तधारी देवते चतुर्थ गुणस्थानवर्ती-श्रावक नहीं है ? अगर है-तो-फिर आपसमे नमस्कारकरना कौन हर्जकी बात हुई ?

[इति प्रश्नोत्तर समाप्त,]

संवत् (१९२५) में- तपगच्छके-श्रीपूज्यश्रीधरणेंद्रसूरिसैं तकरारकरके-मुनिराजेंद्रविजयजीने-जो-तीनस्तुतिका मत निकाला-मुनिधनविजयजी-उन्हीके अनुयायी है, चतुर्थस्तुतिनिर्णयछेदनकुठारग्रंथ ईन्होंनेही बनायाहै,-मुनिराजेंद्रविजयजीने सर्वविरतिचारित्र किसीगुरुके पास नहीं लिया, आपहीआप विना गुरु किये साधु बने, सूरिपदवीभी किसीने नहीं दिई, शास्त्रोंके वचनकों लोपकिया ईससैं निन्हवोंकी पंक्तिमें गिनेगये, पहिलेदिनोंमें जोजो स्तवन सझायवनायेथे-उनमें कहींकहीं टाणांगसूत्रवगेराकी-जो-साक्षी दिईथी-इंदोरकी सभामें मुनिश्रीझवेरसागरजीके सामने झूठे पडे, और उनपाठोंकों बदलनापडा, फिर कईदिनोंतक ऐसीभी श्रद्धारहीकि-जीवकों कोईमारताहो उसे छुडानानही. कहतेथे छुडानेसैं पापहोताहै, जब श्रीझवेरसागरजीने कहाजीवोंपर अनुकंपाकरना जिनेंद्रोंने कहीं मना नहीं किया, दानके पांचभेद जहां वर्ननकियेहै अनुकंपादान उनमें सामिल रखाहै, फिर जीवकों वचाना कैसे पापका कारण होसकताहै?-जब लाजवावहुवे-तब-कबुलहोनापडा, पहिले कहतेथे साधुलोगोंकों जिनप्रतिमाकी प्रतिष्ठा नहींकराना चाहिये, फिर जब तीनथुईके मतकी दुकानदारी जमी-तब-आपही प्रतिष्ठा करने लगे, कहिये ! क्याबात हुई ? जिसमुखसैं नाकरना उसीसैं फिर-हां-करना, पहिलेदिनोंमें कहतेथे जिनप्रति-

माकों अंगीरचाना मुनासिवनही, राग उत्पन्न होगा, फिर कहने लगेकोईहर्जनही, पहिलेकहतेथे जिनप्रतिमाकी पूजामें साधुलोगों-कों अनुमोदनाकरना ठीक नही. क्रिया लगेगी, फिरबोले कोईहर्जनही, पहिलेकहतेथे-जोजो प्रकरणवगेराग्रंथहै-सो-(४५)पेंताली-सआगमसें विरुद्ध है, हम नहीमानेगें, फिर इंदोरकीसभामें मुनि-श्रीझवेरसागरजीके सामने जब लाजवाबहुबेकहनेलगे ठीकहै, क-हिये ! जिनकों कदमकदमपर शंसयशत्रुने घैराहे उनकी श्रद्धाका क्या ईतवारकियाजाय ? जहां पंडितोंकी सभा हो-वहांसें दुमछि-पाकर भागना-और-अपने श्रावकोंके सामने सूरि-और-न्यायच-क्रवर्ती बनना, कहो ! कैसीबातहै ? इंदोर-और रतलामकी चर्चामें मुनिझवेरसागरजीके सामने क्यों न हुबे ? असलमें उन्हीदिनोंसें पीलेकपडेवाले मुनियोंसें द्वेषकी जड लगी, और द्वेषके मारे पीतां-बरीकहनेलगे,-लेकिन ! यहनहोमालूमकि-निशीथसूत्रके सोलहमें उ-देशेमें गणधरोंने क्याफरमाया है ? क्या ! वहां नही लिखाकि-जब साधुलोगोंकों नयाकपडामिले तो ईतनीचीजोंसें उसको रंग लेवे, क्या ! मलीनांबरी मुनिराजेंद्र विजयजी और धनविजयजीने अ-वतकईसपाठकों नहीदेखा, अगरदेखा हैं-तो-उस मुआफिक बर्त्ताव क्यों नहीकरते ? मूर्खोंके सामने क्यों नर्द दगाकी खेलते है ? अगर किसीकों शंकाहो-लेख छपवाकर मेरेपास भेजे, मैं-उ-सकों छापेद्वारा जवाबदुंगा, चीठीमें जवाब देनेसें लोग बदल जाते है,

मलीनांबरी-मुनि-राजेंद्रविजयजी-और-धनविजयजी--श्वेत-वस्त्र धारीयतिश्रीपूज्यवगेरासें ईसलिये नाराजहै कि-उनसेंतो त-करार करके निकले, चंद्रौज श्रीपूज्यवनकर छडीचवरकी उमेद

पुरी किई,—पुरीभी कहां हुई ? वल्किन् ! जावरेमें संवत् (१९२५) की-साल वैईज्जती होनापडा, जब पकडेगये कहनापडा हमतो साधु होगये है ? हमसें और छडीचवरसें क्यामतलवहै ?—पीलेकपडेवा-लोंसें ईसलिये नाराजहुवेकि—रतलामकी सभामे—मुनिश्रीझवेरसाग-रजीसें हारखाकर भागना पडा अब ईन्होंको—मलीनांवरपद मिलाहै, कपडेभी मलीन—और—मनभी मलीन, दोनों तरहके अन्वयकी ई-नमें योग्यताहै, पाठकवर्ग !—आपलोगईनकों श्वेतांवर—दिगंबर—पी-तांवर—रक्तांवर—नवांवर—डिसेंवर—कुच्छ मतकहिये, मलीनांवरही कहा किजिये, ईसीपदके ये लोग लोईकहै,—

चतुर्थस्तुतिनिर्णयछेदनकुठार ग्रंथ बनाकर चाहाकि—हम—अ-पनेमतकी पुष्टिकरे लेकिन ! कुवेकाजलपीछाकुवेमें चलागया, को-इवार्त पार—न—उत्तरी, भीतरसें कपट और जाहिरातमें दुंढियोंकी तरहदयाधर्मियोंका चांद लेना चाहालेकिन ! सबलोग मूर्ख नही है, सबजानेहुवे बैठेहैकि—ये—लोग—देवताके नींदकहै, जहांजाना भो-लेलोगों भ्रममेंडालकर कहना—सम्यक्त—लो, फिर धीरेधीरे तीन-थुईका मत पकडाना, अगर तीनथुई—सत्यहै—तो—क्याकहतेहो ? तीन-और—चार—दोनोंवात सत्यहै, अगर चतुर्थस्तुतिभी सचहै—तो—ती-नथुईके हठवाद्सें क्या सार निकाला ? जिंदगीतक झगडेदंटोंमें फ-सकर आत्मसाधनकों खोया, ईससें तो—यतिअवस्थाहीमें रहकर झूठीप्ररूपनासें वचेंरहतेतो ठीकथा, उत्सूत्रभाषणसमान कोईबडापाप नही, सबक्रिया धरी रहेगी—उक्तपाप दुर्गतिकों लेजायगा, जमालि-जीने गौतमगणधर जैसी क्रिया किई लेकिन ! देखलो ! किस गतिकों जानापडा ? हरेकशखशकों चाहिये श्रद्धामें अचल रहे,—

“चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठार”-यह ग्रंथ बनानेसें मुनि धनविजयजीको एक प्रकारका लाज जरूर हुवा यह तो हम मन्त्री कह सकते है, एक अहमदावादवाले श्रावकने एक गोधावी गाम निवासी श्रावकों (जोकि-मुनि धनविजयजीका अनुयायीथा) कहा कि-देखो! आत्मारामजी महाराजने “चतुर्थस्तुति निर्णय ग्रंथ बनाया है इसमे (८२) ग्रंथोंकी साक्षी दीयी है, इसके उत्तरमें त्रिस्तुतिअनुयायी श्रावकने कहा हमारे धनविजयजीमहाराजने ग्रंथ बनाया है उसमें [२७७] ग्रंथकी साक्षी दीयी है, बताइये कौनकी तेजी रही? पाठक गए! अब कहो यह कैसाक शास्त्रार्थ हुवा? एकने मुंह खोला दूसरेने फौरन उसको सील दिया, सोचो! मुनि धनविजयजीको यह कितना लाज है? कितना शिर पचाना कम हो गया. उनके श्रावक ही दूसरेको लाजवाव करनेकी ताकात वाले होगये, परंतु वस्तुतः इसमे कोई सार तत्व न निकला, कुछ बिना संबंधके अधिक ग्रंथोंकी साक्षी देनेमें सत्यता नहीं हो सकती, सत्य युक्ति एकत्री हजारें तर्कोंके लिये वहीत, और हजार कुतर्क एक सत्य युक्तिके लिये नी थोमी है, हम क्या! सब कोई मनुष्य निःशंसय कह सकते है कि-सूरिराजेंद्रविजयजीने और उनके शिष्य मुनि धनविजयजीने देवताओंकी आशातना करनेमें सरासर अधिक जौर दिया, अब इस प्रबंधसें निर्दोष होना चाहे हरगिऊ नही होशकते, अपनी मानी हुई वातकों हरकोई सच्च समझता है परंतु अगर वह शास्त्रसें विरुध है तो उसकों ठोमकर अलग होना, तारिफका काम है.

कोई शरूश एक जगह किसी बातको अन्यथा कथन करे उसको अनेक जगह अन्यथा बोलना पमता है, देखीये! एक चतुर्थस्तुतिके निषेधसे अनेक जगह देवताओंका स्मरण आराधन निषेध करना पमा. दीक्षाविधिमें जहां शासन देवताका स्मरण-वैयावृसकरादिका कायोत्सर्ग-देवबंदनमें श्रुतदेवता आदिका का-योत्सर्ग-वगेरा सब जगह अपेक्षा हुंढ हुंढके अन्य अन्य बातोंका शरण लेना पमा, वंदितासूत्रमें-“सम्मदीठीदेवा”-की जगह-सम्मदीठी जीवा,-कहना पमा, किंतनेक ऋषिक श्रावक इसबातसे शंसयवान् हुवे, बतलाईये! क्या लाज हुवा! बस! अपने मममें सच्ची सच्चे है परंतु ज्ञानीयोंके सामणे जो है सोही है.

कितनेक महाशय कहते है गणधर प्रणीत चार स्तुति कौ-नसी है? होवें तो मान जी लेवे, परंतु यह तर्क कार्यकारी नही, गणधरोंके कथनानुसार जो जो चार स्तुति आचार्योंने रची वे सब गणधरप्रणीत ही है, जैसे जिनेन्द्रोकी कही हुई अर्थरूप वाणी गणधरोंने सूत्ररूपें गुथी परंतु वस्तुतः जिनेन्द्रप्रणीत ही है, कि-तनेक कहते है पांचमे-बठे-सातमे आदि गुणस्थानवार्ते श्रावक साधु देवताओंको नमस्कार कैसे करे? उत्तर, श्रावकजन स्वधर्मी वृद्ध श्रावक जानकर देवताको नमस्कार करते है, धर्मक्रियामें साहाय्यकारी जानकर साधुजनो स्मरण आदर वगेरा करते है, सम्यकदृष्टि देवता चतुर्विधसंघके वहार नही. संघ* सबको पूज्य है इस लिये साधुजन जी देवताको गौणतासे नमस्कार करते है

* तीर्थकर भी श्रुतज्ञानका आधार जानकर और पूज्य पूजान्यायको अ-नुसरके संघको नमस्कार करते है.

ऐसा कहनेमें क्या दोष है? न कुछ, -केवल अपनी अपनी समझका फर्क है, असलमें जो बात सत्य है वह सत्य ही ध्यायी रहेगी.

चतुर्थस्तुति निर्णयवेदनकुठार ग्रंथके [४५ए] पृष्ठपर पंक्ति चोथीसें मुनिधनविजयजीनें हमारे संबंधमे निम्न लिखित लेख लिखा है कि—

“आत्मारामजीने कोई प्रकारनी शंका उपजी तेथी धर्मसंग्रह ग्रंथभां पोतानो प्रहेप करेलो पाठ तथा यंत्र तेनी प्रतनो लहैया पासे बीजो उतारो कराववा मेशाणोथी पोताना शिष्य शांतिविजय पासे श्री अमदावाद मोकली सारे शांतिविजयजीए ते प्रत लहीयाने लखवाने सोंप्या पढी ते लहीयो केटलेंक दहामे कोई तेना कामने प्रयोजने अमारी पासे आव्यो. त्यारे अमें तेने पुढ्युं के हमणा तमे थुं लखों ठो? त्यारे तेणे कहुं के आत्मारामजीनो धर्मसंग्रह लखुं छुं, सारे अमे तेने कहुं के ते प्रत अमारे देखवी ठे, त्यारे तेणे कहुं के शांतिविजयजीए कहुं ठे के कोइने प्रत देखामवी नही.” इत्यादि—

उत्तर—मुनि धनविजयजी लिखते है कि—धर्मसंग्रहकी प्रति, जिस लहियाको लिखने दीयी थी उसको शांतिविजयजीने कहा था कि-किसीको बताना नही. पाठकगण! यह बात बिलकूल झूठ है. हमने न तो किसी लहियाको प्रति लिखने दीयी और न लिखवायी. अगर यह बात सत्य ही होती तो धनविजयजी हमको रूबरू मिलकर पुठ लेते, दूर तो नही थे. (संवत् १९४४) में हमारा चातुर्मास जी अहमदावादमें था, शेठ, दलपतजाइके मकानमें ठेरे हुवे थे. मुनि धनविजयजी जी इसी शहरमें पांज-

रापोलके उपाश्रयमें ठेरे थे, आनकर खबर खुलासा कर लेंते, दूर ही दूरसे मनमें घटना करते रहना, सुनी न सुनी बातकों दिल चाहं लिख देना. यह क्या ! संसारसें विरक्तोका काम है ? यह तो सपत्नीकी लड़ाइ जैसा हुवा. लहियाने कहा वह सच, और हम खबर बैठे थे वह झूठे, क्या बतावे ! यह वही कहलावत हुइ कि-देवदत्त और यज्ञदत्त नामके दो मित्र एक समय एक स्थानकमें मिले तब यज्ञदत्तने देवदत्तसें कहा कि हमने सुना था तुम मर गये !-देवदत्त बोला मित्र ! यह कथन झूठ है, जब प्रसक्त ही मै तुमारे सामणे खमा हुं तो मर कैसे गया ? तो ज्ञी फिर यज्ञदत्त कहता है नही जी ! मेरेसें एक प्रमाणीक पुरुषने कहा है कि-देवदत्तजी मर गये, वस ! जैसा यज्ञदत्तका विश्वास देवदत्तके प्रसक्तमें ज्ञी यही है कि-प्रमाणीक पुरुषका वचन है मुनि धनविजयजीका ज्ञी तद्वत् विश्वास है कि-लहियाने कहा है,-परंतु ऐसा आग्रह करना ठीक नही, संसारी मनुष्य ज्ञी जो सज्जन जन है कुञ्च विषयको लिखने लगते है तो सोच समझ कर लिखते है, मुनि जनोको विशेष सोचना चाहिये; हम मुनि धनविजयजीसें ही पुछते है क्या ! शहर अमदावादमे हमारा तुमारा मिलना कज्ञी नही होता था -? एक दूसरेको पुस्तककी चाहना होती थी तो नही देते लेते थे ? केई दफे पुस्तक देखनेको ले जाते थे, मुनिश्री विवेक सागरजी द्वारा खुद तुमने श्रीवासुपूज्य चरितकी प्रति मंगायी थी. फिर उन्होंके स्वर्गवास हुए पिछे तुमने पीढी ज्ञेजी थी-तो क्या ! धर्मसंग्रहकी प्रतिविषयक संसय निवर्त्तन खबर मिलके नही किया गया ?

चतुर्थ स्तुति निर्णय बेदन कुठारकी प्रस्तावनाके (६३)मे पृष्ठपर मुनि धनविजयजीने चतुर्थस्तुति निर्णय ग्रंथकी कितनीक अशुद्धियां बतलाकर पिठें गुरुप्रशस्तिके श्लोकोके बंदोजंग और व्याकरण दोष दिखलाये है इसका समाधान यह है कि-भापेकी अशुद्धिका ओलंजा ग्रंथ रचयिता को देना सार्थक नही, किसी जगह ग्रंथकी कोपी करनेवालेका हस्त वा दृष्टि दोष रह जाता है किसी जगह भापनेवाले वा प्रुफसीट करनेवालेका रह जाता है, अलवते ! ग्रंथकर्त्ताने जो कोई काव्य वा गद्यरचना संस्कृतमे कीयी हो उसमें कोई व्याकरण बद् दोष वगैरा वक्तव्यता रहजाती हो तो उसका ओलंजा जरूर ग्रंथ कर्त्ताको दे सकते है, (आपही अपनी अशुद्धियांको देखिये !)

[मुनिधन विजयजी रचित संस्कृत मंगलाचरण और गुरु प्रशस्तिके काव्योंका अशुद्धि प्रदर्शन नीचे मुजब.]

चतुर्थस्तुति निर्णय बेदन कुठारका प्रथम पृष्ठ, प्रथम वृत्तका पहला पद.

“श्रीअर्हं जिनवीरमीश्वरविभुं त्रैलोक्य चिंतामणिं”

श्रीअर्हं-यहां व्याकरणके नियमानुसार संधि होना चाहिये क्यौ कि-एक पदमें नित्यसंधि होती है (तथाहि) संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः नित्या समासे वाक्येतु सा विवक्षाम पेक्षते,-

चतुर्थस्तुति निर्णय बेदन कुठारके प्रथम पृष्ठपर दूसरे श्लोकका दूसरापद-“वीतरागं परित्यज्य योऽन्यदेवमुपासते”-यहां उपासते बहुवचन और उसका कर्त्ता यः यह ठीक नहीहै जो

३० त्रिस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

इसको यहां-येऽन्यदेवं-ऐसा पाठ करते तो क्रिया ठीक लगती, परंतु उत्तरार्द्धमे-स खरीं दोग्धि-यहां एक वचनसे पूर्वार्द्धमें श्री एकवचन चाहिये.-

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके प्रथम पृष्ठपर तिसरे श्लोकमे-“स्याघादनिधिं वीरं-प्रणिपत्य जगद्गुरुम्.”

स्याघादनिधिं वीरं-यहां सातवर्ण है इसलिये ठंदो जंग दोष हुआ. अनुष्टुप्मे प्रत्येकपदके [७] वर्ण होते है.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए५] पर गुरु प्रशस्तिके दूसरे वृत्तका तिसरा चरण,-“त्येवं वीरवचःप्रतापतरणिस्तीर्थं प्रवतिष्यति”-यहां प्रवर्तयिष्यति ऐसा चाहिये, क्योंकि णिच् विना वृत्तधातु अकर्मक है, उसका तीर्थ-कर्मके साथ संबंध नहीं हो सकता, और अकर्मक ही समजा जाय तो परस्मैपदमे इट् नहीं हो सकता.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए५] पर तिसरे वृत्तका चतुर्थचरण-“निग्रंथवीरुदमुशंति गणस्य सुज्ञाः”-वीरुद शब्द ह्रस्व चाहिये, गद्यपद्यमयी राजस्तुति विरुदमुच्यते-इति साहित्य दर्पणे.-

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए६] पर ठंठे वृत्तका चतुर्थचरण-“तन्नाम्नापि सुधर्मचंद्र इतियुत् सुज्ञाः समाचक्षते”-यहां युत्-शब्द व्याकरणके नियमानुसार अनन्वित और निष्प्रयोजन है.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए६] पर आठमे

वृत्तका तिसरा चरण-“सर्वदेववपुषि निस्पृहस्ततः-यहां षंदोजंग दोष होता है, वर्णाधिक्य है.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए६] पर नवमे वृत्तका तिसरा चरण-“तेन गञ्जगतपचमाह्वयं”-यहां आह्वयशब्द अगर गञ्जका विशेषण रखे तो जी पुङ्लिंग चाहिये. अगर स्वतंत्र रखे तो जी पुङ्लिंग चाहिये, आह्वय-पु०आ. x हे श । नामनिस-ज्ञायां प्राणिसाधने द्युते च-इतिवचनात्.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ [६ए७] पर तेरहमे वृत्तका तिसरा चरण “गए एष दधन्विपक्षिणो”-आगे पृष्ठ (६ए८) पर अठारहमे वृत्तका तिसरा चरण-“कल्याणान्यखिलजगद्गने दधन्यो”-यहां दोनो चरणोंमें दधन् शब्द अशुद्ध है दधत् ऐसा होना चाहिये, क्योंकि-“नाभ्यस्ताञ्जतुः” इस सूत्र करके नुम्का निषेध होता है.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारके पृष्ठ (६एए) पर बारहमी पंक्तिमें निर्मायि-क्रियापदकी जगह निरमायि एसा होना चाहिये, क्योंकि-यहां अमागम होता है.

चतुर्थस्तुति निर्णय ठेदन कुठारकी आद्यके पृष्ठपर जहां मुनिधनविजयजीने अपना और गुरुजीका नाम संस्कृतमें गुम्फित किया है-“क्रियाशुद्धयुपकारका चक्रवर्त्याचार्याः परमगुरुश्रीश्री १०८ श्री विजयराजेन्द्रसूरिजीतडिष्यन्यायचक्रवर्तिपरंपरानुगश्री युतपंमित मुनिधनविजयजीमहाराजविरचितः-इस वाक्यमें सूरिजी यह पद निर्वैज्ञक्तिक हुवा-चाहिये. सविज्ञक्तिक, क्योंकि चक्रवर्त्याचार्याः इस पदका विशेष्य है, “जी”-पद कुञ्ज संस्कृ-

३५ त्रिस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

तका नही जो विचमे रखा गया. "चक्रवर्ती"-यह समासमें दीर्घ नही चाहिये, इन प्रत्ययांत समासमे दीर्घ कैसे हो सकता है?

यह उपर लिखी हुई अशुद्धियां अगर सत्य है तो मुनि-धनविजयजी अपनी भूलको स्वीकार करे. लज्जित होनेका कुछ काम नही है, न अप्रसन्न होना चाहिये, क्योंकि-मनुष्य ही तो है भूलगये, हाथ ही तो है चूक गये, अगर असत्य है और इसके बारेमें कुछ लिखना पढना चाहे तो प्रमाणीक लिखाएके साथ व्याकरण और ङंदःशास्त्रके कायदेसे जो कुछ वक्तृता लिखनी हो लिखे, उत्तर दिया जायगा, जैसे चतुर्थस्तुति निर्णय ङंदन कुठारमें जगह जगह आत्मारामजीके नामपर कुवचनोकी वृष्टि और गाली प्रदान कीया है वैसा न करे, और, यदि इतने पर-जी वें गाली प्रदान करना चाहेगें तो उनकी मरजी,

“ ददतु ददतु गालीं गालीमंतो न्वंतः

वयमपि तदज्ञावाद् गालीदानेऽप्यशक्ताः ”

इसी वचनपर हमारा संतोष होगा, सच्च पूछो तो वास्तविक और उत्तमवात तो यही है कि-अपनी अशुद्धियांको जहां तो स्वीकार लो और जहांतो व्याकरण और ङंद शास्त्रका प्रमाण देकर शुद्ध करो, वृथा शंखनाद करके शौर मचाना कोई लाभ न होगा, महाशय ! अपने विश्वासीको समजाना सहज है एक दो बातोके दृष्टांत देकर रफू करना यह जी सहज है, परंतु विद्यानो के सामने शास्त्रार्थके कायदेसे वाग विलास करना सहज नही, शिष्टाचारसे जो कुछ कहोगे लिखोगे सबको मान्य हीगा. कुवचनबोलने स्त्री जनोको जी याद है इसीमें विद्वत्ता होती तो

सन्नीजन इसी समक पर चलते, देखिये ! युरूप और जर्मनके अंग्रेज विद्वान् जब कोई प्रकारका विषय वा प्रबंध लिखते है तो वह उमदा शैलीसे लिखते है कि-हृदसें ज्यादा, क्या बतावें ! जो रीति आयोंकी थी वह अनायों कों मिल गयी, अगर इन अशुद्धियोंके वारेमें आप कहोगे जो हमने लिखा वह सत्य है तुम क्या जानो ज्ञाप्यमें और बने जैनैड्व्याकरणमें ऐसा ही लिखा है तो हम पहलेसे ही लाजवाप है, हमने ज्ञाप्य और ब-मा जैनैड्व नहीं पढा, अगर कहोगें तुम सन्ना करो हम शास्त्रार्थ करनेको तयार है तो इसमें जी हम लाजबाय है, हमारा कोई हुकम नहीं चलता, जो सबको बुलाना ज्ञेजे, और न हमारे पास मरुधर-मालवा-गुजरातके सन्नीश्रावक लोग एक साथ आ-नकर हाजर होवे, महाशय ! यह तो सब रफू करनेकी बातें है, इनमें कोई लाज नहीं, अलवते ! आप न्यायचक्रवर्ती है आप उद्यम करे तो सब कुड बन शकता है क्योंकि-चक्रके अधिष्ठा-यक देव सबको घेरकर लाशकते है और अन्यजी आपमें इतना विशेष है कि-आपने मंत्र आराधनजी किया है, आपके ग्रंथमें (६९९) पृष्ठपर दसमी पंक्तिमे लिखा है कि-“ गुरुमतान्तःपा-तिना धनविजयेन नाम्नाग्र गणिनामया कुवादिवाक्स्तम्भनम-न्वाराधनेन-” मैने कुवादिओंकी वाणीको स्तंजन करनेका मंत्र आराधन किया है, अस्तु ! आपने आराधनजी किया होमा इसमे हम उजर नही करते, परंतु तर्क करनेवाले कह शकते है कि-मुनि धनविजयजी कुवादिओंकी वाणी अगर स्तंजन कर शकते है तो क्या ! अपनी अशुद्ध वाणीकों स्तंजन न कर श-

३४ त्रिस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर.

के, ?-हम तो यहां विशेषकुछ नहीं कह सकते हैं मंत्र आराधन करना और उसके अधिष्टायक देवको अपने वशमें लाना, सहजकी बात नहीं. जो मनुष्य मंत्राधिष्टायक देवोंकी स्तुतिका निषेध करे उनको देव प्रसन्न होनाभी मुश्किल है, जब आपके लिखे कुवचन सज्जानोंके सामने वाचे जाते हैं तो उन्होके मुखसे यही वाक्य निकसता हैकि-यह लिखाण ठीक नहीं किया, अगर आपका आशय यह होकि तुमारे गुरुजीने भी तो हमको कुवचन लिखे है हमक्या ! न लिखे ? इसके उत्तरमें न्यायतो यही कहता है कुवचन लिखने उनको भी उचित नहीं थे, अगर उन्होने लिखें और तुम न लिखते तो तुम्हीको यश आता, एकने किया सोही दूसरेने करना यह कोई व्याप्ति नहीं. अगर कहोगे जो तुमने ज्ञथुद्धियां निकाली है वह वास्तविक नहीं, कुछ मुश्किलार्थकी बात कहते तो ठीक, तब फिर वही बात आ जायगी कि-किसी समय एक अध्यापकने अपने शिष्यसे पूछा गंगाजलं=और गुरु ऋक्तिः=पदोंका विग्रह कहो, तो शिष्यने उत्तर दियाकि-महाराज ! कुछ कठिन बात पुढिये, यह तो बहुत सहज है गङ्गास्प जलं=गङ्गाजलं-गुरुस्प ऋक्तिः=गुरुऋक्तिः-इसमें मुश्किलार्थकी बात ही क्या है ? यह सुनकर अध्यापकको बहुत खेद हुआ, ऐसा न किजीयेगा.

आगे आपने अपने ग्रंथके [६३] में पृष्ठपर आत्मारामजीकी बनाई गुरु प्रशस्तिके श्लोको के [२] उंदोभंग दोष बतायें हैं, प्रथमतो-“ तपागढे जगधंदे, जज्ञिरे बुद्धिशालिनः,-श्रीमन्मणि विजयाख्या, गुरुवः संयमे रताः-इसमेंतिसरे चरणका ढठा वर्ण

दीर्घ चाहिये, ह्रस्व है इसलिये ऽदोऽङ्ग दोष निकाला, दूसरा श्लोक-यस्प धर्मोपदेशेन, निर्मलेन कति जनाः,-सम्यक्तं लेन्निरे साधु धर्मं च लेन्निरे कति,-इसमे दूसरे पदका षठा वर्ण दीर्घ चाहिये, ह्रस्व है इसलिये यहांनी ऽदोऽङ्ग दोष निकाला,-
[इसका उत्तर.]

महाशय ! अनुपुवृत्तके जेदोमें कितने नित्य और कितने अनित्य, इसका विचार करना प्रथम आवश्यक कीय है, अगर श्रुतबोधमें दिखलाये भेदको ही एकांत निस मानलिया जावे तो फिर त्रिषष्टिशिलाका पुरुषचरित और अमरकोश आदि अनुष्टुप् वृत्त बद्ध केइ ग्रंथ रचयिताओने यह नियमनित्य क्यौ नही रखा ? त्रिषष्टिशिलाका पुरुष चरितमें आद्यके अनुष्टुप् वृत्त जिसको हम तुम सकलाहंत स्तोत्र कहते है इसीमे देखिये !

दूसरे वृत्तका प्रथम चरण-“नामकृतिः स्वयंजावैः”-

आठमे वृत्तका तिसरा चरण-“अन्तरङ्गारिमथने”-

नवमे वृत्तका तिसरा चरण-“नमश्चतुर्वर्णसंघ”-

ग्यारहमे वृत्तका तिसरा चरण-“अचिंत्यमहात्म्यनिधिः”

तेरहमें वृत्तका तिसरा चरण-“निःश्रेयसश्रीरमणः”-

केवल तेरह वृत्तोंके ही देखनेपर आपके धारणे मुजब पांच जगह ऽदोऽङ्ग दोष हुवा, षठा वर्ण सब पदोमे ह्रस्व है.

अमरकोशके पाचमे वृत्तका पहलाचरण-“त्रिलिङ्ग्यांत्रिष्विति पदं”

„ षठे वृत्तका प्रथम चरण-“स्वरव्ययं स्वर्गनाकः”-

„ षठे वृत्तका तिसरा चरण-“सुरलोको द्योदिवौ द्वे”-

„ सातमे वृत्तका तिसरा चरण-“सुपर्वाणःसुमनसः”-

,, आठमे वृत्तका पहला चरण-"आदितेया दिविषदो"-
 देखिये ! अमरकोशके आद्यमे केवल [७] वृत्तपर ही खयाल
 किजीये, पांच जगह आपकी अपेक्षा षडोऽङ्ग दोष हुवा, उठा
 बर्ण ह्रस्व है,-बतलाईये ! क्या ! हेमचंद्राचार्य और अमराचार्य
 दोनो भूलगये ? उन्होको अनुष्टुप्वृत्तोके नित्यानित्य षेदोका ज्ञी
 ज्ञान नही था क्या ?-महाशय ! न हेमचंद्राचार्यकी न अमरा-
 चार्यकी और न आत्मारामजीकी किसोकी भूल नही है, यह
 तो आपकी शर्षाका एक नमूना है, उनियामें किसीने किसी त-
 रह आत्मारामजीको लोग बुरा और अणपढ समजे, यह आ-
 पका आशय है,परंतु उनिया आदर्श है इस में जो जैसा है आप
 ही आप दिख पमता है, कहने सुननेकी कुछ जरूरत नही रहती,
 अगर आपने इस नियमको नित्य ही माना है तो बतलाईये आपही
 इसपर क्यों न चले ! खयाल किजीये आपके ही बनाये गुरु प्रस्तिके
 वृत्तोमें चतुर्थस्तुनिर्णय षेदन कुठार ग्रंथके [६९९] पृष्ठपर यहजो
 अनुष्टुप्वृत्त लिखा है-"तच्छिष्योऽभुन्यायचक्र वर्त्तिविरुद्धारकः
 श्रीमहोपाध्यायकृष्णविजयो गणनायकः"-३३,-इसमे आपने खुद
 क्या रचना रची है ? आत्मारामजीकी दो वृत्तोमें दो भूल आप-
 ने निकाली और आपने वही भूल एक वृत्तमें दो रखदी,पहले
 और तिसरे चरणके उठे बर्ण तर्फ दृष्टि दिजीये, दीर्घ है या
 ह्रस्व है ? अगर ह्रस्व है तो आपने ही षडोऽङ्ग दोष किया कि
 नही ? आत्मारामजी न्यायांज्ञोनिधि है आप, न्याय चक्रवर्ती
 है, हमतो दोनोंको कुछ नही कह सकते, परंतु तर्क यह कह
 रहा है कि-अंज्ञोनिधिसँ चक्रवर्ती अधिक शक्तिमान् होता है,

उसकों भूलना न चाहिये, दूसरी यह जी बात है कि-आत्मारामजीने मंत्र आराधन नहीं किया, आपने किया है फिर भूलना कैसे हुआ ?

चतुर्थस्तुति निर्णयके पृष्ठ (१७६) पर आत्मारामजी रचित गुरु प्रशस्तिके तिसरे वृत्तमें-"चंझा"-चौथेमें-"झांता" और पांचमें वृत्तमें-"मयानंदविजयेन"-इतनी जगह परसवर्ण दोष निकाले हैं.

(इसका उत्तर.)

महाशय ! जो दक्षिण पथके विद्वान् हैं वे इस पर सवर्णरूप व्याकरणके नियमको व्यवहारिक वर्तणुकमें नित्य नहीं स्वीकार रखते हैं उत्तराखंडके विद्वान् रखते हैं, परंतु इसमें ज्ञारी दोष नहीं गिनते, देखिये ! दक्षिणापथ बम्बई इलाकेकी जितनी ढपी वा लिखी हुयी पुस्तक हैं उनमें यह परसवर्ण करनेकी शैली नित्य नहीं रखी है, उत्तराखंड के पुस्तकोंमें बहुधा करके नित्य दिखती है, निदान ! इस बातको ज्ञारी दोष नहीं गिनते, इतने परभी आपको विशेष आग्रह था तो आप अपने ग्रंथमें तो वह शैली नित्य रखते, क्यों उसको ठोम दी ? खयाल किजीये टाइपलपेजपर मंत्रज्ञ पद-इससे अगामी दूसरे पृष्ठपर श्लोक के तिसरे चरणमें किंचित् मंगलाचरणक प्रथमकाव्यमें-वंदितामिंश्च-वंदे-आगे गद्यपाठमें दूसरी पंक्ति-प्रतिबंध-मंगलमुपक्रमते-

चतुर्थ पंक्तिमें-परममंगल-अंतकी पंक्तिमें-काकदंत-दूसरे पृष्ठपर प्रथम पंक्तिमें-संबंधस्तु-तिसरी पंक्तिमें-केषांचिद्-चतुर्थपंक्तिमें

ग्रंथ:-गुरुप्रशस्ति के काव्योंमें पृष्ठ (६९) पर तिसरी पंक्तिमें करीब.-

चतुर्थपंक्तिमें-पंच-और इसके अगामी पूर्णाहुतीतक इसी परसवर्ण दोष संबंधी निगाह करे तो (१९) दोष और इसमें मौजूद है कहांतक लिख बतावे, इससें यही कहना ठीक है कि-आप अपनी गुरु प्रशस्तिमें तज्ञासकर लिजीये, (१९) संख्यासें एक ज्ञी कम रहजावे तो हमको ओलंभा दिजीये, मुनिजी! दूसरेको कहना सहज है आप उस राह चलना सहज नहीं.

आगे फिर आपने चतुर्थस्तुति निर्णयके [१७६] पृष्ठ पाचमे वृत्तके तिसरे चरणमें [शुम्फित] संबंधी ढापेकी अशुद्धि आत्मारामजीको दीयो है परंतु यह ठीक नहीं, प्रस्तावनाके [६४] में पृष्ठपर आपने अपने ग्रंथमें लिखा है कि-आत्मारामजीके ढपाये हुवे सच्ची ग्रंथमेंसें अगर अशुद्धियां निकासी जावे तो एक ढोटासा ग्रंथ जितनी संख्या बने, परंतु हम इन सब बातोंको सार्थक नहीं समजते, क्या आपके एक ही ग्रंथकी अशुद्धियां कोई व्यर्थ समय गमानेवाला शरूश अन्वेषण करे तो क्या कोईज्ञी न निकलेगी? क्या [१७९] संस्कृत पाकृत पाठोका अर्थ आपने किया है वह सब अन्वय सहित किया है ? उनमें कोई शब्दाशुद्धि-अर्थाशुद्धि और अनुवादाशुद्धि नहीं है ? इसके उत्तरमें कहोगें होती तो लिखके बतलाते नहीं ? महाशय ! इसमें कोई असली तत्व नहीं निकलेगा, जो वास्तविक तत्व है समालोचना उसकी करनी ठीक है,

श्रीस्तुति मतानुयायी मुनि धनविजयजीकी तर्कका उत्तर. ३९

समीक्षक-मुनिधनविजयजीने शुद्धिपत्र अलग बनाया है उसमें तुमारी निकाली हुयी अशुद्धियांको शुद्ध जो तो किया है,

ऊत्तर-हमने जो अशुद्धियां निकाली हैं उनमेसे केवल स्याद्वाद निधि-की जगह स्याद्वादस्य निधि दिखलाया है परंतु और अशुद्धियांके विषयमें कुछ नहि लिखा, गुरु प्रशस्तिमें युत् इस जगह यत् बतलाया है परंतु यह जो सान्त्वय नही है, असल बात तो यह है कि-जो संस्कृत रचना मुनिधनविजयजी अपनी रची बतलाते है उसमें आद्यके तीन वृत्ततो साधारण रचनावाले होनेसे स्यात् उनके बनाये हुवे हो तो ना नही, परंतु और रचना तो अन्य किसी पंथितकी रची हुई है और अपने नामसे रफू कियी गई है, क्यों कि-मुनिधनविजयजीकी यह शक्ति नहि, दो वर्ष पहले जब हम और मुनि धनविजयजी शहर अमदावादमे थे, तब शेर. दलपतजाईके स्थानपर एक समय एसा हुवा कि-मुनि श्री प्रमोदविजयजी-मुनिश्री वीरविजयजी-मुनिश्री कांतिविजयजी-हम-और मुनिश्री मोहनलालजी-यही मुनिश्री धनविजयजी,-और यतिजी पं० पद्मसागरजी वगेरा सब एकत्र मिले थे, बातो ज्ञानगोष्ठीकी होती थी तब मुनि धनविजयजीसें निम्न लिखित-“ वटो ! जिज्ञा मट गां चानय ”-एक सामान्य सारस्वत ग्रंथका वाक्य शुद्धपने उच्चारण न होशकाथा, तो संस्कृत रचना रचनी कितनी बात ? इसमें मंत्राराधनका सहारा बतावे तो बतावो, अपने विश्वासी जनोको जो कहो सो ठीक.

नाष्टपद आसोज और कार्तिक मास बतीत होते सूत्रआवश्यक (जो व्याख्यानमें वाचना शुरू था) प्रतिक्रमण अध्ययनतक-और श्राद्धविधिग्रंथ संपूर्ण वाचा, सारे दिल्ली इलाकेकी मनुष्य गणना (६४३५१५) है, संवत् (१९३४) में यहां एकठे म्पोरियल दरवार हुआ तब हिंडस्थानके सन्नी राजे यहां एकठे हुवे थे,-हस्तिनापुर तीर्थ यहांसें (३५) कोस दूर है, संवत्(१९४७) के मार्गशीर्ष वदी तोज रविवारको शहर दिल्लीसें आगरे तर्फ विहार किया, प्रथम मुकाम (४) ठोटे दादाजीकी ठतरीमें किया, दूसरेदिन कुतुब (महरोली) कुतुबसें(६) कोस गुमगांव-गुमगांवसे [४] कोस गढो गढोसें (४) कोस फरुखनगर मार्गशीर्ष वदी सप्तमी बुधवारको पहुचे.

फाल्गुन कृश्न (३) गुरुवार तारिख (२६) फेब्रुआरी सन (१८९१) की रात्रीको जो मनुष्य गणना (मर्दम समारी) हुयी इस समय मनोहरलाल टपालमास्तरने हमसें निम्न लिखित प्रश्न किये, (१) प्रश्न. आपका नाम क्या है? हमने उत्तर दिया (शातिविजयजी,) (२) फिर प्रश्न किया, तुमारा धर्म क्या है? उत्तर जैन, (३) फिर पूछा तुमारे कौमका फिरका (धर्मकी शाखा) क्या है? उत्तर दिया श्वेतांबर, (४) फिर पूछा तुमारी जाति क्या है? हमने कहा जन्मके श्रावक ओशवाल, अब साधु संवेगी, (५) तुमारी कौमकी शाखा (जातिकी शाखा) क्या है? हमने कहा तपागच्छ, (६) फिर हमसे पूछा आपकी उमर (अवस्था) कितनी है? हमने कहा (३३) वर्ष, (७) फिर पूछा जन्मसें आज तक आपका विवाह हुआ या नही? हमने कहा नही हुआ, फिर पूछा आपके माता पिताकी बोली क्या है? हमने कहा गुजराती, (८) फिर उसने पूछा आपका जन्म किस जीलेमें हुआ? हमने कहा राजधानी भावनगर गुजरातमें, (९) फिर पूछा तुमारा गुजारा (आ जीवका) क्या है? हमने कहा भिक्षा, (११) फिर पूछा कुछ! लिख पढ जानते हो? हमने कहा हा! जा-

ग्रंथ वाचना शुरू किया, श्वेतांबर श्रावकोका एक ज़ी घर यहाँ नहीं. हुँदियेलोग व्याख्यानमे नहीं आतेथे. सब दिगंबर श्रावक लोग आते थे.

फाल्गुन कृश्न (३) गुरुवार तारिख (२६) फेब्रुआरी सन (१८९१) की रात्रीको जो मनुष्य गणना (मर्दम समारी) हुयी इस समय मनोहरलाल टपालमास्तरने हमसे निम्न लिखित प्रश्न किये. (१) प्रश्न. आपका नाम क्या है? हमने उत्तर दिया (शांतिविजयजी). (२) फिर प्रश्न किया, तुमारा धर्म क्या है? उत्तर जैन. (३) फिर पूछा तुमारे कौमका फिरका (धर्मकी शाखा) क्या है? उत्तर दिया श्वेतांबर. (४) फिर पूछा तुमारी जाति क्या है? हमने कहा जन्मके श्रावक ओशवाल, अब साधु संवेगी. (५) तुमारी कौमकी शाखा (जातिकी शाखा) क्या है? हमने कहा तपागच्छ. (६) फिर हमसे पूछा आपकी उमर (अवस्था) कितनी है? हमने कहा (३३) वर्ष. (७) फिर पूछा जन्मसे आज तक आपका विवाह हुवा या नहीं? हमने कहा नहीं हुवा, फिर पूछा आपके माता पिताकी बोली क्या है? हमने कहा गुजराती. (८) फिर उसने पूछा आपका जन्म किस जिलेमें हुवा? हमने कहा राजधानी भावनगर गुजरातमें. (९) फिर पूछा तुमारा गुजारा (आजीवका) क्या है? हमने कहा भिक्षा. (११) फिर पूछा कुछ! लिख पढ जानते हो? हमने कहा हा! जानते है, (१२) फिर पूछा विशेष क्या लिख पढ जानने हो? हमने कहा संस्कृत और प्राकृत. (१३) फिर उसने हमको देखकर कहा बस! खैर! तब हमने पूछा क्यों? क्या बात है? उसने कहा यह किताबमे एक खाना और है जीसमे हम जन्मके बावले-गूंगे-बहेरे-कोढीको यदि हो तो लिख लेंते है सो यहाँ कोई एसा है नहीं इस लिये नहीं लिखा सो खैर!

वैशाखवदी [३] चंडवारके रोज यहाँ हमको (श्वेतांबरन्यायांकुश) नामका एक पुस्तक एक महाशयसे मिला, यह शिलायंत्रसे मुद्रित हुवा एक ठोटासा चोपानीयाकी बतौर समजो. इसके रचयिता दिगंबर क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदासजी है. मुनि

श्रीमान ऊबेरसागरजी जो हमारं समुदायके गीतार्थ सायु है उन्हांका रचा हुवा (केशरीयाजी तीर्थका वृत्तांत) पुस्तक जो ज्ञावनगर जैनधर्म प्रसारक सज्जाने संवत् [१९४३] में उपवाया है उसका यह खंमन है. इसमें उक्त क्षुल्लक धर्मदासजीने श्वेतांवर धर्मपर वहीत कुछ वक्तृता कीयी है और तर्कपर तर्क लिखी है. इसकी समीक्षा करनी उचित समझकर यहां इसके बारेमें कुछ लिखते है, पाठकगण! हम यहां जो कुछ लिखेंगे केवल क्षुल्लक धर्मदासजीके लेखकाही उत्तर लिखेंगे अन्य किसी मनुष्यके खेदका कारण हमारा लिखाण न होगा. जैसे क्षुल्लक धर्मदासजीने श्वेतांवरोके विषय कटुक वचनोंकी वृष्टि कीयी है यदि हमजी इसी प्रकार उत्तर देवे तो-“शठं प्रति शठं कुर्यात्”-के अतिरिक्त कोई लाज नही, किंतु जैसे सकल संघ श्वेतांवरीको धर्मदासजीका लिखाण अप्रिय हुवा है दिगंबर लोगोंको हमारा जी होजाय, परंतु हमारा किसीके दिल खाना वा मर्मठेदनेका अन्निप्राय नही. संयम ग्रहण किये पिठें जो हमको देशाटन करनेकी आवश्यकता हुयी तो देश देशांतरके अनेक स्वमत परमतके विघ्नानोंसे वचनालाप ज्ञानगोष्ठी हुयी. जिसमें दिगंबर आम्नायके जी अनेक विघ्नानोंसे मिलना हुवा. परंतु क्षुल्लक धर्मदासजीके सदृश हमने किसीको व्यर्थ पढ़पाती नही देखा.

अब हम उक्त श्वेतांवरन्यायांकुश ग्रंथका संपूर्ण लिखाण यहां क्रमसे लिखकर उसके नीचे अपनी तर्फसे उत्तर लिखते जायेंगे. यद्यपि इसमें अनेक अशुद्धियां है परंतु केवल विषय संबंधी ही समीक्षा (उत्तर) लिखेंगे और अशुद्धियांको पाठक वंद

के अब लोकनार्थ ज्युंका त्यूं नकल कर देयगें. जिस पारिग्राफ-
की आदिमे [क्षु.] ऐसा लिखा देखो उतना लेख उक्त क्षुल्लक-
जीकाजानना, जहां [ह.] ऐसा लिखा देखो हमारा जहां (अ)
ऐसा लिखा देखो किसी अन्य पुरुषका जानना. यह एक हमने
अपनी समस्याके चिन्ह बताये है.

(उक्त क्षुल्लकजीके लेखकी नकल.)

(क्षु.)—श्वेतांबर न्यांकुश.

पत्र प्रथमप्रारंभः

मारु मिति संवत् १९४४ श्रावण कृश्न १३ रविवारके दिवस लिखितं
नाम मात्र क्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास,—आजके रोज सोलापुरसे ढाकके द्वारा
स्वेतांबरोक्त—“श्रीकेशरीयाजी तीर्थनो वृत्तांत”—नामक पुस्तक, बहुरी गौतम
मोतीचंद रचित मासिक पुस्तक, अर्थात् दोय पुस्तक ढाकके द्वारा हमकू प्राप्त
हुवा. उसमें स्वेतांबरोक्त केशरीयाजीनो वृत्तांत, स्वेतांबरी कल्पित लिखता है,
कारण पूर्वापर विरोध सहित बचन उस पुस्तकमे है.

(हमारी तरफसें समीक्षा). [उत्तर]-

(ह.) प्रथम तो श्वेतांबर न्यांकुश लिखना ही सार्थक नहीं.
उसरा हम ब्रह्मचारी उसी मनुष्यको समजते है जो इव्यवान्
होकर स्त्रीका समागम मिलते हुवे न वांटे. और त्यागी हो जाय.
जिस मनुष्यकों निर्धनताके कारण स्त्रीका समागम न हो शके
तो उस संबंधी संसारकी यही कहलावत ठीक यचतो हे कि-‘नि
र्धन माया त्यागी, त्रिया विना बेरागी’-क्षुल्लकजीकों जो पुस्तक.
वा. पत्र. केशरीयाजी तीर्थ संबंधी मिला उसमें कोइ पूर्वापर वि
रोध नहीं है. और जो उनको दिखलाई दियाथा तो थायर्थ

लिख देते कि-अमृक अमृक पूर्वापर विरोध है, क्योंकि बहुधा शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ पढ़ने वालोंकी समझमें तो आवे नहीं और वह अपनी बुद्धिद्वारा उसको छिपित कह देते हैं. जैसे संस्कृतमें वदन मुखकों कहते हैं और फारसीमें संपूर्ण शरीरकों. सो जिसने केवल संस्कृत पढ़ी हो, वा फारसी पढ़ी हो, वह इसरी जापाके कविका सारांश नहीं जान शकंगा. जैसे किसी फारसी कविने लिखा कि-मेरा वदन साढे तीन हाथ लंबा है, तो संस्कृतका जाननेवाला उसकाँ जूठा समजेगा, परंतु वस्तुतः उसकी समझकाँ ही फेर है, फारसी कविका दोष नहीं है.

(क्षु,)—नाम-प्रकार १ लो. तीर्थनी उत्पत्ति. सुनो स्वेतांवरी हो. तुम कही तीर्थ उत्पत्ति सो उत्पातिको साक्षीदार काँण है. तुम कहोगे इमारा सूत्र सिद्धांत है, तो हम कहोगे के तुमाग नूत्र सिद्धातको साक्षीदार कोन है. हुसरा तुमारा सिद्धांतकी सभके प्रमाणमें आती नहीं. जो बात सबके प्रमाणमें आवे नहीं वो बात सत्य नहीं, किंतु कल्पित है. तुम कहोगे कि हमारी सिद्धांत सूत्रकी बात सबके प्रमाणमें कसी नहीं आती. उत्तर-सुनु, सबके प्रमाणमें आती तो सब ही स्वेतांवरी हो जाते. अर्थात् जैन. वैश्रव. बौध. नैयायकक. मीमांसक. चार्वाक. पातंजलादिकका भेद नहीं रहता.

सफेद कपडा धारण करे सो स्वेतांवरी, रक्त कपडा धारण करे सो रक्तांवरी-इत्यादि समझना सुत्र रेगम आदिका वल्ल रहित होय सो दिगंबर, अर्थात् जिसके वल्ल नहीं सो नग्न, अकृत्रिम स्वयांसिद्ध है. आगमका प्रमाण देता हू समझ लेना.

[काव्य—]

* मौजी^१दंडकमंडलुप्रभृतयो^२नोलांछनो^३त्रह्वाणो,
रुद्रस्यापिजटाकपालमुकुटं^४कौपिनखड्गांगना,
विष्णुश्चक्रगदादिशंखमतुलंबुद्धस्यरक्तांबरं,
नमंपश्यतिवादिनोजगदिदजैनेन्द्रमुद्रांकितं, १ ,

इस काव्यमें स्पष्ट प्रसिद्ध नग्नपणा अकृत्रिम स्वयंसिद्ध मालूम होता है. करिये खंडन नग्नके प्रथम कोण है.

[उत्तर,] (ह.) क्षुल्लकजी अकृत्रिम तीर्थ वह है जैसे सिद्धाचल, रैवताचल, सम्मत्तशिषर, चंपापुरी, और पावापुरी, आदि, परंतु केशरीआजी तीर्थका नामकेवल प्रतिमाजीके चमत्कारी और प्रजाविक होनेके कारण पना है सो जिस आम्नायकी यह प्रतिमा है उसी आम्नायका यह तीर्थ जी है इसमें आगम प्रमाणकी कोई आवश्यकता नहीं. लौकिक किम्बदंतीसे संसारमें प्रसिद्ध है और प्रतिमाजीके उपर कोई चिन्ह दिगंबर दृष्टगोचर नहीं होता, अथवा किसी दिगंबराचार्यका नामतक जी नहीं, फिर आप जो लिखते हो कि-तुमारा आगम प्रमाण सर्वोपरि स्वीकृत नहीं हो शक्ता तो क्या. जो काव्य आपने अकलंक स्तोत्र दिगांबराचार्य रचितसे १३-मी लिखी उसको हम या हमारे आम्नायी श्वेतांबर श्रावक-अथवा अन्यमति मान सकते है ?-यह आपने वही कहलावत कर दीयी कि-“अपने बैर मीठे अन्यके खट्टे, ”-इस प्रमाणसेतो आपका स्वयंसिद्ध नग्नपना स्वीकृत नहीं हो शक्ता. इस आपके लिखाणमें कोई शास्त्रोक्तयुक्ति नहीं है. अब आगे चलकर आपको मालूम होजायगा कि-जिसको आप प्रथम नग्न कहते हो उसके प्रथम कोण है ? वास्तवमें तो जिसको आप प्रथम नग्न मानते हो उससे पहले उसके माता पिता विद्यमान हैं;-

(क्षु,)-तुम लिखि के केशरीआजी श्वेतांबरीका तीर्थ है. सो ऐसा तुम्हारा लिखना बालकवत् है. क्योंकि तीर्थ उसकू कहते हैं. जिनसे तरिये, अ-

४६ दिगंबर धुल्लक धर्मदामजीकी तर्कका उत्तर.

थात् जैसे नांकामें जहात्रम पैठना है सो तर्ना है. तैमेही श्री केशरीआजीरी पूजा, ध्यान, जाप, आराधना करे उसका भला होना है क्या दिगंबर श्री केशरीआजीका ध्यान, नुमरण, जाप, केशरका विलेपन लगावेना क्या दिगंबरीका भला नहीं होगा ? अर्थात् जरूर भय होगा. फिर तुम तुमाग ही तीर्थ केमें मानते हो. येह तुमाग मानना भ्रमकाहे जमें श्री गंगार्जीका जलको कलम भगर लेय ब्राह्मणतो आपणो मानता है. के यह जन्मोग है. शुश्रादिकर्मा तद्वर्तहि जलका कलस भरभर आपणा आपणा मानता है. विचार कियेमें देखिये तो जल किसिकाभी नहीं. जलतो श्रीगंगार्जीका है. ज्यादा विचार कहिये तो जलका जल है. तदन्याय श्रीकेशरीआजी फकत तुमाग ही तीर्थ नहीं समणा ये समज तुम लोकौकी मिथ्यादृष्टपनाकी है.

(ह०)-केशरीयाजी तीर्थ जो प्रतिमाजीके चमत्कारी होनेसे प्रसिद्ध हुवा है वह प्रतिमा श्वेतांबर आमनायकी है इस लीये दिगंबरीयोका उसमें क्या संबंध है, ?-हम यह नहीं कहते है कि-जो दिगंबरी मनुष्यजी उक्त प्रतिमाजीका पूजा, ध्यान, आराधना करे उसका जला न हो. जला तो होवे ही हांवे. और हमारा तो यही निश्चय है कि-अवश्य जला हो. परंतु दिगंबरी लोक श्वेतांबर आमनायकी प्रतिमासे छेषजाव रखते है तो क्या! इस चमत्कारी प्रतिमाके जयसे ही इसको अपना तीर्थ मानने लगे !-देखो ! जब और श्वेतांबर प्रतिमासे तुम मरते हो तो श्री केशरीआजीसे जी यह हठ मत करो कि-यह तो हमारा ही तीर्थ है. और जो गंगजलका प्रमाण देते हो इस विषयमें आपको अन्य दिगंबरीयोसे सम्मति करलेनी चाहिये. क्योंकि इस लीखाणसे तुमने श्री केशरीयाजी तीर्थको ही सबका नहीं किंतु और अन्य कुदेव आदिक चमत्कारीको जी अपनी तरफ खींच लीया. ऐसा अग्निप्राय आपहीका हो तो हो. अन्य दिगंबरीका

नही है, इस लिखाएसें ज्ञानवान् स्वतः विचार लेगें कि-स्वदे-
वको ठोमकर परदेवपर दावा करना सम्पक् दिष्टिका काम है.
या. मिथ्या दृष्टिका, ?

(क्षु.)—लौकिकमे वो धन्य है जो के अंधाकू नेत्र सहित कर देता हैं
ओ धन्य है. श्वेतांबरी लोगोका देव मूर्तिके चांदी सुवर्णका नेत्र चक्षु लगाते है.
इससे सफा जाहीर होता है के श्वेतांबरी बडा है. श्वेतांबरीकी देवमूर्ति हिन है.
क्योकि—अंधाकू नेत्र देता है ओ श्रेष्ठ है. ऐसे तुमारी देवमूर्ति अंधी है ! उसको
तुम नेत्र लगाते हो. दिगंबरी पक्षका श्रावक लोगोकी देवमूर्तिके नेत्र जैसा
द्रव्यकी प्रतिमा होय तिस ही द्रव्यमयी तिस द्रव्यसे तलीन जैसे हाथ, पाव, आंगु-
लिका आकार मूर्तिका होता है. तद्वत् धातू पाषाणसे तनमयी नेत्र चक्षु
होता है. इस न्यायसें यह बात साबत होती है. के श्री केशरीआ नाथकी मूर्ति
श्रीमत् जैन दिगंबर आमन्याकी पूर्व प्राचीन है.

(ह.)—“लौकिकमें वह धन्य है जो के अंधाकू नेत्र सहित
कर देता है” ऐसेऐसे लिखाएोंसें आपकी उत्तम विद्वान्ता ज-
लक रही है, जब प्रतिमा नही बनीथी तो केवल धातु या पा-
षाण ही था. जिसने संपूर्ण अंगोपांग बनाये उसका कुछ दोष न
समजकर केवल हमारे चक्षु आपको व्यथा दाता हुवे, सो यह अपने
अपने कर्मानुसार योग्यता अयोग्यता है इसमें और कोई क्या करे, ?
तुमने देवमूर्तिकों अंधी, हीन, इत्यादि कुवचन लिखे इसका उ-
त्तर हम प्रतिमाजी संबन्धी देना अच्छा नही समजते, क्योकि जैसा
आपने श्वेतांबरोका अंतःकरण उःखित करनेको कुवचन लिखे
ऐसा लिखाए विद्वानोको योग्य नही है, विक्रम संवत् [७००]सें
पहलेकी श्वेतांबर, दिगंबर, दोनुं प्रतिमामें विशेष जेद नही था. अब
जो अधिक जेद पम गया है यह हठ धर्मी और पक्ष पातीयोंने
पामा है. श्री केशरीआजीकी प्रतिमा श्वेतांबर होनेमें कोई प्रका

रकी शंका नहीं, यदि यह प्रतिमा दिगंबरी होती तो उसका अधिष्ठाता देव केवल केशरहीसे तुष्ट होता, लाखों रुपैयों के आभूषण क्यों धारण करने देता, ! केवल अष्ट उच्यकी पूजा ही मान लेता. परंतु प्रत्यक्ष देखनेमें आता है कि जब श्वेतांबरी लोक अंगीयां धारण करके पूजन करते हैं तो जैसा आनंद और हर्ष उस समय उत्पन्न होता है दिगंबरीयोंकी पूजा समय नहीं दिखता.

(धु.)-महुरी है श्वेतांबरी ही तुम लिखी संवत् १३९ के सालसे दिगंबरी मत निकला है सो यह तुम कोण ग्रंथके प्रमाणसे लिखते हो. यह तुमारा केहना किसके प्रमाण में आवेगा. क्योंके नगन के प्रथम क्या है. इसकू स्थापन करो ताके पिछे तुम बोलना के श्वेतांबरी प्रथम है. कारण दिगंबर पक्षमें शंकराचार्य भी है. जो के आगे तुमारा मतका आमरचंद जती जो के आमरकोश बणायो. उसका शास्त्र, पोथी, पुस्तक, जयके द्वारा शंकराचार्य उस जतीका ग्रंथ पुस्तक सर्व श्री गंगाजीमें ब्योदिया. बिचार करो तुम तुमारा माका पेटमेंसे योनीद्वारा निकले तब कोणसा रेशमका, कोणसा सूत्रका कपडा सहित आये थे ? अर्थात् इससे भी येही साबत होती है के तुम लोग भी अबलनन्न दिगंबरी थे पिछे काल दोषसे तुम नन्न दिगंबरका प्रति पक्षी हो गये. वास्ते सर्व भेष स्वांगके प्रथम यो नन्नपना अछुत्रिम स्वयंसिद्ध है. तब कोनती मिति संवत् था. जुठी लिख दिनी. १३९ संवत् मैं नन्न दिगंबर हूवा ये बात तुम जुठी लिख दिनी.-

(ह७) धुलकजी लिखते है कि-तुम किस प्रमाणसे संवत् [१३९] की सालमें दिगंबर मत निकला सिद्ध करोगे सो यह प्रमाण प्रथमतो हमारे श्वेतांबराचार्योंने अपने अनेक अनेक ग्रंथोंमें लिखा, (इसरा) यह प्रसिद्ध प्रमाण है कि-श्री महावीर स्वामीकों मोक्ष पधायें आजतक (३४१७) वर्ष हुये, और दयानंद सरस्वती अपने वनाये सत्यार्थ प्रकाशमें लिखता है कि-शंकराचा-

र्यको [३३००] से अधिक वर्ष हुवे. और तुमारे लिखनेसे यह सिद्ध होता है कि-शंकराचार्यका अमरचंद यतिसे वाद हुवा तो इस्से यह सिद्ध हुवाकि-उस समयजी श्वेतांबर मत प्रबल था. जबकि दिगंबर शास्त्रोमें अंगपाठी श्रुत केवली मुनियोंका विचरना लिखा है, परंतु वास्तवमेंतों दयानंद सरस्वतीका और आपका दोनुं लिखाण सत्य नही हे, क्योंकि-अमरकोशका कर्ता अमराचार्य जैनी नही था, किंतु बौध था. और उसके समय शंकराचार्य नही हुए. श्री हेमचंद्राचार्यसें कुमारपाल राजाके समय शंकराचार्यका वाद विवाद हुवा, जिसमें जैन धर्मकी जय हुइ. यह अन्यमतिजी स्वीकार करते है. और यह तुमारी बहुत बनी भुल है जो शंकराचार्यकों तुम दिगंबर पक्षमें लेते हो. वह तो वाम मत प्रवर्तक था. यद्यपि तुमारी दिगंबर शाखा हमारी श्वेतांबर आम्नायसें पृथक् है, परंतु अन्यमतियोंके विचारमें जब हम तुम एक समजे जाते है तो हमकों महान् कष्ट इस बातपर होता है कि-केवल तुमे ही अपनी लेखनीद्वारा वाममत प्रवर्तकको आपना कहते हो.—

हमने देवगुरुकी कृपा और देशाटनके करनेसें स्वमत परमत और विशेषकर श्वेतांबर दिगंबर आम्नायके अछे अछे प्रमाणीक शास्त्र देखे, और दिगंबर आम्नायके अनेक विद्वान् पंक्तियोंसें मीलनाजी हुवा, परंतु जैसा आप लिखते है कि-शंकराचार्य दिगंबर पक्षमें है एसा न किसी शास्त्रमें देखा और न किसीसें सुना, और तुमारे लिखने में कोई प्रमाण इस विषयका नही है कि-किसी श्वेतांबर आचार्यके ग्रंथ पुस्तक शंकराचार्यने गंगामें ऋबोये. यदि कोई प्रमाण था तो अवश्य लिखनाथा. विना प्रमाण कोई लेख लिखना यह विद्वानोंका काम नही. तु-

मने लिखा विचार करो-“तुम तुमारी माका पेटमेंसे योनिद्वारा निकले तव कोणसा रेसमका, कोणमा मूत्रका कपमा सहित आये थे,”-सो क्षुद्रकजी ! आपहीतां कहिये जब आपने जन्म लियाथा तो क्या जो चदर आप ओढ रहे हो यह तुमारे संगे-थी, ? और मलुम होता है कि कमंमलु जी हाथहीमें होगा, क्यों कि ऐसा न होता तो आप हमपर ऐसा तर्क न करते, और विशेष क्या कहे ! दिगंबर आमनायकी आर्यका (साध्वी) काँ एक वस्त्र (सामी) रखनेका अधिकार है सो वहजी शाय ही लेकर जन्म लेती होगी, !-इस लिखनेसे तुमारा दिगंबर मत सिद्ध नहीं होता, जिस नग्नपनेकाँ तुम स्वयं सिद्ध अकृत्रिम समजे हुए हो वह तुमारे शास्त्रानुकूल स्वीकृत नहीं है, यह केवल तुमारी ही भूल है. क्योंकि जन्म समयकी नग्न अवस्था ज्ञान सहित नहीं है. क्या कोइ तुमसे पुढे कि-एक पुरुष निज तरुण कन्याकाँ आप नग्न होकर उसकोजी नग्न करके गोंदीमे वेठावे तो क्या यह योग्य है ?-और नाँदनीक नहीं है ? सो किस लीयेकि-वह ज्ञानवान् है तो ऐसा क्यों करता है ?-जिस बालकको विषय वासनाका ज्ञान नहीं है उसका ही नग्न रहना स्वीकृत है, ज्ञान वंतका नहीं. और संवत् (१३९) में दिगंबर मत निकला हम जो लिखते है आप हीके लिये लिखते है. प्रगट है कि-महा-वीरके पिढे (६०९) वर्ष के बाद शिवभूति मुनिने दिगंबर मत निकाला.

(क्षु)—और तुम लिखी के जैन दिगंबर पक्षके केत्ताक तेरापथी श्रावकलोकमें केसर लगी प्रतिमाका दर्शन पूजन नहीं करते है. सोही आपका लिखना सत्य है. जैसे तुमारे श्वेतांबरके भीतर धूडिया तेरापंथी उत्पन्न हुवा तद्वत ही जैन दिगंबरके पक्षके श्रावक मडलीमें तेरापंथी उत्पन्न हुवा है.

कोइ शूद्रादिक यवन आदि उन लोकोसे बुजे के तुम कौन धर्मवाले हो तब वह लोक बोलते है की हमतो तेरापंथ वाले है. तब शुद्रादिक श्रवण करके चक्रत चित्त हो जाते है के येतो हमारे धर्मवाले तो नाही. फिरसे बोलता है के हम तेरापंथ वाले है. इत्यादि बिभ्रम विसंवाद. और सुनु जिस तुम कहते हो के जैन सो जैन तीनसे तियालीस राजका घनाकार येह लोक है. और इस लोकसे इतरसो अलोक सोही तुम विचार करो. इस लोकालोकमें कोण द्रव्य, कोण क्षेत्र, कोण काल, कोण भाव, कोण ठिकाणो जैन नही है. अरु कौण द्रव्य, कौण क्षेत्र, कौण काल, कोण भाव, कोण ठिकाणौ जैन है. इस दोय प्रश्नमेंसे एक बात स्थापन करो.

(हं.)-क्षुल्लकजी लिखते है जैसे श्वेतांबरमेंसे हुंढीया तेरापंथी उत्पन्न हुवे इसी प्रकार दिगंबरसे दिगंबर तेरापंथी निकले है. इस विषयमें हमको अपनी समीक्षा करनेकी कोइ आवश्यकता नही. आगे चलकर इस विषयमें जो कुछ क्षुल्लकजीको उत्तर* दिगंबरी तेरापंथी श्रावकोने दीया है सो देख लेना.

(क्षु)-तुम लिखा के श्रीमनसुव्रत स्वामीके वारामै रावण हुवा. जिसकी बनाइ हुइ केसरीआजीकी प्रतिमा है. बहुरी श्रीमनसुव्रतस्वामीका वारा था तब सवत कोणसा था? जैसे आब इस वर्त्तमानमें संवत १९४४ बरतता है. तैसें मन सुव्रत स्वामीका समयमै कोणसा सवत था? इसका प्रमाण लिखो. बहुरी तुम लिखी के संवत १३९ साल में दिगंबरी मत उत्पन्न हुवा. तैसे ही तुमारा श्वेतांबर मत कोणसा संवत मितिमै उत्पन्न हुवा. तुम कहोगे अनादिकालका है. तो हमभी सत्यार्थ कहेंगे के नम्र दिगंबर अनादिकालका है. तुम कहोंगे अनादिकालका कैसाहै? इसका समाधान तो उपर लिख चूके है. के माताका पेटमेंसे निकलता है तब वस्त्र रहित निकलता है. इसमें साबीत होता है के नम्र दिगंबर अनादिकालका है.

सुनो श्वेतांबरी हो तुम लोक ओघा, मुपटी, धोली चादर, लकडी, हातमें धारण करी जिसमितिसे तुम श्वेतांबरी कवाये. जिस मितिमै तुम ओघा, मुपटी, धोली चदर, धारण करी तब कोणसा संवत मितिथी? तुम तुमारा माके पेटमेंसे

* यह दिगंबरी तेरापंथी श्रावकोका लेख आगे आता है.

निकले तबतो धोली चदर, मुपटी, नहीं था. पिछे धारण किया सो धारण कोण मिति संवतमें कीया था.—“नम्र आवे, नम्र जावे, नम्र करे कल्लोल; जो नम्र की निंदा करे, सोही डावा डोल”.—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल, येह छ द्रव्य है. तुमारे सूत्रोमेभी है. इस द्रव्यमें सुफेद कपडा सहित स्वेतांबरी कोण है. छहु द्रव्य अग्नि उष्णतावत् एक है के सूर्य अंधारावत् अलग अलग है. विचार करो. छहु द्रव्य अनादिकालका स्वयंसिद्ध अकृत्रिम जैसाका तैसा है. तामे सफेद कपडा सहित श्वेतांबरी कोण है? जैसे तुमलोक अपने मूसे कहते हो के आ ह्यारा बेटा, आ ह्यारी बेटी, आ हमारा लुगाई, आ ह्यारा बाप, आ ह्यारा खाणा, आ ह्यारा पिणा, आ ह्यारा मल, आ ह्यारा मुत्र, आ ह्यारा गांव, आ म्हारा धन इत्यादि प्रकार तुम लोक बोलते हो. तैसे ही तुम लोक विना विचारसे कहते हो के केसरियाजी आ ह्यारा तीर्थ है. सो सत्य विचार करो. तीर्थ तु-ह्यारा है के तुम तीर्थका है इत्यादि विचार करो. तुह्यारा मुपटी, ओघा, पात्रा, धोली चदर, पुस्तक आदि ये स्वेतांबरी है के तुम स्वेतांबरी हो? तुम्हारा अरु मु-पटी, धोली चदर, आदिका मेल अग्नि उष्णतावत् एक है, के तुह्यारा मुपटी, धोली चदर आदिका सूर्य अंधाराका सा अतर है. प्रथम तुम हुये के मुपटी, धोली चदर, आदि हुये? अर्थात् तुम और मुपटी, धोली चदर, संग संग ही हुये?—

हमकूतो प्रत्यक्ष प्रतीति ये आंती है के तुमारी मुपटी, धोली चदर, औ-घा, पात्रा, लकडी आदि इनकू कोइ अग्निमें जलादेवे तो तुम जलनेका नहीं. तुम मुपटीकू धोली चदर आदिकू जाणते हो. बहुरी मुपटी, धोली चदर, ये जब पदार्थ तुमकू जाणते नहीं. वास्ते जैसा तुम हो तैसा येह मुपटी, धोली च-दर आदिक नहीं. बहुरी जैसी धोली चदरादिक तैसा तुम नहीं. तुम्हारा और मुपटी, धोली चदर आदिका अग्नि उष्णतावत् एक स्वरूप, एक लक्षण, एक द्र-व्य, एक भाव, एक काल नहीं. तुम अरु मुपटी धोली चदरादिक अलग अलग हो. कहो विचार करो. तुमे स्वेतांबरी हो के यह मुपटी धोली चदरादिक स्वे-तांबरी है. विचार करो विवाद मत करो.

(हं.)-क्षुल्लकजी पुढते है कि-“श्री मुनि सुव्रत स्वामीके समय रावण हुवा जिसकी नरार्इ श्री केशरोयाजीकी प्रतिमा है सो उस समय कौन संवत् था,?—जैसा कि श्रव (१ए४४) संवत् चलता है”-

वाह ! भुल्लकजी, !-धन्य है, इसी विघ्नतापर पुस्तक लिखनेका साहसकिया ! बीसमे तीर्थकर मुनिसुव्रतस्वामी मल्लिनाथ और नमिनाथके अंतरमें हुवे. मुनिसुव्रतस्वामीके शासनमें रावण हुवा. उसने यह मूर्ति बनायी. मुनिसुव्रतस्वामीसे आजतकके वर्ष कल्पसूत्रमें लिखे है.काढकर गिन लो वही संवत् था.जो पुत्र, माता पिताके जीवते उत्पन्न होता है उसको इस प्रमाणकी क्या आवश्यकता है कि-मै किसका पुत्र हु, ?-यह आवश्यकता तो उसी मनुष्यों होती है कि-जिसके माता पिता विद्यमान न हो जब हम लिखते है कि-दिगंबर मत संवत् [१३९] में उत्पन्न हुवा तो तुमारा यह पुढनाजी समुचित नही है कि-श्वेतांबर मत किस समयमें निकला. आप विचार करो ! मनुष्य जन्मलेकर जब बाल्य अवस्थाको ओम्ता है तो वस्त्र धारण करता है, यह अनादि कालकी रीति है या नही ! और जो कहोंगे है तो फिर सोचो ! किसका पक्ष सिद्ध होता है. ?-यदि तुम अपने दिगंबर आम्नायके किसी ग्रंथमें नी यह लेख दिखला दो कि-जन्मसे मरण पर्यंत मनुष्यों नग्न रहेना ही कहा है तो हम तुमारा प्रमाण मान लेबेंगे. परंतु ऐसा नही है. जिनकल्प मुद्धा श्वेतांबर आम्नायमें नी मानी है (जो अब काल दोष और संहनने दोषसे विवेद है) उस मुद्धाके धारी साधु मुनिराज संसारी जीवोंसे जिन्न विचरते थे. और जिसको तुम जन्मकी अपेक्षा दिगंबर सिद्ध करते हो यदि वही दिगंबर मान लीया जाय तो संसारके संपूर्ण व्यवहार व्यर्थ हो जाय. क्योंकि जब माताके पेटसे ही दिगंबरी उत्पन्न हुए तो गुरु आम्नाय वा शास्त्र पठन पठनकी कोई आवश्यकता ही नही रही. और संसारका संपूर्ण व्यवहार ज्ञानमें समजा जाय. सो ऐसा कहना आकाश पुष्प और बंध्यापुत्रके विवाह तुल्य है,-

क्षुल्लकजी लिखते है “औघा, मुपटी, धोली चदर, लकमी हाथमें कोणसी मिति, किस संवतमें धारण करी ?-और तुमारी माताके पेटसे निकले तब धोली चदर, मुपटी नहीं था, पीठे धारण करा. सो धारण कोणसी मिति संवत्में करा था” ?-

(क्षुल्लकजीका प्रश्न.) (पद्य.) नम्र आवे नम्र जावे, नम्र करे कल्लोल;
जो नम्रकी निंदा करे, सोही डावा डोल, ?.

(हमारा उत्तर.) (पद्य.)-जन्म समय अज्ञानी होवे, वापकर्म कल्लोक,
मरण समयके कष्ट घनेरे, समज सोचकर बोल, ?,

जन्मकी अपेक्षा चदर, मुख वस्त्रिकाका उत्तरतो उपर लिख आये, परंतु इतना अवसर पाय विशेष लिखते है कि-अनादिका-लसें जो प्रवर्त्तन चलता है उसका कोई संवत् मिति नहीं होता.

संवत् मिति नवीन वस्तुकी होती है. क्षुल्लकजी वारंवार एक शब्दको उच्चारण करते है कि-नम्र, नम्र, नम्र.-यह नहीं विचारते है कि-इसका अर्थ. एक समान सब जगें नहीं होता, देखो जब बालक जन्म लेता है वह नम्र दशा उसकी विषय वासना ज्ञान रहित है, और जब तरुण अवस्थामें विषय विकार सेवन करता है वह नग्न दशा पाप विकार युत है, और यह कर्मजी गुप्त स्थान होता है. और जब मरण समय आता है उस मरने वाले मनुष्यके ज्ञाव विचित्र होते है, परंतु वस्त्र तो उस वस्त्रजी शरीरके साथ रहते है, सब जगह एक नम्र, नम्र, ही पुकारते रहना विचारशील पुरुषोंका काम नहीं. (यहां एक दृष्टांत है.)

एक मनुष्यने एक तोता पाला, और उसे (इसमें क्या शक है?) यह वाक्य सीखा दिया. पिंजरेमें घालकर बाजारमें बेचनेको आया. ग्राहकने तोतेके मालकको पूछा कि-तोतेको मॉल क्या लेओगे? मालक बोला सोरुपया लूंगा. झूठ हो तो तोतेमें पूछ लो. ग्राहकने तोतेसे पूछा. क्यों रे ! तोता ! तूं सो रूपयेका है. तोतेने उत्तर

दिया [इसमें क्या शक है?]-ग्राहकने बन्नी खुशीके साथ सो रुपया देकर तोता खरीद लिया, मनमे विचारता है तोता बन्ना ज्ञानी है. रस्तमें तोतेसैं पूढता है क्यों गंगाराम ! तुमसैं हमको बहोत लाज्न होगा ? तोतेने कहा [इसमें क्या शक है?] ग्राहकने घरले-जाकर रख दिया. रोज अन्ही अन्ही चीज खोलाता रहा. कित-नेक रोजके बाद ग्राहकने तोतेसैं पूढा-तो क्यों जी गंगाराम ! इतने दिवस हुये तुमने हमकों कुढ लाज्न नही दिवाया सो क्या ! चुपके ही रहोंगें ?-तब तोतेने वही कह दिया (इसमें क्या शक है ?)-फिर मालक बोला तो क्या ? हमारे रुपैये डूब गए ?-फिर तोता बोला (इसमें क्या शक है ?) फिर मालक बोला तेरा बेचनेवाला कोइ पाषंमी ठग ही था ! तोतेने जो याद था फिर कह दिया [इसमें क्या शक है !] इस दृष्टांतका सारांश यह है कि-जैसे तोतेके एक शब्दने उसके ग्राहकको डःख दिया उक्त क्षुल्लकजीके नग्न, नग्न पुकारनेकों जो विना ज्ञान धारण क-रेगा सो ठगाया जायगा.क्योंकि-नग्न शब्दका अर्थ सब जगें एक सार नही हो शकता. और नग्न नग्न सब एकत्री नही हो शकते.-

क्षुल्लकजी लिखते है-"षट् ङ्ख्यमें श्वेतांबरी कोन है,?"-यह कितनी बन्नी भूल है, ! इस लिखनेसे हम नही समजते, उनका तात्पर्य क्या है, ? क्योंकि षट्ङ्ख्यसैं त्रिन्न त्रैलोक्यमें कोई पदार्थ नही है, और यह हमारा बेटा, यह हमारी बेटी, यह हमारी लुगा ई. यह हमारा बाप, खाना, पिना, मलमूत्र, गांव, धन, इत्यादि श्वेतांबरी लोक नही बोलते, जैसा संसारी जीवोंका व्यवहार है तैसा सबका है, इस्सैं क्षुल्लकजीने क्या सिद्ध किया ?-केशरीयाजी ती-र्थ हम प्रथम त्री लिख आये है कि-जो जाव सहित पूजे, आरा-

धे उसका है. और उसका पूजक आराधक है, सोही केशरीया-
जी तीर्थका है. परं यह तीर्थ उन मनुष्योंका नहीं है जो श्वेतां-
वर आम्नायकी अन्य प्रतिमाउसँ चिन्न रहते है जैसे तुम.-

और हमारी चदर पुस्तकादि विशे पुढा कि-“तुमारा वेष
श्वेतांवरी है या तुम श्वेतांवरी हो !”-सो हम तुमसँ ही पुढते है
कि-क्षुल्लक बह्वचारी तुम हो ?-या तुमारा आत्मा, ?-और धर्म-
दासजी नाम तुमारा है ? कि तुमारा आत्माका, ?-तुमारा जन्म
प्रथम हुवाकि तुमारा आत्माका ?-और तुमकों जीवते या मरने
पर अग्निसेँ संस्कार कियाजाय तो तुम जी जलनेके नहीं.
इसी प्रकार हमकों जी समज लो.-यह तर्क तुमारी वालकवत्
है. बुद्धिमानोके प्रमाण योग्य नहीं. परंतु हम क्या करे प्रथम
जब तुमने ही लिखा तो हमको जी तद्वत् ही लिखना पमा.

(क्षु.)—ये तो हमकूभी मालूम है के जैन दिगंबर आमनायका श्रावक
मंडलीमें केताक तेरापंथी नामकमध्ये ऐसा अवोध जन है के जैन दिगंबर प्र-
तिमाके चरण उपर सुगंध पुष्प केसर विलेपन होय तो वह लोक उसमूर्त्तिका
दर्शन पूजन वंदन नहीं करते. अर्थात् अस्त्रियादिकका वह लोक योनादिक
तो प्रेम भावसे देखते है. परंतु फिका भावसेभी केसर चर्चित प्रतिभाका द-
र्शन नहीं करते. तब श्वेतांवरी मंदिरमें—तो वह तेरापंथी नामक भ्रष्ट लोक
किस वास्ते जावेगा. ऐसा इस काल दोषसेँ जैन दिगंबर आमनायका श्रावक
मंडलीमें केताक ऐसा अवोध जन भी है. इस प्रमाणकी अवोध बुद्धि आपलोक
न गवियेगा. येहमेरी लघुता ग्रहण कारणः—

(हं.)-क्षुल्लकजीने तेरापंथी दिगंबर श्रावकों पर जो आ-
क्रमण किया था उसका उत्तर पंमित ऊरगदलाल बलदेवदास
आदिने मृजानगढ जिह्वा विकानेरके द्वितीय सभा पत्रमें उपवाया
है, जो मुरादाबादके गुलजार अहमदी यंत्रालयमें श्रावणमास
संवत् १९४५, में पृष्ठ ३१, सेँ १६, तक निम्न लिखित उपा है.

(अ.) (धमनगर मालवा प्रश्नोत्तर) —

क्षुल्लक धर्मदास और पंमित ऊरगदलाल बलदेवदासजी आदिकें श्रीमज्जिनेंद चंद्रके मतानुजाई यथार्थ वस्तुके ज्ञाता सज्जनों-कों प्रगट होवै की नाम मात्र क्षुल्लक धर्मदासकी पत्रिका देश मालवे वडनगर गाममे आई और आपके वहांकी आई होगी उसमे जिस तरहसे धर्मविरुद्ध समाचार थे तिस पत्रिका उत्तर इस तरहसे लिखा गया है सो आप यथार्थ ज्ञातानकों प्रगट करते है.

१. प्रथम तो हमने उनसे यह पूछा की नाम तो क्षुल्लक और आचरण यह सो यह जेष कोनसे मतके अनुसार धारण किया ! अगर जो कहोगे कि जिनमतके अनुसार धारण किया तो हम यह पूछते हैं कि जिनमतमें तो क्षुल्लक ऐसा नाम झारमी प्रति-माके पहले जेदका है और उसका आचरण करनेवाले तो खंभ वस्त्र मात्र परिग्रह और शुद्ध दौष टाल मुनिवत् परधर आ-हारकों जाते है और तुमतो ख्य इकठा करके आरंजादिक क रते हो और डमरोंको आरंज आदिकका उपदेश देते हो सो ये कार्य शास्त्रविरुद्ध और जिन आज्ञा जंगको लिये हुये हैं और आज्ञा जंगोंको अनंतससारी जगवानने कहा है इस हेतु तैं तो तुम मिथ्या जेषी हो सो तुमारी पत्रि हमारे मान्य नही हु-सरे तुम्हारी पत्रिकामें जितनी बातें तुमने लिखा है सो सब श्री मज्जिनेंदके मतसें प्रतिकूल अर्थात् विरुद्ध लिखी है उसके नि-पेधके अर्थ और जोले जीवोंके मन न बहकनेके अर्थ उत्तर लिखा है सो एक तो यह है;

२. इसरे उनने यह लिखा की जैनमतमे दोय पद है एक दिगम्बर इसरा स्वतांबर तिसका उत्तर ऐसा लिखाकि यहकहना तो जिनको दो नेत्र भ्रष्ट जए हो तिनका है तुमारा जी एक नेत्र भ्रष्ट जया हुवा सुणाहै इसरातो कायम है अगर वो जी भ्रष्ट होगया होवै तो मालूम नही यह वचन कठोर है सो माफ करना इस लिखनेका मतलब यह है की स्वताम्बरोंको तो संसय मिथ्याती शास्त्रोंमे जगै जगै आचार्योंने वर्णन किये है सोही कहा है (ईंदोविय संसेयो) ऐसा पद है सो जिनमत बाह्यकों तुमने जिनमतमे माना इस हेतुसे जी तुम जिनमत बाह्य हो.-

३. तीसरे उनने यह लिखा है कि तुम तेरापंथी ऐसा ह-मको लिखते हो सो तुम मेरे पंथी नही ऐसा व्यंग लिखा है तिसका उत्तर इस तरहसे दियाकी जो श्री जैनधर्मके श्रध्दानी है सो तो नेम करके दर्शन ज्ञान चारित्र भ्रष्ट ऐसे तुम सो तुम्हारे पंथी कैसे होय श्रध्दानीतो तेरेप्रकारचारित्रके धारक ऐसे जिनेंद्र मुनेंद्र तिनके पंथसे है तिसवास्ते तेरहपंथी कहलाते है-यह तेरापंथी सव्द कुदेव, कुगुरु, कुधर्मका, निषंधवाचक है तातें सत्यार्थ धर्म प्रवर्तने वालोंका नाम तेर.पंथी है और उसमें यह लिखा है की तेरे प्रकारके चारित्रको धारे वे तेरहपंथी होते हे सो तुमतो हिंस्यादिक वा कषायादिकमे प्रवर्तते हो; तुम तेरह पंथी कैसे; इसका उत्तर दियाकी कल्याणतो कषायोंका जितना अंस अज्ञाव होवैगा तितना अंस ही होवैगा परंतु इस लिपनेसे तेरहपंथी नामका अज्ञाव नही हुवा सोचो. अर्थात् विचारोंके जिनके बः संमृ पृथ्वीका गज्य और अथानवै हजार रानी तिनकोंजी दिगं-

बरी कहे और अबारजी नाना परिग्रह आरंभ करी सहित गृहस्थ श्रावग दिगंवरी कहलाते है सो प्रसिद्ध है जो दिगंबर मुझा धरनेसे दिगंवरी कहलाते तो चक्रवर्त्त नारायण बलज्ज काम देव मंडलेस्वरादिक कोईजी दिगंवरी नहि कहलाते परंतु वे सब कहलाते है तैसं ही तेरहपंथी जानने. ऐसै अपनी कषायें पुष्ट करनको खोटा अर्थ करना योग्य नही इसका फल सबज्ञाने निगोद कहा है जरा जय रखखो क्यों कुपहु करकै निजपर कोम बोते हो.-

४. चौथे उने यह लिखा की तुम तेरहपंथी तो कहलाते हो और विषयजोग सेवना योनादिकका अवलोकन स्पर्श करते हो सो तुम महापापी हो ऐसा अपभ्रंस शब्द लिखा है तिसका उत्तर ऐसै दिया की जो अंतिलुब्धता करके विषयादिकका सेवन करते है तिनके पाप बंध होता है लेकिन महापापी सो मिथ्यादृष्टि प्रतिज्ञा जंग करनेवाले और धर्मके आश्रित आजीवकाके करनेवालोंको कहा है और योनादिक अवलोकन करनेवाले महापापी है तो तुमारे पिताने तुम्हारी माताका योनि आदि अवलोकन या स्पर्शनादि नहि किया मालूम पडता है तुम्हारी उत्पत्ति किसी और हीसे है सो तुमारेही लिखनेसे मालूम होती है अगर जो कहोगोकी हमारे पिताने किया तो तुम महापापीकी अवलाद व्हरे एसी एसी कुजुगते बनाबनाकर ज्ञात्रे जीवोंको क्यों म्बोते हो जरा नर्क निगोदादिकका जय रख उःख तुम ही को भुक्तना पमेगा;—

५. पांचवे उसने यह लिखा कि केशरलगे प्रतिविंब अवलोकनका तो त्याग करते हो और गोवरादिक अवलोकनका त्याग नहीं करते हो तिसका उत्तर यह दिया है कि हमारे तो जिनेन्द्रगवानके मतमें वस्त्र, भूषण, गंधमाल्यादिक परिग्रह सहित तथा राग द्वेष जयादिक वर्द्धिक प्रतिविंब पूज्य नहीं. फकत निरावरण निर्विकार निर्दूषण जिनेन्द्र सदृश वीतराग ज्ञावकी वर्द्धिक जिनेन्द्रकी आज्ञा प्रमाण जिनविंब पूज्य है और जो इसकी अधिक चर्चा करनी होतो शास्त्रोंका प्रमाण लेकर इन्दोर तथा बहनगरमें हाजिर होना तुमकों सर्वज्ञ मतके अनुसार उत्तर दिया जावैगा.

६. ठठे, उनको यह लिखा है कि तुम चर्चा बगेराहकी पुस्तक ठपाकरकै जैन ग्रंथोंका अविनय किया सो यह तुमने बनी छष्टता करी इसका फल अद्भुतके अनंतवे ज्ञाग ज्ञान धारककी अवगाहना पावोगे.-

७. सातवे अब १ सिष्या हितकारी तुमको देतेहै तुम सिष्या देनेके लायक पात्र तो नहीं हो सोही कहाहै-श्लोकः हितोपदेश मुर्खाणां प्रकोपाय नशांतये. पयःपानं भुजंगानां केवलं विष वर्द्धनं, १, परंतु जैन धर्मियोंका चित्त करुणारसकर सदा काल आश्रित रहता है तिस कारणसे तुमको लिखते है कि ऐसी धर्मशोहको बातें करोगे तो तुम्हारे हकमें बहुत बुरा होवैगा विचारो पहलेजो इसी अपराधसे दो चार जगें तुम्हारा अपमान हुवा है एकतो देश मालवेमें धार नगरमें प्रतिष्ठा हुई तब हमारे साम्प्रभे तुमको सत्पार्थ ज्ञातानकी सन्नामेंसे ज्ञागना पमा, -उंसरे

उत्तरपतिजीसें तुमने धर्म विरुद्ध चरचा करी तद-दिल्ली मंगलभेसे निकाले गये ऐसे. १ तुम्हारे अपमान तुमको याद नही जिनको अपमान हिताहितका विचार नहि तिनको यादा लिखना व्यर्थ है ८ इस रोतिसे उसकी चिठीका उत्तर दिया गया है और आप साधर्मियोंसे जो हमारी यह प्रार्थना है की ऐसे कुधर्मोंको सिद्धा रूपी दंड दिया करैँ सो आयंदेसे धर्मविरुद्ध चरचा नहीं करैँ-इति शुद्ध मिति मार्ग सोर्ष सुद्ध ८ संवत् १९४४ भृगुवार, ॥-

(है. — इस तेरापंथीयोंके लेखमें अशुद्धियोंके अतिरिक्त यद्यपि अनेक ऐसे कुवचन जरे है जो विद्वानोंके लिखने योग्य नहीं. परंतु हम क्या करे? जब क्षुल्लकजीने ही ऐसे शब्द लिखे जो अकथनीय है तो यह विचारे श्रावक तद्वत् लिखेतो आश्चर्य ही क्या है, ?-विद्वानोंकी यह रोति नही है कि किसी मनुष्यको-अनंत संसारी, मिथ्याज्ञेयी, दो नेत्र भ्रष्ट, तुमरा एक नेत्र भ्रष्ट, तुम जिनमत बाह्य हो, दर्शन ज्ञान चारित्र भ्रष्ट, कषाय पुष्टकर नेकों खोटा अर्थ करना, तुमारी उत्पत्ति किसी औरही से है, महापापीकी ओलाद, डःख तुमहीकों भुक्तना पडेगा, बनी उष्टता करी, -इत्यादि निज लेखनी द्वारा लिखे. वा. मुखसेंजो कहै. परंतु क्यों न हो, ! क्षुल्लकजीके दिगंबर पक्षके ही तो श्रावक है. कहे ही कहै;—

इसी लेखमें निम्न लिखित वाक्यज्जी समीक्षा करने योग्य है “श्वेतांबरोको तो संशय मिथ्याती शास्त्रोंमें जगे जगे आचार्यों-ने वर्नन किये है सो ही कहा है कि-ईदो वियसंसेयो;”--

यह लिखना हमारे संबंधी है और अप्रमाणिक और मिथ्या है. विना आधार कोई वचन लिखना अल्पज्ञताका चिन्ह है. परंतु जिस धर्मदासजी क्षुल्लकने दिल्लीमें संवत् १९३० के खगजग संपूर्ण दिगंबरी श्रावकोंमें चतुर्मासा करके अपना इतना मान्य कराया जो इस समयमें अन्य पुरुषका होना कठीन है, और जिस धर्मदासजीकों तेरापंथी और विशपंथो दोनों प्रकारके दिगंबरीयोंने आचार्य करके माना, और उनके चरणोंकी रजकों निजमस्तकसें हठाया, आज उनही धर्मदासजीकों जब तेरापंथीयोंने उपर लिखे हुए अनेक कुवचन कहे तो यदी एक दो कुवचन हमकोंजी कह दिये तो कुछ हर्ज नही. क्योंकि हमतो जिन ही है. और जो उन कुवचनोंका उत्तर लिखा जावे अनेक दिगंबरीयोंका चित्त व्याकुल हो, इहां हमकों क्षुल्लकजीका ही उत्तर देना अनिष्ट है. फिर अन्य मनुष्यकों प्रतिपक्षी करनमें कोई लाज नही है. हा ! इतनातो अवश्य लिखेंगे कि-जो सूत्र दिगंबरी तेरापंथीयोंने उपर लिखा है सो सार्थक और प्रमाणिक नही है. क्योंकि जिसधर्मदासजीकी उन्होंने पूर्वोक्त मान बढाई प्रतिष्ठा बढाईथी तब तो क्या उनमें गुण था ?-और जब निंदा लगी तब क्या अवगुण होगया था ?-यह विदित न हुआ.

(क्षु.)—यह मेरी लघुता ग्रहण करणा. क्यौ के दिगंबर पढ़वाले श्रावक और स्वतांबर पढ़वाले दोनों श्रावक मंडलीमें कोई जीव सम्पत्त सहित दान पूजा, जीवदया, पंच परमेशीका आप्य नाम पापक्रियाका त्याग, चोरी, हिंसा, कुसील, जुवा, मांस, मद्य, वेश्या, इत्यादि पाप, अपराध, राग, द्वेषादिकका जो कोई

त्याग करेगो उसीका ज्ञाना होगा. मेरी समजतो येती है. जादा समज मेरी मेरे ज्ञानतर चंद्र चांदणीवत्, सूर्यकिरणवत्, अग्नि उष्णतावत् एक मेरी मेरे ज्ञानतर बुद्धि है सो है ही है जिसकी निशाणी और सैदाणी क्या बताऊं. घायलकी गति घायल जाने, क्या जाने वैद्य विचारा. इति अलंब ॥

(ह.)—क्षुल्लकजी लिखते है कि “मेरी लघुता ग्रहण करणा” सो बने आश्चर्यकी बात है कि-रस कालमें कोई किसीका ऐश्वर्यजी सहन नही करशकता तो लघुता क्यों कर ग्रहण हो शकती है, !-और आपने लिखा कि-“दिगंबरी श्वेतांबरी दोनु पक्षके श्रावक जो जाप दान पूजा जीव दया इत्यादि करेगा उसका ज्ञाना होगा”-यह लिखना सर्वथा वृथा है. क्योंकि यदी दोनु पक्ष वीतराग प्रणीत एक ही मार्ग चलते है तो अंतर क्यों है ?-एकतो सम्यक्तवान् और एक मिथ्यान्वी केसे हो शकते हे, ?-और अंतर है तो उत्तर दक्षिण जिन जिन मार्ग चलनेवाले एक स्थानपर क्योंकर पहुंच शकते है ?-इसमें जैसी आपकी समज आपके पास चंद्र चांदणीवत् सूर्य किरणवत् अग्नि उष्णतावत् है यह आप ही के पास रहे. हमको अथवा अन्यकों उसमें कोई ज्ञान नही, क्योंकि जैसी तुमारी समज तुमारे पास ऐसी हमारी हमारे पास. और तुमने लिखा के;-

“घायलकी गति घायलजाने, क्या जाने वैद्य विचारा ” सो जो मनुष्य अशुभकर्मरूपी शस्त्रोंसे घायल हुवे है उनकों सत्प स्याद्वाद जैनसिद्धांतरूपी ओषधी बहुत शिघ्र अज्ञा कर देती है. क्षुल्लकजी !-आप ऐसा लिखते हो कि-“क्या जाने वैद्य वि-

धारा " इसका तात्पर्य यह है कि तुमारे चित्तके भावकों कोई नहीं जानता. और जैन सिद्धांतका सारांश यह है कि-सिद्ध जगवान् अपने ज्ञानमें सर्वकाल सर्वदर्शी है. अब कहो ! तुमारा लिखना सत्य है या असत्य ?-यदी सत्यमानोंगे तो तुमारा जैन धर्ममें अविश्वासी होना सिद्ध होगा. और अविश्वासी सिद्ध हुवे तो जैन आमनायसें जिन रहोंगे. और जब जिन हुवे तो श्वेतांबरी रहे न दिगंबरी फिर बतलाइये आप किस गणनामें गिने जाओगे, ?-

(क्षु.)-कोई सज्जन हमारे नाम कृपापत्र ज्ञेयों तो हमारा ठिकाना इस प्रमाणसे है. खानदेश जिल्हा धूलिया माक घर नेर मुकाम गांव कसुंबामे क्षुल्लक बह्मचारी धर्मदास. इस प्रमाणसे कोई सज्जन नाम पत्र ज्ञेयों तो शास्त्री बालबोधी अक्षरा-धारा भोजना. इति अत्रं. (इति प्रथम जाग समाप्त.)-

(हं.)-क्षुल्लकजी लिखते है कि-" जो कोई सज्जन पुरुष हमारे नाम कृपापत्र भेजे तो अमूक ठिकाने अमूक पत्तेपर भंजे-"

यह बड़ा विलक्षण लेख है, क्यों कि प्रथमतो इस जीवका त्रैलोक्यमें कोई ठिकाना ही नहीं, जहां जहां यह जीव जन्म मरण करता है वह ठिकाना मुसाफरके रैनवशरेवत् है. और भव्य जीवकों ठिकाना तो परंपरा करके मोह ही है. (इसरा) जब निजघर त्याग क्षुल्लकजी हुए तो किसका ठिकाना ? किसका घर ? और किसका पता ?-यदि नाम मात्र होवेभी तो गृहस्थी-कों संभवे है त्यागीको नहीं. हमारातो यही सिद्धांत है

उहा.

जब घर ठोमा आपणा-शिरके पाड़ें केश.

ममता माया त्यागके,-विचरें देशविदेश. ३

जब ऐसा विचार लिया तो किसका ठिकाना ? किसका देश ? किसका गृह ? और किसका परिवार ? किसका पुस्तक ? किसका चोपानीया ? किससें प्रीत ? और किससें वैर ? सब हो-सें भिन्न रहकर निज आत्मकल्याण करना ही ठीक है, क्यों कि-यह जीव अकेला ही चोरासी लक्ष जीवयोनी और त्रिलोकीमें भ्रमता रहता है, इसलिये ज्ञानवान्को किसी स्थान वा देश संबंधी निज ठिकानेका ममत्व नहीं रखना चाहिये. इसमें मुर्बा होनेसें *परिग्रह दोष आता है.

(क्षुल्लकजीके लेखसें पाया जाता है कि इस प्रथम ज्ञागके अतिरिक्त वे कोई अन्यज्ञागनी रचेगे सो जब हमको इसके अन्यज्ञाग मिलते रहेगे समीक्षा नी कीयी जायगी.)

(इतिअलं.)

इन दिनोंमें एक पत्र बम्बईसें जैनविद्याशालाके अध्यक्ष माह्याभाइ उत्तमचंदने हमारे पास भेजा. यह शिलायंत्रका षपा हुवा इसमें षापनेवाले षपानेवाले दोनोंका नाम नहीं है. जिसको गुम्म चोठी कहते है सो यह है. नाम चाहे किसीका न हो परंतु इसका अंतिम लेखसें यह विदित होजाता है जिसने यह षप-वाया है. अंतिम पंक्तिमे यह पद लिखा है कि-“धर्मका उद्योत

होगा."-इसका ध्वन्यर्थ समझ लीजिये, भुल्लक धर्मदासजी खुद अपना नाम प्रगट बतारहे है कि-हमने यह उपवाया. परंतु प्रगटपने नाम न लिखनेसें राज्यकी चौरी और राज्यझोही तो धर्मदासजी हो चूके. एसा करना उचित नहीं था. उचित यह है जो लेख लिखा करे उसमें नाम न छुपाया करे. श्वेतांबर न्यायांकुशमें तो लिखते है अमूक हमारा नाम-अमूक ठिकाना-अमूक पता-अमूक शिरनामसें पत्र देना, और यहां सबको उमा दिया. इसजगह कौनका मर था ? सो विदित न हुवा.

भुल्लक धर्मदासजी इस विना नामकी जाहर खबरमें लिखते है कि-मैं बडा दिलगिर होकर कहता हु श्वेतांबर धर्ममें बडी पोल धस रही है. केइ तरहका टुंग करके केवल उगाइ शुरु कीयी है इसका कारण यह है कि-निःस्वामित्व धर्म है, अज्ञी जैनमें कोई राजा नही, एक रुगनाश्र नामा टुंढिया आत्माराम टुंढियेका चेला सो कजी तो यति बन जाता है, कजी पीत वस्त्र धारण कर लेता है, ऐसे नाना प्रकारके टुंग करके लोग लोगाइयांको उगता है.-न्नगवान् विजय बुटेरायजीका शिष्य है सो ज्ञी नाना प्रकारके वेषांतर बनाकर उगाई करता है. महात्मा ऊबेरचंद ताराचंद कटणी मोरुवामाका रहनेवाला ज्ञी बनी उगाई करता है, संवत् [१९४५] में जलगांवमें इसने चौमासा किया था, और एक स्त्रीको भगाके लेगया था. फिर दोवर्षकी कैद भुगती, ऐसे ऐसे कपटीओसें श्वेतांबर लोग बहोत राजी रहते है,-

[इसका उत्तर.]

भुल्लकजी लिखते है कि-श्वेतांबर धर्ममें बनी पोल और

ठगाई चलती है इसलीये मैं बन्ना दलगिर हु. यह उन्होंका दिलगिर होना सरासर व्यर्थ है. क्योंकि-धर्म जो है सनातन है. इसमें नले और बूरे दोनो प्रकारके शरूश रहते है भले सज्जन निष्कपट धर्म पालते है इतर जन इतर प्रकारसे पालते है और इसमें विघ्न होना भी कुछ नवीन नही. धर्मी और अधर्मी सदैव चले आते है. जैनी राजा न हुवा तो क्या हुवा ! जोराजोरी धर्मतो वहभो किसीसें नही करा सकता. अलबते ! जिस धर्ममें राजा हों उस धर्मकी उन्नति शोभा तो जरूर बढे सकती है बल कपट करनेवालोंको दंमभी दे सकता है, परंतु इससें क्या हुवा- अंतःकरणसें जो अधर्मी है वे कुछ राजाके हुकमसें धर्मी नही बनते, जैन धर्ममें जो आधुनीक पंथो ठगाई करते है यह भी नवीन प्रचार नही है. तीर्थंकरोके विद्यमान होते भी-(३६३) पाषंम चलते थे और जैनमें भिन्न प्रचार चलानेवाले चलाते ही थे जैसे मरिचि और गोशालाने मनमाना पंथ चलाया था. सब कोइ जैनी जानते है. फिर जो आजकल नवीन प्रचार चलता हे इसमें आश्चर्य ही क्या ?-रुगनाथ दुंढियेको आत्माराम दुंढियेका चेला लिखा यह भी फूठ है क्योंकि-आत्मारामजी दुंढिया है नही और जिस समय वे दुंढिये थे उस समयके गुरु वा चलेसे उनका अब कोइ संबंध नही. फिर आत्मारामजीको रुगनाथसें क्या संबंध है, ? और असलमें रुगनाथ नामे कोई मनुष्य उनका शिष्य है ही नही. भगवान् विजय बुटेरायजीके शिष्य विषय और महात्मा ऊबेरचंद ताराचंद कटणी मोमवामा विषयक लिखा अगर यह सत्यबात है तो भी धुल्लकजीको दिलगिर होनेका क्या प्रयोजन!

क्या ! दिलगिर होनेसे वे हठ जायगें ? बुटेरायजी हमारे गुरुके गुरु है उनके शिष्य प्रति शिष्य हम [१००] साधु अंदाजसे है. अगर इसमें एक दो विपरीत चलते हो तो इसका कोई क्या करे? जोराजोरीतों कोई किसीको रख नहीं सकता. जो जेसा करेगा आप भुगतेंगा. अगर क्षुल्लकजीको ऐसी बातेंपर दिलगिरी ही रहती है तो पहले अपने समुदायकी तलाश तो कर लेवे कि-दिगंबर आमनायमें मेरे जैसे दूसरे क्षुल्लकजी होकर क्या क्या कृत्य कर रहे है और पांभे लोग कैसाक चलन चल रहे है.

इन्ही दिनोंमें एक महिनारोज नी नहीं हुवा है पंमित जीयालालजी बम्बई जाते समय वियावर अर्थात् नयाशहर गये थे. और शैठ अमोलकचंद चंपालालके नवीन मंदिरमें दर्शन करनेको गये तो दरवजेमें एक मयूरपींठी और कमंलु धरा देखा. और एक मनुष्य मलीन चदर ओढे मुख ढके हुवा हिल रहा था. दो चार मनुष्य जो निकटवर्ती थे उनसे पूठाकि- यह कौन है ? तो ऊत्तर मिला क्षुल्लकजी है और ध्यानमें बेठे है. यह सुनकर पंमित जीयालालजीने विचारा कि-चलो बाजार देख आवे, लोटते समय अवश्य मिलेंगे, क्या झुञ्जीवातहे कि-यह क्षुल्लक धर्मदासजी ही हो ! क्योंकि- उनके अतिरिक्त तो आजकल दिगंबर आमनायमें कोई क्षुल्लक ही नहीं है, जब बाजारसें दो तीन घंटे पीठें लोटकर आये तो दरवजेमें क्षुल्लकजी न मिले. पुठनेसें पता मिलाकि-मंदिरमें गये है. पडित जीयालालजी नी मंदिरमें गये, और नीतर जाकर देखा तो एक चक्षुविहीन पुरुष एक अन्य मनुष्यके कंधेपर चढा पाया और यह चक्षुविहीन पुरुष

जी फरुखनगरका ही रहनेवाला है. इसका नाम फरुखनगरमें-
 “दयाला”-प्रसिद्ध है. अपनी तरुण अवस्थामें इस मनुष्यने अ-
 पने आपको दयाराम एसा नाम प्रसिद्ध करके बहुधा जैनी यति
 जटारक साधु श्रीपूज्य आदिको उगा, और एक जैन बंक खो-
 ला था. अब जोजनमें जी तंग हुवा तो अंतसमय क्षुल्लक बना
 है. परंतु कपट बुद्धिलगी हुई है. मंदिरमें श्रेष्ठ चंपालालजीसें
 कह रहा था कि मैंने दो लक्ष रुपये इकठे करलिये है और वि-
 शेष इव्यकी अवश्यकता है, पावागढका मंदिर तयार कराउंगा,
 यह चरित देख कर पंमित जीयालालजी जलटे चल दिये. और
 अपना प्रगट करना ठीक नहीं समझा, क्योंकि-उक्त चक्षुविही-
 नकों इसमें कष्ट होता.-अब हम पूछते है उक्त चक्षुविहीनने क्षुल्लक
 व्रत किस गुरुके पास लिये ? किसने संयम दिया ? हमारे प्रति-
 पक्षी क्षुल्लक धर्मदासजी श्वेतांबरीओंको तो बुरा कहते है परंतु यह
 नहीं विचारते है कि-हमारे मस्तकमें ही नेत्र संख्या पूरी नहीं है.

(सत्य है कि-) [अनुष्टुप्वृत्तम्.]

पुमान् सर्षपमात्राणि-परबिद्धाणि पश्यति,
 आत्मनो बिल्वमात्राणि-पश्यन्नपि न पश्यति, १

आगे क्षुल्लक धर्मदासजी लिखते है अमूक गहका श्री पू-
 ज्य गद्दीके योग्य नहीं, अमूक गहके श्रीपूज्यको किसीने पदवी
 नहीं दीयी आप ही आप श्रीपूज्य बन गया है, कौनके पास
 सूरिमंत्र लिया ? किसकी आज्ञासें किस गुरुका शिष्य हुवा?-
 इनको मानना पूजना न चाहिये, जो मानेगा पूजेगा वह गद्दी-
 का हरामखोर होगा. इत्यादि,-

[इसका उत्तर.]

यह लेख ऐसा है जिसमें सत्यता और मूर्खता मिली हुई है, अबलतो इस बातका उत्तर क्षुल्लकजीकों उन उन श्रीपूज्योसैं (जो अब विद्यमान है) पुढना व्याजब था कि-आप किसकी आज्ञासैं श्रीपूज्यजी हुवे ? किस गुरुसैं सूरिमंत्र लिया ? अगर वे उत्तर न देते तो फिर श्वेतांबर संघको पुढना था कि-आप लौग इनकों मानते पूजते हो किस आधारसैं मानते हो ? सो सत्री प्रगटपने पुढना था, विना नामके पत्र ढपाना और नोंदा करनी यह संसारसैं विरक्तोंका काम नही. इसमें मायावीपना पाया जाता है. असली हकीकत तो यह है कि-जो मनुष्य ईर्ष्या-लु होते है वे दूसरेको किसी गद्दीका अधिकारी हुवा देख नही सकते. परंतु यह केवल अयोग्य बात है इसमें कर्मबंधके अतिरिक्त कोई लाभ नही. हा ! यह हम नही कह सकते है कि सत्री साधु श्रीपूज्य अछे ही है वा सत्री साधु बूरे है, काल दोषसे श्वेतांबर दिगंबर दोनोमें विपरीत चलनेवाले अनेक मुनि हो गये है. परंतु इसमे हम तुम और अन्य कोई क्या करे! उपदेष्टा उपदेश देनेका अधिकारी है, उसमुजब चलना न चलना यह चलनेवालोके आधीन, कुड हमारे तुमारे आधीन नही.

वैशाख मास पूरा हुवा, व्याख्यान रौज होताही था, जीसमें विविध तीर्थ कल्प-त्रिजवदनचपेडा-और मुक्तमुक्तावली तीन ग्रंथ परिपूर्ण वाचे. संवत् (१९४८) ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमें रविवारके रौज फरुखनगरसैं मथुरा तर्फ विहार किया, प्रथम मुकाम पांच कोस हरसरु गांव-हरसरुसैं आगे (५) कांस वादशाहपुर

यहां [१] दिन ठेरै, बादशाहपुरसें जौंसि-सौना-इंमरी-मंमना-का-सेंवली-होमल-कौसी-और चोमुहा-इन गांवोंमें होते हुवे आषाढ कृश्न [२] बुधवारको मथुरा पहुचे. रास्तेमें अगरवाल. पल्लीवालोकी वस्ती गांव गांवमें है. जौंडसीसें सौने गांवतक पक्की समक-आगे होमल तक कच्चा रस्ता होडलसें मथुरातक पक्की समक है, दोनों तर्फ वृद्धोंकी ढांवमे चलते मुसाफरोको ताप बिलकूल नही सताता.

शहर मथुरा—जमनाके दाहने कनारे वसा हुवा पुराना नगर है सूरसेनदेशकी राजधानी यही शहर शास्त्रोंमें लिखा है, सुपार्श्वनाथ जगवान्के शासनमे धर्मरुचि और धर्मघोष नामा दो मुनि यहां आये थे. ये मुनि महातपस्वी जीन्होको दसम-डवालस पढ़-मासपढ़न आदि तप करना तो सहज बातथी, उस वखत मथुरानगरी बने घेरेमे वसती थी, बापी-कूप-पुष्करणी-बाग-ऊद्यान और धनीक जनोंके प्रासादसे सुशोभित थी. उक्त दो मुनि नगरीके बहार भूतरमण उद्यानमें ठेरे. दोनोंने चातुर्मास यहां किया, चारमहिनेके ऊपवास करके धर्मध्यानमे लीन रह्ये, ऐसा इनका प्रशम गुण देखकर उपवनकी अधिष्ठातृक कुबेरा देवी रातके समय इन्होके दर्शनोंकों आयी. दर्शनकर कहने लगी आपके गुणोंसें मैं रंजित हू, कृपाकर मेरेसे कुछ इप्सित वस्तु लीजीये मुनियोंने कहा हम निग्रंथ है किसी वस्तुकी चाहना नही, धर्म सुनाया, देवीने सम्यक्त अंगीकार किया चातुर्मास पूरा हुवा तब मुनि विहारको तत्पर हुवे, देवीने विज्ञप्ति कीथी कि-सबका ल आप यहां ही विराजे रहे तो अति-उत्तम है मुनियोंने कहा

पवनकी तरह हमारी एकत्र स्थिति नही होती. देवी-धर्मोन्नति होती हो तो एक जगह अधिक रहना नही जिनाज्ञासे अविरुध है, निदान ! मुनि यहां कितनाक समय और ठेरे. देवीने अरि-हंत सुपार्श्वनाथकी प्रतिमा सहित स्तूत्रकी रचना करके धर्मोद्योतमे अधिक यत्न किया. विविधतीर्थकल्प आदि ग्रंथोमें लिखा हैकि-जैसे शत्रुंजयमें रिषन्नदेव-गिरनारमें नेमिनाथ-भृगुक-च्छमें मुनिसुव्रतस्वामी और माढेरमें महावीर स्वामी विराजमान है. मथुरामें सुपार्श्वनाथ जगवानका तीर्थ था. अन्यनही केइ मंदिर यहां थे, ढेद ग्रंथोमें जहां मंगल चैत्य प्ररुपणाका अधिकार चला है, मथुराके चैत्य विशेष वर्नन किये गये है.

यादवकुल मंडन-समुद्रविजय-उग्रसेन-वासुदेव आदि दश दशारवर बीर पुरुष और न्नावी तीर्थकर कृश वासुदेव आदि पुन्यवंत पुरुषोकी यह पुरी जन्म भूमि है. १ अर्कस्थल-२ चीरस्थल-३ पन्नस्थल-४ कुरुस्थल-और ५ महास्थल-ये पांचस्थल पहले यहां अधिक मशाहूर थे, १ लोहजंघवन-२ मधुवन-३ ङि-ल्लवन-४ पालवन-५ कुमुदवन-६ वृंदावन-७ हुमीरवन-८ खदीर-वन-९ कोमितवन-१० कालवन-११ बहुलवन-और १२ महावन. येह वारह वन यहां पहले मौजूद थे, वर्तमानमे केइ उजम केइ नामांतर हो गये है, इनमे वृंदावन आजकल शहरकासा आवाद है, १ विश्वंतिकतीर्थ-२ असिकुंमतीर्थ-३ वैकुंठतीर्थ-४ कालिंजर-तीर्थ-और ५ चक्रतीर्थ-येह पांच तीर्थ-वैश्रव संप्रदायके यहां विद्यमा-न थे, महावीरस्वामीके जीव विश्वभृतिने विश्वनंदीके सामने यहां निदान कियाथाकि-मैं अपने तप तेजक प्रजावसें अगले ज-

न्ममें इसको मारनेवाला होउं. जीतशत्रुराजाके पुत्र कालवेशी-
यमुनि अर्शरोगसें पीडित होये हुवे नी यहां गाढ उपसर्ग सहन
करके निश्चल रहे थे. निवृत्तिरायवरकन्या यहां स्वयंवर मंड-
पमें सुरेंद्रदत्त राजकुमारको राधाबंधकी प्रतिज्ञासे परणीथी.
कुबेरदिना श्राविकाने अपनी कुबेरसेना माताकों और कुबेर-
दत्त भ्राताकों यहां अधिज्ञानसें जानें और अठाराह प्रकारके
नाते (संसारीक संबंध) सुनाकर उन्होको निर्मोही किये. कंबल
संबल दो बैलोंने जिनदास श्रावकके संसर्गसें यहां जाति स्मर्ण
ज्ञान पाकर अनशन किया. और काल करके भुवनपति देवोंमें
नागकुमार देव उत्पन्न हुवे. शक्र इंद्रने श्रीकालिकाचार्यसें यहां
निगोदका स्वरूप सुना. उक्त सूरिके कितने शिष्य जो कि-दे-
वताउके होनेमें शंसयवान् थे कहते थे देवता कहने मात्र ही है
वस्तुतः नही वे इस प्रबंधसें निःशंसय हुवे. वस्त्र पुष्प मित्र-डर्बलि-
का पुष्प मित्र यह तीन लब्धि संपन्न मुनि यहां बहुधा वरुत
आये है. जब इःसह डर्निह वारहवर्षी काल पमाथा तब स्कं-
दिलाचार्यने यहां आनकर जैन आगमका अनुयोग प्रवर्ताया था
और सकलसंघ (जैन समाज.) यहां इकठा हुवा था. वाचक मु-
ख्य जीनन्द्र गणि ह्यमा श्रमणने जीर्णप्राय महानिशीथ सूत्र
जो उद्देही जंतु न्हित विन्न चिन्न त्रुटित प्राय हो गया था यहां
पुनः अनुसंधान किया. रूपकमुनिकी तीव्र तपस्या देखकर यहां
शासनदेवी तुष्टमान हुयीथी, और उस समय यह मथुरातीर्थ
अन्यमतावलंबीउने अपने हस्तगत कर लियाथा पुनः आर्हत
संधके हस्तगत कराया. इत्यादि अनेक आश्चर्य निधान यह म-

थुरापुरी जैन आगममे वर्णित है.

वर्तमानमे मथुराका जो कुछ वृत्तांत दृश्यमान है लिखते है, जमना कनारे अज्ञा आबाद शहर-वस्ति (५५०१६) मनुष्य-की-और राज्य अंग्रेज गवर्नमेन्टका-कुल इलाकेकी वस्ती (६७१६९०) है. कृष्णाजीकी जन्मभूमि होनेपर यह तीर्थकी जगह गिनी गयी है. नगर शौचनीक-बाजारमें पाषाणका फर्श-इम्मारते पकी जोसमें पथथरका काम अधिकतालिये है. पनरांह वीश वर्ष पहले श्वेतांबर श्रावको के यहां ३०-३५-घर थे, वर्तमानमे कोइ नहो. घीयामंमीमें एक मंदिर पार्श्वनाथजीका है, सार संजाल इ-सकी लश्कर ग्वालियरके श्रावकलोग रखते है, मूलनायक पार्श्वनाथ जगवानकी प्रतिमा (१) वीलस्तन्नर उंची है, इसके बाये पासे दूसरी प्रतिमा देह वीलस्तन्नर उंची और पुरानी है. ग्यारहसें वर्ष पहलेकी बनो हुयो यह महा अतिशय युक्त है. जो संवेगी साधुजनो यहां आते है. इसी मंदिरके पासकी जगहमें ठे-रते है. हमारा ठेरना नी यहां हुवा. दिगंबर श्रावकोंके घर ६०-७०-और एक पंचायती मंदिर इसी घीयामंमीमें है. वैश्रव सं-प्रदायके मंदिर-सबसे वना घारीकाधीशका-दूसरा जमना कनारे विश्रामघाटका-तिसरा गतश्रमनारायणका-और चौथा गोवर्धन नाथका-वगेरा केइ मंदिर है.

शहरसे (१) मील दूर भूतेश्वर महादेवके पिठामी एक कं-कालीटीला जिसको जैनटीला नी कहते है, पुराना खेंमा है, पहले यहां वमी वस्ती थी. जैनपाठशाला-मंदिर यहां अत्रिक थे, योमे वर्ष पहले सर, ए, कर्निगहाम साहवने प्राचीन लेख

शोधनके लिये यह स्थान खुदाया था, वहीतसें सिलालेख जमीनमेंसें निकले थे, बुद्धर साहबने इन लेखोंको- "ओर्थेंटीसिटी ऑफ थ जैन ट्रेमीशन-" कीतावमें प्राषांतर करके अंग्रेजीमें उपबाये है. जैनाचार्यके नाम-गण-शाखा-आर कुलके नाम जो कल्पसूत्रमें लिखे है इन लेखोंसे मिलते है, (६) लेखोंका वर्नन बुद्धर साहबने लिखा है. जीसमेसें (प्रथम लेखका सार.)

सिध्दं संवत् (१०) गृष्मरीतुका पहला मास तिथि (१५) के रोज जयपालकी माता-वि . . . लकी स्त्री-दत्तिलकी पुत्री-दत्ताने यह कीर्त्तिमान् बर्धमान स्वामीकी प्रतिमा चतुर्विध संघको अर्पण कीयी, कौटीक गह्व-वाण्ड्यकुल-वयरी शाखाका सीरीका भागके आर्यसिंह आचार्यने इसकी प्रतिष्ठा कीयी.

(दूसरा लेख.)—अरिहंतको नमस्कार सिध्दकों नमस्कार-संवत् [६०] उश्मरीतुका तिसरा महिना-तिथि (५) के रोज यह स्थान उस समुदायको उपन्नोगके लिये दिया गया, जिसमें चार वर्गका समावेश होता है. दूसरा अर्थ यह ज्ञी कर सकते है कि-एक एक वर्गके लिये इसका एक एक हिस्सा देनेमें आया था.

(तिसरा लेख.)—सिध्दं महाराज कनीष्क राज्यके संवत् [६०]-महिना पहला-तिथि [५] के रोज-ब्रह्माकी पुत्री

* हिंदुस्थान और सीथिया बीचके राजाओंके सवत्सें यह संबध नहीं रखता. किंतु इन्होसें पहलेके किसी राजाका यह संवत् होना चाहिये. क्योंकि-इस लेखकी लिपी बहुत पुरानी है.

† यह क्या स्थान था इसका खुलासा नहीं मिला है.

और ऋद्धिमित्रकी स्त्री-विकटाने-सब जीवोके कल्याण निमित्त यह कीर्त्तिमान् वर्द्धमानकी प्रतिमा बनवायी. इसकी प्रतिष्ठा कौटीक गण वाणिज्यकुल-और वयरी शाखाके आचार्य नागनंदीने कीयी.

(चौथा लेख.)—इस लेखका पुरेपुरा समाधान मिलना मुश्किल है परंतु प्रथम पंक्तिके एक टुकड़ेके देखनेसें विदित होता है कि-यह अर्पण करनेका काम एक स्त्रीसें हुवा था. और वह स्त्री अमूक पुरुषकी बहू तरीके लिखनेमें आयी थी दूसरी पंक्तिमें-कौटिकतो गणतः प्रश्नवाहनतः कुलतो मध्यमातः शाखातः-लिखा है.

(पांचमा लेख.)—वर्ष (४७) उश्वरुतुका दूसरा महिना मीति (१०) मी के रोज-यह एक पानी पिनेका स्थान अर्पण करनेमें आया.

(ठठा लेख.)—अरिहंत महावीरको नमस्कार हो. राजा वासुदेवके संबत् (६८) वर्षारुतुका चौथा महिना (११) के रोज-यह एक स्त्रीकी तर्फसे बनवायी गयी. और पारिहासीक कुलकी पौर्ण पत्रिका शाखाका आचार्य आर्यरोहने यह स्थापन किया, यह लेख एकीला अलग पापाणपर है इस लिये नियत कहना नही हो सकता कि-यह क्या वस्तु स्थापन किया?

ये लेख कल्पसूत्रसें संबंध रखते है कल्पसूत्र श्वेतांबर प्रणीत है इसलिये कह सकते है, पहले यहां श्वेतांबर संघकी आधिक्यता होनी चाहिये. महावीरके निवारण पिठे [४७०] वर्ष व्यतीत

हुवे बाद विक्रम संवत् चला, विक्रमके बाद (५७) वर्ष पिछे, इस्वीसन चला, राजा अशोकके लेखोंसे पुराने लेख आजतक हिंडस्थानसें नही मिले थे. इन लेखोंको देखकर कह सकते है कि-ये अशोकके लेखोंसें नी पुराने है इनमें जो जो संवत् लिखे है हिंडस्थान और सिथिया देशके बीचके राजा कनिष्क-ह-विष्क-और वासुदेवके-समयके है. अबतक इन संवत्सरोंकी शरुआत निश्चय नही हुयी है तो नी यह नियत है कि-हिंडस्थान और सिथिया देशके राजाजका राज्य इस्वीसनके पहले सेंकमे के अंतसें और दूसरे सेंकमेके पोने जागसें कम नही ठहरा सकते. सबबकि-कनिष्क महाराज इस्वीसन [७८] वा [७९] के वर्षमें गद्दीपर बैठा सिंघ्र हुवा है.

इस्वीसन [१८७६] मे-सर. ए. कनिंगहाम साहबकों यहांसें एक प्रतिमा महावीर स्वामोको पायी है, इसपर पाली हफोंसे लिखा है कि-"सिंघ्रं उं नमो अरिहंतस्स महावीरस्स-राजा वासुदेव संवत्सरे (९०). अरिहंत महावीरको नमस्कार हो. वासुदेवके संवत् नव्वेमे यह बनायी गयी. यद्यपि वासुदेव संवत्की शरुआत कब हुयी अबतक निश्चय नही हुवा है तथापि पाली लिपी हिंडस्थानमे [३५००] वर्ष पहले लिखी जातीथी यह निःशंसय कह सकते है.

यहां हमारा रहेना (३) रोज हुवा. आपाठ कृश [५] शुक्रवारको मथुरासे विहार कर वृंदावन गये. इसको (१२) प्रकारके वनमें हम पहले लिख आये है. मथुरासें (५) मील उत्तर तर्फ जमनाके दाहने कनारे वसा हुवा-इसके महावन होनेमें कोइ

शक नही-चारों और इसके बड़े सघन वृद्ध और जाड़ी झूखम खमे है. जगह सुहावनी-वृद्धोंकी ठंडी ढांघमें वानर सदा कलोल करते रहते है. वृंदावन मथुरासें ठोटा, राज्य गवर्नमेन्टका, श्वेतांबर श्रावक शेठ जीतमलजी चंदनमलजीका एक ही घर यहां गीपोगली है, हमारा ठेरना इन्हीको कोठीमे हुवा. दिगंबर श्रावकोके घर पांच दश और एक मंदिर इसी गीपी गलीमें है. वैश्व संप्रदायके मंदिर यहां केइ है. सबसे बडा रंगजीका जीसको जेतखंजका कहते है-१, लालाबाबूका-२, शाहजीका ४, ब्रह्मचारीजीका-५, गोविंदजीका वगेरा. गोविंद घाटपर रासमंडल एक रमणीक स्थान है. कहते है यहां गोपीजका और कृशजीका रासमंडल होता था. कालोखह, सेवाकुंज निजवन, और चीर घाट आदि स्थान कृशजीकी विलासभूमि है. श्रीसंप्रदाय, माधवाचार्यसंप्रदाय, विश्वसंप्रदाय, और निंवार्क संप्रदाय. इन चारो संप्रदायके घारे अखाडे अलग अलग बने हुवे है. वृंदावनमे हम (४) रोज रहे. फिर लोटकर मथुराहीमें आये. सबकि हमको आगेरे आना था.

मथुरासें विहार कर (३) कोस नौरंगावाद-नौरंगावादसें (७) कोस फरेरा-फरेरासें (७) कोस सिकंदरा-सिकंदरासें (३) कोस आगरा—पूरा (१०) कोस है. आपाठ कृश (१३) शनिवारके रोज पहुचे. नोनमंडीमें शांतिनाथजीके मंदिरके पास धर्मशालामें ठहरे.

शहर आगरा—जमना कनारे बसा हुवा —इसका दूसरा नाम अकबरावाद नी बोलते है. इसमे (१६५३४०) मनुष्यकी

वस्ती है, सारे इलाकेकी वस्ती (ए७४६५०) मनुष्य-राज्य अंग्रेज गवर्नमेन्टका-और रेलका जंकशन है. श्वेतांबर श्रावकोके घर (५०) और (८) मंदिर यहां है. मोतीकटमेमें चिंतामण पार्श्वनाथका मंदिर पुराना है. इसकी दिवारमें हीरविजयसूरि के वख्तका शिला लेख लगा हुवा है. रोसन महोलेमें सीमंथर स्वामीका-इसके एक आलेमें पंनेकी प्रतिमा अवगाहना तीन अंगुलकी है. तिसरा वासुपूज्य स्वामीका, चौथा गोमी पार्श्वनाथका जो श्रावक हंसराज वेद मोताने बनवाया है.-पाचवा केशरीयानाथजीका-ठठा विहरमान सुरस्वामिका-सातमा दादावामीमें महावीर स्वामीका-इसमें जीनदत्तसूरि और हीरविजयसूरिका थूज है.-आठमा नौनमंजीमें शांतिनाथजीका.-

शाहजहां बादशाहकी बेगम मुम्ताज महेलका मकबरा जीसें लोग ताजगंज वा ताजवीवीका रोजा कहते है. जमना कनारे देखने लाइक मकान है. इसमे संगमर्म पाषाणका काम शिल्पकारीगरीका एक नमूना है. दूसरा मकान अकबरका बनाया हुवा किला जौ बनी लागतका स्थान है, इसमे महेल जोधांवाइका-खास महेल बादशाहजादीका, अंगुरीवाग शीशमहेल शम्भनबूर्ज, नगीना महेजत, दिवाने आम और सोमनाथ गेंट वगेरा अलग अलग मकान बने हुवे है. जब महम्मूद गजनवीने संवत् [१०८३] में सोमनाथ पट्टनको लूटा था तब सोमनाथ महादेवके चंदनके किवाम गऊनीको ले गया था.

संवत् [१०९९] में सरकारी फोजने गऊनवीसें लाकर यहां धरे है.-

मुसलमानी अमल्दारीका हेवाल तवारिखोमे वाचते है तो अकसर दिलको रंज आये विदून नही रहता. हिडउंका नाश करना उनके मूर्ति मंदिर तोम मालना ये लोग वडा धर्म सम-जते थे. काफिर शिवाय दूसरी जवान नही बोलते थे. नाचना, गाना, शराब पिना, जो कोइ न्याय होनेको कहें उसको कतलका हुकम कहदेना, हिंदुओंकी बहू बेटी वच्चेकों अपने लॉमी गुलाम बना लेना, दिनरात जनानखानेमें बैठ रहना, जीन्होंका नित्य कर्त्तव्य था. अलाउद्दीन, महम्मद तुगलक, फीरोजशाह, तैमूर, और बाबरशाह नेंक. इन्होके इन्साफकी तारिफ तवारिखोंसे बखूबी दिख पमती है, कहने सुननेकी जरूरत नही रहती. औरंगजेब, नादीरशाह, अहमदशाह डर्रानो-इन्होंने देशको बरवाद करनेमें कोइ घट नही गुजारी. अमीर खुसरो तारीख अलाइमें लिखता है कि—दखनके शिवालयोंके महादेवकी मूर्त्ते जो मुसलमानोंके घोडेकी लातसें बच गयी थी विल्कुल तोमी गयी. कहिये ! अमल्दारी किसको कहते है ? इसीका नाम तो अमल्दारी है. ये क्या ! जीधर देखो यही किस्सा है. कोइ तवारिख यह कह रही है आज अमूक राजकुमारकी जीन्न कटवामाली, आज इतने हिंड कतल किये, अमूक राजकी रानीको आज वेगम बना ली. हिंडओंके घरोसें सोना चांदी-मोती-हीरा-माणिक-पन्ना और वढिआ कपमे आज इतने लूट लाये, वस ! यही नमूने इन्साफ होनेके लिखे है. हिंदुओंकी बहू बेटीओंको पर्देमें रहना उसी राजसें थुरु हुवा जब मुसलमानी जरजवानीमे थी. यह कहना न होगा कि-आपको मुसलमानोपर कुछ छेपबुद्धि है. हमारे लिये जैसे मुसलमान वैसे अंग्रेज-अंग्रेजोकी सराहना इस लिये कियी

जाती है ये कुछ न्यायसे चलते हैं. अन्याय नहीं चलते. अम-
ल्दारी वही है जहां न्याय हो.

अकबर बादशाह कुछ इन्होमें लायकवर हुवा तो मुसल्मानो-
नाने इसकों काफिरके बतोर समजा. कहते थे इसने अपने दोनको
ढोम दिया. अकबर सरीखे बादशाहको हिंडराजा प्रजा सब
चाहते थे. सबबकि-इसको धर्मघेष बुद्धि कम थी. इसको राज्य-
में केइ हिंदु नोकर थे. आमदनी इसके राज्यकी बत्तीस करोम
रुपया थी. अपनी रानीजकों (जो हिंड राजेकी लमकीये थी)
खुशीसे हिंड रखता था न्यायमें तो कच्ची कच्ची यह ज्ञी अपनी
असलीयत पर पहुचे रहता था परंतु अलबते ! जितना इसमें
धर्मअंश था हमको सराहना अनुचित नहीं. अवल तो दूसरे
धर्मका यह घेषो नहीं था. सच्ची धर्मके साधुजसे मिलता था.
दूर दूरसे आमंत्रण पत्र (परवाना) ज्ञेजकर बोलाताथा और
ईश्वरके पहचाननेका रस्ता पूढता था. एक समय अकबरने ही-
रविजयसूरिकी विघत्ताका बयान सुना. विद्वांसिपत्र ज्ञेजकर
अपने पास बुलाये. धर्म सुना. और जो जो धर्मकृत्य किये उ-
नकों लिखते पहले हमको हीरविजयसूरिका वर्नन लिखना
ज्ञी यहां ऊचित हुवा.

हीरविजय सूरिका जन्म (संवत् १५८३) मगशीर सुदो (ए)
के रोज प्रल्हादनपुरमे हुवा. माता पिता जैनी थे. सूरिजी बाल्या
वस्थामें ही बहोतकुछ योग्य थे. (१३] वर्षकी ऊमरमें इन्होने
संयम लिया, चार वर्षके बाद शिरोही नगरमे सूरिपद प्राप्त हुवा.

व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय, अलंकारके संपूर्ण वेत्ता थे. जैनसंघमें एक मध्यान्ह सूर्य थे, आत्मज्ञानी, क्रियापात्र, प्ररूपणा आगम अविरोधिनी होनेके कारण सब गद्य [गण] में इन्होंका वचन मान्य था. हीरप्रश्नग्रंथ जो इन्होंके हृदयगत समुद्रका एक विंङ है कौन जैनी औसा है जो नही चाहता. निदान ! ज्ञाततत्त्व हीरविजयसूरि एक महाप्रज्ञाविक पुरुष थे. इन्होंके विहारमें युग प्रधान अतिशय विदित होता था, एक दिन वो समय था जिन्होंके प्रभावसे जैनसंघ आनंद पुरित हो जाता था. आजकल बहुतेरे इन्होंका नाम तक भूल गये है. नामको चाहे भूल गये हो पर उन्होंके धर्मकृत्य के नमूने देखकर सब कोइ धन्यवाद देनेके उमेदवार है. इसी आशापर आज हम यहां उन्होंके एक दो नमूने लिखनेको आकांक्षी हुवे है.

हीरविजयसूरि गंधार वंदरकी तर्फ विचरते थे तब अकबरने एक विज्ञप्तिपत्र जेजा. ऊत्तरखंममें आनेको आमंत्रण किया, अकबर इसवख्त आगरकेपास फतेहपुरमें था. सूरिजी गंधार वंदरसे विहार करते (संवत् १६३९] जेठ वदी (१३) के रोज फतेपुर आये, प्रधान अबुल्फजल द्वारा वादशाहसे मिले, हीरविजयसूरिके साथ विमलहर्षगणी आदि अनेकमुनि थे. वादशाहने आदरसे सन्नामें वेठाये. ईश्वरका, गुरुका, और धर्मका स्वरूप पूजा. मूरिने ऊत्तर दिया-राग घेप, काम क्रोध, मोह अज्ञान आदि दोषोंसे रहित जो संपूर्ण कर्मोंका नाश करके मुक्तात्मा हुवा है, जो किसीपर न खुश है न नाराज है, न संसारमें पुनः अवतार लेता है वह सर्वज्ञ सर्वदर्शी ईश्वर है. सं-

सारको त्याग के मुक्ति मार्गपर आरूढ है कंचन कामनोको स्वीकार नहीं रखते और सब जीवोको सच्चा धर्मोपदेश देते है वह गुरु है. इर्गति पमते रक्षण करे और सुगति मे धारण करे उसका नाम धर्म है, अथवा आत्माका शुद्ध स्वभाव जो ज्ञान दर्शन चारित्र वह धर्म है, यह उपदेश सुन अकबरने अधिक हर्ष माना. ईश्वर प्राप्तिके लिये क्या उपाव करना चाहिये. कौन कौनसे कर्मसें स्वर्ग नर्क प्राप्त होता है, इत्यादि सवाल पूछे. एक प्रहरतक धर्मगोष्ठी हुयी. और कहा कि-आप सच्ची वस्तुके त्यागी है साँना, चांदो, लेना आपको स्वीकार ही नही. आपको दूसरा क्या देवुं ? मेरे मकानमें जैनपुस्तक बहोत है आपको चाहिये तो सच्ची ले लीजिये. सूरिजीने वे पुस्तक लेकर आगरेके ज्ञान जंमारमे स्थापन किये.

फतेहपुरसें आगरे आनकर संबत् (१६३९) का चौमासा किया. चौमासेके बाद शौरीपुर तीर्थकी यात्राको गये, वहां केइ प्रतिमा और नेमिनाथजगवान्की चरणपाडकाकी प्रतिष्ठा कियी. नेमिनाथको जन्म भूमि यही शहर है. शौरीपुरसे फिर आगरा आये. शाह. ज्ञानचंद कल्याणमहलके बनवाये चिंतामणि पार्श्वनाथ आदि जीनबिंबोंकी प्रतिष्ठा कियी. आगरासें फिर फतेहपुर गये. अकबरसें मिले. धर्मोपदेश करां. अकबरने कहा मैंने दूर-देशसें आपको बुलाये. और आप कुछ वस्तु मेरेसें नही लेते, यह ठीक नही. सूरिने कहा तेरे राज्यमें पर्युषणपर्वके (७) रोज कोइ जानवर न मारा जाय यह भागताहुं. अकबरने कहा (७) आपके और (४) मेरे कुल्ल [१३] रोज (नाइपद वदी दशमीसे सुही ठठ

तक) कोई जानवर नहीं मारा जायगा. (६) फुरमाने लिख दिये. १, गुजरात देशका-१, मालवाका-३, अजमेर प्रांतका-४, दिल्ली फतेहपुरका-५, लाहोर मुल्तान मंमलका-और ६, ठठा हीरविजयसूरिके पास रखनेका, पांच फुरमाने ऊक्त स्थानोपर जेजकर जीवहिंसा बंध करवायी. सूरिकेपाससें उठकर खुद अपने हाथोंसें केइ जानवरोंको पंजरेसें ठोम दिये. सूरिने (१६४०) का चौमासा फतेहपुरमे किया. तिसरा चौमासा ज़ीरामनगरमें-चौथा आगरेमें-करके जब दखनको आने लगे तब निम्नलिखित एक और करवाया फुरमान उर करवाया.

१

जलालुद्दीन मो
हस्मद-अकबर बा
दशाह गार्जीका
फुरमान.

जलालुद्दीन अकबर बादशाह हूमायून
बादशाहका बेटा-बाबरशाहका बेटा-
उमरशेखमिरजाका बेटा-मुल्तान अबु-
सैयदका बेटा-मुल्तान महमदशाहका
बेटा-मीरशाहका बेटा-अमीरतहमूरसा
हवकिरानका बेटा.

सूबे मालवा, अकबराबाद, लाहोरमुल्तान, अहमदाबाद, अजमेर, मेरठ, गुजरात, बंगाला, तथा और मेरे ताबेके सच्ची मुल्कमें अबजो मौजूद है और पिठेसें जो नियत किये जाय ऊन सच्ची सूबे करोरी जहांगीरदारोंको मलूम हो मेरा यह इरादा है कि-सच्ची रैयतका मन राजी रखना, क्योंकि ऊनका दिल परमेश्वरकी एक बनी अनामत है. विशेष करके वृद्धअवस्थामें मेरा यही इरादा है कि मेरा जजा इठनेवाली रैयत सदा सुखी रहे. इसलिये

हरेक धर्मकी कौममेंसँ जो अच्छे विचारवाले परमेश्वरकी न्तिक-रनेमे अपनी उमर पुरी करते है उनकों मैं दूर देशोंसँ अपने पास बुलाता हु. उनकी बातें सुनकर खुश होता हु. मैरे सुननेमें आया था कि-हीरविजयमूरि जैन श्वेतांबर मतके आचार्य गुजरातके बंदरोमें ईश्वरकी न्तिक करते है. मैने उन्होंको अपने पास बुलवाये. उनकी मुलाकात करके मैं बहोत खुश हुवा. कितनेक दिन पिछे जबवें अपने बतनको जाने लगे तब अर्ज गुजारीकि, गरीब पर्वरीकी राहसँ हुकम होना चाहिये कि-सिध्दाचलजी, गिरनारजी, तारंगाजी, केशरीयानाथजी, आबूजीका पहाम जो गुजरातमें है. राजगृहीके पंच पहाम, सम्मेतशिखरजी ऊर्फे पार्श्वनाथजी जो बंगालेमें है उन सन्नी पहामोंके नीचे, सभी मंदिरोंकी कोठीअँ-सभी भक्ति करनेकी जगह-तीथोंकी जगह-जो जैनश्वेतांबरी धर्मकी है उनकी चारों और कोइ आदमी किसी जानवरको न मारे. अब ये बहोत दूरसे मेरे पास आये है. इनकी अर्ज व्याजब और दुरस्त है. यद्यपि यह अर्ज मुसलमानी मजबसँ विरुध्द मलूम होती है तो न्नी ईश्वरकों पहचाननेवाले आदमीयोंका यह दस्तूर होता है कि कोइ किसीके धर्ममें दखल न दे. उनके रिवाजोंको बहाल रखे. इसलिये यह अर्ज मेरी समजमे सच्ची मालूम हुयी. ये सभी पहाम और सन्नी पूजाकी जगह बहुत मुद्दतसँ जैनश्वेतांबर धर्म वालोंकी है. इसलिये इनकी अर्ज कबुल कियी गयीकि, सिध्दाचलका पहाम, गिरनारका पहाम, तारंगाका पहाम, केशरीयाका पहाम-आबूका पहाम-जो गुजरातके मुल्कमें है. राजगृहीके पंच पहाम, सम्मेतशिखर ऊर्फे पारसनाथ जो बंगालेमें है. वे सन्नी

पूजाकी जगह-और पहामके नीचेकी जगह जो मेरे राज्यमें है चाहो किसी ठिकाने जैनश्वेतांबर धर्मकी हो वह श्वेतांबर धर्मके आचार्य हीरविजयसूरिको देनेमें आयी है. हकीकतमें येह पूर्वोक्त सच्ची जगह जैनश्वेतांबर धर्मवालोंकीही है. जबतक सूर्यसें दिन प्रकाशमान रहे. और चंद्रमासें रात रोसन रहे तबतक इस फुरमानका हुकम जैनश्वेतांबरधर्मके लोगोमें सूर्यचंद्रमाकी तरह प्रकाशित रहे. कोइ आदमी इनको हरकत नकरे. कोइ इन पहामों-पर-नीचे-चारोंओरकी पूजाकी जगह-और तीर्थकी जगह-जानवरकों न मारे इस हुकमपर अमल करे. इस हुकमसें न फिरे. नयी सनंद न मागे. लिखा तारिख [७] मी-माहे ऊर्दी बहेस मुताबेक माहे रबीयुल अबल सने (३७) जुलसी.-

शांतिचंद्र उपाध्यायको अकबरके पास उपदेशके लिये बोमकर हीरविजयसूरि मारवाडको आये शिरोहीमें-रिषभदेव जगवानके चौमुखाजी और अजितनाथजी वगेरा प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कियी. फिर आवूजीको आये. वहीनसा विहार हीरविजयसूरिने गूजरात मारवाम देशमें ही किया है. इधर शांतिचंद्र उपाध्याय अकबरको धर्म सुनाते रहे. हीरविजयसूरिके पदपर विजयसेनसूरि हुवे. इनके शिष्योने अकबरके बेटे जहागीरको धर्म सुनाया. फुरमानपत्र जी लिखवाया, जो सात फुरमानकी किताबमें उप चूका है.

शहर आगरामें हम (५) रोज ठहरे. चौमासाका समय निकट आया था आपाठ सुदी (३) गुरुवारके रोज लश्कर गबालिअर आनेको विहार किया. चारकोस ककौआ गांव ति-

सरे प्रहर आये. पांच कोस आगे जाजउकी शरांय पांच कोसपर मनीयागांव चार कोस आगे धोलपुर पहुँचे. जाजउकी शरांय ठोमकर अन्यत्र आहार पानी मिलनेका योग नहीं.

धोलपुर—गवालियरसें उत्तरको (१८) कोसपर चम्पल नदीके बायें कनारे बसा हुआ है. धोलपुरके बसानेवाले राजा धोलनदेव तूअरके घरानेके थे, यहघराना पहले दिल्लीमें राज्य करता था. धोलपुरसें नैरुत्यको चम्पलसें दश मील दूर बेलपुरमें संवत् (१७६३) में ये रहते थे. राजा धोलनदेवने चम्पलके नालेमें किला बाधा था जो अबतक मौजूद है. अकबरकी अमल्दारीमें धोलपुर आगरेके सूबेकी तर्फ था. मोहबतखां वगेरा यहां हाकमी करते थे. संवत् [१७३९] में सिंधियाके कवजेमें आया फिर अंग्रजोंके कवजेमें हुआ. अंग्रेजोंने खेरातसिंहजीको गोहदके बदलेमें दिया. खेरात सिंहजी संवत् [१७९३] में देहांत हुवे, वर्त्तमानमें राणा निहालसिंहजी स्वतंत्र राज्याधिकारी है, इस राज्यके नीचे (६६६) गांव है. आमदनी दश लाखकी खास धोलपुरकी मनुष्य गणना (६३७३) है. श्वेतांबर जैन मंदिर वा श्रावकोके घर कोई नहीं. अन्य जगहसे आये हुवे एक दो घर है. हम एक रोज यहां रहे. दूसरे दिन विहार कर चम्पल नदी उत्तरे इसका पाट लंबा है नाव बिदून उतरना नहीं होता. चार कोस बंधा गांव बंधासें चार कोस मुरेना मुरेनासे चार कोस नुरांबाद चार कोस पुरानो ठावणी और पुरानी ठावणीसें दो अठाइ कोस लश्कर गवालियर सं० [१९४८] आषाढ सुदी [८] जौमवारके रोज पहुंचे. सराफा बजारमें मंदिरके

पास पंचायती उपाश्रयमे ठहरे. यह शहर सोनरेखा नदी कनारे वसा हुवा पहाडके घेरेसें वेष्टित है. लश्कर और गवालियरके बीचमे देढ कोसका अंतर है. गवालियर पुराना नगर है, लश्कर नया है संवत् [१८६६] मे इसकी आवादी हुयी. सिंधिया सरकारकी राजधानीका शहर है पहले उज्जैन था. इसको फोज सदा चढाइ और लमाइपर रहती ही थी जबसें गवालियरमें डेरा हुवा और फिर न हिला तवसें यहो राजधानी हो गया. सिंधियाकी अमल्दारी उत्तरको सूवे आगराके सरकारी जीले करोली और धोलपुर इलाकेसे मिली है. पूरवकों बुदेखखंम ताल जोपाल और सागर नर्मदाके जिले पश्चिमको जयपुर और कोटाकी सीमातक देखनकी तर्फ निजाम हेदरावाद और इंदोरकी अमल्दारीसें मिली है. आमदनी लश्कर राज्यकी [१२६०५००६] वस्ती [३११५८५७] खास लश्करकी देढलाख, श्वेतांबर श्रावकोके घर (३५०) जीसमें [१००] दुढियापंथके मंदिर (१) सराफा बजारमें चिंतामणि पार्श्वनाथका शिखरबंद लंवाइमें सवातेइस गज, चौडाइ साढे चौदह गज है, रंगमंडपकी ळतमें मीनाकारो काम देखने योग्य है. दोनों पासेकी दिवारमें सिद्धाचल, गिरनार, आवू, अष्टापद, सम्मेतशिखर, और नंदीश्वर आदि तीर्थोंके जाव चित्रांमके बने हुवे मनोहर है. शहरके बहार दादावामीमें शांतिनाथजीका मंदिर और जिनदत्तसूरि जिन कुशलसूरिका थूज है.

आषाढ सुदी (१३) रविवारके रोज ज्ञातासुत्र और आचार दिनकर व्याख्यानमे वाचना थुरु किया. और निम्न लि-

खित टाईमटेबल (वरुत नियमावलीपत्र) लिखकर उपाश्रयको दिवारपर लगाया.

(टाईमटेबल.)

प्रातःसमयके (६) वजेसें (७) वजेतक प्रतिलेखना स्थंमिल-भूमि गमन आदि सब क्रिया.- (७) वजेसें (८) वजेतक धर्मोपदेश (व्याख्यान.- (८) वजेसें (१०) वजेतक विश्राम.- [१०] वजेसें (१२) वजेतक अहार पानी लेना.- (१२) वजेसें (१) वजेतक विश्राम और कुछ योगाभ्यास चिंतवन.- (१) वजेसें [४] वजेतक ज्ञानचर्चा पठनपाठन आदितत्व विचार और प्रतिलेखना आदि क्रिया.- [४] वजेसें (५) वजेतक पुनःस्थंमिल गमन आदि क्रिया.- (५) वजेसें (६) वजेतक आहार क्रिया.-सूर्य अस्त होनेके पिठें [८] वजेतक प्रतिक्रमणक्रिया.- (८) वजेसें [१०] वजेतक ज्ञानगोष्ठी.- (१०) वजेसें [११] वजेतक योगाभ्यास.- [११] वजेसें (५) वजेतक शयन और फिर पुनःप्रतिक्रमण आदि आवश्यक क्रिया सूर्योदयतक करनी.-उपर लिखे अनुसार जो समय ज्ञान चर्चाका नियत किया गया है उस समय श्रावक और अन्यसर्वही मतांतरके धारक मनुष्य हमारे पास आनकर धर्मोपदेशका और ज्ञानचर्चाका लाभ ले सकते है और जिसको पूढना वा शंसय निवर्तन करना हो एसा कर सकते है. विवाद प्रश्न व्याख्यानसज्जामें करो.

समयको निरर्थक न जाने देना अधिक लाभका हेतु है. गया हुवा समय फिर पिढा नही आता. समयपर किया हुवा काम बहुधा निष्फल नही जाता. आगमका वचन नी है कि-“ काले

काले समायरे,-" जो मनुष्य वखतनियामावली नही करता है ऊसका सदा प्रमाद घेरे रहता है. कोइ कार्य नही सुजता.

श्रावण सुदो (११) रविवारके रोज हमारा जाना गवा-
लियरको हुवा. पहेले किलेपर गये लश्करसें देढ मील उतरकी
बाजु [१७४] फूट उंची पहामोपर यह एक पुराना स्थान है.
(२) मील लंबा और एक तर्फसे [६००] फूट दूसरी तर्फसें
(१०००) फूट चौमा है. इसके दरवजेपर हर वखत चौकी पहरा
रहता है, जो शखस इसें देखना चाहता है राज्यकी तर्फसें उ-
सको टिकट मिलता है, इसको देखाकर सारे किलेमें घूम लो.
शास्त्रोमें जो गोपाचल डुर्ग लिखा है वह यही स्थान है पावा-
पुरीमें निर्वाण समय महावीरस्वामीने पांचमें आरेका ज्ञाव वर्णन
करते कहाथा जो गोपाचल डुर्गमे आमराजा वप्पन्नसूरिके
उपदेशसें मेरी स्वर्णमय प्रतिमा बनायगा सो यही गोपाचल स-
मज्जीयेगा. विविधतीर्थ कल्पमें जीनप्रन्नसुरि इसीके संबंधमे लि-
खते है कि विक्रम संवत् [८०१] मे यहां आमराजा राज्य करता
था. आचार्य वप्पन्नसूरि यहां आये थे. उनके उपदेशसें आ-
मराजा जैनधर्मी हुवा. और महावीर स्वामीकी स्वर्णमय मूर्ति
यहां स्थापन कियी. कितनेक समयके बाद राजका उलथा हुवा
तव यह मूर्ति मथुरामें पधरायी गयी.

किलेमें प्रवेश करते उरवायो दरवजा आता है. आगे सु-
रजकुंम और गंगोला जील मुहावने स्थान हरवखत इनमें
पुष्कल जल नरा रहता है. गुजरी महल, शीशमहल, पुरानी
इम्मारते है, इनमें कारीगरोका काम तलघर जलके ऊरनें और

तरह तरहके मकान देखने लाश्क है गणेशपोल दरवजा और बादलगढ दरवजा इसपर निर्गमघार है.

संवत् (११४ए) में यहां दिगंबर आमनायका मंदिर बना. जो अब प्रसिद्धिमें सास बहूका मंदिर कहा जाता है. इसके पहले दिगंबरमतका यहां कोइ मंदिर नही था. आजकल इसमें कोइ मूर्ति नही. केवल टूटा फूटा पत्ता है. घारके अगामी दोनों फाटकमें दो शिलालेख आमने सामने दिवारमें लगे हुवे है लंबे सवातीन हाथ, चौमें एक हाथ पंक्ति (११) दोनोंकी मिलाकर ४१ है. इसमें कुल्ल लिखाए संस्कृत है. लिखा है कि विक्रम संवत् (११४ए) आसोज वदी पंचमीके रोज यह पद्म प्रभुका मंदिर बनाया गया. कितनेक काव्य जिन स्तुति के और कितनेक दिगंबर आचार्योंके वर्नन के है. उरवायी दरवाजा के पास पहाडमे उकेरी हुयी कितनोक मूर्ति खमे आकार कितनीक बेठे आकार सब खंमित है खमे आकारकी मूर्ति कोइ (५) गज कोइ (७) गज उंची है. सब नग्न स्वरुप हैं. इनमें एक मूर्ति सबसे बनी जिसको लोग कहते है (५१) गज उंची है परंतु यह कहना वृथा है. हमारे रुबरु एक शरूसने चढकर इसको मोरीसें नापी तो (१७) गज हुयी. इसके दाहने पासे थोमीसी दूर एक प्रतिमा बेठे आकार अनुमान (१०) हाथ उंची रिषन्नदेव जगवानको है इसके नीचेके लेखमे लिखा है कि (संवत् १४ए७) वैशाष सुदी सप्तमी वार शुक्रे.—

गोपाचल डर्गे-महाराजधिराज (यहां राजाका नामथा सो तोमा गया है)—काष्ठासंधे माथुरान्वये पुष्कर गणे जहारक श्रीगुण कीर्त्तिदेव तत्पट्टे यशःकीर्त्तिदेव प्रतिष्ठाचार्ये, श्रीपंमित रैधु तेषां

आम्नाये-अग्रोतवंशे-गोहुलगोत्रे-साचुरातू-तस्य पुत्र साचू भोपा
 तस्य ज्ञार्या नाल्ही-पुत्र ५-प्रथम साचु क्लेमसिंह-द्वितीय साचु
 महाराज-तृतीय आसराज-चतुर्थ साचु नयपाल-पंचम संघाधि-
 पति कौला-तस्य ज्ञार्या (१) ज्येष्ठा स्त्री सरस्वती-पुत्र मल्लिदास
 द्वितीय ज्ञार्या साध्वी सुरों-पुत्र चंद्रपाल-क्लेमसी पुत्र द्वितीय
 साचु श्री ज्ञोजराज ज्ञार्या देवादी-पुत्र पुन्यपाल-एतेषां मध्ये
 श्री आदिजिनं-संघाधिपति कौला सदा प्रणोमति.

यह लेख यद्यपि विद्वान्का लिखाया हुवा नही है क्योंकि
 विद्वान् आचार्यका लिखाया हुवा होता तो व्याकरणके कायदेसँ
 विरुद्ध नहोता परंतु इस बातका यहां विचार करनेकी जरूरत
 नही. तात्पर्यसँ जरूरत है. सो तात्पर्य खुलासा ही है ज्ञापामे
 लिखनेकी आवश्यकता नही.

इसप्रतिमाके दाहने पासेकी दिवारमे (१) शिला लेख और
 भी लगा हुवा है. इसमें संस्कृत वृत्त (ए) है. पहले दोवृत्तमें रिषज
 देवकी स्तुति है तिसरे वृत्तसँ आगे संवत् मिति बगेरा है संवत्
 (१४९७) वैशाख सुदी सतमी शुक्रवार पुनर्वसु नक्षत्र आदि
 लिखा है.—

किलेके पिठलें पासे एक पथ्थरकी बावनीके दाहने हाथ
 पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा जो उकेरी हुयी है निचेके लेखमें लिखा
 है कि-जब यहां कीर्तिसिंघ राजा राज्य करता था उसका खजा-
 नची गोलाराट् श्रावकने(जो दिगंबर आम्नाय मूलसंघका श्रावक
 था] यह प्रतिमा बनवायी.-अन्य ज्ञी बहोतसी प्रतिमा इसजगह
 ऊकेरवायी. परंतु वर्त्तमानमे कोइ सावत नही. किसीके अंग

और किसीके ऊपांग खंमित किये हुवे है.

इस किलेके बारेमें इतिहासकारोंका कथन.

(१०६७) वर्ष पहेले यहां कडवाहे ठाकर सूरजसेन महा-राजका राज्य था. इसका दूसरा नाम सूरजपाल था. सूरजकुंभ इसी सूरजपालका बनाया हुवा है. इसने यहां (३६) वर्ष राज्य किया. इसका पुत्र रसिकपाल हुवा. राज्य (१) ही वर्ष किया. इसका पुत्र नरहलपाल इसने यहां एक महादेवका मंदिर बन-वाया. (११) वर्ष राज्य किया. इसके पिठें अमरपालने (३६) वर्ष, इसके पिठें गंगपाल हुवा. (३१) वर्ष राज्य किया. इसने यहां गंगोलाजील तालाब बनाया जो अबतक मौजूद है. गंग-पालके पिठें राजा पालने यहां (१०) वर्ष राज्य किया. जोजपा-ल (ए) वर्ष राज्य-पद्मपाल (ए) वर्ष राज्य अनंगपाल यह साधु जनोंका संगी हुवा-इंद्रपाल (३) वर्ष राज्य जीतपाल (१४) वर्ष राज्य-वसंतपाल (१७) वर्ष राज्य-धोधपाल (११) वर्ष-लठम-नपाल (४) वर्ष-नाहरपाल (२) वर्ष-और अऊपाल (ए) वर्ष राज्य किया. इन वीश राजाओंके बाद पालके घरानेमें (६३) राजें और हुवे. सूरजपालसें लगा पालघरानेका राज्य(८४) राजतेक (ए८ए) वर्ष रहा. अंतिम राजा बुधपाल था. बुधपा-लका पुत्र तेजकरण. यहां पालगोत लुप्त हुवा. तेजकरण*आमेरके राजा रानमूलकी पुत्री व्याहा था. राजा तेजकरण इस रानीके साथ अत्यंत रागवान् था. और अपने सुसरालमें जा रहा था.

* जयपुरसें (३) कोस उत्तरमें छोटासा गांव मौजूद है.

स्त्रीकी आसक्तिमें राज्यका चलाना कैसे बने ? निदान ! गवालिअरका राज्य रामदेव प्रहारने संजाला. और (१) वर्षके बाद यही खुद राज्याधिकारी हो गया रामदेव प्रहारसे प्रहार खानदान शुरु हुवा. इसघरानेमें-परमालदेव-सलामदेव-विक्रमदेव-रत्नदेव सोजागदेव नरसिंघदेव-और परमलदेव-यह (७) राजे (१०१) वर्षतक राज्य करते रहे.

वाद शमसुद्दीन अलतमसके कबजेमें आया. यह कुतबुद्दीन अयबकके घरका गुलाम था कुतबुद्दीनके पिठे यही दिल्लीके तरुत नसीन हुवा था. जब दखनसे लडाइकर यह पिठा लोटा तब (९६) हजार फोजके साथ यहां * आंतरी मुकामपर पमाव किया. सुलतान यहां ठेरा परंतु परमलदेव इसको मिलने नही गया. सुलतानने अपने नोकरोको हुकम दिया कि-इसको पक्रम लाउं. और किलेपर एक मशजीद् बनाउं. परमलदेवने अपने कुंडुवको जलायकर आप सुलतानसे लमा. और देह त्याग किया. यहां प्रहार धराना टूट गया. सुलतानने यहां एक मशजीद् बनवायी. जो सूरजकुंम और गंगोलाजीलके पास मौजूद है.

सुलतान शमसुद्दीनके बाद सुलतान फिरोजशाह यहां राज्याधिकारी हुवा. इसके वख्तमें तूअर जातिके दो रजपूत जीन्होंका नाम परमालदेव और अधरदेव था लमकर यहां अपना कवजा किया. तूअर घरानेके (६) राजे यहां हुवे, ठठा राजा दूंगरसिंहने यहां गणोसपोल दरवजा बनाया. जो बादलगढ द-

* यहगांव गवालिअरमें (१२) मील दखनमें है.

रवजे के पास है. डूंगरासिंहका पुत्र कीर्तिसिंह हुवा. कीर्तिसिंहका पुत्र कल्याणसिंह इसने (१७) वर्ष राज्य किया. कल्याणसिंहका पुत्र राजामान हुवा. यह एक समय एक मेदानमें ट-हेल रहाथा तो रायगांवकी एक औरत चली जाती देखी. जो शरीरसें ताकातदार और सुंदर थी इधर दो नसें बने जोरसें लम रहेथे औरतने बीचमें आनकर दोनोंको अलग अलग कर दिये. चकित हुवा राजा मान औरतसें पूछता है तुं इतनी ताकातदार क्यौ ? औरतने कहा राजकीलका पानी पिती हुं. राजाने इसको खुशीसें इसको अपनी रानी बना ली. और रहनेके लिये एक गुजरोमहल बनवा दिया जो शीशमहलके पास मौजूद है. राजा मानके वरुत दिल्लीकेतख्तपर सुलतान बहलोले लोदी था. संवत् (१४२४) में हुसंगशाह मालवेका यहां आया और कुच्च देखल जमाया था. राजामानके पिठे इसका पुत्र विक्रमाजीत हुवा. (३) वर्ष राज्यकिया. तूअर घराना यहां समाप्त हुवा. परमालदेवसें लगा विक्रमाजीततक तूअर घरानेके (१०) राजाओंने (१०५) वर्ष यहां राज्य किया.

बाद मुसल्मानी अमल्दारीके कवजेमें रहा. ऊन दिनोंमे बाबर बादशाह यहां आया. इसने यहां गंगोलाजीलपर एक बगीचा बनवाया. हुमायुके पिठे जब दिल्लीके तख्तनसीन अकबर हुवा तब सुरबल गुलाम राज्याधिकारी होकर यहां आया. निदान ! अकबरके हाथनीचे यह किला (५०) वर्ष रहा. जहांगीरके हाथ नीचे (२४) वर्ष रहा. शाहजहांके वरुत बराह शैयद यहां हकूमत करता रहा. आलमगीरके वरुत ख्वाजा अबडुल्ला

इसने यहां किलेके नीचे (१) शराय बनवायी. कुल्ल (१) वर्ष रहा. बाद मोतमीतखां आया (७) वर्ष रहा और (३) इम्मारतें बनवायी. आलमगीरदरवजा मशजीद्-और नूरावाद शराय. मोतमीतखांके बाद खिदमनगारखां आया. (६) वर्ष रहा धोरेपुर वारेहदरी-मोलाफसल वाग-और ऊरवायी दरवजा इसने बनवाया. इसके पिठे शैयद मनवरखां-मनवरखांके पिठे महम्मद अली न-वाब शवास्तखां-वसंतशाह-मुहमदशाह कासदअलीखां-वगेरा यहां राज्याधिकार करते रहे.

इसके पिठे महाराठोंका यहां दखल हुवा. राणा ज़ीमसिंह गोहद वालेको विठलरावने सीकस्त दीयी और अपना अमल किया. विठलरावके पिठे उसका पुत्र वापू शिवाजीने यहां १६ वर्ष राज्यकारजार किया. लधेभी टेकरीके पास नजरवाग और तालाव बनवाया. ग्वालपासिध्र योगीकी गुफा इसीके पासमे है वापू शिवाजीके पिठे गोविंद श्यामराव (जो कारकूनथा) काम करने लगा. बाद रुगनाथराव (गोविंद श्यामरावका पुत्र) राज्याधिकार करता रहा. रुगनाथरावके पिठे वापूजी होलकर-और इसके पिठे ज्ञानसाहब और विश्वासराव यहां राज्य करते रहे. (संवत् १८३६) मे अंवाजी इंगलें गणपतराव और सरदार खामेरावने गोहदवाले उतरपतके साथ लमाई कियो. उतरपतने हार मानी और अंग्रेजोंसे मिला. अंवाजी इंगलेने दखनी फोजकी (३) कंपनी किलेपर रखी. श्रावण वदो (४) शुक्रवारके रोज अंग्रेजी दो रजमोट गरगजके पहामपर दाखल हुयी. इधर वापूजी सूवेदार और अन्य केइ सरदार लोग

सूरजकुंभपर उपस्थित हुवे. अंग्रेजी फोजसें एक गोली आनकर बापूजी सुबेदारको लगी और उनका देहांत हुवा तब अंबाजी इंगले माल असवाब वगेरा लेकर पहाडगढको चले गये. अंग्रेजोने किलेपर आनकर कब्जा किया. (१) वर्षके बाद महदजी सिंधियेने इसको संजाला. फिर अंग्रेजोने इस वखत महाराज जीयाजीरावको उमर (३४) वर्षकी थी. राज्यकारनार दिनकर रावजी करते थे. इन दिनोंमें बागीलोगोंका ऊपड्रव अधिक था. जीयाजीराव बागील के सामने उपस्थित हुवे, परंतु फोजके बदल जानेपर पिठा हठना हुवा. अंग्रेजोकी साहाय्यसें फिर बागीओंसें लडे और सीकस्त दियो.

किलेको देखकर हम ग्वालियरको गये. यह नगर पहाडके नीचे खंभ खंभ वसा हुवा है. जितना पहले आबाद था अब नही रहा. मनुष्य गणना (३००००) हजार राज्य सिंधिया सरकारका और जैनश्वेतांबर मंदिर एक ही यहां है, श्रावकोके घर पहले बीस पच्चीस थे अब नही रहा. मंदिरमें मूलनायक पार्श्वनाथजी, सार संजाल लश्करके श्रावक लोग रखते हैं. सायंकालको हम लश्कर आये.

पर्यूषण पर्व बतीत होनेके बाद भाद्रपद सुदी (१३) बुधवार के रौज दर्शनोके लिये हमारा जाना मुरार ढावणी हुवा.

लश्करसे पूरबको (३) कोसपर मुरार नदीके किनारे अनुमान (५०) वर्ष हुवे यह आबाद हुयी है. हम (४) घटी दिन चढे पहुचे. इसमें (३५०००) हजार मनुष्यको वस्ती, राज्य सिंधिया सरकारका, श्वेतांबर श्रावकोके घर [३०] सन्नी हुंडियापंथके

है. मंदिर (१) पार्श्वनाथजीका शिखरबंद, इसकी प्रतिष्ठा संवत् (१९३७) वैशाख सुदी (३) तीजके रोज हुयी. दर्शन किये, मूर्ति अतिशय युक्त है. मंदिरके पास उपाश्रयमें ठहरे, व्याख्यान वाचा. लश्करसे कितनेक श्रावक यहां दर्शनोको आये थे. और कितनेक यहांके श्रावक भी सुननेको आये. मूर्ति पूजा आगम प्रमाण और युक्तिद्वारा सत्य है वा असत्य है, इस विषयपर वक्तृता हुयी. इसका संक्षिप्त निचे मुजव.

(मूर्ति पूजापर व्याख्यान.)

मूर्ति पूजा सवई प्रणीत आगमानुसार सबको मान्य है. अनुयोगद्वारसूत्रमें [४] निक्षेपके अवांतर दूसरा स्थापना निक्षेपा यही मूर्ति. मूर्ति कहो विंव वा. प्रतिमा कहो तस्वीर बवी अक्ष या प्रतिकृति कहो सबका वाच्य अर्थ एक है.

नाम जिण जिणनामा, तवणजिण जिणदंपडिमानु,
द्व जिण जिणजीवा, जावजिणा समवसरणहा. १.

रिपन्नेदेव-पार्श्वनाथ-महावीर-आदि नाम जिन है, उनकी मूर्ति स्थापना जिन-उनका असंख्य प्रदेशमय आत्मा इव्य जिन और जब वे समवसरणस्थित साक्षात् विद्यमान थे वह जावजीन है. "जिन अजावे जिनठवणा"—जिनेश्वरोके अजावमें उन्होकी स्थापना दो प्रकारकी, सद्जाव दूसरी असद्जाव, सद्जाव स्थापना मूर्ति और असद्जाव स्थापना स्थून्नआदि, जगवतीसूत्रमे ब्राह्मी लिपीको गणधरोने नमस्कार किया, जो महाशय इस बातको मानता है, मूर्ति पूजासे कच्ची इनकार नहीं

कर सकता. इसी सूत्रमें जहां चमरेंद्रकी उत्पात शक्तिका वर्नन चला है वहां तीन वस्तुका सरणा लेकर उर्ध्वलोगम जाना लिखा है. अरिहंतका सरणा चैत्यका सरणा और तिसरा मुनिका सरणा. यहां चैत्य शब्दका अर्थ मूर्ति है ज्ञान नहीं. चैत्य शब्द का ज्ञान अर्थ धातु प्रत्यय रुढी वा योगिक किसीद्वारा सिद्ध नहीं हो सकता. "चैत्य जिनौकस्तद्विंबं चैत्यो जिनसज्जातरुः-" अरिहंतको दाढाउको लेजाकर इंद्र रत्नमय मालामें रखते है. उनके रुवरु पांच इंद्रियोंके विषय विकारको कोइ बात नहीं करते यहांतककि देवांगनाकेसाथ उसजगह प्रेमयुक्त दृष्टिसे दृष्ट भी नहीं मिलते. यह मूर्तिपूजाका ही एक चेद समझियेगा.

समीक्षक मूर्ति पूजा खुद जिनेश्वरोंने कही वा पिठेंसे आचार्योंने चलायी ? उत्तर—जिनेश्वरोंने कही समीक्षक—जिनेश्वर कैसे कहे कि-तुम हमारी पूजा करो ?-इसमें महत्वताकी आकांक्षा पायी जाती है. उत्तर, जैसे गुरु अपने शिष्यका विनय सिखाते है और उसके आत्माहितका रस्ता बतलाते है वैसे जिनेश्वर जी ज्ञव्य जीवोंको आत्माहितका मार्ग बताकर उनको उचित किया करनेका उपदेश देते है. महत्वताकी आकांक्षा उसको है जो रागी घेपी है. निरागीको महत्वता कैसी ?-समीक्षक मूर्तिपूजा उत्तम है तो साधुजनो क्यों नहीं करते ? उत्तर-पूजा दो प्रकारकी, श्रव्य और ज्ञाव, साधुजनो ज्ञाव पूजा करते है. यह कोइ नियम नहीं कि-जो कार्य श्रावक करे वह मुनि जी करे. देश विरति और सर्व विरतिका गुणस्थान अलग है इस लिये साधु श्रावककी समस्तक्रिया एक नहीं हो सकती. दूसरा यह

जी है कि-अविरतिरूप ज्वर गृहस्थको है साधुजको नही इसलि ये ड्रव्य पूजारूप औषधी लेनेकी उन्होको जरूरत नही.

मूर्तिपूजा मूर्तिको उपकारी नही किंतु पूजकको उपकारी है. अर्थात् असुन्नकर्ममल दूर होनेमें निमित्त कारण है. यद्यपि इसमें ड्रव्य हिंसा होती है परंतु वह पुन्यानुबंधिपुन्य प्राप्ति और अशुभ कर्मकी निर्जरा होनेमें हानिकारक नही. जैसे किसी स्त्री का पुत्र एक जगहपर खेलता है और उधरसे एक सर्प उसके सामने चला आया. माताने दूरसे देखा कि-मेरे पुत्रको सर्पके मुखसे खींच लेना ही मेरे सुखका निधान है. दोमके आयी, और पुत्रको पकमके घसीट लिया. पुत्रके शरीरमें लोहूजी आ गया परंतु कहती है वमा लाज हुवा बरनेसे मेरा पत्र बच गया. इसी तरह गृहस्थ जी ड्रव्य हिंसासे मूर्तिपूजामें अधिक लाज समझकर सुखका निधान समझते है. जिस कार्यमें अल्पदोष हो और बहुत दोषोंका निवारण होता हो वह कार्य त्यागने योग्य नही. जैसे रिपन्नदेव जगवान्ने शिल्पआदि शिद्धा वहोत दोषाका निवारण होता जानकर संसारी जीवोको बतलायी.

समीक्षक,-पूजा सावद्य है और सामायिक निरवद्य है, इस लिये सामायिक ही क्यौ न करे? उत्तर कौन कहता है कि सामायिक न करना. पूजाके समय पूजा और सामायिकके समय सामायिक दोनो करना ठीक है. पूजाको ठोमना और सामायिक करना यह ठीक नही. क्यौकि-प्रथम सम्यक्तको शुद्धि हो नि व्याजव है. जिन पूजा सम्यक्तको शुद्धि करनेको पुष्ट आलंवन है. समीक्षक,-तीन निक्षेपें ज्ञाव निक्षेपा विदून अपूज्य कहते

है ? उत्तर यह बात असत्य है क्योंकि शास्त्र सिद्धांत जी भाव निक्षेपसे रहित है वे जी अपूज्य ठहरेगें. समोक्तक, -जैसे पद आवश्यक साधु श्रावकको प्रतिदिन करना कहा वैसे सूत्रोंमें जिन पूजा जी अवश्य कृत्य क्यों न कही ? उत्तर बराबर कही है कौन कहता है नहीं कही ? जगह जगह सूत्रोंमें जिन पूजा करनी कही है. कौन कौनका यहां नाम लिखे. संकमे ग्रंथ इन बातेंपर बन चुके हैं. जो एकत्तीस वत्तीस शास्त्र ही मान रहे हे यह चिंता ऊन्होको ही है हमको नहीं. जब कोश पूबता है वत्तीस सूत्र ही मानने अपर नहीं मानने कहां लिखा है तब फिर मुंह खोलनेकी जगह नहीं रहती. समोक्तक-आणंद कामदेव श्रावकने मंदिर बनाया सूत्रोंमें क्यों नहीं लिखा ? हकीकतमें ऊन्होंने बनाया ही कहां है ? उत्तर-न बनाया तो क्या हुत्रा ? पूज्या तो है. उपासकदशांग सूत्र कह रहा है आणंद कामदेव आदिने सम्यक्तमूल वारहव्रत लिये. और अन्य देवको नमन पूजनका त्याग किया. वीतरागदेवको नमना पूजना स्वीकृत रखा. फिर शंसयकी बात ही क्या रही ? ठाणांगसूत्रके चौथे ठाणेंम श्रावक शब्दका अर्थ कहा है वहां सात खेत्रमें श्रावकको धन लगाना कहा. आणंद कामदेव दृढ धर्मवान् श्रावक थे ऊन्होंने सातखेत्रमें धन लगाया और सम्यक्तके आठ आचार यथाविधि सेवन किये. साधर्मी वत्सल और प्रजावना ये दो उक्त आठ आचारसें चिन्न नहीं. साधर्मी वत्सलमें साधु साध्वी श्रावक श्राविका ये (४) क्षेत्र आ गये. प्रजावनामें जिनमंदिर जिनप्रतिमा और ज्ञान ये (३) क्षेत्र आये. आणंदआदिने सातक्षेत्र सेवन किये

और जिनप्रतिमाकी पूजा कियी इसमे कोइ शंसयकी बात नही. इतनेपर जी जिन्होको शंसय न मिटे उनके लिये कोइ उपाव नही. उपासकदशांग चरितानुवाद है. चरितानुवाद एक देशी होता है. विधिवाद सर्वव्यापी होता है. इसमे देखना चाहिये कि-श्रावकोके लिये मंदिर और मूर्ति बनवानेकी आज्ञा है कि नहि ? अगर आज्ञा न होती तो जगतचक्रवर्ति अष्टापदपर काहेको मंदिर और मूर्ति बनाता ? पुरिमताल नगर निवासी वग्गूर भावक मल्लिनाथका मंदिर काहेको बनवाता ? विमलशाह शैठ-वस्तुपाल, तेजपाल, मंत्री-और जैसाशाह, शत्रुंजय, गिरनार, और आवू वगेरा तीर्थमें काहेको लाखों करोमों रुपैये लगाते ? कुमारपाल राजा तारंगातीर्थपर आस्मानसे बाते करता हुवा मंदिर बनाकर काहेका ख्वय विनाश करता ? महावीरस्वामीके पश्चात् (७०) वर्ष बाद रत्नप्रज्ञसूरि हुवे जन्होंके प्रतिष्ठि मंदिर जो अबतक मारवाम देशमे मौजूद है काहेको होते ? शंखेश्वर पार्श्वनाथ-धुलेवामे केशरीयानाथ-खंजातमे स्थंजनपार्श्वनाथ-फलोदीमें फलवर्धी पार्श्वनाथ-वरकाणामे वरकाणा और अंतरी-खजीमें अंतरिक्षपार्श्वनाथ, नादिया गांवमें जीवितस्वामी, महावीर, गोधामे नवखंभापार्श्वनाथ, ज्योयलीमें प्रगट हुवे मल्लिनाथ-और मथुरामे ग्यारहसे वर्षके पहलेकी पुराणीपार्श्वनाथकी प्रतिमा-ये सब पुराणो प्रतिमा अगर जैनमें मूर्तिपूजनका निषेध होता तो कौन बनवाता ? संप्रतिराजा जो महावीरस्वामीके पश्चात् (१६०) वर्ष बाद हुवा काहेको जगह जगह मंदिर मूर्ति स्थापन करता ? जो वर्त्तमानमें हम तुम देख रहे है. महानिशीथ सूत्रमे अष्टप्रकारी

पूजाका वर्णन और ज्ञाता रायपसेणी वगेरा सूत्रमें सतराह प्रकारी पूजाका वर्णन काहेको होता ? वस ! मूर्तिपूजाका निषेध जैनमें कुल (३३५) वर्षके अंदाजसें शुरु हुवा है. इस बातको कोइ इनकार नहीं कर सकता.

उत्तराध्ययन सूत्रमें कहा है कि-चित्रामकी स्त्री मूर्ति जिस मकानमें हो वहां साधु न ठहरे. सोचोकि जब चित्रामकी स्त्री मूर्ति विकार पेदा करेगी तो वीतरागकी मूर्ति हमको वीतराग क्यों न करेगी ? समीक्षक-दूसरेकी पूजासे दूसरेको संतोष कैसे? उत्तर-हम दूसरेकी पूजा नहो करते है किंतु मूर्तिद्वारा उस देवकी स्मृति करके उसमे आरोपद्वारा साक्षात् देवकी पूजा करते है. वीतराग आत्म स्वप्नावमें स्थित है हम उनको संतोष क्या करेगे वे आप आपने ज्ञानदर्शनचारित्रमें संतुष्ट है. पूजा पूज्यको उपकारणी नहीं किंतु शुद्धज्ञावसे पूजकको उपकारिणी है. समीक्षक-पाषाण पूजना और मुंहसे वीतरागको पूजा बोलना यह क्या ! हम पाषाण नहीं पूजते है. अगर हम पाषाण पूजते होते तो स्तुति इस वजह करते है पाषाण ! तूं ब्रह्मा कोमल है, अमूक खाएसें तूं पैदा हुवा, तूं मखनसा मलाश्म है. तूं दश रूपये गज मॉलका हे. तेरी हम स्तुति करते है अइसा बोलते.परंतु नहीं ! हमतो उसमे आरोपित वीतराग देवकी स्तुति करते है, निरंजन-निराकार-अजर-अमर-अकलंक-सिद्ध-निर्मोही-निःकांक्षी वीतराग-अर्हन्-जिन, इत्यादि बोलते है.

समीक्षक-मूर्तिमे ये गुण है ?

उत्तर-मूर्ति एक अपेक्षा तद्वत् है और एक अपेक्षा तद्वत्

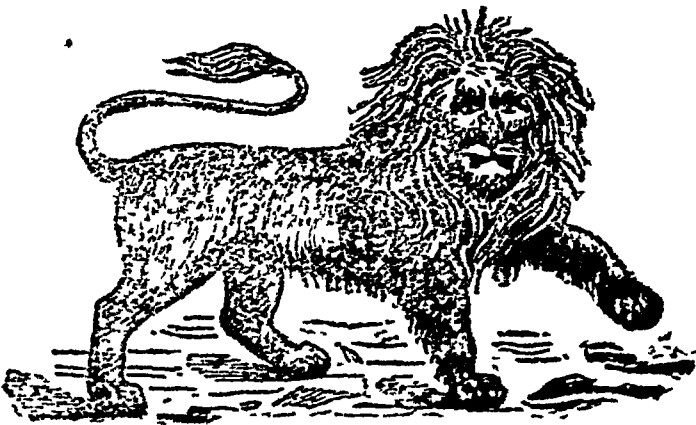
नहीं. जब पूजक पुरुष उसमें पूज्यका आरोप करता है तब उसको साक्षात् वीतराग ही दिखता है.

समीक्षक,—पूजा समयके अनंतर मूर्तिको कोई पैर लगावे तो दोष है ?

उत्तर—क्यों नहीं ? जो मूर्ति देवकी स्मृति करानेमें उपकारिणी है उसका आदर चाहिये कि निरादर ! जैसे पुस्तक और मालाका निरादरमें दोष है तद्वत् मूर्तिके निरादरमें भी है.

समीक्षक—जबतक जिस वस्तुका पुरेपूरा हाल न पाया हो सुने सुनाये उसपर अमल कर लेना कौन चतुराईकी बात है ?

उत्तर—अच्छा ! इसीपर कायम रहियेगा बदलना नहीं. मानिये ! कि—आप किसी राजेके बागमें देखनेको गये है. वहाँ केश पिंजरेमें सिंह (शेर) बंधे सुने है, अबतक आप उस जगह नहीं पहुँचे है और रास्तेमें किसी शख्सने दौमके कहा कि—जागिये ! पिंजरेसे सिंह निकल आया, चला आता है.



वस ! इतनेही कहनेपर आप चमक गये. और उस सुनी सुनाई वानपर अमल करके जगे. सोजो ऐसे जगे कि—बुद्ध बुद्ध

दोनों विसर गयो. बतलाइये पूरेपूरा हाल पाना और उसकी तलाश करनी कहां रही ? सुना सुनाया एसा ज़ारी हो गया जिसपर जागना ही बन आया. महाशय ! ये सब आपकी वृथा तर्क-वितर्क है. जिस बातको आप न मानना हो अनेक दोष निकालने, समोक्षक-जो वस्तु जब तक समझमे न आवे तब तक हमतो नही माने अर्थात् मूर्तिपूजाका तात्पर्य और विधि विधान जब तक समझे नही है तब तक कैसे माने ?

उत्तर-बिना समझे जन्मते ही दूध पिया. बिना समझे खेल खेले, बिना समझे पढ़ने लगे. बिना समझे दवा खायो. वगेरा केइ कार्य बिना समझे किया. यह व्याप्ति यहां लग नहीं सकती.

वैश्याका नाटक रंग राग देखते ही राग रागणी के जेद बिना समझे कह देते है अह्हा ! हा !! क्या ! सुंदर गाना हो रहा है. चंद्रमा सूर्यके विमानमें क्या क्या चीज है हम तुम देख नहीं आये जब देखा नहो तो समझना कहासे हुवा ? फिर बिना समझे उसकी चांदनी और प्रकाशके अनुसार कार्यजी न करना ठीक है, एकोले परमाणुको हम तुमने कजी नहो देखा तो फिर बिना देखे समझ उसका मानना जो व्यर्थ है. कहोगे सर्वज्ञके वचनसें मानते है तो पूजा जी सर्वज्ञके वचनसें मान्य होगी, जो मनुष्य विचार शील है उनके लिये समझानेका यत्न है. दीवेमें गिरते पंतंगका बचाना हमारा उद्योग हे इतनेपर जी आन पमे तो उसकी मरजी.

समीक्षक-निराकारकी उपासना ध्यानद्वारा हो सकती है फिर मूर्ति पूजासें क्या प्रयोजन ?

उत्तर-मनुष्यके मस्तिष्कमें जितने जाग है उनमें किसीमें जी यह ताकात नहीं कि निराकारका ध्यान करे. यह बात प्रत्यक्षमें जी सबको मान्य है कि-जितने रंग हम लोगोंके देखनेमें आते हैं. जिस जिस चीजका स्वाद चखनेमें आता है उनमें विज्ञानका ध्यान स्मरण और कल्पना जी हमारी शक्तिसँ बाहार हैं. जब जब ध्यान करेगे तो किसी एक वस्तु ध्यानमें पमेगी. यदि ज्योतिरूप मानकर ध्यान करेगे तो जी उसमें शुद्ध श्याम आदि रूप मानना पडेगा. और सिद्धोंमें वह पौद्गलीक रूप नहीं किंतु अपौद्गलीक रूप है जिसको सर्वज्ञ जान सकते हैं. सिद्धचक्रमें सिद्धोंकी लाल कल्पना कियी गयी है वह साकारकी है निराकारकी नहीं. समोक्तक,—हम मानसी मूर्ति मनमें कल्पना करके उसका ध्यान करते हैं. पाषाणमय नहीं मानते, उत्तर-किसीने मनमें मूर्ति मानो किसीने उसको प्रगटपने मानी. मूर्ति विदून् ध्यान जी तो न हुवा फिर बात ही क्या हुयी? और ध्यान करना जी क्या सहज है? संसारमें कोइ तो धनकी चिंतामें मग्न है कोइ स्त्री चिंतामें. कोइ अरजी पुरजे के देने लेनेमें और कोइ जमीन के ळगडेमें सदा मस्त हो रहे है, कोइ के ध्यानमें तबला और आंखमें अबला समा रही है उनका ध्यानकी प्राप्ति क्या रस्तेमें धरी है ! यह सब कोइ जातना है कि जोले जीवोका ध्यान जितना पूजामें रंग रागमें लगेगा हरगिऊ ध्यानमें नहीं लगेगा. सच्च कहियेगा ! नये नये गीत सुरीला, तमूरा, सीतार, मृदंग, सारंगी, और ताल, स्वरका जरा गमक तमकदार गाना आपके चित्तको ज्यादा मोहे लेता है कि ध्यान समाधि ? जब

योगीराज बनना चाहोगें पूजा आप ही छूट जायगी. गृहस्थमें रहकर पूजा ठोमना लाभके बदले हानि उठाना है. ध्यानकी जगह ध्यान और पूजाकी जगह पूजा. अलवते ! पूजा ध्यानको साहाय्यक है प्रतिबंधक नहीं. ध्यानका अभ्यास थोमे कालका है रंगरागका जन्म जन्मसें है, गीतगानको सुनकर बालक रुदन करता हो तो नी चूप हो जाता है सर्प और हिरन जो तिर-श्रीन जाति है मस्त हो जाते है मनुष्य तो उसीमे लयलीन ज-रासा "तननतू" नी हुवा कि-चट चंचलमन वहां ही जाय वे-ठता है बताइये ! अगर इसमें जिनस्तुति और संसारकी असा-रता बुद्धि ग्रहण कर शके तो कितने कर्मोंकी निर्जरा हो जाय ? ध्यान ध्यान तो करते हो परंतु सोचो तो यही परम ध्यान है जो जिन पूजामें लीन होना: अलवते ! जो संसार ठोमकर दो-हित हुवे है उन्हांकों ध्यान ही परम निधान है. गृहस्थको मूर्ति पूजा परम निधान है.

समीक्षक-मूर्ति पूजामें प्रमाण क्या ! (याने मूर्ति पूजा करनी चाहिये इसमें क्या प्रमाण है.)

उत्तर-प्रत्यक्ष-अनुमान-और आगम ये तीनों प्रमाणसें मूर्ति पूजा सिद्ध है. समीक्षके, यह नी तो सुनते है कि-मूर्ति पूजा न-गवानके पिठेसें यतिजनोने चलायी है. उत्तर, यह बात युक्तिसें रहित है. अगर यतिजनोने चलायी होती तो मूल सूत्रोंमें मूर्ति पूजाका वर्नन कहाँसे आता ? समीक्षक-मूर्ति पूजाका वर्नन नी तो यतियोंने प्रक्षेपकिया सुनते है. उत्तर, यह कहना एक जारी दोष देना है, पुरानेसें पुराने लिखे सूत्रमिल्लाये जाते है तो सब

एकसे मिलते हैं. कोई फर्क नहीं आता. अगर यही मान लिया जायकि-मूर्ति पूजन यतियोने चलाया है तो यह बतावो सारे संसारको किसने सिखलाया ? मुसल्मान मक्केको, क्रिश्चियन चर्चको, पारसी अग्निको, वैदिकलोग ब्रह्मा विष्णु महेशको, कोई किसी पहारकी टेकरीको कोई किसी वृद्धके पैरको-आप लोग अपने गुरुजके चरणको पूजते है. कहिये ! मूर्तिपूजाके आश्रयसे कौन बचा है ? मूर्ति पूजाको संसारसे उठा देनेके लिये अनेक विद्वानोने अनेक ग्रंथ रचे अनेक युक्तिये लगायी परंतु सब व्यर्थ गये. एककी न चली. मूर्ति पूजाके बारेमें जिनेन्द्रोका वचन गणधरोका वचन निर्युक्ति ज्ञाप्य टीका और चूर्णिकारोका वचन कौन कौनका यहां नाम लेवे जो सुविहित आचार्य पाठक प्रभृति हो गये इसी समकपर चले है. यदि इतनेपर भी जिनको विश्वास नहीं है और "टीका न मानु मैं ज्ञाप्य न मानु माने मूलमें काढ बतावो जी" इस ढाल चोपाइपर आग्रह है उनको हमारी ताकात नहीं जो समजा शके.

समीक्षक,-कहिये तो ! मूर्तिके सामने जो प्रार्थना बगेरा कियो जाती है क्या वह सुनती है ?

उत्तर-पहले जो हम कह चुके है कि हम मूर्तिकी प्रार्थना बगेरा नहीं करते है, किंतु जिसकी वह मूर्ति है उस देवकी करते है, वह ज्ञानी है हमारी प्रार्थना बसावर अपने ज्ञानसे जान रहे है परंतु यह तो बताइये ! आप जो जन्मते ही बालकके कानमे मुंहलगाकर काना फुम फुस करने हो क्या वह बालक सुनता है? तुमारे किये हुए प्यारकी कदर जानता है ? नहीं जानता तो दृ-

था पागलपना क्यों करना ? इसे जी ठोम दिजिये.

समीक्षक-मूर्तिके स्नात्रजलसे कहते है सजी रोग चले जाते है तो उसीसे रोगकी शांति कर लिया करे, वैद्य और मात्तरो के दवाखाने क्यों दुंढने ?

उत्तर-वरावर रोग चले जाते है कौन कहना है नही जाता? जन्म जन्मके रोग जाते है जो जावसे लगावे, श्रीपालका और [७००] कोठीयोका कौंढ गया. यादवपतिकी सेना जरासे मुक्त हुयी. अन्नयदेवमूरिका सर्वांग रोग गया. वर्त्तमानमें जी केइ मनुष्योंका रोग जाता देखते है. परंतु आप लोग अपने पूज्य गुरु दुंढिये साधुके चरण पूजते हो उनकी रजकों जी त चुल्य गिनते हो तो फिर विमारोके वरुत वैद्य लोगोको क्यों बुलाने हो ? पूज्यके चरणोंकी रज लगायी अन्न होजायगा, वृथा दाम खर्चके असंयतीको क्यों पोपना ? लाहोर के दवाखानेमें जायकर धर्मचंदजी साधुजी (१) यहिने तक क्यों रहे ? क्या आंखोका रोग गुरुके चरण रजसे न मिटा ? थोमे दिन हुवे इसी मुरार ठावणोमें आप लोगोकी एक आर्याजीको भूत लग गया था तो मुसल्मानको जामा देनेके लिये काहेको बुलाया था ? क्या चरणोंकी रज नही मौजूद थी ?

समीक्षक-हम मानसी मूर्ति मानते है कृत्रिममूर्ति नही मानते. जो पांच पांच सात सात रूपयेमे विक्रती है वल्कि इन बातोसे जिनेंघांकी आशातना होती है.

उत्तर-कहिये ! मानसी [जाव] मूर्तिके रंग कैसाक है ? लाल, पिला, सफेद, काला वा हरा कौनसा रंगकी है ? कहोगे

उसका न रंग है न रूप है बतावे क्या ! तो फिर महाशय यह आपका कहना बिल्कुल जुठा है कि हम मानसी मूर्ति मानते हैं. जिसका रंग रूप नहीं तुमारी सामर्थ्य नहीं कि तुम उसका ध्यान कर शको. कृत्रिम मूर्तिसें कहते हो आशातना होती है तो फिर आचारांग सूत्रकृतांग जगवतीआदि द्वादशांग वाणी के कृत्रिम पुस्तक जो पांच पांच दश दश रूपयमें विकते है का हेको लेना और अपने गुरुजको देना, महाशय ! जुठी तर्कों में क्या रखा है वस्तुतः गुणदोषको चीनों.

समीक्षक—मूर्ति जीव कि अजीव ? पर्याप्त कि अपर्याप्त ? सूक्ष्म कि वादर इसमें गुणगणो कितने ?

उत्तर—वत्तीस सूत्र जीवकि अजीव पर्याप्तिकि अपर्याप्ते ? सूक्ष्मकि वादर ? गुणगणो कितने ? यह आपका जैसा प्रश्न है अैसा उत्तर है.

समीक्षक—मूर्तिको स्नात्र ही कराना है तो केवमे, गुलाव, जलआदि अचित्त जलसे कराना चाहिये. कच्चे जलसे हिंसा होती है. फलको जगह कागजोंके बने फुल वा लोंग वगेरा अचित्त फुल चढाया करे.

उत्तर—आप जो अपने पूज्योंको जबकि गोचरी लेने आवे कागजोंको रोटी और पुरियां दिया करे और जलकी जगह गुलावजल केवमा दिया करे. आप लोग जो उपवास करे तब गुलावजल पिया करे, कच्चे पानीको तत्ता करनेमें हिंसा होगी, रनौइमें जो पदहाय जीवोंको हिंसा होगी. महाशय ! यह सब वृथा नर्क है, जो उचित प्रवृत्ति है उसमें फेरफार करना न चा

हिये, कागजोंके फुल और गुलाबजलसें पूजा करनेसें आज्ञा-
जंग आदि दोष है लाज नही, सोचो कि स्त्रीसंज्ञोगमें फुलो-
का ओढना कांचली गजरे वगेरा पहनाकर काम सेवन करते
वखत जीव हिंसाका खयाल न करना और पूजामें पांच दश
फुलोंपर हिंसाका खयाल करना यह कौन चतुराशुकी बात है ?
गुरुजके सामने जानेमें, प्रतिक्रमण करनेमें, तपस्वीको पारणा
करानेके लिये जोजन बनानेमें, दीक्षा महोद्धवमें, सब धर्मकृत्यमें
पहले हिंसा होती है कौन एसा कृत्य है जिसमें हिंसाका लेश
नहो सत्री त्याग देना चाहिये.

समीक्षक-अज्ञा ! मूर्ति पूजा ही मंगल कारण है तो फिर
प्रतिष्ठा वगेरा मुहूर्त्तमें ये नक्षत्र ठीक है ये ठीक नही यह बखेभा
क्या ? आकाशके तारे नी जला बुरा कर देते है ?

उत्तर-आकाशके तारे न जला करे न बुरा करे, अलबते!
वे जले बुरेके द्योतक और सूचक है. जैसे आप किसी कार्य
करनेका चले और ठीक हुयी, कुत्ता चिह्नाया, बिलाइ सामणे
आ गयी, विधवा स्त्रीके दर्शन हुवे, तो कहते हो ठहर जाओ
बुरा होगा. कहिये तो ! क्या ठीक नी जला बुरा कर देती
हे ! कुत्ता बिलाइ विधवा स्त्री जला बुरा करनेको शक्तिमान्
है ! वस ! यही कहना होगा कि अशुभ सूचक है, इसी तरह
यहां नी समझ लो. शुभ नक्षत्र शुभ ग्रह वगेरा शुभ सूचक है
अशुभ अशुभ सूचक हे. अगर इस बातका नही मानते हो तो
आपके गुरु जब किसी चलेको दिक्षा देना चाहते है तो मुहूर्त्त
के लिये पंचांगको क्यों ढुंढते है ? ढुंढिये साधुज व्याकरण पढते

नही, व्याकरण बिना पढ़े ज्योतिष कहा ! फिर ब्राह्मणको जो अत्रिरति अत्य ख्यानी है बुलाना पमता है. कहिये तो ! पंच-महाव्रत ग्नुद मंगलकारी नहीं जो आकाशके तारे दिखानेका बखेला करना पमा.

समीक्षक—भूर्ति तो ठोटीसी और मणोंबंद नैवेद्य क्यों ! भूर्तिके पेटमें इतनी जगह है !

उत्तर,—दीक्षा लेनवाला मनुष्य ठोटा और उसपर पंच महाव्रतरूप पांच मेरु क्यों ? क्या ! उसके शिरपर पांचमेरु ठहरनेकी जगह है ? यह जैसी तर्क है वैसा उत्तर है. हकीकतमें नैवेद्य भूर्तिको खानेके लिये नहीं धरते. पूजकको भक्तिका एक अंग है.

समीक्षक,—कृत्रिम वस्तुका आदर करना चतुराशुकी बात नहीं.

उत्तर,—जवतक मुक्तात्मा नहीं हुवे है तब तक कृत्रिम वस्तुका आदर करना नहीं छूटता, साधु साध्वीका वेष कृत्रिम—शास्त्र कृत्रिम—मकान कृत्रिम—आपको उचित है इन वस्तुओंका आदर करना ठोम देवे.

समीक्षक,—एक सास अपने बेटेकी बहूकों ठाकुरजीकी पूजा कराने लेजाना चाहती थी. बहूमें कहा, चल ! ठाकुरजीकी पूजा कर आवे. सासके कहनेसे बहू सामग्री लेकर सासके शाय चली. ठाकुरचारंके अगामी एक गौ और एक नाहर पथथरका बनाया गया है. बहूने गौके आंचनोंमें पानी लगाकर दूध दोहना शुरू किया. सामने कहा बहू ! तू बनी भूर्तिणी है पथथरकी गौ जो दूध देता होगा ? अगामी चल ! फिर नाहरको देखकर बहू चमक उठी. कहती है हाय ! ग्या लिया. सामने कहा, गौ ! अकल

की दुश्मन ! पथ्थरका नाहर कच्ची खालेता होगा ? चल ! ठा-
कुरजीकी पूजा कर, वैकुंठ देयगे. बहुने कहा यदि पथ्थरका ना-
हर खा नही लेता गौ दूध नही देती तो पथ्थरके ठाकुरजी
मुक्ति कैसें देयगे ?

उत्तर—हम कब कहते है पथ्थरकी मूर्ति मुक्ति देती है.
जिस देवकी वह मूर्ति है उस देवकी स्मृति करानेमें वह सहारा
है स्मृति होने बाद पूजकको जैसा ज्ञाव पैदा होगा वैसा फल होगा.

समीक्षक—मूर्तिकों देखकर द्वायोपशमज्ञाव नही आता
किंतु उदयिक ज्ञाव आता है. जब कोइ मंदिरमें जायगा तो
स्नान दीप धूप फूल चढाना, ताल मृदंग बजाना, नाचना कूद्-
ना वगेरों उकाय जीवोंकी लूटालूट करनेका परिणाम आयगा.
अगर कहोगे नमस्कारमंत्र शक्रस्तवआदि स्तोत्र पढने जाते है
तो ठीक है परंतु वह तो किसी जगहपर बैठकर गिनो, मंदिर
हीमें जाना क्या जरूरत ? हमारी समझमें मंदिर मूर्ति बनाना
बृथा ही है. सो चोकि—किसी शखशने मंदिर बनाकर मूर्ति स्था-
पन कियी. लाखों रुपैये व्यय किये. कहिये ! सब कार्य हिंसासें
बनाकि-हिंसा बिदून, ?-हिंसासें तो बनाने वालेकों पाप हुवा,
फिर पूजने वालेकों धर्म कैसे होगा ? अगर कहोगे हिंसासें धर्म
हुवा तो तुम हिंसाधर्मी हो चूके, अर्हन्ने अहिंसा धर्म प्ररुपा है.

उत्तर—मूर्तिको देखकर कौन कहता है. द्वायोपशम ज्ञाव
नही आता, जरूर आता है, अर्हन् मूर्ति देखकर जब अर्हन्की
स्मृति होगी तो शुज्ज ज्ञाव क्यों न आयगा ? शुज्ज ज्ञाव आना
द्वायोपशम ज्ञाव है. मंदिरमे जायकर उकायजीवोंकी लूटालूट

करनेका इरादा पूजक पुरुषका नहीं, किंतु जक्ति करके जिन आज्ञा अखंड रखनेका इरादा है, जैसे नदी उतरते साधु जानते है कि-हिंसा होती है परंतु जिन आज्ञा है ऐसा जानकर उतरते है, कहोगे नदी उतरनेसें अगामी धर्मध्यानकी प्रवृत्ति होनेपर ज्व्य जीवोंको उपकार होता है जैनधर्म दीपता है तो तद्वत् मंदिर बनानेसें पूजा प्रतिष्ठा करानेसें जी भव्य जीवोंको उपकार होता है, जैनधर्म दीपता है फिर वृथा कैसे हुवा ? अगर कहोगे वीतरागने आहिंसा धर्म कहा है तो हिंसा होती जान बुझकर नदी उतरना यह तुमारी श्रद्धानसें अधर्म हुवा. अधर्मसें फिर धर्म कैसे होगा ? जैसे मंदिर मूर्ति बनाना पूजा करना हिंसा होनेके लिये वृथा है तैसे ही हिंसा होनेसें तुमको नदी उतरना, आहार विहार करना, बरसातमें लघुशंका वमीशंकाके लिये जाना. प्रतिक्रमण करना, व्याख्यानवाचना, गोचरी जाना, गुरुकी वैयावृत्य करना वगेरा न करना चाहिये सब काममें जीव हिंसा होती है.

(यतः) — (अनुष्टुप्वृत्तम्)

जले जीवाःस्थले जीवा-जीवा आकाश मालिनी,

जीवाःसर्वत्र लोकेषु-कथंनिक्षुरहिंसकः (१,)

परंतु महाशय ! यह सब आपलोगोंकी समझका फर्क है, कौइ कार्य ऐसा नहीं जिसमें हिंसा न होती हो, द्रव्य हिंसा सब जगह होती है, नाव हिंसा मनःपरिणाम के आधीन है, जैसा जिसका परिणाम होगा वैसा उसको फल होगा. हिंसाकों देखे या जिन आज्ञाको देखे ? जो कुछ जिनेंज्ञोंने आज्ञा दियी है सब

जीवोंके आत्म कल्याण निमित्त दियो है. हम तुमसे वे निर्मल ज्ञानी थे, पूर्वापर अविरोधी कथनसे उन्होमें सर्वज्ञता सिद्ध हो चुकी है, उन्होको असत्य आज्ञा देनेसे क्या प्रयोजन था ?

मूर्तिपूजाके निषेधक पुरुष संसारमें केह हुवे परंतु एककी न चली, दयानंद सरस्वतीने मूर्तिपूजाके निषेधमें अधिक जोर दिया. वह कहता था मैरी समझके अगामी किसीकी समझ कार्यकारी नहीं. सब रिषि मुनि अविद्वान् हुवे, वेदका सच्चा अर्थ मैं ही जानता हूँ, मुझे सुजी सो किसीको न सुजी, अपने सेवकोंके समूहका नाम (आर्यसमाज) रखकर उनको उपदेश दिया कि-तुम सब उस ईश्वरका ध्यान करो जो निरंजन निराकार है, बस ! आर्यसमाजी क्रियाकाम उपासना बोनकर गृहस्थाश्रम में ही बैठे चोथे आश्रममें टांग पसारने लगे. वेदके निंदक होते होते देवताओंके निंदक बनना पमा. सच्ची मनुष्योंको एक जाति करना चाहा, ज़ीतरसे हिंसक और उपरसे गोरक्षाका चंदा बनाकर दयाधर्मियोंका चांद लेना चाहा. परंतु थोमे ही दिनोंमें कूवेका जल पिठा कूवामें चला गया. एक बात पूरी न उतरी. केह जगह विद्वानोंकी सन्नामेंसे हाथ पकम कर बहिष्कृत किये किये गये, जब कोह उनको पूठता है तुम्हारा सिद्धांत क्या है ? उत्तर नहीं देसकते. क्या देवे ? सब रिषि मुनियोंकी झूठ लेकर तो मत निकाला, वेदके असली अर्थकी नांदा शिवाय दूसरी बात नहीं. कहेंगे-निराकार ईश्वरकी मूर्ति बनाना वृथा है, देव देवीओंको पूजना न चाहिये, जातिभेद रखना ठीक नहीं, जगतका कर्ता ईश्वर है, पृथ्वी जल तेज और वायुके परमाणु नि-

त्य है, श्रुत्यादि श्रुत्यादि-सोचनेकी जगह है दयानंदजीने दूसरों के मसालेसें अपनी दिवार बनाकर कौनसा रक्षण किया ? क्या ! वेदमतानुयायी नहीं कहते है मूर्तिपूजा साकारकी है निराकारकी नहीं. निराकार अवस्था वे ज्ञी तो मानते ही है, कहते ज्ञी है कि-उपरकी भूमिकामें पहाचेंगे तब साकारता सेवन आप ही छूट जायगा, मूर्तिपूजा फिर न करनी होगी. बतलाइये ! फिर दयानंदजीने अपनी न्यारी खीचनी पकाकर क्या सार निकाला ?-पृथ्वी जल आदिके परमाणुओंको नैयायिक पहले ही कह रहे है कि-नित्य है, जगत्का कर्त्ता ईश्वर है, थोमासा मसाला नैयायिकोका लेकर सरस्वतीजीने अपनी ज्ञाजी तर्कारी ठमकी. कौनसें हिंदूलोक अनार्य हो गये थे जिनमेसें ठांठकर अपनी समाजका नाम " आर्य " रखा ?-देव देवीओंकी उपासना ज्ञी उपरले आश्रम पहाचनेपर वैदिक लोक त्याग रूप कहते ही है, फिर सरस्वतीजीने नयेनाटकसें क्या लाज उठाया ? लाजतो क्या उठाया बल्कि-अपने सेवकोंको न घरके न घाटके दोनों जहानके न रखे. सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथके पृष्ठ (५७८) में लिखा है मैं विद्वानोंको देव मानता हु, अविद्वानोंको असुर मानता हु, पापीयोंको राक्षस और अनाचारियोंको पिशाच मानता हु, अगर यह बात सच है तो वेद मंत्रोंमें जहां जहां देव और असुरोंका पूजन लिखा है वहां विद्वानोंका और अविद्वानोंका पूजन होना चाहिये. (५८१) पृष्ठपर लिखा है मुजे मतमतांतरके जगमे प्रसन्न नहीं, कहिये अगर मतांतरके जगमे प्रसन्न नहीं थे तो सत्यार्थप्रकाश ग्रंथके कागजोंको क्यों काले किये ?-

सब बात तो यह है कि-मुंहसें बातको निकालना सहज है उस पर चलना सहज नहीं, अलवते ! इतना इलम दयानंदजीका तारीफ करने योग्य है कि-उन्होंने अच्छे अच्छे विद्वानोंको जी गुम देकर खूब लुजाये, कहते रहे देखो जाइ ! तुमको मैं कितना सरल रस्ता बताताहु, जब तूम मेरे कथनानुसार चलोगे तो-जिस तिस कुलकी युवती से शादी कर शकोगे, मनमाना खाना खा शकोगे, विना पूजन पाठ परमात्माको प्रसन्न कर शकोगे, विना कृस्तान बने कृस्तानीका मजा उठा शकोगे, और साथ आर्य जी कहलाओगे, वेदमें मूर्तिपूजन कही नहीं लिखा, बल्कि प्रतिमाका निषेध वाक्य है, देखो ! यजुर्वेद अध्याय (१४)-सपर्य्यगाह्युक्रमकायमब्रणाम्—वह परमात्मा अकाय (शरीर रहित) है. इसका उत्तर,-यह श्रुति निर्गुण अवस्था प्रतिपादक है, वैदिक लोक निर्गुण अवस्थामें मूर्ति कहां कहते है ? साकार अवस्थामें मूर्ति कहते है.

न तस्य प्रतिमा अस्ति—यस्य नाम महद्यशः यह जो वेदमें श्रुति है कि जिसके नामका ही वमा यशः है तिसकी प्रतिमा नहीं है, यहां प्रतिमाका अर्थ तुल्य लिया है परंतु मूर्तिका अज्ञाव नहीं लिया, अगर अज्ञाव ही अर्थ लेवे तो वेदकी अन्य श्रुतियोंसें विरोध आता है अन्य श्रुतियोंमें सेंकमो जगह मूर्ति पूजा प्रतिपादक प्रमाण है, यजुर्वेद अध्याय (१३) श्रुति (४१) आदित्यं गर्जं पयसा समङ्घिसहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपं-जाष्यं—हे पुरुषशिरः आदित्यं चित्याग्निं पयसा

दुग्धेन समङ्घिसम्रक्तय अजे लोँटमध्यमैकवचनं किं-
भूतं आदित्यं गर्जं गृह्णाति पशूनिति गर्जस्तं मत्वं ह्या-
दसं तथा सहस्रस्य प्रतिमाम् सहस्ररूपेण प्रतिपाद्यस्य
परमेश्वरस्य प्रतिमाभूतं अतएव विश्वरूपं सर्वाणिरू-
पाणि यस्मात् यद्वा आदित्यो वा एष पुरुषः पुरुषो वै
सहस्रस्य प्रतिम विश्वरूपं इति श्रुतिः—

अर्थ,—हे ! पुरुष शिरः—आदित्य जो चित्यग्रिहै तिसको दूध-
सें रक्ता कर, कैसा यह आदित्य है कि-गर्जरूप है, गर्ज किसको
कहते है जो प्राणोंको ग्रहण करे, वह परमेश्वरकी प्रतिमा है और
विश्वरूप है, तात्पर्य यह हुवा कि- उस परमेश्वरकी मूर्ति है और
वह मान्य है.

यजुर्वेद अध्याय(१६)-नमस्ते रुद्रमन्यव उतो-
त इषवे नमः—बाहूभ्यामुतते नमः

अर्थ.—हे रुद्र ! तुम्हारे क्रोधको नमस्कार हो, तुम्हारे वा-
णको नमस्कार हो, और तुम्हारी बाहूओंको नमस्कार हो. प्रा-
प्यकारने इस श्रुतिके अर्थमे लिखा है कि-तवक्रोधबाणहस्ता
अस्मदरिपु कामादिषु प्रसरंतुं नास्माषु—हे रुद्र! तुम्हारे
क्रोध बाण और बाहू हमारे काम क्रोध आदि रिपुओंपर पसार
हो याने उनको व्यथादाता हो हमको नहीं, यहां तात्पर्य यह है
कि-बाहू साकारके ही होती है निराकारके नहीं होती,

रिग्वेद अध्याय (५) मा—अनुवाक् (४) वर्ग

तिसरा रिचा (१३)—त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टि
वर्धनं उर्वारु कमिव बंधनान्मृत्यो मुह्यीयमामृतात्—

इस रिचाका तात्पर्य अर्थ यह है कि-हम, त्र्यंबकको यज
न करते हैं, त्र्यंबक शब्द महादेवका विशेषण और त्रिलोचनका
पर्याय है, सोचो कि-यदि वेदमें साकारता स्वीकार है तभी त्र्यं-
बक उसका वाचक कहा, निराकारता स्वीकार होती तो त्र्यंबक
कहना न रहता, दयानंदजी त्र्यंबक शब्दकी व्युत्पत्ति करते थे
त्रीन् लोकान् अवतीति त्र्यंबकः—परंतु अब रक्षणे
धातुका त्र्यंबकरूप नहीं बनता त्र्यंबक बनेगा. व्याकरण को-
शके नियमको ठोकर मनःकल्पना कैसे कियी जाय ?—इसी
कल्पनाने सरस्वतीजीकी विद्वत्ताको हानी पहुँचायी है.

सामवेदीयप्रतिमोपनिषदमें लिखाहै. (प्रतिमा
पूजनाद्ब्रह्मत्वं च गत्वा अमृतत्वं च गच्छति.) प्रतिमा
पूजनसे ब्रह्मत्व और मूर्ति प्राप्त होती है. आगे वसिष्ठजीने
ब्रह्मासे पूजा कि-हे जगवन् ! प्रतिमा कैसे हुयी, तब ब्रह्माने कहा.
पहले एक महापुरुषसे मैं पैदा हुवा, मेरा नाम हिरण्यगर्भ कहते
हैं, सो महापुरुषकी अंगुली मथन होनेसे जल पैदा हुवा. जलसे
फेन हुवा, फेनसे बुद्बुद हुवा, बुद्बुदसे अंम और अंमसे सृष्टि
क्रम-वगेरासो—जानीहि जो प्रतिमा ब्रम्ह मूर्तिः—प्रतिमा
आठ प्रकारकी जिसमें सात भौमविकारकी और आठमी मानसी,
भागवतके (११) स्कंधमें कहा है.

शैली दारुमयी लौही लेप्यालेख्या च सैकनी
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधाः स्मृताः १.

प्रतिमा मनुष्यकों पवित्र करती है, सामवेदके ब्राह्मण
जागमें लिखा है कि-देवतायतनानि कंपन्ते-दैवतप्र-
तिमा हसन्ति रुदन्ति गायन्ति नृत्यन्ति स्फुटन्ति खिद्यन्ति
उन्मीलन्ति निमीलन्ति-प्रतियन्ति नद्यः-कबंधं आदित्ये
दृश्यते-केतुपताका उत्र वज्र विषाणानि प्रज्वलन्ति-
अश्वानां च वालधीष्वंगाराः क्हरन्ति-अहतानि मर्माणि
कनिक्रंदन्ते-इत्येवमादिनि सर्वाणि विष्णुदैवत्यानि
अद्भूतानि प्रायश्चित्तानि न्वन्ति-इति-

अर्थ,-देवताओंके मंदिर कंपायमान होवे, देवप्रतिमाओं
हसे. रोवे, गावे, नृत्यकरे, खंभित होजाय, खेदयुक्त होय, नेत्र-
मीचे, नेत्रखोले, सूर्यमें कबंध दिखे, नदीयाँ उल्टी बहे, केतु
पताका उत्र वज्र पशुविषाण जाज्वल्यमान दिखे, घोनोंकी पूँठसें
अंगारे गिरे. विना मारे घाव हो जाय, इत्यादि जितने उत्पात
है उन सर्वोंका विष्णुदेवता है अद्भूत प्रायश्चित्तों वे शांत होते
है, निदान ! सामवेदके ब्राह्मण जागसें देवमंदिर और देवमूर्तिका
होना सिद्ध है.

अथर्वकांम तिसरेमें लिखाहै-संवत्सरस्य प्रतिमां
यां त्वा राज्युपास्महे सान आयुष्मतीं प्रजां रापस्यो-
पेण संसृजः ३-(टीका.) संवत्सरस्य रात्रिषु कालरात्रि
र्महारान्नि मोंहरान्निश्च तासु यां प्रतिमां प्रतिज्ञायारूपां

त्वां वयंसर्वे उपास्महे-अथवा सम्बत्सरस्य रात्रि र्यथा
सितकृष्णरूपा स्यात् तद्वत् यां सितकृष्णरूपप्रतिमां
त्वां वयं उपा स्महे-सा प्रतिमा नःअस्माकं प्रजा राप-
स्योषेण सहस्रायुष्यमतीं सम्यक् प्रकारेण सृज-यया
प्रजया नःसुखं स्यादिति प्रार्थना-

अजुर्वेद अध्याय (१५)

सहस्रस्य प्रमासि-सहस्रस्य प्रतिमासि-सहस्र
स्योन्मासि-सहस्रायत्वा. (प्राष्यं) त्वं सहस्रस्य प्रमा
नाम प्रमाणमसि-त्वं सहस्रस्य प्रतिमा प्रतिनिधिरसि
त्वं सहस्रस्य उन्मानं तुल्यं उर्द्धमानं किलोन्मानामिति
महानाष्ये-साहस्रःसहस्राहोसि अतःसहस्राय सह-
स्रफलावाप्त्यै त्वा त्वां प्रोक्षामि.-

(मनुस्मृति-अध्याय दूसरा—)

नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्वेवर्षि पितृतर्पणं,
देवताभ्यर्चनं चैव समिधादानमेव च, (१७)

(अध्याय चोथा—)

मैत्रप्रसाधनं स्नानं दंतधावनमङ्गनं,
पूर्वाह्णे एव कुर्वीत देवतानां च पूजनं, (१५३)

(अध्याय आठवा—)

तद्भागान्युदपानानि—वाप्यःप्रश्रवणानि च,
सीमासंधिषु कार्याणि देवतायतनानि च,
(पाराशर स्मृति—)

वापीकूपतद्गादि देवतामंदिराणि च
पतितान्युद्धरेद्यस्तु सपूर्तफलमश्नुते,—

इत्यादि प्रमाणोंसें वेदमें मूर्तिपूजन सिद्ध है, इनका अर्थ कौंइ तोरुफोरु कर अन्यथा करे तो वह मान्य नहीं, टीका और ज्ञाप्यकारोंका किया हुवा अर्थ असत्य होनेमें प्रमाण क्या ? कवि परंपरा करके जो शब्द जिस अर्थमें आरुढ है वे शब्द उसी अर्थमें योजन करना चाहिये.-जो पुरुष मूर्तिपूजन सेवनसें विल्कुल इनकार है उससें पूजना चाहिये कि-निर्गुण ब्रह्मकी प्रतिमा जो प्रणव है उसका अर्चन और मानसी पूजन तुम करते हो या नहीं ?-ध्वनिमात्र शब्द होता है उसकी प्रतिमा अकार आदि स्वर और व्यंजनकों वाङ्मय अर्चनमें हरवख्त लाते हो या नहीं ?-वेदकी ज्ञानमय प्रतिमा तुमारे हृदयमें विद्यमान रहती है वह मान्यरूप है या अमान्य है ? तुमारा शरीर ही तुमारी प्रतिमा है जिसका दिनरात सेवन करते हो यह सत्य है वा असत्य ?-प्रियपुत्र वा स्त्रीकी तसवीर नित्य देखते हो मगन होते हो, दयानंदजीका प्रतिविंब प्रति आर्यसमाज पास रखते है. फिर विक्टोरियाका प्रतिविंब दिल्लीमें साहनसाह तखतपर रख गद्दीका अधिकार और जेंट असरफी धरी गयी. राजा महाराजा परिचर्यामें हाजिर थे, हकीकतमें सारा संसार प्रतिविंबके वशी-

भूत है ऐसे ही त्रिलोकीनाथके प्रतिविंबका कौन इनकार कर सकता है ?—

दयानंदजी अगर मूर्ति नहीं मानते थे तो सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथके पृष्ठ (४१) पर अग्निहोत्रके लिये बेदी-प्रोक्षणीपात्र-पणी-तापात्र-आज्पस्थाली-और चमसा-इस प्रकार बनाना ऐसा चित्र करके न बतलाते. अगर अल्पज्ञोंके समझानेकों बतलाये है तो मूर्ति कौनसी सर्वज्ञोंके लिये है ? जब उपरली भूमिकामें पहा चोगे मूर्तिपूजा काहेको करनी रहेगो. (कहलावत है कि—)

प्रतिमाजीको पूंजनो—ज्यूं गुप्तीयांको खेद,

जबमन लाग्यो पीवसें—धरी पटारे मेल. (१)

दयानंदजी सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथमें लिखते है जब मुसल्मानोंने देवमंदिर और मूर्तियां तोम माली तब उनके सामने वे लमी क्यों नहीं ? जब अपना ही रक्षण न करसकी तो हमारा क्या कर शकेगी ?—परंतु यह वृथा आग्रह है मूर्ति उस देवकी स्मृति करानेमें सहारा है जो करामात बतावे वह मान्य और इतर अमान्य ऐसा कोइ शास्त्रमें लेख नहीं.

वराह मिहर संहिता वगेरा शिल्प शास्त्रोंमें अर्हन् विष्णु देवता देवीओ वगेराकी मूर्ति बनानेका विधिविधान लिखा है वराहमिहर प्रथम जैनमुनि थे. नड्बाहु स्वामीके भ्राता थे.* नड्बाहु ठोटे थे वराहमिहर बने थे. गुरुके पिठे गादीपर बैठनेकी

* भद्रबाहुस्वामीने भद्रबाहुसंहिता रची. जो अब संपूर्ण नहीं मिलती. ते-रहजार श्लोक प्रमाण एक हिस्सा कही कही भंडारेमें मिलता है.

वावतमे तकरार होनेसें वराहमिहुरने जैन मुनिका वेष ठोम दिया पूर्वोकी विद्या जानते ही थे उन्होने संहिता वगेरा ग्रंथ रचे, अनुमान इन्होंको (३३००) वर्षसें कुछ अधिक वर्ष हुवे. सोचोकि-अगर मूर्त्तिपूजन थोमे समयसे चला है तो पुराने ग्रंथोंमें इसका विवेचन कैसे होता ?

जैन आगमके प्रमाण पहले दे चूके है विशेष जंबूद्वीप प्र-ज्ञप्ति जिवाग्निगम और महानिशीथमें लिखा है वीतरागकी प्रतिमाके समीप मुनि आलोचन प्रायश्चित्त लेवे, व्यवहार सूत्रमें जो यही वर्णन है. सोचोकि-अगर जिनप्रतिमा जैनशासनमें अ-मान्य होती तो ये अधिकार कैसे होते ?—शय्यंजवसूरि-और आडकुमार मूर्त्ति देखकर प्रतिबोध पाये. अनेक जीव मूर्त्तिके आलंबनसें संसार समुद्र तिरे है.

इसप्रकार मूर्त्तिपूजापर व्याख्यान सुनकर—श्रावक राजमल-जी [जो इस मोरारठावनीके ही रहनेवाले है] ने कहा कि-मैं कितनेक समयसें दुंदक आमनायमें श्रद्धावान् हुवा था. अब मूर्त्तिके वारेमें मेरा संशय न रहा. मूर्त्ति मानना सत्य है. दुंदियेपने-की श्रद्धा झूठी होनेसें ठोमताहु. उसी वख्त सन्नाके खरु सम्य-क्तमूल श्रावकधर्म अंगीकार किया. विधिके साथ वासद्धेप लिया और पूजन स्वधर्मी वत्सल वगेरा, महोच्चव किया. तिसरे प्रहर हमारा आना लश्कर हुवा.

चौमासा पूरा होनेपर धर्माधिकारमें जो ज्ञातासूत्र वाचतेथे ते पूरा वाचा, चौमासाके बाद मोरार ठावनी गये, एक सप्ताह यहां ठहरे, पुनः लश्कर आये. धर्माधिकारमें अंगचूलियासूत्र

वाचना शुरू किया, फिर उपासकदशांग और फिर विविधतीर्थकल्प वाचते रहे.

संवत् [१९४९]-चैत्र शुक्ल [७] के रोज यतिजी पं० माधवचंद्गीने-जो पं० पंन्नालालजीके शिष्यके शिष्य है इसी लश्कर दानावली बाजारमें रहते है हमसे निम्न लिखित (३?) प्रश्न पूरे. जिसका उत्तर इस प्रकार दिया.

१-प्रश्न,-सम्यक्त जीवका निजगुण है वा पर गुण है ?

उत्तर-निश्चयनयकी अपेक्षा निजगुण है और व्यवहार नयकी अपेक्षा परगुण है.

२-प्रश्न,-सिद्ध महाराजमें सम्यक्त पाइये वा नहीं? पाइये तो कोनसा ? और उसकी स्थिति कितने कालकी ?

उत्तर-सिद्धमें द्वायिक सम्यक्त पाइये. द्वायिक सम्यक्तकी स्थिति संसारा वस्थामें (६६) सागरोपम,-सिद्धोंके एक सिद्धकी अपेक्षा सादि. अनंतकाल और अनंत सिद्धोंकी अपेक्षा अनादि अनंतकाल.

३-प्रश्न,-प्रज्ञापना सूत्रमें चारों प्रकारकी ज्ञाषा बोलता हुवा आराधक कहा. सो असत्य ज्ञाषा बोलता हुवा साधु आराधक कैसे संजवे ?

उत्तर-आचारांग सूत्रमें अधिकार है कि-अटवीमें मुनिचले जाते हो, हिरनका झूँम पास होकर चला गया. पिछेसे पारधि आनकर मुनिसे पूछे कि-जो साधो ! तुमने हिरन देखे ? तब मुनि जानता हुवा जी कहे कि-मैं नहि जानता हूँ. इसमें आस प्रणीत आगम वचन प्रमाण है. आस वचन सदैव हितावह होता

है. लोकीकमें यह प्रसिद्ध है कि—“ सत्यं हि तत् चूतहितं यदेव,”—

४-प्रश्न,—जिसमें एक अंक और मिला देवेतो असंख्याते हो जाय ऐसा संख्याता कितने अंकका हो ?

उत्तर,—जैन आम्नायमें [१७४] अंकतकको संख्यातेकी संज्ञा है, और उसका नाम शीर्षमहेलिका कहते है. इसपर एक अंक बढ़ानेसे आगे असंख्यातेकी संज्ञा है.

५-प्रश्न,—एक आकाश प्रदेशमें अजीवके जेद कितने पाइये?

उत्तर—धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय इन तीनोंके प्रदेशकी अपेक्षा तीन जेद-पुद्गलके चार-स्कंध, देश, प्रदेश, और परमाणु, कुल सात जेद हुवे. क्षेत्रकी अपेक्षा प्रश्न है तो एक जेद कालका और बढेगा.

६-प्रश्न,—जीवके आठ रुचक प्रदेश कर्मोपाधिसें लिप्त हो या नही

उत्तर—नही होवे, अगर वें जी लिप्त होवे तो जीव अजीव हो जाय, (यडुक्तं)-

स्पृश्यंते कर्मणा तेऽपि-प्रदेशा आत्मनो यदि,
तदा जीवो जगत्यस्मि न्जीवत्वं प्रपद्यते. १,

७-प्रश्न,—ग्यारह पन्निमा (अग्निग्रह विशेष) वहन करनेवाला श्रावक कितनी पन्निमातक चंदनपुष्पादि सामग्रीसें जिनपूजा करे,!

उत्तर,—सातमी पन्निमाकी पूर्णाहुती तक चंदनपुष्पादिसें जिन पूजा करे. ललितविस्तरा पंजिकामें यह कथन है.

८-प्रश्न-रात्रो जोजन करनेवालेकों दूसरे दिन अगर नव-कारसी, पोरसी, एकाशन, आचाम्ल वा उपवास आदि तप करना हो तो हो सके वा नहीं, ?

उत्तर-हो सके, शास्त्र आज्ञासें विरुद्ध नहीं. क्योंकि-सू-योंदयसें उसका नियम शुरू होता है.

ए-प्रश्न,-उपपातिक आदि उपांग सूत्रके रचयिता कौन कौन हुवे, ? जैसे प्रज्ञापना उपांगके रचयिता श्यामाचार्य.

उत्तर,-तीर्थकरके शिष्य समुदायमें गणधर शिवाय अन्य जो स्थविर मुनि होते है वे उपांग सूत्रके रचयिता है.

१०-प्रश्न,-कौन कौनसें गुणस्थानमें वर्त्तता जीव मृत्यु न पावे?

उत्तर, मिश्र-क्षीण मोह-और सयोगी केवली-इन तीन गुणस्थानमें वर्त्तता हुवा मृत्यु न हो, शेष ग्यारह गुणस्थानमें हो.

११-प्रश्न-सामायिक जीव वा अजीव ? इव्य वा गुण, ?

उत्तर,-इव्यार्थिक नयकी अपेक्षा सामायिक गुणमें परिणामन होया हुवा जीव ही सामायिक है, पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा सामायिक जीवका एक गुण है. आंवश्यक सूत्रकी नि-र्युक्तिमें यह वर्नन है.

(गाथा.)

जीवो गुणपन्निवन्नो-नयस्स दव्वठिअस्स सामाइयं,

सोचेव पक्कठिअनयस्स जीवस्स एस गुणो. १

१२-प्रश्न-जिसकी गुरुपरंपरामें शिथिल आचार हो गया है उसमेंसें कोइ यतिजी क्रिया उध्दार करना चाहे तो उनकों अन्य मुनिके पास चारित्र उपसंपदा लेनी चाहिये कि नहीं ?

वा सुधर्मस्वामीकों ही गुरुमानकर क्रिया उद्धार कर लेना ?

उत्तर-जिसके एक दो तीन पद तक गुरु परंपरामें शिथिलता हुयी हो प्रायः उस परंपरामेंसे समाचारी सर्वथा नाश नहीं होती, इस लिये उसमेंसे कोई शरुस क्रिया उद्धार करना चाहे तो उसकों अन्य गुरुके पास चारित्र उपसंपदा लेनेकी जरूरत नहीं. जिसके चार आदि गुरुपद परंपरासें शिथिलता हुयी है उसकों अन्य गुरुके पाससें चारित्र उपसंपदा लेकर क्रिया उद्धार करना चाहिये. क्योंकि-सर्वविरति सामायिक विद्यमान गुरुके पास ही लिया जाता है. जो इस तरह नहीं करते है और सुधर्मस्वामीकों गुरु मानकर मुनिपना स्वीकार कर लेते है यह बात जैन आगमसें विरुद्ध है.

१३-प्रश्न,-प्रदेशी राजाकों केसीकुमार श्रमण निर्ग्रंथमुनिने कहा कि-पहले रमणीक होकर पीठे अरमणीक मत होना. प्रदेशी राजाने कहा आजसें मैं राज्यके (४) जग करुगा. सो चार जगमेंसें कौनसें जगसें धर्म पैदा हुवा ? और वह रमणीक हुवा, ?

उत्तर,-प्रदेशी राजाने अपने राज्यकी आमदनीके (४) जग किये. एक जग सैन्य वाहनके लिये-एक जग कोष्ठागारके लिये-एक अंतःपुर (रानीयों) के लिये-और एक दानशाळा आदिके लिये-दिया. हकीकतमें चारों ही विजग धर्मकी सापेक्षतालिये है, अगर इनमेंसें कोई ची हिस्सा अधर्मरुप होता तो केसीकुमार श्रमण निर्ग्रंथ उसें मनायी करते कि-अमूक हिस्सा अधर्मरुप है अरमणीक है, इस लिये जाना जाता है चारों

ही हिस्से वीतरागकी आज्ञा संयुक्त है. और वीतरागकी आज्ञामें धर्म है.

१४-प्रश्न-केवल मनसे विचारा हुवा पाप निकाचित हो सकता है या नहीं, ?

उत्तर,-केवल मनसे विचाराहुवा पाप निकाचित हो सकता है और नहीं भी होशकता. निकाचितके अध्यवसाय फरसे तो निकाचित कर्म बंध हो-अनिकाचितके अध्यवसाय फरसे तो अनिकाचित कर्म बंध हो. अध्यवसाय स्थान आश्रित कर्म बंध पमताहै. जैसे तंडलमञ्जकी तरह कोइको निकाचित-और प्रसन-चंद्र राजार्षिकी तरह कोइको अनिकाचित बंध पमे. जहां मनयोग है वहां वचनकाया भी है, क्योंकि-एक काययोगके विशेष विज्ञा-गको वचन मनयोग कहाहै. आवश्यकसूत्रवृहद्वृत्ति-विशेषाव-श्यक-और लोकप्रकाशमें यह अधिकार है.

१५-प्रश्न,-स्थापनाचार्य जिनके सामने प्रतिक्रमण आदि क्रिया करते है यह गुरुस्थापना वा अरिहंतकी स्थापना है ? गुरु-स्थापना है तो इनके सामने शक्रस्तव कहना कैसे बने ?

उत्तर,-यह गुरुस्थापना है अरिहंतकी नहीं. जैसे जिन अज्ञावे जिनप्रतिमा तैसे गुरु अज्ञावे गुरुस्थापना. यह लेख अनु-योगद्वार-वृंदारवृत्ति-और प्रतिक्रमण गर्जहेतुमें है. आवश्यकक्रिया वगेरामें चैत्यवंदनके समय गुरुस्थापनाके सामने शक्रस्तव पढनेमें कोइ हर्ज नहीं. क्योंकि-जितनी क्रिया करनी गुरुसाह्मीसे करनी कही है.

१६-प्रश्न,-आर्षी नक्षत्रपर सूर्य आये पीठे विहार नहीं

करना यह कौनसे सिद्धांतमें कहा है ?

उत्तर-आर्चा नक्षत्रपर सूर्य आये बाद मुनिको विहार मही करना यह बात कोइ सिद्धांतमें नही देखी. केवल जलप्राय देशोंमें बरसात आदिके कारण जीवोंकी उत्पत्ति देखकर यह रीति पूर्वाचार्योंने पीठोंसे शुरु कीयी है जैसे गुजरात देशमें है. मालवा-मारवाम-मेवाम-हुंढार पंजाब वगेरा देशोंमें आषाढ सुदी (१३) तक मुनिजनों विहार करते हैं.

१७-प्रश्न-दृष्टिवादकों (१४) पूर्वके अंतर्गत समझना वा पूर्वोंका एकविज्ञान समझना ?

उत्तर,-चौदह पूर्वकों दृष्टिवादके अंतर्गत समझना क्यों कि-दृष्टिवादका तीसरा अध्ययन (१४) पूर्व है.

१८-प्रश्न,-जगवती सूत्रमें कहा है असंयती अत्रतीकों ज्ञोजन जीमानेवाला एकांत पापकर्म बंधन करे, निर्जरा न करे, यह कौनसे न्यायका वचन,

उत्तर,-असंयती अत्रतीको मोक्ष निमित्त ज्ञोजन जीमावे अर्थात् इन्होंकों ज्ञोजन जीमानेसें मैरी मुक्ति होयगी ऐसा जानकर जीमावे तो एकांत पाप कर्म बंध करे इस न्यायका वचन है. जगवती सूत्रका आठमा शतक ठठा उद्देशा देखो.

१९-प्रश्न,-नवतत्वमें ज्ञेय कितने ? उपादेय कितने और हेय कितने, ?

उत्तर,—जीव अजीव ज्ञेय-पुन्य संवर निर्जरा मोक्ष
उपादेय-पाप आश्रय और बंध हेय है.

३०-प्रश्न-पृथ्वी स्थिर है या फिरती है ?-गोल है या स-
पाट है ? गोल है तो नींबूके आकार वा स्थाळीके आकार है ?

उत्तर,—पृथ्वी स्थिर है फिरती नहीं. स्थाळीके आकार
गोल और सपाट है नींबूके आकार नहीं. अगर पृथ्वी फिरती
है तो कहो उर्ध्व अधः फिरती है वा तिर्यग् फिरती है ? उर्ध्व
अधः फिरती है तो उर्ध्व स्थित पदार्थ अधः आनेसें गिरनेकी
संज्ञावना है. तिर्यग् फिरती है तो कहो किसके आधार वह एक
स्थानमें स्थित रहकर फिरती है ? याने जिस कीलकके आधार
वह फिरती है उस कीलककी आधार कोइ अन्य पृथ्वी नी है
जिसमें वह कीलक लगा हुआ है. जैसे कुंजकारके चक्रके नीचे
कीलक होता है. अगर कहोगे पृथ्वी निराधार हि रहकर
फिरती है तो सोचो कि-गुरु पदार्थ निराधार कैसे ठेर शकेगा ?
जो जो गुरुपदार्थ देखा सो सो निराधार नहीं देखा, इससें नि-
श्चय मानना पड़ेगा कि-पृथ्वी किसीके आधार रही है. सिद्धांत
शिरोमणि ज्योतिष् ग्रंथका रचयिता ज्ञास्कराचार्य कहता है
पृथ्वी मोदकके आकार गोल और विना आधार आकाशमें
स्व स्वज्ञावसें स्थिर है जैसे सूर्य और अग्निमें उष्णता चंद्रमामें
शितलता पाषाणमें कठिनता और वायुमें तिर्यग् गतिका स्वज्ञाव
है तद्वत् पृथ्वीमें निराधार स्थिर रहनेका स्वज्ञाव है परंतु यह,
बात केवल जो ज्ञास्कराचार्यके रागी है उन्हींको मानने योग्य
हे इतरजनोंको तो युक्ति प्रमाण सहित हो मानने योग्य है, पृ-

ध्वी गुर्वी पदार्थमें निराधार स्थित रहना यह स्वप्नाव प्रमाणसे वाधित है. नास्कराचार्यकों ज्योतिषीलोग सर्वज्ञ कहते हैं परंतु उनके वचन सर्वज्ञताके नहीं हैं, ये महाशय महाराष्ट्र देशके ब्राह्मण थे इन्होंने प्राचीन सिद्धांतोंको देखकर सिद्धांत शिरोमणि ग्रंथ (३६) वर्षमें तयार किया. फिर जो बहोत जगह भूल गये, कवित्वशक्ति अच्छी होनेसे सिद्धांत शिरोमणिकों लोग पढ़ने लगे, लंबन नति क्षेत्र नास्काराचार्यने विल्कुल अशुद्ध बनाया, भुज कोटि कर्ण तीनों ही वृहद्वचनोंमें कह दिया, और-उनकी गणित मान्य जी न हुयी. परंतु खेर ! इन बातोंसे अपनेको यहां कोइ जरूरत नहीं, पृथ्वीके गोल आकारमें उन्होंने जो कहा है कि-भूगोलके उपर ठीक मध्य जागमें लंकापुरी है-पूर्वमें यम कोटि पश्चिममें रोमक पत्तन-और ठीक नीचे सिद्धपुरआदि नगर है. यहां परिहृक जनो सवाल कर सकते हैं कि-सिद्धपुर आदि नगरके कुवोंका जल निराधार कैसे ठहर शकेगा, ? ध्वी पदार्थ निराधार नहीं रह सकता. कहोगे आकर्षण शक्ति पृथ्वीमें है वह ठहरा लेती है तो सोचोकि-आकर्षण शब्द ल्युट प्रत्ययांत करण अर्थमें होता है, निदान ! आकर्षण शब्द कूरण वाचक हुवा. आकर्षक कर्त्ता कोइ अन्य होना चाहिये, अगर कहोगे पृथ्वी ही आकर्षक है तो कहिये ! आकर्षक शक्ति पृथ्वीसे जिन है या अजिन ? जिन है उसका आधार कौन पदार्थ है ? अजिन है तो पृथ्वीके साथ लगी हुयी सजी वस्तुमात्रकी चलन शक्ति-का अज्ञाव होना चाहिये और है नहीं इस लिये प्रत्यक्ष विरोध है.

ज्योतिषके (१०) सिद्धांतोंने पृथ्वीको मोदकके आकार

गोल और स्थिर मानी, इनमें आर्य ऋषि सिद्धांत वालेने इतना विशेष माना कि-पृथ्वी फिरती नही है. अंग्रेजोंने इसी आर्यऋषि-सिद्धांतका आधार लिया है. जो बालक अंग्रेजी पढनेमें उद्योगी है उन्हींको भूगोलविद्या पढनी ही होती है. बस ! उन्हींके दिलमें यह संस्कार पुख्त जमजाता है कि पृथ्वीका फिरना सच्च-है. परंतु युक्तिधारा सिद्ध नहीं होता, अगर पृथ्वी फिरती है तो एक गांव दूसरे गांवसे जिस दिशामें है बदलजाना चाहिये वरसातसे हृद-सरोवरआदि जलसे ऋरने न चाहिये. वरसात दोघंटेतक समजो एक जगह वरसता रहा. और पृथ्वी वहांसे दोघंटेमें (१६००) कोस दूर चली गई. क्यौंकि-पृथ्वीको फिरना माननेवालोने माना है कि पृथ्वी एकघटीकामें [३३०] कोस काटती है, इससे इसका वेगनी बमा न्तारी हुवा, इस वेगसे उत्पन्न होता हुवा पवन बमेबडे वृक्ष मकान आदिकों तोमने वाला-कैसे न होशकेगा ?-पृथ्वी फिरती है तो पंखी अपने मालोंसे उमकर फिर अपने मालेकों न पाशकेगे. क्यौंकि दोघंटे वे आकाशमें उमते रहे इधर पृथ्वी चलकर उस जगहसे (१६००) कोस दूर चली गयी. खबूतर उमानेवाले अपने मकानसे खबूतर उमाते है फिर वे पहरदोपहरकेबाद उसी जगह आन बैठते है जहांसे उमे थे. फिरना माननेवालोकी अपेक्षा वहस्थान दूर चलागया पाना न चाहिये. पतंग उमानेवाला एक मकानपर खमारहकर पतंग उमाता है समजोकि-मोर बीचमेंसे दूट गयी. उमानेवाला मनुष्य पृथ्वीकेशाथ लगाहुवा चलाजाताहै. पतंग आकाशमें घूमता हुवा फिर जमीनपर उसीजगह थोमीसी दूर

आनकर गिरा दिखता है वह न-दिखना चाहिये. निदान ! कि-सी सूरत पृथ्वीका फिरना नही सिद्ध होता.

प्रश्नोत्तरी प्राकृतिक भूगोल चंड़िका जो हिंडुस्थानी ज्ञापामें लपी है उसके (५) में पृष्ठपर लिखा है कि-पृथ्वी फिरती है परंतु हमको मळूम नही होता जैसे नदीपर नाव घूम जाता है और उसके आदमियोंको मळूम नही होता. इसीतरह पृथ्वीके रास्तेमें कोई एसी चीज नही है कि-वह टकरावे या रुकजावे जिससे हमको मळूम हो. यहां हमारा सवाल है कि-पृथ्वी नि-राधार फिरती है कि साधार ? अगर कहोगे कीलीके आधार फिरती है तो कहिये ! वह कीली किसके आधार है ? फिर उसी पृष्ठपर भूगोल कर्त्ताने लिखा है पृथ्वीकी कीली एक क-ल्पित रेखा है, जब कीली कल्पित रेखा है तो हम कहते है पृथ्वीका उसके उपर स्थित रहकर फिरना जी कल्पितमात्र है, फिर भूगोलकर्त्ताने लिखा है जैसे गेंदपर स्याहीकी बिंदू माल दीजावे और उसको उंधा करदियाजाय तो स्याहीका बिंदू उस जगहसे स्थान नही बदलता और न गिरजाता है तद्वत् पृथ्वी उर्ध्व अधः फिरती है परंतु उसपरसे चीज नीचे नही गिरती, आकर्षण सक्तिसें थंजी रहती है. परंतु यह कहना वृथा है, क्यों कि-स्याहीका बिंदू गेंदसे एकमेक याने अजिन्न है और हम तुम हाथी-घोमे-पत्तर-जल-शिला-जामे वर्त्तन-आदि असंख्य चीजें पृथ्वीसे जिन्न है, जैसे गेंदपर गेहू या वाजरीका दाना रखा जाय और फिर गेंदको उल्टादिया जाय जरूर गेंदका दाना गिर जायगा, इसीतरह पृथ्वीके उर्ध्व अधः फिरनेसे असंख्य चीजें

जी जरूर गिर जायगो कोइ अटका नहो शकता. आकर्षण शक्ति का सहारा लेते हो परंतु वह आपकी आकर्षण शक्ति कहने ही मात्र है, अगर आकर्षण शक्ति पृथ्वीमें होती तो हम तूम जो अपनी इच्छा पूर्वक गमन कर रहे है रोक न लेती ? और जहां हम तूम बैठते है वहां ही पकन न लेती ?-भूगोलविद्या लिखने वाले तर्क करते है कि-अगर पृथ्वी अपनी कीलीपर न घूमती तो उसके आधे हिस्सेपर सदा प्रकाश और आधे हिस्सेपर सदा अंधेरा रहता, परंतु जब पृथ्वी धालीके आकार गोल है जिसके ठीक मध्यमें मेरु पर्वत है, मेरुके चारों ओर आकाशमें सूर्य चंद्र आदि ग्रहतारागण फिरते है बीचमें निषध नीलवंत पर्वत- पूर्व पश्चिम पमनेसें दिन रात वगेरा सब प्रवर्तन यथातथ्य हो रहा है, फिर सदा एक जगह प्रकाश और अंधेरा रहनेका क्या हेतु रहा ?

फिर नयीरोशनीवाले कहते है सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चोफेर घूमती है. अगर यह सत्य है तो अमावास्याके रोज चंद्रमा सूर्यठायाके नीचे और पौर्णमासीके रोज सन्मुख क्योंकर हो जाता है ? और एक राशिपर अनेक ग्रहोंका एकत्र होना फिर जिन जिन हो जाना जो प्रगट रूपसें देखनेमें आता है क्यों कर संभव हो ?-निदान ! पृथ्वीका फिरना और चंद्र सूर्यादिग्रह गणका स्थिर रहना किसी प्रकार सिद्ध नही होता. पृथ्वी मोदकके आकार गोल नही. अठारह सिद्धांतवाले ज्योतिषी जो कह रहे है, ज्योतिष्यका सर्वांगको बिना जाने कह रहे है, ज्योतिषका सर्वांग जाननेकी जिनको इच्छा है, चंद्रप्रज्ञप्ति

सूर्यप्रज्ञप्ति सिद्धांत देखो, आजकल जितना प्रचार ज्योतिषका चल रहा है कुछ दो अठाइ हजार वर्षसे नया शुरू हुआ है इसके पहले आर्यावर्तमें जिस प्रकार ज्योतिषका प्रचार था चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्य प्रज्ञप्ति सिद्धांतमें देख लो. वह गणित वह क्षेत्रफल वह गति आजकल व्यवहार गिणनामें चलनी मोकुफ होगयी है, जर्मनी देशस्थ जोकोवी साहवने आचारंग और कल्पसूत्रका अंग्रेजीमें उल्था (तरजूमा) किया है उसकी प्रस्तावनामें चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति सिद्धांतकी ज्योतिष गिणनाकों प्राचीनता दिखानेमें उत्तम युक्ति तर्क वितर्क दिनी है. लिखा है कि- चंद्र प्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति जैनागम ग्रीकलोकोके हिंदूस्थानमें आये पहिलेके है, क्योंकि-जो जो ज्योतिष संबंधी हकीकत इनमें है ग्रीकलोकोके ज्योतिषशास्त्रमें नहीं.-जैन आगममें निषधपर्वतके उपरसें सूर्यका उदय होना और तिरश्चोन गतिसें सायंकालको उसी पर्वतके पश्चिम प्रागपर जायकर अस्त होना, मंगलोंद्वारा ज्योतिषचक्रका भ्रमण होनेसें अयन आदिका व्यवहार होना, घनवायु तनुवायुके आधार रही हुयी पृथ्वी स्थालीके आकार गोल और सपाट होना, सत्य मलूम होता है.

११-प्रश्न,-सूर्यचंद्र ग्रह नक्षत्र तारे जमीनसें कितने उंचे है,
उत्तर,-(७६००) योजन उंचे तारेके विमान-(८००) योजन सूर्यका विमान. (८८०) योजन चंद्रमाका विमान-(६००) योजन शनैश्वरका विमान जमीनसें उंचा है.

१२-प्रश्न,-पच्चीस क्रियामेंसें (१३) में और (१२) में गुणस्थान कितनी क्रिया पावे ?

उत्तर,—११-१२-१३-में गुणस्थानमें एक दृर्यापथिकी क्रिया पावे.

१३-प्रश्न,—शुद्धयोगमें पुन्य संवर निर्जरा तीनोंही होवेया कमी बेसी, ?

उत्तर,—शुद्धयोगमें पुन्य संवर निर्जरा तीनोंही होवे, तेर-हमें गुणस्थानमें केवलीकों सातावेदनो कर्मका बंध है.

१४-प्रश्न,—सम्यक्त कितने दंमकमें उपजे ?

उत्तर,—पांच स्थावरके पांचदंमकमें सम्यक्त न उपजे, तीन विकलेंद्रियके तीन दंमकमें अपर्याप्त अवस्थामें पिडले जत्रका श्राथ लाया हुवा हो, नया न उत्पन्न होवे. शेष सोलह दंमकमें नया उत्पन्न होवे.

१५-प्रश्न,—गत्यंतर जाते अपांतराल मार्गमें पांचप्रकारके शरीरमेंसे कितने शरीर? कितने योग हो, ?

उत्तर,—तैजस कार्मण दो शरीर और एकही कार्मणकाययोग,

१६-प्रश्न,—द्वींद्रिय त्रींद्रियमें उपयोग कितने ? और वायु कायमें योग कितने, ?

उत्तर,—१-ज्ञान-२, अज्ञान-१, अचक्षुदर्शन. यह पांच उपयोग द्वींद्रिय त्रींद्रियजीवोंमें पाइये, वायुकायमें १, उदारिक-२, उदारिककामिश्र-३, वैक्रिय-४, वैक्रियकामिश्र-और-५, कार्मणयोगयह पांच योग पाइये.

१७-प्रश्न,—मुनिकों एकीले विहार करनेकी जिनाज्ञाहै, ? वा नही ?

उत्तर,—आज्ञा है. (यतः आगमवचनं.)

गीयथ्य विहारो, वीयो गीयथ्य मिसत्रो जणियो,
एस तईयो विहारो—नाणुन्नात्रो जिएवरेहिं, ?

अर्थः—गीतार्थमुनि एकीला विहार करेतोत्री जिनाज्ञा विरुद्ध नहीं. दूसरा गीतार्थमिश्रित अर्थात् एक मुनि गीतार्थ और दूसरे अगीतार्थमिलकर विहार करे तोत्री जिनाज्ञाविरुद्ध नहीं. इसके शिवाय तिसरे प्रकारका विहार करनेकी जिनाज्ञा नहीं. कितनेक मुनि अगीतार्थ मिलकर विहार करते हैं उनमें एकत्री गीतार्थ नही परंतु वे अपने वहीत मुनिसमुदायका मान करके अपने आपको संयमी कहलातेहैं, ज्ञानी इनमें कोई गीतार्थ नहीं इसलिए अगीतार्थ विहार कहकर संयमका अज्ञाव बतलाते हैं. निदान ! आगमवचनका तात्पर्य यह हुआकि—कुछ पांचसातसाठ अगीतार्थोंके झुठे मिलनेपर संयमका सद्ज्ञाव नहीं, संयमका सद्ज्ञाव गीतार्थसैं है, चाहे गीतार्थ एकीलाविचरे, वा. दोचार मिलकर विचरे, वा एक गीतार्थ औरउनके साथ अगीतार्थ मिलकर विचरे सब जिनाज्ञा के आराधक है. गीतार्थके विना पांच दश झुठे मिलकर विचरे तोत्री वे आराधक नहीं. किंतु विराधक हैं.

१८-प्रश्न,—पांच ज्ञावके एक एक ज्ञावमें कितने कितने बोलपाए ?

उत्तर,—उपशम सम्यक्त और उपशम चारित्र उपशमज्ञावमें पाए. क्षायिकसम्यक्त क्षायिकचारित्र केवलज्ञान केवलदर्शन दान लान्न जोग उपजोग और वीर्य यह (ए) क्षायिकज्ञावमें पाए क्षायोपशम सम्यक्त क्षायोपशम चारित्र

संयमासंयम मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनःपर्यायज्ञान
मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान विभंगअज्ञान चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन
अवधिदर्शन दानलब्धि लाभलब्धि जोगलब्धि उपभोगल
ब्धि और वीर्यलब्धि यह (१०) क्लायोपशमभावमें पाइये.
चारगति (नरक तिर्यंच मनुष्य देव.)-चार कषाय (क्रोध मान
माया लोभ.)-स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद मिथ्यादर्शन अज्ञान
असंयम असिद्ध और बह लेश्या यह (११) औदयिकभावमें
पाइये. जीवत्व भव्यत्व अभव्यत्व अस्तित्व अन्यत्व कर्तृत्व भो-
क्तृत्व गुणवत्व असर्वगतत्व अनादिकर्मसंतानबद्धत्व प्रदेशत्व
अरूपत्व नित्यत्व-इत्यादि अनादि परिणामिक ज्ञावमें पाइये.

१९-प्रश्न,-तेरहमें चौदहमें गुणस्थान भाव कितने पाइये.

उत्तर.-औदयिक क्लायिकऔर पारिणामिक तीनभाव पाइये.

२०-प्रश्न,-हुंढियेलोग चैत्य शब्दका अर्थ ज्ञान करते है.

अथवा कोइ उद्मस्थ अरिहंत ऐसा करते है, अथवा कोइ साधु
ऐसा करते है यह बात सत्य है कि असत्य ?

उत्तर,-असत्य है. व्याकरण कोश वा आगमधारा यह
अर्थ सिद्ध नहीं होता. चैत्यशब्दका सत्य अर्थ यह है हेमचंङ्
सूरिकृतनाममालामें-चैत्यावेहारौ जिनसद्धानि इति-स्वो-
पज्ञवृत्तौ-चीयत इतिचितिः तस्यज्ञावश्चैत्यं ज्ञावेयण
प्रत्ययः-तथा अमरकोशे चैत्यमायतनं प्रोक्तं-धातुपा-
ठवृत्तौ चिञ् चयने इत्यस्य धातोः प्रयोगश्चैत्यं-हैमाने
कार्यसंग्रहे चैत्यं जिनौक स्तद्बिंबम्-इति-चैत्यशब्द-

का अर्थ जिनविंश जिनमंदिर और जिनसज्जातरु है.

३१-प्रश्न,-दुंढिये लोक [३१] सूत्र कौन कौनसे मानते है और अपनेमें कितने मानते है ?

उत्तर,-[११] अंग, [११] उपांग, चारमूल (दशवैकालिक-उत्तराध्ययन-नंदीसूत्र और अनुयोगद्वार.) वेदग्रंथ चार दशाश्रुतस्कंध-वृहत्कल्प-व्यवहार और निशीथ.) वृत्तीसमा आवश्यक सूत्र-ये (३१) सूत्र दुंढिएलोग मानतेहै, चारमूलमें फेरफार कराहै वह (६) वेदग्रंथमेंसे चारही वेदमाने दो नही माने.

अपनेमें (११) अंग, [११] उपांग,-दशाश्रुतस्कंध, वृहत्कल्प व्यवहारसूत्र, पंचकल्प, निशीथ, और महानिशीथ, ये [६] वेद ग्रंथ. चारमूलसूत्र (आवश्यक-दशवैकालिक-पिंरुनिर्युक्ति और उत्तराध्ययन.) अनुयोगद्वार और नंदीसूत्र मुख्य करके ए [४५] मानतेहै, नंदीसूत्रमें (८४) आगमके नाम है वेत्ती मान्य है. (१४०००) प्रकीर्णक महावीरस्वामीके शिष्यके रचित नंदीसूत्रमें लिखेहै सब मान्यहै. विशेष क्या कहे ! महावीरस्वामीसे लेकर आजतक पूर्वाचार्योंने जितने शास्त्रसिद्धांत रचेहै जो जो द्वादशांगवानीके अनुसार है वे सत्तो मान्यहै.

त्रैशाप ज्येष्ठ आपाद महिनेमें नंदीसूत्र व्याख्यानमें वाचा. आचारदिनकर जो ज्ञानाधिकारमें वाचते थे पूरा किया. सिद्धांतशिरोपणिका गोलध्याय इनदिनोंमें कंठाग्र किया. चौमासा खगले पहले आपाद शुक्र (१३) के रौज ठाणांगमत्र और वासुपूज्य चरित व्याख्यानमें वांचना शुरु किया. श्रावणशुक्र [ए] के रौज जैनधर्मप्रसारक सत्ताके मंत्रो अमरचंद्र घेलाजाइ एक प्र-

कारका चलता विरोधकी कृपा मागनेकों हमारे पास आये. तीन रौज रहे. फिर अपने शहरकों गये. पर्युषणपर्व वतीत होनेके बाद जयपुरसें प्रिन्सिपल हरिदासजीने पंमित जगन्नाथजी द्वारा जैन बौधके संबधमें कितनेक सवाल हमसें पूछे. उसका उत्तर लिखकर उसीके वारेमें एक सविस्तर निराला विषय लिखा सो यह है.

(जैन बोधका जेद.)

कितनेक महाशय जैन बौधको एक और कितनेक एक दूसरेकी शाखा समजते है. परंतु जैन बोध एक नही, न एक दूसरेकी शाखा है. कितनेक कहते है एक दूसरेकी पुस्तकोपरसें नकल कियो, कितनेक कहते है दोनोने—“बौधायन”—जो वैदिक-मतका पुस्तक है उस परसें नकल कियो. परंतु यह बात गलत है. क्योंकि जो बात जैन पुस्तकोमें है वह बौधायनमें नही, जो बौधपुस्तकोमें है वह जैनमें नही. कितनेक कहते है जैन बोधके इतिहासकी बातें परस्पर मिलती है इसलिये दोनो एक है. परंतु इतिहासकी बातें कहां मिलती है ? जैनमें (२४) तीर्थंकर मानते है बौधमें (७) मानते है. चोइसमे तीर्थंकर महावीर और बौधमतके आचार्य गौतमबुध एक समयमे हुवे परंतु इससें यह नही कह सकते है कि-जैनबौध एक है, रिवाज नी जिन जिन है. एक दो बातें मिलनेपर एक नही हो सकते.

महावीरके पिताका नाम सिध्दार्थ और गौतमबुधके पिताका नाम शुद्धोदन था. महावीरकी माताका नाम त्रिशला-गौतमबुधकी माताका नाम गौतमी था. महावीरकी स्त्रीका नाम

यशोदा-गौतमबुधकी स्त्रीका नाम यशोधरा था. महावीरके भ्रा-
तका नाम नंदीवर्द्धन-गौतमबुधके भ्राताका नाम नंद था. महा-
वीरका जन्म *कृत्रियकुंभ ग्राममें हुवा गौतमबुद्धका जन्म नेपाल
की तराइमें सुंसरमारपर्वतके पास कपिलवस्तु ग्राममें हुवा. महा-
वीरकी माता महावीर (३७) वर्षके हुवे तबतक जीयो-गौतम
बुधकी माता गौतमबुधके जन्मते ही गुजर गयी. महावीरकों कोइ
पुत्र नही था प्रियदर्शना नाम एक पुत्री थी. और गौतमबुधकों
राहुल नाम एक पुत्र था.

१-महावीरने राज्याधिकार नही लिया. अठाइस वर्ष
वतीत होनेपर माता पिता स्वर्गवास हुवे तब नंदीवर्द्धनसे पूछा
कि-में मुनि होना चाहता हु. नंदीवर्द्धनने कहा माता पिताका
शोकरूपो दाह मुजे हो रहा है उसपर नौन मत लगा. ज्ञाइके
आग्रहसे (१) वर्ष संसारमें रहना स्वीकार किया. परंतु संसारिक
कार्यमें आसक्त न हुवे. ब्रह्मचर्य पाला. और पुरे (३७) वर्षकी
उमरमें मंमार ठोमकर मार्गशोर्ष सुदी दशमोके रौज अपने लंबके
शांकों काट कर मुनि हुवे. नंदीवर्द्धन और इंधोंने दीक्षा महो-
त्सव किया. मतिज्ञान-श्रुतज्ञान-और अवधिज्ञान पहेले मौजूद
थे दीक्षा लिये चाद महावीरकों * मनःपर्यायज्ञान पैदा हुवा.

२-गौतमबुधने (३७) वर्षकी उमरमें डनिया ठोमकर मुनि
पना स्वीकार किया. ऐसा वयान है कि-एक दिन गौतमबुध अ-
पनी स्त्रीके महेन्द्रमें सोने गये. वह सोती थी, मनमें वैराग्य आया

* भावार्थ अर्थात्पराय ग्देषनमें (१६) माल दृग् वमता है.

* इतने महेन्द्रमें सोनी बात इन ज्ञानमें जाइए हो.

कि-डुनिया झुठी है दरवजे ही सें पिठें लोटे. वच्चेकों इस अं-
देसेसैं प्यार ज्ञी नही किया कि-ऐसा न हो उसकी मा जाग
उठे. घोंकेंस्वार होकर अंधेरेमें चले. रात जरकी सफरके बाद
सवेरकों अपने इमानदार रथवानके हाथ घोडा और गेहना
अपने पिताको जेज दिया और, लंबे केशोंको काट फकीराना
वेष पहनकर जंगलको सह लीयी.

महावीर और गौतमबुध दोनों राजपुत्र थे. दोनोंने जवा-
नीमें डुनियाका सुख चैन गोमा. प्यारे अपत्य और स्त्रीसैं मोह
न किया. राजकुमार होकर जंगल वासी बने हकीकतमें सहज
बात नही. इस मजमुनकों जैनी और बौध अपने अपने पवित्र
पुस्तकमें जब खयालात करते है सबकों प्यारा लगता है. पाषाण
हृदय पुरुष ज्ञी रो देते है. एक जमाना वह था चंपेवर्ण शरीर-
पर राजसी कपमे पहने रहते थे, घरसैं बहार कदम जरनेकोंज्ञी
स्वारी हाजर थी, अब वो बात धार लीयी कि-घर घर मोलने
वाल्योंकी तरह जिह्वा मागना-देहकों विदेह समजना-और जंगल
वासी बनना-धर्म प्यारा न होतो कौन ऐसा कर शकता है, ?-
हकीकतमें डुनिया मोहरूपी जंजोरसैं जडो है, जहां स्नेह वहां
डख है, संयोगके शाश्व वियोग लगा है, युवानी बुढापनसैं घीरी
है सुख डःखका चक्र सारे संसारपर फिर रहा है. रैयत समजती
है राजा-और राजा समजता है रैयत सुखी है, परंतु वास्तवमें
कोइ सुखी नही. धन और औरत के लिये पुरुष और पुरुषके
लिये औरत बेहोश फिर रहे है. किसीने तृप्ति नही प्रायी. तृप्ति
पानेका यही रस्ता है जो महावीर और गौतमबुधने लिया.धर्म

प्यारा लगे विदून संसारकों कोइ नही ठोमता. अलबते ! ज्ञानकी न्यूनाधिकता होनेपर कोइ सच्चे राह चलता है कोइ उलटे चलता है, परंतु इतना कहना जरूर बन सकता है संसार ठोमना और धर्मकी तर्फ मुंह करना अज्ञा ही है.

३-कृत्रियकुंभ ग्रामसें विहार कर महावीर कुमारसंनिवेश गये, और ध्यानारूढ हुवे. वहां पशुपाल (गोवालोए) ने अपने बैलोंको इनकेपास लायकर बांध दिये. इस विचारसें कि ये इनकी रक्षा करेगें, बैलोंके चले जानेपर पशुपालोंने गुस्से होकर महावीरकों मार मारना चाहा. इंद्रने अवधिज्ञानसें यह बात जानी आनकर पशुपालोंकों शिक्षा दीयी. और महावीरसें विज्ञप्ति कियी कि-(११॥) वर्षतक आपको बने कष्ट उपस्थित होंगे आप हुकम देवेतो मैं आपकी सेवामें हाजर रहू. महावीरने कहा कर्मोंका कृत्य अपनी शक्तिद्वारा करे मुक्ति जब होती है. इंद्रने मरणांत उपसर्ग निवारणके लिये एक देवता महावीरकी सेवा में रखा जिसका नाम सिद्धार्थ था. पहला चौमासा महावीरने मौराक संनिवेशमें किया, यद्यपि केइ कारणोंसें इस चौमासेमें अनियतपने फिरते रहे परंतु यही कहजाता है कि-मौराकसंनिवेश और अस्थिक ग्रामके निश्चित यह चौमासा हुवा.

४-कपिलवस्तु ग्राममें चलकर गौतमबुधने पहला चौमासा बनारसमें किया.

५-मौगक संनिवेशमें अन्यत्र विहार करके महावीर श्वेतांशिरा नगरो गये, रत्नेमें चंभुकौशियानागकों प्रतिबोध दिया. श्वेतांशिरासें सुरज्जीपुर-सुरज्जीपुरमें आगे गंगा नदी उतर कर

राजग्रही गये. वहां नाळंद मोहलेमें तंतुवायकी शालामें ठहरे. एक महिनेका तप किया. गोशाला मंखलीपुत्र यहां महावीरसें मिला. दूसरा चोमासा यहां हुवा.

६-बनारससें चलकर गौतमबुध राजग्रही आये. और आनंद-देवदत्त-उपाली-और अनुरुद्ध-ये (४) चले यहां किये. जिसमें आनंद जातिका हजाम था. इनदिनोंमें कपिलवस्तुसें शुद्धोदनराजाका गौतमबुधको बुलाना आया, गौतमबुध चेलोंको लेकर कपिलवस्तु गये. पिताने नोजनकेलिये निमंत्रणा कियी. निह्काकेलिये गौतमबुधे अपने घर गये-सन्नी कुटंबसें मिले-स्त्री यशोधराकांजी मिलने गये. दूरसेंही पतिकों देखकर यशोधराने रोदिया. पैरमें गिरकर वहोत रोंने लगी तब गौतमबुधने उपदेश दियाकि धीरज रखो. दुनिया झूठी है और धर्मकरना अच्छाहै. गौतम बुध निह्का लेकर अपने मठको आये. और जब कपिल वस्तुसें जाने लगे यशोधराने अपने बेटे राहुलको राज्यनाग मांगनेके लिये जेजा. एक दो पमात्र चले गये बाद एक आश्रममें राहुल गौतमबुधसें जाय मिला. गौतमबुधने चेलोंसें कहरखाथा कि-राहुलकों साधु बना लेना. उन्होंने उसीतरह किया. शुद्धोदन इसबातसें वहोत नाराज हुवे. और गौतमबुधसें मिलकर इकरार करवाया कि-माता पिताकी आज्ञा विदून किसीकों साधुकरना नही. अखीरमें गौतमबुधकी स्त्रीजी साध्वी हुयी. गौतमबुध राजग्रही आये. दूसरा चोमासा यहां किया.

७-राजग्रहीसें विहारकर महावीर ब्राह्मणगांव होतै चंपानगरी गये. तिसरा चोमासा यहां किया. चंपासें काळाकसंनिवेश

होते पात्रालक संनिवेश गये. गोशाला मंखलीपुत्र जो महावीरके विना कहे साधुपनेका वेष पहनकर चेला होचूका था साथ ही फिरता रहा. पात्रालक संनिवेशसें कुमार संनिवेश गये, वहां तेइसमें तीर्थकर पार्श्वनाथके शिष्यसंप्रदायमेंसें मुनिचंद्रजीके चेलोंसें गोशाला मिला. कहताहै तुम कौन हो ? उन्होंने कहा हम निर्ग्रंथ मुनिहै. गोशालाने कहा तुमकों निर्ग्रंथ किसने बनावे?—कहां मेरा धर्माचार्य और कहां तुम?—विल्कुल झुठे हो. इत्यादि वादानुषाद करता रहा. कुमार संनिवेशसें महावीर चौराकसंनिवेश होते हुवे पृष्ठचंपानगरी गये. चौथा चौमासा यहां किया.

७-गौतमबुधके तिसरे चौमासेका यथार्थ हाल बौधपीठकोंमें नही मिलता. चौथे चौमासेका इतना हाल मिलता हैकि-विशाला मगरीमें किया.

८-पृष्ठचंपासें विहार कर महावीर कायंगल संनिवेश होते सावळीनगरी आये. कितनाक समय ठहरकर हरिछ संनिवेश गये, वहां ध्यानारूढ हुवे. वहांसें नगलग्राम गये. वहांसें छिष्ट कर्मकी निर्जराके लिये लाढा विषयको और वहांसें पूर्णकृश (अनार्यभूमि) नामा ग्रामकों गये. वहां अपशुकन हुवा मानकर दो चौर तलवाग लेकर महावीरकों मारने आये. इन्हने आनकर दोनोंको दठाये. वहांसें जडिकापुरी गये. पांचमा चौमासा यहां किया.

१०-विशाखाग्रमें चद्रकर गौतमबुध कपिलवस्तु तर्फ आये. राजा शुक्रोदन मृत्यु हुवा तब गौतमबुध कपिल वस्तुमें थे. कितनाक शीशोंको यदां माथी किया. फिर वत्सदेशमें कौ-

शांवी आये. कौशांबीसें महावनमें कुंतागारविहार आनकर पांचमा चौमासा किया.

११-जड़िकासें विहारकर महावीर तंवालग्राम गये. गौशालामंखली पुत्र यहांसें न्यारा हुवा. तंवालसें विशाला गये. यहां ध्यान किया. फिर ग्रामाक संनिवेश गये. यहां विज्जेलकयहने महिमा कियी. फिर शालिशीर्षग्राम गये. यहां एक वाणव्यंतरी देवीने उपसर्ग किया. यह देवी जब महावीर त्रिपृष्ठ वासुदेवके जन्ममें थे तब इन्होंकी स्त्री थी परंतु अपमानिता थी. उपसर्गको सहते हुवे महावीरकों यहां *लोक अवधिज्ञान पैदा हुवा. यहांसे फिर जड़िकानगरी गये और ठठा चौमासा यहां किया. अनेक अग्निग्रह धारन किये, गोशाला मंखली पुत्र फिर आन मिला.

१२-कुंतागार विहारसें चलकर गौतमबुध महाकुलमें गये वहां ठठा चौमासा किया. इस चौमासेमें गौतमबुधने सोचा कि-मैंने ७ वर्ष तप किया. परंतु कुछ न हुवा. इस लिये तप करना ठोम देना चाहिये. जो हैसो ज्ञानमें है. दूसरे मनुष्योंकों उपदेश देकर धर्ममें लाना यही ठीक बात है.

१३-जड़िका नगरीसें विहार कर महावीर मगध देशमें आठमहिने निरुपसर्ग विचरते रहे. सातमा चौमासा आलंजिका नगरीमें किया. चार महिनेका तप किया.

१४-महाकुलसें चलकर गौतमबुध राजग्रही आये. राजा विम्बिसार (श्रेणिक)की स्त्री हेमाकों बुध धर्मकी दीक्षा दीयी.

* चतुर्दश रज्वातमक लोकमें जितने रुपीपदार्थ है इस ज्ञानसें देख शके.

सावध्यामें आनकर विभिन्नसारकों कितनेक चमत्कार बताये, फिर गौतमबुध स्वर्गमें गये. वहांसें पिठें आनकर सातमा चौमासा जैतवनविहारमें किया.

१५-आलंबिकासें महावीर कुडूमसंनिवेश गये. वहा ध्यान करते रहे. फिर मदनग्राम-मदनग्रामसें उन्नागसंनिवेश-फिर वज्रभूमि-और वज्रभूमिसें राजग्रही आनकर आठमा चौमासा किया.

१६-जैतवनविहारसें चलकर गौतमबुध सूंसमार पर्वत [जो कपिलवस्तुके पास है] पर नये. यहां आठमा चौमासा किया.

१७- राजग्रहीसें महावीर वज्रभूमिमें गये. इस जगह अनेक उपसर्ग सहन किये. नवमा चौमासा इसी भूमिमें अनियतपने किया. सबकि-चारमहिनेतक एक जगह ठहरनेको उचित स्थान नहि मिला. कच्ची किसी जगह और कच्ची किसी जगह फिरते रहे. चार महिनेका तप किया.

१८-सूंसमार पर्वतसें गौतमबुध कौशांबी आये. यहां मोद्गलायनके साथ तकरार हुवा. आप समे विरोध पैदा होनेसें गौतमबुध गुस्से होकर पारिलेयकवनमें चले गये. और यहां नवमा चौमासा किया. मोद्गलायन और शौरीपुत्र ये दो गौतमबुधके लायकवर शिष्य थे. बौधपीटकोंमें इन्होंका नाम बहोतजगह देखनेमें आताहै.

१९-वज्रभूमिसें विहारकर महावीर और च्ची दो महिने उमीके आमपामकी जमीनमें विचरने रहे. वाद कूर्मग्राममें आये. कूर्मग्राममें मानध्या आनकर दशमा चौमासा किया. गोशाला मांगलीपुत्रने महावीरमें अलग होकर तेजुलेश्या साधन कियी.

और पार्श्वनाथके शिष्यप्रशिष्योमेंसें एक्कों [जो संयमरहित था] मिलकर अष्टांग निमित्त सीखा. अपने आपको सर्वज्ञ मानने लगा.

३०-दशमा चौमासात्री गौतमबुधने पारिलेयकवनमेंही किया

३१-सावथीसें विहारकर महावीर म्लेच्छद्वभूमि कों गये.

वहां पेढालग्रामसें बहार पोलासचैत्यके एक जगमें ध्यानारूढ हुवे. इसवख्त तेलके तप किया था. इधर पहले देवलोकमें इंद्रने अपनी सन्नामें सबदेवोंके स्वरु महावीरके चित्तकी हृदता का वर्नन किया. और कहा कौनदेव वा दानव एसाहै जो महावीरकों ध्यानसें चला शके. सन्नामें बेठा हुवा संगमदेव कहने लगा अन्नी चलाकर आताहुं. मनुष्यलोकमें जहां महावीर थे आया. महावीरपर धुलकी वृष्टि कियी. मांस मच्छर घृतेलिका विछू सर्प जंदरे नोलके रूपसें महावीरकों काटा. हाथीका रूप करके मर्दन प्रहार किया, पिशाच होकर मराये, व्याघ्र होकर नखोंसें विदारण किया, सिध्दार्थ और त्रिशलारानिका रूप करके रुदन किया अनुकूल उपसर्ग दिया. महावायु कलिकाबायु चलाकर कालचक्र ठोसा. देवमायासें सूर्योदय करके महावीरसें कहा अब दिन चढगया चलते क्यों नही? महावीर अपने ज्ञानसें जानतेही थे कि-रात्री है और इसने देवमायासें दिन चढाकर दिखाया है. फिर दिव्यरिद्धि देखाकर कहा जो दिल चाहे सो मागलो. देवांगनाका रूप करके जोग करनेकी प्रार्थना कियी परंतु किसी प्रकार महावीर अपने ध्यानसें चले नही, एकरात्री में संगमदेवने (३०) उपसर्ग किये. वहांसें दिन रोशन हुवा जब महावीर आगे वढे तब वह देवन्नी पिठे पिठे चला. जहां जहां जिह्वाकों जावे जिह्वाकेयोगकों दोषित करमाळे.याने किसी प्र-

कार तोम फोमकर जिह्वा न मिले वैसा उपाव करे. निदान !
 ठहमहिनेतक महावीरके पिठे फिरा. परंतु एक उपाव नही चला.
 हार खाकर जब जाने लगा कहता है है ! देवार्य ! चले जाउ
 अब मैं आपकों ठोमदिये. महावीरने कहा मैं कोइके आधीन
 नही. जहां योग्य जानता हु जाता हु. संगम देवलोककों
 गया, महावीर अगाडीवढे. देवलोकमें इंद्रनेसंगमकों आते
 देखकर मुंह फेंर लिया. और देवोंकों हुकम दियाकि-
 इस उष्टकों मैरे सामनेसेनिकाल दो. इसने हमारे मान्य पर-
 मात्मकों बहोत खेदित किये. निदान ! संगमदेवको स्वर्गसे निकाल
 दिया, जोकि- मेरुपर्वतकी चूलिकापर आन रहा. महावीर आ-
 लंजिका नगरी गये. वहां हरिकांत और श्वेतंविका गये तब
 हरिसह दो विद्युत कुमार देवोंके इंद्र साता पूठने आये. साव-
 धीमें शक्र इंद्र साता पुठने आया. कौशांवीमें गये तब चंद्र
 सुर्य राजग्रहीमें इशान इंद्र और मिथिलामें धरणोइ साता पूठने
 आये, इसी तरह विहार करते विशालामें आये. ग्यारहमा चौ-
 मासा यहां किया.

११-पारिलेयक वनसें चलकर गौतमबुध राजग्रहीके पास
 भरघ्राज ग्राम गये. ग्यारहमा चौमासा किया.

१२-विशालासें चलकर महावीर सूंसमारपुर गये. सूंसमा-
 रपुरमें कौशांवी-जहां शतानिक राजा राज्य करता था. महावी
 रने यहां एक कठिन अथग्रह धारा. जो ठह महिनके बाद पूरा
 हुवा. कौशांवीमें जंबिका ग्राम गये. जंबिकासें मैदिक ग्राम-मैदि-

कग्रामसें षण्णमानी ग्राम गये. वहां ध्यानारूढ थे तब एक गोवा-
लिया दो बैलोंको इनके पास ढोर गया. कह गयाकि मैं-
आता हु आप खयाल रखियेगा. निर्मोही महावीरने न हां कही
न ना कही. इधर बैलोंने जंगलकी राह लीयी. गवालीयेने आ-
नकर पूछा बैल कहां गये ?-महावीर कुञ्च नबोले. क्रोधमें आकर
गवालियेने दो मेखां काठकी दोनों कानोंमें लगा दियी. त्रिपृष्ठ
वासुदेवके जन्ममें महावीरने इस गोवालियेको (जो शय्यापाल था)
कानोंमें सीसा गिराकर प्राणांत किया था. वह कर्म यहां उदय
आया. याने वह शय्यापाल गोवालिया हुवा और कानोंमें मेखां
लगाकर बदला लिया. वहांसें महावीर मध्यपावामें गये. त्रिध्वार्थ
वणिकके घर जब जिह्वाकों गये तब खरक वैद्यने देखा कि-इन
के शरीरमें कुञ्च व्यथा है. जब महावीर जिह्वा लेकर वनको
लोटे खरक वैद्य पीठें पीठें आया. और व्यथा निवारण कियी,
बने यत्नसें काष्ठकी मेखां निकाली, संरोहिणी औषधि लगाकर
निरोग किये. इस उत्तम कार्यसें वैद्यने देवगति होनेका पुन्य
उपार्जन किया. गोवालिया मरकर नरकगतिको गया शांत
दांत जितेंद्रिय-गगनवत् निरालंबी-वायुवत् अप्रतिबंध विहारी-
समुद्रवत् गञ्जीर-मेरुवत् अक्रंप-ज्जारंरूपह्विवत् अप्रमादी-कंचन
पाषाणमें एक दृष्टि-ज्ञानदर्शन चारित्र करके ज्ञावितात्मा-महावीर
(१३) वर्ष ग्रामानु ग्राम विचरे. तेरहमें वर्षकी गृष्मरुतुका दूसरा
महिना वैशाख शुक्र (१७)मी के रौज-ज्जिकग्रामके बाहार-रिजु-
वालुका नदी कनारे-श्यामाक कुटुंबके खेतमें शालवृह्णके नीचे
उकडुआसन बैठे हुवे महावीरकों शुरुध्यान ध्याते केवलज्ञान

उत्पन्न हुवा. ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहनी और अंतराय ये (४) कर्मसँ रहित हुवे. चौरासी लाख जीवयोनिकी गति आगति स्थिति जीवन मरण अवतरण सन्नी जीवोकें मनोगतज्ञाव और धर्मास्तिकाय आदि खट्खव्यके सन्नी जेदोकॉ जानने लगें. महावीरकॉ केवलज्ञान उत्पन्न हुवा जानकर [६४] इंद्र ज्ञानका महोच्चव करनेकॉ आये, समवसरण (व्याख्यान भूमि.)की-रचना कियी. उसमें वेठकर महावीरने धर्मोपदेश किया. (१३॥) वर्षके तपको महावीरने सफल माना. तपसँ कर्मोंका नाश होता है कर्मोंके नाशसँ ज्ञानप्राप्ति होती है.

रिजुवालुका नदीकिनारेसँ विहार करके महावीर पावा पुरीमें आये. देवोंने मिलकर समवसरणकी रचना कियी. इसवख्त पावा पुरीमें सोमिलविप्रके घर यज्ञ महोच्चवकेलिये बहोत ब्राह्मण इकठे हुवे थे. इनमें इंद्रभूति (गौतम)-अग्निभूति-वायुभूति-ये(३) पंमित सगेभ्राता थे. एक एककॉ पांचसँ पांचसँ शिष्यका परिवार था. व्यक्त और सुधर्मा पंमितकॉन्नी पांचसँ शिष्य थे. पंमित और मौर्यपुत्र दो पंमित सगेभ्राता थे. दौनोंके सातसँ चेले थे. अकंपित अचलभ्राता मेतार्य और प्रज्ञास इन चार पंमितकॉतीनसँ तीनसँ शिष्यका परिवार था. कुल (४४००) शिष्यके(१३) पंमित अध्यक्ष थे. महावीरके समवसरण में इंद्र-चगेरा देव आकाशसँ उतरने लगे इंद्रभूतिआदि [११] पंमित कहते रहे देवो ! यज्ञ के प्रज्ञावमें प्रसन्न होकर देवता यज्ञमहोच्चमें आतं हैं. परंतु वे जब महावीरके पान गये औरलोकोमंन्नी बात पमार दृष्टिके, यहां चाँइसमें नीधकर आये है तब इंद्रभूति

[गौतम] को इर्षा पैदा हुयी. मनमें निर्णय करलिया कि-जस सर्वज्ञको चर्चा करके हराना यज्ञको ठोमकर इंद्रभूति गौतम महावीरके सामने गया. इसको शंसय थाकि-आत्मा मरकर परलोक जाता आता नहो किन्तु पृथ्वीजत्र आदि पंचभूतोंसे उत्पन्न होकर उसीमें समा जाताहै जैसे जलमें बुद्बुदा-महावीरने इसका उत्तर दिया कि-जोव नित्य है नित्यको उत्पत्ति नहो होती. अगर यह पंचभूतोंसे उत्पन्न होता होतो एक सुखी एक डखी न होना चाहिये. सुख डखका होना शुजाशुजकर्मके आधीन है. जब शुजाशुजकर्मका सद्भाव हुवा तो परलोक जाना आना कैसे न हो ! इसलिये आत्मा मरकर परलोकमें जाता आता जरूरहै. जब संपूर्ण कर्म क्षय हो जायगे इसकी मुक्ति होगी. दूसरा प्रमाणा यह है कि-शरोर जोग्य है जोग्यवस्तुका जोक्ता जरूर होना चाहिये. जैसे दूधमें घृत-तिलोंमें तैल-काष्ठमें अग्नि और पुष्पमें सुगंध रही है तद्वत् शरीरमें आत्मा रहा है आत्मा ज्ञानमय है. जबतक कर्मोंसे मुक्त नही हुवा है शरीरके शाय क्षीरनीरकी तरह मिला है. सोजी देह व्यापी सर्वव्यापी नहो. मुक्ति होनेपर शरीर छूट जाताहै. ज्ञानकरके सर्वव्यापी है. इस उत्तरसे इंद्रभूति गौतम निशंसय होकर पाचसे शिष्योंके शाय दीक्षा लेकर महावीरका शिष्य हुवा.

दूसरा अग्निभूति पंमित आया. इसको कर्मके होनेमे शंसय था. महावीरने उत्तरदिया अगर कर्म नहोतो एकसुखी एक डखी एक राजा एक रंक वगेरा वैचित्रता कैसे है ?-हकीकतम इनका हेतु शुजाशुजकर्म है. इसवातसे अग्निभूति निःशंसय हो-

कर पांचसें चेलोंके साथ दोहां लेकर शिष्य हुवा. तीसरा वा-
 युभूति पंमित आया. इसको-जो शरीर है वही आत्मा है वा श-
 रीसें कोइ न्यारा आत्मा है?—यह शंसय था. महावीरने ईर्षभूति
 गौतमको जो उत्तर दिया था वही उत्तर देकर निशंसय किया.
 वह पांचसें चेलोंके साथ दोहां लेकर शिष्य हुवा चौथा व्यक्त
 पंमित आया. इसको पृथ्वी-अप्-तेज-वायु-और आकाश यह
 पंचभूत है यां नही इसविषय शंसय था. महावीरने उत्तर दिया
 पृथ्वी आदि पंचभूत हैं वेदमें पृथ्वी आदि पंचभूतोंको स्वप्नकी
 तरह असत्य कहे यह अध्यात्मज्ञानको अपेक्षा कही है. इससें
 पंचभूतोंका निषेध हुवा नहि समजना अलंबते! अखीरमें गो-
 मनेयोग्य है इस उत्तरमें निशंसय होकर पांचसें चेलोंके साथ
 महावीरका शिष्य हुवा. पांचमा सुधर्मा पंमित आया. इसको
 यह शंसय था कि-जो इस जन्ममें पुरुष वह मरकर अगले जन्म-
 में जी पुरुष होगा. जो पशु है वह पशु और जो स्त्री है वह अ-
 गले जन्ममें स्त्री होगी. महावीरने उत्तर दिया यह बात ठीक
 नही कोइ पुरुष बहोत पापकर्म करे वह पुरुपसें बदलकर अगले
 जन्ममें पशु होजाय. पशु अगर पुन्यकर्म करे तो वह अगले ज-
 न्ममें मनुष्य होजाय. यह कोइ बात नही कि-जो यहां पुरुष है वह
 पुरुष और पशु है वह पशु ही हो. यह सब अपने अपने कर्मके
 अनुसारहै. इस उत्तरमें निःशंसय होकर पांचसें चेलोंके साथ महा-
 वीरका शिष्य हुवा. छठा पंमितपुत्र पंमित आया. इसको बंध
 मोदहै वा नही?—यह शंसय था. महावीरने उत्तर दिया जहांतक
 जीव संसारमें एक गतिमें दसरी गति भ्रमण करता है वहांतक

उसे कमाका बंध जरूर है. जब संपुर्ण कर्मोंमें रहित होगा तब फिर उसे कर्मबंध न होगा इस उत्तरसें निःशंसय होकर साढे तीनसों चेलोके परिवारसें महावीरका शिष्य हुवा. सातमा मौ र्यपुत्रपंमित आया. इसको देवताके होनेमें शंसय था कहता था यह सब इंद्रजालकी विद्या है, महावीरने उत्तर दिया अगर दे-
 वता न होतेतो-यज्ञायुधी यजमानः स्वर्गलोकमवाप्नुयात्
 वेदमें यह वचन न होता, मायोपमादेवाः—यह जो वचन है
 इसका तात्पर्य यह नहि कि-देवतें बिल्कुल है नही. किंतु अखी-
 रमें देवतेजी अनित्य है. आयुष्य पूर्ण होनपर विनाशी है. शंसय
 दूर हुवा और साढेतीनसों चेलोंके साथ शिष्य हुवा. आठमा
 अकंपित पंमित आया. इसको नरक है वा नही शंसय था. म-
 हावीरने उत्तर दिया अगर नरक नही है तो—“जो शुद्धका अन्न
 खावे वह नारकी हो”—यह वचन वेदमें कैसे कहा? इससे सिद्ध है
 कि-सबसें अधिक पापफल जोगनेको जगह नरकगति है. एक
 जीवकी अपेक्षा सादि सांत है अनेक जीवोंकी अपेक्षा अनादि
 अनंत है. शंसय दूर होनेसेंतीनसों चेलोकं साथ महावीरका शि-
 ष्य हुवा. नवमा अचल भ्राता पंमित आया. इसको पुन्य प्राप
 है वा नही इसपर शंसय था. महावीरने उत्तर दिया पुन्य पाप
 शुभाशुभकर्मजन्म है. शुभाशुभकर्म विना जगतकी विचित्रता
 नही बनशकती. इश्वर इच्छाका सहारा लेवेतो कृतकृत्य इश्वरको
 जगत रचनेमें क्या प्रयोजन?—जगत प्रवाहरूपसें अनादि है. इ-
 सका बनानेबला काइ नही जो जीव जैसे कर्म करते है उसकर्मके
 उदयसें आपहीवैसा फल जोगते है. इसी कारण जगतकी विचित्र-

ता है. इस उत्तरसे शंसय न रहनेपर तीनसौ चेलोंके परिवारसे शिष्य हुवा. दशमा मेतार्य पंमित आया. इसको परभव है वा नहो शंसय था. महावीरने जैसे इंद्रभूति गौतमके उत्तरमें वर्नन किया था तद्वत् उत्तर देकर निशंसय किया, तीनसे चेलोंके साथ दोक्ता लेकर शिष्य हुवा गगारहमा प्रभास पंमित आया. इसको निर्वाण है या नही? यह शंसय था कहता था मोक्ष साधनके अनुष्ठानका काल वेदमें क्यौ नही?—महावीरने उत्तर दिया आठ प्रकारके कर्मसे जब यह जीव रहित होता है तब इसका निर्वाण (मोक्ष) होता है वेदमें निर्वाण अर्थां पुरुष अग्नि-होत्र आदि कार्यं ठोमकर निर्वाण साधनका अनुष्ठान करे यह जो लिखा है निर्वाण साधनकाल ह्यो तो बताया है. अगर निर्वाणका अज्ञाव होता तो यह वचन कैसे होता?—शंसय दूर होनेपर तीनसौ चेलोंके परिवारसे दोक्ता लेकर शिष्य हुवा. पावापुरीमें एकहो रौज (४४११) चले हुवे. उक्त [११] पंमितको गणधरपद दिया इन्होंने द्वादशांगवानी रची. साधुसाध्वी श्रावक श्राविका-चतुर्विध संघको स्थापना हुयी.

पावापुरीसे विहारकर महावीर ग्रामानुग्राम विचरते रहे आर धर्मोपदेश करते रहे महावीरका धर्मोपदेश यह था. हर एक मनुष्य [जो धर्म करता है] मोक्ष पाशक्ता है. जो जीव जैसा कर्म करता है वैसा फल जोगता है. न तो देवते और न मनुष्यके रोके रुक शक्ता है. आराम और रंज आदमीको धेरे तब अपने कर्मके फल और नतीजेपर खयाल करना चाहिये, सुख के वखत मान और दुखके वखत गरीबी न लाना चाहिये. जब कोइ जीव मरता है

तो वह फिर अपने कर्मानुसार ठोटा या वना शरीर धारण करता है. चौराशी लक्ष जीवयोनिमें यह जीव अनादिकालसें फिर रहा है. कच्ची देव कच्ची मनुष्य कभी जानवर पंखी और कच्ची नरकगतिमें इसका जाना आना बन रहा है. जीसने मनुष्यजन्म पाया और पूर्वसंचितकर्म दूरकरके अगामी निस्पृह तप किया उसने मुक्ति पायी. जगतका कर्त्ता कोइ नही स्वत अनादिकालसें प्रवाह रूप चला आता है. जो जीव सुकृत्य करता है उसकी मुक्ति होती है, मुक्त हुये पिछे संसारमें आना नही रहता. जीव-अजीव पुन्य-पाप-आश्रव-संवर-बंध-निर्जरा-और मोक्ष-ये [ए] तत्व है. धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय-आकाशास्तिकाय-पुद्गल काल-और-जीव-ये (६) इव्य है - अस्तित्व, वस्तुत्व, इव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्त्तत्व, और अमूर्त्तत्व, ये [१०] इव्यके सामान्य गुण है, - ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, - गतिहेतुत्व, स्थितिहेतुत्व, अवगाहेनाहेतुत्व, वर्त्तना हेतुत्व, चेतनत्व, अचेतनत्व, मूर्त्तत्व, और अमूर्त्तत्व, ये (१६) इव्यके विशेषगुण है. - अस्ति, नास्ति, नित्य, अनित्य, एक, अनेक, ज्ञेद, अज्ञेद, ज्ञव्य, अज्ञव्य, और परम, ये (११) इव्यके सामान्यस्वप्नाव है. - चेतन, अचेतन, मूर्त्त, अमूर्त्त, एक प्रदेश, अनेकप्रदेश. विज्ञावस्वप्नाव, शुद्धस्वप्नाव, अशुद्धस्वप्नाव, और उपचरितस्वप्नाव, ये (१०) इव्यके विशेषस्वप्नाव है.

अनंतधर्मात्कवस्तु प्रमाणका विषय है. प्रसक्त और परोक्ष-ये (३) प्रमाण है. वस्तुके एक एक धर्मपर सप्तजंग रचना जानने योग्य है. स्याद्वाद न्यायसें जिसवस्तुकी परिक्षा कियी जाय और

सही सही उत्तरे वह सत्य है.—स्यादस्ति, स्यान्नास्ति, स्यादस्तिनास्ति, स्यादवक्तव्य, स्यादस्ति अवक्तव्य, स्यान्नास्तिअवक्तव्य, स्यादस्तिनास्तिअवक्तव्य. यह स्याद्वाद न्यायकी मुख्यवातें हैं. दुनियामें सच्ची वस्तु उत्पात व्यय और ध्रौव्यगुणसँ युक्त है. द्रव्यकी अपेक्षा नित्य है, पर्यायकी अपेक्षा अनित्य है. स्वरूपकरके अस्ति हैं पररूप करके नास्ति है. पररूप करके अस्ति नहीं और स्वरूप करके नास्ति नहीं.

पृथ्वी थिर है फिरती नहीं. थाली के आकार गोल है मोड़कके आकार नहीं. जंबुद्वीपसँ घेरे हुवे असंख्य समुद्र और असंख्यद्वीप है. मनुष्यलोक ठीक बीचमें है स्वर्गलोक उपर और नरकावास मनुष्यलोकके नीचे है. जगत अनेकांत है, निसानिस एकानेक जेदाज्ञेद वगेरा धर्मकरके युक्त है. अगर एकांत नित्य—एक—और जेद—ही होतो पुन्यपाप सुखडख बंधमोक्ष वर्गसका अभाव होना चाहिये. जीवसंख्या अनंत है, हर वस्तुके—नाम—मूर्ति—द्रव्य—और भाव—ये (४) निक्षेपे होतेहै, जिस वस्तुके ये [४] नहीं वह अवस्तु है. ज्ञान दर्शन चारित्रधारा मोक्ष मार्गका साधन किया जाता है. वह मार्ग [३] प्रकारसँ—एक मनिमार्ग—दूसरा गृहस्थमार्ग—मुनिमार्गमें प्राणानिपात मृषावाद, अदत्तादान मैथुन और परिग्रह (धन)का त्याग रखना चाहिये. गृहस्थमार्गमें स्थूल प्राणानिपात विरमणव्रत आदि (१२) व्रत पालन करने चाहिये. (१२) अज्ञक्ष्य (३२) अनंतकाय वस्तु न खाना और (१२) जावना खयालमें लाना उचितकृत्य है. तीर्थ(२) प्रकारके

है एक स्थावर दूसरा जंगम. स्थावर तोर्थ वो है जहाँ तीर्थंकरोंके कल्याणक हुवे है. जंगमतीर्थ खुद मुनिजन है. दान शील तप और ज्ञाव ये (४) धर्मके पर्याय है ज्ञाव इनमें प्रधान है क्योंकि-ज्ञाव बिदून दान शील तप कार्यकारी नहीं. आर्त्त रौद्रध्यान आत्माकों पापमें लपेटनेवाले हैं. धर्म शुक्लध्यान आत्माकों मुक्तिदेनेवाले है. काल-स्वभाव-नियति-कर्म-और उद्यम-ये ५) समवाय मुक्ति होनेमें संबंध रखते है. अर्थात् जब ज्ञव्य जीवका भव्यत्वस्थितिपरिपार्क होगा और ज्ञानिदृष्ट ज्ञावके अनुसार जब उद्यमद्वारा ज्ञानावरण आदि आठ कर्म क्षय किये जायेंगे तब जीवकी मुक्ति होगी. जिसको मुक्तिकी परवाह है वह प्रथम ज्ञान-द्वारा मनकों खोटे कर्मोंसे रोके. इति धर्मोपदेशः—

बहुधा महावीरका विहार चंपा राजग्रही पृष्ठचंपा विशाली मिथिला अयोध्या कौशांबा नडिका आलंबिका कुणाला आदिनगरी उत्तर पूर्वप्रदेश तर्फ हुवा कच्ची हिमालयसे उत्तरको-कच्ची नेपालकी तराईमें-कच्ची जमना गंगाके चौफेरकों-और कच्ची मध्यदेश और दखनकोभी फिरे है.—(१२) वर्ष तप के और (२०) वर्ष ज्ञानके कुल (४२) मुनिअवस्थामें रहे. बयाली चौमासेकी गिनती. (१) चौमासा मौराकेसंनिवेश और अस्थिकं ग्रामकी निश्राय किया, चंपा और पृष्ठचंपाको निश्राय (२) चौमासें किये. विशाला और वाणजयग्रामको निश्राय (३) राजग्रही औरनाल्लिंद शाखापुरके निश्राय (४) मिथिलानगरीमें (६)-भडिकामें (१)-आलंबिकामें (१)-सांवथीमें (१)-वज्रभूमि अनार्यदेशमें

* राजग्रहीके उत्तरमें नाल्लिंद एक शाखानगर छोटा पुरा संमन्विये.

(१) और ठेकमका पावापुरीमें [१] चौमासा -

१४-भारद्वाजग्रामसें चलकर गौतमबुध कोशलदेशमें वेरंज ग्राम गये. वहां वारहमा चौमासा किया. वेरंजसें चलकर दखन देशमें मंतलनक लंबो सफर कियी. मंतलसें लोटकर कोशलदेश में बनारस आये. बनारससें विशाला होने सावथ्यो गये. यहां राहुल पुत्रकों महाकुलनामासूत्र रचकर सुनाया. जबकी-राहुल (१७) वर्षका होचूका था, सावथ्योंसें चालियाग्राम गये. तेरहमा चौमासा यहां किया. चौमासेके बाद फिर सावथ्यो गये. सावथ्योके जेतून विहारमें चौदहमा चौमासा किया. पनराहमा चौमासा सावथ्योके पास न्यग्रोधगृहमें किया. शुद्धोदनकी गद्दीपर जडक और जडककी गद्दीपर जो महानामका राजा हुवाथा उसकों यहां उपदेश किया न्यग्रोधगृहमें चलकर सोलहमा चौमासा अलवीग्राममें किया यहां एक राक्षसकों प्रतिबोध दिया. सतराहमा चौमासा राजग्रहीमें किया यहां एक श्रीमतीवेश्याकों प्रतिबोध दिया. राजग्रहीसें सावथ्यो-सावथ्योसें अलवीग्राम-अलवीसें चालियाग्राम आनकर अठारमा चौमासा किया. चालियासें राजग्रहो गये. उन्नीसमा चौमासा वेल्वनविहारमें किया. वेल्वनविहारसें मगध देशकी मुसाफरी कियी. रस्तेमें एक हिरन (जो फसा हुवाथा) गोमाया, उर एक वृक्षके नीचे ध्यानकेलिये बैठे. यहां एक शख्सकों दोहा दियी. विसमा चौमासा सावथ्योमें किया. सावथ्योसें चालियाग्राम गये, वहां वनमें एक चौरकों प्रतिबोध दिया जिमका नाम ऐंगुलीमाल था. इसकेबाद चौमासेकी ठीक ठीक हकीकत नही मिलती.

इनदिनोमें देवदत्तके साथ गौतमबुधका तकरार हुवा जोकि -चाचेका वेटा था. रुसकर देवदत्त राजग्रही गया, श्रेणिकके बेटे अजातशत्रु (कौणिक) के दिये हुवे मकानमें ठहरा. थोमे रौ-जके बाद गौतमबुधभो राजग्रही गये. देवदत्तने क्रियाउध्दार कर-नेकी आज्ञा मागी परंतु गौतमबुधने आज्ञा न दियी जिससे दे-वदत्तने नयामत निकाला. बौधपीठकोंमें लिखा है देवदत्तने अ-जातशत्रुकों कहकर श्रेणिककों मरवा माला. क्यौंकी इसमें देव दत्तकों लाभ होनेका संभव बताते है. इसवखत गौतमबुधकों दीक्षा लिये (३७) वर्ष होचूके थे. देवदत्त नयामत निकालनेकी को-शीशमें था तब निम्नलिखित (४) कायदे गौतमबुधसें स्वीकार कराना चाहता था.

(१) साधुवोंकों शहर छोडकर बनमें रहना.

(२)-गृहस्थके उत्तरे हुवे वस्त्र लेना.

(३) भेजा हुवा आहार नही लेना. आमंत्रण करे उसके घ-रनी नही जाना किंतु गोचरीकरके आहार लाना.

(४)-मांस नह्ण बंध करना.

गौतमबुधने उत्तर दिया कि-इस बातसें मैं नाखुशनी नही और खुशनी नही. एक सरखे कायदे बाल वृद्ध और ग्लानपर मैं जारी नही कर शकता हु. साधुवोंके रहनेकों शहर और बन दौनों ठीक है. कपर्णोंके विषयमें जैसा मिले वैसें करना. आहा-रके लिये जहां जैसा योग हो वेसा लेना. मांसकेवारेमें जिसदेश में जैसा मिले वैसा खाना परंतु लोलुपतासें मांस नही खाना. मांसके त्यागनेसें वा अंगीकार करनेसें मुक्ति होती बंद नही हो

शक्ती. अंगर एक सरखे कायदे सन्धीपर चलाये जाय तो मुक्तिका रस्तावद कियो ठहरे. मेरा अजिप्राय यह हैकि-सन्धीको मुक्ति प्राप्त हो. देवदत्तने नयामत निकाला अजातशत्रुने उसको सहारा दिया परंतु देवदत्त वहीत काल जिया नही जिससे उसका मत अधिक न चला. अजातशत्रुने सावथीपर अपना कंबजा कियो और कपिलवस्तुका नाश कियो यह सब वर्नेन वोध मतके महा परिनिर्वाण सूत्रमें है.

एकीसमें चौमासेसे लगाकर तेयालीसमें चौमासेतक गौतम-बुधकी दिनचर्या यथार्थ नही मिलती. चौआलीसमा चौमासा सावथीके पास जेतवनविहारमें कियो. जेतवनविहारसे बलचर टेकरी-बलचरटेकरीसे पाटलीपुत्र-पाटलीपुत्रसे अंबपाली-और अंबपालीसे बेलूग्राम आनकर पैतालिसमा चौमासा कियो. यहां गौतमबुध विमार हुवे.

सारी जौदगी गौतमबुध ग्रामानुग्राम विहार करते रहे. विहार-अवध-ममालिक-मंगरवी-और शीमालीके जिलोंमें विशेष उपदेश दिया. (३०) वर्ष दुनियादारीमें रहे. (५)-(६) वर्ष तप कियो. (४४) वर्षसेकुच्छ अधिक उनियाको अपने महजबकी शिक्षा दीयी, [गौतमबुधकी धर्मशिक्षा निम्न लिखित थी,]

जो शरुश धर्म और शिक्षापर पावद है हिम्मत नही हारता वही जौदगीके समुहको पारकरके दुखसे छूटकारा पावेगा. यह उनिया जजीरोसे सख्त जकमी है. सब चीजे क्षणविनाशी है मेरी शिक्षा क्षणविनाशी नही. मेरी शिक्षापर ध्यान दो. जो शरुश जैसा बोताहै वैसाफल पाता है. शरीरको तकलीफ दिये

विद्वान् मुक्ति नहीं. जो मनुष सुकृत्योसैं अपने आत्माकों वश करेगा उसकी मुक्ति है. जिसका संयोग है उसका वियोग है. खुद आत्मान्नी क्षणविनाशी है. एकीला ज्ञान ही कृपासंततीके साथ वासनारूप सहचारी है. स्कंध [तत्व] पांच है. विज्ञान-वेदना-संज्ञा-संस्कार-और रूप, जो बुधधर्मके आचार क्रियामें लीन रहेगा उसका ज्ञान निर्मल होगा. इसीका नाम मुक्ति है श्रमण माहण जो जो उपदेश देते है इस पांचस्कंधसैं अलग नहीं. ज्ञान पांच है. १. मैत्री-२, मुदित-३, करुणा-४, अशुभ, -और ५, उत्पेक्षा, आयतन [१२] है, १, स्पर्शन-२, रसन-३, घ्राण-४, चक्षु-५. श्रौत्र-६, स्पर्श-७, रस-८, गंध-९, रूप-१०, शब्द ११, मनः-और १२, धर्मायतन. इनके शिवाय जाति जरा मरण जब उपादान तृष्णा षड् आयतन नाम रूप विज्ञान संस्कार और अत्रिधा यहजी आयतन है यह सर्ववस्तु क्षणिक है. प्रत्यक्ष और अनुमान यह [१] प्रमाण है. धर्म-बुध-और संघ-ये [३] रत्न है. प्रथम समय हेतु [कारण] और दूसरे समय उसका फल होता है. इत्यादि धर्मशिक्षा देते थे. अपने शिष्योंको ताकीद कियी कि-सबकों उपदेश देकर अपने महजबमें लाओ. इति धर्मशिक्षाः—

२५-महावीरके उपदेशकों निम्न लिखित राजोने सुना और माना. मगधदेशका मालक श्रेणिक (बिम्बिसार)-अजातशत्रु [कौणिक]-विशालीका मालक चेटक-काशीकोशलदेशके मल्लिजातिके (ए) और लंबीयजातिके (ए) कुल अठारह राजे-आमलकल्पाका राजा श्वेत-वीतनयपत्तनका राजा उदयन-कौशांबीका

वत्स उदयन-कृत्रियकुंभका राजा नंदीवर्धन-उज्जयिनीका चंम-
प्रद्योत-पृष्ठचंपाके राजे शाल और महाशाल-पोतनपुरका प्रसेनचंद्र
-हस्तिशीर्षका अदीनशत्रु-विजयपुरका वासवदत्त-महापुरका वल
और साकेतपुरका मित्रनंदी वगेरा, श्रेणिकके बेटे अन्नयकुमार
और मेघकुमारने महावीरके पास दीक्षा लीयी. अन्नयकुमार
नंदारानीका बेटा था मेघकुमार धारणीका और अजातशत्रु [को-
णिक] चेलणा रानीका बेटा था. तीनों रानी बनी थी. और
महावीरके उपदेशकों स्वीकार रखती थी. अजातशत्रु श्रेणिकके
पूर्वजन्मका वैरी था. अपने पिताकों कैद रखा और पिबली अ-
वस्थामें श्रेणिक कैदहीमें परलोक हुवे. वैरानुबंधकर्म जब खतम
हुवा अजातशत्रुने बहोत पश्चात्ताप किया. कितनेकरोज पिताके
नाम ही नाम लेते गुजारे. अखोरमें राजग्रही ठोरकर चंपामें
रहना शुरू किया, आणंद कामदेव वगेरा (१०) श्रावक महावीरके
अवल नंबरके श्रमणोपासक थे. उपासक दशांगसूत्रमें इनका
बयान है.

३६-गौतमबुके उपदेशसँ श्रेणिक [विम्भसार]-अजातशत्रु-
शुचोदन-जङ्क-और महा वगेरा राजे बुधमतके पाबंद हुवे.
श्रेणिक और अजातशत्रुकों बौध और जैन दोनोंमें पाबंद लिखा
देखकर अनुमान होताहै किये दोनों पहले स्यात् बौध होंगे.
पिछेसँ जैन हुवे. क्योंकि-श्रेणिकचरितमे लिखाहैकि-महावीरकी
धर्मदेशना सुनकर श्रेणिक जैनमतानुयायी हुवा. यतः

[अनुष्टुप् वृत्तम्.]

श्रुत्वा तां धर्मदेशनां जत्तुः-सम्यक्तं श्रेणिकोश्रयत्
श्रावकधर्मं त्वन्नय कुमाराद्याः प्रपेदिरे [३७५].

जैनागममे यहज्ञो लेख है कि—चिल्लणारानी और श्रेणिकका धर्मविषयक वादानुवाद होता था, सबवकि-चिल्लणा प्रथम हीसैं जैनधर्मावलंविनी थी.

३७-महावीरके शिष्योमें इंद्रभूति (गौतम) आदि. (११) जो गणधर कहाते थे बडे माने जाते थे.

३८-गौतमबुधके शिष्योमें मौद्गलायन शौरीपुत्र और आणंद बडे थे.

३९-महावीरने ठेकमका चोमासा पावाधुरीमें किया. आपने ज्ञानसैं जाना कि. मेरा आयुष्य कार्तिकवदी ०)) के रौज पिठलीरात जब चंद्रमा स्वातिनक्षत्रमें आयगा पूर्ण होगा. जब वह समय आया तब पावापुरीमें काशीकोशल देशके मल्लीय और लच्छीयजातके (३८) राजे-साधु साध्वी श्रावक श्राविका आदि चतुर्विधसंघ इकठा हुवा. महावीरने उन्होंकों धर्मोपदेश दिया. ज्ञानावरण आदि (८) कर्मोंका स्वरूप आत्माका, स्वरूप संसारका और मुक्तिका स्वरूप दो दिनतक वर्नन किया.

पुरुष वा स्त्री कोइ हो जो श्रध्दापूर्वक ज्ञानद्वारा निस्पृह होकर तपकरेगा उसकी मुक्ति है. [३] वर्ष [८॥] महिने बाद पांचमा आरा लगेगा. उसवरुतसैं दिनपर दिन उत्तम वस्तुकी न्युनता होती जायगी. वैसातप नही बन शकेगा जिससैं मुक्ति हो. भारतवर्षके सिवाय महाविदेह आदि अन्य जो क्षेत्रहै वहांके मनुष्योंकी वैसाताप करनेकी शक्ति बनी रहेगी जिससैं उनकी मुक्ति होनी शरु रहेगी. चाहे राजा या रंक हो जो पापसैं बचेगा अच्छीगति पायगा. इस संसारमें अनंते जीव है, जो जीव मनुष्यग-

तिमें आनकरके ज्ञी अपने आत्माको नहीं चीनता वह बहोत दिलगिरि उठायगा. मनुष्यजन्म पाना बहोत पुन्यके उदय विडन नहीं बनता. जबतक रागद्वेष [जो कर्मोका बीज है] न ठोमाजाय तबकक मुक्ति नहीं होती. महावीरने कोइ शिष्यपर मोहबत नहीं कियी. न किसीवातकी ताकीद या जलामण कियी. न अपना मत चलानेको किसीसे प्रेरणा कियी. सच्चैहिनिरोगीको राग कहाँ ! जब वे अपने शरीरपरज्नी राग नहीं करते थे तो अन्म बीजकी वात ही क्या ? निदान ! निस्पृहतासे उपदेश देते समाधिमें पदमासन बैठे निर्वाण हुवे. जीवन मरणसे रहित हुवे. अरुपी आत्मा स्वर्गसे अगामी लोकांतमें जायकर स्वस्वरूपमें स्थित हुवा जैसे तुंबीपर बहोतसे मीटीकेलेप लगाकर जलमें गरदो और लेंप दूर होनेपर वह जलपर आजाती हैं मुक्तात्माज्नी तद्यत् कर्म लेंपसेरहित होनेपर लाकके उपर अजातेहै. महावीरके शरीरका अग्निसंस्कार किये बाद उनकी माठे पूजतेकेलिये इंद्र स्वर्गमें लेगये. मनुष्य उनके शरीरकी जस्म लेगये. महावीरके तिर्वाण होनेपर कितनेक मुनियोने सब व्यवहार ठोरकर विल्कुल ध्यान समाधि लगादियी. महावीर जब निर्वाण हुवे तब उनके शरीरकी इंद्रादि देवाने और मनुष्योने आरात्रिका (आरती) कियी. दीपकका उद्योत किया इस सबवसे दीपमाला (दीवाली) पर्व हिंडुस्तानमें शुरूवा. पहले नहीं था. कार्तिकशुक्र [१] के रौज इंद्रभूति (गौतम) गणधरको केवल ज्ञान पैदा हुवा.

३७-विमार हुवे पिठे गौतमबुधने वेळुग्राममें अपने शिष्योंको शकडे किये और बोध दिया कि-सजीको सुख हो इसप्रकार

तुम वर्तना. मेरा आयुष्य अब (३) महिना बाकी रहा है अतः करणका स्वच्छ रखना और ज्ञानकी रक्षा करनी यही सार है. इसप्रकार जो वर्तना सुखी रहेगा. इत्यादि बोधकर पावापुरी गये. वहाँ एक *सोनीने उनकी परोणागत कियी और हुकरका मांस और चावलका जौजन जिमाया. (३) प्रहर रहकर पावापुरीसे बनारस होते कुसीनार जानेको रवाना हुवे. कुसीनार बनारससे (१००) मील और कपिल वस्तुसे (८०) मील दूर था. कुसीनार पहुचनेपर उनको बिमारी बढ गयी. तृषाने अधिक जोर दिया तब आणंद शिष्यकेपास पानी मंगाकर पिया और कहा कि-चंदसोनीसे जब तेरा मिलना हो तब कहना कि-हे चंद ! मेरी सेवाका लाज तुजे अगले जन्ममें मिलेगा. काल होते पहले गौतमबुधने आणंद शिष्यको कितनाक बोध दिया. जब आणंद रुदन करने लगा गौतमबुधने उसे पास बुलाकर दिलासा दिया. और कहा कि-डनियां ब्रुठी है तुजे जी निर्वाण मिलेगा. जिसका संयोग है उसका वियोग है इस लिये हिम्मत रख इतना कह कर दूसरे शिष्योतर्फ दृष्टि दियी. आणंदकी बाबतमें कितनाक कहना था सो कहा. इस वखत कृष्णनगरका सुज्जविघ्न गौतमबुधसे प्रश्न पूठने आया. आणंदने उसको नीतर आनेकी मना कियी. गौतमबुधने कहा आनेदो. सुज्ज नीतर आया और प्रश्नकिया कि-(६) ब्राह्मण जो कुछ कहते है सच है ? वा फूठ ?-गौतमबुधने कहा ऐसी चर्चाका इस समय अवसर नही. मैं तुजको अपना मत कहता हू सुन ले !-जिसमें पवित्रताके [८]

रस्ते नहीं है वह मत ठीक जानना. इस वचनको सुनकर मुजुध बोधको प्राप्त हुआ. गौतमबुधने अपने शिष्योंको उपदेश दिया कि-जो मेरे कायदे है खुद में ही हूँ ऐसा जानना, जिस बातका शंसय हो फिर पूछ लो. पांच स्कंध मैंने तुमको कहे हैं वही ठीक है. श्रमण माहण वगैरा जो कुछ तुमको बोध करेगें इन्ही स्कंधोंके नीतर आजायगा. तुम अपने अच्छे रस्तेको ठोमना नहीं. ऐसे कहते कहते बेहोश हुवे और काल किया.

४१-महावीरके पहले और उनके रावरे निम्नलिखितदेश नगरमें जैनधर्म चलता था. १ मगधदेश राजग्रहनगर, २-अंगदेश चंपानगरी, ३-वंगदेश ताम्र लिप्तीनगरी, ४-कालिंगदेश कांचनपुरनगर, ५-कोशलदेश साकेतपुर. (अयोध्या)-६-कुरुदेश गजपुर (हस्तिनापुर)-७-कुशावर्तदेश शौरीपुर, ८-पांचालदेश कांपिल्यपुर, ९-जंगलदेश अहिच्छता नगरी, १०-सौराष्ट्रदेश द्वारिका नगरी, ११-विदेहदेश मिथिला, १२-वत्सदेश कौशांबी, १३-शांमिल्यदेश नंदीपुर, १४-मलयदेश जटिलपुर, १५-मत्स्यदेश वैराटनगर, १६-वरुणदेश अज्जापुरी, १७-दशार्णदेश मृत्तिकावती नगरी, १८-चेदिदेश शौक्तिकावती नगरी, १९-सिंधुसौवीरदेश वीतजयपत्तन नगर, २०-सुरसेनदेश मथुरा नगरी, २१-कुणालदेश सावथीनगरी, २२-लाटदेश कोटीवर्षनगर २३ अवंतिदेश उज्जयिनी नगरी, २४महाराष्ट्र, २५-कौंकण, २६-मरुस्थल, और २७-मेदपाट वगैरा देशोंमें-बाद महावीरकेपिठे नेपालमें जैनधर्म चलता था. जैनाचार्य जइवाहुस्वामी नेपालमें बहोतदफे फिरे जोकि-महावीरके पिठे (१४८) वर्षबादहुवेहै, महावीर चौइसमें ती-

र्थकर थे इनके पहले रिषन्नदेव आदि तेइस तोर्थकर होचूके है. रिषन्नदेवके वखत बहलीदेशमें तरुतशीलानगरी जिसकों वर्त्तमानमें कावलगज्जानी कहते है जैनधर्म चलता था, मगधाधिप श्रेणिकके मरनेबाद गटीनसीन कौणिक हुवा. कौणिकका पुत्र उदायी, इसकी राजधानी पटणा थी ये तीनों जैन थे. उदायीके पट्टपर नवनन्द हुवे. इनकी राजधानी पटणा रहा. ये जैनी नही थे. नवमें नन्दके पट्टपर चंद्रगुप्त-मंत्री चाणाक्य ये दोनों जैन थे. चंद्रगुप्तका बेटा बिंडसार-इसकी राजधानी उज्जयिनी हुयी. बिंडसार जैन था. इसका बेटा अशोकश्री हुवा इसने बौधमत स्वीकार किया. इसके पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमोताने बौधमतका योग धारा. अशोकश्रीने बौधमतको फैलानेमें अधिक जोर दिया. दिल्ली और प्रयागके शिलास्थंनोंमें जो पाली हफोंके लेख देखते है इसीके लिखवाये हुवे है. अशोकश्रीका बेटा कुणाल और कुणालका बेटा संभति हुवा आर्यसुहस्ती जैनाचार्यके उपदेशसे इसने जैनमत स्वीकार किया. द्वाविम-अंध-कर्णाटक-गज्जानी-और खु-रासाण वगेरा देशमें जहां जहां अपना राज्य था जैनमत बढाया. बहोत जैनमंदिर बनवाये जो कि-शत्रुंजय गिरनार आदि तिर्थोंमें अब मौजूद है. दानशाला औषधालय वगेरा धर्मस्थान बनवाये. महावीरके पीढे तीसरे संकमेमें यह हुवा.

महावीरके निर्वाणपीढे (१३) वर्षबाद इंड्रभूति (गौतम) गणधर-(३०) वर्ष बाद सुधर्माणधर और (६४) वर्ष बाद जंबू-स्वामी निर्वाण हुवे. जंबूस्वामीके पीढे केवलज्ञान होना व्यंवेत्तिन्न हुवा. प्रज्ञवाचार्य-शय्यंजव यशोन्नद-संभूतिविजय-नदवाहु-और

स्थलजज्ञ-ये (६) श्रुतकेवली याने चौदहपूर्वके ज्ञानी हुवे. वज्र, स्वामीतक दशपूर्वका ज्ञान रहा. आर्थरद्वियमूरि साठे नव पूर्व-पाठी थे. इन्होंने मनुष्योंकी प्रज्ञाहानी होती देखकर जैनसूत्रके (४) *अनुयोग अलग अलग गुंये. महावीरके पीठे (११००) वर्ष बाद देवर्द्धिगणिकुमाश्रमण आचार्यने +वल्हन्नोनगरीमें जैनपुस्तक लिखे. इसके पहले बुनि कठाग्र ज्ञान रखतेथे. देवर्द्धिगणिकुमाश्रमण एकपूर्वधारी थे. चौदहपूर्वज्ञानके आगे एकपूर्व इतना समझीये जैसे समुद्रके आगे बिंदु.

३३-गौतमबुध जहां जहां विचरते रहे उनके बखतमे वहां पर वौधधर्म चलता था. महावनसूत्रमें लिखाहैकि-गौतमबुधके निर्वाण हुवे पीठे (३३०) वर्षबाद तीनपीठका लिखी गयी. संवत् (३६१) में काश्मिरका मेघवाहनराजा वौधमत पालता था. चीनमेंची इसी अरसेमें इसका फेलाव हुवा. संवत् (४५७) में चीनके राजेचो वौधमत मानने लगे. कोरियाटापुमें संवत् (४११) में वौधमत मानना शुरु हुवा. संवत् (४८७) में वौधाचार्य बुधघोषने धम्मपादसूत्रकी टीका शीजोन (लंका) में बनायी. संवत् (५०७) में बर्मादेशमें-संवत् (६०१) में जापानमें और संवत् (६१५) में स्यामदेशमें वौधमत चलना शुरु हुवा. जापानमें पहले यह मत चलता था. कि-स्वप्नावकी शक्तिसें सब बनाव बनता है संवत्

* ग्याह अंग चरण करणानुयोग-उत्तराध्ययन आदि धर्मकथानुयोग-सूर्यप्रज्ञति चंद्रप्रज्ञप्तिआदि गणितानुयोग-आर संपूण दृष्टिवाद द्रव्यानुयोग है महा कल्प-निशीय महानिशीयआदि (६) छेदसूत्र चरण करण के अर्थ ही से संबंध रखते है इसलिये चरणकरणानुयोग है

× जिला काठियावाड सौराष्ट्रमें है.

(१३५७) में काबल और काश्मिरके पास लडाकमेंसे मुसलमानोंने बौधमत निकाल दिया जोकि थोमे वख्त पहले शुरु हुआ था. जापानमें संवत् (१३१९) में एक सीनराम नामके बौधमुनिने नयापंथ निकाला और यह कायदा जारी कियाकि-मुनियोंको भी कन्याविवाहनी चाहिये. आजतक जापानमें वही रीति चलतो है जावा टापुमें बौधमत कबसे चला इसका पता नही मिलता परंतु यह निश्चय होचुका है कि संवत् (१३५७) में यहांका राजा बौध था. संवत् (४५७) में चीना मुसाफर फाहियान हिंडुस्थानमें आया उसने अपनो किताबमें लिखा है जब मैं मगधदेशमें गया मुजे बौधमतके साधु मिले. ब्राह्मणोंके और हिंदुओंके देरासर (मंदिर) बहोत देखे. संवत् (४६७) में फाहियान शीलोन गया. शिलोनके वर्ननमें लिखता है यहांके लोग बतलाते है कि गौतमबुध यहां आये थे. हवांक्तसांग चीना मुसाफर संवत् (५०५) में हिंडुस्थान आया. उसने लिखा है गंगा जमनाके चौफेर मुलकमें ब्राह्मण और बौध धर्म ज्यादा था. राजग्रहीके नालंद पारुमें कितनेक विद्वानोंसे मेरो वाते हुयी. काश्मिरमें (५०७) मठ और अंदाज (५०००) हजार बौधसाधु रहते देखें. कंदहारमें बौधमत अधिक था. काश्मिरकों जब मुसलमानोंने जीत लिया था हिंडुस्थानमें बौधमत वहांतकम होगयाथा.

३३-जैन आगम द्वादशांगवानोंके कितनेक पुस्तकोंके नाम.

१ आचारांग, २ सूत्रकृतांग, ३ स्थानांग, ४ समवायांग, ५ जगवती, ६ ज्ञाताधर्मकया, ७ उपासकदशांग, ८ अंतकृत, ९ अनुत्तरोपपातिका, १० प्रश्नव्याकरण, ११ विपाक, और १२

दृष्टिवाद. इन बारह अंग सूत्रोंके उपांग नोचे मुजब. १ उपपा-
तिक, २ राजप्रश्नीय, ३ जीवाभिगम, ४ प्रज्ञापना, ५ जंबूद्वीप-
प्रज्ञप्ति, ६ चंद्रप्रज्ञप्ति, ७ सूर्यप्रज्ञप्ति, ८ *निरयावली, ९ कल्पा
वतंसिका, १० पुष्पिका, ११ पुष्पचूलिका, और १२ बन्धि-
दशा. (१०) प्रकोर्णकसूत्रके नाम, १ चतुःशरण, २ आयुःप्रत्या-
ख्यान, ३ ज्ञक्त परिज्ञा, ४ महाप्रत्याख्यान, ५ तंदुलवैतालिक-
क, ६ चंद्रवेध्यक, ७ गणितविद्या, ८ मरणममाधि, ९ संस्ता
रकप्रकोर्णक, कितनेक देवेंद्रस्तवज्ञी गिनते है, १० गच्छाचार,
(६) वेदसूत्रके नाम, १ निशीथ, २ वृहत्कल्प, ३ व्यवहार, ४
पंचकल्प, ५ दशाश्रुतस्कंध, और ६ महानिशीथ.-(४) मूलसूत्रके
नाम, १ आवश्यक, २ दशवैकालिक, ३ पिंमनिर्युक्ति, कित-
नेक औधनिर्युक्तिज्ञी गिनते है. और ४-उत्तराध्ययन.

चूलकासूत्र [१]-१-नंदीसूत्र, २-और अनुयोगघार.
नंदीसूत्रमें [८४] आगम और (१४०००) हजार प्रकी-
र्णक सूत्रके नाम है जिनमेंसें कितनेक मौजूद है कितनेक
व्यवच्छिन्न हो गये. महावीरसे लेकर आजतक जितने पूर्वाचार्य
हुवे उन्होने जितने द्वादशांगवानीके आधारसें शास्त्र रचे उनमें
सें कितने व्यवच्छिन्न होगये ? इसका निर्णय होना मुसीबत है.
(१४०००) हजार हस्त लिखित जैन पुस्तक मोक्तर बुद्धर और
पीटरसन वगेरा हिंडुस्थानसें मॉल देकर ले गये जो अब जर्म-
नीदेशमें † मौजूद है. महावीरने केवलज्ञानके बलसे अर्थरूपवानी

* कल्पिका सूत्रभी गिनते है

† वसुदेवार्हिक (प्रथमानुयोग)-अंगविद्या-द्वीपसागर प्रज्ञप्ति-सिद्धप्राभृत-
ज्योतिषकरंडक-आर अष्टाग निमित्तआदि.

कही और उनके ग्यारह गणधरोने जो सूत्ररूप गूथन कियी उनमेसें सुधर्मागणधरकी गूथी हुयी वानीका सब फेलाव है [ए] गणधर महावीरके रोंबरु निर्वाण हुवे, इंद्रभूति (गौतम) और सुधर्मा ये दो गणधर पिठें निर्वाण हुवे. निदान ! महावीरकी गद्दीनसीन सुधर्मा गणधर थे. महावीर चौइसमें तीर्थकर थे इनके पहले रिषन्नदेव, अजोतनाथ, संजवनाथ, अजिनंदन, सुमतिनाथ. पद्मप्रज्ञ, सुपार्श्व, चंद्रप्रज्ञ, सुविधि, शीतल, श्रेयांस वासुपूज्य, विमल, अनंत, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुथुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिमुत्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, -ये (३३) तीर्थकर होचूके है. सब तीर्थकर अपने केवलज्ञानसें डनियाका और मुक्तिका जैसा स्वरूप जानते है कथन करते है. किसीके कथनमें फर्क नही आता सबब कि सब पूर्णज्ञानी होते है. निदान ! महावीरने नयामन नही चलाया किंतु तेइस तीर्थकरोंसें चलते आयेकों सहारा दिया.

३४-बौध आगम पीठिकासूत्रके कितनेक पुस्तकोके नाम.
 १-विनयपीठिकासूत्र, २-महावग्गसूत्र, ३-रुलवग्गसूत्र, ४-परिवारपाठसूत्र, ५-दिग्गनिकायसूत्र, ६-परिनिव्वाणसूत्र, ७-*मध्यमनिकायसूत्र, ८-सूत्रनिपात, ९-विमानवथ्थुसूत्र, १०-पेयवथ्थु, ११-थिरगाथा, १२-जातक, (इसमें ५५० कथा है)- १३-निदीशपीठिका. [शौरीपुत्रकृत] १४-पाटीसंविदा, १५-अपादान, १६-बुद्धव्यास, १७-क्रियापीठिका, १८-धर्मसंग्रहिणी, १९-कथावथ्थु, २०-पठाणसूत्र, [इसमें जीवका स्वरूप वर्नन है. -३३

शृगालवाद, [इसमें गौतमबुधके साथ शृगाल पुरुषका सवाल जवाब है.] वगेरा.

लंमनशहर निवासी डेविडज्वारीष्टर कहता है सन्नी बौधमत के पुस्तकोमें (१७५२००) शब्द है.

३५-जैनमें सम्प्रतितर्क, प्रमाण मीमांसा, नयचक्र, प्रमाणोक्ति समुच्चय, प्रमेयत्रमात्तंम, तत्त्वार्थ, अनेकांतजयपताका, स्याघादरत्नाकरावतारिका, स्याघादमंजरी, स्याघादकलिका, और धर्मसंग्रहिणी. वगेरा तर्क ग्रंथ है. बौधमें तर्क ज्ञापा, हेतुविंड, न्यायविंड, अर्वाट, कर्मलशैत, न्यायप्रवेश, और ज्ञानपार, वगेरा तर्क ग्रंथ है. जैनमुनि विशेषकरके श्रमण वा निर्ग्रंथ लिखे जाते हैं बौधमुनि श्रमण वा बोधिसत्व लिखे जाते हैं, जैनमुनि श्वेतवस्त्र और बौधमुनि रक्तवस्त्र पहनेते हैं.

बौधमें (७) तीर्थंकर मानते हैं उनके नाम.

विपश्यी, शिखी, विश्वभू, ककुब्द, कांचन, काश्यप, और सातमा शाक्यमिंह. जैनमें इंड्रभूति, (गौतम) सुधर्मा, जंबू, भद्र बाहु स्थूलजघ, वज्रर्षि, सिद्धसेनदिवाकर, देवर्द्धिगणिह्ममाश्रमण और हरिजघमूरि वगेरा मुनियोंको गुरु मानते हैं. बौधमें गौतमबुध, सर्वार्थसिद्ध, मौद्गलायन, शौरीपुत्र देवदत्त और आणंद वगेराको गुरु मानते हैं. जैनमें दिगंबर और ढंढिया जैन कहलाते हैं परंतु जैनकेकायदेसें विपरोत चलते हैं जैसें जैनमें मुनियोंको श्वेतवस्त्र पहनना लिखा है दिगंबर कहते हैं नहीं ! मुनियोंको नग्नही रहना कहा है. स्त्रीको अगर पंचमहाव्रतपाले तो उसीजन्ममें मोक्ष हो ऐसा जैनागममें कहा है दिगंबर कहवे

है चाहे स्त्री कितना जो ब्रत पाले तोभी उसजन्ममें उसकी मोक्ष नही हो. निदान ! जैनकी असली कौम जो श्वेतांबर प्रसिद्ध है द्वादशांगवानाके पुस्तक मानते है और उसमें लिखे वमुजब चलते है दिगंबर नही चलते.

जैनमें मूर्तिपूजन करना लिखा है दुंढियेलोग कहते है मूर्ति पूजन जैनमें कहां लिखा है ? मूर्तिकों मानना और पथ्थरको मानना एकसरखा है एसा कहकर असलीकौममेंसे भेद करते है मुंडके उपर दिनरात वस्त्रकोपाटो बांध रखतें है.

बौधमें मुख्यकरके (४) भेद है वैज्ञाधिक, सौत्रांतिक, योगाचार, और मध्यम.

(यतः)—(शार्दूल विक्रीमितम्.)

अर्थो ज्ञानसमन्वितो मतिमता वैज्ञाधिकेणेष्यते,
प्रत्यक्तो नही बाह्यवस्तुविसरः सौत्रांतिकैरादृतः;
योगाचारमतानुगै रज्जिमता साकारबुद्धिः परा,
मन्यंते वत मध्यमाः कृतधियः स्वस्थां परां संविदं. १

निदान ! जैन और बौध दोनों निराले है. बौधके महावग्ग सूत्रमें लिखा है जब गौतमबुध विशाली गये थे तब वहां एक निगंधज्ञातपुत्रके उपासकको अपना मतमें किया, याने बौध मतमें लाये जोकि मल्लोय और लज्जीय जातिके अठारह राजा-उके वंशमें था. इससे कहशकते है कि गौतम बुधके समय विशालीके गिर्द जैनमत चलता था. बौध पीठिकामें लिखा है निगंधनाथपुत्र और अग्गीवेशायगौतका सुधर्मा अपने पके दुश्मन है. इससे कह शकते है कि बौधकों जैनका कुछ जय रहता था.

फिर लिखा है निगंथनाथपुत्रने पावापुरीमें काल क्रिया. गंशा-
ला [मखलीपुत्र) अन्नयकुमार और अजातशत्रु वगेराके नामभी
बौधपुस्तकोंमें बहोत जगह लिखा है किसो जगह यह नही लि-
खा कि निगंथनाथपुत्र आदि नये हुवे. इससे पाया जाता है कि
जैन नवीन नही. बौधोंमें ललितविस्तराग्रंथ बहोत पुराना मानते
है परंतु इसमें भो जैन छ्वादशांगवानी-के आचारांग सुत्रकृतांग
आदि पुराने सिद्ध होते है क्यों कि इनमें जो आर्यावंद लिखे
है [३३००] वर्षकी रचनासे पुराने है. चंद्रप्रज्ञप्ति सुर्यप्रज्ञप्ति जै-
नागम ग्रीकलोगोके हिंदुस्थानमें आये पहलेके है सबकी-ज्यो-
तिष् संबंधी जो जो हकीकत इनमें है ग्रीकलोगोके ज्योतिष् शा-
स्त्रमें नही.

कितनेका यह आशय है कि बौधोंकी पालीभाषा जैनोकी
प्राकृतभाषासे पुरानी है परंतु सोचनेकी जगह है कि-जैनआगम
जैसे अब है महावीरके निर्वाणसे [६७०] वर्ष बाद लिखे गये
उस असेमें बोली जरूर बदली होगी. शिवाय इसके जैनोके (१४)
पूर्व विवेद हो गये. बाजे आदमी कहते है बौधमतकी जड कपि-
लके सांख्यपर है, परंतु यह गलन है, सांख्य और बौधके त-
त्वोंमें जमीन आस्मानका फर्क है. हंटर साहबके कहनेपर काय
म रहे तो जैन बौधकी एक शाखा ठहरती है परंतु हकीकतमें
हंटर साहबकी समझका फर्क है. कोलब्रूक अंग्रेज गौतमबुधको
महावीरका चेला कहता है और वेवर जर्मन कहता है दोनों
अलग थे याने महावीरका चेला गौतम अलग और बुधगौतम
अलग. इसमें वेवरका कहना सच्च है. क्योंकि-गौतम तीन हुवे:

इंद्रभूति [गौतम] महावीरका चेला, बुधकीर्त्ति गौतमबुध बौध-मतका गुरु, और प्रमाण प्रमेयादि [१६] पदार्थ प्रतिपादक गौ-तम नैयायिक. ये तीनों एक दूसरेसें कुच्छ संबंध नहीं रखते. बौधपोठिकाओंमें निर्ग्रंथोंको बौधोके वादी लिखे है, इन बातोंसें कह सकते है जैन बौध एक नहीं.

३६-जैनमत बहुधा हिंडुस्थानमें ही है, कुल्ल (१०) लाख संख्यासें अधिक नहीं, जिसमें (१ लाख दिगंबर और (१)लाख के अंदाज टुंढिये है. जैनमंदिर [३६०००] हजारसें कम न होंगे. बौधमत हिंडुस्थानमें थोमा है एशियाखंडमें वगेरा अन्यसब जगह मिलाकर (५०) करोमके अंदाज मनुष्य है. बौधमंदिरोंको बौधाढक बोलते है कता वजामें गोल आकार होते है. बुधकी मूर्तिके शिरपर जटा वटीहुयी और बधीहुयी होतीहै, यज्ञोपवीतके आकार वस्त्र लिपटा हुवा-लंगोट बंधा हुवा-दाहना हाथ उपदेशरूप उंचा कियेहुवे-पद्मासन बेठी रहती है. और बुधमतके पदवीधर साधुओंको लामा और साधारण साधुओंको पुंगी ज्ञी बोलते है और रक्तांबर रखते है तिब्बतदेशमे लामाकी मूर्त्ति इसी पूव क्त प्रकारकी पूजी जाती है. जैनमुनियोंके ठहरनेकी जगहको उपाश्रय और बौधमुनियोंके ठहरनेकी जगहको मठ वा आश्रम बोलते है. बौधमें देवमंदिर प्रायःथोमे बनाये जाते है विशेषकरके गुम्बज ढत्रीयां और मठ बनानेका रिवाज ज्यादा है. इतिहासकारोंने गौतमबुधकी लाशके वारेमें लिखा है जब इस्वीसन [४७७] वर्ष पहले गौतमबुध देहांत हुवे उस समय बौधमती राजोंने चाहा कि-उनकी लाशको अपने

अपने देशमें लेजावे. और इस बातकोलिये लमनेकों जी तयार हुवे तब गौतमबुधके चेलोने उस लाशकों जलाकर थोमी थोमी हमी और राख सवकों बांटदियी. और लमनेसें रोका. निदान बौधराजाअोंने उस हमी राखकों अपने अपने इलाकेपर जमीनमें गामकर गुम्बज बना दिये. फिर उसके चेलोके मरनेपर उनकी हमी राखके उपर जी इसीतरह गुम्बज बने और उनकी पूजा करने लगे. इसी सबव बौधमें देवमंदिर बनानेका रिवाज थोमा रहा. जिलसा मानिकयाला आदि केइ जगह उक्तप्रकारके गुम्बज मौजूद है. वर्म्हा-सहल-तिब्बत-और चीनके मुल्कमें बौध लोग धातु पत्तर या मीट्टीके गुम्बज बनाकर पूजते हैं. बनारसमें बौधोंकी एक पूज्यजगह है जिसकों वहांके लोग सारनाथ की धमेख बोलते हैं इसमें उनके कोइ महापुरुषकी लाश बताते हैं. नेपालमें अबजो शिवधर्म चलता है शिव और पार्वतीका नही किंतु अबलोकितेश्वर और पैशावरके असंगनामके शरूशका चलाया हुवा बुधशिव नामका धर्म है. एशियाखंममें बौधमत अशोकके वरूत जारी हुवा, अशोकका इरादा यह ज्यादा रहता था कि-किसीप्रकार बौधमत अधिक फैले. कनिष्कराजा अनुमान इस्वीसन (४०) में हुवा. अशोकके वरूतसें बौधमत राजधर्म होगया.

३७-जैनमुनिके नियम,-कच्ची जीवकों न मारना. मारा जावे तों प्रायश्चित लेना. झूठ नही बोलना. चोरी नही करना. यहां तक कि-मालककी रजा लिये विदून कोइन्नी चीज अपने उपयोगमें नही लाना. मनः वचन और कायासें स्त्रीसेवन न करना. एक आदमी विचमें पाये विदून एकीली स्त्रीसें बात न करना. धन

दोलत न रखना. रात्रीकों कच्ची आहार या पानी खाना पीना नही. सामना कनारा न दिखाइ देवे एसे समुद्र या नदीके पार होनेको जहांजमें न चढना. सारी जाँदगी जिहामांगकर आ जीविका करना. पलंगपर न सौना. रूइदार वस्त्र न उढनें. कोइ वनास्पति जिसमें जमीकंद आदि अन्नरू बिल्कुल त्याग और जमीकंद शिवाय कच्ची वनास्पति न खाना. रंधी हुयी खाना. उ-श्च जल पीना. दशप्रकार यतिधर्म और समाचारी पालन करना. असवारीपर न चढना सदा पैरोंसें चलकर देशाटन करना. बौधमुनिके नियम इससें फर्कवाले है. जैसें जैनमुनिकों घर घर गो-चरीकरके जिह्या लेना कहा बौधमुनिकों कोइ शख्स मठमें जो-जन देजावे तो जो खा लेना. जैनमुनिकों मांस खाना मना है बौधमुनिकों मना नही. देवदत्त शिष्यने गौतमबुधसें इसरिवाजकों बंद करनेकी याचना कियी थी परंतु कबूल नही हुयी.

३७-जैनगृहस्थके नियम.-असजीवकी हिंसा न करना. ब्रूठी साह्नी फूठा लेख न करना. चोरी न करना. अपने धनका इ-च्छा निरोध याने प्रमाण करना कि-मुजे इतनें तक रखना. रखे. हुवेमेंसें ठठा जाग धर्मकृत्यमें व्यय करना. परस्त्री न जोगना. दश दिशामें जाने आनेका प्रमाण करना. मदिरा मांस आदि [३३] अन्नक्षय और (३३) अनंतकाय वस्तु न खाना. रात्रीजो-जन न करना. प्रतिदिन सामायिक करना. पर्वतिथिकों पौषध-व्रत करना. त्रिकाल जिनपूजा और यथाशक्ति सुमुनिकों दान देना.

३८-बौध कृणिकवादी है प्रथम लिख चुके, ज्ञाना छैत-

वादी और शुन्यवादी ये [१] शाखा और ञी इनमें है. वेदसें तो जैन बौध दोनों वरखिलाफ है. जैन लोग महावीरकों ज्ञातपुत्र इसलिये कहते है कि कल्पसूत्रमें उनके पिताकों ज्ञातकृत्रीय कहकर लिखा है. बौधके सामन्नफलसुत्रमें निर्ग्रथज्ञातपुत्रकों अग्निवैशायन लिखा है यह बौधोंकी भूल विदित होती है. उन्हां ने स्यात् महावीरकों उनकेशिष्य सुधर्मासें मिलाकर एक कर दिया. क्यौंकि सुधर्मा अग्निवैशायन गोतके थे. गौतमबुधने अपने शिष्योंकों कहा है कि-श्रमण माहए तुमकों जो कुच्छ बोधे करेगें मेरे कहे पांचस्कंधके ञीतर आजायगा. निदान ! इनवा-तोंसें सिद्ध है कि जैन बौध ञिन्न ञिन्न है एक नही. न एक दूसरेकी शाखा.

४०-जैन और बौध दोनोंके शास्त्रोंसें सबूत है महावीर और गौतमबुध विम्नसार और अजातशत्रुके वरुतमें थे. जैनशास्त्रोंसें नियत है कि महावीरके निर्वाण के बाद (४७०) वर्ष वतीत दुवे तव विक्रम संवत् चला. [४७०] कों [१ए४ए] में मिला दो तो महावीरके निर्वाणकों आज (१४१ए)वर्ष होते है.

जैन बौधके वारेमें यहां हमने जो कुच्छ लिखा दोनोंके शास्त्रोंसें और प्राचीन इतिहासकी कितावोंसें देखकर लिखा है. अगर इसमें कोई गलत बात है पाठकवर्ग उसे गलत समजे सुधारनेकों हमसें सूचना करे. नयी बात जान पमे जरूर लिखे. संसारमें एकसें एक ज्यादा बन्दिमान् पमे है. मनुष्यकों यह खयाल न रहना चाहिये कि-हमने जो लिखा सो ही सत्य है. इस विषयको अगल्ल अलग करना है तो ञिन्नञिन्न पारिग्राफ बाट

लो, महावीर और गौतमबुधकी दिनचर्या न्यारी बन शकेगी और शाथ शाथ दोनों मजबके कायदेनी अलग निकाला आवेंगे.

संवत् (१९४९)-जाइपद वदी (१४) रविवारके रौज पालिताणोसें मुनिश्री दानविजयजीका पत्र आया, जिसमें स्थापन होनेवाली जैन पाठशालामें आनेकों आमंत्रण लिखाथा. जिसका उत्तर अनेक धर्मसंबंधी कार्योंका विग्रह देख जाना न बननेके कारण यही लिखना बना था कि-केइ विशेष कार्योंके उपस्थित होनेसे हम आ नही सकते.

आसोज वदी (१३) रविवारके रौज जावनगरसें अमरचंद घेलाजाइका पत्र आया. इसमें वालुकामु मुकामपर प्रतिष्ठा किस दिन करना ? श्रीमुनिसुव्रतस्वामीकी प्रतिमा-बैठानेवालेका नाम रतनचंद वीरजी है. इत्यादि हकीकत थी. इसपत्रके आनेपर ज्योतिषधारा विचार किया तो इस वर्षमें लग्नशुद्धिका अज्ञाव मिला. इसलिये यही लिखदिया गया कि-इसवर्षमें उत्तम लग्न शुद्धिका अज्ञाव है.

संवत् (१९४९) आसोज सुदी (७) बुधवारकी टपालमें मुनिश्री वीरविजयजीका पत्र मुकाम अमृततर पंजाबसें आया. उसमें लिखा था कि सिद्धमहाराजकों रूपारूपो माननेमें आता है. कहनेमें श्री रूपारूपी आते है. सो किस अपेक्षा अरूपी और किस अपेक्षा रूपी समजना, ? इसका यह उत्तर दिया कि-पौद्गलीकरूपका अज्ञाव होनेसें सिद्ध अरूपी और ज्ञानीयोके ज्ञानमें वे असंख्यात प्रदेशात्मक आत्मद्वय जैसे है दिखलाइ देते है इस अपेक्षा रूपी समजना निदान ! अपौद्गलीक रूप सिद्धमें है.

इनदिनोंमें गुजरात और मारवामसें [३]मुनियोंने पत्रद्वारा सूचन किया हम आपकेपास रहकर विद्याभ्यास करना चाहते है. इनपत्रोंका उत्तर हमने उनकी मरजीके माफिक इसलिये नही दिया कि-इस पंचमकालमें मनुष्योंके योग्यायोग्यका पत्ता नही लगता. समय बडाविचित्र है मुनासिव नही है कि-इतनी दूरसें किसी साधुकों बोलाकर पास रखाजावे. अलवते ! जब हम विहार करते हुवे गुजरातकी तरफ विचरेगें तब जो कुछ विद्याभ्यास कियी है उसकों नवीन साधुवोंके पहाने और श्रावक आदि शुभकर्मियोंके उपदेशमें ही लगावेगें यही मुनियोंका धर्म है. किसी मुनिको दूरदेशसें बोलाकर हम व्यर्थ डखी करना नही चाहते, जैसे कि-पंजावमें बहुधा साधु गुप्तपने डखी दृष्ट पढते है.

चौमासा पुरा हुवा. कार्तिक पौर्णमासी शुक्रके रौज तिसरे पहर लश्करसें विहार कर मोरार आवणी गये. व्याख्यानमे ढालसागर जिसमें हरिवंश पांम्ब कौरवोंका वर्नन है) वाचना शुरू किया. मार्गशीर्ष वदी (३) रविवारके रौज मिष्टी हरनारायणजी हमारेपास आये और ज्योतिषसंबंधी कितनेक सवाल पूछे. जिनका उत्तर यथाअवसर ग्रंथानुसार दिया गया. एकमास कल्प ठहरे. शैठे-राजमलजीके बोटे भ्राता मगनमलजीने हुंढिया पंथ बोनकर सम्यक्तपूर्वक संवेग आमनायका वासद्धेप लिया. विश स्थानककी पूजनवगेरों उल्लव हुवा. मोरार आवणीसें फिर लश्कर आये.

संवत् (१९५०) चैत्रसुदी प्रतिपदाके रौज नवीनसंवत्के प्रवेशमें एक नवीन समाचार निम्नलिखित प्राप्त हुवा. ज्ञावार्थ-एक

दिगंबर महाशय ! निजपत्रद्वारा निर्पेक्षज्ञावसें लिखते है कि-दि-
ल्लीके दोचार जैनीलोकोने अंबलीके महोलेमें एक नवीन दिगं-
वरमंदिर बनाया है, और उसको रथयात्राका महाहव चैत्रकृष्णा
(४) चंद्रवारका नियतकरके देशांतरमें चीठो जेजी गयी. और
दिल्लीकी सर्ववरादरी इसमें सामल थी. एकमास प्रथमसें जेसंगपुरे
स्थानमें (जो दिल्लीसें दखन दिशामें दोंकोशके फाशलेपर बसता
है राज्यजयपुरके आधीन है) जंमारोपणका मुहूर्त्त किया. सो
जंमारोपणके समय पृथ्वीमेंसें दबीहुयी एक जैनप्रतिमा निकसी.
जिसको देखकर प्रथमतो हमलोकोकों बडा हर्ष हुवा परंतु विशेष
देखजाल करनेसें जबउक्त प्रतिमा श्वेतांबरआम्नायकी ज्ञात हुयी
उससमय मूर्खानंदीयोने पक्षपातरुपी द्वेषकरके फेंक दिया, जिसका
फल अज्ञा नही हुवा, ज्ञावार्थ-जो मेला होनेवाला था उसमें एसे
एसे विघ्न हुवे जिनका वर्नन करते शोक उत्पन्न होता है. यद्यपि
कोशकोइ विद्वान्पुरुषोने मूर्खानंदीयोकों वारवार समजाया कि-
यद्यपि आम्नायजेद परु गया परंतु प्रतिमातो अपनेही जिनेन्द्र-
देवकी है. उससें द्वेष करना आपको उचित नही. परंतु पथ्थरकों
जोक नही लगती. किसीकों कुछ खयाल नही हुवा केवल प्रति-
माकों उठाकर लेगये. सोजी इस जयसेंकि-कोइ श्वेतांबरी न
लेजाने पावे. प्रतिमा महामनोज्ञ और अखंड है.

दिल्लीके दिगंबरलोकोने जेसंगपुरेमें जो (५०००) रूपैये
लगाकर सज्जामंमप बनाया था उसके थंज लोहमयी अधिक-
पायदार ज्ञावार्थ-रैलकी लीकके बनाये थे, और यात्राहोनेसें
एकदिन पहले पूर्ण कियागया था. जिसकों देखकर अत्यंत आनंद

होताथा. परंतु इनकेघेषका परिचय किसीदैवयोगसें यह हुवा कि-चैत्रकृष्णतृतीया रविवारको अर्द्धरातकों वृष्टि-ओला-भूकंप-वज्रपात इत्यादि उपद्रवाने उससन्नामंपकों समूल उठाकर दूर फेंक दिया. लोठेके थंज इसप्रकार टूकमे होगये जिसप्रकार काचकी ठमी ठपका लगनेसें करक जातीहै और यह उपद्रव मंलेकेवजार और सन्नामंपमें ही हुवा जहां जगवान्की प्रतिमा विराजमान करनेकेलिये मेरा लगायाथा उसमें कोइ उपद्रव नही हुवा. यह देवकारण नहीतो और क्याहै?

इसलिखनेसें सारांश यहहै कि आजकल संसारमें अविद्या-अंधकारके फेलानेसें द्वेषभावकी वृद्धि होगयी और हमारे दिगं-वरोज्जाइ जो प्रायः विद्याकरके अनजिज्ञ है उनके द्वेषका तो क्या कहना? जब वे पाषाणमूर्तिसें घेष रखते है तो-श्वेतांबरसंघसे घेषकरना कौन बमीवात है? यहतो इनका स्वभाविक धर्मही होगया. अब इसविषयके अंतर्गत हमको यह दिखलानेकी आव-श्यकता हुयी कि-जैनमें दिगंबरमतकी उत्पत्ति कवसें हुयी?-कान-आचार्यके कौनसेशिष्यसे इसका प्रचार क्यौंकर हुवा?—यद्यपि इसविषयमें हमारेपास कुछ दिन हुवे मुलतानकेरहनेवाले श्रावकोने [१५]प्रश्न ज्ञेजे थे. जिनमेंकुछ दिगंबर और कुछ दुंढियोकी तरफ के प्रतीत होतेथे, परंतु इसअवसरपर उनकाजी उत्तर यथार्थ लिखनेमें आयगा. जोकि-इसनिबंधकी पूर्णता होनेपर लिख-लाये जायगें.

(श्वेतांबर दिगांबरकी जिन्नता.)

महावीरके निर्वाण पिठें (६०९) वर्ष बतीत हुवे बाद शिव

भूतिमुनिसँ दिगंबरमत्तकी उत्पत्ति हुयी. आर्यकृष्णाचार्यके से शिष्य थे. संसार अवस्थामें रथवीरपुर नगरके रहनेवाले एक प्रसिद्ध गृहस्थ थे. नाम शिवभूतिसहस्रमल्ल था. इन्होंने उक्त आचार्यकेपास दीक्षा ली और जिस हेतुसँ इन्होंका प्रथक् होना हुवा आवश्यकसूत्रकी श्रीहरिऋषिरचित बृहद्वृत्तिमें इसप्रकार लिखा है. (तद्यथा.)

[गाथा.]

उवाससएहिं नवुत्तरोहिं [६०९]सिद्धिगयस्स विरस्स ३,
तो वोडियाएदिठी-रहवीरपुरे समुपन्ना,
रहवीरपुरं नयरं-दीवगमुज्जाण मज्जाकन्होय,
सिक्खभूइस्सुवाहिंमिज्ज-पुढा थेराए कहणाय, ३

व्याख्या,-रहवीरपुरं नगरं, तच्च दीवगमुज्जाणं, तच्च अज्जाकं
न्होय एवम आयरिया समोसद्धा, तच्चय एगोसाहसमल्लो एवम,
तस्स ज्जा, सातस्स मातंचमेति तुज्जा पत्ता दिवसे दिवसे अ-
रत्ते एइ, अहं जग्गामि छुहाइयां, अज्जामि ताहे ताए ज्जाति,
मा दारं देव्वाहिं, अहं अज्जा जग्गामि, साए सुत्ता, इयस जग्गइ
अ-रत्ते आगतो, दारं मग्गति, माताए अंबाडितो, ज्ज एताए
वेलाए उघाडिताणि दाराणि तच्च वच्च. सो एिगज्ज. मग्गंतेण
साहु पडिस्सज्ज उग्गामितो दिठो. वंदित्ता ज्जाति, पब्बावेहमं,
ते नेवन्ति, सयं लोड कतो. ताहे सल्लिं दिन्नं. ते विहरिता. पुरि
एोत्रि आगताएणं रएणा कंबलरयणं दिन्नं. आयरिएण किं एतेएणं
जतोएणं किं गहितंति ज्जाणिएण तस्स अएणपुढाए फालियं जिसे
घातो कतातो, कसाइज्ज. अएणदा जिएणरुप्पिया वणिज्जाति, ए-

अंतरे सिवभूतिणा पुढितो. किंमिदाणि पत्तियो उवही धरिच्च-
 ति जेणं जिणकप्पो न किरति. गुरुणा ज्ञाणितं. न तीरइ सो इ
 दाणि वोढिन्नो. ततो ज्ञाणति. किं वोढिञ्जाति ? अहं करोमि. सो
 चेव परलोगणिण्णा कायव्वो. किं उवहिपरिग्गहेण ? परिग्गह
 सभ्जावे कसाय मुढाजयादिया बहु दोसा. अपरिग्गहत्तं च सुए
 ज्ञाणितं. अचेत्तय जिणिंदा अतो अचेत्तता सुंदरत्ति. देव्हसभ्जा
 वेवि कसाया मुढाइया कस्सइ ज्वंति. तो देहोवि परिच्चइयव्वो-
 त्ति. अपरिग्गहत्तं च सुए ज्ञाणितं धम्मोवगरणेवि मुढा ए काय-
 व्वत्ति. जिणावि एगंते ए अचेत्ता. ततो ज्ञाणियं सव्वेवि एग
 दूसेणंणिग्गता जिणवरा इत्यादि-एवं थेरेहिं कहंणां. सेकतत्ति
 गाथार्थः एवं पएणवितो कम्मोदएण ढमिता गतो. तस्सुत्तरा
 ज्ञिणी उज्जाणेठितस्स वंदिता गता. तं दंढूण तोयवि चीवराणि
 ढमिताणि. ताए जिख्वं पविठा. गणिताये दिठा मौ अम्ह लोगो
 विरच्चिहित्तिउरे से पोत्ती वध्दा. तहा सा एोढति. तेए ज्ञाणितं. अउ
 एसा तव देवताए दिन्ना. तेणय दो सीसा पव्वाविया. कोडिएणो
 कोढवीरोय. ततो सीसाण परंपरा फासो जातो एवं वोमिया उपन्ना.

अमुमेवार्थं ज्ञाप्यकारोऽप्पाह. [मूलज्ञाप्यकारः]-गाहा,-

ऊहाए पन्नत्तं वोमियसिवभूइ उत्तराहिं इमं

मिढदंसणमिणमो. रहवीरपुरे समुपन्नं. ३,

ऊहया स्वतर्कधुद्धा प्रज्ञप्तं प्रणीतं बौटिकशिवभूत्युत्तराभ्या-
 मिदं मिथ्यादर्शनं. इणमोत्ति-एतच्च क्षेत्रतो रथवीरपुरे समुपन्न
 इतिगाथार्थः-बौटिकशिवभूतिसकासात् बौटिकलिंगस्य ज्वत्युत्ति
 र्वत्तमाननिर्देशप्रयोजनं पूर्ववत्-पाठांतरंवा. [गाहा.]

बोमियसिवभूर्श्यो बोमियलिंगस्त होइ उप्पत्ती.

कोमिन्नकुठवीरा-परंपरा फास उपन्ना. (?)

ततःकोमिन्यश्च कोटिवीरश्चेति सर्वो द्वंद्वो विज्ञापया एकवचन-
वतीति कोमिन्यकोटीवीरं तस्मात्परंपरां स्पर्शं आचार्यशिष्य
संबंधलक्षणामधिकृत्य उत्पन्ना संजाता बोटिकट्टिष्ठिरध्याहरणी
येतिगाथार्थः—

(अर्थः)—स्थवीरपुरनगरके दीपकउद्यानमें आर्यकृष्णानामके
आचार्य ग्रामानुग्राम विहार करतेहुवे पधारे. इसनगरमें शिवभू-
तिसहस्रमहानामसें एक प्रसिद्ध गृहस्थ रहताथा. एकरौज इसकी
स्त्री अपनी साससें कहनेलगी आपके पुत्र रातकों इतनी अवेरकरके
आतेहै जितनीदेरतकमैं जाग्रत नहो रहशकती. सासने कहा अहा
बहु ! आज तुम मत जागना मै जागुंगी. शिवभूति रौज दैरसें आते
ही थी उसीमुजब बनीदैरसें घरआये. आवाज दियो कि-किवाम
खोलो. नीतरसें माताने जवाब दिया इतनीदेर जहां किवाम बंद
न किये जातेहो वहां जा. इतनीबात सुनकर शिवभूति गोस्ता
खाकर उलटे लोटे, नगरमें फिरते फिरते साधुजनोंका उपाश्रय
खुला देखा. नीतर जायकर वंदना कियो और कहाकि-मुजे साधु
किजीये. गुरु दीक्षा देनेको इनकार हुवे तब इसरे दिन शिवभू-
तिजीने आपसेआप लोच करके पुनःप्रार्थना कियो. अधिक
आग्रहदेखकर गुरुने शिवभूतिजीकों साधुपनेका वेष देयकर दीक्षा
दियो और वहांसे विहार कर गये. देशांतरमे फिरते फिरकनी
उन्होंका आना स्थवीरपुरनगरमें हुवा. तब शिवभूतिमुनिकों राजाने
एकरत्नकंबल दिया. रत्नकंबल लेकर शिवभूतिमुनि जब गरुकेपास

पहोचे गुरुने कहा ऐसे रत्नकंबलसें अपनेको क्या प्रयोजन है ? बहु मौलका रत्नकंबल रखना व्याजब नही एसा कहकर विना पूरे उसरत्नकंबलके छोटे छोटे टुक करदिये और पीछने प्रमार्जनेके काममें लगादिये. शिवभूतिमुनिने इसवातसें बहोतरोष माना. यूँ होतेकितनेक दिन बतीत हुवे एक दिनकी वात है गुरु जिनकल्पी मुनियोंका अधिकार कथन कररहेथे शिवभूतिमुनिने गुरुसें पूछा कि-आपांजी ऐसे क्यों नही होते ?-उपधि क्यों रखते है ? जिससे जिनकल्पमार्ग नही बन आता,-गुरुने उत्तर दिया इस कालमें जिनकल्पमार्ग व्यवच्छिन्न होगया उपधि विना स्थिर रहना अशक्य है. शिवभूतिमुनिने कहा कैसे व्यवच्छिन्न होगया ? मैं करूंगा. परलोक अर्थीको उपधिपरिग्रहसें क्या प्रयोजन ?-उपधिके होनेसें कषाय मूर्छा और ज्ञयआदि बहुतेरे दोष पैदा होते है. अपरिग्रहपना सूत्रमें कहा है. जैसे-“अचेलयजिणिंदा” अर्थात् जिनेश्वर अचेलक (वस्त्र रहित.) थे. इस लिये अचेलपना ही सुंदर है. गुरुने कहा जैसे उपधि परिग्रहके सद्ज्ञावमें कषाय मूर्छाआदि दोष स्वीकार है तो शरीरके सद्ज्ञावमेंजी कषाय मूर्छाआदि दोष क्यों नही स्वीकार होंगे, ?-इससें तो शरीरजी ठोम देना चाहिये. परंतु यह तुमारी समझका फर्क है. सूत्रमें जो अपरिग्रहपना कथन किया है वह धर्मके उपगणमेंजी मूर्छा नही करना चाहिये इस अपेक्षासें है, जिनेश्वरभी एकांत अचल (वस्त्र रहित) नही थे. आगमवचन है कि-“सद्येवि एगदू-सेण एगता जिणावरा”-सजीजिन एक देवदूष्य वस्त्र स-दित दीक्षा लेकर निकले. इत्यादि कथनसे गुरुने बहोत सम-

जाये परंतु कर्मोदयसें शिवभूतिमुनिकी समझमे नही आया. अलग होकर पात्र और वस्त्र वगेरा सर्वउपधि छोडकर नग्न विहार करने लगे. बहार उद्यानआदिमें स्थिति करते रहे. इंधर उनकी बहैन जो कि-दीक्षिता थी शिवभूतिमुनिकों वंदना करने गयीं उनको वस्त्ररहित देखकर आपनी वस्त्ररहित होकर विचरने लगी. एकदिनकी बात है जब जिह्वाभिमित वह शहरमें आयी तो एक गणिकाने इसको देखकर सोचा कि-लोक हमारेपर विरक्त न हो जाय एकसाडी लेआयी और उसे पहना दियी. साध्वी सा-डी लेनेको यद्यपि इनकार थी तो जी गणिकाने कहा तुमारे दे-वने तुमको दियो है लेना चाहिये एसा कहकर चली गयी.

शिवभूतिमुनिके कोडिन्य और कोटिवीर नामके दो शिष्य हुवे. क्रमसें शिष्य परंपरा बढ़ती गयी. [मूलज्ञाप्यकारने जी कहा है कि-] यह मिथ्यादर्शन रथवीरपुरनगरसें शिवभूतिमु-नि और उत्तरासाध्वीसें उत्पन्न हुवा. जबकि-विक्रम संवत् (१३७) चलता था और महावीरके निर्वाणको उमवख्त (६०७) वर्ष हो चुके थे. क्यौकि-महावीरके निर्वाण हुवे बाद (४७०) वर्ष पिछे विक्रम संवत् चला है. श्वेतांबर आमनायके शास्त्रोंमें बहुत जगह लिखा है कि-विक्रम के संवत्सें (४७०) वर्ष पहिले महावीर का निर्वाण हुवा. दिगंबर आमनायके शास्त्रमें लिखा है कि- (६०५) वर्ष पहिले महावीरका निर्वाण हुवा. यह जो (१३५) व-र्षका फर्क दोनों आमनायवालोकी गिनतीमें पडा यह विक्रमके संवत् और शास्त्रिवाहनके शाकेका है. क्यौकि-दिगंबराचार्योंने शास्त्रिवाहनका प्रचार किया हुवा शाका-“संवत्”-करके माना

है. और इसी शालिवाहनकों विक्रमार्क करके लिखा है. इसकी शाही त्रिलोकसार और हरिवंशपुराण आदिसें मील सकती है.

शिवभूतिमुनिसें जबकि—इसमतकी शरुआत हुयी उसको आज (१०११) वर्ष हुवे और महावीरके निर्वाणकों आज (१४१०) वर्ष हुवे, महावीरके गणधर आदि शिष्योंसें लेकर शिवभूतिमुनितकके बीच बीच सेंकडे जैनाचार्य हुवे उनमेसें किसी आचार्यका रचा हुआ ग्रंथ या किसी ग्रंथका स्थल दिगंबरआम्नायमें क्यों नहीं मिलता ? क्या ! किसी आचार्यने कोई ग्रंथ नहीं रचा ? इस लेखका तात्पर्य यह है कि—बीचके पांचसो ठसो वर्षके आचार्योंका कोई ग्रंथ दिगंबरआम्नायमें नहो मिलता और श्वेतांबर आम्नायमें मिलता है इससे कह सकते है दिगंबर मतकी शरुआत पिढेसें हुयी.

कोइ कोइ दिगंबर एसा कह देते है कि—जइबाहुसंहिता जइबाहुस्वामीकी रची हुयी है, जो महावीरके निर्वाण पिढे (१६१) वर्ष देहांत हुवे है, परंतु यह कहना ठीक नहीं. क्योंकि वह जइबाहुसंहिता हमारे पास है, उसके उत्तरखंडके प्रारंभमें चतुर्थ—पंचम और षष्ठम श्लोकमें लिखा है कि—छादशांग वेत्ता जइबाहुको नमस्कार करके उनके शिष्य उनसे विज्ञप्ति करते है कि—महाराज ! हमको दिव्य ज्ञान विदित करो, (जइबाहु संहिताका पाठ.)

तत्रासीनं महात्मानं ज्ञानविज्ञानसागरं,
 तपोयुक्तं च श्रेयांसं जइबाहुं निराश्रयं, ४
 छादशांगस्य चेतारं निर्ग्रथाशं महाद्युतिं,
 वृत्तशिष्यैः प्राशिष्यैश्च निपुणं तत्ववेदिनां, ५

प्रणम्य शिरसाचार्यं, इति,

फिर अठारहमें अध्यायके (३४) में श्लोकपर लिखा है कि
 “नञ्जबाहुवचो यथा”—इन प्रमाणोंसे सिद्ध होता है कि—
 नञ्जबाहुस्वामी इसके रचयिता नहीं है, किंतु और कोई है.

कोई कोई दिगंबर कहते हैं, यह संहिता पिठले नञ्जबाहु-
 स्वामीकी रची हुयी है जो कि—महावीरस्वामीके निर्वाणसे (४९३)
 वर्ष बाद हुवे है. परंतु हमारे विचारमें क्या ? किंतु अनेक दिगंबर
 लोकोके विचारमें जी यह संहिता दोनों नञ्जबाहुमुनियोंकी ब-
 नायी हुयी नहीं है. पिठले नञ्जबाहुस्वामीकी रची हुयी माने
 तो इसके प्रथमाधिकारके तिसरे श्लोकमें लिखा है कि—गोवर्द्ध-
 न गुरुकों नमस्कार करके और गौतम संहिता देखकर मैं यह
 संहिता बनाता हूं. (तत्पाठः)

गोवर्द्धनं गुरुं नत्वा दृष्ट्वा गौतमसंहितां,
 वर्णाश्रमविधियुता संहितां वर्ण्यतेधुना. ३,

जब पिठले नञ्जबाहुस्वामीकी रचित यह संहिता उहरे तो
 उनके गुरु गोवर्द्धनजी कैसे कह सकते हो ?—क्योंकि—पिठले
 नञ्जबाहुजी—श्रीगुप्तिगुप्तआचार्यके गुरु हुवे और पहले नञ्ज-
 बाहुजी—श्रीविशाखाचार्यके गुरु हुवे लिखे है, शंसय हो तो दि-
 गंबर पहावलीमें देख लो. श्वेतांबर आमनायमे श्रीनञ्जबाहुस्वामी
 एक ही हुवे लिखे है. निदान ! उक्तसंहिता न पहले न दूसरे
 दोनोमेंसे किसी नञ्जबाहुस्वामीकी रचित नहीं है. क्योंकि—स्वोप
 ज्ञ ग्रंथमें वे कैसे लिखे कि—नञ्जबाहुवचो यथा,—अर्थात् न
 ञ्जबाहुका वचन इसमें प्रमाण है. एसा लिखना खुद नञ्जबाहु

स्वामीका कैसे हो शक्ता है ?—इसलिये यह तो नहीं सिद्ध हुआ कि—यह संहिता ज्ञानबाहुजीकी रचित है. कोइ दिगंबर महाशय प्रमाणद्वारा सावीत करदेवे तो हमको वैसे माननेमें जी इनकार नहीं.

दिगंबरआम्नायके पुस्तकोमें लिखा है महावीरके निर्वाण पिठे (६०३) वर्षबाद श्री पुष्पदंत और भूतवलीमुनिने पुस्तका रूढ किया, अर्थात् दिगंबर मतके शास्त्र पुस्तकाकार लिखे. और कहते है उमवख्त विक्रमार्क कहिये विक्रमादित्यका शत्रु—“शक्र” प्रवर्तक शालिवाहन राजा गर्जमें था. कुंदकुंदाचार्यके पश्चात् उमास्वामी पट्ट बैठे. उमास्वामीकी पट्टपर लोहाचार्य बैठे. काष्ठासंघकी उत्पत्ति इन्हींसें हुयी ऐसा मूलसंघकी पट्टावलीमें लिखा है.

श्वेतांबर आम्नायके पुस्तकोमें लिखा है महावीरके निर्वाण बाद (९८०) वर्ष पिठे बल्लजीनगरीमें श्री देवार्द्धिगणिकुमाश्रमण आचार्यने पुस्तकारूढ किया. याने अंगशास्त्र (जितने उस वख्त मौजूद थे.) ब्रगेरा जैनशास्त्र पुस्तकाकार लिखे. समीक्षक—जब श्वेतांबरशास्त्रोंसें दिगंबरशास्त्र पहेले लिखे गये तो वे अधिक जरूसे रखने योग्य क्यों नहीं ?—इसका हेतु सोचते है तो कुछ पहेले लिखे जानेपर अधिक जरूसेके पात्र नहो ठहर सकते. क्योंकि जिसकी धारणाशक्ति कमजोर हो उसको लिखलेनेकी जरूरत प्रथम होती है जिसकी धारणाशक्ति पुख्ता हो उसको क्या प्रयोजन है शिघ्रता करे. यह दोनों आम्नायमें मान्य है कि—संपूर्ण जैनशास्त्र गणवर—आचार्य—उपाध्याय—और सामान्यमुनियोने रचे. जिनोने जबतक काम चलता रहा अपने अमूल्य समयको

धर्मध्यानके अतिरिक्त लिखा पढीमें नही लगाया. परंतु जब धारणा शक्तिकी न्यूनता होने लगी तब लाचार ग्रंथ लिखनेका श्रम उठाया.

धवल-जयधवल-और महाधवल-यह तीनशास्त्र दिगंबर आमनायमें आद्यके गिने जाते है. इनके पहले दिगंबर आमनायमें कहते है कोइ शास्त्र नही गुंथा गया. इनमेंसे उद्धार करके नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्तीजीने चामुंडराजाके पढनेकेलिये संवत् [११३३] में गोमहसार ग्रंथ बनाया.

दिगंबर पुस्तकोंमें यह बात जोरके साथ लिखी है कि-स्त्री को मोक्ष नही. वस्त्रधारी चाहे स्त्री वा पुरुष कोइ क्यों न हो ? विना नग्न हुवे उनकी जी मोक्ष नही होती. तीर्थकर वा अन्य मुनि कोइ हो जब वे केवलज्ञानी हो जाते है आहारपानी बिल्कुल नही लेते, उनोसवे तीर्थकर मल्लिनाथको पुरुष बताते है श्वेतांबर मल्लिनाथको स्त्री बताते है. छ्वादशांगवानीमेंसे एक दृष्टिवाद अंगको ढोडकर शेष ग्यारहअंगशास्त्र जो अब विद्यमान है उनको श्वेतांबर मानते है दिगंबर लोग नही मानते. इनमे जो [१०] आश्चर्य हुवे लिखे है वह जी दिगंबर नही मानते. किंतु दूसरे प्रकारसे मानते है. वगेरा बहोतसी बातेंका अंतर दोनो आमनायमें है. मल्लिनाथको दिगंबर आमनायके शास्त्रमें पुरुष लिख दिया इसका कारण यही विदित होता है कि-यदि वे इनको स्त्री मान लेते तो उनका अपने ग्रंथोंमें स्त्रीका मोक्ष नहोना एसा जो लिखना है व्यर्थ हो जाता.

श्वेतांबरमुनि वंदन करनेवालेको धर्मलाज कहते है दिगंबर

मुनि धर्मवृद्धि कहते हैं, परंतु वर्तमानकालमें दिगंबरमुनि कोइ जगह नहीं है, केवल मनको धीरज देनेके लिये उत्तराखंडके दिगंबरश्रावक कहते हैं दखनमें होयगें, दखनवाले कहते हैं उत्तरमें होयगें. सारे हिंदुस्थानमें [जोकि—आर्य तरीके गिना जाता हैं] तो है नहीं, अनार्यदेशमें होवे तो वे दिगंबरशास्त्रोके कथन मुजब मुनि नहीं कहे जायगें. क्योंकि—वहां कोइ श्रावक नहीं जिससे उनको निर्दोष आहार मिले. श्वेतांबरमुनि (४२) दोष त्याग के जिज्ञा लेते हैं दिगंबरमुनि [३३] अंतराय त्याग के लेते हैं. श्वेतांबरआम्नायमें जिनकल्पी और स्थविरकल्पी दो प्रकारके मुनि माने जाते हैं, परंतु जिनकल्पीमुनि अब नहीं रहे. जंबूस्वामीके मोक्षहोनेवाद व्यवठिन हो गये, वर्तमानकालमें स्थविरकल्पी मुनि विद्यमान है, वस्त्र पात्र आदि [३४] उपकरण इनके लिये रखने कहे हैं. श्वेतांबरका कहना एसा है कि—जब मुक्तिमार्ग शुरुथा तब वस्त्रआदि उपधि धारण करनेवाले मुनिकी जो मुक्ति होती थी. क्योंकि—वस्त्र पात्र आदि उपधिमें अगर ममत्वजाव नहीं है तो मुक्तिको कौन रोक सकता है? दिगंबरको इन बातोंसे इनकार है और कहते हैं मुनिको वस्त्र पात्र आदि उपकरण रखने हो न चाहिये. मूर्छा होगी. श्वेतांबरमुनि रजोहरण उनका रखते हैं दिगंबर मयूरपिठोंकी पीठी रखते हैं.

तत्त्वार्थ सूत्रको दिगंबर आम्नायमें मान्य रखा है परंतु इसके कर्ता उमास्वातिजी दिगंबर नहीं थे. क्योंकि—ये दिगंबर थे इस विषय प्रमाण देनेको दिगंबराचार्य रचित कोइ प्रमाणीक ग्रंथ

नही केवल पद्दावलीके आश्रय उनका दिगंबर होना विघ्नानों-
कों मान्य नहीं हो सकता. सबवक्ति-दिगंबर आमनायमें जितनी
पद्दावली है जट्टारकोंकी बनायी हुयी है. जट्टारकोंकी उत्पत्ति
संवत् [१३१६] के पश्चात् है, क्योंकि-इसी संवत्में फिरोजशाह
बादशाहकी आज्ञासें जट्टारक प्रजाचंडने वस्त्र अंगीकार किया
लिखते है, जितनी पद्दावली है सब इसीके पीछे जट्टारकोंकी ब-
नायी हुयी है. इससे पुरानी कोई पद्दावली नहीं है, जट्टारको
का वचन नवीन होनेसें अप्रमाण है. इनका नाम उमास्वाति
किस हेतुसें रखा गया था ?-कौनसें समयमें ये हुवे ?-कितने ग्रंथ
रचे ?-यह सब वर्नन श्वेतांबर पुस्तकोसें मिल सकता है.

महावीरके सातमे पट्टपर जड्वाहु हुवे, जड्वाहुके पट्टपर
स्थूलजड् जो महावीरके बाद [११५] वर्ष पीछे देहांत हुवे है,
स्थूलजड्जीके आर्यमहागिरी और आर्यसुहस्तो दो शिष्यहुवे
दोनोंकी अलग अलग पद्दावली चली, जिसमें आर्यमहागिरि
को पट्टपर बलिस्सहसूरि हुवे, बलिस्सहसूरिके बाद स्वातिसूरि-
स्वातिसूरिके बाद श्यामाचार्य जो महावीरनिर्वाणके पश्चात्
[३७६] वर्ष बाद देहांत हुवे है.

उमास्वातिजी इन्ही श्यामाचार्यके शिष्य और पूर्वधारी
थे. दिगंबरआमनायकी पद्दावलीमें उमास्वातिजीको कुंदकुंदाचा-
र्यके शिष्य लिखे है. और लिखा है विक्रमार्क संवत् [१४३] में
ये देहांत हुवे. दोनोंके कहनेमें बहोत फर्क आया. दिगंबर पद्दा-
वली संवत् (१३१६) सें पहलेकी न होनेसें प्रमाण योग्य नरही.
श्वेतांबर आमनायकी पद्दावली नंदीसूत्र और कल्पसूत्र बगेरामें

मिलशकती है जोकि—अधिक पुरानी होनेसे अधिक प्रमाण योग्य है.

उमास्वातिजीने [५००] ग्रंथ रचे. जिनमेंसे वर्तमानमें केइ मिलते है जैसेकि—हमारे ही पास उमास्वाति रचित पूजाप्रकरण है जिसको दिगंबरलोग नहीं मानते. इसी प्रकार औरको भी नहीं मानते. इन्होंका बनाया एक तत्वार्थसूत्र ही दिगंबरमतमें मान्य रहा दूसरे नहो रहे इससे विदित होता है उनमें स्त्रीको मोक्ष और केवलीको आहारका होना लिखा है. अंगशास्त्र भी इसी लिये अस्वीकार हुवे.

मूलसंघकी पढावलोमें लिखा है कि—सेनसंघ—सिंहसंघ—नं-दीसंघ—और देवसंघ—इनइन मुनियोंने किया. सेन और सिंह संघ जिनसेनमुनिने (जो १०४ में हुवे है) किया. जिसमें सेनसंघ पहला और सिंहसंघ सिंहकी गुफामें रहनेसे हुवा. नंदीसंघ मा-घनंदीमुनिने किया जो कि (१६०) में हुवे है. देवसंघ देवदत्ता नामकी बेश्याके घर योग धारा इस लिये कहा गया. नंदीसंघमें पारिजात गन्ध बलात्कार गए—और मुनियोंके नामपर नंदी-चंद्र कीर्ति—और भूषण—ये (४) उपनाम स्थापित किये गये. तथा मूलसंघ नंदीआम्नाव सरस्वती गन्ध बलात्कार गए—और मुनि-योंके नामपर पूर्वोक्त (४) प्रकारके उपनाम स्थापित किये गये. सजी दिगंबर पढावलोके गुम्फक जट्टारक है और जट्टारकोकी उत्पत्ति (संवत् १३१६)में हुयो ऐसा वसुनंदीश्रावकाचारमें लिखा है.

मूलसंघ—काष्ठासंग—माथुरसंघ—और गोप्यसंघ—ये चार संघ भी दिगंबर आम्नायमें हुवे लिखे है. मूलसंघमें और गोप्यसंघमें

मयूरके पीठेकी पींठी रखते है, काष्ठासंघमें चमरीबालकी रखते है. और माथुरसंघमें कोइ प्रकारको जी पींठी नहीं रखते. जब वर्तमान समयमें कोइ दिगंबरमुनि ही नहीं रहे तो पींठीकी तलास हमको क्यों करनी होगी !—इनमें गोप्यसंघवाले स्त्रीको मुक्ति होना मान्य रखते है. केवलीकों आहारपानी करना तों चारों संघवाले नहीं मानते.

स्याघादन्यायकेलिये श्वेतांबर दिगंबर दोनोंकी एक सडक है. सम्मति तर्क—घादसारनयचक्र—अनेकांतजयपताका—स्याघादरत्नाकर—स्याघादरत्नाकरा वतारिका—स्याघादमंजरी—बगेरा श्वेतांबरआम्नायके तर्क ग्रंथ है. अष्टसहस्री न्यायकैरवचंद्रमा—और सिद्धांतसार आदि तर्कग्रंथ दिगंबर आम्नायके है. और कल्याणमंदिर ज्ञतामर सिंदूरप्रकरआदि स्तोत्र दोनों आम्नायमें मान्य है जिनके रचनेवाले श्वेतांबराचार्य है.

दिगंबरआम्नायमें वीशपंथ-तेरहपंथ-गुमानपंथ-और समैयापंथ-ये (४) जेद अब मौजूद है. जो वीशप्रकारकी *धर्मक्रियामें पावंद है वे वीशपंथी कहलाते है. वीशमेंसे सातप्रकारकी क्रिया उथ्यापन कियी जिससे तेरहपंथी कहलाये. कहते है वीशपंथमेसे फटकर संवत् (१७३६) में ये अलग हुवे. जयपुरके तेरहपंथीयोंसे *टोडरमल्लके पुत्र गुमानीरामजीने संवत् (१८३७) में गुमानपंथ निकाला.

प्रतिमाकों स्नानकरानेका निषेध इन्हीने किया. समैयापंथ

* सिंदूर प्रकरके (८) में—काव्यमें देखो. कहते है टोडरमलजीने श्रावकाचारग्रथ बनाया है.

संवत् [१८७७] निकसा. मूर्तिपूजन यं लोक विल्कुल नहीं मानते शास्त्रको ही वेदीपर रखकर पूजते है. कहते है शास्त्रहीसे सब बात चली इस लिये इन्हीका पूजन ठीक है. इसागढ-खास मुकाम मल्हारगढ-नागपुर-जेजसा-वासोदा वंगरा स्थानपर ये लोक ज्यादा है.

वीशपंथीयोकी पूजन इस प्रकार-(१) जलसें स्नान कराते है और पूजनके समय मूर्तिके सामने धारा देते है. [१] चंदन केशर प्रतिमाजीके चरणोंपर लगाते है. (२) अद्भुत शफेद चावलको धोयकर पुंज (ढेरी) प्रतिमाजीके सामने स्थालीमें बनाते है. (३) पुष्प-प्रतिमाजीके चरणोपर तथा स्थालीमें किये हुवे चावलोके पुंजोपर चढाते है. (४) चंदनादिक सुगंधद्रव्यको कूटकर एक धूपायनमें मूर्तिके आगे धूप देते है, निदान ! हुताशनमें धूप डालते है. (५) दीप-कर्पूरका तथा धृतका दीपक जलाकर आरती उतारते है और मूर्तिके आगे पुंजोपर रख देते है. (६) नैवेद्य जैसा कुड्ड पकान मिठाइ मिले उसको प्रतिमाजीके सन्मुख चढाते है. (७) फल जिसरुतुमें जैसा फल मिले वैसा चढाते है. वीशपंथी लोग उमास्वातिकृत एक ग्रंथमें एसा लिखा होनेका विश्वास करते है कि पुष्पके स्थान चावलोंको केशरमें रंग दिया जाय तो वह ज्ञी समयानुसार ग्रहण करने योग्य है. परंतु आजतक कोइ महाशयने उक्तग्रंथका प्रमाण प्रकाशित नहीं किया. विना प्रमाण चाहे जैसा विश्वास करलो परीक्षकतो कज्ञी प्रमाण नहो करेगे. जब पुष्पकेलिये चावलों की कल्पना कियी गयी तो फलकेलिये न मळूम कौनसी चीज

हुंढनी होगी ? तद्यत् नैवेद्य दीप जल धूप और केशर वगेरामे ज्ञी तर्क वितर्क क्यौं नहीं ? उक्त (७) द्रव्यको एक थालीमें रखकर प्रतिमाके सन्मुख जेट करनेकों अर्घ्य बोलते है.

तेरहपंथीलोग जिसप्रकार पूजन करते है वह वीशपंथीयोकी पूजनसेज्ञी दूसरीप्रकार है. (१) प्रतिमाको स्नान नहीं कराते किंतु जलनाममात्र पूजनकेसमय एकजारीसे चरोमें गरते है,(२) चंदन नाममात्र घीसकर एकजलके लघुपात्रमें मिलालेते है और आवश्यकताके समय जलकी तरह जारीपर ढीडकते है.(३)अद्वैत-इसमें तेरहपंथी वीशपंथी वरावर चलतेहै. (४) पुष्पोंके स्थान कहीं कहीं केशरसें और कहीं कहीं हारशृंगार अथवा केशुकेफुलोंसे रंगकर चावल चढाते है. (५) धूप-इसविषयमें ज्जिन्नज्जिन्न विश्वास है. किसी नगरमें धूपायन होता है और किसीमें नहीं, और किसी नगरमेतो थोडासा धूप धूपायनमें और थोडासा पूर्वोक्त पुंजो पर डालते है और किसी नगरमें धूपायनमे नहीं डालते. (६) दीपक-ये लोक नहीं जलाते इसके स्थान नालियेरकी गीरीका बहोत ढोटा टुकडा पीला रंगकर पुंजोपर चढादेते है. (७) नैवेद्यके स्थान नालियेरकी गीरीका बहोत ढोटा खंड बिनारंगा श्वेत चढाते है. (८) फलको जगह नालियेरबादाम छुहारा इत्यादि सूके फल चढाते हे. अर्घ्य ये लोकज्ञी वीशपंथीयोके समान आ-ठोही द्रव्यका बनाते है परंतु द्रव्यमें जो कल्पना करलियी है उ सीमाफिक चढाते है. कितनेक इनमें ऐसेज्ञी है जो प्रतिमाकों स्नान कराते है कितनेक नहीं, और केशर वा चंदन चढीहुयी प्रतिमाको देखकर दुखी होतेहै और बचते है.

श्वेतांबरआम्नायमें त्रिषष्टिशलाका पुरुषको पदवीधर मानते है जिनमें (१४) तीर्थंकर तद्भव मुक्तिगामी (११) चक्री अंगर संयम आराधन करतेतो देवलोक वा मुक्ति जाय अन्यथा नरक गामी [ए] बलदेव नरकगामी नहीं किंतु देवलोकवा मुक्तगामी [ए] वासुदेव (ए) प्रतिवासुदेव निश्चय नरकगामी होते है. क्योंकि वे पिढले जन्मकी तपक्रिया पांचेंद्रियोंके विषयनिमित्त संकल्प करके उक्तपदवीकों पाये हुवे है. दिगंबर आम्नायमें [१६ए] पुरुषकों पदवीधर मानतेहै. [१४] कुलकर [१४] तीर्थंकरके पिता [१४) तीर्थंकरकी माता [१४] तीर्थंकर [१४] कामदेव [११] चक्री (ए) वासुदेव [ए] प्रतिवासुदेव (ए) बलदेव (ए) नारद और (११) रुद्र इनमें कितनेक जीवदोदो तीनतीन पदधारी हुवे जिससें (१६ए) की संख्यामें कमी हुयी. और हुंडावसर्पिणीकालदोष करके अच्छेरा हुवा मानते हे.

दिगंबर आम्नायमें तीन अष्टान्हिका-फाल्गुन-आषाढ-और कार्तिक महिनेकी सुदी(८) सें (१५) तक और ज्ञाड्पद सुदी(५) सें आसोज वदी (१)तक दशलाक्षणिकपर्व अथवा सोलहकार ए ज्ञावना व्रत आदि बडे पर्व गिने जाते है.

श्वेतांबर दिगंबरके वादानुवादमें मुख्य करके (८४) बोलका फर्क है, इसका असली कारण यह है कि दिगंबराचार्योंने छा-दशांगवानीके पुस्तक [जो शेष रहे है.] नहीं मानें और वृथा वारीकी ग्रहण किया.

दिगंबरोंके शास्त्रमें जगह जगह श्वेतांबरका खंमन किया है और श्वेतांबरोंके छादशांग शास्त्रमें दिगंबरका नाम जी नहीं.

इस प्रमाणसे जाना जाता है कि-श्वेतांबरशास्त्रसे दिगंबरके शास्त्र पीठे बने है, क्योंकि पहलेवालोंका खंमन पीठले करते है, पिताके विवाहका तमासा पुत्र नही देख सकता. हकीकतमें जब द्वादशांगवानी गणधरोने गूथन कियी थी तब दिगंबरमत कहाँ था ? जिससे उसका विवेचन किया जाय.

यद्यपि-श्वेतांबर दिगंबर दोनों कह रहे है कि-रिषभदेवसे लगाकर आजतक जितना जैनसंघ हुवा हमारे संघमें हुवा अर्थात् श्वेतांबर अपनेमें और दिगंबर अपनेमें हुवा बतलाते है. इसमें कौनका कहना सच्च और कौनका झूठ इस बातका नतीजा आजाय तो क्या ! अच्छीबात है ?-श्वेतांबर दिगंबर दोनोंको ढोड कर तिसरा कोइ परीक्षक इसके नतीजेपर खयाल करे तो प्रथम यही प्रश्न करेगाकि-तुमारे जिनेंद्र कितने ज्ञानी थे ?-उत्तर यही कहना होगा कि-अनंत ज्ञानवान् थे याने शर्वज्ञ सर्वदर्शी थे. उन्होंने जब धर्मोपदेश दिया तो किस किस पदार्थका दिया था? उत्तरजी यही कहना होगा कि-द्वादशांगवानीके पुस्तकोंमें जो जो पदार्थ कहे है उसका-जिस उपदेशकों उनके शिष्य गणधरो ने-(१) आचारांग-(२) सूत्रकृतांग-[३] स्थानांग-(४) समवायांग-[५] *विवाह प्रज्ञप्ति-(६) ज्ञाताधर्मकथा-(७) उपासक दशांग-(८)अंतकृतदशांग-(९) अनुत्तरोपपातिकादशांग-(१०) प्रश्नव्याकरण-(११) विपाक-और [१२] दृष्टिवाद-ये द्वादशांग सूत्रोंमें गूथन किया. श्वेतांबर इनको मान्य रखते है और इनके कथनानुसार सब कथन और प्रवृत्ति करते है. दिगंबर इनको

नही मानते और न उसत्रमुजब चलते है. किंतु धवल-महाधवल जयधवल-गोमदसार-आदिपुराण-हरिवंश पुराण वगेरा ग्रंथ जो उन्होके कहने मुजब (६७३) वर्ष महावीरनिर्वाणके बाद बनाये गये है उसमुजब चलते है उनमें जो जो कथन है उसीको सच्च मानते है. अंग शास्त्र जो उपर लिख चूके कहतेहै श्वेतांबरोनेनये बना लिये. जब सवाल किया जाता है कि-वे अंगशास्त्र बतला उ जो गणधरोने रचे है. तब उत्तर देते है वे सब विच्छेद हो गये. सोचनेकी जगह है जब द्वादशांगवानी ही विच्छेद हो गई तो जैनसंघ कैसे बना रहा ?-क्योंकि-द्वादशांगवानी जैनका मूल है. जब मुळ न रहा शाखा समूह कैसे रहा ?-धवल-जयधवल-महाधवल-गोमदसार-आदिपुराण-हरिवंशपुराण-वगेरा ग्रंथ किसवानीके अनुसार बनाये गये ? अगर द्वादशांगवानीके अनुसार बनाये है तो द्वादशांगवानीका विच्छेद होना कैसे कह सकते हो ?-अगर यह कहाजायकि-संपूर्ण द्वादशांगीके शास्त्र नही रहे अवयव है इसलिये वे मान्य नही हो सकते तो सोचो कि-चौदह पूर्वके आगे एक पूर्वज्ञी एक अवयव होनेसे मान्य न हो सकेगा, और वर्त्तमानमे जितने जैनशास्त्र है वे एक पूर्वपाठी मुनियोनेही [जितनापाठ उस वख्तमें शेष रहगयाथा] अनुसंधान किये है. फिर संपूर्ण जैनशास्त्रकोंही क्यों मानना? इनकार ही करने बैठे तो थोडा बहोत क्या ! सन्नी इनकार करदेना चाहिये.

आचारांग सूत्रकृतांग आदि. [११] अंगशास्त्र. जो अब मौजूद है इनको अगर कोई महाशय नये ठहराना चाहे तो नही ठहर सकते. क्योंकि इनमें जो आर्यावंद लिखे है [३३००]

वर्षकी ढंद रचनासें पुराने है. चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति उपांगसूत्र ग्रीकलोकोके हिंदुस्थानमें आये पहलेके है, इनमें जेसा कुछ ज्योतिष संबंधी वर्नन है ग्रीकलोकोके ज्योतिष् ग्रंथमें नही. कितनेक दिगंबर कहते है गोशालामंखपुत्र महावीरका शिष्य नही था, अगर था तो हमारे ग्रंथोंमें उसका वर्नन क्यों नही ?-इसका तात्पर्य यह है कि-जब दिगंबर ग्रंथ सब पीठोंसे ही बने तो उनमें असलीहाल कहांसें हो? बौधपीठकोमें देखिये! जहां महावीरकों और सुधर्मा गणधरकों बौधोंके प्रतिपत्नी लिखे है वहां गोशालामंखपुत्रका हालज्नी लिखा है वा नही? बौधपीठक (१०००) वर्षसें अधिक समयके बने हुवे है. क्या ! इनकोंज्नी नयें ही कहना होगा ?

दिगंबरआम्नायमें माना है महावीरके निर्वाणको जब (६८३) वर्ष बतीत हो चूकेथे तब धवल—जयधवल—महाधवल आदि शास्त्रकी रचना हुयी. इसके पहले कोइ ग्रंथ नही रचा गया, सोचनेकी जगह है कि—दिगंबरपट्टावलीमें जंबूस्वामीके पीठे-विष्णुकुमार--नंदीमित्र--अपराजित गोवर्धन--और भद्रबाहु ये (५) श्रुतकेवली हुवे लिखे है. भद्रबाहुके पीठे-विशाखाचार्य--पोष्टिलाचार्य--क्षत्रियाचार्य-जयसेन, सागरसेन-सिद्धार्थाचार्य-धृतिसेनाचार्य-विजयाचार्य-बुद्धलिंगाचार्य देवाचार्य—और धर्मसेनाचार्य-ये (११) कों-दशपूर्वधारी लिखेहै. धर्मसेनाचार्यके पीछे-नक्षत्राचार्य--जयपालाचार्य--पांडवाचार्य-ध्रुवसेनाचार्य--कंसाचार्य-सुभद्राचार्य-यसोभद्राचार्य-दूसरेभद्रबाहु-और लोहाचार्य-ये (९) कों-एकादस अंगधारी लिखेहै. लोहाचार्य महावीरके नि-

वर्णसैं (५६५) बाद देहांत हुवे. क्या ! इन सभी दिगंबराचार्योंने पूर्वोंके ज्ञानकों विछेद जाता देखकर दिगंबरसंघके हितार्थ कोइ शास्त्र नहीं रचा !--ज्ञानीपुरुष संघके हितमें न प्रवर्त्ते यह संभव नहीं होता सच्चहै कि-जो मनुष्य एकजगह विना विचारे बात कहता है उसकों अनेक जगह इसतिरह करना पमता है.

(३०००) वर्ष पहलेकी नशाकार दिगंबरमूर्ति आजतक को इ नहीं मिली, दिल्लीके पंमित शिवचंझजी (आम्नाय बोशपंथ) अपनी बनायी प्रश्नोत्तरदीपिका नामकी किताबमें प्रथमपृष्ठपर लिखते है कि-मांगीतुंगीके गजपंथके पहाडमें- वमोदेकेपास पावा गिरिमें-वमुवाणीके पहाडमें-दखनमें गिरिनारी गांवमें-कारकुलबगरकेपास पहाडके उपर-और रंगनगरके तालाववीच मंदिरमें-वगे रास्थानोपर दिगंबर आम्नायकी बहोतप्राचीन मूर्ति है. हमको यहां इतनाही लिखना बहात है कि-संवत् तिथि-प्रतिष्ठाचार्यके नाम बिदुन चाहे जितनी पुरानी और चौथेकालकी कह दो दिगंबर आम्नायके श्रावकसंघ सिवाय इतर मनुष्य नहीं मान सकते. जगवानधर्मादर्श किताबमें रचायिता लिखता है दिगंबर आम्नायके मंदिर (३००००) हजार-(३५०००) हजार वर्षके बने अब मौजूद है. और लखनऊके दिगंबरमंदिरमें विक्रम संवत् [१]की बनी हुयी मूर्ति धातुमय मौजूद है. हम यहां बहोत खुश होकर उस महाशयसैं निवेदन करते है कि-वे बीश पचीशहजार वर्षके बने मंदिर अब किस जगह खडे है ?-हमको नी बिदित कर दिजिये. उसी किताबमें पतेवार अग्रर आप लिख देते और

* (३४) पृष्ठकी किताब रसिककाशीप्रेस दिल्लीमें उपा है.

शिलालेखआदिकी सबूतें देते तो हमको मुंह खोलनेकी जगह न रहती. और लखनऊके मंदिरकी मूर्तिके प्रतिष्ठाकरनेवाले कौन आचार्य किसके शिष्य थे लिखदेते तो अलबते ! हमको मान्य करते इनकार न होता. महाशय ! पांचहजारवर्षकी इम्मारत वर्तमानमें मिलनी मुश्किल है. तो फिर बीस और पच्चीस हजारवर्षकी इम्मारतकों बतानेका दावा करना आपहीकी ताकाद है. हां ! अलबते, संवत् तिथि और प्रतिष्ठाचार्यके नामसाहित कोइ नग्न स्वरूप खमीमूर्ति दो अठाइहजारवर्षसें पुरानी निकल आवे. और उसप्रतिष्ठाकरनेवाले आचार्यका नाम कोइ प्राचीनग्रंथमें पाया जाय तो मान्य हो. परंतु आपके दिगंबरवसुनंदाश्रावका चारमें जहां मुनियोंकी पट्टावली लिखी है वहां (४) संघके अतिरिक्त और किसीकी प्रतिष्ठितप्रतिमा पूजनेयोग्य नहीं कही. उनसंघोंके नामके साथ नंदी-चंद्र-कीर्ति--और भूषण--ये चार उपनाम लगाये है, सो इनकी पट्टपरंपरायसें विमुख जो प्रतिमा दिगंबर लोक प्राचीन मानेगें उसका क्या प्रमाण देयगे ?-इसबातकों सोचो. क्योंकि-ये चारसंघतो विक्रमसें बहोत पीठेंके है. अर्थात् इसके पहलेकी प्रतिमापर किसका नाम होना चाहिये. जिसको वो मान्य रखेंगे एसा कीसी मीगंबर ग्रंथमेंहोना चाहिये. सो है नही.

पंमित शिवचरणजी कारकुल नगरके पास पहाडपर बहोत पुरानीमूर्ति बताते है उसका जेद डालिचंद्रपादिकश्रावक जयपुरवालेकी रची जैनयात्रादर्पणकी किताबसें खुल जाता है. दूसरे जग पृष्ठ (१७) पर देखो क्या लिखा है ?-“इहासें कारकुल

नगर दशमील है, उतरनेका ठिकाना जैनके मठमें है, इहां मंदिर अठारा बडेहै और यहां बेटा पर्वत है उसके उपर कोट बनाहै. इसके भीतर पथथरकी बडी बेदी है इसीके उपर बाहुवली स्वामीकी प्रतिमा कायोत्सर्ग उंची अंदाज नौ धनुष्यकी है, इनका पावका पंजा सवातीन हाथका लंबा है इनकी प्रतिष्ठा संवत् (१३५३) के सालकी हुयी है-”

जैनबन्दी मोडवन्दीतीर्थके पास श्रवण बेळगुलगांवके नजदीक बाहुवलीजीकी प्रतिमा खडे आकार (१७) धनुष्य उंची जैनया त्रादर्पणके दुसरे भाग (१५) पृष्ठपर लिखी है. गोमटस्वामी बाहुवलीजीकाही नाम दिगंबर आमनायमें प्रसिद्ध है, उनकी प्रतिमा खडे योगकी होतीहै. चौइसतीर्थकरोंकी प्रतिमा पद्मासन होनेका लेख दिगंबर शास्त्रोंमें है और खडे आकारकी बनाना यद्यपि शास्त्राज्ञासैं विरुद्ध है तथापि जो प्रवृत्ति एकदफे चलपडी रुकनी मुश्किल है. इसप्रवृत्तिकेलिये केइ दिगंबर पांडितोंसे दर्याफतकिया जाता है तो बताते है केइतीर्थकर खडे खडे (खड्गासन) मुक्त हुवे है इसलिये यह प्रवृत्ति हुयी, जो प्रतिमा जैनबन्दीमें गोमटस्वामीकी पहाडमें उकेरी हुयी है उसमें कारिगरने यह बन्दी उत्तमता रखीहैकि-उसकी छाया उसीमें रहती है इधर उधर नही पडती. इसमें कोइ देवकारण नही किंतु कारिगरकी चतुराइ है. इसी गोमटस्वामीके बारेमें कितनेक दिगंबरपांडित एसाजी कहते हैं कि चामुंमरायके समयमें दिगंबराचार्य नेमिचंद्र-सिद्धांतचक्रवर्ती गोमदसारग्रंथके कर्ता विद्यमान थे. एकरोजकी बात है चामुंडरा यने प्रतिज्ञा लियीथी कि-मैं तीर्थकरभगवान्के दर्शन किये बिना

भोजन नही करुंगा. इसपर नेमिचंद्रजीने चक्रेश्वरीका आराधन किया तो उसने स्वप्न दियाकि--चामुंडराजा इसपहाडपर बाए मारेगातो पर्वत फटकर एक प्रतिमा निकलेगी. सोतघत्हीकिया गया. उससमयकी यह प्रतिमा है और यही कारण है जो इस प्रतिमाकी ढाया नही पडती और कायी नही जमती. परंतु यह विश्वास उनका भोले लोकोकों भूलमें डालनेकेलियेहै. गोमट स्वामीकी प्रतिमाके निकट इशान और नैरुत्यकों पहाड उंचा होनेके कारण सूर्यके उदय अस्त और थोडे दिन चढेतकतो पहामकी ढाया बनी रहती है. जब मध्यान्ह होताहै तो प्रतिमाकी उंचाइ उत्तरकों झुकी हुइ होनेके कारण संपूर्णढाया उसकी उसीपर रहतीहै, इधर उधर नही पमती. और उसपर कायी इसलिये नही जमती कि-वह एकही पाषाण है यदि टुक टुक जुडे हुवे होते तो जोडके उपर अवश्य कायी जमती बाजे पाषाणभी एसा होता है जिसपर कायी नही आती, इसमें चक्रेश्वरी आदि देवताकी करामात कहना ठीक नही है.

कितनेक दिगंबर एसाज्जी कहते है कि-हमारा एकमंदिर दखनदेशके एक सरोवरमें है वहां हमलोक थालीमें पूजाकीसाम ग्री रखकर प्रवाहित करदेते है तब वह थाली मंदिरमें जायकर सामग्री वेदीमें चढाती है और आप खाली होकर पीछें लोट आतीहै. सो इस बातको देवताकी करामात समझना बहोत बडी भूल है. प्रथमतो जो बात सुनी होती है जब उसकों बुद्धिमान् आंखोंसे देखते है बहोत थोमी होजाती है. और यदि अनुमान घारा उसकों ठीकज्जी मानलिया जावे तो एसा समझमेंभी आ

शकता है कि-यदि चूंकपापाणकी प्रतिमा बनाकर किसी सरो वरमें वेदीपर उंची रखी जावे और दुर खडा होकर लोहेकी थाली या पात्रमें कोइवस्तु उसके सन्मुख गोमदेवे तो उसपापाण की आकर्षणशक्ति उसको अवश्य मूर्तिकी तर्फ खेंच लेयगी और यहभी निश्चय है कि-जब वो पात्र मूर्तितक पहोच जायगा तो उंचा नीचा होकर खालीज्नी हो जायगा परंतु इसमें इतना असंभव है कि-थाली लोटकर नहीं आशकती परंतु जिसमनुष्यने यह चतुराई रखी है कि-वह थाली वहां चली जाय तो जलके बहाव की तर्फ ध्यानदेनेसें यहज्नी निश्चय होशकता है कि-थाली निश्चय लोटकर आजाती होगी. क्योंकि-बहावके सन्मुख आनेपर कोइ वस्तु रुक नहीं शकती. बराबर प्रवाहमें वह चलती है.

हवनकुंडमेंसें बहुधा भट्टारक और उनकेचले पंमित लोक भोलि मनुष्योंके भ्रमानेकेलिये जो वस्तु उनके सन्मुख होते हुवे अग्निमें डालदेते है जैसेकि-चूंदनी नादियेर बगेरा. और पुनः विना जली नीकाल देते है सो इसमेंज्नी कोइ करामात नहीं. केइ वस्तु एसी है जिसको पानीमें जलमय करके उसमें भोंगोकर जिसवस्तुको जलाया जाय वह प्रगटपने सबको जलती दिखेगी. परंतु असलमें उसका आग्निसंस्कार न होगा. जैसी है वेसी बनी रहगी. इसीप्रकार कोइ दवाइके योगसें वेह-लोकभी जलीवस्तुको पुनःनिकालकर अपनी करामात सिध्द करते है.

निदान !-दिगंबरमतके--जैनवद्री मोडबछी मांगीतुंगी मुक्ता गिरि सोनागिरि बगेरा-तीर्थोंमें (१०००) वर्षसें पहेलेकी कोइ मूर्ति नहीं. गोपाचल दुर्गमें याने, ग्वालीयरके किलेमे पहाडपर

उकेरी हुयी खडे और बेंठे आकार जितनी है सब संवत् [१४९७] से लगा-(१५२०) तकको है. सासबहुके मंदिरमें दोनों फाटकपर जो दोशिला लेख आमनेसामने दिवारमें जडे हुवे है उसमें लिखा है संवत् [११५०] आश्विन शुक्ला पंचमीके रौज यह पद्म प्रभुका मंदिर बना, परंतु हकीकतमें यह मंदीर दिगंबरमतका विदित नही होता, बौधमंदिरमें दिगंबरोंने पिछेसे अपना दखल किया अनुमित होता है, क्योंकि दिगंबरआम्नायकी कोइ मूर्ति इसमें न दिवारपर और न वेदीमें है चारोंआरकी दिवारमें उकेरी हुयी जो जो मूर्ति है सब बौधमतकी है. जैनबोधके वर्ननमें बौध मूर्तिके चिन्ह जो लिख चूके उनमें केवल इतना फर्क है कि—ये खडे आकार और चारहाथवाली है. इसरा दिगंबर वेदिकाका कोइ आकार नही न कोइ चिन्ह. किंतु बौधमतके मंदिर और बेदीका पूरापूरा आकार है. बौधोमें यह रिवाज है कि— एकमुर्ति गौतम बुधकी ठीकबीचमें बैठे आकार स्थापन करके चौफेर मौदगलायन शौरीपुत्र आनंद वगेरा शिष्यसंप्रदायकी मूर्ति उपदेश सुननेके लिये स्थापित कीयी जाती है. इसरिवाजका हेतु यही ज्ञात होता है कि—कच्ची दंगाफीसात होजाय तो उनमूर्तियोंको शिघ्र उठा लियी जावे. सो इसमंदिरमें जो वेदिका है इसके देखनेसे सारा मंदिर बौधोका विदित होता है दिगंबरोंने अपना दखल करके पिछेसे लेख लगवाये है. दखनकी तर्फके दरवजेको पीछामुसे बंद करके एक कोटडी बनायी है जो कि—मंदिरबर्नके बाद बनी हुई है, इसकी दिवारमें कोइ चित्र नही अगर मंदिरबना तच्चीकी यह कोटडी होती तो उसमें चित्रजी जरूर होते, जैसेकी—मंदिरमें

है. इसलिये कह सकते है कोटडी पिछेसे वनी और मंदिर पह लेका था. सासवहूके मंदिरसे दाहने पासे जो दूसरा छोटा मंदि रहैवहन्नी इसोमंदिरकी कतावजामें मिलता होनेसे वौधोका ही होना चाहिये. मूर्ति दोनो मंदिरमें नही खाली पडे है. गंगोला झीलके सामने जो तेलीकीजाट कही जाती है इसमें न जैनकी न वौधकी किसीकी मूर्ति स्थापित नही. किंतु चौफेर जो थंने जमीनमें गाडकर खडे किये है उनमें केइ मूर्ति जैनकी और वौ धकीजी है.

शीशमहेलके नीचे होकर जिसदरवजेसे गवालियरको उतरते है वहांपर दाहनेपासे जो चतुर्भुजका मंदिरहै उसमें गौतमबुध को खमे आकार मूर्ति अंदाज गजभर उंची है, मौद्गलायन शौरीपुत्र दोशिष्य दोनोतर्फ खमे है. औरन्नी केइ चले वास्ते धर्मोपदेश सुननेको बैठे है. इसके दरवजेपर और मंदिरके भीतर की दिवारपर शिला लेख लगे हुवे है. इन प्रमाणोसे कह सकतेहै- कि-इस दुर्गमें वौधोका जलसाजी पहले वीत चूका है.

शहर लश्करमें चंपावागके दिगंबर मंदिरमें संवत् (१२२६) आश्विन शुक्ल (६)की- प्रतिष्ठित मुनिसुव्रतस्वामीकी प्रतिमा पद्मासन है इससे पुरानी कोइ नही.

श्वेतांबर आम्नायकी प्राचीनताकेलिये अन्वेषण करते है तो प्रथम श्रीमहावीरके निर्वाणसे कुल [७०] वर्ष बादकी श्री रत्नप्रज्ञसूरि प्रतिष्ठित महावीरस्वामीकी प्रतिमा कोरंटनगरमें मिलती है. कोरंटनगर मारवाडमें एरणपुरकी ढावनीसे (६) को सपर जिसको आजकल कोरटागांव बोलते है मौजूद है. रत्नप्रभ

स्मारि उपकेश गजमें हुवे जो कि-पार्श्वनाथकी पट्टपरंपराकेथे इस विषयको सबूती उशियानगरीके शिला लेखसें मिलती है. उशि या नगरी जोधपुरके पास पुराना गांव उजडप्राय यहांपर श्वेतांबर आमनायका मंदिर और लेख उसवख्तके बने हुवे विद्यमान है. महावीरके बाद (३६०) वर्ष व्यतीत होनेपर उज्जयिनीका राजा संप्रति हुवा. उसके बनाये श्वेतांबरमंदिर.शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थपर मिलते है. राजावासुदेव संवत् [६०] की प्रतिष्ठित प्रतिमा महावीरस्वामीकी जो सर, ए, कनिंगहामसाहबने इस्वीसन (१८७६) में मथुराके जैनटीलेसें पायी है. उसके नीचेका लेख पालीभाषामें इतिहास तिमिरनाशकके [६] पृष्ठपर उपा है. पाली भाषा दाअ्रढाइ हजारवर्ष पहले लिखोजातीथी यह इतिहास कारोंका मत है. कनिष्कराज्यके संवत् [६०]-प्रथममास-तिथि पंचमी-महावीरस्वामीकी प्रतिमा प्रतिष्ठा कौटिकगण वाणिज्यकुल वयरीशाखाके आचार्यनागनंदीकी कियी हुयी-मथुराहीके जैनटी लेसें उक्त कनिंगहाम साहबने पायी और उसके लेखकी नकल बुद्धरसाहबने अपनी बनायी-"ओर्थेंटीसिटी औफ धीजैनट्मी शन"-किताबमें लिखी है, कनिष्कराजा इस्वीसन (४०) के आसन्न हुवा यह हंटरसाहवरचित हिंडस्थानके इतिहासमें लिखाहै.

हिंड थान और सिथिया बीचक राजाउसें पहलेक राजेका संवत् (३०) की बनी महावीरमूर्तिभी उक्त कनिंगहाम साहबने मथुराके जैनटीलेसें पायी और उसका लेखनी बुद्धरसाहवकी बनायी हुयी पूर्वोक्त किताबमें उपचूका है. जिनको शंसय हो देखलेवे. वस ! इनप्रमाणोसे श्वेतांबर आमनायकी प्राचीनताको

कोइ इनकार नही कर सकता, उदयपुरकेपास उडगांम जिसको शास्त्रमें आघाटपुर लिखा है यहां राजाभीमसेनका बनाया हुआ मंदिर है, जिसका लेख मंदिरके वहार हनुमानकेपास दिवारमें लगा हुआ है. मारवाममें शिरोहीकेनिकट नादियागाममें महावीर के बने भ्राता नंदीवर्द्धनकी बनायी महावीरकी प्रतिमा विद्यमान है. जिसको देखकर अह्सेअह्से कारिगरनी कहते है अपूर्व मूर्ति है. शत्रुंजय गिरनारसंम्मेतशिखर और राजगृहीके पंचपहाड ये जैनके सबसे ज्यादा पुराने तीर्थ है इनपर सबजगह श्वेतांबर आम्नायकी मालकी है. श्वेतांवराचार्य हीरविजयसूरिके बाद शाह अकबरने जो फुरमाने तांवेपत्रपर-लिखदिये है उनमें लिखा हैकि-सिंधाचलका पहाड-गिरनारका पहाड-तारंगाका पहाड केशरियाका पहाड-आबुका पहाड-(जो गुजरातमें है)-राजग्रहीके पंचपहाड-शंम्मेत शिखर उर्फे पारसनाथ जो बंगालमें है ये सत्री पूजाकी जगह और पहाडके नीचेकी जगह जो मेरेराज्यमें है चाहो किसी ठिकाने जैनश्वेतांबर धर्मकी हो वह श्वेतांबर धर्मके आचार्य हीरविजयसूरिको देनेमें आइ है, हकीकतमें ये पूर्वोक्त सभीजगह जैनश्वेतांबर धर्मवालोकी ही है. जबतक सूर्यसें दिनप्रकाशमान रहे और चंद्रमासें रात रोशन रहे-तबतक इसफुरमानका हुकम श्वेतांबर धर्मके लोकोमें सूर्यचंद्रमाकी तरह प्रकाशित रहे, कोइ आदमी इनको हरकत न करे, कोइ इनपहाडोपर-नीचे चारों ओरकी पूजाकी जगह-और तीर्थकी जगह जानवरको नमारे, इसहुकमपर अमल करे, इसहुकमसें न फिरे, नयी सनंद न मागे. लिखा तारिख [७] मी-माहे उर्दी बहेसमुताबेक माहे रवीयुल-अवलसने

(२७) जुलसी.

इसमें अकबर लिखता है कि-“हकीकतमें ये पूर्वोक्त जगह जैनश्वेतांबरवालोंकी ही है” सोचोकि-अगर ये पुरानेतीर्थ-दिगंबर आमनायके होतेतो वादशाहका लिखना ऐसा क्योंकर होशकता?

विना प्रमाण शंखनाद करनेको सब मुस्तेज हो जाते है लेकीन प्रमाणद्वारा किसीवस्तुके नतीजेपर खयाल किया जाय तो जो सच्चे है वही सच्चे रहेगै. सोचोकि-अंगशास्त्रोंको जब दिगंबरने न मान्य किये तन्नी [८४] वालोंका अंतर पडा और पैरु पैरुपर वादानुवाद पैदा हुवा. अगर अंगशास्त्रको मान्य रखते तो काहेको कोइ बातका अंतर आता ? अगर उतर दिया जाय कि-अंगशास्त्र पूरे नही रहे थोडे हिस्से रहगये इसलिये मान्य नही हो सकते-परंतु यह कहना बडी भूलहै. केवलज्ञानके आगे मति श्रुत अवधिज्ञान आदि थोडे हिस्से है. (१४) पूर्व-दृष्टिवादका तिसरा अध्ययन है. चौदहपूर्वमेंसेभी (१) पूर्व रहगरा तब जैनशास्त्र पुस्तकाकार लिखे गये. एकपूर्व चौदहपूर्वका एक हिस्सा हुवा अगर हिस्सेको न मानना इसीबातपर पावंद हो तो सभी सिद्धांतोंको मानना मोकुफ करदो. धवल-जयधवल-महा धवल-गोमट्टसार-आदिपुराण-हरिवंशपुराण वगेरा ग्रंथभी काहेको मानने ?-एकपूर्वपाठी मुनि अपने ज्ञानका हिस्सा प्रगटकरगयेहै और हिस्सेको अपने मान्य रखना मंजुर नही. बस ! यही बात विवादकी जड हुयी. श्वेतांबरने इस जमको मूलसे नासकर दियी और दिगंबरने इसको पुष्ट कियी. (८४) बोलका फर्क आया इसी जडका फल है.

(१)-दिगंबरकहते है श्वेतांबरमत हमारेमेसें निकसा है. दुर्जिन क्षसमय आचार न पालनेसें शिथिलाचार धारन किया श्वेतांबर हुवे. श्वेतांबर कहतेहै महावीरके निर्वाणसें (६०९) वर्षवाद हमारे श्वेतांबरमतमेसें आज्ञाभंगकर द्वादशांगवाणीको उथथापन किया दिगंबरहुवे जो इसहालकालमेंअभीतक पलता नही और नसाधु रहे. देखलियाजावेकि, जो सर्वज्ञकी आज्ञाभंगकर मनोकूलमत चलाव उसकी हानीहीहो. श्वेतांबरसें दिगंबरमत निकला इसका प्रमाण यह है दिगंबरके शास्त्रमें जगह जगह श्वेतांबरका खंडन कियाहै, और श्वेतांबरके मूल आगमोंमें दिगंबरमतका नामभी नहीदीखता. इसप्रमाणसें जानाजाताहै श्वेतांबरशास्त्रसें दिगंबरके शास्त्र पीठे बने. क्योंकि-पहलेवालोंका खंमन पीछले करते है, पिताकेविवाहका तमासा पुत्र नही देख सकता.

(२)-दिगंबरलोक श्वेतांबरको कहतेहै ये संसय मिथ्यादृष्टि है. उनके गोमटसागरग्रंथ [जो नेमिचंद्रआचार्यने संवत् [११३३] में बनाया है) में कहा हैं-"इंदोविय संसेयो"-परंतु यह कहना केवल पक्षपातकरके है. द्वादशांगवाणीको माननवाले सदासम्य गृहृष्टिहै वे दिगंबरके कहनसें मिथ्यात्वी नही होशकते. मिथ्या त्वी वो है जो द्वादशांगवाणीको उथथापते है. नयेग्रंथबनाकर स्वच्छंदतासें चलतेहै, और इसीसबबसें दिगंबरको एकांतमिथ्यादृष्टि एकपक्ष पकडनेवाले कहतेहै, सबबकि-द्वादशांगवाणीमें जो जिनकल्प और स्थविरकल्प दोप्रकारके मुनि होने कहे है जिसमें कहतेहै जिनकल्पमुनिकों हम मानेहै लेकीन उनकाभी यथार्थ स्वरूप नही जानते, न उनकी बराबर चलसकते, वृथा हठकरना

इसीलिये एकांतमिथ्यादृष्टिसँजी अधिक मिथ्यात्वी है. और स्थ-
विरकल्प मुनिकों मानना कहाहै उनकों नही मानते. अपनी
पक्षपातसँ जैनसंघका उध्थापन इसकालसँ करदिया, और जि-
नेद्रोंने पंचमकालके अंततक-साधु—साध्वी-श्रावक--श्राविका--
(चतुर्विधसंघ) रहना कहाहै. और दिगंबरके श्रावक श्राविका
दोही संघ रह गये. सोजीपूरे नही.

(३)-नाञ्जिकुलकर और मरुदेवीकों श्वेतांबर कहतेहै युगली
ये थे, और दिगंबरकहते है युगलीये नही थे, अन्यअन्य मातापिताके
जन्मे हुवेथे. इसका समाधान यहहैकि-नाञ्जिकुलकरके वरुतमें युग
लधर्म निवारण नही हुवाथा, क्योंकि-उसवरुत राजानही राणी
नही दासनही दासीनही खेतीनही वामी नही असीमषीकृषी
तीनप्रकारके कर्मनही और विवाहका होना नही था. इत्यादि
अकर्मभूमिका व्यवहार वर्त्तनेसँ युगलीयापनाही सिद्ध होताहै.
अगर कहोगे नाभिकुलकर और उनकी स्त्री मरुदेवीके अन्यअन्य
मातापिता थे तो दिखलाउ ! नाञ्जिकुलकरके पिताका नाम क्या
था ? और मरुदेवीके पिताकानाम क्या था ?-कोइ शास्त्रमेनही
है तो वृथा हठ क्यों करना !-युगलधर्म कब दुरहुवा ? इसका
विवेचन देखते है तो विदित होता है, जब रिषभदेवभग-
वान् राज्यगादीपर बैठे, असीमषीकृषी तीनप्रकारकेकर्म जब
उन्होंने प्रकाशितकिये-पुरुषकी (७२) कला-स्त्रीकी (६४)
कला-और (१००) प्रकारके शिल्प जब प्रचलित किये, और
कर्मभूमिपनेका प्रवर्त्तन शुरु हुवा तब युगलधर्म निवारण हुवायह
सबकोइ जैनी मान्य रखतेहै, इसके पहले युगलधर्मका निवारण

हुवा मानना युक्तिविकल है. अगर फिरभी हठ रखना मंजूर है तो बतलाउ ! रिषभदेवभगवान्के विवाहसमय इंद्रदेव क्यों आये? और विवाहकीरीति क्यों करवाइ? क्योंकि-दिगंबरके कहनेमुजब तो नाभिकुलकरके वखतसेही विवाहकी रीति शुरू होचुकीथी फिर उनके वखत इंद्रदेवोंके आनेसे क्या प्रयोजनथा ? अगर कहोंगे भक्तिकेलिये आये तो अन्यतीर्थकरोंके विवाहमें क्यों नहीं आये इसलिये श्वेतांबरका कहना सत्य ठहरताहैकि--नाभिकुलकरके वखत युगलधर्म निवारण नही हुवाथा.

(४)-मुनिसुव्रततीर्थकर जब केवलीअवस्थामें ग्रामानुग्राम विचरतेथे तब भृगुकञ्च (जरुच) नगरमें अश्वमेधयज्ञ ब्राह्मणोंने कियाथा, जिसघोमेकों होमनेकेलिये लायेथे वहघोमा पूर्वजन्ममें मुनिसुव्रतस्वामीका मित्र था, केवलज्ञानसे इसवातकों जानकर स्वामी भृगुकञ्चनगर आये, घोमेकों प्रतिबोध दिया, उसकों जाति-स्मरण ज्ञानहुवा और अनशनकरके आठमेंदेवलोकमें देवपने उत्पन्न हुवा, यहवात शत्रुंजयमहात्ममें लिखीहै, देवगतिका आयुष्य पुरा करके फिर वह मनुष्य होगा तब अनागतकालकी चोविशीमें गणधरपदवी पावेगा, इसवातकों विनासमझे दिगंबराचार्य कहतेहै कि-श्वेतांबरमें मुनिसुव्रतस्वामीका घोमा गणधर हुवा मानते है, परंतु इसमें दिगंबराचार्यकी समझका फर्क है श्वेतांबरमान्य शास्त्रमें कोइजगह नही लिखाकि-घोमा गणधर हुवा.

(चोपाइ.)-मुनिसुव्रतकों गणधर घोरो-एसो कहे सो जाने थोरो,
बुजे नही असमंजस बोले-सो संतनमें तृणके तोले,
कुन गणधर इहां घोरो भाख्यो-ब्रूठो आल मुगधने दाख्यो,

आंखिको औषध काने बांहे- ताकों कुन गहि बांह निभावे,
अगर किसी दिगंबरभट्टारक-पंमित-या-श्रावककों यह गर्व
रहता हो कि-हमारे आचार्य झूठ कैसे कहे? तो उचित है कि-श्वेतां-
बरके किसी शास्त्रमेंनी मुनिसुव्रतस्वामीका गणधर घोडा हुवा
असापाठ लिखलावे.

(५)-श्वेतांबरलोग अंतराय (५)-दान, लाज, जोग, उपजोग,
और वीर्य (पराक्रम)-हास्य-जय-रति-अरति-शोक-डगंछा-काम-
मिथ्यात्व-अज्ञान-निष्ठा-अविरति-राग और द्वेष-येह (१७) दोष-
करके केवलीकों रहित मानते है, दिगंबर ये (१७) दोष विपर्यय
मानतहै, जैसे-क्षुधा-तृषा जय-शोक-रोग-जरा-मरण-जन्म-मद-मोह-
स्नेद-प्रस्वेद नींद-विस्मय-चिंता गद-रति-और विषाद-येह अठाराह
दोष मानतेहै और कहतेहै येह अठारा दोष केवलीमें नहोने चाहिये.
परंतु यह कहना वृथा है, क्योंकि-केवलज्ञान जो हुवाहै सो(४)
घातीकर्मके दूरहोनेसे हुवा है सो इन (४) घातीकर्मके दोषोंका
अज्ञाव केवलीमें होना चाहिये अघातीकर्मके दोषोंका अज्ञाव
न होना चाहिये. दिगंबरने अघातीकर्मके दोषोंका अभाव माना
है. जैसे क्षुधा-तृषा-मरण-रोग आदि ये अघातीकर्मके दोषोंका
सद्ज्ञाव है सो केवलज्ञानहोनेसे दूर नही होशकता. क्योंकि-
केवलज्ञान हुवेबादनी-वेदनीकर्म-नामकर्म गोत्रकर्म-और आयुष्य-
कर्म-ये (४) अघातीकर्म बाकी रहतेहै सो येह दोषतरीके गीने नही
जाते, क्योंकि ये दोष चारगतिमें रुलानेको समर्थ नही. अगर
इनकों दोष मानतेहो तो नरगतिप्रमुख अन्यनी केइ दोष मानो.

(६) दिगंबर केइतहै केवलीके(४) कर्म जरीजवरी याने दग्धरज्जु-

समान विफल है श्वेतांबरकहतेहै मोहकर्मके अज्ञावसें संसारमें न रुलानेकी अपेक्षा वें विफल है, लेकीन उदयकी अपेक्षा विफल नहीं, अगर उदयको अपेक्षाभी विफल ही है तो आयुष्यकर्म विफल होनेसें उसी वखत मुक्ति चलेजाना चाहिये, नामकर्मके विफलहोनेसें यशःकीर्ति न होना चाहिये, गात्रकर्मकविफलहोनेसें तीर्थकरगोत्रका अज्ञाव होना चाहियं, वेदनीकर्मकविफलहोनेसें निराबाधपना होना चाहिये, परंतु ये बातें जबतक वे मुक्त नहीं हुवे है तबतक है नहीं, बल्कि-चारों अघातीकर्मके उदयसें चारोंहो बातें उनमें प्रत्यक्ष विद्यमान है. फिर कैसेकहशकंतहे कि-केवलीके चारकर्म विफल है केवलीकों ज्ञानावरणकर्म कृत्यहोनेसें अनंत-ज्ञान-दर्शनावरण कृत्यहोनेसें अनंतदर्शन-मोहनीकर्मके दोषेद जिसमे दर्शनमोहनीके कृत्य होनेसें क्लायिकशुद्ध सम्यक्त और चारित्रमोहनीके कृत्य होनेसे क्लायिकशुद्ध चारित्र-और अंतरायकर्म कृत्य होनेसें अनंतवीर्य ये (४) गुण प्रकट हुवे है, जब अघाती कर्मकृत्य जायगे तब सिद्ध अवस्थामें (४)गुण और प्रकट होयगे जैसे वेदनी कर्मके कृत्यसें अनंतसुख (अव्याबाधपना) नाम कर्मके कृत्यसें (अगुरुलघुत्व)-और आयुष्य कर्मके कृत्यसें अकृत्यस्थिति-ये (८) गुण सिद्धाँके हुवे.

(७)-दिगंबर कहते है केवलज्ञान होतेही केवलीकी काया सातधातवर्जित होजाती है, इसपर श्वेतांबर पूछते है सातधातवर्जित होनेका कारण क्या ! केवलज्ञान हुवा ?-तो पांच या चार धातवर्जितका कारण मनःपर्याय ज्ञान नही होना चाहिये, अगर मनःपर्याय ज्ञानभी कहोगे होता है तो गणधरोकी भी पांच

या चार धातवर्जित काया कहना चाहिये, और कही नहीं, इस लिये यह कहना ठीक नहीं कि—ज्ञानके प्रकाश होनेसे शरीरकी धातवर्जित हो जाय अगर ऐसा होता तो एक एक ज्ञानकी वृद्धिसे एक एक या दोदो धातकावर्जित होना सब जीवोंको होता. ज्ञानका लाभ यह है कि—ज्ञेयपदार्थका जानना सात धातका और संहननका नाश होना ज्ञानावरणकर्मके नाश होनेसे नहीं होता. केवलज्ञान होनेसे ज्ञानका प्रकाश हुवा शरीर शांघन नहीं हुवा, जो सातधात न रहे. उदारिक शरीरमें संहनन होता है, संहननका होना अस्थि मांस विना नहीं होता वैक्रियशरीरमें संहनन नहीं इसी लिये वह हाम मांस करके भी वर्जित होता है. उदारिकशरीरको सातधातकरके वर्जित कहना ठीक नहीं.

(७)—दिगंबर कहते है तीर्थकर केवलज्ञान हुये पीठे आकाशमें चलते है अर्थात् जमीनपर देवरचित कमल और कमलके उपर अस्पृश्य होकर आप चलते है. सोचनेकी जगह है कि अगर तीर्थकर जगवान् आकाशमेंही चलतेहै तो देवकी कमल रचना एक व्यर्थसी हुइ. तीनज्ञानके धारक देव मूर्ख नहीं है, जब वे जानतेथेकि जगवान् आकाशमें चलतेहै तो व्यर्थ कमल रचना क्यों करते ? कमलकी रचना करनेका प्रयोजन यही कहा जाताहैकि-जमीनकी रज भगवान्केचरणोंको न लगे. जक्तामर स्तोत्र दिगंबर श्वेतांबर दोनों आमनायवाले मानते है उसीमें क्या!

लिखाहै ? देखो ! } पादौ पदानि तत्र यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः
 } पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति.

इसपाठके अर्थपर दृष्टि देतेहैतो श्वेतांबरका कहना ठीक यचताहैकि-कमलपर भगवान् पैर देकर ही चलतेहै.

[ए]-दिगंबरकहतेहै केवलीके शरीरसें द्रव्य हिंसा नहीं होती, श्वेतांबरकहतेहै होतीहै, क्योंकि- केवली सयोगीहै. योगहै सो सकंपमान सव्यापार है. सव्यापार होनेसें सक्रिय है. जो जो सक्रियहै उससें द्रव्यहिंसा वच नहीं सकती. दिगंबर आम्नायके द्रव्यसंग्रहकी वृत्तिमें जहां चारित्रका अधिकार चलाहै लिखाहै कि-योगत्रयके व्यापारसें जिनेश्वरजी चारित्रको मलीन करतेहै. इसका पाठ इस प्रकार है. संयोगि केवलीनो यथाख्यातंचारित्रं- ननुपरमयथाख्यातं चौराज्ञावोपि चौरसंसर्गिन्वत् मोहोदयाभावेपि योगत्रयव्यापारश्चारित्रमलं जनयतीतिद्रव्यसंग्रहवृत्तौ--कोइ इसमें तर्क करेकि-केवलज्ञानी सब जीवोंको ज्ञानमें देखरहेहै फिर कैसे हिंसा करेंगे ?-इसका उत्तर-केवलज्ञानसें बेशक देखरहेहै उनका इरादा हिंसा करनेका नहीं इसलिये उनको पापनी नहीं लगता परंतु कायाकरके पाचस्थावरोकी जो हिंसा होरही है उसको कैसे वचाय सकते है ?-इसपर कहाजायकि-द्रव्यहिंसा तो होती है लेकीन कहनेमात्रही है तो कहिये ! क्या ! ! उनस्थावरजीवोंका मृत्यु नहीं हुवा ?-फिर यह कहाजायकि--उनको पाप नहीं लगता इस अपेक्षा कहने मात्र है तो श्वेतांबर और क्या कहते है ? वेभी तो यही कहतेहै कि--द्रव्यहिंसा हुयी याने उनजीवोंका मृत्यु हुवा परंतु पाप नहीं लगा याने ज्ञाव करके हिंसा नहीं हुयी परंतु द्रव्य हिंसाका अज्ञाव तो नहीं हुवा ?-अर्थात् इयांपथिकी क्रिया तो लगी. क्योंकि-तेरहमें गुणस्थानपरजी इयांपथिकी क्रिया कही है.

(१०)-दिगंबरकहतेहै केवली कवलाहार नहीं करते नोकर्म वर्गणाहार करतेहै, श्वेतांबरकहतेहै कवलाहारही करते है, इसका समाधान-अगर कवलाहार केवली नहीं करतेहै तो सोचोकि-छोटी उमरमें किसीमनिकों केवलज्ञान होगया और उनकी उमर विशेष है तो उनके शरीरकी वधवारी किसकारणसे होगी. दांनों आमनायमें यहबात मंजुरहैकि-जघन्यसें आठवर्षकी उमरवालेकों केवलज्ञान होजाय और उनकी उत्कृष्ट आयुस्थिति किसीकिसीकी क्रोडपूर्वकीप्ती होती है. अगर कहोगे कवलाहार नहीं करते और वृद्धि होती है तो सवालहोनेकी जगह है क्या ! शरीरकी वृद्धि ज्ञानमें हुयी ? अगरजो ज्ञानसें हुयी तौ क्या ! चैतन्य स्वभावसें शरीरकी वृद्धि मानतेहो ?-ऐसा मानो तो आत्मस्वभाव जड हुवा, क्योंकि-जडसें जडकी वृद्धि होती है, ज्ञानसें जडकी वृद्धि नहीं, ज्ञानसेंतो ज्ञातृत्वशक्तिकी वृद्धि होतीहै जडकी वृद्धि नहीं होता. इसलिये केवलीकों कवलाहारही कहना ठीक है.

[सवेया.]

केवलीआहारकरे जागेअग्निअंतरकी वेदनीआहारशक्ति ताकी-नहीहीनता, हेतुकेसमाजतें घटेजुंकाजसाजथुध्र लाजे तहांआज लुंक हानीकहादीनता, अन्यथा न अष्टवर्ष वालकेवली विशाल पूर्वकोटिआउपाल ताकूंवृद्धिखीनता वृद्धि पोषदाइजाइ वर्गणा करांसुपाइ ? ज्ञानते जू आइ तामें मुक्तिकी प्रवीणता.

नो कर्मवर्गणा आहार कहना ठीक नहीं. कर्मोंकी प्रकृतिका जो उदय-उसका जो भोगना उसीको दिगंबर लोग नोकर्मवर्गणा, अहार कहते है. यहां सवाल होनेकी जगह

है कि-इसके आहार करनेसे क्षुधातृषादि जो शरीरको लग रहे है उनकी तृप्ति कैसे हो सकता है ?-इसलिये कवलाहारही कहना ठीक है. उदारिक शरीरकी स्थिति कवलाहारहीसे है अन्यथा प्रत्यक्षविरोध होता है. तत्त्वार्थसूत्रके नवमें अध्यायमें जहां परिसहोका वर्णन है वहां लिखा है. मोक्षाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याःपरिसहाः-क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यरतिस्त्री चर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचनालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि सूक्ष्मनंपराय षड्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश एकादशजिने-वादरसांपराये सर्वे-ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने-दर्शनमोहांतराययोःदर्शनालाञ्छौ-चारित्रमोहे नाग्न्यरतिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः वेदनीयेशेषाः-एकादयोभाज्याः-युगपदेकास्मिन्नक्रोनविंशतेः-अर्थः-ज्ञानावरण-दर्शनावरण-मोह-अंतराय-और वेदनी इन पांच कर्मोंके उदयसे परिसह उत्पन्न होते है और इनको मोक्षार्थीजीव निर्जरार्थ और मोक्षमार्गसे अच्यवनार्थ सहन करते है. सूक्ष्मसांपराय और षड्मस्थवीतराग गुणस्थानवर्तीको-क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, अलाभ, प्रज्ञा, अज्ञान, शय्या, वध, रोग, तृण स्पर्श, और मल, ये (१४) परिसह होते है, -एकादशजिने-अर्थात् तेरहमें गुणस्थानवर्तीको-क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, शय्या, वध रोग, तृण स्पर्श, और मल, -ये (११) परिसह होते है. क्योंकि-तेरहमें गुणस्थानपर परिसह उत्पन्न करनेवाला एक वेदनी ही कर्म रहा है. वादरसांपराय गुणस्थानवर्तीको (१२) परिसह उत्पन्न होते है. किसीको एक-किसीको दो-किसीको तीन-इ-

सी प्रकार किनीको संपूर्ण परिसहोंका उदय हो जाय तो (१७) परिसहसे अधिकका उदय न हो. क्यों कि-जहां शीत वहां उष्ण नहीं और जहां उष्ण वहां शीत नहीं. जहां चर्या वहां शय्या निषद्या नहीं; जहां शय्या वहां चर्या निषद्या नहीं, और जहां निषद्या वहां शय्या चर्या नहीं. बाइसपरिसहोंमें प्रज्ञा और अज्ञान यह दो परिसह ज्ञानावरण कर्मके उदयसे होते है दर्शन और अलाभ यह दो दर्शनमोह और अंतरायकर्मके उदयसे होते है. नाग्न्य-अराते-स्त्री-निषद्या-आक्रोश-याचना-और सत्कारपुरस्कार-यह सातपरिसह चारित्र मोहकर्मके उदयसे होते हैं क्षुधा-तृषा-शीत-उष्ण दंशमशक-चर्या-शय्या-वध-रोग-तृष्णास्पर्श-और मल ये (११) ग्यारहपरिसह वेदनीकर्मके उदयसे होत है. केवलीकों वेदनीकर्म मौजूद है इसीलिये उनको ग्यारहपरिसह का सद्भाव कहा. फिर क्षुधा तृषाका अभाव कैसे कह सकते हो ?-क्यों कि-केवलज्ञान हुवे पहले भी वेदनीकर्मजन्य ग्यारह परिसह उनका थे वेही ग्यारहपरिसह केवलज्ञान हुवे पीछे भी रहे तो कवलाहार करना सिद्ध हुआही. विना कवलाहार जैसे पहले कायाकी स्थिति नहीं होसकतीथी तद्यत् केवली अवस्थामें भी नहीं होसकती. अगर कहोगं केवलज्ञानसे शरीरकी स्थिति होतो है तो यह बात वृथा है. केवल ज्ञानकाविषय ज्ञेयपदार्थके जाननेका है. शरीरकी स्थिति या वृद्धि करनेका नहीं.

दिगंबर इसपर कहते है ग्यारहपरिसह जो तत्त्वार्थसूत्रमें लिखेहै वे बेशक ! केवलीको है लेकिन उपचारमात्रहै कुञ्जकार्यकारी नहीं. श्वेतांबरकहतेहै यह कहना ठीक नहीं. ग्यारहपरिसह

उनके शरीरपर वर्तते है जबतक वेदनीकर्म नहीं छूटाहे तबतक उपचारमात्र कैसे कहसकतेहो ?-उपचार उसकों कहतेहै जो बात वास्तवमें न हो और आरोप करके कहीजाय-उपचारका लक्षण. अन्यत्रप्रसिद्धस्य धर्मस्य अन्यत्रारोपणमुपचारः सो क्या ग्यारहपरिसह केवलीमें नहीं है?--वृथाही कहना पडता है?--अगर वृथाही कहते हो तो वेदनीआदि चार अघातीकर्म है वेजी वृथा कहो. जब अघातीकर्म वृथा हुवे तो चारघातीकर्मके नाश होतेही मुक्ति होजाना चाहिये. और होते नहीं-बतलाइये ? फिर मुक्त होतेंको रोकनेमें दूसरा कौन कारण रहा ?-इसलिये चारअघाती कर्मकों कार्यकारी मानना चाहिये. जो उनको मुक्ति जानेसे रोक रहेहै. इनकों उपचारमात्र कहना वृथा हे. दिगंबरने केवलीको अठाराह दोष करके रहित माना उसमेंजी विरुद्धता है. सोचो कि-एकादशजिने-अर्थात् केवलीकों (११) परिसहजी बतलातेहै. और क्षुधा, तृषादिकदोष रहितभी कहते जातेहै. ऐसा विरुद्ध वचन कैसे संभवे ?-हकीकतमें तो दिगंबरोंने द्वादशांगवानीके सिद्धांत उध्यापन किये तब ऐसी कल्पितवातोंका सहारा लेना पडा सच्च है कि-जो मनुष्य कल्पित शास्त्र गुंथे उनका ऐसाही विरुद्ध आशय होता है. और बातवातमें अटकना पडता है. इसलिये केवलोको कवलाहारकरना सिद्ध हुवा. इसवातमें दिगंबर वृथा हठ करते है.

फिर दिगंबरोंका कहना यहहैकि-केवली आहारकरतेसमय जब ग्रास उठायगें तो मूर्छा आयी, इसपरश्वेतांबरका कहतेहै केवली विहारकरतेसमय जब कदम उठाते है समवसरणमें सिंहासन

परबैठतेहै तबजी कहो मूर्छा आयी. तो ऐसा कहना ठीक नही, मोह कर्मकेनाशसें मूर्छाका अज्ञावतो उनको पहलेही हो चुकाहै. फिर मूर्छाका कहना पापबंधका कारणहै. वृथाकुतर्क करना ठीक नही. दिगंबरआम्नायमें तत्वार्थसूत्र प्रमाणहै सो वोजी श्वेतांबर आचार्य जमास्वातिका रचाहुवा है. हठकरके दिगंबरोंने अप ना मानलियाहै उसके अक्षरार्थ देखनेसेंजी क्षुधा तृषादि परिसह केवलीको रहे और कवलाआहार सिद्ध हुवा. फिर न मालूम दिगंबरलोक कौन ग्रंथके प्रमाणकरके कवलाहार नही मानते है?—फिर दिगंबर कहते है क्या ! अशातावेदनी कर्मजी केवली को है ?—उत्तर—शाता अशातावेदनी दोनो केवलीको है. अगर अशातावेदनी कर्म न होता तो किसकर्मकी निर्जरार्थ उनको परिसहसहन करना कहा !—अलबते ! इतना जरूर हैकि—उनको शातावेदनी कर्मका उदय ज्यादाहै अशातावेदनीका थो मा है, लेकीन है दोनो—फिर दिगंबरका कहनाहै कि—जब उन्हों ने कवलाहार करलिया तो क्षुधा तृषादि परिसहकासहना कहा रहा ?—उत्तर—क्यों नही रहा !—सोचोकि—केवलज्ञानमें उन्होंको ज्ञासन हुवा अमूक समयमें हमको आहार लेना होगा. जबतक वहसमय नही आयाहै उससें पहले समझो उनको अशातावेदनीके उदयसें क्षुधातृषाका सद्भाव हुवा उतनाकाल वह उसको सहन करेगे वही उनको क्षुधा तृषा परिसह सहना है. अगर इसबातको नही मानते हो तो (११) परिसहभी न मानना चाहिये. वस ! तत्वार्थसूत्रके एकादशजिने—इसपाठपर कलम फेरदो. केवलीको क्षुधातृषाका सद्भाव सुनकर नाराजी आतीहै तोशीत

उश्रपरिसहके लियेजी इनकार करदो. और यहभी कहदो कि-दंशमशकजी उनके शरीरपर नही बैठने पाते. फिर चर्या-शय्या-वध-रोग-तृणस्पर्श-और मल ये परिसहजी काहेको कहना? जब क्षुधातृषा उध्थापन कियी तो और परिसहजी नही मानना चाहिये. जब और परिसहभी नही माने तो आज्ञाभंगका दूषण आया और तत्त्वार्थसूत्रकी सनंद नही रही. अगर फिर यह तर्क कियीजायकि-आहारकरलिया तो परिसह सहना कहां रहा? इसका उत्तर-केवली जब उग्रस्थ थे तबजी आहार करतेथे और परिसह सहन होता था तद्यत् केवल अवस्थामेंभी आहार किया और अशातावेदनीकी निर्जरार्थ परिसह सहन करते रहे इसमें विरोध क्या ! हुवा ?-विना विचारे तर्क करना वृथा है. अगर कहोगे उनका अनंतबल कहां रहा? हमकहते है अनंतबल क्यों नही रहा ?-बलका अस्तित्व जो है सो उनमें मौजूद है जो अंतरायकर्मके क्षयसें हुवाहै उसको आहारके पुद्गल आवरण नही करशक्ते जिससें अनंत बल घट जाय, आहार अनंतबल घटाने बढ़ानेका कारण नही. अंतराय कर्मके नाश होतेही अनंत बल प्रकट होताहै वह क्या ! आहारकरनेसें घटबढ़ शकताहै ?- इसलिये कवलाहार करनेसें अनंतबलमें कोइ विरोध नही आता, न सर्वज्ञतामेंभी कवलाहारके साथ विरोध है. प्रमाणनयतत्वलो कालंकारके प्रथम अध्यायमें-कवलाहारसर्वज्ञत्वयोरविरोधात्- इससूत्रपर टीकाकारने बहोतकुछ समालोचना कियी है. यहां कितना लिखें ?-

(११)-दिगंबर कहतेहै तीर्थंकरोंके निर्वाण हुवेबादउनका

शरीर कर्पूरवत् खीर जाता है, फिर देवते आनकर नयाशरीर रचके उसका अग्निसंस्कार करते है. श्वेतांबर कहतेहैं तीर्थकरों का शरीर खीरता नही. उदारिकशरीरका स्वभाव खीरनेका नही. क्योंकि-वह बंधन संघातनसहित है. सो कैसे खीरे ?- खीरजानेका हेतु क्या ?-

(१२)-श्वेतांबर कहतेहैं तीर्थकरोंके निर्वाण हुवे बाद इंद्रदेव उनके शरीरका अग्निसंस्कार करके उनकी डाढा (फुल) देव लोकमें लेजाकर रत्नटीपारोंमें रखके पूजते है. दिगंबर कहते है तीर्थकरोंका असलीशरीर कर्पूरवत् खीरजाता है केवल नख के श नही खीरते, उन नखकेशोंको देवलोकमें लेजाकर रत्नटीपारोंमें रखके पूजते है.

(१३)-दिगंबर कहते है केवली बोलते नही किंतु शिरसे नाद पैदा होता है. धर्मोपदेश वगेरामेंत्री इसी प्रकार शिरसेही नाद उठता है.-श्वेतांबर कहतेहैं केवली बोलतेहै. शिरसे नाद होनेका-कोइ प्रयोजन नही. अगर प्रयोजन है तो उसमें हेतुक्या? धर्मदशनामें मालकोस नीमपलासी वगेरा मधुरी रागरागणीसे धर्मोपदेश करतेहैं यह बात युक्तिघारा सबकिंसीको मान्य होश कती है. जिसको साक्षरी वाणी बोलनेकी शक्ति है वे निरक्षरी वाणी क्यों बोलेंगे ?-क्या ! उरः-कंठ-शिर-जीव्हामुल्ल-दंत-नाशिका-ओष्ठ-और तालु-ये आठ स्थान जिनसे वर्णाक्षरकी उत्पत्ति है केवलीके नही रहे? जो शिरसे नाद उठे?

[१४]-महावीरस्वामीका विवाह हुवा. उनको पुत्री हुयी और वह जमाली जातके मालीको विवाही यहवात कहकर दिगं

वरलोक श्वेतांबरकों आलोचना देतेहै. परंतु इसमें उनकी समझका फर्कहै. श्वेतांबरलोक महावीरका विवाह हुवा—उनकों पुत्री हुयी और वह जमाली नामके राजकुमारकों विवाही गयी—जरूर मानते है. कौनकहता है जमाली मालीजातिका था ? बिना प्रमाण कोइ बात कहदेना धर्मीजनोंका काम नही. कौनसे शास्त्रमें जमालीकों माली लिखा है ? प्रमाण देना चाहिये.

(१५)—दिगंबर कहतेहै जिनप्रतिमाका स्वरूप वीतराग कहा सरागकरके क्यों पूजते हो ?—गेहना आभूषणसें श्रृंगारी हुयी प्रतिमामें वीतरागपना कहां रहा ? श्वेतांबर कहतेहै क्यों नही रहा ! जब वे निरागी है हम उनकी उचितभक्ति करके गेहने आभूषण पहनाते है इससें उनके वीतरागभावकी हानी क्योंकर होशकती है?—हमारे जोले जाइ दिगंबर प्रश्नतो कर बैठते है परंतु तत्वकों नही विचारते. वीतरागभावका अज्ञाव आभूषण आदिकसें नही होता. समवसरणमें रत्नसिंहासनपर जब बैठतेथे छत्र चवरहोतेथे तब गणधर और इंद्रदेवआदि वीतराग कहकर उनकी स्तुति करतेथे. सोचोकि—अगर उनका वीतरागज्ञाव चला गया होतातो वे उनकों वीतराग कहकर क्यों मानते पूजते !—इसलिये वीतरागज्ञावका अभाव आभूषणादिकसें नही होता जैसाकि—कंगालदशा दर्शानेसें होताहै, भाववस्तु बाह्य नही किंतु अभ्यंतर है यही मानना मुनासब है, अगर केवल वीतरागभावकोही मानना स्वीकार है तो स्नान कराना—केशरधंदनपुष्प चढाना—रथारोहन करना—तुमारी अपेक्षा वृथा है न करना चाहिये. वीतरागहुवे वाद कौनसें रौज वे रथपर चढेथे ?—कब सचित्त जलसें स्नान

कियाथा ?—और केसरचंदनविलेपन करायाथा ? तुम लोक क्यों करते हो ?—सिंहासन छत्र भामंडलआदि जिनप्रतिमासें मिलाकर रखते हो क्या ! यह आभूषण नहीं है ?—निर्ग्रथअवस्थाही मानना प्रमाण है तो कहिये ! उस अवस्थाकी प्रतिमाकों रथमें सवार करके फिराना किस आगमका लेख है ?—अगर कहोगे भक्तिप्रभावना है तो सोचो ! श्वेतांबर और क्या कहते है ? वेज्जी तो भक्ति प्रभावनाही कहतेहै. अगर कहोगे सबकुछ किया परंतु शरीरका रूपतों हमने नहीं बदला ? हम कहतेहै यह तर्क मूर्खोंकी है विघ्न नोकी नहीं. किसीने हेयवस्तुके त्यागीकों हेयवस्तुके समुहपर बिठाया और किसीने हेयवस्तु उनके शरीरपर रखी—ज्ञातापुरुषों की समज मुजब तो दोनों एक सरखीबात है. हठवादीयोंकी बात अलग है.

क्षुल्लकधर्मदासजीके उत्तरमें पंडितऊरगदलाल लिखते है हम तो वीतरागभावकी वर्द्धक प्रतिमा मानते है. हम पूछते है जब वीतरागज्ञाव वर्द्धक प्रतिमा ही मान्य है तो प्रतिष्ठा समय जन्मसंस्कार-विवाहसंस्कार-कलशारोपण-वगेरा क्यों करना ? क्या उससमय रागभाववर्द्धक वह मूर्ति नहीं है ? वीतरागकी मुर्तिपर ऐसेकार्य करने और दूसरा करेतो उसका उपहास्य करना यही तो मुखताका कारण है. सोचो तो वीतरागज्ञाव उससमय उत्पन्न होताहै जब केवलज्ञानका उदय आवे. उससें पहले तो संपूर्ण कार्य सरागज्ञावका कारण है, अगर एसाही आग्रह है तो एक निर्वाणकोंही मानके अन्यसंपूर्णकृत्य छोड दो. महाशय ! कहना तो सहज है लेकीन उस मुजब चलना सहज नहीं. देखो ! जिस

मूर्तिकों श्वेतांबर पूजते है उसके और दिगंबर प्रतिमाके मध्य केवल आभूषणआदिका अंतर है, इसके शिवाय समयलब्धि पायकर औरजी केइ अंतरपडते गये. जैसे खमे आकारनग्नमूर्ति जिसका पुरुषचिन्ह लटकता हुवा महाविज्रत्साकार नजर आ ताहे देखकर सारीडनिया नाक चढाती है एसी जिनमूर्ति बनाना कोइ दिगंबर शास्त्रमें नही लिखा गडरीया प्रवाह चलपमाहै, दिगंबरलोक इसवातकोंविशेष पुष्ट करतेहै और कहतेहैकि-केइ तीर्थंकर खडगासन मुक्ति हुवे है उनकी नकल हम बनाते है. हम पूजते है वे नग्न दिसते थे ?नही दिसतेथे-तो फिर एसी नींघमूर्ति क्यों बनाना ?-जिससें उन्नयलोक विरुध्रता प्राप्त हो. जबकिसी शहरमें दिगंबरोंकी रथयात्राका महोत्सव होताहै सन्नी मनुष्य नींदा करते है और कहते है बडी अयोग्य वात है कि-नग्नदेव मूर्ति नगरमें फिरायी गयी. देखिये ! द्वादशांगीके सिद्धांतोंको उ थापन किये-मनःकल्पित सिद्धांत बनाकर उस मुजब चलना शुरुकिया-तो एसी नींदाका पात्र होना पडा. द्वादशांगवाणीके सिद्धांतोंमें पद्मासन जिनमूर्ति बनाना लिखा है, जिससें उनके नग्नस्वरूपमें और लोक व्यवहारमेंदोनोंमें विरोध नही आता.

दिगंबर कहते है अरिहंतदेव वस्त्रके त्यागी थे उनको अंगीयां पहराना ठीक नही. (उत्तर)-अरिहंतदेव स्नानविलेपनके त्यागी थे सो भी कराना ठीक नही. अगर भक्तिसें कराते हो तो अंगीयां भी भक्तिहीसे पहनायी जाती है अगर भोग्यवस्तुके त्यागीको भोग्यवस्तुका संबंध कराना नामंजूरही है तो तुमको अरिहंतदेवके सामने नैवेद्यजी न चढाना चाहिये. केवल ज्ञान

हुवे बाद अरिहंतदेवकों तुम आहारके त्यागी मानते हो. जो बात शास्त्राज्ञासँ प्रतिकूल हो बोलना चाहिये. जैसे रात्रीको देव पूजा करना कोइ शास्त्रमें नहीं लिखा आरात्रिका (आरती) कराना यही सायंकालकी पूजा है. दिगंबर] लोक-अनंत चौदश (जो भाद्रपद सूदीमें आती है)-शरदपुनम-और दीपमाला (दीवाली) के रोज-रात्रीकों अष्टव्यसँ जिनपूजा करते है यह शास्त्राज्ञाविरुद्ध है. और दुसरा एक यह ब्रमा अनर्थ करते है कि-जब कभी बड़ीपूजन करायी जाती है तो मंदिरमें प्रतिष्ठा कीयी हुयी प्रतिमाजीके होते हुवे पूजनके समय एक ठवणा रखकर वहां भगवान्का आह्वान ओर विसर्जन करते है यह कितना बडा अनर्थ है कि-जगवान्के साक्षात् विराजमान होते हुवे आह्वान विसर्जन किया जाय. इससँतो प्रतिमाजीका होना सर्वथा व्यर्थ समजा गया. क्योंकि-पूजा तो उस देवकी हुयी जिसका आह्वानकरके विसर्जन किया.

फिर दिगंबरलोक जिनप्रतिमाकों नेत्र लगे हुवे देखकर उपहास्य करते है. कहते है क्या ! जिनमूर्ति अंधी है जो नेत्र लगाये जाय ? (इसका उत्तर)-महाशय-जिनप्रतिमा अंधी नहीं है कहने वालेही अंधे है जो जिनप्रतिमाकों तदाकार नहीं देखते. जिनेद्र देवकी भ्रूश्यामरंग थी सो श्वेतांबरलोक उनकी प्रतिमामें श्यामरंगकी भ्रूवनाते है, अधर लालरंग थे सो लाल बनाते है, हाथपांव के तलें लाल थे सोनी लाल बनाते है, नेत्र उनके चमकते थे जैसे रत्न चमकते है अब उसजगह उसी रूपका स्वरूप बनानेके कारण नेत्रनी स्फटिकरत्नके चमकते लगाते है. कहिये ! इसमें

कौनसी विपरीत बात हुयी ?-वृथा हंसी करना मूर्खोंका काम है, दिगंबरलोक कहते तो हैकि-जिनेंछकी प्रतिमाकों हम तत्सदृश बनाते है लेकिन कहनेहीमात्र है, बनती नहीं. जब तदाकार नहीं बनी तो तदाकार कहना वृथा है. क्या ! नग्नस्वरूप लटकता हुवा पुरुषचिन्ह बनादिया इसीसे तदाकारता हो गयी ?-सोचो ! जि नेंछ नग्न होते हुवे भी दूसरेकों नग्न दिसते थे ?-विशेष क्या ! लिखे ?-छादशांग वाणीके सिद्धांतोंमें जो कुछ लिखा है उसी मुताबिक श्वेतांबरलोक करते है दिगंबर नहीं करते. शास्त्रमें वीतरागज्ञावका वर्णन इसप्रकार किया है.-

(मालिनी वृत्त)

प्रशमरसानिमग्नंदाष्टियुगं प्रसन्नं,
वदनकमलमंकःकामिनीसंगशून्यः,
करयुगमपि धते शस्त्रसंबंधबंध्यं,
तदसिजगति देवो वीतराग ! त्वमेव, ?

मित्रवर ! पक्षपात त्यागकर कहना उपर लिखा हुवा वीतरागज्ञाव श्वेतांबर प्रतिमामें है या नहीं ? यदि है तो तुमारे तर्क व्यर्थ है.

(३६)-दिगंबरलोक कस्तूरीकों अपवित्र कहते है और मंदिरमें लेजाना बुरा गिनते है परंतु इन्हींकें झाड़ वीशपंथी, बुरा नहीं गिनते. सोचनेकी जगह हैकि-अगर कस्तूरी अपवित्रही है तो मृदंग-सारंगी-वगेरा चमडेके बाजे जो मंदिरमें बजाये जाते है वे कैसे पवित्र हुवे ?-यहां कोइ तर्क करेकि-तेरहपंथी चमडेके बाजे मंदिरमें नहीं लेजाते तो एसा कहनाभी व्यर्थ है. क्योंकि-तेरहपंथी

लोक अंग्रेजीके बने हुवे कपडे पहनेकर मंदिरमें जाते है. जिसमें अनेक रंग रुधिरके सहारेसे रंगनेमें आते है. और बहुधा तेरहपंथीयोंकी स्त्रियों अपनेबालकोंके गलेमें सिंह-बीजुआदिके नखाँका तथा कोडीयोंका-हार मालती है और उसकों मंदिरमें लेजाते है. हम पूछते है क्या! ये कस्तुरीसे अछे है ?-अगर उत्पत्तिकी अपेक्षा कस्तूरी त्रस जीवका अवयव होनेसे अपवित्र मानते हो तो मुनिकों मयूरपींठी-और चमरी गायके केशकी पींठीजी अपवित्र होनेसे न रखना चाहिये. क्योंकि त्रसजीवका अवयव है. और इसी प्रकार रेशम-लोइ-कंबल-दूशाला-आदिजी समझो. परंतु हकीकतमें दिगंबरकी समझका फर्क है. जो वस्तु व्यवहारमें पवित्र है वह पवित्रही मानी जाती है जिनप्रतिमाकों चढाना अयोग्य नहीं. यदि उत्पत्तिकी अपेक्षा वस्तुकी पवित्रतापर खयाल रखना मंजूर है तो प्रतिमाजीकों स्नान करानाभी बंद करदो. क्योंकि-सर्व अपवित्रतासें जल संमीलित है. अनेक-मञ्ज-कञ्जप-मींडक-आदि जीवोंका अवयव करके सहित है. थलचर-खेचरजीवोंका उत्सृष्ट है और मूत्र-पूरीष-हाड-मांस आदि करके संयोजित है. इसलिये आप लोकोंकी बारीकीके आगे जलजी अपवित्र ठेरता है.

(१७) चर्मकी मशकका नीर-और चर्मके भाँडेका घृत-खानेसें दिगंबर कहते है मांसभक्षणका दोष लगता है. श्वेतांबर कहते है शुष्कचर्मकी मशकका नीर और शुष्कचर्मके भाँडेका घृत-खानेसें मांसका दोष नहीं लगता. मांसका दोष तो जब लगे अगर मांस वा-मांसमिश्रित पदार्थ खाया जाय शुष्कचर्म न मांस है न मांस मिश्रित है. इतनेपरन्ती इसमें मांस भक्षण दोष मानना मंजूर है

तो चीनी खांडकी खांची जिसमें अनंत निगोदराशि पडती है पंचेंद्रियआदि जीवका शरीरभी गलता है-क्लेवर उसमें प्रत्यक्ष दिसते हैं-न खाना चाहिये, सांबरलॉनकी उत्पत्ति देखते हैं तो महा अपावन है, यहां हम अपनी आंखोंसे देखी हुयी हकीकत लिखते हैं कि-जब हमने संवत् (१९४७) के मार्गशीपमहिनेमें दिल्लीसे विहार किया और मथुराको आतेथे, रास्तेमें फरुखनगरके निकटवर्तीस्थानोंमें खारीनीमक बनता देखा था. जो गौ-महिषी-आदि पशुओंके खोपडेकी हमीके सहारेसे जमाया जाताथा. और पूढनेपर उनलोकोंने कहाथाकि-विना हमीके ये नीमक नही बनता. उत्पत्तिकी अपेक्षा अगर खयाल किया जाय तो यह नीमकनी न खाना चाहिये. उधकी उत्पत्ति कच्चा मांसमेंसे प्रत्यक्ष है इसमेंभी कहदो मांसभक्षणका दोष है. क्या बतावे ! दिगंबरलोक-चीनीखांड-खारी (सांबर) नीमक-आदि तो खातेहैं और सूकेचर्मकी मशका नीर-तथा सूके चर्मके जामेका घृतमें न मालूम किस हेतु परेज करते हैं, सो विदित न हुवा.

(१८)-दिगंबर कहतेहैं इव्यचारित्र विना मुक्ति नही होती; श्वेतांबर कहते हैं ज्ञावचारित्र उदय आजाय तो इव्यचारित्र हो चाहे न हो मुक्ति हो सकती है. अगर इव्याचारित्रही कार्यकारी है तो कहो ! इव्यचारित्र जीवका स्वस्वभाव है या परस्वज्ञाव है. अगर स्वस्वज्ञाव है तो अभव्यजीवकोंभी द्रव्यचारित्र उदय आता है मुक्ति होना चाहिये. और परस्वभाव है तो परस्वज्ञाव विना मुक्ति न हुयी एसा मानो. परंतु हकीकतमें दिगंबरोंकी समझकाही फर्क है. जबतक विषयोसे मन नही

निवर्त्ता है चाहे साधु होजाउ या गृहस्थ रहो मुक्ति न होगी जब मन शुद्ध होजायगा अर्थात् जावचारित्र उदय आयगा मुक्ति होतेको कोइ न रोक शकेगा.

(१.ए)-दिगंबर कहते है शुद्धको मुक्ति नही होती, श्वेतांबर कहते होती है. मुक्तिका रस्ता सम्यक्ज्ञान दर्शन और चारित्रहै. तत्त्वार्थसूत्रके प्रथम अध्यायमें क्या कहाहै ? सम्यक् दर्शनज्ञान चारित्राणि-मोक्षमार्गः-जो मनुष्य इसमार्गपर चलेगा उसकी मुक्ति कौन रोक शकेगा ?-जन्मकी अपेक्षा जो जातिहीन है वह उत्तम क्रिया करने परन्ती उत्तम न समझा जाय यह कोइ प्रमाणकरने योग्य बात नहो. किसी दिगंबरशास्त्रमें जातिभेद जन्मकी अपेक्षा नही लिखा किंतु गुणकर्मकी अपेक्षा लिखाहै. जिसको श्वेतांबर भी मानते है. क्या ! कोइ ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न होकर चांडाली-ककर्म स्वीकार करे वह ब्राह्मणही रह शकता है ?-कभी नही. इसी प्रकार जो शुद्धकुलमें जन्म लेकर शुद्ध आचरणसें विचरे उसकी किसी दिगंबरशास्त्रमें दीक्षा निषेध नही कियी, जबतक कोइ ठीक प्रमाण न होगा विद्वान् नही मानेंगे दिगंबरोको पांचमें जिनसेनाचार्यके लेखोपर पूरा विश्वास नही करना चाहिये क्योंकि-एक ब्राह्मणका पुत्र एक भट्टारकका रसोइया था. कुछ दिनपीठे चेला होकर कितनेक ग्रंथोंकी रचना कियी, जो दिगंबर मतके शास्त्रोंसें बहुधा प्रतिकूल है. जैसेकि-हरिवंशपुराणमेंलिखा हैकि-जरासिंधके तथा कृष्णजीके मरनेपर इनके पीछलोंने श्राद्ध किया और तिलांजलि दियी. इसमें सर्वथा अपने ब्राह्मणधर्म को स्थापन किया है.

(३०)—दिगंबर कहते हैं जैनीके शिवाय उसरे मतावलंबीके घरका बनाहुवा आहारपानी मुनिकों लेना उचित नहीं. श्वेतांबर कहते हैं जो मनुष्य (चाहे वो जैनी हों वा अन्यधर्मी हो) शुद्धआहार व्यवहार रखता है उसके घरका हरेक पदार्थ मुनिकों लेना उचित है. यदि एसाही हो जैसाकि-दिगंबरलोक कहतेहैं तब तो प्रथम उनकों जैनीके शिवाय अन्यकिसीसे संबंधही नहींरखना चाहिये. दूसरी यहभी बात है कि-जैनी-जैनधर्मपालने और श्रद्धा रखनेवालोंका नाम है. आजकल अनेक दिगंबरी ऐसे देखनेमें आतेहैं जिनोंने जन्म समयसे लगा आजतक अपने धर्मका तत्व नहीं जाना, कोरे नामके जैनी है, यदिकोई जैनमुनि इसके घरका आहार ग्रहण करे तो सोचना चाहिये, वो शुद्ध क्योंकर हो सकता है? क्योंकि-उसकों तो शुद्धाशुद्धका ज्ञान नहीं, इस लिये पक्षपातरहित मनुष्योंकों यथार्थ वस्तु जहांसे मीले विना रागद्वेष ग्रहण करलेनी योग्य है. यदि मुनि किसी घर प्रवेश करनेसे द्वेषभाव करे तो उषण लगता है. असलतत्वतो यहहैकि जिसपात्रमें मांस पकातेहैं उस पात्रका आहार नहीं लेना, और मांसके संघट्टनसेनी आहार नहीं लेना यह मुनियोंका व्यवहार है. शुद्ध आहार अलग पडा है उसकों गृहस्थ शुद्धभावसे देवे तो लेनेमें कुछ दोष नहीं. यदी फिरनी यही आग्रह है कि—अन्यधर्मीके घरका बनाहुवा आहार मुनिकों और श्रावककों न खाना चाहिये तो संपूर्ण दिगंबर श्रावक ब्राह्मणके हाथका पका हुवा भोजन ग्रहण करते हैं ठोम देना चाहिये. क्योंकि-वे जैन धर्मसे विमुख हैं. सोचो ! एक ब्राह्मण मिठाई बनानेका कार

करता है उसने अनगनें जलसें मिठाइ बनाइ और कोइ दिगंबर श्रावक उस मिठाइकों अपने खानेके निमित्त मॉल लेगया इधर उसीदिन कोइ जैनमुनि उसके घर भीह्नाकों आये और श्रावक-ने उस मीठाइ लेनेकी निर्मंत्रणा कियी. कहिये ! मुनि उसकों लेवे या नही ?-यदि कहोगे लेवे तो अनछाने जलको बनी चीज कैसे खायगें ?-न लेवे तो उसमें हेतु क्या?-महाशय! एकांतपवित्र आहार उत्पात्तिकी अपेक्षा कच्ची नही मिल सकता. देखो ! जल कैसा अपवित्र है जिसमें-मछ-कछपके अवयव-थलचरजीवोंके मूत्र पुरीष-हाड-चाम-रुधिर-वगेरा संमीलित है. दूध बछडोंका झूठा और हारुमांसकी पेसीमेंसें नीकसा हुवा है. दहीं-छास-मखन-इनमें बलोणा करते वरुत शुद्धलोक अपने घरका जल अनछाना मीलाते है. बहोत दिनका मखन इकठाकर तपाते है. तिलपिल तेवरुत तेली अपने घरका जल मीलाता है. अन्न और पत्र शाक आदिमें अकसरकोइनकोइ जीव पतन होही जाता है. इसी प्रकार वस्तुकी उत्पात्तिकी अपेक्षा अपवित्रता मानोगें तो फिर आहारपानी लेना योग्यही न ठहरेगा, हमारे इसलिखनेका यह अभिप्राय नही है कि-मुनि अपवित्र आहार ग्रहण करे. जो वस्तु व्यवहार मार्गमें पवित्र गिनी जातीहै-शिष्टपुरुषों जिसकों अपवित्र नही कहते- उसकों व्यवहारसें पवित्रमानकर मुनि और श्रावक ग्रहण करे. दातारकी शुद्धाशुद्धि तो उसके आचार व्यवहारसेंही विदित होजाती है. जिसकों अशुद्ध देखनेमें आयगा उसका आहार तो मूर्ख और अन्यधर्मावलंबीजी ग्रहण नही करते. फिर जैनमुनि कैसे लेवेगें ?-और हम पूछते है जिसमुनिकों

जैनीके शिवाय अन्यके घरका आहार नही लेना एसाही प्रणहै तो रिषभदेव भगवान्ने चतुर्विध संघस्थापन करनेसें पहले कौन सा जैनी था जिसके घरका आहार उन्होने जैनी समझकर लिया. एक श्रेयांसकुमारको जातिस्मरण ज्ञान था सारादुनियाकोतो नही था. यहां यही सिद्ध होता हैकि-जहां शुद्ध आहार मिले वहांही से लेलेना योग्य है. सोचोकि कुछ समय जब सुविधि [पुष्पदंत] नाथजीके पीछे धर्म विच्छेद हो गया था तो शीथलनाथ दशभेती थंकरने कौनके घरसें आहार लिया होगा ?-क्योंकि उस समय कोइ श्रावक तो था नही. यदि कहोगे श्रावकके घरसें नही लिया, तो अब क्यों हठ करते हो ?

अग्रवालकी उत्पत्तिका विचार करते है तो यह बात सिद्ध हो चूकी है कि-राजा अग्रसेनने (१७)दफे पशुमेध यज्ञ कराया. परंतु अठारहमें यज्ञके समय दयाने उसके हृदयमें प्रवेशकर यज्ञ को अपूर्ण रखा. और उसने मांस ऋणका त्याग कर कृत्रियों से पृथक होकर वैश्यधर्म स्वीकार किया. इसी कारणसें उसकी कुल आम्नायके (१७॥) साढे सतराह गोत्र हुवे. जिनकी उत्पत्तिमें जितने अग्रवालजैनीहै सब काष्ठासंघीलोहाचार्यके किये हुवे दिवाकरनामा एक पुरुषके संघाती संबंधी है.

(३१)-भरतचक्रीको दर्पणघरमें केवलज्ञान हुवा श्वेतांबर मानते है दिगंबर नही मानते. हकीकतमें भावचारित्र आनेपर केवलज्ञान उत्पन्न होना आश्चर्य नही. मनसें जब मूर्छाप्नाव न रहा तो वन और घर एक तुल्य है. गोमटसारमें गुणस्थानमार्ग णा अधिकार कहा है वहां कर्मप्रकृति खपानेको जीव द्रव्यचारि

त्राविनाभी गुणश्रेणी चढताहै. केवलज्ञान आदि पानेमें गुणस्थान ही प्रधानकारण है. द्रव्यचारित्रकी नियमता नहीं. होवेभी नहीं भी होवे. ज्ञावचारित्रकी नियमता है, देखो ! बाहुवलीजी छव्य-चारित्र करके दीक्षित हुवे, तप किया, लेकीन मनःशुधिमें कसर रही तवतक केवलज्ञान नहीं हुवा. मनः शुद्धि हुइ तब केवलज्ञान हुवा. सोचो ! तो ज्ञावचरित्रही प्रधान रहा.

(११)-दिगंबरने स्थविरकल्प उध्थापन करके-जिनकल्प मार्ग जो जंबुस्वामीके मोक्षहुवे वाद विच्छेद हो गया है उसीकों पकडरखा परंतु दोनोंसँ गये, न स्थविरकल्प न जिनकल्प एकजी नहीं बन सका. कहाँसँ बने ? जो क्रिया वज्ररिषज्जनाराचसंहन नवालोंके करनेकी है वह हीनसंहननवाले कैसे कर शके ?-जो शरूश शक्तिसँ अधिकबोज उठावे वह गिरेहीगा. जिनकल्पीमुनि नवकल्पी विहार करते थे,-नेत्रमें तृण और पैरोंमें कंटक लगेहुवे कों निकालते नहीं थे,-हाथी-सिंह-चीत्ता-व्याघ्र-आदिके भयसँ पीछा नहीं हठतेथे,-रोगहुवे औषध नहीं खातेथे,-छमहिनेतक आहार न मीले तोभी किलामना नहीं पातेथे,-जघन्यसँ नवमापूर्वकी तीसरी आचारवस्तुतक सूत्रार्थके पाठी-उत्कृष्टसँ दशपूर्वके पाठी होतेथे,-संहनन उनका वज्ररिषज्जनाराच था-हरहमेश तीसरे प्रहर भीक्षाकों उठते थे-नग्न होते हुवेभी दूसरोंकों नग्न नहीं दि-सते थे, पाणिपात्रआदि लब्धिके धारक थे. दिगंबरने ऐसेमुनियों की बराबरीकरनेकों श्रादा किया परंतु लाभके बदले हानी उठाइ. न स्थविरकल्प रहें न जिनकल्प हुवे. भट्टारकलोक जिन की उत्पत्ति विक्रमसंवत् (१३१६) में हुयी-कहंतहै हम उस आ

चरणके प्रतिकूल जो दिगंबर मुनियोंने किया है केवलवस्त्रही ग्रहण करते है और सकृत्य उनमुनियोंके अनुसार ही है. सो क्या ! यह कहना ठीक है ? नहीं नहीं ! हर्गिज नहीं.-जिनक ल्पीमुनि तो दुर रहे स्थविरकल्पीमुनिकी वरावरीजी नहीं कर सकते, दिगंबर मुद्रामंडन नामकी किताब-जो दिल्लीनिवासविशिपंथीपंडित शिवचंद्गीने बनाई है जिसके कुल (१५) पृष्ठ है उसके [७] में पृष्ठपर लिखा है कि-जिनकल्प अनादि सिद्ध है जिनकल्प है सोही दिगंबर है, इसका उत्तर-प्रथमतो जिनकल्पमुद्रा है उसको दिगंबर मानना यही भूल है. दूसरे जिनकल्पका जंबुस्वामीके पीठे विच्छेद होगया, जैसे कि-मोक्षजाना विच्छेद हो गया. सो दिगंबरलोग यदि ऋतखंडमें जिनकल्पका वर्तमान समय सद्भाव समझते है तो उनको मोक्षकाभी सद्भाव समझकर दिखलाना पड़ेगा. जंबुस्वामीके पीठे-१, मनः पर्यायज्ञान-२, परमावधिज्ञान (जिसके बाद केवलज्ञान अवश्य पैदा हो,)-३, पुला कलब्धी-४, आहारकलब्धि-५, कृपकश्रेणी-६. उपशमश्रेणी-७ जिनकल्प-८, परिहाराविशुद्धि-सूक्ष्मसंपराय-यथाख्यात चारित्र्य-यह संयमत्रिक-९, केवलज्ञान-और १०, मोक्ष-यह दशवस्तु विच्छेद हुयी है उसमेंसे (८) बात शेष रही उनकाजी सद्भाव मानना पड़ेगा. यह कहांकी चतुराई है कि-एक जिनकल्पकातो सद्भाव और शेष (९) का अभाव माना जाय. और जो जिन कल्पमुनिकी क्रिया श्वेतांबरशास्त्रमें लिखी है उसके प्रतिकूल दिगंबरमूढा है. हम महाविदेहमेंजी उसी जिनकल्पको मानते है जो श्वेतांबर शास्त्रानुसार अर्थात् द्वादशांगवाणीके आगमानुसार

र्थात् छादशांगवाणिके आगमानुसार इसवर्तमान कालमें यहां नहीं रहा. इसमें यह सिद्ध करना कि-दिगंबर महाविदेहमें है सो वृथा है. जिसको हम विच्छेद मानते है वह दिगंबरोंके शास्त्रानुसार दिगंबर नहीं. केसरीसिंहके करनेका काम हिरन चाहे मैं कर लू तो कर्नी हों सकताहै? क्या ! दशपूर्वका ज्ञान-पाणिपात्रादिलब्ध--और वजरिषन्नाराचसंहनन विनाज्ञी जिनकल्प मुनि बन सकते हो ? फिरइसी दिगंबरमुद्गामंडनके (११) पृष्ठपर कल्प सूत्रका पाठ लिखकर यह सिद्ध किया है कि-महावीर(१) महिनेतक वस्त्रधारी रहे फिर नग्न पाणिपात्र हुवे और इसीप्रकार सर्व तीर्थंकर देवदुष्य वस्त्रके दूर होनेपर पाणिपात्र नग्न हुवे. इसमें दिगंबर सिद्ध है, और फिर (१३) पृष्ठपर यहभी लिखाहै कि-अगर कोई तीर्थंकर श्वेतपटधारी हुवाहो तो शास्त्रमें दिखलावो? इसका उत्तर-प्रथमतो तीर्थंकर महाराजकी बराबरी सामान्य मुनिसें नहीं हो सकती. और वे जो नग्न स्वरूपभी थे तो अति शय करके नग्न नहीं दिखते थे. इसमें क्या ! सिद्ध हुवा कि-जिसको नग्न रहते हुवेभी दूसरेको उसका नग्नस्वरूप दिखलाइ न देवे ऐसे अतिशयका धारी नग्न रहे तो कुछ हर्ज नहीं. सर्व साधारण मुनिकों नग्न रहना उचित नहीं और यह कोई आवश्यकताकी बात नहीं कि-श्वेतपटही शास्त्रमें लिखाहो, पटनाम वस्त्रका है जिसका लेख विद्यमान है. फिर पंडितजीने अकलंकदेवके कियेहुवे अष्टकका एककाव्य लिखकर नग्न सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है, इसका उत्तर यथार्थरूप हम क्षुल्लकधर्मदासजीकी तर्क के उत्तरमें लिख चुके है.

[३३]-दिगंबर कहतेहैं मुनिकों नग्न रहना चाहिये वस्त्र पात्रादि उपकरण रखना ठीक नही. परिग्रह होताहै,—श्वेतांबर कहतेहैं मुनिकों वस्त्रपात्रादि उपकरण मूर्छा रहित रखनेसें परिग्रह नही होता परिग्रह वो है जिसपर मूर्छाभाव हो तत्वार्थसूत्र'७)अध्यायमें कहाहैकि-मूर्छा परिग्रहः-इति यदि ज्ञानदर्शन चारित्रके उपकरण मूर्छाका हेतु बतलाकर न रखना मंजूर है तो शरीरभी मूर्छाका हेतु है न रखना चाहिये. अर्थात् दीक्षा लेतेही त्याग देना चाहिये. संथारा करके अनशनव्रत लेलेना उचित है. क्योंकि-कषाय मूर्छाआदि जितने दोष है सब शरीरहीसें होते है. क्याकहे? और कौनकों समजावे ? जिनकों एकांतपक्व खेंचनाही प्यारा लगता है उनकों कौन समझाशके ?-मूर्छा मूर्छा-पुकारतेहै लेकीन मूर्छाका स्वरूप नही जानते. क्या वस्त्रके ग्रहण करनेहीसें मूर्छा आगयी ?-हम पूछते है यदि दिगंबर मुनि ऐसेही त्यागी बनते है तो जिक्षाकों क्यों उठते है ?-ज्ञानध्यानकों छोमकर आहारके उपावमें क्यों प्रवर्त्तना ?- तुमारी अपेक्षा तो मूर्छा आयी जभी भिक्षाकों उठे फिर गृहस्थीके घर जब खडे खमे आहार करने लगे तो यदि मूर्छा न होती तो कवलकों क्यों उठाया ? और मुखमेंही क्यों धरा ?-परंतु हकीकतमें दिगंबरोकी समझकाही फेर है. जैसे ध्यान करनेमें भोजन साहायक मानते है वैसे निर्वाण पदके साधनमें वस्त्रादि धर्मोपकरणजी साहायक मानना चाहिये.

यदि यहवात नामंजूर है तो फिर भोजनजी त्यागकर अनशन करदेना मुनासब है.

[दुहा.]—मूर्छा बाह्यप्रवृत्तिमें-जो तुम कहो कुपख

ज्जोजन तज अनशन भजो-एसे होत जु दख १

ध्यानदीपकों तैल जो-भोजन करो प्रमान,

तो निर्वातपद उपकरण-मानो क्यों न अजान. ३

यदि कहा जायकि-आहारकी मर्यादा (३१) कवलकी है हम कहतेहै क्या! वस्त्रकी मर्यादा नहीं है ?-दो चोलपट्टे-दो चादर एक कंबल-एक मुखवासिका-एकरजोहरण-और एक झोली-इत्यादि मर्यादा आगममें देख लो. यदि वस्त्रोंमें यूका पतनहोने से अ यतना होगी एसा माने तो ज्जोजनजीमनेसेंभी पेटमें घाँद्रिया दिजीव पैदा होंगे इससें क्या अयतना न होगी ?-यदि वस्त्रकी रक्षा करनी पमती है इसलिये ममता आयगी कहोगे हम पूछतेहै आहारकीभी गवेषणा करनी पमती है इसमें क्या ममता न आयगी? हकीकतमें आहार और वस्त्रादि उपकरण देह और संयमके साहायकारी है. इनमें एकको मानना एककों न मानना यह एकांत मिथ्या दृष्टिका लक्षण है. यदि यही आग्रह हैकि-मुनिकों धर्मोपकरणजी नहीं रखने तो कहिये ! षाँछीकमंडलु रखना कैसे मंजूर हुवा ?-क्या यह मूर्च्छाके हेतु नहीं है ?-यदि मूर्च्छा नहीं है तो शायशाय क्यों लिये फिरते है!-जब एक स्थानसें दूसरे स्थान जानेकी इच्छा होती है तो चलते समय पींढी कमंडलु हाथमें क्यों लेतेहै. यदि बिलकुल त्यागी है तो वहांही ठोड जाते परंतु हकीकतमें दिगंबरकी समझका फर्क है. संयम और देहनिर्वाहके उपकरण मूर्च्छा रहित रखनेसें व्रतभंग नहीं होता. कुंदकुंदाचार्य रचित मूलाचारमें-ज्ञान उपधि-संयमउपधि-और अन्यउपधिभी-रखना कहाहै. उसका पाठ-

नाणुवाहिं संयमुवाहिं-तउच्चुवाहिं अएणमवि उवाहिंवा,
पयदं गहणिखेवो समट्ठी आदाण निखेवो. (१)

दिगंबरोंको खयाल करना चाहिये कुंदकुंदाचार्य क्या कह रहेहै ?-इसी तरह ज्ञानार्णव और समाधितंत्रमेंनी उपाधि रखना कहाहै. जगवतीआराधनासारमें कंवल रखना कहाहै. आजकलके दिगंबर पंथित और श्रावक घमंडके मारै छाती फूलाये हुवे कह रहेहै कि-मुनिकों किंचित्मात्र परिग्रह न रखना चाहिये उन्होसैं पृठा जाता है आपके पूर्वाचार्योंने क्या कहाहै ?-इसकों सच्च मानते हो या झूठ ?-

यदि-पींठीकमंमलु और पुस्तक-दया शौच और ज्ञानके उपकरण कहकर रखना मंजूर करतेहो तो-वस्त्रपात्र रजोहरण मुखवासिका आदि जो द्वादशांगवाणीके पुस्तकोंमें ज्ञानदर्शन चारित्रके उपकरण कहेहै उनकों रखना इनकार कैसें कर सकतेहो?

[३४] दिगंबर कहते है मुनिकों एकही घर खडे खडे आहारकरना चाहिये-श्वेतांबर कहतेहै घरघर भिक्षाटन करके अपने स्थान आयकर करना चाहिये,-इसवातकेलिये दिगंबरोकों अपना भगवतीआराधनासार ग्रंथ देखना चाहिये. जिसमें लिखा है कि-आचार्य-या-संघाधीश-जिस ग्रामनगरमें जाय वहां अपने संघके मुनियोंकों-इस सप्रकार विज्ञाजित करेकि-जिससैं कोई प्रकारकी व्यग्रता न होने पावे. अर्थात् कितनेक मुनि आहारकों जाय-कितनेक आहारके शिवाय दूसरे कार्यमेंलगे-और कितनेक उससे जिनकार्यमें लगे-इससैं क्या सिद्ध हुवाकि-जो मुनि अन्य कार्यमें लगाये गये है उनके वास्तेभी जोजनलानेवाले

मुनिही आहार लावेंगे. जब आहारलाना आवश्यक हुआ तब उनको पात्रकीची चाहना होगी. जब पात्रा रखना सिद्ध हुआ तो जोलीरखना इनकार कैसे करशकेगें. कितनेक दिगंबर पांडे और श्रावक-श्वेतांबर मुनिकों वस्त्रपात्ररखते देखकर मुहमरोमकर हंसी उमातेहै औरनींदा करते है परंतु हकीकतमें कुपात्रही पात्रकी निंदा करते है. सोचोकि-कोइ ग्लानमुनि ऐसे अशक्त हो गये है जिन-कों चलनेफीरनेकी शक्ति नहीं रहीहै उनको दूसरामुनि आहार लादेना चाहे तो पात्र विना किसमें लायगा ?-क्या ! हाथोंमेंही लायकर खीलावेगा ?-अगर कहोगे उनको भूखेही रखना परंतु पात्र ग्रहण नहीं करना. तो यह बात ठीक हुयी. अपने हठकेमारे वैयावृत्यपद वाहो उथथापन हो गया तो होजाउ परंतु हठ नहो छोमना. इसीका नाम जैनमार्ग है. रजोहरणको बदलकर पीछी धारण कियी- और पात्रको छोम कंमंडलु लिया, सोचो! इससे सार क्या निकला?-जैनका वेष ठोमकर मिथ्यात्वका वेष अंगीकार किया और नंगे हुवे-इसी करतूतपर जिनकल्पी मुनि होगये ?-

[३५]-दिगंबर कहते है मुनिकों दंड रखना न चाहिये. श्वेतांबर कहते है रखना चाहिये. इससे आत्म और संयमकी रक्षा होती है. जैसे विहार करते हुवे मुनि समजो अटवीमें पहुँचे है वहाँ कोइ नदी आयी. कनारेपर दूसरा कोइ मनुष्य नहीं है जिसको पूछलिया जायकि नदी कितनी उंडी है ?-उस जगह दंससे देखलेवेकि जल इतना उंडा है. जहां थोडा जल हो उस राह नदीके पार होना. यदि तर्क किया जायकि-देहरक्षाकरनेमें मुनिकों मूर्छा आइ-तो यह तर्क वृथा है. क्योंकि-इंद्रियोंके विषय

पुष्टिनिमित्त रक्षा नहीं कियी किंतु धर्मकार्यके लिये कियी है. यदि धर्मकार्य निर्मित्तनी देहरक्षा न करना यहीवात मंजुर है तो दीक्षा लेकर आहारनिहारही क्यों करना ?-बस ! उसीवरुत शरीरकों त्याग देनाही ठीक है. एकांत मिथ्यात्वियोंका यही तो चिन्ह है जो वातवातमें एकांत पक्ष खेंचना.

(३६)-दिगंबर कहते है मुनिकों रात्रीके समय चतुर्विध आहारका परित्याग है तो जल रखनेसें क्या प्रयोजन ?-न रखना चाहिये. श्वेतांबर कहते है चतुर्विध आहारका परित्याग जरूर है लेकीन शौचकेलिये याने मलमुत्रकी शुद्धि अर्थ रखना चाहिये. यदि जल न रखाजाय तो मलमुत्रकी शुद्धि काहेसें करेगें ?-इसलिये उसमें क्षारक्षेपन करके रखनाही ठीक है.

(३७)-दिगंबर कहते है मुनिकों दिनमें एकही दफे आहार करना चाहिये. श्वेतांबर कहते है एकदफे-वा-अनेकदफे जबतक सूर्यअस्त नहो तबतक आहार करनेका मुनिकों अधिकार है. जैसी शक्ति हो उसमाफिक करे. उत्सर्ग और अपवाद इनमें एककों मानना एककों नहीं मानना यह ठीक नहीं.

(३८) मुनिकों कोई गृहस्थ मांस बहुरा दे तो उसकों खालेवे और फिर गुरुके पास आनकर पायछित लेके शुद्ध होवे एसा कहकर दिगंबरलोग श्वेतांबर संघकी नींदा करते है. और कहते है देखो ! श्वेतांबरोंमें क्या क्या गप्प है ? परंतु हकीकतमें यह दिगंबरोंहीकी गप्प है. वाइस अभक्ष्य श्रावकोंके लिये ज्ञी त्याज्य है तो मुनिकेलिये उपादेय कैसे कहेंगे ?-विना प्रमाण कोईवात मुंहसें निकालना बड़ी भूलका काम है. यह तो विचारना

थाकि- श्वेतांबर मुनि आहारकों मकानपर लाकर खाते हैं, गुरु वा दुसरा साधु वहां मौजूद है तो खानेसें पहले क्या ! उनकी संमति नही ले सकते है ? जो पीछेसें दंभप्रायच्छित लेना पडे ?- यह दिगंबरमुनि तो नही ! जो गृहस्थके घर खडेहोकर जो मीले सो खावे. जिस मनुष्यकों भोजन अपने मकानपर लानेकी आज्ञा है वह स्वतंत्र है. यदि जानबुझकर भ्रष्ट होना चाहे तो उसका दंडप्रायच्छित नही है और अनजाने एसाकरे तो स्वतंत्रताके होते हुवे एसा कर नही सकता.

[२९]-दिगंबर कहते है-श्वेतांबर मुनिकों उश्रोदकका योग न मीले तो मूत्र पीइ लेना कहाहै. इसका उत्तर,-यहवात मिथ्या है. श्वेतांबर मुनियोंमें यह प्रवृति नही है. झूठादोष आरोप करना उर्गतिका कारण है. अगर यहवात सच्च हो तो श्वेतांबर आमनायके कोइभी शास्त्रमें पाठ दिखलाना चाहिये. विना प्रमाण कोइवात कहना लिखना मूर्खोंका काम है. और जो कोइ एसा करता है उसकों चांडाल समजना चाहिये.

(३०)-दिगंबर कहते है धर्मकी हानिकरनेवालेकोंजी मुनि ताडना तर्जना शिक्षा सज्जा न देवे-तेजुलेश्याम वगेरा शक्ति होतेभी न चलावे-विराधक होजायगा. श्वेतांबर कहते है धर्मकी हानिकर्त्ताकों मुनि ताडना तर्जना शिक्षा सज्जा देवे-तेजुलेश्या वगेरा शक्ति हो तो चलावे-विराधक न हो. क्योंकि-इरादा उसका धर्म रक्षा करनेके लिये है. इन्द्रियोंकी विषय पुष्टिकेलिये नही सोचो ! कोइ अन्यायीराजा-मंत्री-या-गृहस्थ-देवमंदिर आदि

धर्मस्थानकों तोड़मालता है, मूर्तियों खंभन करता है. मुनि आर्यिकाको तकलीफ देता है. प्राणलेनेसेंजी नही डरता. वा-धर्मपुस्तक जलाता है, पानीमें डबोता है, वगेरा धर्म हानिका काम करता है और प्रजा उसकों सजा देनेकों शक्तिमती नही है उसवरुत मुनि वहां विद्यमान होते हुवे उनके सामने एसा अनर्थकाम होरहाहो उसकों रोकनेके लिये प्रथम मीष्ट वचनसें उपदेश देवे-फिर कठोरवचनसें ताडना करे-इतनेपरभी न समझे तो तेजुजेश्यादि शक्तिसें सजा देवे, थोडी सजासें न माने तो फिर जालकर न्द्रस्म करडाले, इसका दंडप्रायचित्त कोइजी आग-ममें नही लिखा. हकीकतमें धर्मकी हानि करनेवालेकों सजादेना अनुचित नही और इसीलिये दंडप्रायचित्तभी नही. जब दंड प्रायचित्त नही तो वो आराधक है विराधक नही. दिगंबरशास्त्रोंमें लिखाहै कि-विष्णुकुमारजी मुनिने-नमुचिकों अन्याय करते हुवे रोकनेके लिये अपनी जंघा चारिणालब्धिसें कामलेकर रात्रीके समय गमन किया. यह कार्य उनका धर्मरक्षानिमित्त होनेसें उत्तम समजा गया.

(३१)-दिगंबर कहतेहै-श्वेतांबरमुनि जिनमंदिरमें आहारपानी खाते है, परंतु यहवात असत्य कहतेहै. श्वेतांबरके शास्त्रोंमें नही लिखाकि-जिनमंदिरमें आहारपानी खाना, न कोइ खाताहै. झूठा कलंक देना समदृष्टिजनोंका काम नही. यदि-अज्ञानसें कोइ मुनि जिनमंदिरमें आहारआदि खाता हो तो उसको भूल है-छद्म मस्थजीवांकी प्रकृति जुदी जुदी है, एक मनुष्यकी भूलपर सर्व संघकों कलंक देना योग्य नही.

(३२)—दिगंबरलोक दीवालीके रोजही चौमासा पूर्णहुवा मानवे है, जबपूर्वकालमें उनके नग्नमुनि विद्यमान थे तब वे कार्तिकसुदी एकमकोंही विहार करजाते थें. अब जो उनके शिष्य नट्टारकलोक है वे कहतेहै एक वस्त्र ग्रहणके अतिरिक्त अन्य जितनेकार्य हम करते है पूर्वमुनियोंके कार्य मुजब है, परंतु यह कहना जाननेही योग्य है. आगे चलके इसी बोलमेंउनका कुञ्जवर्नन लिखेंगे. उससें जो समझना हो-समझ जेना. यहां हम कों इतनाही कहना है भट्टारकलोककी कार्तिकसुदी एकमकों विहार करते है. श्वेतांबर लोक कार्तिक शुक्ल पौर्णमासीके रोज चौमासा पूर्ण होना मानते है और मार्गशीर्षवदी एकमकों विहार करते है. इसमें दोंनो आमनायवाले अपने अपने शास्त्रकी साक्षी देतेहै. जो द्वादशांगवाणीके सिद्धांतोंकों उथथापनकरके नयेग्रंथोपर श्रद्धा रखते है उनकी कथनीसें तो अलबते ? द्वादशांगवाणोके सिद्धांतोंकों माननेवालोंकाही कथन प्रमाणभूत माना जायगा. (भट्टारकोंका चाल चलन,)—नट्टारकलोक वस्त्र लाल पहनते है. काष्ठासंघ (दिल्लीवाले) पोलेभी-पहेनतेहै. जाहेरातमें जोजन एकही दफे जीमते हैलेकीन गुप्तपने अपने मकानमें रसोइ बनवाकर दोवाराकी जीमते है परंतु कहनेमें यही कहेंगे हमने एकहीदफे जोजन किया है. एसा न कहे तो उनके श्रावकलोक थोडा आदर करके रहे जाय-दिगंबरोंमें यहरीति ज्यादा देखी गयीकि-जो उंची उंची बात प्ररुपे वह अधिक आदर पावे. जो शिथिलाचारकी बात कहे उसका आदर नहो. जोजनके लिये भट्टारकलोक जब शास्त्रवांच चूकतेहै तब एक श्रावक उनकों

भ्रामरीके लिये प्रार्थना करता है, ऋद्धारकजी अपनी पींछी उसके हाथ छुवाते है अर्थात् निश्चय हो गयाकि भृद्धारकजी आज इसके घर भोजनजीमने जायगे फिर भृद्धारकजीके साथका कोइ श्रावक या-पंडित-उसभ्रामरीवालेके घरजाकर विधि पूर्वक भोजनका तयारी कराता है, रसोइ तयार हो चूकी तो सब प्रकारकी चीजें एक थालमें धरके ऋद्धारकजीकों दिखाके मंदिरमें चढाता है, बाजे गाजेके साथ फिर भृद्धारकजी उसके घर जातेहै, वहां शास्त्रकी पूजा उस श्रावकसें कराके-रसोडेमें बैठ भोजनजीमना शुरु करते है, भोजनमें कवलकी गिनती रखना चाहिये, कोइ (३०) कवल-कोइ (३२)-कोइ (४०) और कोइ (४५) कवलतक खाते है, रसोइकी चीजमें यदि-केश-मलखी-या सावत अनाजका दाना-आजाय तो भोजन छोड देना पडे, कुत्ता-विछ्ठी गधा-भंगी-कसाइ-चांमाल-इनमेंसें किसीका शब्द भृद्धारकजीकों सुन पडे तोभी भोजन छोड देना, यह कायदा उनका सबसें अधिक पावंद है, इसीलिये उनके श्रावकलोक-भृद्धारकजीके जीमते समय झालर-घंटा-वा-थाल-वजाते रहते है, याने कोइ प्रकार अंतरा य न होने पावे, पानी कच्चा पीते है, असवारीमें-भ्याना-पालखी-और रैलमें-चढते है, गुप्तने जंगलमें-गड्डीपर-वा-घोडेपरन्नी-चढते है, धन्य-धान्य-मकानात-वगेरा सर्वप्रकारका परिग्रह सर्व भृद्धारक रखते है, नोकर-चाकर-छडी-चवर-वगेरा सबकाम राज्य वर्गी जैसा है, और कहते है कि-हम पूर्वकालके मुनियोंका अनुकरण करते है, समझ शको तो समझ लो ! यह बात सत्यहै या असत्य ?-शास्त्रानुकूल है वा मनःकल्पित है ?-एकबात लिखनी

और रहगयी जब भट्टारजी भोजन जमिनें लगते है तब कोइतो विल्कुल नग्न होकर जीमते है, कोइ कोइ शर्मके मारे नग्न नही होशकते वे धोती थोडीसी ढीली करके कमर खुली करदेते है. सबबकि-उनके नग्न मुनियोंने जो किया सो इनोंनेभी करना.

[३३]-दिगंबर कहतेहै-स्त्रीकों पंचमहाव्रत उदय नही आते श्वेतांबर कहते आते है. दिगंबरआम्नायके-गोमट्टसार-आश्रव त्रिभंगी-और चर्चाशतक ग्रंथमें लिखाहै कि-स्त्रीवेद पुरुषवेद-और नपुंसकवेदका उदय नवमें गुणस्थान तक है सोचोकि-यदि स्त्रीमें सर्व विरति चारित्र न होता तो नवमें गुणस्थानतक कैसे पहोच शकती?-महाव्रतविना गुणस्थान कैसे चढी ?-यदि गुणस्थान चढी तो दिगंबरकेही वचनसे स्त्री पंचमहाव्रतकी अधिकारिणी हुइ या नही ?-दिगंबरआम्नायके अष्टपाहुड ग्रंथमें स्त्रीकों पंचमहाव्रत उदयआना लिखा है. उसका पाठ-जइदंसणेण शुद्धा-उत्ताणमगोणसाविसंजुत्ता घोरं चरियचरित्तं इत्यादि. फिर द्रव्य संग्रहकी वृत्तिमें सीताकों पंचमहाव्रत उदय आये लिखे. यदि स्त्रीकों पंचमहाव्रत नही मानना मंजूर है तो कहिये ! चतुर्विधसंघमें साध्वीपद किसमें रहा ? और पंचमहाव्रतविना धर्मवृद्धि कहनेका अधिकार उसकों कैसे हुवा?-यदि कहाजायकि-स्त्रीसें शर्म नही छोमी जाती-वस्त्र रखना पढता है-और वस्त्र रखा तो मूर्छा हुइ-फिर पंचमहाव्रत कहां रहे?-इसका उत्तर,-मूर्छाका स्वरूप प्रथम लिखचूके है. दुर्विदग्धोंकों कोइ समझा नही शकता. धर्मोपकरण मूर्छारहित रखनेसें पंचमहाव्रत चले नही जाते. विना पदार्थ यदि मूर्छा है तो वही मूर्छा परिग्रह है पदार्थ है और उसमें मूर्च्छा नही है तो वह परिग्रह नही, यदि एसा न

माने तो संसारमें जितने दरिद्री मनुष्य हैं, कोमी पेसा जिनको विल्कुल नहीं मिलता, नंगेही रहते हैं, क्या ! उनको त्यागी कहेंगे ?--नहीं ! कहेंगे !!--क्योंकि-उनके पास मूर्छा (चाहना) रूप बड़ा भारी परिग्रह है. इसलिये यही सिद्ध हुआकि-जहां मूर्छा नहीं वहां त्यागभाव है.--जहां त्यागभाव है वहां महाव्रत है. इस बातको कोई इनकार नहीं कर सकता. दिगंबर लोक वृथा हठ करते हैं. इसहठको यदि वे छोड़ दें तोभी ठोक नहीं. क्योंकि--पंचमहाव्रत जब स्त्रीको मान ले तो मुक्तिभी मानना पड़े और स्त्रीको मुक्ति मानलियीतो दिगंबरमतकी जड़ही उठ जाय.

(३४)--दिगंबर कहतेहैं-स्त्रीकी उसीभवमें मुक्ति नहीं होती. श्वेतांबर कहते होती है. क्योंकि-मुक्तिका-मार्ग-सम्यक् ज्ञानदर्शन और चारित्र है.इसपर जो चले वो मुक्ति पाशके, चाहे स्त्रीहो या पुरुष हो. यदि कहाजायकि-उसमार्गपर चलनेकी स्त्रीमें शक्ति नहीं है तो यह कहना प्रमाणसे बाधित है. क्या ! ब्रह्मचर्यव्रत जोकि-सब व्रतोंमें शिरोमणि है स्त्री नहीं पाल सकती ?-आगमके वचनकी श्रद्धालाना अतिदुष्कर है क्या ! स्त्री नहीं लाशकती ? तनमनघन को क्या ! धर्मपर नहीं लगाशकती?-तीर्थकरकी माता-और ब्राह्मी सुंदरी-सोता-दमयंती-राजीमती- कुंती-रुखमणी-सत्यभामा-द्रोपदी-धारणी-रेवती-सुभद्रा-चंदनबाला-और मृगावती वगेरा सतीयोंको क्या उत्तम न कहना चाहिये ?-ये मुक्तिसाधनका कामकरे और मुक्ति न पाशके इसमें प्रमाण क्या ? दिगंबरलोक स्त्रीको अधम ! अधम !! कहते तो हैं लेकीन यह नहीं विचारतेकि-हम कहने वालेही अधम हैं जो जिन-नाणीको उध्थापन करके मनमानी कह

रहेहै. यदि स्त्रीकों मुक्ति नहीं होती तो दिगंबर आमनायके त्रिलोक सारमें एसा क्यों कहाकि-(२०) नपुंसकवेदी-(४०) स्त्रीवेदी-और [४८] पुरुषवेदी-कुल (१०८) एक समयमें मोक्ष जाय. (७० पाठ)

बीस नपुंसकवेद्या-इश्वरविद्याय हुंति चालीसा.

पुंवेद्या अडयाला समय एगेण सिङ्गाति.

३

इसपर दिगंबर कहते है-स्त्रीवेदीकों जो मुक्ति कही सो द्रव्य स्त्रीवेदीकों नहीं, किंतु भाव स्त्रीवेदीकों समझना. भावस्त्रीवेदी वह होके-जैसे किसी पुरुषकों इच्छा हुयीकि-मैं स्त्रीवत् कामसेवन करु उससमय वह पुरुष-ज्ञावस्त्रीवेदी है. ऐसे पुरुषकों-(अर्थात् भाव स्त्रीकों) जो मोक्ष होना यही भावस्त्रीवेदीका मोक्ष दिगंबरआम्ना यमें कहाहै. इसपर श्वेतांबर पूछते है क्या ! दिगंबरमतमें ऐसे भाववर्त्तते हुवेभी मोक्ष होजाती है ? कामसेवनके ज्ञाव होतेभी ज्ञावस्त्रीकों मोक्ष कहतेहों तो फिर इव्यस्त्रीकों मोक्ष कहते क्या बाधक था ?-सोचो ! जब पुरुष एसा बुराविकल्पमें पडाहै तो धर्मशुक्लध्यान कहां रहा ?-जिससें केवलज्ञान और मोक्ष हो, यदि ऐसेही मानते हो तो समझो ! किसी स्त्रीकों इच्छा हुयी कि-मैं पुरुष वत् कामसेवन करूं,-उससमय वह स्त्री-भावपुरुषवेदी आपके मान ने मुजब है तो उसकोंभी मोक्ष कहना चाहिये. जब ऐसा मानना मंजूर है तो तुमारेही मुखसें स्त्रीकों मोक्ष कहना लाजय हुवा. कि-तनेक तर्क करतेहै कि-स्त्री अधोगतिमें छठी नरक जाती है सातमी नरक नहीं जाती. जब उत्कृष्ट पापकरनेकी ताकात नहीं तो मोक्षजानेकी ताकात कहांसें आयो ?-इसका उत्तर-यह कोइ व्याप्ति नहींकि-जो सातमी नरक जावे सोही मुक्तिजानेकी ताकात

रखे, उत्कृष्ट पापकरके सातमी नरक-और उत्कृष्ट पुन्यकरके अ
नुत्तरविमान जाना होताहै वैसे मुक्तिजानेमें वही न्याय लगाना
ठीक नहीं. क्योंकि-मुक्तिजानेमें पुन्यपाप दोनों क्षय करनेके न्यारे
ही अध्यवसाय है. जोकि-शुद्धध्यानरूप है. इसका संबंध देवलोक
वा-नरक जानेके साथ नहीं, न्यायवानोंको इसमें विनपक्षपात
सोचना चाहिये.

(३५)-दिगंबर कहतेहै-श्वेतांबरआम्नायमे उत्कृष्ट (५००)
धनुष्यकी अवगाहना वालेको मुक्ति होना कहा. और मरुदेवाजी
(५२५) धनुष्यकी अवगाहनावालेथे, इनका मुक्तिहोना कैसे
संभवे ?-उत्तर,-(५००) धनुष्यकी कायावालका मुक्ति जाना
कहा सो बाहुल्यता आश्रित वचन है. कोई सवापांचसे धनुष्यकी
कायावाला मुक्ति हो जायतो निषेध नहीं. वहोतसेतो पांचसे
धनुष्यकी कायावालेही गये. लेकिन कोई कोई सवापांचसे धनु
ष्यके धारकभी गये. इसमें क्या विरोध हुवा ?-नाभिकुलकरसें
मरुदेवीजो किंचित् न्यून अवगाहनायुत थे. क्यों कि-उत्तमसंस्था
नवतीस्त्री उत्तमसंस्थानवान् पुरुषसें किंचित् न्यून प्रमाणवाली
होतोहै. दिगंबरको यदि यह बात नामंजुर हो और मरुदेवीजीका
शरीर सवापाचसें धनुष्यका मानना होतोभीक्या? जब आगमका
वचन बाहुल्यता आश्रित है तो फिर विरोधही क्या रहा ?-अल
वते ! जिनको स्त्रीकी मुक्ति मुनतेही नाराजी पैदा होतीहै उनके
तो विरोधही है.

(३६)-दिगंबर कहते है-त्रिषष्टीशलाका पुरुष आहार तो
करतहै लेकिन निहार नही करते. अर्थात् भोजन जीमते है परंतु

मलमूत्र उनको नही आता. श्वेतांबर कहते है जो आहार करेगा मलमूत्र उसको कैसे न आयगा ?-अगर कहाजायकि-उनके खल पुदगल शरीरमें जल जाते है तो सोचो ! रसपुदगल भी उनके जल जाना चाहिये. जब एसा हुवा तो. भस्मरोग पैदा होनेमें क्या न्युनता रही ?-वृथा तर्क करना मुखौका काम है. अच्छा ! यह तो बतलाइयै !-स्त्री संज्ञोग करते समय उनको वीर्यखलन होता था या नही ?-यदि कहोगें होताथा तो फिर तुमारेही वचनसें निहार सिद्ध हुवा. वीर्य खीरना निहारहीका भेद है. यह कोइवात नही जो वीर्य तो निकसे और मूत्र न निकसे. जब मूत्रनिकसना सिद्ध हुवा तो मलभी निकसना युक्तियुक्त है.

(३७)-दिगंबर कहतेहै यादवंशी मांस नही खातेथे, श्वेतांबर कहते है जिनोंने श्रावकव्रत लियाथा वे नही खातेथे दूसरे खातेथे. यादवोंपर श्वेतांबरको क्या द्वेषभाव था ? जिससें वे उनको मांस भक्षी ठहरावे !-जरतकुमार जिसने कृष्णजीको मृगसमझकर बाण मारा-यदि मांस भक्षी नहीथातो आखेट क्यों करताथा ?-और यह निश्चय हैकि-कृष्णजीके पीछे इसी जरतकुमारसें यादवंशका नाम चला है.

[३८]-तत्त्वार्थसूत्रमें नय [७] कही-और दिगंबर देवसेना चार्य अपने बनाये नयचक्र ग्रंथमें (९) नय कहते है, याने द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिककोभी नय कहतेहै. श्वेतांबर छव्यार्थिक-पर्यायार्थिकको नय नही किंतु नयकेअंश याने उपनय कहते है. नैगम-संग्र-व्यवहार-रिजुसूत्र-शब्द-समन्वित और एवंभूत नय तो ये सातही है, यदिनयके अंशको नय माने तो प्रमाणके अंश जो-

अवग्रह-इहा-अवाय-धारणा-और अनुमान आदि मतिज्ञानके जेद है उनको ज्ञी प्रमाण मानना चाहिये. सो तो मानते नही और नयके अंशको लेकर नय कहते है कितनी भूल ?-यदि कहाजाय कि- तत्त्वार्थमें तत्व सात कहे और है नव-इसी प्रकार नयज्ञीनव होना चाहिये. परंतु यह बात युक्त नही, क्योंकि विभक्तविभाग न्यारी बात है और कारणजात न्यारी बात है. यदि नयांशको नय मानना मंजूर है तो अर्पित अनर्पितको भी (जो नयके अंश है) नय मान लो. फिर नवही क्यों ग्यारह नय कह दो-

(३९) दिगंबर निश्चयनयको पहले और व्यवहारनयको पीछे कहते है. श्वेतांबर व्यवहारनयको पहले कहते है. क्योंकि- प्रथम व्यवहारनयही परिणमन होता है. जबतक आंखोंसे देखा न जाय क्या ! मालूम ?-इस पुस्तकमें क्या लिखा है ?-दिगंबर अपने पक्षको पुष्टतो करनेमें कसर नही रखते परंतु झूठकी दोड़ कितनी !-निश्चयनय हृदयमें स्थापनकर व्यवहारमें प्रवर्तना यही जैनागमका रहस्य है. यदि व्यवहारको पीछेही मानना मंजूर है तो प्रथम गुरुशिष्यभाव क्यों मानना ?-निश्चयनयमें तो अपना आत्माही गुरु है.

(४०)-दिगंबर कहते है-गुणके स्वभाव और विभाव दो पर्याय है. श्वेतांबर कहते है गुण-द्रव्यसें भिन्न नही फिर उसको पर्याय कहासें ? हकीकतमें द्रव्यके सहजावीपर्यायोकाही नाम गुण है. इसलिये स्वभाव विभाव दो गुणके पर्याय नहीं किंतु द्रव्यकी परिणति रूप है.

(४१)-दिगंबरलोक-हुंडाअवसर्पिणी कालसें इतनी वार्तेअन

होती हुयी मानते है. (१)-तीर्थकरोकाजन्म अयोध्यामेंही होना चाहिये और अन्य जगहसें हुवा. (२)-तीर्थकरोकी मुक्ति सम्मत्त शिखर सें होना चाहिये कितनेककी अन्यक्षेत्रोंसें हुयी. (३)-तीर्थकरोके पुत्रही होपुत्री नहो-रिपभदेवके घर पुत्री जन्मी. (४)-चक्रवर्तीका मान खंडन नहो-और भरतचक्रीका मान वाहुवलीजीने खंडन किया. (५)-तीर्थकरकों किसी अवस्थामें उपसर्ग नहो पार्श्वनाथजीकों हुवा. (६)-तीर्थकर अवधिज्ञानकों छदमस्थअवस्थामें प्रकाशित करे नहि-रिपभदेवने किया. (७)-वासुदेवका मृत्यु भाइके हाथसें नहो कृष्णजीका मृत्यु जरतकुमारसें हुवा. (८) ब्राह्मणकुलकी उत्पत्ति अन्यकालमेंनही होती-इसकालमें हुइ. (९)-त्रिषष्टीशलाका पुरुष (६३) होने चाहिये-(५८) हुवे. (१०)-नवमेंतीर्थकरसें लगा सोलहमें तीर्थकरतक साततीर्थकरोके अंतरेमें धर्म बिल्कुल विच्छेद होगया-अन्यकालमें नही होता. (११)-रुद्र और नारद अन्यकालमें उत्पन्न नही होते-इसकालमें हुवे. (१२)-(११) कल्की और (२१) अर्द्धकल्की अनागतकालमें होयगें.-यह वर्नन सिद्धांत सार-त्रैलोक्यप्रज्ञप्ति-और भाषाके पार्श्वपुराणसें देखकर लिखाहै,-

श्वेतांबरलोक हुंडाअवसर्पिणीकालदोषसें इतनोवाते अनहोती हुयी मानते है. (१)-उत्कृष्टअवगाहनाके धारक (१०८) एक समयमें मुक्ति न जाय और इसकालमें गये. (२)-सुविधिनाथ और शीतलनाथके अंतरमें धर्म विच्छेद हुवा और असंयतिकी पूजा हुयी (३)-मल्लिनाथतीर्थकर स्त्री हुवे. धर्मनायक पुरुष प्रधान होने चाहिये. (४)-वासुदेव वासुदेवोंका शंखशब्दसें मीलना हुवा. (५)-युगलीये मरके नरक न जाय और इसकालमें दो युगलोये नरके गये. (६)-तीर्थकर तुच्छकुलमें न आवे-महावीरस्वामी-

आये-और उनका गर्भ मंचार क्रिया गया. (७)-तीर्थकरोंकी धर्मदेशना निष्फल न जाय और महावीरस्वामीकी प्रथमधर्मदेशना निष्फल गयी. (८)-केवलज्ञान हुवेवाद उपसर्ग न हो और महावीरस्वामीका हुवा. (९)-चंद्रमा सूर्य मूलविमानसे मनुष्य लोकमें आये. (१०) चमरेंद्रका उत्पात उर्द्धलोकमें हुवा-यह वर्णन कल्पसूत्रसे लिखा है.-

दोनों अस्त्रायवाले यह मंजूर रखते है ये अनहोतीवाते जो उपर लिखी गयी है मुख्य मुख्य है. इसके शिवाय और भी केइ एसी अनहोतीवात याने आश्चर्यजनक हुयी है जिनका वर्णन बहु-श्रुतज्ञानीयोंसे जानना चाहिये.

दिगंबरलोग-नीचेलिखेहुवे सातसवालोंको चौरासीवोलोंमें गिनकर ज्यादाे तकरीरमें लाते है, (४२) जैसेकि-उत्कृष्टअवगाहनाके धारक (१०८) एक समयमें मोक्षकैसे गये?-(४३) तीर्थकर स्त्री-कैसे हो? (४४) युगलीये नरक कैसे गये?-(४५) तीर्थकरकी धर्मदेशना निष्फल क्यों? (४६) तीर्थकरको उपसर्ग क्यों? (४७) चंद्रसूर्य मूलविमानसे कैसे आये? और (४८) चमरेंद्रका उर्द्धलोकमें उत्पात कैसे हुवा?-(इसका जवाब.) श्वेतांबरलोग द्वादशांगवाणीके अंगशास्त्रोंके अनुसार चलते है, उनमें फरमायाकि-हुंडासर्पणीकालदोषसे (१०) दसवाते अनहोती हुइ, उपर लिखे हुवे (४२)-से-लगाकर (४८) तकके-सातसवाल-उनदस आश्चर्योंमें दाखिल है, इसलिये कालदोषके कारण उक्तवातेहुइ कहना चाहिये, तीर्थकरका-स्त्री स्वरूपमें होना युक्तिद्वारा सबुतहोतेहुवेभी अनहोतीवातमें इसलिये कहागयाकि-धर्मकेनायक बहुतकरके पुरुषही होते है लेकिन! इसकालमें एकतीर्थकर-स्त्री-हुवे-यह-एक अचं-

भेकी बातहुइ, बहुधाकरके-पुरुषही-राजा-होते है लेकिन ! कोइ समय स्त्रीभी-राज्येश्वरी-होजाय तो-ना-नहीकहसकते,

मल्लिनाथतीर्थकर-स्त्री-हुवे-इसमें प्रमाण यहहैकि-स्त्रीवेद-और तीर्थकर नामकर्मका बंध-एकजीवकों-गुणस्थानोंके आकर्षणसे हो-सकताहै, जैसेकोइ-जीव-जव-मिथ्यात्व-या-सास्वादन गुणस्थानपर मौजूदथा-उसवखत-स्त्रीवेदका बंध-किया-और-फिरजब उपरकेगुणस्थानपर पहुंचा-तब-तीर्थकरनामकर्मका बंध किया-सौचो ! इसमें क्या हर्ज हुवा ?-असलपुछोतो कोइहर्जनही, जैसे-श्रेणिकराजाने मिथ्यात्वगुणस्थानपर थे-जव-नरकगति-वांध लिइ-और जव-चतुर्थगुणस्थानपर पहुंचे तब-क्षायिकसम्यक्तीहुवे-और तीर्थकरनामकर्म-उपार्जनकिया-वैसे-मल्लिनाथजीके जीवने पहिले स्त्रीवेद-और-पोछेसे तीर्थकरनामकर्म-वांधाथा-कहिये ! इसमें क्या बाधक आया ?-सौचकर जवाब दो-वृथा शंखनादकरना मूर्खोंका कामहै. किसकी ताकात है जो सच्च बातकों-तोड सके ?-

(४९)-दिगंबर कहते है वसुदेवजीकों बहत्तरहजार स्त्रीका होना असंभव है. चक्रवर्तीसे अधिकपुन्यप्रताप सिद्ध हुवा, इसपर श्वेतांबर कहते है जैसे बाहुबलीजी बलपराक्रममें भरतचक्रीसे अधिक हुवे इसीप्रकार स्त्रीप्राप्तिके सौभाग्यमें वसुदेवजी अधिक हुवे. इसमें शंसयलाना वृथा है.

(५०)-दिगंबर कहते है गौतमस्वामीकों स्कंधकपरिव्राजकके सामने चलाकर जाना बातचीत करना उचित नहीं था. श्वेतांबर कहते है ज्ञानी पुरुष जैसा भाव होना अपने ज्ञानमें देखते है वैसे करते है गौतमस्वामीका इरादा उसकों धर्म प्राप्ति करानेका था. इसलिये कोइ दोषकी बात नहीं. महावीर स्वामीकी

आज्ञासे गये थे,—एकांत पक्षकों खंचते रहना इसीसे तो दिगंबरोंका नाम एकांत मिथ्यादृष्टि कहा गया, सौचोकि—जिसक्षेत्रके रहनेवालेजीवोंका पुन्योदय आता है उस उदयकी आकर्षण शक्तिसे ज्ञानीयोंका उसक्षेत्रमें जाना निमित्त कारण है.

(५१)—दिगंबर कहते हैं—द्रौपदीके पांचभर्तार हुवे फिरसती कैसे रही?—श्वेतांबर कहते हैं जैसे चक्रवर्ती-बलभद्र वासुदेवआदि पुरुषोंको सेंकडे हजार स्त्रीयां थी और फिर वे शीलवान् और सते बने रहे इसीप्रकार द्रौपदीभी सती रही पांचोकी साक्षीसे पांच पांडवोंके साथ द्रौपदीका विवाह हुवा यह सर्व शास्त्रोंका लेख है. द्रौपदीने छठेपुरुषकी चाहना न कियी इसलिये सती कही गइ. यदि पांचोके स्वरु एकको पतिकरके चारके साथ विषयसेवन करती तो अलबते असती कहशकते. यदि स्वाल किया जायकि-संसारमें अन्य अन्यस्त्रीयोंने एकपतिसे ज्यादा पति क्यों न किये?—इसका उत्तर—द्रौपदीने पूर्वभवमें नियाणा किया थाकि—मेरो तपस्याका फल होतो मुजे अगले जन्ममें पांच भर्तार मिले—सो मिले और पांचके शिवाय छठे पुरुषको उसने भोग्या नही फिर दिगंबरलोक इसको कुसतीका दोष किसलिये लगाते है सो विदित न हुवा?—यदि एक पतिसे ज्यादापति होनेसे लगाते हो तो चक्रवर्ती बलभद्रादिको एकस्त्रीसे ज्यादास्त्री हुयी उनकोभी दोषित कह दो.

(५२)—दिगंबर कहते हैं देवता मनुष्यणीके साथ—और मनुष्य देवांगनाके साथ—काम भोग नही सेवते, श्वेतांबर कहते सेवते है. कामभोग मोहकर्मका भेद है. मोहके उदयसे उंचजाति का पुरुष-चांडालजैसी नीचजातिकी स्त्रीसे—और कभी तिर्यचणीके

शाथभी कामसेवन करलेता है. इसी प्रकार देवता-मनुष्यणीके शाथ-और मनुष्य देवांगनाके शाथ यदि अनुकूल हो तो विषय सेवन कर सकते है, भरतचक्रीने गंगादेवीकेशाथ संभोग किया द्वादशांगवाणीके सिद्धांतोमें लिखा है. दिगंबर इसबातको सूनकर हंसी उडाते है लेकिन मुखोकी हांसीसें ज्ञानीयोके वचन अन्यथा नही होशकते. यदिप्रश्न किया जायकि-क्या उन्होंमें गर्भोत्पत्तिभी होती है ?-इसका उत्तर,—वैक्रियवीर्यसें—उदारिक और उदारिक वीर्यसें—वैक्रिय शरीरमे गर्भोत्पत्ति नही होती, परंतु कामविकारकी शांति जरूर होती है.

[५३]—सुलसा श्राविकाके शाथ देवताने विषयसेवन किया जिससें उसको [३२] लडके एकशाथ पैदा हुवे. ऐसा कहकर दिगंबरलोक श्वेतांबरोका उपहास्य करते है. परंतु इसमें उनकी समझका फर्क है. सुलसाको रोगादि दोषसें गर्भस्थंभन नही होता था, उसने देवताका आराधन किया जब उसदोषके मिटानेको देवताने [३२] गुटिका दियो. और कहाकि—एकएक गोली खानेसें एकएक गर्भस्थंभन होता रहेगा. सुलसाने भोलेपनसें [३२] गोली एकशाथ खालियी. दैवयोग [३२] गर्भस्थित रहें. और बडी वेदनाका समय पैदा हुवा. देवताने आनकर कहा तुमने बडी भूल कियी. जो एसा किया. निदान!—प्रसूतिसमय देवने साहाय्य कियी जिसस (३२) पुत्र प्रसूत हुवे. वर्त्तमानकालमें भी देखते है बडेवैद्य आपनी चिकित्सा विद्यासें स्त्रीको गर्भस्थंभन हो एसा उपाव करते है और औषध जडीबुटीद्वारा साहाय्यक होते है. किसीकिसी स्त्रीको दोदो तीनतीन लडके एकशाथ जन्मते है. क्या ! दिगंबरको यह बात मंजूर नही !-उनके गुरुभट्टारक-

पाड़ें--और तेरहपंथीयोंके भाइजी--तो इसीव्यवहारसे अपना गुजारा चलाते है.

(५४)-महावीरस्वामीकों मातापिता विद्याशालामें पढाने केलिये लगये दिगंबर इस बातकों नही मानते. तर्क करतेहैकि-अवधिज्ञानी होकर पढनेकों कैसे गये ?-इसका उत्तर,-अवधिज्ञानी जरूर थे लेकीन मातापिताके मनोरथकों खंडित कैसे करे ? जैसे नेमनाथ भगवान् जानते थेकि-मेरा विवाह न होगा कुमारअवस्था मेंही संयम उदय आयगा. लेकीन मातापिता भ्रातादिककी प्रेरणासे उनका मनोरथ अखंडित रखनेकेलिये विवाहनेकों गये. और पीछे लोट आये, इसी प्रकार महावीरस्वामी विद्याशालामें गये-और पंडितका शंसय निवर्त्तन किया,-मातापिताका मनोरथ अखंड रखा-और पीछे लोट आये. दिगंबर नेमनाथको विवाहने केलिये जानातो मानते है, और महावीरस्वामीकों पाठशालामें जाना इसपर शंसय लातेहै-कहिये ? शंसय मिथ्यादृष्टि कौन हुवे ? सोचो ! अवधिज्ञानीने अपनेज्ञानसे यहभी तो देखा होगा कि-मेरा जाना पंडितके घर वास्ते पढनेकेलिये होगा.

(५५)-दिगंबर कहते है श्वेतांबरआम्नायमें माना है कि पेहले देवलोकका इंद्र मरकर दूसरे-और दूसरे देवलोकका इंद्र मरकर पहले देवलोकमें इंद्र होवे, इसका उत्तर,-यह बात असत्य है. क्या ! दिगंबरमतमें-अंधेरनगरीवेंबुझराजा-यही न्याय चलता है ?-विना प्रमाण कोइ बात कहेना बडी भूल है.-

(५६) धातकीखंडका कपिलवासुदेव जंबुद्वीपके भरक्षेत्रमें आया-उसकों केवलज्ञान हुवा और फिर आनंदसे-नृत्य किया. इसका उत्तर,-यहभी दिगंबरोंकी इषाका एक नमूना है,-

कोई शास्त्रमें नहीं लिखा.-उन्मत्तोंको कौन समझावे ?

[५७]-दिगंबरकहते हैं श्वेतांबर आम्नायमें यह बात मान्य हैकि-कोई श्रावक-वृद्धसाधुको स्त्रीका योग मीलाकर उनका मन स्थिर करेतो दोष नहीं किंतु पुण्यप्राप्ति हो. इसका उत्तर, यह बात मिथ्या है, स्त्रीसेवन साधुजनोंके लिये विलकुल निषेध है ऐसी ऐसी बातोंसेही तो दिगंबरोंकी उत्तम विद्वत्ता झलक रही है. मनमें समझ रहेहैं जो हमको सुझीसों किसीको नहीं सुझी. हमारी समझ के अगाड़ी किसीकी समझ ठीक नहीं. द्वादशांगी माननेवाले सभी मुनिमहर्षि अविद्वान् हुवे. नग्नहोकर पीछीकमंडलु पकड लीया. वस ! मुनिमहाराज वन गये. सोभी कुवेका जल पीछा कुवेमें चला गया. न मुनि रहे न आर्थिका रही, स्थविरकल्पमार्गके नींदक होते द्वादशांगवाणीका नींदक बनना पडा, दूसरोंकी नींदा और अपनी तारीफ शिवाय बात नहीं. स्त्रीको मुक्ति नहीं केवलीको आहार नहीं यह दो बातें दिगंबरोंकी परमसमाधि है. दिगंबरोंकी स्त्री रात्री समय-अपने पतिको नग्न देखे-सवेरे देवदर्शनको जावे वहां देवमूर्त्तिको नग्न देखे-और मध्यान्हमें उनके नग्न मुनि भिक्षाको आवे तो उनकोभी नग्न देखे-रातदिन पुरुषचिन्ह मेंही उसका ध्यान रहे मुक्ति कहांसें हो ? अनेकजगह शास्त्रर्थमें लाजबाप होते हुवेभी निर्लज्जोंको लज्जा नहीं आती. रत्नकंबलके लिये गुरुसे लडाइ करके तो शिवभूतिमुनिने मत निकाला-आज उसकी औलाद असली जैनसंघकी बरावरी करनेको उमेदवार हुयी है. देखिये ? स्यात् !!

(५८)-दिगंबरकहते हैं-तिविहार उपवासमें जलको उष्ण बनाकर पीनेसे आरंभ होगा, इसलिये कच्चाजल पीना ठीक है.

श्वेतांबर कहते हैं तिविहारउपवासमें उष्णजल पीना चाहिये, कच्चाजल पीनेसे उपवास नहीं होता-यदि आरंभहोनेका हेतुवताते होतो-कुर्वेंसें जल निकालके-पीनेमें-क्या ! आरंभ नहीं होता ?-आरंभका त्यागतो फिरभो न बना. और सचित्तजलपीनेसें उपवास नहीं बना. वृथा भूखे मरे.

(५९)-दिगंबर कहते हैं व्रतधारीमनुष्य व्रतमें शिथिल हो जाय और वो खानेको मांगेतोभी देना नहीं. व्रततोडानेका दोष लगता है, श्वेतांबर कहते हैं यह बात ठीक नहीं. जब सर्वप्रकार की धैर्यतासें मनुष्य रहित होचूका-अन्नजल मागता है तो उसको एक दो दफे व्रतकी यादी दिलाना. यदि विलकुल शिथिल है तो अनुकंपासे अन्नजल देना. इसमें व्रत तोडानेका दोष नहीं लगता. समाधिधैर्यताके अभावसें उसका व्रतही रहा नहीं तो फिर तोडानेका दोष कहासें आया ?-अन्न ! अन्न ! जल ! जल ! पुकारता है और तुमको अनुकंपा न आयी तो धर्म कहा रहा ?-यह जिनाज्ञां नहिंकि-अनुकंपासेंभी रहित होजाना. उसके परिणामही पलट गये तो क्या उसका व्रत तुम रख सकते हो ?-परंतु सच है ! एकांतमिथ्यादृष्टियोंको समझाना मुश्किल है,

(६०)-दिगंबर कहते हैं श्वेतांबर आम्रायमें शास्त्रको जड मानते हैं. इनका अविनय होजाय तो दोष नहीं. इसका उत्तर, श्वेतांबरलोक शास्त्रको उत्तमप्रकारसें आदरकरते हैं. सोनाचांदी इनकेपर चढाते हैं. उंचे आसनपर रखते हैं. तुमने क्योंकर जाना जड मानते हैं, क्या ! मुद्रितकराना-देशविदेशमें जहां जहां धर्मवृद्धि हो वहां भेजना जिससें हरकोइ सच्चैतत्वको चीने, इसवातको दे-

खकर जड माननेका दोपारोप किया ?-पक्षीकी तरह दिगंबरलोक उमास्वातिकृततत्वार्थ सूत्रकों और भक्तामर कल्याण मंदिरआदि स्तोत्रको कंठ याद करलेते है और चतुर्दशी आदिक पर्वके दिन इनका पाठ करजानाही परमधर्म समझते है, सोचोकि-यह जडता नही तो और क्या है ?-प्रथमतो विना व्याकरण विद्याके शुद्ध उच्चारण नही होशकता. दूसरे जवतक श्रोतागण वक्ताके कथन कों यथार्थ न समझ ले-तो उसका संपूर्णश्रम व्यर्थ है. यदि कोइ भेंसके आगे भेरवीरागिनी गावे तो उसकों क्या लाभ ?-इसीप्रकार जानना चाहियेकि--शास्त्रको जड कहना श्वेतांबरका हुवा-या-दिगंबरका ?-

(६१)-श्वेतांबर नमस्कार मंत्रको (ए) पद और [६७] अक्षरमय मानते है. दिगंबर (५) पद [३५] अक्षरमय मानते है. पीछले (४) पद नही मानते.-इसका उत्तर,-असलमें [४] पद कम करनेसे अधूरा मंत्र हुवा. यदि कहा जायकि-संक्षेपसे हम पढते है तो संक्षेपसे उंकारमेंभी-पांचपद आजाते है उसीकों पढलो. पांचपदपढनेकी तकलीफ क्यों उठानी ?-यदि तर्क कियाजायकि पीछले [४] पद अनुष्टुप्छंदमय है इसलिये (३३) अक्षर होने चाहिये और है (३३) इसलिये छंदोभंग हुवा अमान्य है, इसका उत्तर-यह कोइवात नही मंत्रका कवच (६७) कोठेमें है. यदि एक अक्षर कम होतो कवचका (१) कोठा खाली रहे, फिर मंत्रका विधान खंडित हुवा. खंडित मंत्र पढना या खंडित विधान करना शास्त्राज्ञासे विरुद्धहै. दिगंबरलोकभी देवपूजामें इस मंत्रकों चालिकासहित उच्चारण करते है, और रिषिमंजुलस्तोत्रभी चूलि-

का सहित पाठ है. द्वेषभावकर हठवाद करना दूसरी बात है.

[६१] दिगंबर कहते हैं श्वेतांबरोके शास्त्र सब नवीन और पूर्वापर विरोधसे भरे हुवे हैं. इसका उत्तर.-श्वेतांबरके शास्त्र नवीन नहीं. जो द्वादशांगवाणीके अंग शास्त्र है उनको नवीन कहना उन्मत्तताका कारण है. दिगंबरके शास्त्र सब-शिवभूतिमुनिके पीछे बनेहुवे हैं. द्वादशांग वाणीके अंगशास्त्रको मानते नहीं. सोचो ! अब कौनके शास्त्र नवीन ठहरे ?-श्वेतांबर शास्त्रोंमें पूर्वापर विरोध बताना दिगंबरोकी इर्षा शिवाय दूसरा कोई कारण नहीं, पूर्व पाठी मुनियोंका अभाव हुवा-बारहवर्षीकालमें भूखकेमारे कंठाग्र ज्ञानकोभी मुनिजनो चितार न शके जिससें जी बहोतकुछ न्यूनता हो गयी-बाद एकपूर्वपाठी श्रीदेवद्विगणीह्यमाश्रमणजी जितना ज्ञान उनको याद था सब आचार्योंकी संमतिसें लिखगये कोई बात पाठांतरथी सो पाठांतर कहकर लिखी, मतांतरथी सो मतांतर कहकर लिखी.-इनवातोंको विना विचारे यदि कोई कहे कि-इनके शास्त्रोंमें विरोध है उसे कोई नहीं समझा सकता. दिगंबरके शास्त्रोंसें पूर्वापर विरोधकी दोचार बातें यहां लिखते हैं. सीता चरितमें लिखा है कि-सीता जनकराजाकी बेटीथी. जनक राजाकी स्त्रीका नाम विदेहा था. उसकी कुक्षीसें सीता और जामंडल दोनुं एकसाथ जन्मे, छोटा पद्म पुराणमें लिखा है कि-सीता रावणकी बेटी थी छोटे बड़े दोनुं पद्मपुराणमें रामचंद्रजी का मारीचहिरणको आखेट रूप मारनेजाना नहीं लिखा. किंतु उत्तरपुराणमें लिखा है मारीचाविद्याधर स्वर्ण मय हिरण बनकर आया और रामचंद्रजी धनुष्यबाण लेकर उसको मारने गये,-

छोटा हरिवंश पुराणमें नेमनाथजीका गर्भ तथा जन्मकल्याणक शौरीपुरमें लिखा और बड़े हरिवंश पुराणमें दोनों कल्याणक द्वारिकामें हुवे लिखे. द्वारिकामें शौरीपुर नामका एक महोलाबताया.

(६३)—चोतीस अतिशय दिगंबरलोक इस मुजब मानतेहै.—

(१०)-जन्मके (१०)-केवलज्ञान हुवे वाद-और (१४)-देवकृत. श्वेतांबरलोक चोतीस अतिशय इसप्रकार मानते है, (४)जन्मके (११)-केवलज्ञान हुवेके और [१९]-देवकृत.

(६४)-मह्विनाथ और नेमनाथकों श्वेतांबरलोक बालब्रह्मचारी मानते है याने इनोंका विवाह नही हुवा. दिगंबर कहते है वासुपूज्य-मलिनाथ-नेमनाथ-पार्श्वनाथ-और महावीर-ये (५) तीर्थकर बालब्रह्मचारी रहे. विवाह इनोंका नही हुवा.

(६५)-छद्मस्थ अवस्थामें महावीर स्वामीका विहार अनार्य देशमें हुवा दिगंबर नही मानते. श्वेतांबर मानते है.

(६६)-रिषभदेवस्वामीकों [१००] पुत्र-और (१) पुत्री-श्वेतांबर लोक मानते है दिगंबरलोक-(१०१)पुत्र-और [१]पुत्री मानते है.

(६७)-तीर्थकर भगवान् गृहस्थ अवस्थामें दीक्षासैं पहले एक वर्षतक सांवत्सरीयदान देते है इसबातकों दिगंबर नही मानते.

(६८)-रिषभदेव जगवानने चारमुष्टीलोच किया दिगंबरलोक नही मानते. पंचमुष्टि किया मानते है.

(६९)-तीर्थकरकी माता-श्वेतांबरलोक कहतेहै (१४) स्वप्न देखे, दिगंबर कहते है (१६)देखे.

(७०)-दिगंबर-(१६)-देवलोक मानते है श्वेतांबर-१४-मानते है.

(७१)-देवलोकमें श्वेतांबरलोक-(६३)-प्रतर मानते है, दिगंबर (६३)-मानते है.

(७२)-श्वेतांबर-[५६]-अंतर्द्वीप मानते है, दिगंबर-[६६] मानते है.

(७३)-श्वेतांबर(६४)-इंद्र मानते है दिगंबर(१००) मानते है.

(७४)-श्वेतांबर कहते है तीर्थकरके जन्मसमय शक्रेंद्र पाल-कविमानमें बैठकर आता है, दिगंबर कहतेहै नही ! ऐरावण हस्तीपर बैठकर आता है.

(७५)-श्वेतांबर चक्रवर्त्तिकों [६४०००] स्त्री मानते है, दिगंबर [६६०००] मानते है,

(७६)-श्वेतांबर-पांचो पांडवोंको मुक्ति गये कहते है. दिगंबर कहते है कोइ मुक्ति गये कोइ नहीभी गये.

(७७)-शास्वते चैत्यालयोंकी गिनतीमें दोंनोंकी संख्या कमीबैसी है.

(७८)-दिगंबर चंडरुद्राचार्यके शिष्वकों विहार करते हुवे केवलज्ञान उत्पन्न हुवा नही मानते. कहते है दोघडी एक जगह स्थिर बैठे विना केवलज्ञान नही होता.

(७९)-महावीरस्वामीने दारिद्र्यी ब्राह्मणको अनुकंपासें अथ पना देवडण्य वस्त्र दिया दिगंबर नही मानते. कहते है दीक्षा लिये पीछे वस्त्रही नही रखना तो देना किसको?-

(८०)-महावीरस्वामीको केवलीअवस्थामें रोग हुवा दिगंबर नही मानते.-श्वेतांबर मानते है, तत्त्वार्थसूत्रमें-एकादश-जिने-(११) परिसह केवलीको क्यौं कहा? उसमें रोग परिसहजी कहा

है. रोग होना अशाता वेदनीकर्मके उदयसें है, केवलीकों अशाता वेदनीकर्मका विल्कुल अभाव नहीं इसलिये केवलीकों रोग होना असंभव नहीं कह सकते किंतु संभव है.

(८१)-कालिकाचार्यने साध्वीजीका शीलव्रत खंडन करने वाले गर्दजिह्व राजाके साथ संग्राम किया इस बातको दिगंबर नहीं मानते. कहते हैं साधुहोकर संग्राम करना ?-परंतु इतना नहीं सोचते धर्मरक्षाकेलिये संग्राम करनेसें महाव्रत नहीं जाता धर्मरक्षाकेलिये उष्ट्र राजेकों या हरकिसी उष्ट्रकों सजा देनेसें-शक्ति होतो तेजुलेश्या वगेरासें नस्मकरडालनेसें भी महाव्रत नहीं जाते. अलवते! पांच इंद्रियके विषयनिमित्त कोई कार्य किया जाय उसमें दोष है यदि इसवातको नहीं मानतेहोतो-विष्णुकुमारजीने नमुचिको त्राडनादियी क्यों मानतेहो ?-

(८२)-दिगंबर भरतक्षेत्रके ७ खंडोंमेंसें बीचला एकखंड जो दखनदिशाको है उसको आर्य मानतेहै. श्वेतांबर उसमेंके साठे पच्चीसआर्य देश मानतेहै. जहांकि-तीर्थकर-चक्रवर्ति-और-वासुदेवका जन्म हुआहै.

(८३)-सतराहप्रकारी-वीशप्रकारी-वगेरा पूजा-दिगंबर नहीं मानते. केवल अष्टप्रकारी पूजाही मानते है.

(८४)-दिगंबर कहते है-दीक्षालेकर श्वेतांबरमुनि कान वीं धातेहै. व्याख्यानवाचतेसमय उसमें मुहपत्तिवांधकर व्याख्या करते है. कोइकोइ सदा वांधरखतेहै. इसका उत्तर,-जैनआगममें सदा-या-व्याख्यानवाचतेसमय-मुखपर मुखवस्त्रिका वांधना नहीं कहा. इंदियेपंथके साधुकों जोकि-जैन नहीं और जैन कहलाया चाहते

है देखकर दिगंबरने यह तर्क किया हो तो श्वेतांबरसंघकों क्या ? जैसे दिगंबर जैनभास वैसे ढुंढिये जैनभास-जैसे-दिगंबरने घादशां गवाणीके सिद्धांतोंको उच्चापन किये-पीछी कंठलुलेकर अन्य लिंग धारा वैसे ढुंढियापंथीयोंने जिनप्रतिमा उच्चापन कियी-और मुखपर मुखवस्त्रिका बांधकर अन्यलिंग धारा. टीका-प्राप्य-निर्युक्त चूर्ण-अवचूरिकों-ढोडकर मनमाना अर्थकरना शुरूकिया और जाहेरातमें दयाधर्मीका चांद लेनाचाहा परंतु झूठ कहांतक चले ?- अंतमें सवेरके सितारेकी तरह तेजरहित होनापडा. व्याख्यानवाच तेसमयभी मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना जैनागममें नहीं कहा, बल्कि- यह कहाहै कि-व्याख्यानवाचनेवाला साधु अपने दांतोंको साफ रखे-सभामें अनेक प्रकारके श्रोते अकसर आतेहै, दांतोंको मखीन देखकर कहेंगे बडे मूर्ख है ! इनका धर्मजी मूर्खतालिये है जो दांतोंकोभी साफ नहीं रखते !! धर्मभी साफ नहीं होगा !!!-इस लिये दांत साफ रखना कहा. यदि मुखवस्त्रिका बांधकर व्याख्यान वाचना जैनआगमकों स्वीकार होता तो दांतोंको कौन देखता !- जिसकेलिये साफ रखना कहा गया.-नम्रमुनि जब उपदेश देते होंगे तब क्या हाल होता होगा ? अनुमान तो यही होता है कि-सबलोक उनके पुरुषचिन्हपर दृष्टिदेकर उपहास्य करते होंगे. फिर उपदेशमें कौन ध्यान देता होगा ?

(७४) बॉलोंका वर्णन पुरा हुआ. कितनेक बोल व्यर्थ वा दानुवादके देखे उनको ठोमकर जो शास्त्रार्थ करनेके योग्य थे केवल उनकेपरही समालोचना कियी. यूंतो पेंडपेंडपर विरोध है. कहांतक और कितना लिखें. ?

[वीशपंथी और तेरहपंथीयोंकी क्रियाका तफावत].

(वीशपंथीलोक)-जिनमंदिरमें क्षेत्रपाल देव-देवी-वगेराकी स्थापना करते है.

(वी-पं-)-जिनप्रतिमापर पंचा मृतसे कलशाभिषेक करतेहै.

(वी-पं-)-पुष्पमाला छूटेफुल प्रतिमापर चढाते है.

(वी-पं-)-सांजको मंदिरमें आरती करते है.

(वी-पं-)-हरैफल पुजनमें चढाते है.

(वी-पं-)-चवरी गायके बालका चवर उपयोगमें लाते है.

(वी-पं-)-मंदिरमें जब बडी पूजा वगेरा विधान होताहै जवारा आरोपण शकली करण-वगेरा करते है.

(वी-पं-)-गुरुओंके चरणका थूम मानते है-जैसे-नेमिचंद्राचार्यके, वगेरा.

(वी-पं-)-प्रतिष्ठावगेरामें नवग्रह पूजन करते है.

तेरहपंथी लोक नही करते.

तेरहपंथी नही करते.

तेरहपंथी नही चढाते.

तेरहपंथी नही करते. किंतु केवल पाठमात्र उचारण करलेतेहै तेरहपंथी नही चढाते.

तेरहपंथी उसजगह रेशम-या-गोटेके-चवर उपयोगमें लातेहै तेरहपंथी नही करते है.

तेरहपंथी नही मानते.

तेरहपंथी नही करते.

(वी-पं-)- ब्रतके ग्रहण और स मासिमें गुरुकी पीछो-वा-माला रूप—गुरुस्थापनाकों हाथमें लेकर नमस्कार करते है.

(वी-पं-)-निर्ग्रंथगुरुकोंभी गुरु मानते है और सग्रंथ अर्थात् परिग्रहधारी--भट्टारक--और उनके शिष्य पांडेकोंभी गुरु मानते है.

तेरहपंथी नही करते.

तेरहपंथी- भट्टारक-और पांडे कों गुरु नही मानते. लेकिन इनकी प्रतिष्ठित प्रतिमाकों मानते है. क्यों ? जब उनकों गुरुही नही माना तो उनकी प्रतिष्ठा कैसे मानी गयी ?- और वीशपंथी जब परिग्रह धारी भट्टारक पांडे आदिकों भी गुरुमानते है तो उनके शास्त्रकी यहजो प्रतिज्ञाथीकि निर्ग्रंथकोंही गुरु मानना वह कहां रही ?-

हकीकतमें दोनोंकी भूल है. जब छ्वादशांगवाणीके सिद्धांतोंको उद्घ्यापन किये-और विच्छेद होये हुवे जिनकल्पकों स्थापन क्रिया-द्रव्य क्षेत्र काल भावके परिवर्तनकों सोचा नही-इसी सबवसे-पदपदपर विरोध हुवा.

वीशपंथी कहते है जिनमंदिरमें विवादकर तेरहपंथीयोंने नवीन पंथ निकाला,-गुरुओंकों विल्कुल उद्घ्यापन करदिया,- देवपूजा पुरानी छोडकर भाषाछंदमय मनोमति बनायी,-अष्ट

प्रकारी पुजामें पुष्प, फल, दीप, पंचामृत, सब बदल दिया, और-
खोपरेकी गिरिकोंही नैवेद्य और दीपक वगेरामें प्रधान कर दिया-
क्षेत्रपाल देवीदेवताकों जडामूलसैं उच्चापन करदिये—बहोत क्या
कहे ? जैसे श्वेतांबरमेंसैं विना गुरुके मुंडे टुंढिये पैदा हुवेवैसे दि-
गंबरमें तेरापंथी पैदा हुवे.

(दोहा.)—श्वेतांबरके घातकी—प्रकट भयाछे टुंढया.

वीसपंथमें तेरापंथी विना गुरुका मुंडया. (१)

(सवैया.)

नाममात्र तेरापंथ चालें न सुपंथपंथ कहा जयो ग्रंथनकी करतेहै पठापठी,
तल्लकी न सुझे काहु बलजानी बने फिरे कहे हमारे देवगुरु धर्मकीघटाघटी,
रामा धन मोहके विज्ञासनमें मग्न रहै कुटिल कुबाते करे धर्मसैं हठाहठी
देवधर्मपूजाहुमे बलके स्वभाव धरे देखो भाइ जहांतहां करतेहैलठालठी.

[अथ-रागनी होरी.]-

कहा भयो जैनी कहायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, -(एटैर.)-

धरके कपटकी गठडी शीरपें-तेरापंथ कहायो,
कर विवाद जिनमंदिर माहे-पापबंध उपजायो,
कहे हम धर्म बढायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, १

छहु रुतके फलफूल गुरुने-जिन आगममें गायो,
तामें दोष बतावेरे भाई !-धर्म नजर नही आयो,
कहां ? तेरो ज्ञान नसायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, २

पद्मावती क्षेत्रपाल तिनोंकों-रक्षाकार बतायो,
यह तो रक्षक जिनशासनके-ताहे उहेद करायो,
तैं परिवार बतायो-जिनमत तेने अजहु न पायो, ३,

सात तरहके गुरुजन भाखें—भेदभेद कर गायो,
 जैसेकों तेसा लाख भाई !—यह सतगुरु फरमायो,
 तेरे हिरदे न समायो—जिनमत तेने अजहु न पायो. ४,
 इतिपदं.

तेरहपंथी कहतेहै—वीशपंथीयोंने नये ग्रंथवनाकर जिनमुद्राकों
 अविधिसँ पूजाया-रागीदेव स्थापनकर हिंसामें धर्म बताया-दीन
 डर्वलबुभुक्षित कुलका पुत्र मॉल लेकर उसका नाम पंडित रखा-
 और नग्नवेशकों भ्रष्ट कर दिया-यह सब हुंडाअवसापिणीकालका
 दोष है—ऐसा कहकर निम्नलिखित लावणी गाते है.

हुंडासर्पणीकालदोषतें—जिनमतमें पाषंड भये,
 तिनकी अब कुछ कहूं हकीकत-सुनकर भवी प्रतिबोध थये, १
 दीनडर्वलका पुत्र मॉल ले—ताका पंडित नाम धरा,
 फिर ताकों जिनदीक्षा देकर—नग्नवेष तें भ्रष्ट करा, २
 शालडसाला ओढ पालखी बैठ—बहोत अभिमान भरा,
 पंचपापमें मग्न होय शठ-श्रावकजनपर हुकम करा, ३
 (उंद.)—तिनें कल्पित ग्रंथ बनाये—जिनमुद्रा अविध पूजाये,
 बहुरागी देव थपाये—हिंसामें धर्म बताये, (१)-
 भोरेंजन बहकाय वाचकर—डुर्गतिकों तिन संगलिये,
 अनंतानुबंधिमिथ्याती—धरकर ईतर निगोद गये, ४.
 हुंडासर्पणीकालदोषतें—जिनमतमें पाखंड भये,
 तिनकी अब कुछ कहूं हकीकत-सुनकर भवी प्रतिबोध भये

यदिकहाजायकि—तेरहपंथीयोने इसी लावणीमें श्वेतांबरकों भी तो पाखंडी कहेहैं.

(इसका उत्तर—) मित्रवर ! कुछ हर्ज नही. तेरहपंथी-वी शपंथी-या-अन्यपंथी-कोइ हो ! किसीके कहनेसें कोइ बुराजला नही होशकता. अलबते ! युक्तिप्रमाणद्वारा जो शखश झूठा हो जाय वही झूठा है. सोचोकि-जब दिगंबरके शास्त्रोंमें-जगहजगहपर श्वेतांबरका खंडन लिखा है. और श्वेतांबरके मूलसिद्धांतोंमें दिगंबरका नामतक नही, कहिये ! फिर क्या सिद्ध हुवा ?-बस ! यही सिद्ध हुवा कि-श्वेतांबरशास्त्रसें दिगंबरके शास्त्र पीठे बने. क्योंकि—पहलेवालोंका खंडन पीछले करते है. पिताके विवाहका तमाशा पुत्र नही देख शकता. इतनाही लिखना समजदारोकेलि ये बहोत है,—

(श्वेतांबर दिगंबरकी जिनताका विषय समाप्त.)—

[मुल्ताननिवासी दिगंबर श्रावकोंके (१६) प्रश्नोंका उत्तर.]—

(१)—प्रश्न—केवली जगवानकों आहार कौनसा है ?-श्वेतांबर कहतेहैं कवलाहार है. इच्छा रहित है ? वा सहित है ?-इच्छारहित है ?-इच्छारहित है कहोगे बने नही.

(उत्तर.)—शास्त्रके लेखपर जोमनुष्य कुतर्क करते है वे ज्ञानप्राप्तिके अधिकारी नही. सोचो ! एक मनुष्यकी अभिलाषा उग्रधीनेकी है. और पुछता है इध क्योंकर उत्पन्न होता है ?—

किसीने उत्तर दिया गौ महिषी और छालीआदिसें उत्पन्न होता है, तब उग्धाभिलापी पुरुषकों यह प्रश्न करनाकि-इन तीन प्रकारके पशुओंमें किनका उध उत्तम है ? यहतो सार्थक है, परंतु यदि वह इसप्रश्नकों छीडकर ऐसा कुतर्क करेकि-गौ तो श्वेत होनेसें उसका उध श्वेत होना यथार्थ है लेकिन माहिषी-छाली-जो श्याम होतीहै उनका उध श्वेत क्यों ?-ऐसा कुतर्क करनेसें शंसयमिथ्यात्वी होता है. सूर्य विना इच्छा प्रकाश करता है और उसके प्रकाशमें आर्द्धवस्तु शुष्क हो जाती है, संपूर्णसंसारकों प्रकाश लाभकारी होताहै लेकिन उलुका नहीं होता. इस कहनेसें क्या ! सिद्ध हुवा कि-केवली जबतक शरीरयुक्त रहें तबतक उस शरीरका स्वभाव स्वाप्नाविकर्षम आहार करनेका है. उनकों इच्छा होना या न होना इसके सिद्ध करनेमें केवल कुतर्क है. जो शास्त्रसें विमुख है, देखो ! विहारकरना-समवसरणमें आसनपर बैठना-धर्मोपदेश देना-इत्यादि सभी होतेहै. जो इनकों इच्छासें कहोगे तो संभवे नहीं, यहां कोई तर्क करेकि-जिन जीवोंका पुन्यो दय होकर तीर्थंकर या केवली महाराजका दर्शनलाभ होनेवाला है उनकी पुन्यप्रकृति ऐसा कराती है तो यह उत्तर होशकताहै कि-जो वस्तु आहारमें दिर्या जावेगी वोभी देनेवालेकी (याने) दानीकी पुन्यप्रकृतिका फल है, विशेष देखनाहोतों चोरासीवोलों मेंसें (१०)-मा बोल देखो.

(१)-प्रश्न,-सूत्र किसके रचे हुवे है ? उनकी श्लोक संख्या कम क्यों मिलती है, ?-

(उत्तर,)-सूत्र गणधरआदिकोंके रचे हुवे हैं. वारावर्षी

कालदोष करके बहुधा विच्छेद होंगये. इसलिये श्लोकसंख्या कम मिलती है.

(३)-प्रश्न,—अन्यलिङ्गी-गृहस्थ-और चांडालादिकों मोक्ष कहेहै सो किस तरह ?—

(उत्तर)—दिगंबरमतके पद्मपुराणमें लिखा है कि-राजा सोमदत्त-नित्य प्रत्ये एक बालकका मांस खाया करता था, यह काम चांडालोंका है, परंतु अंत्यसमय दीक्षालेकर मोक्ष गया. तथा अन्यलिङ्गीभी अनेक कथाओंसे मोक्ष गये सिद्ध होचूकेहै. जिसकों अंतकृतकेवलो कहेहै. पुन्याश्रव-कथाकोश-और-आराधनासारआदिकमें-अनेक कथाए भरी है. जिससे पूर्वोक्त वचनकी सिद्धि होतीहै. विशेष तर्क वितर्क देखना हो तो पूर्वोक्त श्वेतांबर दिगंबरकी भिन्नताका विषयमें-(१८)-(१९)मा-बोल देखो.

(४) प्रश्न—केवलीकों उपसर्ग कैसे हो ?-

(उत्तर.)—केवलीकों उपसर्ग न होना चाहिये. परंतु हुंमा अवसर्पणी कालदोषसे अनहोतीवात हुयी है जो दश आश्चर्यमें गिनी गयी है.

(५) प्रश्न—मल्लिकुवरीकों मल्लिनाथ कहते है.

(उत्तर.)—यह यथार्थ है. समाधान इसका जहां स्त्रीकों मोक्ष सिद्ध कियाहै वहांसे जानो अर्थात्-(३४)-और-(४२) में-बोलके विस्तारमें देखो.

(६)-प्रश्न—वर्द्धमानस्वामी देवानंदाब्राह्मणीकी कुक्षीमें रहे सो गर्जकल्याणक कहां हुवा ?-

(उत्तर.)—पंचकल्याणक तीर्थकर महाराजके होतेहै सो व

धर्ममान तीर्थकर जब देवानंदाब्राह्मणीकी कुक्षीमें गर्जपने आये तब वहांही गर्जकल्याणक हुवा, और जहां जन्में वहां जन्मकल्याण क हुवा, फिर-दीक्षा-ज्ञान-और-निर्वाण-ये (३) कल्याण और हुवे, एसा जानना.

(७)-प्रश्न-युगलियाकों श्वेतांबर नरकगति कहते है. सिद्धांतो देवगतिसें दूसरी नही कही.

(उत्तर.)-एक युगलयुगलनीकी कारणवशात नरकगति हुयी सिद्धांतमें लिखाहै. जिससें हरिवंशकी उत्पत्ति हुयी. सब यु गलीयोंके लिये यह बात नही, हुंडाअवसर्पणीकाल दोषसें यह एक अनहोती बात हुयी है. इसका क्या कहा जाय ?-जैसे कोइ मेंलेमें हजार आदमी चले जारहे है-उसमें एक पुरुष काणा भी चला जारहाहै. इनकों देखकर सब यही कहेगेंकि-हजारो आ दमी सुजाके जारहेहै. एक काणेकी अलग गिनती कोइ नही क रता, वस ! इसीतरह एक युगलयुगलनोके नरक जानेंसें सब नर कगामी नही हो सकते.

(८)-प्रश्न-प्रतिमाका स्वरूप वीतराग कहा सराग करके क्यों पूजते हो ?—

(उत्तर.)-आभूषणआदिकसें वीतराग भावका अभाव नही होता. दिगंबर लोक जो अमूल्यसिंहासन-छत्र-भामंडल-आदि प्रतिमासें मिलाकर रखते है क्यों ! यह आभूषण नही है ?-वीत राग हुवे पीछे कौनसें दिन भगवान् रथमें चढे थे ? रथमें चढाकर फिरानेसें भी दिगंबरके वीतरागका वीतरागभाव बना रहा तो आभूषण पहंरानेसें वीतराग भावका नाश कौन कर सकता है?

विशेष वर्नन देखना ह्योनो चोरासी बोलोमें (१५)मा-बोल देखो.

(९)-प्रश्न-केवलीकों केवली नमस्कार करे या नही ?

(उत्तर.)--केवलीकों केवली मिले तब नमस्कार करे, दि गंबरकी तरह केवली एक नयकों उठापतें नही. किंतु निश्चय और व्यवहार दोनों नयकों स्वीकार रखते हैं. अलबते ! दिगंबर तो यही हठ करेगेंकि-केवलीकों केवली न मिले. समवसरणमें नी न्यारी न्यारी गंधकुटी (कोटडी) में बैठे. आते जाते रस्तेमें कभी न मिले.

(१०)-प्रश्न-महावीरस्वामीने अपने निर्वाणसमय गोतमगण धरकों देव शर्माब्राह्मणके संबोधनार्थ भेजा. उसमें मोहका भय सिद्ध होता है कि-मैं मुक्ति जाउगा तब यह मोह करेगा. सो भ गवान्कों रागभाव आया.

(उत्तर.)--यह कहना ठीक नही. जबजब समवसरणमें अ नेकजीव एकत्रित होतेथे तो भगवान्की देशना होतीथी, यदि यही समजा जायकि-उनजीवोंके आनेसें भगवान् देशना देतेथे तो यहांनी राग सिद्ध होता है, परंतु ज्ञानीमनुष्य ज्ञानिदृष्टजाव कों राग नही समझते, किंतु जेसाजेसा ज्ञानियोके ज्ञानमें ळलक ता है तघत् होनेकी आज्ञा ज्ञानियोके मुखसें होती है. रागभावसें नही. कुतर्क करना न्यारीबातहै. सोचो ! वीतरागकों राग कहां ?

(११)-प्रश्न-साधुकों दंडा रखना किस वास्ते कहा ?—

(उत्तर.)-शास्त्रोंमें मुनिकेलिये दंडा केइ विशेष कारणोंसें रखना लिखाहै जिसमें एक यहभी है कि-जब मुनिकों किसी नदी पार होना हो तो जलपरीक्षाकेलिये इसकी आवश्यकता हैकि-

जल इसदंडेसे अधिक उंचा तो नही है ? जिसको मैं पार न कर सकूँ, ?—

(१२)-प्रश्न-दादाजीके चरणकों पूजना क्यों कहा ?

(उत्तर.)—शास्त्रमें पदपदपर गुरुके चरणोंकी पूजा करनी लिखी है. जब दादाजीने पंचमहाव्रतपालन किये तब वे साधुपद में गिनेगये साधुकी सेवा भक्ति करना गृहस्थका मुख्यधर्म है, फिर उनके चरणपूजनेमें क्या दोष हुआ ?-अलवते ! संसारिककार्य घन-स्त्री-पुत्र-परिवारकी वांछा-वगेरा करके पूजना न चाहिये. दिगंबरलोक जब तीर्थयात्राकों जातेहैं वहां अनेक चरणपादुका पूजते हैं तथा मालवा-गुजरात वगेरा देशोंमें-नेमिचंद्रआचार्यकी चरणपादुका हरेक मंदिरमें बनोहूयी स्थापित है उसकों पूजते हैं. क्या ! मुल्तानकेदिगंबर श्रावककों अपने घरकीची मालुम नहीं-कनारेपर बसते ह्यो इसलिये ?-

(१३)-प्रश्न-तीर्थकर निहार कैसे करते हैं ?-

[उत्तर.]—जो आहारकरेगा निहार अवश्य करेगा. आहार और निहार शारीरिकधर्म है. जबतक शरीर रहेगा छूट नहीं शकते. दिगंबरने (६३) बालाकापुरुषकों आहार माना और निहार नहीं माना. यह एकांतमिथ्यादृष्टिका लक्षणहै. विशेष वर्नन चौराशी बोलमें (३६) मा-बोल देखो.

(१४)-प्रश्न-मोक्षमें कोनसा संहननवाला मनुष्य जावे ?-

(उत्तर) बजरिषभनाराच संहननवाला.

(१५)-प्रश्न-स्त्रीकों कितने गुणस्थान प्राप्त हो ?

(उत्तर.)—जब हम स्त्रीकों मोक्षहोनाही मानते हैं तो गुण

(दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर.) १७१

स्थानज्ञी चौदह क्यों नही मानेंगे ?

(१६)-प्रश्न,—श्वेतांबर किसको कहना ?

(उत्तर)-श्वेतनाम है निर्मलका-सो निर्मल है वस्त्र और
आचरणजिनके-उनको कहना श्वेतांबर—

[लश्कर गवालियरनिवासी दिगंबरश्रावक-फतेहलाल
जीके प्रश्नोंका उत्तर.]

उक्तश्रावक-फतेहलालजीके साथ-रुवरुमें जो जो प्रश्नोत्तर
हुवे उनकी नकल,-फतेहलालजीने आतेही वंदन नमन करके कहा
में दिगंबरविशंपंथ आमनायका श्रावक हूं, पंमित चमनलालजी
जयपुरवाले कइ रौजसें यहां आये हुवे है, उन्होने आपका नाम
लेकर कहाथा कि-उक्तसाधु अछे विद्वान् पुरुष है, कइदिनोंसें
मैं चाहताथाकि-आपकेसाथं ज्ञानगोष्ठो करके कइ बातोंके नती-
जपर खयाल करूं, परंतु आजतक ऐसा मौका नहि मिलाकी-मैं
बो-उमेद पुरोकरता, इसवरुत आपको यदि तकलीफ नहोता
कइवातोका दरयाफ्त करना चाहताहूं. इसपर कहा गया कि-
जो कुछ दरयाफ्त करनाहो खुशीकेसाथ करें, मुनियोंका धर्म
है कि-जिज्ञासु पुरुषोंके प्रश्नका यथार्थ उत्तर देना.

(फतेहलालजीने)-कहा-मैं-अल्पज्ञहूं, यदि कोइबात अयो-
ग्य कही जायतो आप कृपा करना. (हमनेकहा)-चर्चावार्तामें
एसा वरुतज्ञी आनपमता है कि-कोइ बात जॉरके साथज्ञी क-
हनी पमती है इसपर नाराज होना नचाहिये.

(फतेहलालजीने कहा)—मैं इसवातको स्वीकार करता हूँ कि झूठीवातके पक्षकरनेसें सबको नाराजी और गुस्सा आताहै, अलबते ! एक केवलीकों नही आता. क्योंकि-वे-रागद्वेष रहित है. हमज्नी जब किसी डकानदारके सामने जाकर कहते है कि-अंग्रेजी रुपया-चौदह आनेका होता है तो वो इस वातको कब कबूल करता है ?— इसी प्रकार झूठी वातकों ज्ञानी जन कब सच कहने लगेंगे ?

(हमनेकहा.)—जो शख्स-साधुजनोंसें चर्चावार्त्तामें हारजाता है और कोइ युक्ति नही पाता-तो-कहने लगता है आप ! साधु महात्मा है आपको गुस्सा करना ठीक नही, क्कमा रखना चाहिये इत्यादि इत्यादि,-परंतु यह नही सोचता कि-इसमें मेराही अपराध है जो-वक्रता करके सत्यवातकों झूठ कह रहाहूँ. उंमा जलज्नी अग्निपर धरनेसें उष्ण होजाता है फिर सत्यवादीके सामने झूठ बात कहनेपर उनको तमोगुण कैसे न आयगा ?—किंतु जरूर आयगा, आवश्यक वगेरा जैनागमज्नी कह रहे है कि-जो शख्स वक्रताकरके प्रश्न पुछे उसकों तामना जरूर देना, अलबते ! जो विनयसें पुछे उसकों तामना देनेकी कोइ जरूरत नही, जैसे उलटे चलनेवाले घोमेको चावक लगाना पमता है वैसे वक्र-शिष्यकों वचनरूप चावक लगानाज्नी न्यायमार्ग है, अगर इस वातकों विना समजे कोइ शख्स-साधुजनोंको दोष देवेकि-आपकों गुस्सा करना कहां कहा है ?— तो उसको कोइ समजा नही सकता. सोचो कि-सत्यवातके इनकार करनेवालेको यदि तामना न दीयी जाय तो क्या धन्यवाद दिया जाय-यदि कहा जायकि-

न-धन्यवाद-न-ताडना-कुह नही देना चूप होजाना चाहिये तो इसमेंजो दोष प्राप्ति है. क्योंकि “ नानिषिद्धं अनुमतं— ” इस न्यायसे असत्य बातका स्वीकार हुवा, अज्ञानीयोंके अज्ञानवादकी वृद्धि हुई-और चारजनोंके सामने वक्ताकों मूर्खताका दोष आया कि-ये अविद्वान् है. इसलिये असत्यके स्थापनकरने वालेको तामना देना कोई अन्यायकी बात नही. इस बातकों बिना समझे जो लोग साधुजनोंसे-या-गृहस्थ विद्वानोंसे कहदेते है कि-गुणीजनोंकों गुस्सा करना नचाहिये वे हकीकतमें मूर्ख है. शास्त्रोंमें जगह जगहपर लिखा है कि-धर्मके अवर्णवाद बोलने वालोंकों शिक्षा देना, इतनेपर न माने और कुतर्क करेतो तामना तर्जना देकर उसकी कुयुक्तियोंका खंमन करना. हा ! अलबते ! बिना प्रयोजन उसकों ठेंमठाम करके क्लेश पैदा करना ठीक नही, परंतु जब सामने आकर धर्मतत्वकों-झूठा कहे तो फिर चूप खेंच जानाज्नी अज्ञा नही.

(फतेहलालजीने कहा.)—यह आपका कहना बहुत ठीक है कि-असत्यबातके उद्घापन करनेमें चूप रहना योग्य नही, किंतु सत्यका मंमन और असत्यका खंमन करना-जरूर-चाहिये जो शरूस हृदयसे मलीन है वेही मुखमीठी बात करके अपनी खोटी वाहवाह कराते है. अब-मैं-आपसे जो कुछ पुढने आयाहुं आज्ञा हो तो प्रारंभ करूं.

(हमने कहा.)—खुशीसे किजिये !—हमको इसमें कोई तकलीफ नही.

(अब-फतेहलालजीका-प्रश्न.)—परवस्तुका संग त्यागने योग्य

है-या-अंगीकार करने योग्य ?

(इसपर हमारा उत्तर.)-त्यागने योग्य है.

(फिर फतेहलालजीकी तर्क.)-फिर चौदह उपकरण श्वे-
तांबर मुनि क्यों रखते है,

(उत्तर.)-जैसे दिगंबरमुनि मूर्धारहित-पींठीकमंमलुं-रखते
है तद्वत्श्वेतांबर मुनि चौदह उपकरण रखते है.

(३)-तर्क-वस्त्र रखना मूर्धा होनेका कारण है, न रख-
ना चाहिये.

(उत्तर.)-मोर पींठी और कमंमलुजी मूर्धाका कारण है
न रखना चाहिये. यदि कहा जाय कि-ये तो साधुके चिन्ह है
तो क्या चौदह उपकरण साधुके चिन्ह नहीं है ?-असल पुंगो
तो शरीरही मूर्धाका कारण है, शरीरहीकेलिये मुनियोंको आ-
हारआदिकी गवेषणा करनी पमती है.

(४) तर्क-शरीर अपरिग्रहित है और वस्त्रपरिग्रहित (या-
ने) ग्रहण किये जाते है,

(उत्तर.)-जैसे वस्त्र-ऐसे-शरीर-दोनों परिग्रहितही है. श-
रीर माताके उदरमें ग्रहण किया वस्त्र पीठमेंसे ग्रहण किये, आ-
त्माके लिये तो दोनों परवस्तु है.

(५) तर्क-मुनि-वस्त्र उढेंगे तो मूर्धाआयी सिद्ध होगी.

(उत्तर.)-चलतेवरुत पींठीकमंमलुं उठायेंगे तो जी मूर्धा
आयी सिद्ध होगी, आहारके लिये उठना और कवल लेकर
मुखमेंही धरना इसकोंजी मूर्धाका कारण कहो.

(६) तर्क-पींठीकमंमलुं-जीवरक्षा और शौचक्रियाके लिये

रखे गये हैं. पुस्तक पंखे-ठवणी कवली-पुस्तकका बंधन-योगपट्टक-आसनपट्ट-और कोपीन-वगेरा उपकरणकी चारित्रनिर्वाहके लिये समयानुसार रखने योग्य है, परंतु जब उठानेके लिये वस्त्र रखलिये तो अचेलपरिसह सहन करना कहां रहा ?—

(उत्तर.)—अचेलपरिसह सहन करना उसका नाम नहीं है जो वस्त्र त्यागकर बिल्कुल नग्न होजाना, बहु मूल्यकेवस्त्र त्याग कर थोमे मॉलका कुत्सितवस्त्र रखना इसकानाम अचेलपरिसह है. अचेलशब्दमें जो अकार है वह सर्वथा निषेधवाचक नहीं, व्याकरण शास्त्रमें कहा है कि—

द्वौ नजौ समाख्यातौ—पर्युदासप्रसज्यकौ,

पर्युदासः सदृग्ग्राही—प्रसज्यस्तु निषेधकृत्. ?

यदि इस प्रकार अचेलशब्दके अकारकों नहीं मानोगें तो जहां लिखा है कि-मुनि-अज्ञानपरिसहकों सहनकरे-वहां-क्या ! बिल्कुल ज्ञानके अज्ञावको सहन करना कहोगे ? चेतनालक्षणा ज्ञानका अज्ञावकी मुनियोंमें मानते हो क्या ?- यह दिगंबराचार्योंकी बहुतबड़ी भूल है जो-जिनकल्प-और-स्थविरकल्पकों एक बनादिया, और फिर दोनोंमेंसे एककाकी निर्वाह न कर शके. एकांत पट्ट खेंचनेवालोंका यही हाल होता है, और जो तुमने कहा कि-योगपट्टक रखना समयानुसार ठीक है तो फिर उसीपर खयाल कर लिजिये !- कि-योगपट्टक किसका नाम है ?- दिगंबरमुनि योगपट्टक-आवरण वस्त्रकों कहते हैं. और कहते हैं पंचमकालमें लज्जापरिसह जितना मुश्किल है इस लिये एक आवरणवस्त्र याने उठनेकावस्त्र रखना चाहिये. इसपर सबाल होनेकी

जगह है कि-फिर आपका दिगंबर पना-कहां रहा ?- और आप-
पलोंकोंकी आर्या जो सोलह हाथकी सामी पहेनती है क्या वह
दिगंबरा नही रही ?- श्वेतांबरा होगयी ?- सत्य है कि-अपनी
शक्तिकों विना विचारे कार्यकरनेवाला अखीरमें खताही पाताहै.

(७) तर्क-जिनकल्पमुनिकों आप मानते हो-या-नही ?

(उत्तर.)-मानते है परंतु महाविदेहक्षेत्रमें-यहां-नही रहे ज-
बसें जबूस्वामी निर्वाण हुवे है नारतवर्षमें उक्त मुनि नही रहे
व्यवच्छिन्न होगये.

(८) तर्क-जिनकल्पमुनि किसकों कहते है ?

(उत्तर,)-जिनकल्पमुनि उसको कहते है जो-वरिषन्न-
नाराचसंहनवाले हो-थोमेसे थोमा नवपूर्वकी तिसरीआचार व-
स्तुतके और उत्कृष्टसें दशपूर्वतक पढे हुवे हो-तीसरे पहेर जिज्ञा-
टन करे-आंखमें तुणखा-और-पावमें कंमा लगे तो ज्ञी निकाले
नही शैर-चोता-और-व्याघ्र-वगेराके रुससें पीठे हूठे नही-रोगहो
जाय तो ज्ञी दवा न खावे-और-नवकल्पी विहार करे, अगर ठ
महिनेतक आहार नमिले तो ज्ञी दीनता न लावे-सूत्रसिद्धांतके
बलसें सबवातको मालूम करे-लोच करे-सर्वथा अप्रतिबंध होनेके
कारण किसीकों धर्मोपदेश न देवे-और-पाणिपात्रआदि अनेक
लब्धिके धारक हो-वे-मुनि जिनकल्पमार्गके अधिकारी है. जिनके
हाथमें सो (१००) घमे जलके गेरदिये जाय और एक बिंड
ज्ञी उसमेंसें निचे न गिरनेपावे ऐसे लब्धधारी आज कहां रहे!-

(९) तर्क-न रहे तो क्या हुवा ?- जितना बनशके उत-
नातो जोर लगाना चाहिये.

(उत्तर)-असमर्थ होकर समर्थका दावाकरना लाजके बदले हानि उठाना है. एकमात्र नंगे रहनेहीसे जिनकल्प बनना चाहते हो तो अलग बात है. वर्तमानकालमें लब्धिहीन मुनि रह गये उनको उचित है कि-स्थविरकल्प मार्गको ही स्वीकार रखे. वृथा हठकरके दोनों बातोंसे भ्रष्ट होना कोई चतराईकी बात नहीं. देखिये ! आपके आचार्योंने-रजोहरण-मुखवस्त्रिका-ढोमकर पीठीकमंडलुं धारा परंतु इसमेंजी लाजके बदले हानि उठाई. याने जैनलिंग त्यागके अन्यालिंगी हुवे. सर्व शास्त्रोंका कथन है कि-मुनियोंको घरघर त्रिहाटन करना परंतु पात्रके अज्ञावसें आपके मुनियोंने-विचाराकि-यहतो न बनेगा, लाचार ! एक ही के घर खमेखमे आहार खाना कबुल रखा, जब एकके घर आहार लेना होगा तो सोचनेकी जगह है कि-आधाकर्मिक दोष कैसे हठ शकता है ? वस्त्रके अज्ञावसें जब ठंम लगने लगी तो जिनमंदिरके गूढमंमपमें जाकर सोनापमा, कहिये ! इससें देवकी अवज्ञा हुई-या-सेवा ?- पात्र रखना बंद किया इससेंजी सोचो ! तो लाजकी जगह हानिही हुई, विमारसाधुकों पात्रविना आहार लादेना नहीं बना, उनकी वैयावच करनेमें अंतराय हुई, गृहस्थीके घर खमे खमे आहार जोगनेसें जी कई बातोंके दोष लगने शुरू हुवे, अंतराय न हो जाय इसलिये गृहस्थलोक स्थाल-या-परात बजानेलगे. अनेक प्रकारके कवल बनाकर हाथमें देते जाय और आपके मुनि खाते जाय-यहजी खूबसराहनीय बात हुई कि-जिसको देखकर लम्केजी हंसी करे, कहिये ! जिनकल्पकी स्पर्धाकर आपके गुरुजने क्या सार निकाला, ?- देखिये ! श्वेतांबर मुनि

पात्र रखते है तो उससे-बै-कितने प्रकारके लाज उठा सकते है, अवलंतो ! गुरुको भक्ति करसकते है, विमार साधुको आहार देकर बैयावच करसकते है, तपस्वी-वाल-वृद्ध-प्राघुर्णाक-वगेराकी आहारपानीद्वारा-बैयावच करसकते है, कच्ची अनजानसें कोइ अशुद्ध वस्तुआजाय तो पात्रद्वारा बहार ले जाकर उसको परठ सकते है. और हिंसाके जागी नही होते है, पात्र रखनेसें इतने लाज हुवे.

(१०) तर्क-यूही तो सिथिल होते होते आपलोगोंमें यति श्रीपूज्य-सिथिलाचारी हो गये.

(उत्तर,)-धर्म और प्रीत जोरा जोरी नहीं होसकते. तीर्थंकरोंके बैठेहुवे जो जो शरस धर्म करना नही चाहतेथे उनको जोराजोरी कोइ नही करा सकता था, जैसे श्वेतांबरमें यति-श्रीपूज्य-वैसे-आपलोगोंमें जट्टारक और क्षुल्लक-दोनो एक तुल्य है. जट्टारक-लाल वस्त्र रखते है श्रीपूज्य श्वेत रखते है. रसोइया जैसे जट्टारकोंके लिये शाथ रहता है श्रीपूज्योंकेलियेभी इसी तरह समजलो. श्रावकोंके घर धाजेगाजेकेसाथ जैसे जट्टारकलोग आमरीके लिये जाते है इसी प्रकार श्रीपूज्यभी गोचरीके नामसें जाते है, पानी जैसे जट्टारक लोग कच्चा पीते है. श्रीपूज्यभी कच्चा पीते है. म्याना-पालखी-रेलगमीवगेरामें सवारहोना-हाथी-घोडे-धनधान्य-मकानात रखना दोनोंका एकसा है. नोकर-चाकर-ठमी-चवर सबकाम राजवर्गी, बतलाइये ! फिर किसकों जैनाचार्य और किसकों सिथिलाचार्य कहा जाय ?- रहे क्षुल्लक सो भी इन्हींके ठोठे जाइ है, जैसे यतिलोग सवारीपर चढते है क्षुल्लकभी चढते

है. गृहस्थोंके घर नोजन जीमना-कचापानी पीना-धनरखना-वगेरा जो जो आचरण यतिजनोंके दिखलाइ देते है क्षुल्लकोंकेजो वैसे ही है. दूर क्यों जाते हो यहां लश्करमेंही क्षुल्लकरामचंडजी-जो कि-धर्मदासजीके-चेले बताते है-देख लो !- क्या ! आप इन्हीके ज़रोसें अपने आमनायकी तारीफ कर रहे हो ?- शास्त्रोंका वचन है कि-पंचमकालमें-ऐसे ऐसे-साधु-उपाध्याय-और आचार्य होयगें कि-जो-मरकर उर्गतिमें जायगें, इसीसें कहसकते है कि-पंचमहा-व्रत बिना एकीला वेष कार्यकारी नही. जैसेकिसी नेटने साधुका वेष पहन लिया तो क्यों वह पंचमहाव्रत विदून पूजनीक हो सकता है ?-जब नही हो सकता तो फिर एकीले वेषसें क्या गरज सरी ?—

(११) तर्क—जिनकी श्रद्धा ठीक हो चाहे वे क्रियासंरहित हो कोइ हर्जकी बात नही. शास्त्रोंका वचन है कि-सम्यक्तरहित पुरुष संसारकापार नही पाशके. इस बातके कहनेसें तात्पर्य यह है कि-हमारे जट्टारक लोग यद्यपि चारित्र रहित बेशक है लेकीन श्रद्धासेंतो शुद्ध जैनी है. आपलोगोंकी तरह शंसयमें नही पडे.

(उत्तर.)—शुद्ध जैनी कहलाना कुछ हमारे तुमारे आधीन नही, किंतु सर्वज्ञ प्रणीतशास्त्रोंके आधीन है, शास्त्रवचनसें जो कोइ श्रद्धालुठहरशके वही शुद्ध जैनी है. घादशांगवानीके असली सिद्धांत आचारांगे सूत्रकृतांग-आदि-माननेवाले कज्जो शंसयमें नही पमते, शंसयमें वही पडते है जो उक्तसिद्धांतोंको विभेद गये कहकर-धवलजयधवल-गोमटसागर वगेरा नवीन अं-

थोंको असली समझते है, जिनमेंकि-स्त्रीमोक्ष-और-केवलीके-कवल आहारपर तकरार जुठाई गयी है.

(११) तर्क-केवलीको कवल आहार आप सिद्ध कर सकते हो ?

(उत्तर.)-क्षुधा तृषा उदारिक शरीरका धर्म है. जबतक शरीर रहे तबतक यह जी रहेंगे. ये दोष केवलीके अतीन्द्रियज्ञानकी घात नहीं कर सकते. क्षुधा तृषा वेदनीय कर्मके उदयसे होते है. वेदनीय कर्मका अज्ञाव केवलीको है नहीं. फिर क्षुधातृषाका अज्ञाव कैसे होशकता है ?-आहारपर्याप्तिनामकर्म-तथा-वेदनीयकर्मके उदयसे-जठराग्नि-प्रज्वलित होती है (यदुक्तं)-रत्नाकरावतारिकायां-आहारपर्याप्तिनामकर्मोदयवेदनीयोदयप्रबलप्रज्वलदौ दर्यज्वलनोपतप्यमानोहिपुमान् आहारं आहारयतीति-कहिये ! ये-(१) दो-प्रकृतिकेवलीको नहीं है क्या ?-यदि है तो क्षुधा तृषाका अज्ञाव क्यों ?-अगर कहा जायकि-वेदनीयकर्मका उदय तो है लेकीन उससे आकुलता नहीं होती, माना !-हमकबकहते हैकि-होती है ?-प्रदेशउदय केवलीको नहीं लेकीन विपाकोदय तो है अलवते ! सातावेदनीय कर्मका अत्यंत उदय है असाताका थोमा परंतु विल्कुल अज्ञाव नहीं अगर असातावेदनीयका केवलीको अज्ञाव होतातो तत्वार्थसूत्रमें(११) परिसह क्यों कहे ?

(१३)-तर्क-सर्वार्थसिद्धटीकामें-न-संति-पद उपरसें लाना कहा है (ज्ञावार्थ) एकादश जिने-न-संति-याने ग्यारहपरिसह केवलीको नहीं ऐसा जानना.

(दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर.) ३९१

(उत्तर-)—यह व्याख्यान प्रमाणसेबाधित है, तत्त्वार्थसूत्रमें परिसहके स्वामीकी गिनतीका अधिकार चलाहै, वहां अज्ञाव कहना असंभवहै, परिसहकेस्वामीको अस्वामी बतलाना मृषावादीयोंका काम है,

(१४)—तर्क, केवलीको ग्यारहपरिसह उपचारमात्र है. याने कहनेहीमात्रहै असलमें नहीं, यद्यपि वेदनीयकर्म केवलीकोजरु रहै परंतु इससे क्या होशक्ता है, ?

(उत्तर.)—स्वामित्वचिंताके वर्णनमें उपचारकहना बन्नी भूलहै, इतनेपरन्ती यदि हठकरनामंजूरहै तो मोहनीकर्मके होनेसे उपशांतमोह गुणस्थानवालेकोन्ती बाइसपरिसह कहना चाहिये.

(१५)—तर्क-केवलीको अगर क्षुधा लगती होतो उनके बलकी हानी होजाय, फिर अनंतबली कहना कैसे बने, ?—

(उत्तर.)—शारीरीकबल-अलबते ! क्षुधालगनेसे घटजाता है इसको कौनबुद्धिमान् इनकार करशकताहै, सबबकि-शारीरीकबल नामकर्मकी परिणति रूप है, नामकर्म केवलीका क्षीणहुवा है नहीं, -क्षीणहुवाहै अंतरायकर्म जोकि- अंतरंग शक्तिरूपवीर्य अर्थात् पराक्रमको रोकनेवाला था. इसलिये केवलीकी अंतरंग शक्ति कन्ती नहीं घटती. हकीकतमें बल-और-वीर्य-अलगअलग है, शरीरके पराक्रमकानाम बल है और अंतरंगशक्तिका नाम वीर्य है, शास्त्रोंमें जगहजगहपर कहाहैकि-बलं शारिरं वीर्यं चांतरं-इति, उदारिकशरीरका धर्म है कि आहारपानी न मिलनसे कुमलाइ जाय, यह एक प्रत्यक्ष प्रमाण है. प्रत्यक्षकोशुभा बतलाना दुर्मतग्राहीयोंका काम है.

१७१ (दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर.)

(१६)-तर्क,-आहारकरनेवालेकों निघात्री जरूर आतीहै, इससे कहना पमेगाकि-केवली निघात्री लेते होंगे.

(उत्तर)-यहकोइ नियमनहीकि-जो जो शरूश आहारकरे वह निद्रा जरूरलेवे, निद्रा दर्शनावरणीकर्मके उदयसे आती है, आहार निद्राका कारण नही, दर्शनावरणी कर्म केवलीको क्षीण होगया इसलिये उनको निघा नही आती.

(१७)--तर्क,-शास्त्रोंमें लेखहैकि--आहारथोमा खाना. सोचो!--इससे क्या सिद्ध हुवा ?--यही सिद्धहुवाकि--आहारका खाना वास्तवमें बुराही है.

(उत्तर)-अगर आहारका खाना बुराही होतातो-पुरुषकों (३१) कवल प्रमाण आहारखाना शास्त्रकारोंने क्यों फरमाया ?- यह तुमारोही समझका फर्कहै कि-आहारका खानाबुरा कहतेहो तुमारेमुनित्री जब विद्यमानथे (३१) कवल खातेथे कहोयेत्री बुराहीकाम करते थे. परंतु यह तुमारा समझना वृथा है, हको-कतमें स्वाभाविक आहार प्रमाणसे खाना बुरानही, अजीर्ण पेदा हो इसप्रकार खाना बुरा है.

(१८)--तर्क,-आहारकीकथाकरनात्री मुनियोंके लिये प्रमादका हेतु कहा तो, खाना प्रमादका हेतु क्यों नही ?-

(उत्तर.)-आहारकी कथा दो प्रकारकी, एकतो लंपट होकर आहारकीतारीफ वर्नन करे, और एक साधारणरूपसे आहारका यथार्थवर्नन करे, इसमें प्रथमजेदवालेकों अलवते अतिचारदोष लगता है, दूसरेजेदवालेकों तो अतिचारदोषत्री

(दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर.) १९३

नही लगता फिर मूर्धारहित आहारखानेवाले-मुत्तिकों-प्रमादकैसे कह सकते हो, ?-अगर फिरजी हठवादकरना मंजूर है तो पहिले अपनेगुरुओंकोही प्रमादी कहो जो बतीस केवल प्रमाणआहार खातेथे.

(१९)-तर्क,--सातमेंगुणस्थानपर आहारसंज्ञा नहीं रहती, फिर अगले गुणस्थानपर कहाँसे आयगी ?-और बिना आहार संज्ञाकेवलीकों आहार करना कैसे संभवे, ?

(उत्तर.)-अप्रमत्तसाधु आहारमंज्ञाबिना याने अज्जिलाषा रहित आहार करते है. शास्त्रोंमें अज्जिलाखहीको आहारसंज्ञा कहीहै देखो !-तुमाराही गोमटसारग्रंथ क्या कहता है ? टीकाकारने आद्यमेंही लिखा है कि-आहारसंज्ञा खट्वाहारान्जिलाषः

(२०)-तर्क-आहारखानेसे शूलरोगजी कवलीकों हो जाता होगा ?-

(उत्तर.)-प्रमाणयुक्त पथ्यआहारखानेसे शूल क्या ! को-रोग नहींहोता,

(२१)-तर्क-आहारखानेसे--दिशाजंगलजी जातापमता होगा, सन्नामेंसे उठकर जाते हुवे क्या ! अच्छे दिखते होंगे ?

(उत्तर,)-नग्नस्वरूप जिनेन्द्रदेव सभामें क्या ? अच्छे दिखते होंगे ?—

(२२)-तर्क-यहतो अतिशयकीवात है कि-दूसरोंकोनग्नदेखे.

(उत्तर,)-फिर आहारनिहारमें अतिशयका प्रभाव कहाँ जायगा ?-क्या ? चोतोशअतिशयोंमें यह वात नही लिखिहैकि-

३६४ (दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर.)

जिनैशोंकी आहार निहारक्रिया दूसरोंको न दिखाइ दे, ?

(३३)-तर्क,-केवली जिह्वालेनेको खुदजाते होंगे-या-उनके चले लादेतेहोंगे,

(उत्तर,)-सामान्यकेवली--कच्ची खुदचनी जाते है कच्ची चलेनी लादेतेहै

(३४)-तर्क-जब खुद जिह्वाको जाय और आहारनमिले तो कितना मानन्नग होताहोगा ?—

(उत्तर,)--केवलीको अंतराय होनेका क्या काम ?--अंतरायकर्म तो उनका पहेलेही कृत्य होचुका है, विशेषआवश्यक सूत्रमें लिखाहैकि-केवलीको शिक्षा प्राप्तकरते अंतराय न हो.

(३५)-तर्क,-तीर्थंकरदेवनी जिह्वालेने जाते होंगे ?-

(उत्तर,)--तीर्थंकरको शिष्यसमुदायके होतेहुवे खुद जिह्वाटन करना असंभव है. सामान्यकेवलीकेलिये अलबते ! कथंचित् जाना न जाना कहा,

(३६)- तर्क--जिसको शरीरपर मूर्छा हो वो आहारकरे मुनियोंको मूर्छा रखना ठीक नहो,

(उत्तर.)-यह कोइ नियम नहीकि जिसको मूर्छा होवही आहारकरे. और यह जो कहाकि मुनियोंको मूर्छा रखना ठीक नही इसमें दो बातहै. अगर पांचइंद्रियोके विषयपुष्टिनिमित्त शरीरपर मूर्छा रखेतो अलबते ! उचित नही, परंतु धर्मपालनको रखे तो पापबंधका कारण नही. कहिये !-अगर सर्प-या सिंहके सामनेसें-कोइमुनि-हठकर पीढे लोटे तो उनको तुम योग्य मानो या अयोग्य, ?-अगर कहोगे वे मुनिकाहेके जो सर्पसिंहसें मरते

रहे ?- (इसका उत्तर)--ठीक है ! महाशय ! !-कुछ कहनाही जानतेहोया करदिखलानाज्ञी जानतेहो ?-सोचोकि-अगर क्रुञ्ची उन्होने रखा तो क्या पांचइंद्रियोंके विषयपुष्टिनिमित्त रखा या धर्मपालनकेलिये ?--अगर धर्मपालनकेलिये रखा तो फिर वें मुनि रहे वा भ्रष्टहोगये ? यूंहीतो तुमारे आचार्योंने उंचीउंची वातपकडकर धर्मको निर्मूल करदिया. और तुमको बिनागुरु के रखदिये. अंतमें तुम आपही आप शास्त्रवाचने लगगये और मनोमति हुवे.

(१७)--तर्क,-मोहकर्मके नाशहोनेसे केवलीका शरीर सप्तधातु वर्जित होजाता है जैसे अबरकका पटल हो वेसा तेजमय रहजाताहै. उसकों कवलआहारकरनेकीकोइ जरुरत नही रहती.

(उत्तर.)--मोहकर्मकेनाशसे केवलीकेशरीरकी सातधातुदूर नहीहोती. मोहकर्म अलग है नामकर्म अलग है, शरीर नामकर्मकी प्रकृतिके अंतर्गत है, क्या !--वज्ररिषज्ञ नाराचसहनन-नामकर्मकी-प्रकृति--केवलीकों उदयमें नही रही जो सातधातु उनकी दूर होजाय ?-अगर- कहोगे रही है तो सोचोकि-अस्थि पुद्गलविना वह प्रकृति विपाकफल किसमें दिखलायगी ?--अगर-कहाजायकि--दृढसंस्थानमात्र पुद्गलमें वह विपाक दिखलायगी तो देवताकोंज्ञी वज्ररिषज्ञनाराचसंहनन कहना चाहिये. केवलज्ञानके होनेसे शरीरमें कुछ विशेषता नही होती शरीरनामकर्मके उदयसेही शरीरमें विशेषता होतीहै. इसलिये केवलीके शरीरको सप्तधातुवर्जित नही किंतु सहित कहना चाहिये, क्या! हाम-मांस-रुधिर-जो केवलीकों पहिलेथे वे केवलज्ञान होतेही

१६ (दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर.)

नाशहोगये ?-अगर कहोगे हां ! नाशहोगये तो कहो उसका कारण क्या है ?-

(१८)-तर्क-सुनाहै श्वेतांबरआम्नायमें पनरांहप्रकारसे सिद्ध होते है उनमें स्त्रीकीजी मुक्ति होती है. ?-

(उत्तर,)-श्वेतांबरआम्नायमें स्त्रीकी मुक्तिहोना कुञ्ज ङीपी-बात नही, घंटोनादकेशाथ कहरहेहै कि-स्त्री-यदि ज्ञानदर्शन चारित्रिका आराधनकरे तो उसीप्रवमें मुक्ति होजाय,--कौन रोक शकताहै ?—

(१९)--तर्क--वनेआश्चर्यकी बात है जो महानिन्दवस्तुको उत्तमपद प्राप्तहो, ?

(उत्तर)-साध्वीपद उत्तम है-या-निन्द ? यदि उत्तम है तो तुमारे आचार्योंने वमी भूल कियीकि--चतुर्विधसंघमें स्त्रीको साध्वीपद प्राप्तहोना कहा, उनको उचितथाकि -तीन या-दो प्रकारका संघ कहते.

(२०)-तर्क-हमलोग स्त्रीको पंचमहाव्रत नही मानते.

(उत्तर,)-फिर चतुर्विधसंघ नहीं मानना चाहिये. त्रिविध संघही कहना ठीक है.

(२१)-तर्क, स्त्रीलिंग आप किसको कहते हो ?-

(उत्तर.)-स्त्रीलिंग हम तीनप्रकारसे कहते है. [१] वेद [२] शरीर [३] और नैपथ्यजिसमें वेदलक्षणस्त्रीलिंग वो है जो अग्निकेदाहकीतरहपुरुषकी चाहना हो.-शरीरनिर्वृत्तिलक्षण स्त्रीलिंग वो है जो-स्तन-जग-आदिआकार संयुक्त हो,--तिसरा नैपथ्य-तिलक-तंबोल--नेत्रांजन--हार-कंकण-और--झांझर--बगेरा

बाह्यकृतशृंगाररूप हो. इनमें वेदलक्षणलिंग अर्थात् ज्ञावस्त्रीवेदको केवलज्ञानकी प्राप्ति नहीं कही. नवमंगुणस्थानपर जब स्त्रीवेदका अज्ञाव होजाय तन्नी अगामीके गुणस्थानपर चढवा के फिर घातिककर्मोंका क्षय करे. इसलिये वेदलक्षणलिंग-केवलज्ञानकी प्राप्तिमें-वर्जनीय-कहा. अगर स्त्रीकों पंचमहाव्रत नहीं मानतेहो तो नवमंगुणस्थानपर तीनोंवेदका जो गोमहसार वगेरामे क्षय लिखा है वो क्योंकर होशके ?- अगर कहोगे ज्ञावकरके पुरुषमें जो स्त्रीवेद है उसको क्षय करते है तो यह कहना जो झूठ है. क्योंकि- अप्रमत्त अवस्थामें पुरुषकों-स्त्रीका-और-स्त्रीको-पुरुषका-भाव मानना यह विरुद्ध है.

(३१) तर्क-वस्त्र आभूषण पहनी हुईस्त्रीजी मुक्ति होजातीहोगी?-

(उत्तर)-महाशय !-वस्त्र आभूषण क्या !-सोलह शृंगार सजी हुई स्त्री-अगर-सिंहासनपर बैठ करके जो ध्यानारूढ हो जाय-और-अनित्य अशरण ज्ञावना भावे तो वहांजी उसकों केवलज्ञान हो शकता है, आप किस ख्यालमें भूले हो ?-केवलज्ञान और मुक्तिका रोधक शिंंगार नहीं किंतु रागादि लक्षण अशुद्ध उपयोगही केवलज्ञान और मुक्तिका रोधक है, यहहम नहीं कहते है कि-शृंगारही मुक्तिका प्रधान कारण है. शृंगाररहित स्त्रीजी यदि उक्त अवस्थाकों प्राप्त हो तो उसकोंजी केवलज्ञान और मुक्तिकी प्राप्ति होशकती है, शरीर लक्षण स्त्रीलिंग तो विशेष करके मुक्तिका रोधक होही नहीं शकता, सबकि-जवतक मनुष्य गतिमें मनुष्यका आयुष्य विद्यमान है तवतक वह चिन्ह तो रहताही है,

३७ (दिगंबर श्रावक फतेहलालजीके प्रश्नोंका उत्तर.)

(३३)-तर्क-स्त्रीके अंगोपांग पुरुषके लिये अग्निवकारी याने प्रीति उत्पादक होते है वे खुल्ले नही रखजाते, उनको ढांकनेके लिये वस्त्र रखने पमेगें. वस्त्ररखनेसें परिग्रह होगा, जहां परिग्रह होगा वहां चारित्र नही. चारित्रनही तो मुक्तिकहांसे होगी?

(उत्तर.) संयमनिर्वाहके लिये वस्त्र रखना परिग्रह नही, सोचनेकी जगह है कि मूर्छा विना परिग्रह कैसे होशकता है, ?-शास्त्रोंमें मूर्छाहीको परिग्रह कहा. अगर इस बातको नही मानते होतो ठखंम पृथ्वीके जोक्ता-जरतचक्रवर्ती-वगेराको निष्परिग्रही क्यों कहते हो ?-घादशांगवाणीका कथन है कि-परिसह होते हुवेजी यदि मूर्छा नहो है तो परिग्रह नही. और नही होते हुवे यदि मूर्छा है तो परिग्रह है, अगर दिगंबराचार्योंके इठवाद पर ख्याल करे तो संसारमें सर्व दरिखी मनुष्य नंगेही फिरते है उनको जी त्यागी निष्परिग्रही कहना चाहिये, सबवकि-उनके पास शरीरके शिवाय दूसरा कोइ बाह्य परिग्रह नही, परंतु इससें क्या हुवा ?-हकीकतमें उनके पास इञ्जारुप बन्दा जारी परिग्रह है, इसका नतीजा यह हुवाकि-केवल नंगेही होनेसे काम नही चलता. किंतु मूर्छाका त्याग करनेसे काम चलेगा. निश्चय नय पकडकर बैठ रहना यही मिथ्यात्वका कारण है.

(३४)-तर्क,-स्त्री जातिकों आप पापको बाहुल्यता मानते हो या नही ?—

[उत्तर.]-मानते है लोकीन जिस प्रकार तुम लोग मानते हो उस प्रकार नहीं मानते.

[३५]-तर्क-वो प्रकार क्या है ?-

(उत्तर.)—जिसवरुत जिस जीवने स्त्रीपना बांधा उसवरुत यद्यपि अधिक पाप प्रकृति मिथ्यात्वादिरूपही थी, लेकीनजब-वे प्रकृति--अव्ययपरिपाकसें सम्यक्त गुणपाकर कृतकियी जाय उसवरुत स्त्रीकों पापप्रकृतिकी बाहुल्यता हम नही मानते, अगरे जबतक स्त्रीका शरीररहे तबतक बंधकेकारण मिथ्यात्वादिक बने रहते हो तो स्त्रीकों सम्यक्त गुणजी न पानाचाहिये, और मानते हो, फिर ! बने अंधेरकी बात है !!-कि-स्त्रीकों--चारित्र और मुक्ति-न मानना.

(३६)—तर्क,-स्त्रीका शरीर परमअशुचिहै इसलिये उसकी मुक्ति कैसे हो ?

(उत्तर.)—शरीरकी अशुचि जैसी पुरुषको वैसी स्त्रीकों है. मुक्तिका संबंध ज्ञावचारित्रके साथ है, जिसकों ज्ञावचारित्र होशके उसकी मुक्तिका इनकार करना युक्तिप्रमाणसें बाधितहै. अगरे कहाजायकि-स्त्रीकी योनिमें बहुधा करके सन्मूर्तिमजीवोंकी उत्पत्ति रहती है. सोचनेकी बात हैक्या !-पुरुषके शरीरमें रोगा-दिकारणसें जीवोत्पत्ति नही रहती ?- अगरे कहोगे रहती है तो उनकों जी मोक्ष न मानो.

(उत्तर)—तर्क,--मल्लिनाथ तीर्थंकर स्त्री हुवे यह बनी अयोग्य बात है,

(उत्तर)—हुंमासर्पिणीकालदोषसें कइवाते आश्चर्यजनक हुइ इसकों श्वेतांबर दिगंबर दोंनों मानते है, आपलोगोंके शास्त्रोंमें लिखा है कि-हुंमासर्पिणीकालदोषसें कइ अणहोती वाते हुइ. तीर्थंकरोंके घर पुत्र पैदाहो, पुत्री नहो, लेकोन रिषभदेवके घर पुत्री

पैदाहुयी-चक्रवर्तिका मानखंमन नहो और जरतचक्रीका मान बाहुवलीने खंमन किया. तीर्थकरोकों किसी अवस्थामें उपसर्ग नहो लेकीन पार्श्वनाथजीकों हुवा. तीर्थकर उदमस्थअवस्थामें अवधिज्ञानकों प्रकाशित नकरेलेकीन रिपन्नदेवने किया, -वासुदेवका मरना किसीके हाथ नहो लेकीन कृश्रवासुदेवका मरना जरतकुमारके हाथसैं हुवा. ब्राह्मणकुलकी उत्पति दूसरेकालमें नहीं होती लेकीन इसकालमें हुइ, सोचो !-जब कालदोषसैं ये अनहोतीवातका होना आपलोग मानते हो तो-मल्लिनाथतीर्थकर स्त्री हुवे एक युगलीया मरके नरक गया तीर्थकर तुल्लकुलमें न पैदा हो लेकीन महावीर हुवे-तीर्थकरोकी धर्मदेशना खाली न जाय लेकीन महावीरकी पहली देशना खाली गइ.-केवलज्ञान हुवे वाद उपसर्ग नहो लेकीन महावीरकों हुवा--ये वात न मानना इसमें क्या कारण है ?-पक्षपात करके अपनी वातकों सच्च-और-दूसरेकी-झूठ कहना यह कोइ चतराइ नहीं. चौराशी बोलोंका जवाप कवित्तमें उपाध्याय यशोविजयजीने दिया है उसमें लिखा है कि-

(दोहा.)-तिहुंकर थीवेदको-क्यों एकनकों बंध,?-

गुनथानक आकर्षथी-यहू हमारी संध,(१)

(३०)-तर्क, -तत्त्वार्थ सूत्रके बनानेवाले उमास्वामीजी श्वेतांबर थे या दिगंबर ?—

(उत्तर.)-उमास्वातिजी श्वेतांबराचार्य थे. (५००) पांचसैं ग्रंथ उनोंने बनाये जिनमें तत्त्वार्थ सूत्रजी एक ग्रंथ है. पूजा प्रकरण-प्रशमरति-बगेरा कइ ग्रंथ वर्तमान समयमेंजी हमारे पास

मौजूद है. जिनको तुमलोग नहीं मानते. यदि तुमारे कहने मुजब उमास्वातिजी तुमारेही आचार्य थे तो उनके अन्यग्रंथ तुमारे संघमें क्यों न मान्य हुवे ?-तत्त्वार्थ सूत्रकी रचना बहुत उत्तम और चमत्कारी देखी इसलिये तुमलोकोने इसको वाचना पढना स्वीकारलिया, लेकीन इससे क्या हुवा ?-हकीकतमें यह ग्रंथ श्वेतांबर आम्रायहीका है, तुमारे आचार्योंकी गंधजी इसमें नहीं. फिर देखिये !-एकादश जिने इस सूत्रमें केवलीको कवलाहार कहा, क्योंकि-ग्यारह परिसहमें-शुधातृषा पहेलेही गिनेहै, और तुमलोक केवलीको कवलाहार मानते नहीं, सोचो !-फिर किसका पद सिद्ध हुवा ?-परिसहोंकी हेरफेर करनेमें-तुमारे आचार्योंने बहुतेरे उपाव किये लेकीन एक नहीं चला, तत्त्वार्थ सूत्रकी सर्वार्थसिद्धीकामें टीकाकार कह रहे है-एकादशजिने न-संति-अर्थात् ग्यारहपरिसह जिनेंछोंमें नहीं कहना. इधर प्रमेयकमलमाचंड ग्रंथके रचयिता कह रहे है-एकेन अधिका न-दश-एकादश-अर्थात् एक और दश-ग्यारहपहिसह जिनेंछोंमें नहीं, एसी एसी कुतर्क करनेमें तुमारे आचार्य अलंबते ! चूके नहीं, परंतु झूठकी दोम कितनी ?-अखीरमें झूठे आदमी सचे नहीं होशकते, प्रशमरति ग्रंथमें मुनियोंको धर्मोपकरण रखना कहा, सोचोकि-अगर उमास्वातिजी तुमारे आचार्य होते तो मुनियोंको नंगाही रहना न कहते ?-जब तुमलोकोके आशयसे उनका आशय चिन्न था तो वे खुदजी दिगंबर नहीं थे इस कहनेको कौन रोक शकता है ?—

(३९) तर्क, केवलीकों-विहार-धर्मोपदेश-और-उठना बैठना वगैरा क्रिया ही नहीं होती तो ज्ञोजन क्रिया करना कैसे संभवे!-

(उत्तर,)-यह बात गलत है, सबवकि-केवली चलते वरुत जरूर कदम उठाते है, धर्म देशना देते शब्द उच्चारण करते है, और समवसरणमें सिंहासनपर बैठना वगैरा क्रियाञ्ची जरूर करते है, इसका निषेध करना तुमारे आचार्योंका हठवादहीसें हुवा, आजतक किसीने इस विषयमें कोइ प्रमाणीक युक्ति नहीं बतलाइ,

(४०) तर्क, केवलीकों सबक्रिया स्वप्नाव सिद्ध है, प्रयत्न सिद्ध नहीं, प्रयत्नका होना मोहविना नहीं होता.

(उत्तर,)-यदि सबक्रिया केवलीकों स्वप्नावसेंही होतीहो तो प्रयत्न निरर्थक ठहरें, और प्रयत्नविना क्रियाका होना निर्मूल है, अगर कहाजायकि-केवलीकी चेष्टा प्रयत्नजन्य नहीं किंतु एक विलक्षण स्वप्नाववती है तो सवाल होनेकी जगह है कि-जैसे चेष्टा विलक्षण मानते हो वैसे प्रयत्नञ्ची विलक्षण क्यों नहीं मानते ?-और विलक्षण चेष्टा जैसे मोहविना कहते हो वैसे विलक्षणप्रयत्नञ्ची मोहविना क्यों न कहो ?-अगर कहाजायकि केवलीकी चेष्टा मनःपूर्वक नहीं तो इसीप्रकार प्रयत्नञ्ची मन पूर्वक नहीं एसा माननेमें क्या दोष है ?—

(४१) तर्क, केवलीको रागका अज्ञावहोनेसे वचन व्यापारकाञ्ची अज्ञाव है, धर्मोपदेशके, वरुत वे खुद नहीं बोलते किंतु श्रोता पुरुषोंकी पुन्यप्रकृतिके प्रज्ञावसे केवलीके मस्तकमेंसे आपोआप एक प्रकारकी ध्वनि पैदाहोतीहै, सोञ्ची निरक्षरीनाद

अर्थात् अक्षररूप वाणी नही किंतु एक बड़े ज़ारी अवाजका गोंला जानना.

(उत्तर)—धन्य महाशय ! धन्य !!—आपकी तर्कज्ञी तारीफ करने लाशक है जब विना राग केवलीके मस्तकसें उपदेशरूप अवाज निकसना माना तो अक्षररूप वाणी न माननेका क्या हेतु है ?—क्या-ज्जाषापर्याप्तिनाम कर्मका उदय केवलीकों नहीहै ?—जो निरक्षरीनाद पेदा हो.

(४१)—तर्क, -वीतरागकों रागज्ञावसें पूजना यह कौनसें जैन आगमका वचन है, ?—

(उत्तर.) अंगशास्त्रोंमें पूजा दो प्रकारकी लिखी है, एक इव्य पूजा-दूसरी ज्ञावपूजा-इव्यपूजा-केशर चंदन और पुष्पवगे-राकी-और-ज्ञावपूजा-शुद्धमनसें गुणानुवाद करनेकी-पूजा--पूजक पुरुषकों हितकारिणी है पूज्यकों उससे कोइ प्रयोजन नही, पूजकका रागज्ञाव पूज्यकों अनर्थका हेतु नही, तुमलोक अगर केवल वीतरागज्ञाववर्द्धक प्रतिमाही मानते हो तो उस प्रतिमाकों रथपर क्यों चढाते हो ?—क्या मुनिहुवेवाद वे कज्ञी रथपर चढेथे, ?—प्रतिष्ठाके समय-अंकुरारोपण-नादीमंगल--वास्तुपूजा--कलशारोह-जलयात्रा--शांतिचक्र--चर्चनभूषण-नाटकगीत-दीक्षावृद्ध-अभ्यता-लोश संस्कार-तिलकदान-और--अधिवासना--वगेरा-सरागज्ञाव-की क्रिया क्यों करते हो, ?—अगर कहोगे पीढले ज्ञाव जोउनोंने अनुभूत किये है उनका अनुकरण करना चाहिये तो सवाल होनेकी जगह है कि-वीतरागपर सरागज्ञाव करना तुमनेही खुद मंजूर रखा या नही ?—अगर कहोगे प्रतिष्ठाके बाद तो हम सराग

ज्ञावकी कोइ बात नही करते ?-तो फिरसवाल पैदा होता है कि जो चीज बुरी है वो वीतरागकी प्रतिमापर एकवार ज़ीक्यौं करना ?-

अगर तुम-वीतरागज्ञाव वर्धक प्रतिमाके सच्चे ज्ञक्त होते तो एक निर्वाण कल्याणकके शिवाय पहेलेके चार कल्याणककी कोइ क्रिया जिन प्रतिमापर न करते अथवा तो पांचो कल्याणककी पांचो प्रतिमा अलग अलग बनाते, सचितजलसें स्नान करना-चरणोपर तीलक लगाना क्या यह सरागज्ञाव नही है ?-सिंहासन-उत्र-जामंमल-वगेरा आमंवर क्या सराग ज्ञावके चिन्ह नही है ?-परंतु क्या किया जाय !-तुमारी, समझकाही फरक है दिगंबरलोकोंका हठ विशेष करके इसबातपर ज्यादे देखा गया कि-बडी बडी बाते करना लेकीन उसपर चलना नही,—मंदिरमें ओछव करना--गाना बजाना नाचना-क्या यह रागज्ञावके चिन्ह नही है ?-इनकोज्जी ठोमदो-केवल मूर्तिके सामनेबैठकर ध्यानही करलिया करो, परंतु फिरज्जी मंदिर तो बनवाना जरूर पमेगा, अलबते ! हुंढियापंथी बनजाओतो न्यारी बात है, परंतु फिरज्जी शास्त्रवाचनेके लिये तो मकान बनानाही पमेगा, उंची उंची बात खेंचकर तो गुरुओंका विनाश किया अब औरज्जी धर्मकार्य उठाते जाओ,-कितनेही दिगंबर श्रावक हमसें कह चुके है कि-क्या करे !-हमारे धर्माचार्योंने वस्त्रपेहनना छोमकर खबर नही क्या सार निकाला ?--क्या शरीर--आत्माके लिये वस्त्र नही है ?--इस कालमें अगर हमलोक मुनिवनना चाहे तो नंगे हो नही सकते, वस्त्र रखे तो शिथिलाचारी कहलावे, गृहस्थपनेमें सोच फिकरके मारे वेसा धर्म पालन नही होशकता, आपलोगोंमें जैसा स्थविर

कल्पमार्ग इसकालमें मौजू है देशकाल मुजब बहोत ठीक है,-

फिर मुनियोंके संबंधमें कहते हो जो जिनेंद्रने किया सो उनके चेलोंकों करना चाहिये, परंतु इतना नही सोचतेकि-कहां केशरी-सिंह और कहां हिरन ? तीर्थकरोंकेलिये समवसरणकी रचना होतीथी मुनियोंकेलिये न हुइ न हो, पीछीकमंडलु जैसे मुनिको रखना कहते हो तीर्थकरजी रखते थे क्या ?,—फिर प्राचीनताके वारेमें कहते हो कि-हम-श्वेतांबरोंसें पहेलेके है लेकोन जब पुढा जाता है कि--तुमारे ग्रंथोंमें जिस आचारांग सूत्रकृतांगवगेराके नाम है वे अंगशास्त्र अब कहां है दिखलाइये !—तो--उत्तर नही मिलता. कोइ पंमित-या-तेरहपंथियोंका भाइजो-अभिमानमे आनकर कुछ कहता है तो-विभेद होगये-इसके शिवाय औरकुछ नही कह शकता, परंतु सोचोकि-अंगशास्त्रही विभेद हो गयेथे तो जैन-संघ कैसे बनारहा ?-दो हजारवर्षसें पहेलेके ऐसे मंदिर और मूर्ति बतलाना चाहिये जिनके उपर संवत् मीति-प्रतिष्ठाचार्यका नाम-लिखा हुवा हो, और वों प्रतिष्ठाचार्य दिगंबर पट्टावलीके शाखा गणमें दाखिल हो.

स्त्रीकों उसीजवमें मुक्ति होना इनकारकरके फिर (२०) नपुंसक-(४०) स्त्री और (४८) पुरुष-एकसमयमें मुक्त होना मंजूर रखा, क्या ! ऐसे ऐसे पूर्वापर विरोधी वचन सर्वज्ञप्रणीत हो शकते है ?-क्या संसारमें सच्ची स्त्रीयां अज्ञव्य ही है जो उन-मेसें कोइकी मुक्ति न होशके ?-क्या सभीस्त्री अपूर्वकरण न पाशके यही नियम है ?-भावचारित्र किसी स्त्रीकों प्राप्त न हो यहजो क्या दिगंबराचार्योंने ठेका लिया है ?

इसप्रकार प्रश्नोत्तर हुवे--चौरासीवोलोंका वर्नन पुछा-शास्त्रानुसार उनका उत्तरदेकर शंसयदूर किया, जितने तर्कवितर्कहोते रहे सबका वर्नन यहां लिखना चाहे तो कहांतक लिखे, ?-

(दिगंबरश्रावक--फतेहलालजीके प्रश्नोका उत्तर)

॥ समाप्त ॥

[चिकित्साविद्या.]

प्रथम वैद्यकों उचित है कि--किसी प्रकारका नशा नखावे. बदचलन नचले. धर्मपर श्रद्धा रखे और रोगीकों हिम्मत देता रहेकि--आप कुछ चिंता नकरे बीमारी जलदी आराम होगी, लोभ ज्यादा न रखे-ठलकपटसें कोई औषधि बीमारको न खि-लावे. और ख्यक्तेत्रकाल जावको विचारकर परहेज उनची-जोंका करावे जो उसरोगकों हानिकारक हो. जो जो चीजें उस बीमारीकों हठानेवाली हो उसकों दवाकेसाथ खानपानमें मदद-गार रखे.

विमारकों चाहियेकि-वैद्यके वचनपर श्रद्धा रखे-औषध खा-नेमें कमोबेसो न करे-और दवाके लिये जो कुछ खर्च पडे खुल्ले दिलसें करे, धन माल और खजाना शरीर तंडरस्त नहो तो किसी कामके नहो कुछ बीमारोको उत्पत्ति मिथ्याआहार-आरै मिथ्याव्यवहारसें होतो है, आदमोकों चाहियेकि-उससें बचे,

ज्यादे कामजोग सेवनेसें वीर्य कम हो जाता है, अजोर्ण-प्रमेह-क-मजोरो-वगेरा अनेक बीमारी पैदा होती है,

थोड़ीसी कुह नाडी परीक्षा लिखते है, वैद्य नाडी मर्दकी जीमणे हाथकी और स्त्रीकी वामे हाथकी देखे. और इसी तरह पांवकीनी नाडी-मर्दकी जीमणी-स्त्रीकी-वामी देखे यहां कोई तर्क करेकि-स्त्री पुरुषके लिये तो ठीक समझलिया लेकीन जब नपुंसककी नाडी देखना तो क्या करना चाहिये ?-(इसका खुलासा-) नपुंसक दो तरहके होते है, एक पुरुष नपुंसक-इसरा स्त्री नपुंसक; पुरुष नपुंसककी जीमणे हाथकी-स्त्री नपुंसककी डामें हाथकी देखना. विमारके हाथकी नाडीपर वैद्य अपनी तीन अंगुलीयां रखकर इसमलाइमतासे देखेकि-जिससें रोगीको तकलीफ न हो और रोग पहेळानमें आजाय, नाडी सर्प या जोंककी-तरह टेंडी-वांकी चले तो वैद्य उसे वातवृद्धि समजे, अगर मेंडककी तरह कूदती हुइ चले तो पित्तवृद्धि-और कबूतरकी-या-हंसकी-तरह लचकाखाकर चले तो कफवृद्धि समजे,

डाक्टरलोक नाडी इसरीतरह देखते है-वें-कहतेहै एक वर्षके बच्चेकी नामी एक मिनिटमें (१४०) खटके देती है, दो वर्षके बच्चेकी नामी (१३०) और तीन वर्षके बच्चेकी नाडी (१२०) खटके देती है, तीन वर्षसें लगा सात वर्षके बच्चेकी नाडी (१००) खटके देती है, सात वर्षसें लगा चौदह वर्षके बालककी नामी (८५) खटके देती है, चौदह वर्षसें लगा सतराह वर्षके लडकेकी नामी (८०) खटके और सतराह वर्षसें लगा पचास वर्षके पुरुषकी नामी (७५) खटके देतो है. पचास वर्षसें लेकर असी

वर्षके बुढ़की नामी (६०) खटके देती है. इससे कमी खटके देवेतो वैद्य उसे शीत-याने-वातवृद्धि जाने. और ज्यादा देवेतो पित्तवृद्धि जाने.

रोगीकों सुंदर साफ वायुयुक्त मकानमें रखना चाहिये, पलंग कोमल बीठोंना साफ-और-नर्म हो,-मुखलोग रोगीकों ठोटे और अंधेरे घरमें मालदेते है इससे उसकों बहुत तकलीफ होती है, बिमारी ज़ी बढ़ती है, रोगीके बीठोंनेकों रौज धूप और हवामें मालदेना चाहिये. हरहमेश-या-दो तीन दिनकेबाद रोगीके बीठोंनेकी चदर बदलदेना ठीक है. पहेननेके कपमे ज़ी निर्मल होना चाहिये, मलीन कपमेसे रोगीका चित्त विगमता है. हरव-खत रोगीकेपास बहोत आदमीओंका रहना अच्छा नहीं. लेकीन रोगीकों एकीला रखना ज़ी योग्य नहीं. अत्यंत असाध्य रोग ज़ी होजाय तो ज़ी रोगीसें न कहे कि-तुम इस बीमारीमें मर जा-उगे. बल्कि-कहता रहे कि-तुम जलदी अच्छे हो जाउगे. यह बीमारी थोमी और ठोटी है. रोगीके सामने सदा शास्त्रकी बात सुनाता रहे, रोगीकेपास बैठकर रोवे नहीं. रोगीकों बहोतदिनतक एक घरमें न रखे, बीचबीचमें घर बदलता रहे. अगर उस जग-हका-वायु-या-जल अनुकूल न हो तो दुसरे नगरमें लेजाय. रोगका इलाज सुझवैद्यसें कराना, मुख वैद्य जानका जोखम है वात पित्त और कफ जवतक सम रहे बीमारी पैदा नहीं होती, जो रोगी पध्यसेवन करता है उसकों बिना औषधही अच्छा होताहै. दिनमें थोमीसी देर हांसी खुशीकी बातें करना-परिश्रम ठोम-कर आराम जोगना-और-प्रमाणकेसाथ जोजन खाना-शरीरके

लिये हितकारी है. दिनमें सोना-रातको जागना-बहोत खाना-ज्यादे नसा करना-अधिक मैथुन सेवना-अधिक बोलना-ज्यादे वॉज उठाना-अधिक गर्मी और शीतमें फिरना-मलमूत्रकी बाधा-कों रोकना-और गीले घरमें रहना-बीमार होनेकी निशानी है.

जो शरुश दातून नहीं करता उसके मुंहमें बदबू आती है. दांत मलीन रहते हैं, मसूनोंमें दर्द पैदा होता है, दांतोंकी जम् शिथिल होजाती है, माठ दूखने लगती है, जीव्हापर और ग-लेमें बमेबमे रोग पैदा होते हैं. अगर मुखमें कोई ज्वारी रोग-हुवा हो तो न करनाजी ठीक है, खटाइ-करमी वस्तु-और-रुखाअन्न-मुखरोगीकों खाना अच्छा नहीं.

वाताधिक प्रकृतिवाले पुरुषकों किस तरह बर्तना चाहिये ? क्या ! क्या ! चीज उसे पथ्य और अपथ्य है ?-सुनिये !-प्रथम तो वादीके शरीरवालेकों हवासे बचाव रखना ठीक है. नागरवे-लकापान-केशर-पीपरामूल-सतावर-गोखरु-अरनी-खसका जल-सूँठ-वगेरा जितने वादी शांत करनेसे पदार्थ है और चांदीसो-नेकी खाख वगेरा जितनी रसायन इस रोगकों दूरकरनेवाली है वैद्यकी सलाहसे उपयोगमें लाना अच्छा है, बहोत बोलना-अग्नि-का तापना-और-ज्यादे कामजोग करना इस रोगवालेकों अच्छा नहीं, वर्षा रतुमें वादीवाले मनुष्य सुखी नहीं रहते. बूढेपनमें वादीरोगवालेकों जीनेके मरनाही अच्छा मालूम देताहै. ठंमाजो-जन-बरफ-चने मूंग-सुपारी-वादीरोगवालेकों हानिकारक है.

पित्त प्रकृतिवालेकों तरगरम शरबत-इक्षुरस-मिश्री-केले-अ-नार-करेले-बदाम-पीस्ते-कडूवे और भीठेरस-सेवन करना अच्छा

है. चंद्रमाकी चांद्रनीमें सौना-गोतगान सुनना-बागबगीचमें घूमना-नाचरंग देखना-पित्तप्रकृतिवालेकों विशेष आनंदकारी है. नदी समुद्र-सरोवर कनारे बैठकर हवाखाना-फूलसुंघना-शरीरपर ठंडे लेप लगाना-और-जलाशयकों देखते रहना-पित्तप्रकृतिवालेकों वहोत रुचता है, वल्किन्-स्वप्नमें जी यही हाल रहता है कि-आज तो हम खूब नहाये, आज पहाडकी हरियालीमें और जलके ऊरनोमें खूब मोलतेफिरे,-जाषण करना-चर्चावार्त्तामें घंटोंतक म-गजपत्ती करना यह तो पित्तप्रकृतिवालेकी जीवनग्रंथी है. बातोंमें लगादो तो खानापीनाजी भूल जाय. घी-दूध-गेंदू-चावल-दाख-सोनेचांदीकी जस्म-लोहेकी जस्म-वगेरा औषधी-वैद्यकीस-लाहसें खाना अच्छा है. हवादार मकान-या-तलघरमें रहना पित्ताधिककों हितकारी है, तमाखूपीना-धूपमें मोलना-और अधिक कामजोग करना पित्ताधिककों बुरा है, मलमूत्रके वेगकों कजी न रोकना चाहिये. क्रांथकरना-द्वारमिलेपदार्थ खाना-रास्ता चलना-इस रोगवालेकों वहोतही बुरा है. परंतु क्या किया जाय! पित्तवालेकी प्रकृतिही तामसी होती है. तेल-गुम-हींग सरसों-इ-मली-और-संपूर्ण विदाहकारी पदार्थ पित्तरोगवालेकों हानिकारक है. नागरवेलके पानजी वहोत खाना ठीक नहीं.

जिनका शरीर कफप्रधान है उनकों परिश्रम करना-रास्ता चलना और-प्यास लगी हुशकों रोकना अच्छा है. चने-मूंग-जव-कुलथी-राइ-द्वार-चरपरे और कसायलेरस-सरसोंका तेल-साँठ-कालीमीरच-पीपर वगेरा चीजे कफप्रकृतिवालेकों पथ्य है. उमद दूधके पदार्थ-पेंया-खटे-निमकीन-जारी-शीतल-और-यावन्मात्र

कफकारी खानपान और औषध-कफरोगवालेकों विष समान है, ठोम देना चाहिये.

जो लोक पढ़नेलिखनेके अभ्यासी है उनके मस्तकमें जरूर कमजोरी होजाती है, उन्हेंकों चाहियेकि-ठमासे वादाम-ठमासे मिश्री ठमासे ताजाधी-और-दोरति केशर-इन चीजोंकों बारीक पीसकर मल्हमसावनाके एक मीचीमें रखे, और दो दिनतक सूंघते रहे, मगजकों ताकात पहाचेगी. तमाखूपीना-ठंमेजलसे स्नान करना-और-ज्यादे रास्ता चलना-मस्तकरोगीको बुराहै. घी-दूध-और-गेहूके बने पदार्थ खाना अच्छा है, तालवेपर चमेलीकातेल खूब मसलके उसपर गुलावजल ढांटना-या-चमेलीके फूल सूंघना-मस्तकरोगीकों लाजकारी है, जिसकी आंखोंका तेज मस्तककी खूशकीके कारण घटगयाहो उसके सीरपर ताजा मखखन मलना अच्छा है. मलमूत्रकी बाधा रोकनेसे और मस्तकके केश न सुधारनेसेत्री सीरमें दर्द पैदा होता है. मस्तककों ठंडे जलसे धोकर जब केशोंकों सवारना तो कंधीसे धीरेधीरे सवारना चाहिये. उल्टेबाल वहानेसे सीरके चमकेकों इजा पहाचती है. खारमिली कोइ चीज मस्तकमें लगाना ठीक नहीं. शरीरकी शोभा यातो वस्त्रआभूषणसे-या-केश शृंगारसेही कियीजाती है, केशही मनुष्यकीसुंदरताका विशेष साधन है. स्त्रीकी खूबसुरतीकेलिये तो बालही मुख्यहै, बालबिगमनेसे मनुष्यका सबहीरूप बिगम जाताहै. जिसमनुष्यकी पिच्छाधिकप्रकृतिहो उसके बाल जल्दी श्वेत हो जातेहै, कइमनुष्योंकों थोमीउपरमेंही बालउमजातेहै, जोमनुष्य माताके रंगरूपपरगयाहो उसके केश थोमे होतेहै, जि-

सको डाढीमूछ विल्कुल न आवे उसको नपुंसक समझना चाहिये.

सबप्रकारके रत्नोंसें नेत्रोंकों अनमोलरत्न कहागया है, अधिक पढना-अंधेरेमें बारीक चीजकों देखना नेत्ररोगवालेकों बुरा है. अग्निकी तेजीकेसामने आंखोंकीज्योति विल्कुल तवाइ होजातीहै. लिखने पढनेवाले मनुष्योंकों चाहियेकि-हरहमेश पांचसात तोले घी जरूर खायाकरें, एकीला घी न खाया जायतो रोटी-या-दालमें मिलाके खाना-या-तोलेजर वादामकी गिरी-तोलेजर ताजाघी-और चारतोले मिश्रीमिलाकर सवरेही खाना अच्छाहै. लेकीन लालमीरच और हींग जबतक नढोमों फायदा नहोगा आंखके उपाव दो-यातो चश्मा लगाकर कामलेना-या वैद्यकी सलाहमें कोई औषध खाकर इलाज लेना. नेत्ररोग बहुधा नजलेके कारण उत्पन्न होतेहै, इस लिये जिस मनुष्यके नजलेका प्रकोप होकर नेत्रज्योति मंद होजाय-लालरहे-पानीजरे-अथवा चक्राचोंध लगजाय-इत्यादि रोग शांत करनेकेलिये निम्नलिखित उपाव अति उपयोगीहै. वादामकी गिरी तोले (३०) तीस कालीमीरच ढमासे-वमो इलायचीके बीज ढमासे-वंसलोचन ढमासे-दालचोनी एकमासा-केशरदोमासा-प्रथम वादामकी गिरीकों रात्रीसमय जलमें र्नीगोना, सवरे उसका सुख बोलका उतारकर बटेपर सफेदगिरीकी पीठी पीसना, जबबहोतबारीक होजाय उसमें कालीमीरच-इलायचीके बीज-वंसलोचन-और-केशर पीस कर मिलादेना, परंतु केशरकों पानीमें घीसकर मिलाना चाहिये जिससें संपूर्ण पीठीपर रंग आजाय. फिर उसपीठीकी एककढा-इमें गौका ताजाघृत चढाकर पकोमीकीतरह ढोटीढोटी मली भूं-

नलेनाचाहिये. जब उसमें कच्चापन नरहे एकथालीमें जुदाउतारता जाय. सब पीठी इसीप्रकारभूनजाय तब उसमेंबराबर मिश्रीका चुराडालकर और पकोडीयांका चुराकर किसीमिट्टीके चीकने बर्तनमें रखना, तीनदिन हवासें बचाना. फिर सांज और सवेरकों एकएक तोला रौज खाना. खटाई—तेल—और—लालमीरचका बचावकरना—इससे नजलेकेसबप्रकारके नेत्र और मस्तकके रोग नष्ट होते हैं.

कानमें अंगुलीघालकर—या—तुणका वगेरासँ बहोत उकेरना नहीं चाहिये, जगह नाजुकहोनेसँ सहजमें बीमारी पैदा होजातीहै, खुटखुट शब्द होना—जलनहोकर पींव बहना—ये सब कर्णरोगके चिन्हहै. इसरोगवालेकों बहोतबोलना अच्छा नहीं. इसके उपाव अनेकहै लेकीन जिसकों जो माफिकआजाय उसकेलिये वही अच्छा. आकवृक्ष जो जंगलमें होताहै उसके पीलेपत्ते लाना, और कपडेसँ पुंछकर नाममात्र घी उनपर लगाना. और फिर गर्मतवे-पर—या—किसी और बर्तन थाली वगेरापर जिसके नीचे अग्निहो उनकों गर्मकरना और फिर कानमें निचोड देना. परंतु इतनाध्या नरहोकि—पत्तोंपर घी विशेषभी न लगे और रुखेभी न रहे. और पुंछनेमें उनपर मेलभी न रहनेपावे, पत्तेभी जो जमीनपर पडकर पीलेपडजातेहै वे कामके नही. जो वृक्षपरही पककर पीलेहोजातेहै वे लाना चाहिये.

अजीर्णरोग सबरोगोंकी जन्मभूमिहै, चिकित्साशास्त्रका—बचनहैकि—अजीर्णमें भोजन नहींजीमना. अच्छीतरहभोजनपचने-पर कोईरोग पैदानहीहोता. अजीर्णसँ जबतकदूसरीबीमारी नशुरु

हो उसके पहले इसका उपावकरण जरूरी है, पतला दस्त आना—पेट फूलना—खट्टी डकार आनी—ये अजीर्ण हुवेके चिन्ह है. अजीर्णको मिटानेके लिये कोई चूर्ण—या—शंखवटीकी गोली—खाना चाहिये. भोजन थोडा जीमना—कोसदोकोसकी मजल करना—या—दोचार घंटेदिनमें वामेपासे सोरहेना अच्छा है. रातको भी नवघंटेसे ज्यादा नींदलेना चाहिये. इसपर भी अजीर्ण कम न होतो उत्तमवैद्यकीसलाहसे चिकित्साकरना लेकीन बेपरवाह न रहना.

अजीर्ण होनेसे बुखारकी पैदाश है, जबतक जठराग्नि तेजवनी रहे बुखार कभी नहीं आता. बुखार देखतमें कमजोर मालूम देता है लेकीन सब रोगोंका सिरदार यही है. इसके होते सभी बीमारीयां हाजर होजाती है. रौज आनेवाला बुखार—दूसरेदिन आनेवाला—तीसरेदिन आनेवाला—चौथेदिन आनेवाला—ठंड देकर आनेवाला—मज्जागत—धातुगत—और हांडज्वर—वगेरा अनेक भेद इसके है. दस्त न आना—भोजन न पचना—शरीर दुबला होना—ये—सब ज्वरोत्पत्तिके चिन्ह है, जबतक ज्वर न छूटे—छूटनेपर भी जबतक शरीरमें ताकात न आवे तबतक कामभोग करना नही चाहिये. इससे स्त्रीको और पुरुषको दोनोंको नुकशान है, बुखारमें एकादोदिन भोजन जीमना वंदरखाजाय तो भी कोई हर्जकी बात नही. स्निग्ध भोजन ज्वररोगमें बुरा है, आधारभूत थोडा और हलका खानपान लेना बुरा नही.

बुखारकी दवा—संखीया शुद्ध तोला एक—हडताल शुद्ध तोला एक डीकामारी तोला दो—इनको बारीक पीसकर थोहरके पत्तेके रसमें तीनदिनतक खरल करे—बाद तीनदिनतक आकडेके पत्तेके रसमें खरल करे—फिर सांगरफ मासा (६)—और—बछनाग शुद्ध मासा (६)—वा-

रीकपीसकर उसमें सामीलकरे. बाद तीनदिन गांजेके रसमें खरल करे, फिर तीनदिन नींबुकेरसमें खरलकरके एक पींड बनावे, बाद थोहरकेपत्ते (२०) तोले लेकर कूटके उसकी नुंगदी बनाके उस-पींडकों उसमें रखदेवे, दो मीटोके सकोरे लेकर उसमेंसबकों बंदकरे, उसपर कपडाबांधकर मीटोलगाके दोशेर जंगलीछांगेकी आंचमें फूकें, फिर उसीतरह आकडेके पत्तेकी नुंगदीमें और गांजे के पत्तेकी नुंगदीमें अलगअलग फूके. बाद निकालकर नींबुकेरसमें खरलकरे और मूंगजितनी गोली बांधे. बुखारवालेकों—एकगोली शुभह और एक श्याम—देवे. शीतऔरवर्षारुतुमें अद्रककेरसमें—या सोंठके काडेमें—और—उनालेमें घीके शाथ थोडी मिश्री मिलाकर देवे. सवजातके बुखार—और—त्रिदोष—इससे शांतहोगें.

चिकित्साविद्या द्वादशांगवाणीकेज्ञानसें बहारनहीं. रसायण प्रकरणमें धातुओंकीभस्मबनानेका जहां अधिकारहै अनेकजडीबू-टीकेरस निकालकर उसमें डाले जातेहै, चूर्ण—गुटिका—औषधिमि-श्रिततेल—और—एकीशप्रकारके पाक बनानेमें अनेकप्रकारकी वन-स्पति—कूटपीसकरडाली जातीहै. अगरकोई महाशय समझेकि—ऐसे हिंसकप्रयोगसें मुनियोंकों क्याजरुरतथी?—तो—उसके जवापमें यह कहतेहोकि—गणधर और पूर्वाचार्य—मुनि थे या गृहस्थ?—अगर मुनि थे तो बस !—इसीपर सोचलो! उनोंने चिकित्साविद्यामें क्यों ऐसे प्रयोग लिखे?—कि—जिसमें अनेक जडीबूटीयोंका छेदनभेदन कर-नापडे?—हकोकत तुमारी समझकाही फर्कहै उनोंका इरादा यहथा कि—दुनियादारोंसें ठीकठीकतोरपर धर्म—अर्थ—और—कामका—पालन होशके. शरीर एक—गाडीके—समान है उसके पैयेमें जबतक तैलव-

गेराचीजें नहीडालीजाय तो वह चले नही. उसकों चलानेके लिये चिकित्साविद्या एकपरमसाधनहै. आजकलके नयीरोशनीवाले जो कि अपनी अकलकेसामने दूसरेकों कुच्छमाल नही समझते उनकों समझानेकेलिये अगर हजारयुक्ति दियाजाय तोभी वृथाहै.

जिसकों श्वासरोग याने दमेकी बीमारीहोजाय उसे चाहिमे कि-सबसे पहले काम भोग सेवना बंद करे. श्वासरोग जेसी कोई भयानक तकलीफ दुनियामें नहीहै. इसबीमारीसे शरीर दुबला होतेहोते क्षीणहोजाताहै. रातकों यहरोग घुरीतकलीफ देताहै, उसवरुत ऐसा विचारआताहैकि-इसबीमारीमें जीनेसे मरनाहीअच्छाहै. छातीमें वोजसा मालूम पडना-श्वासखींचनेमें जोर लगनामुंह फीका और हाथपैर ठंडे होजाना-शरीरमें पसीनाआने लगना-कफकेसंगखून गिरना. नींद विल्कुल न आना-वगेरा उपद्रवहोनेलगते है. यदि शरीर तंदुरस्त रखनाचाहतैहो इसरोगके होते हो ईलाजकराना शुरु करो. रोग और शत्रुकों बढनेदेना विल्कुल मनाहै. श्वासरोगकी औषधी,-इडतालवरकीतोलाएक-इसकों(१०) दशनींबुकेरसमें खरलकरे-जब सुकजाय-बाद अवरखके दो टुकडे वीलस्तभरलंबे लेना, उनमेंसे एकटुकडेपर वह इडतालका घुटा हुवा चुरा वीचमें फेलादेना. दूसराटुकडाउसपर धरके कोयलेकी थोडीसीआग नीचे और थोडीसीउपर रखना, जब धुआंनिकलना शुरुहो और बंदहोजाय देखनाकि-इडतालका क्यारंगहै?-अगर सुखरंग होगयाहो तो निकाललेना और पीलारहाहो तो फिरआंच देना. इसप्रकारवनीहुई इडतालतोलाएक-मोतीवारीकमासादो-चां-दीकेवरकमासेछ-सोनेकेवरकमासाएक-कालीमीरचमासादो-अज-

वायनकेफुलमासाएक-लोवानकेफुलमासेतीन-इनसबकों आकडेके पत्तेकेरसमें तीनदिन खरल करे. जब गोलीबाधनेकेलाइकहोजाय मूंगसमानगोली बाधे,-एकगोली शुभह और श्याम पानबीडीमें खावे. शरीरमें लाक्षादितेल-या-चंदनके तेलकी मालीस करे. खानेमें तरचीजखावे. आराम होगा.

कोषवृद्धिरोगवालेकों हरवख्त-जांधिया-या-कोपीनसें-कसा हुवा रहना चाहिये. बहोतठंडाइपीनेसें-इसरोगकी पैदाशहै. भोजनजीमके तुरत पुष्कलजलपीन-प्रारेदिन बैठेरहना-और-ज्यादे खटाइखाना-इसरोगवालेको बुराहै. ग्रंथीमें दर्द होना-चलतेवख्त तकलीफ पाना-और-नामर्दहोजाना-इसरोगके चिन्हहै, कोषवृद्धि रोमकी चिकित्सा-लाजवंतीकेपत्तेतोलाएक-वचमासेछ-सरसोंमासे छ-कूठमासे छ-पींपरछोटीमासेतीन-सोंठमासे छ-अकलकरातोला एक-एलवा तोला दो-अफीमका तेलतोला एक-प्रहेत तोला दो-इनसब चीजोंकों आकडेकेपत्तेके रसमें दोदिनतक खरल करे.बाद तोलेतोलेभरकी गोली बनावे. जब जरूरपडे पानीमें घीसकर थोडासागर्मकरके कोषग्रंथीपर लेप करे, और अग्निका सेंक देवे-तमाखूका पत्ता उपर बांधे. फायदा होगा.

खुनीववासीर-याने-अर्शविकाररोगहोनेसें गुदामें पीडा होती है, लोही बहना-दस्तआतेसमय बडेबडे कष्ट भोगना-और-गुदामें जलन होना-सब इसीरोगके चिन्ह है. इसरोगवालेकों देरमेंपचनेवाली-और-गर्म-बस्तु खाना ठीक नहीं. जलदीपचनेवालीचीज दहींका-मठा-और पकेफलखाना अच्छाहै. गुदामें बहोतपीडा होतो लोवान-या-भांगका-धुंवा लेना ठीक है, भोजनमें बदामका तेल

खाना गुणकारी है. नींबोलीके बीज तोले पांच-रसोंत तोले पांच-हारगुंजारके बीज तोले पांच-कालीमीरच तोला सवा-मीलजाय तो हडतालकी भस्ममासा एक-इनसवचीजोंको गेंदेकेपत्तेके रसमें-अथवा भांगकेपत्तेके रसमें-एकदिन खरल करे. फिर चनेके बराबर गोली बाधे-बादीववासीर होतो दोगोली शुभह और दोगोली श्याम ठंडे पानीकेशाथ खावे. और वही एकगोली घीमें घीसके गुदापर लगावे. और एकगोलीको आगपरधरके धुनी देवे. बादीववासीर दूर होगा. खुनीववासीर होतो एक गोली सवेरे और एक श्यामको खाकर उसपर पवाडेकेपत्तेका रस तीन तोला पीइ जाय, उपर लिखेमुजब धुनीदेना और लगाना शुरूखे. आराम होगा. यह औषध (७) सातरौज जरुरलेना चाहिये. कुच्छवीमारी बाकी रहतो (२१) रौज लेवे.

एसा कोइमनुष्य नही दिखता जो वीर्यरोगसें पीडित न हो, सवकों एकनएक वीर्यरोग लगाहीरहताहै, इसरोगकेपैदाहोनेकी जड कइ है, ज्यादा कामचेष्टासें वीर्यक्षीण होजाताहै, अधिकइंद्रिय चालना आदि दोषोंसें वीर्य पतलापडजाताहै, वीर्यमें कमजोरीहोनेसें स्वप्नदोष होनेलगताहै, स्त्रीयोंके देखने-लूने-और-यादकरने मात्रहीसें वीर्यपातहोजाना-मगजमें कमजोरी-स्मर्णशक्तिकी न्यूनता-और चलतेवरत चक्कर आना-वगेरा बड़ीबड़ी तकलीफें पैदा होतीहै. इसका उपाव न लियाजाय तो अखीरमें-आदमी सीरडी होजाताहै. इसरोगवालेकों सवप्रकारसें बलबढानेवाली चीज खानाचाहिये. चावल-घी-दूध-सवप्रकारका मंवा-घीमें पकी खीचडी-गेंहूकी रोटी-पुरी-या ताजीमीठाइखानाअच्छाहै. लेकीन बहुतदेरमें

पचनेवालीचीज एकवारही पेट भरके नहीं खानीचाहिये. दहीं-खटाइ-बासीअन्न-बीगडीहुइमीठाइ-वीर्यरोगवालेकों हानिकारक है, स्त्रीविषयकचिंता-अथवा-उसकेमीलनेका उत्साह-विल्कुलछो-डदेना चाहिये. सवेरे जंगलकी हवामें घूमनेकों जाना-शरीरकों सुगंधि तेलसें मर्दनकरके स्नानकरना-और-उसीसमयभारीकपडा ओढलेना अच्छाहै, इसका उपाव न लियाजाय तो प्रमेहरोग पैदा होजाता है, पेशाबकेसंग धातु-या-रुधिर-गिरना-बारंवार पेशाब-आना-पेशाबके रास्तेमें घाव होना-और हाथपांवके तलवोंमें जलनहोना-ये सब प्रमेहरोगके चिन्हहै, मैथुन-इस्तमैथुन-शक्तिसें ज्यादा मिहनत-और-रातकों जागना-इसरोगवालेकों बुराहै. उत्तमवैद्यसें इसकी चिकित्साकराना व्याजबहै, आगेचलकर इसका उपावभी लिखेगें लेकीन मुखवैद्यसे इलाज करायाजायगा तो जानका जोखमहै, गुड-तेल-लालमीर्च-सोंठ-तमाखू-खट्टे और निमकीनपदार्थ-खाना अच्छा नही.

स्त्रीकों बहोतसे रोग ऐसे होतेहै जो लज्जाकेभारे दूसरेकों कहनहीशक्ती, रुतुशूल-या-महिनारुकनेकेशिवायअधिक रज गिरना पेटमें पीडाहोना-गर्भधारण न करसकना-बेसमयगर्भ गिरना-प्रदर श्वेतप्रदर-रक्तप्रदर-गुल्म-बगेरा-अनेकरोग ऐसे होतेहै जिससें रात्रीकों चमक उठना-आलजंजालस्वप्न दिखने-नींदमें गुडगुडाना-शरीर दुबला होना-छातीमें गभराट-बगेरा कइ तकलीफें पैदा होतोहै, मुखलोक कहदेतेहै भूत पिशाचकी इसपर छाया है लेकीन नही सोचतेकि-इसकों रोग क्या है?-रोगकों देवकारण समझना बडीभूलहै. कितनीक स्त्रीयां एसीभी होनीहै जो कोगपापंड क-

रती है, घरका धंदा नहोशके तो कहदेती है मेराशरीरभारी है मुझे भूतणी आनकर सताती है, महाशय ! अगर इसकी परीक्षाकरना चाहोतो एकछोटी शीशीमें छ मासा ताजा चुना-और-छ मासा न-वसादर पीसाहुवा मोलाकर उसस्त्रीकी नाककों सुंधाना, भूतहोगा तो कुच्छ परवाह न करेगो-और-पापंडहोगा तो चिल्ला उठेगी. जिसके शरीरमें सच्चेही देवछाया हो एसा समझाजाय तो उसे भ-विष्यत् वृत्तांत पूछना-या-मुठीमें कोई चीजलेकर कहना बतला ! इसमें क्या चीज है ?-अगर फोरन उसचीजका नाम बतलादेवे तो अलबते ! देवकारण समझना, और फिर पुछनाकि-आजसे दश-रौजके बाद क्या बनाव बनेगा ? अगर जैसा कहे वेसाही उसरौज बने तो निश्चय देवकारण समझकर उसका इलाज करना.

बहुधास्त्रीयोंके रुतुधर्म रुकजाता है और बहुधास्त्रीयोंके बच्चेपे-दाहोनेकेपीछे मल साफ न होनेकेकारणभी उदर-तथा-नलोंमें वि-कारउत्पन्नहोजाता है, बाद वहस्त्री शरीरसे पीलीपडजाती है. हाथ पांवफुटते रहते है, शिरमें दर्द और भोजनपर अरुचीहोती है, कोई वस्तु प्यारी नही लगती, इसकासाधारण इलाज लिखते है, मुलेठी (जेठीमध) छ मासा-गुडवच छ मासा-पोस्त (अफीमडोडा) एक मासा-हलदी दो मासा-पुराना तोनवर्षका गुड देढतोला-और दे-शीचूना एकमासा-इनसवकों (२०) तोलाजलमें अग्निपर चढाना, जब पकतेपकते (१५) तोलारहजाय-अग्निपरसे, उतारकर कपडेसे छाने और ठंडाकरके स्त्रीको पीलादेवे, एसातीनरौज सवेरे कर-नेसे रुकाहुवामल पुनःप्रवाह होकर शरीर शुद्धहोजायगा. यदि दवा गर्मी ज्यादाकरे तो एकएकदिन तथा दोदोदिनका अंतरदे-

कर पिलाना, और जो एकदिनमें ही दवा देनेसे मल शुद्ध हो जाय तो फिर दूसरी दफे देनेकी कोई जरूरत नहीं. यह रोग कि—जिसकी दवा उपर लिखी गयी है दो कारणसे उत्पन्न होता है, एक तो किसी स्त्रीके बालक पैदा हुआ हो और वह अपने पतिसे भोग करनेकी शिघ्रता करे. कमसे कम बालकके जन्मदिनसे लेकर चालीशदिनभी पुरे न होने देवे तो इस रोगकी जड लगे, चिकित्साशास्त्रोंका वचन है कि—बालक जन्मेबाद (४०) दिन कामभोगसे बचना चाहिये. जो नहीं बचाते है वे जरूर रोगी होजाते है, दूसरा कारण—यह भी है कि—रतुधर्मवती स्त्री तीनदिनके बीचबीच अगर पुरुषके पास जाय तो उक्त रोग पैदा हो जाय, रतुवती स्त्रीसे संभोग करनेमें पुरुषको भी बडी तकलीफ पहीचती है, पुरुषचिन्हमें अनेक तरहके कष्ट और गर्मीके रोग पैदा होते है.

स्त्रीको वीर्यरोगकी चिकित्सा—सुख हो—या—सफेद हो—इस दवासे दोनों रोगोंको फायदा है. मुशली सफेद तोले दश—गौकाता जाघी तोले दश—और—मिश्री तोले दश—दोनोंको कूटपीसकर कपड छीनकरके घीमें मिला देना—और—चोइसपहर एककलाइकियेहुवे डबेमें रख छोडना—बाद वीर्यरोगवाली स्त्रीको चाहिये कि—हरहमेश तोले तोले भर खाते रहना. खानपानमें तेलमीरचका परहेज रखना, सात रौजमें आराम होगा, (दूसरी दवा) मुशली काली—मुशली सफेद—उटंगनके बीज—सेबलकी जडका छीलका—गोखरुछोटे—ये चीज तोले तोले भर लेना—और कूटपीसकर बारीक कपडेसे कपड छाणकरके छमासे सुभह और छमासे श्याम—गौके ठंडे दूधके साथ फाकना, परंतु इतना याद रहेके—छमासे एकदम न फाके—थोडा थोडा हथेलीमें लेकर फाकते जाना और दूधके घुटकेसे उतारते जाना, वीर्यरोग

प्रदर-दूरहोगा. (अगर किसीको यह मंजूरहोकि-स्त्रीको गर्भ रहे तो) इसीदवाको रजस्वलासे साफहोनेकेबाद याने पांचमें रौजसे लेकर आगे पांचरोजतक उसीतरीकेसे खावे जो उपर लिख चुके है. अकेलीस्त्रीकेलियेही यहदवा नहीं बल्किन् उसका पतिभी बराबर पांचरौजतक खातारहे, कामभोगसेवना पांचरौज मोकुफरखे. बाद संभोगकरनेसे गर्भस्थितिभी हो सकती है.

(गर्भस्थितिहोनेकी दूसरी चिकित्सा)-छमासे आसगंध कूटकर एकीश तोले पानीमें इतना औटानाकि-साढेदशतोले रह जाय उसको चूलेसे नीचे उतारकर उसमें दशतोले कचागौकादूध और अढाइतोले घी-सामीलकरके रुतुधर्मवतीस्त्री जिसदिनरुतुधर्म आवे उसदिनसे लगाकर पांचरौजतक ~~सवेरे~~ ~~पीये~~ ~~उसको~~ गर्भरहनेकी संभावना है.

(दूसरी चिकित्सा)-पारसपीपल अर्थात् सफेतपीपलकीजड या-उसके बीज-सफेतजीरा-और-शरपुंखा-ये चीजे आठ आठ मासे लेना-कूटछानकर-छछमासेकी चारपुडियां बनाना-अगर रुतुधर्मके दिनसे लगाकर चाररौजतक कोइस्त्री एकीशतोलेगौकेकचे दूधके साथ सवेरेसवेरे पीयेगी गर्भरहनेका संभवहै. कितनेक कहते है रुतुधर्मके दिनोंमें स्त्रीको दूध पीना अच्छानही, लेकीन दवामें मीलाकर पीनेकी कोइमना नहीं, अलबते!-यूं खानपानमें चाहे मत पीओ.

अगरकिसीको अपने शरीरमें वीर्यवृद्धिकरना मंजूर हो तो नीचेलिखाहुवा केशरपाक बनाकर खावे, [केशरपाकबनानेकी तरकीब.]-केशरतोलाएक-कस्तूरीमासे दो-अमरमासाएक-छोटेमो-

तीमासा दो-शिलाजीतशोधहुवा तोलाएक-इनसवचीजोंकों लेकर गुलावजलमें तीनघंटेतक खरलकरे, और एकतरफ रखे, फिर बादामकी मींजी पचास तोले-पीस्ते पनराह तोले-गर्मपानीमें धोकर छीलकर उतारडाले-और कूटकर मावासा बना लेवे-पांचतोले छोटीएलायची छीलकेउतारके कूटपीसकर उस मावेमें सामील करे और एकतरफ रखे, पारा शोधाहुवा तोलाएक-गंधकशोधा हुवा तोलाएक और धतूराकेबीजतोले दो-लेकर तीनदिनतक खरल करे, जब चूर्णहोजाय एकतरफ रखे. फिर उरदका आटा तोला चौदह-धोलीमुशलीतोले तीन-सतावर तोलेतीन-आसगंध तोलेतीन-बेहमनसफेद तोलाएक-बेहमनसुख तोलाएक-तोदरीसफेद तोलाएक-तोदरीसुखतोलाएक-तोदरीपीलीतोलाएक-जायफल तोलापांच-इनसवकों कूटपीसकर चूर्णबनाके कपडछान करे और एकतरफ रखे. बाद-गुलाबका इतर उमदा मासे छ-चांदीके वर्क तोला एक. सोनेके वर्क मासेदो मीश्रीतोले (२००) दोसे और-गौका घी तोले (१००) लेकर एकतरफ रखे, फिर एक कडाइ पीतलकी-या-तांबेकी-लेकीन कलाइकियीहुयी हो लेना, और पचासतोलेघी उसमें डालकर चूलेपर धरके थोड़ीथोड़ी आंच लगाना, बाद बीशतोले भीलावें लेकर उस कडाइमें डालना, जब मुंनमुंनकरना बंद होजाय और धुवांदिने लगे सभी भीलावें निकाललेना, लेकीन आंचका एसा खयालरखनाकि-धी जलकर कोडा न होनेपावे, अगर कोडा होगयातो सबपाक खराब होजायगा,

बहोतमे वैद्यलोक पाकबनातेहै लेकीन वो ठीकनहीबनता

और सेंकडेरूपये मीट्टीमें चलेजातेहै इसका यहीसबवहैकि-बनानेकी क्रियामें चूकते है. इसलिये बहुतहुशियारीसैं पाकवनाना चाहिये.

निदान ! उसभीलामेंके तलेहुवे पचासतोले घीमें उडदकाआटाबगेरा काष्ठादिक औषधीयोंका चूर्ण (जो कपडछानकरके एक तरफ रखाथा.) सेक लेना. सोभी एसा सेकनाकि-थोडासा सेक लगे और जलने न पावे. फिर उसको दूसरे वर्त्तनमें डालकर उसकडाइकों खूबमांजकर साफकरना. और चूलेपर धरकर उसमें (१००) सोतोले मिश्रीकी चासनी बनाना, चासनी गुच्छाबंध याने अंगुलीऔर अंगुठेपर देखनेसे छसाततार उठतेहो एसी हो जाय तब नीचे उतारकर उसमें वो जो पचासतोले घी बाकीरखा था डालदेना और खोंचेसे धीरेधीरे दिल्लतेजाना. जब मोतीकी आफक रवे पडजाय उसमें केशर-कस्तूरी-अमर-मोती-और-शीलाजीत जो गुलाबजलमें, खरलकरके एकतरफ रखेथे डालदेना बाद-बादाम-पीस्ते-और-एलायचीका-जो मावासा बनारखाथा वो-और-उडदकाआटाबगेराकाष्ठादिक औषधोंका चूर्ण जो भीलावेकेतलेहुवे घीमें सेककर एकतरफ रखाथा-सब-उस चासनीमें डालकर धीरेधीरे बहोतयत्नकेशाथ मीलादेना. बाद पारा-गंधक और धतूरेकेबीज जो खरलकरके एकतरफरखे थे वे भी उसमेंसामीलकरदेना,-चांदीकेवरक और गुलाबका इतर डालकर जब संपूर्णपाक तयार होजाय दोतीनथालमें-घीचोपडकर डालदेना और उपरसैं सोनेकेवरक चीपकाना, उमदा केशरपाक होजायगा.

इसपाक पुरुष या स्त्री जोखायगा दशगुना बलवीर्य बढेगा शरीरकी रंगत और फुरतीबढेगी. अंगअंगमें चपलता और उत्साह

जोरदेगा. [इसको खानेका-तरीका] प्रथम पांचसातरौज दोदो तोले शुभह और श्याम-खानाचाहिये, उपरसें बीश तोला दूध पीइकर देखना, जब इतना पचजाय तो फिर पांचपांच तोले पाक और उपरसें चालीशचालीशतोले दूध पीना, उनालेमें यहपाक खाना मनाहै गर्मी करेगा,-शियाले चौमासेमें-खाना बहोतअच्छा. दूध एकपरमऔषधी है, इसका पीनाकोइवरुत मनानही लेकीन इतना यादरखना चाहियेकि-कोरा पीनेसें पेटमें जाकर गुच्छासा बंध जाताहै. इसलिये उचितहैकि-इसतरकीबसें बनाकर पीये. दूध तोलाचालीश-गुलाबजल तोलावीश-और मीश्री तोलेपांच एक कलाइदार वर्त्तनमें-डालकर-अग्निपर धरना, और बेदानेमासे (६) एकसफेदकपडेकी पोटलीबांधकर उसमेंडालना-जोश इतनादेना कि-पीछा चालीशतोला रहजाय, जब ठंडाहोजाय पीइलेना. चलनेफिरनेका अभ्यास हरवरुत बनाये रखना चाहिये. गद्दीतकी-याकेनोकरबने रहनाठीकनही. खटाइ और तेल खाना मना है, (४१) दिनतक अगरकोइ इसपाकको सावधानीसें खायागा बहोत कुच्छ फायदा उठायगा. जो लोक उदार प्रकृतिवालेहै और शरीरको तंदुरस्तरखना चाहतेहै उनकेलिये यह निहायत उपयोगी चीजहै. जो शरुश महाकंजूसमखीचुस है उसकेलिये मेथीका आटा तेल-और गुडही अच्छे है.

जिसको मूत्रकृल्लब्ध्याधि हो उनकोचाहिये शतावरीकी गीली जडका रस तोलेभर और छमासामीश्री मिलाकर पीये, तीनदिन सवेरे इसप्रकार पीनेसें आशाहै आरामहोगा. शतावरी न मिले तो हरीगिलोय तोलेभर लेना. जिसको विनाइच्छा पेश निकल जाता

हो-या-उपकताहो-उनकोउचितहैवि-हालेतिल-और-अजवायन-
तीनतीन तोले-कूटपीसकर गुडमें मिलाके नवनवमासेकी गोली-तां
बनावे, और सवेरेही एकगोली खावे आरामहोगा, नागकेशरके
फुल-गोके घीमें मीलाकर रजस्वलाहोनकेवाद चोथेरोजसें तीनदि
नतक अगर कोइ स्त्री खावे और क्षीरकाभोजन करे तो गर्भस्थिति
होनेका संभवहै, लेकीन दवालेनेके दिनोंमें कामभोगसेवन नकरे.

पुहषभी यही दवा शायशाय लेता रहे, मुशलीपाक अगर
ठीकठीकविधिसे बनाहो हरहमेश चारतोले खायाजाय तो धातुकी
क्षीणतामिटे-मंदाग्नि-श्वास-अरुचि-विषमज्वर-और नपुंसकता-दूर
करे, प्रमेहकों शांतकरे, शरीर पुष्टहो. स्त्रीकोभी यह पाकखाना अ-
च्छाहै. सवतरहसें तेजी बढ़ायगा. लेकीन सवामहिनेतक खाना
चाहिये,—

जिसको अपनीबुद्धितेजकरना हो सरस्वतीचूर्णबनाकर(४१)
दिनखाय. (सरस्वतीचूर्णबनानेकी तरकीब.)-विद्याब्राह्मीतोला-
एक-शंखावलीतोलाएक-शतावरीतोलाएक-शुंठतोला एक-आं-
धाझाडतोलाएक-गिलोयसुकीतोलाएक-वायवडींगतोलाएक-वच-
तोलाएक-अकलकरातोला दो-आमगंधतोला दो-कस्तूरीमासादो
केशरतोलाएक-जायफलतोलाएक-जवत्रीतोलाएक-घादामकी गि-
रीतोलादश-पीस्तातोलापांच-चीरोंजीतोला पांच-ककडीकेबीज-
छीलेहुवे तोलाअढाइ-तरबुजकेबीजछीलेहुवे तोलाअढाइ-आलके
बीजछीलेहुवे तोलाअढाइ-खरबुजकेबीजछीलेहुवे तोलाअढाइ-ए-
लाचीछोटीतोलाएक-मोतीकीखाखमासा दो-सोनेकेवरकमासाएक
चांदीकेवरक (७५)-घृततोला एकीस-(ताजा और गौका)-मी

श्री तोला साठ-इतनीचीजे लाकर इनमेंसेकाष्टादिकऔषधियें अच्छीसाफकरके हमामदस्तेमें खूबकूटे-और-कपडछानकरके ए-तरफ रखे.

बादाम-पीस्ते-चीरोंजी-गरमपानीमें धोकर छीलके निका-लकर चकुसेंकर रखे. केशर-कस्तूरी-मोतीकीखाख-गुलाबजल-केशाथ घंटेतीनतक घोंटकर एककटोरीमें निकाललेवे, एलाची अधिकचरी कूटकर रखे, सोनेकेवरक-चांदीकेवरक-कडाहीताबेकी या-पीतलकी-खोंचा कलाइ किया हुवा. मिश्री-और-घृत-ये-सब चीजेनजरकेसामने तयाररखे, फिर चतरवैद्य-या-कारीगर पहले कहाडी चूलेपरचढाकर (२५) तोलपानीकेशाथ मीश्रीकोंगलाकर छान लेवे, उसकीचासनी गुच्छाबंद-छसाततार अंगुलीपरनिकले वेसी-लेकर जमीनपर रखे, और उसएकशि तोले घीमेंसें (१०) दशतोलेलेकर चासनीमें डाल दे, और धीरेधीरे खोंचेसें हीला-ताजाय-जब रवापडजाय-केशर-कस्तूरी-मोतीकीखाख-घुटीहुइ-उसचासनीमें डाल दे. और-खोंचेसें हीला देवे, बाकीरहाहुवा (११) तोले घी-लेकर-काष्टादिकऔषधियोंमें डालदेवे-अथवा चासनीमें डालकर खोंचेसें हीलादे, फिर बादाम-पीस्ते-और-ए-लाची-उसीचासनीमें डालकर हीलाता रहे, बाद चांदीकेवरकभी उसकेभीतरडालकर एकमेक करदेवे. बस!-फिर साफ थालीमें घी चोपडकर-तयार होयाहुवा पाक-उनमें फैलादेवे, औरसोनेके-वरक उसपरचोटाकर रुइके फुएसें दबादेवे. उमदासरस्वतीपाक तयार होगा.

हरहमेशपांचतोले पाक-खाकर उपरसें (१०) दशतोलेतता

दूध भीश्रीकेशाथपीनेतें निश्चयहैकि-(४१.) दिनमें बुद्धि तेजहोगी. लेकीन!-भोजन एसाजिमनाचाहिये जो हलका और जलदीपचनेवालाहो. दातूनकुरला करके मुंहकोंसाफ रखना-हरहमेश शरीरमें पसीनाआजाय इतना परिश्रम लेतेरहना और-शाथशाथ दोचारकाव्य कंठाग्र करतेजाना ठीकहै. कुपथ्यखाकरपाककों दोषदेना बडीभूलहोगी. चतरआदमी-बो-है-जोलिखे-मुताधिक-वर्तावरखे.

सर्पकाटनेकीजगह मासाभरसंखीया घीसकरलगानेसें तुर्त-आरामहोगा, जिसकोसर्पकाटे दोचारघंटेहोचूकेहै उसकोंलालफीटकरी कच्चीहीलेकर पानीकेशाथ तीनहिस्से घनाके आधआधघंटेकीदेरीसें पीलादेना आरामहोगा, कंसुदीकीजडघीसकर पीलानेसेभी सर्पकाझेर दूरहोताहै, नागदमनीऔषधि तो सबसे ज्यादा फायदेमंद-है, (गर्भवतीस्त्रीकों कष्टमितानेकेलिये)-तीजयपहुत्त-स्तोत्रमें जिसकीविधि लिखी है वह यंत्र-केशरसें कांसेकीथालीमें लिखकर धूपदेना और पांचतोलेजलकेशाथ धोकरपीलानेसें पीडादूरहोगी और गर्भ फोरन छुटजायगा. अगरएकदफे पीलानेसे न छुटेतो दोतीनदफे पीलाना,

चिकित्साविद्या अगरपूर्णरूपसेंलिखीजाय तो बहोतकुच्छ विस्तारबढशक्ताहै, जिसतरफनेगाहकरो वही विद्या अपारहै, कइतरहेकेग्रंथ छपेहुवे मौजुदहै, रगरगकेमाहितगार वैद्यलोग दुनियामें थोडेनहीं, इसलिये इसकाज्यादे बढावबढानाभी जरुरतनहीरहा. ग्रंथकारोंका नियमहैकि-जो बात सदाकेलिये सर्वोपयोगी अपूर्व हो लिखदियाकरे, वैद्य और ग्रंथकार आयुष्यकेमालिकनही, आरामहोना न होना कर्माधीनहै. निश्चयनयकों दिलमें रखकर व्य-

बहारनयसें बर्त्तावकरना सज्जनोंका कामहै. कितनेकआदमी कर्मोंपरभरुसाधरके कहदेतेहेकि-जो होनहारहोगा आपअच्छाहोजायगा हम दवा नहीखायगे, लेकीन! यहबातशास्त्रसें बखिलाफहै, आजकल वैसे शरीरनहीरहै, अन्नकेआधार प्राण रहगये, इसलिये मुनासबहै अच्छेवैद्यसे चिकित्साकरावे और उसकेकहने मुजब खानपान करे, रोगमेंमनका ढंगा चलाना अच्छानही. शरीरएकअंधेरी कोठरीहै, इसमें चिकित्साविद्याहीका चांदना कामदेताहै. कइदफेदेखागयाकि-साधुलोग हरेक गृहस्थकीदियीहुइ औषधि विनाबैद्यकीसलाह खालेतेहै, लेकीन!-सोचनाचाहियेकि-हरेकआदमीवैद्य नहीहैं, साधुलोगधर्मशास्त्रके जानकारहै, लेकीन!-शारीरीक विद्याके जानकारतो वैद्यहीहोतेहै. एकबारीष्टर एकडाक्टरकेपासगया और कहनेलगा मेरेपांवमें दर्दहै इसका इलाज बतलाइये!-पासबेठेहुवे पांचचार बेवकुफकहनेलगे क्यौजी!-दोदोहजाररुपये एकादिनकी तनखामें पातेहो-क्या!-पांवकाइलाजभी नहीजानते!-बारीष्टरका जवापहुवाकि-में-वकालतकरनेमें अलबते! होशियारहूं, लेकीन! शारीरीकविद्यामें नहीहूं, यहतो डाक्टरोंकोभी चाहियेकि-जब अपनारोग अपनापहेछानमें न आवे तो दूसरेकीसलाहभी लेवे. सबबातकानतीजा यह आया कि-हरेकआदमी रोगपैदाहो तुर्त वैद्यकेपासचलाजाय और जोकुछ वहहुकम दे उसमाफिक वत्तें. अपनीवुद्धिकी कुतर्क नकरे. दवाकादाम उसीवखत देदिया करे, दाम न देनेसें-या-देरीसें देनेसें वैद्यलोग शर्मकेमारे बोलेगेंनही लेकीन!-ध्यानदेकर इलाज नहीकरेंगें. पै-

सारूपया शरीरसें बढकर नहीहै. इसवातमें बलिकन्!—ज्यादे उदारता रखनीचाहिये. उदारआदमी हरतरहसें सुखी रहताहै.

[इति चिकित्सा प्रवाहपूर्ति-समाप्त,—]

इतिश्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-
शांतिविजयजीमहाराज-विरचित-
शांतसुधानिधिग्रंथका प्रथमतरंग समाप्त.



[स्वरोदयज्ञान,—]

स्वरोदयज्ञानकावर्नन मूलसूत्रोंमें—प्रकीर्णकग्रंथोंमें—और—भाषामयकवित्तछंदोंमें कइजगहदेखागया, विवेकमार्तिडयोगरहस्प—हेमचंद्राचार्यरचितयोगशास्त्र—और कपूरचंद्रजीरचितस्वरोदयज्ञानभी स्वरशास्त्रहीकेग्रंथहै, अगरस्वरशास्त्रका अभ्यासकरनाचाहतेहो—स्वरोदयज्ञानीकों मिलकर इसकेभेदानभेदपुछो—सीखो—पढो—और—जो कुच्छ हुकमदे उसमाफिकचलो. स्वरोदयज्ञानसीखनेवाला आहार और नींद—थोडीले, संसारमें लिपटा न रहे. हरहमेशहृदयमें नवपांखडीकाकमलवनाकर—अरिहंत—सिद्ध—आचार्य—उपाध्याय—साधु—दर्शन—ज्ञान—चारित्र—और—तप—इनका ध्यानकरे, प्राणायामयोगकी दशभूमिहै उसमें पहेलीमजलस्वरोदयज्ञानहै, जिसकेबडेभाग्यहो उसकों इसकारास्ता मिलताहै, जिनेंद्रदेव—और—गणधरमहाराज—संपूर्णप्राणायामयोगके पुरेमाहितगार थे. महावीरअरिहंतकेबाद—चौदहपूर्वकेपोठी—भद्रबाहुस्वामी—जबहुवे—उनोंने सूक्ष्मप्राणायाम—ध्यानका जब परावर्त्तनक्रियाथा श्रावकसंघने मीलकरउनोंकों विज्ञप्तिकियीथी—वगेराबातें जैनागममें कइजगह वांचने सुननेमें आती है, इससेंभो मालूमहोताहैकि—पहेलेकालमें साधुलोग इसकाखूब अभ्यासरखतेथे, अबशरीरकीताकात कमहोगइ, धर्मश्रद्धा उतरने लगी, और कुच्छलोभनेभी अपनापंजा ज्यादेफेलाया,—कहिये ! अब—स्वरोदयज्ञानकाटंटा किसे अच्छा लगे ?—यहकाम निर्लोभी और आत्मज्ञानीयोंकाहै, दशभूमितक न बने तो दोतीनचारभी

बनाना चाहिये. मेहनत करनेसें मुश्किल बात भी सहेज होजाती है.

(दोहा.)—नाडीतो तनमें घनी—पिनचौइस प्रधान,

तिनमें नवफुनताहुमें—तीनअधिककर जान. १

इंगला पींगला सुखमना—ये तीनोंके नाम,

भिन्नभिन्न अव कहतहूं—ताके गुन अरु धाम. २

भ्रकुटिचक्रसें होतहै—स्वासाकों परकास,

बंकनालके ढिगथइ—नाभिकरत निवास. ३

नाभितें फुनि संचरत—इंगला पींगला धाम,

दक्षिणदिशहै पींगला—इंगला नाडी वाम. ४

इनदोउकेमध्यमें—सुखमना नाडो जोय,

सुखमनके परकासमें—स्वर फुन चालत दोय. ५

डावास्वर जब चलतहै—चंदउदय तब जान,

जबस्वर चालत जोमना—उदयहोत तब भान. ६

सोमकाजकों शुभशशी—करकामकों सूर,

इनविध लखकारजकरत—पामे सुख भरपूर. ७

दोउस्वर समसंचरे—तब सुखमन पहिचान,

तामे कोउ कारजकरत—अवश होतकच्छु हान. ८

चंदचलत कीजे सदा—थीरकारज स्वरभाल,

चरकारज सुरज चलत—सिद्ध होतततकाल. ९

कृश्रपक्ष एकमदिने—प्रातसूर जो होय,

तो ते पक्ष प्रवीननर—आनंदकारी जोय. १०

शुक्लपक्षके आदिदिन—जोशशी स्वर उद्योत,

तो ते पक्ष विचारिये—सुखदायक अतिहोत. ११

- चंद्रतिथिमें आय जो-भानुकरत प्रकाश,
तो क्लेश पीडा हुवे-किंचित् वित्तविनाश. १२
- मूरज तिथि पडिवा दिने-चले चंद्रस्वर भोर,
पीडाकलह नृपभय करे-चितचंचल चिहू और. १३
- दोउपक्ष पडिवादिने-सुखमन स्वर जो होय,
लाभहान सामान्यथी-तो निश्चे करी जोय. १४
- सन्मुख वामी उर्द्धदिश-रहीप्रश्नकरे कोय,
चंद्रयोग हो तासमें-तो कारज सिद्ध होय. १५
- नीचे पीछे जीमणे-जो कोइ पुछे आय,
भानुयोगस्वर होय जो-तसकारज होजाय. १६
- अष्टभेद है योंगके-पंचम प्राणायाम,
ताके सप्तप्रकार है-सकल सिद्धके धाम. १७
- वायु पांच शरीरमें-प्राण समान अपान,
उदानवायु चोथो कह्यो-पंचम अनिलअव्यान. १८

स्वरोदयज्ञानकों सीखनेवाला पहले नाशिकासें चंद्र और सूर्यस्वरकी पहछानसीखे, नाककेडावेछेंकमेंसें हवा निकलतीहो चंद्रस्वर समझना चाहिये जीमनेसें निकलतीहो सूर्यस्वर समझे, हरमहिनेकी सुदीएकमकरौज सवेरे सूर्योदयकेवख्त अगर चंद्रस्वर चलताहो अच्छाहै, पनराहरौज आनंदसें गुजरेंगें, इसीतरह हरमहिनेकी वदीअकेमकरौज सूर्योदयके वख्त सूर्यस्वरचलताहो अच्छाहै, पनराहदिन आनंदरहेगा अच्छेनिरोगमनुष्यके दिनरात घंटेघंटेभर चंद्र और सूर्यस्वर अदलबदलहोतेहुवे चलतेरहतेहै, रोगीकों यहनीयम नही रहता, ज्यादा कमभी होजाताहै.

[चंद्रस्वरचलतेवरुत जो जो कामकरनेचा- हियेउसकी यादी.]

जिनमंदिरवनवाना शुरूकरे तो वनानेवाला अपनाचंद्रस्वर चलताहो नींव डाले, प्रतिष्ठाकेवरुत प्रतिमाजीको स्थापनकरे तो चंद्रस्वरमें करे, पूजाप्रभावना दिनपरदिन बढतीरहेगी. मंदिरकेशि खरपर कलशचढावे चंद्रस्वरमें अच्छाहै, पोषधशाला-धर्मशाला-दानशाला-पाठशाला-घर-हाट-हवेली-महेल-कोट-और-किला-नयावनाना-या-उनमें प्रथमप्रवेशकरना चंद्रस्वरमें करना, तोर्थया-त्राकोंजाना चंद्रस्वरमें अच्छाहै, सुखचेन रहेगा. दीक्षादेनेवालागुरु जब चलेकों दीक्षादे तो चंद्रस्वरचलतेवरुत देवे, मंत्रवतलाना चंद्रस्वरमें ठीकहै, लेनेवालेकाभी चंद्रस्वर हो तो निहायतउमदावा-तहै, लेकीन ! जब देवसाधनकरनेकेलिये वेठना तो सूर्यस्वरमें ठीक है, याते जलदी सिद्धहो. नयेधरमें-या नयेनगरमें प्रथम प्रवेशक-रना चंद्रस्वरमें करनाअच्छाहै आनंदरहेगा. नयाकपडा-और-न-यागेहना-पहेनना चंद्रस्वरमें अच्छाहै गाम-और-देश-इजारेलेना चंद्रस्वरमें ठीकहै, फायदाहोगा. वीमारआदमी औषधखावे चंद्र-स्वरमें अच्छाहै. वागलगाना-और खेतमें बीज डालना चंद्रस्वरमें बहोतठीक होगा.

राजासैं पहेलीमुलाकातलेना चंद्रस्वरमें अच्छाहै फायदा होगा, लडाइ और मुकद्दमेकेलिये-जाना तो सूर्यस्वरमें अच्छाहै. राजा-जब गद्दीपरबेठे तो चंद्रस्वरमें बेठे, बहोतदिनोतकराज क-रेगा. नयीदुकानखोलनेवाला चंद्रस्वरमें दुकानखोले लाभ होगा

नदीनालेका पुल्लवांधना शुरूकरे-तो चंद्रस्वरमें कामचलावे, बहोत कालतक बनारहेगा. जवाहरातका काम पहेलेचंद्रस्वरमें शुरूकरना अच्छाहै.

[सूर्यस्वरचलतेवरुत जोजो कामकरनेचाहिये उसकी यादी.]

विद्यापढना शुरूकरेतो सूर्यस्वरमें करे जलदी कंठ हो. राजाकों-या-किसीहाकिमकों अरजिदेना सूर्यस्वरमें देना, दूश्मनकों हरानेकेलिये बीडा उठाना सूर्यस्वरमें अच्छाहै, भूतउतारनेजाना या-सांपकेझेउतारनेकेलिये झाडा देना सूर्यस्वरमें ठीकहै, जलदी फायदा होगा. वैद्यलोग जब रोगीकों दवा खीलावे अपना सूर्यस्वरचलताहो उसवरुत खीलावे जलदी कारकरेगी. बीमार अलबते! चंद्रस्वरमेंही खावे. लडाइकी तयारीकेलिये हथियार खरीदे-या-हाथीघोडे-मौलंले-तो सूर्यस्वरमें ले. स्नान-और भोजन सूर्यस्वरमें करे.

- (दोहा.)-दक्षिणस्वर भोजन करे-डावे पीवे नीर,
डाबीकरवट सोवतां-होय निरोग शरीर. १
चलत चंद्र भोजन करे-अथवा नारी भोग,
जलपीवे सूरज विषे-तो तन आवे रोग. २
पांचसातदिन इनपरे-चले रीत विपरीत,
होय पीडा तनमें कल्लु-जानो धरी परतीत. ३

कामभोगसेवनकरना सूर्यस्वरमें योग्यहै, पुरुषार्थकी हानि न होगी. चंद्रस्वरमें करनेसे हानिपहुंचतीहै, नयीपुस्तकमें-या-न-

यीवहीमें लिखाण शुक्रकरना सूर्यस्वरमें अच्छाहै. राजा-लडाइके-लिये सूर्यस्वरमें चढे जलदीफतेहपात्रे. समुद्रमें जहाज चलाना-या जहाजमेंवेठकर पारहोना सूर्यस्वरमें ठीकहै,—जलदी पार हो दु-श्मनके घर जाना सूर्यस्वरमें अच्छा. उधारदेना-या-लेना-वगेरा जितनेजलदीकेकामहै सूर्यस्वरमें करने चाहिये.

सुखमनास्वर उसकों कहतेहै जो दोनोंस्वर एकशाथ चलने लगे—जब चंद्रबदलकर सूर्य हो-या-सूर्यबदलकर चंद्रहो-तब-पांच सातमिनीट-सुखमनास्वर चलताहै. इसवखत कोइकाम नहीकरना चाहिये. फक्त ध्यानस्मर्ण-और-परमात्माकानामही उच्चारन करना अच्छाहै.

चैतमुदीएकमकेरौज सबेरे सूर्योदयके वखत-चंद्रस्वर चलताहो तो बहोतअच्छाहै पनरांहरौज आनंदसें गुजरेगें, जिसकों तत्वोंकी प-हेछानकरना मालूमहोगइहो और देखेकि-चंद्रस्वरमें पृथ्वी-या-ज-लतत्व चलताहै तो बारांमहिनेका ज्ञान उसकों मालूम होशक्ता है. लेकीन!-गुरुगमसें सीखनाचाहिये. आपहीआप कोइविद्या नही जानीजाती, मेषराशिपर जिसदिन सूर्य आवे उसवखत अगर जि-सका चंद्रस्वर चलताहो तो समझलेवे वर्षभर आनंदरहेगा, अ-खात्रीजकेरौज सबेरे सूर्योदयहोतेवखत चंद्रस्वरचलना बहोतअ-च्छाहै, वर्षतक आनंदरहे,-

चैतमुदीएकमके रौज दिनभरमें जिसका घंटाभरभी चंद्रस्वर न चले उसकों तीनमहिनेतक रोगकीतकलीफ उठानीहोगी, चैत-मुदीदुजकेरौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी नचले उसकों परदेशमें जानापडे और वहांभी तकलीफरहे.—चैतमुदीतीजकेरौज

दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकेशरीरमें पित्तज्वरका खेद रहे,-चैतसुदीचौथकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले वो उसीवरसमें मरजाय.-चैतसुदीपंचमीकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसको राज्यकीतरफसें जरामाना भोगनापडे,-चैतसुदीछठकेरौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकाभाइ उसीवरसमें मरजाय.-चैतसुदीसप्तमीकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकी स्त्री उसवर्षमें मरजाय,-चैतसुदीअष्टमीकेरौज दिनभरमें जिसकाचंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसको उसवर्षमें लाभ और सुखबोडा मिले,-वर्षदिनका भलाबुरा-नतीजा-आठदिनोंमें देखना चाहो तो देखशक्ते हो, ये आठदिन वर्षदिवसका मानो बीज है, जैसे जन्मग्रह सारीजींदगीका बीज है-स्वरोदयज्ञानमें उक्त आठदिन बीजरूप है.

शरीरमें-हाड-मांस-नस-चाम-और-रोम-ये पांचपार्थिवतत्व याने पृथ्वीके अंशहैं. लाला-मूत्र-पसीना-वीर्य-और लोही-ये पांचजलके अंशहैं. भूख-प्यास-निद्रा-आलस-और-शरीरकी-कांति ये पांच अग्निकेअंशहैं, धावन-व्लगन-रोध-संकोच-और-प्रसारण ये पांच वायुके अंशहैं, आकाशकाअंश-सबशरीरमें व्याप्तहीहै,-विवेकमार्त्तंडयोगरहस्य-ग्रंथकेआधारसें उक्तबातलिखीगयीहै, स्वरोदयज्ञान जाननेका और उसमुजबबर्त्ताव रखनेका सबब यही हैकि-मन एकाग्रताको पकडे, जबतक मन एकाग्रनहीहुवा पापका अंत न आयगा, शुद्धध्यानभी न होशकेगा, ध्यानकी निर्मलता बिदून जीवकी मुक्ति होना मुश्किलहै. योग उसीकानामहै जो

मनकी एकाग्रता लावे, भरतचक्री-और-मरुदेवाजी ध्यानकी एकाग्रताहीसे ज्ञानपाकर संसार तीरेहै, योगशास्त्र-जो श्री हेमचंद्र आचार्यका बनायाहुवाहै उसका लेखहैकि-

(अनुष्टुप्चतुष्टम्.)-

अहो योगस्य महात्म्यं-प्राज्यं साम्राज्यमुद्वहन,

अवाप केवलं ज्ञानं-जरतोपि जरताधिपः ?

पूर्वमप्राप्तधर्मापि-परमानंदनंदिता,

योगप्रजावतःप्राप-मरुदेवा परं पदं. १

जिनको भोगकेवलतभी योग याद आवे उसको धन्यवाद समझना चाहिये, स्वरोदयज्ञानी होलेहोले उसपदको पहुचशक्ताहै जो आत्माकोहितकारीहै. योगसाधनकरना चाहो तो पहले स्वरोदयज्ञानीको मिलकर उससे माहितगार बनो चंद्रस्वरमेंपानी और-सूर्यस्वरमें भोजनग्रहण करो. भोजनका न बन शके तो खेर! लेकिन-पानी तो चंद्रस्वरमेंही पीया करो अगर जिनको चतुर्विध आहारका रात्रीकेसमय त्यागहै वह सांजको चोविहारकरतेवलत पुष्कलजल पीना चाहे तो लाजिमहैकि-पहेलेजब चंद्रस्वरचलताहो ज्यादेपीइले कोइ हर्ज न होगा-सांजको थोडानाममात्रपीइकर कामचलाशक्ताहै, इसीसेतोकहाकि-स्वरोदयज्ञानीको शरीरसे मोह उतारना पडेगा, विवेकमार्त्तंडयोगरहस्यका लेखहैकि-

(अनुष्टुप्चतुष्टम्.)

ब्रह्मचारी मिताहारी-योगी योगपरायणः

अब्दादुर्द्धं नवेत्सिद्धो-नात्र कार्या विचारणा. ?

आसनानि च यावन्ति—यावत्यो योगजातयः
 एतेषामखिलान् ज्ञेदान्—विजानाति जिनेश्वरः १
 आसनेभ्यः समस्तेभ्यो—द्वयमेतदुदाहृतं,
 एकं सिद्धासनं नाम—द्वितीयं कमलासनं. २
 न गंधं न रसं रूपं—न स्पर्शं न च निश्चनं,
 नात्मानं न परं वेत्ति—योगी युक्तसमाधिना. ३
 दुग्धे क्षीरं घृते सर्पि—रग्नौ वन्हिरिवार्पितः
 तन्मयत्वं ब्रजत्येव—योगी लीनः परेपदे. ५

हरेकस्वरमें अदलबदलहोतेहुवे-पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु-और
 आकाश-ये पांचतत्व चलते रहते है, इनकी पहेछान बहोत मु-
 दिकलसें होतीहै.

(दोहा.) श्रवणअंगुठा मध्यमा-नासापुंठपर थाप,
 नयन तर्जनीसें ढकी-भ्रूकुटिमें लख आप. १

पञ्चासनलगाके दोनोंहाथके दोनोंअंगुठे कानमें लगाना, और
 दोनोंहाथोंकी मध्यमाअंगुली नाकके दोनोंपडदोंपर टीकाना, दोनों
 आखोंके पडदे तर्जनी अंगुलीसें ढांककर भ्रूकुटिचक्रमें देखनाकि
 किसरंगका बिंदु पडता है, ?-अगरपीलेरंगका पडे तो पृथ्वीतत्व
 समझना, सफेदरंगका पडे तो जलतत्व-लालरंगका पडे तो अग्नितत्व
 हरेरंगका हो वायुतत्व-और-श्यामरंगका हो आकाशतत्व जानना.
 पृथ्वीतत्वकावेग (१२) अंगुल-जलका (१६) अंगुल-अग्निका (४)
 अंगुल-वायुका आठअंगुल-और-आकाशतत्वकावेग नाककेभीतर
 ही चलताहै, बहार नही निकलता. पृथ्वीतत्व नाकके सामने च-

लताहै. जल-नीचा-अग्नि-उंचा-वायु-टेढा-और आकाशतत्व-नाककेशाथ लगाहुवा चलताहै, पृथ्वीतत्वका आकार चोखूटा जलका गोल-अग्निका त्रिकोन-वायुका धजापताकाकेआकार और आकाशतत्वका शून्यआकार जानना. पृथ्वीतत्व (५०) पलतक चलताहै, जल-(४०) पल-अग्नि (३०) पल-वायु (२०)-और-आकाशतत्व (१०) पल चलताहै. पांचौतत्वकी कुल गिनती करे तो (१५०) पल हुवे, साठपलकी एकघडी-इसहिसावसे देदसेपलकी अढाइघडी हुई, अढाइघडीका एकघंटा हुवा.

पांचतत्वोंमें पहले वायु-फिर अग्नि-पृथ्वी-जल-और-पांचवा आकाशतत्व-चलताहै, पृथ्वी-और-जलतत्व-अच्छे, अग्नि साधारण-और वायुआकाश-निष्फल होते है, लडाइमुकइमेंकेलिये घरसेंचले सूर्यस्वरमेंचले, अगर दुश्मनभी सूर्यस्वरलेकर चलाहो तो जो पहले चलाहो उसकी फतेह हो. सुखमनास्वरमें भूलकरभी नही चलना. नुकशान होगा, स्वरोदयज्ञानी अगर शुभाशुभप्रश्नका उत्तरदेनाचाहै तो देशक्ताहै, सामने-वायीतर्फ-या-उंचे-रहकर कोई प्रश्नकरे उसवरत स्वरोदय ज्ञानीका अगर चंद्रस्वर चलता हो-और पृच्छकके प्रश्नका अक्षर समहो-कहदेवेकि-फतेहहोगी. पीछाडी-जीमने-और-नीचे-रहकर कोईप्रश्नकरे उसवरत स्वरोदयज्ञानीका यदि सूर्यस्वर चलता हो और-पृच्छकके प्रश्नका अक्षर विषम हों तो कहदेवे जरूरफतेह होगी. अक्षरोंके समविषमका विचार नभी कियाजाय तों भी कुच्छहर्ज नही, फतेहकहना,-पूर्णदिशामें-रहकर-कोइशखश-दोनोंकेनाम एक साथलेकर प्रश्नकरे उसमें जिसका नाम पहले लिया हो उसकी फतेह कहना.

(सोदं)-इसशब्दका अर्थ यह हैकि-वही आत्मा-में-हूँ-जो अजर अमर है। इडा-पिंगला-और-सुखमनाका जब पुरा साधन होजाय-और तत्वोंकी पहचान ठीकठीकतोरसें मालूम देने लगे,-फिर आगे चलना चाहिये. शरीरकी बडीबडी नाडीयें कितनी और किसतरफ वहती है?-यहभी जानने योग्यहै, नाभिसें (१०) नाडी-उर्द्धगामिनी-(१०)-अधोगामिनी-और-चार वक्र गामिनी-सबमीलकर (२४) नाडी बडी है, इनमें दशनाडी प्रवाही संज्ञाकीकहीगयी जिनके नाम (१) इडा-(२) पिंगला-(३) सुखमना-(४) गंधारी-(५) हस्तजीवहा-(६) पूषा-(७)-यशस्विनी-(८) अलंबुखा-(९) कुहू-और-(१०) शंखनी-है, इस चक्रकोभी अच्छी तरह पहचानमें लावे. ज्युंज्युं इसका वर्ताव बढाते जाओगे आनन्दका अनुभव मिलता जायगा. जिनको ज्यादा माहितगारहोनाहो बडे ग्रंथोका अवलोकन करे. यहां नाममात्र बर्नन लिखागयाहै.

अष्टांगनिमित्त.

अष्टांगनिमित्त चौदहपूर्वकेज्ञान सें अलगनही. लेकिन ! पूर्वोकाज्ञान अब नही रहा. एकपूर्वकेपाटीभी अबनही रहे. तथापि !-समयानुसार अबभीबहोतकुच्छहै, जैनमत सोताहुवाभी सिंहहै, निमित्तशास्त्र इसवरुत कइ देखनेमें आये-परंतु जो-अंगविद्याशास्त्र आठहजारश्लोककेअंदाजकाहै इसके आगे दूसरे निमित्तशास्त्र-सब-तरहसें कमजोरहै, अंगविद्याशास्त्र इसवरुत-जगत्भरमें-पांच-या-

सातसें ज्यादा नही रहे, सबके-कठिनशास्त्रके जव पढनेहीवाले थोड़ेरहेतो शास्त्र ज्यादाकहांसें आशकतेहै? अंगविद्याशास्त्र हमारेपास मौजूदहै, प्राकृतपाठ इसकाहरेकेके समझमें नही आशकता. एसीएसी विद्याये और आम्राय इसमेंलिखीहै जो बहोतथोडोंके जाननेमेंहोगी. हमको इसका सोलहवाहिस्साभी नहीआता, न उसका आधावर्न-नभी हम खोलशकते है, जितना खोलशकते है उसका पुरावयान लिखनाभी-यहां मुनासिब नही समझते. जितना मुनासिब समझा लिखेहींगे, लेकिन !-समयबडाविचित्र है, मनुष्योंके दिल कमजोर होतेजातेहै, पुन्य पतले पडतेहै अधर्मकी वृद्धि और धर्मश्रद्धाकी हानि देखकर कोइवात इसवरुत न लिखनाभी फायदेमंद समझते है. सुन्नेकेपात्र विदून् जवाहिरात दूसरेमें नही जडी जाती.

निमित्त कइतरहकेहै लेकिन !-आठ उनमें बडे है, इसलिये इनका नाम अष्टांगनिमित्तभी बोलदो कोइहर्ज नही. जैसे-अंगका फुरकना-स्वप्नदेखना-स्वरविज्ञान-याने मनुष्य-पशु-पक्षीकी बोलीसें भविष्यतज्ञानका भेद जानना. जमीनके हीलनेसें भलाबुरा नतीजा सोचना. उत्पात-अंतरिक्ष-व्यंजन-और-लक्षणसें जोजो भेद जाननेके है आगेचलकर सबका खुलासा लिखेंगे.

[१] - [अंगफुरकन निमित्त]

(१)-जीमनीतर्फका मस्तकफुरके राजासें इनाम मिले, फिकर दूरहो और दोलत जरूरमिले, वामीतर्फ फुरकेतो फायदाहो लेकिन थोडा. (२)मस्तकका पीछलाभाग फुरकेतो परदेशमें दोलत मिले,

(३)-जीमनाकान फुरके अपनीतारीफ सुनाई दे, बामा फुरकेतो बुराइ जाहिर हो,

- (४)-कपाल फुरकेतो राजाकाबुलानाहो-या-हुकमहोदांमिले.
- (५)-जीमनागाल फुरके सुंदरस्त्रीसैं मिलाप हो. वामा फुरकेतो लडाइ हो.
- (६)-जीमनी भू फुरके खुशीपैदाहो, वामी फुरके तो दोस्तोंसैं लडाइ हो.
- (७)-दोनों भ्रूवोंके बीच फुरकेतो प्यारेका मिलाप हो.
- (८)-जीमनी आंख उपरसैं फुरके इरादा पूर्णहो, वामी आंख-उपर-या-नीचेकहींसैं फुरके फिकर पैदा हो.
- (९)-उपरका होठ फुरके लडाइ हो.
- (१०)-नीचेका होठ फुरकेतो सुंदरस्त्रीसैं मिलाप हो.
- (११)-डाढी फुरके मुकद्दमा हारजाय,
- (१२)-जीमनी गर्दन फुरके दोलतमिले. वामी फुरकेतो रंजहो.
- (१३)-जीमनी छाती फुरके दुश्मनसैं फतेहपावे, वामी फुरकेतो फिकर पैदाहो.
- (१४)-जीमनाखभा फुरके भाइका मिलापहो, वामा फुरकेतो फिकर पैदा हो.
- (१५)-जीमनाहाथ फुरके मुकद्दमाजीतजाय, वामा फुरकेतो तकलीफ पैदा हो.
- (१६)-जीमना पडखा फुरके खुशी पैदाहो वामा फुरकेतो रंजहो.
- (१७)-पेट फुरकेतो फिकर दूरहो.
- (१८)-नाभिफुरकेतो अपने-होदेसैं-गिराया जाय.
- (१९)-गुदा फुरकेतो दुश्मनकी हार हो.
- (२०)-जीमनेहाथकी हथेली फुरके दोलत मिले. वामेहाथकी

फुरकैतो तुकशाच हो.

(२१)-पुरुषचिन्ह फुरकैतो स्त्रीसँ मिलापहो.

(२२)-स्त्रीका जीमनास्तन फुरके भर्तारसँ वियोग हो. बाया फुरकैतो मिलाप हो.

जो जो फल पुरुषकेलिये जिमने अंगका कहा वही स्त्रीकेलिये बायेंअंगका जानना. और जो पुरुषकेलिये बायें अंगका कहावही स्त्रीकेलिये जीमनेअंगका जानना, निदान !-स्त्रीका बाया अंगफुरकना अच्छा. पुरुषका जीमना अच्छा.

(२)--[दूसरास्वप्ननिमित्त]

१-अनुभूतकीयीहुइ चीजका स्वप्नआताहै. लेकिन !-वह झूठा समझना चाहिये. कुछ फल न देगा.

२-सुनीहुइबातका स्वप्नआताहै. वोभी झूठा.

३-देखीहुइ चीजका स्वप्नआताहै वोभी झूठा.

४-सौचफिकरसँसी आताहै वोभी झूठा.

५-प्रकृतिकेविकारसे आताहै, जैसे पित्तप्रकृतिवाला मनुष्य-पानी-फूल-अनाज-भोजन-जवाहिरात-मुंगे-और-लालपीलेरंगकी वस्तु ज्यादादेखताहै सारीरातसँकडे बागवगीचे और फुहारेकीशैर करतारहताहै. लेकिन !-यहभीझूठासमझनाचाहिये. सबबकि-प्रकृतिकेविकारसँ इसको पैदाश हुइ, इसलिये फायदा-या-नुकसान कुछ न-होगा.

६-वादीकीप्रकृतिवाला मनुष्य स्वप्नमें-पहाडपरचढजाताहै-वृक्षोंकेशिखरपर जावेठताहै-मकानके ठीकउपरजाकर सरकजाताहै. कुदना-फांदना-सवारीपरचढकरहवाखोरीकों जाना-आकाशमें उडना-बगेरा बनाव उसेस्वप्नमें ज्यादा दिखलाइदेतेहै, लेकीन!-यहभी झूठा समझना चाहिये. सबवकि-प्रकृतिकेविकारसँ इसकी पैदाश हुइ इसलियेइसकाफल न होगा.

७-स्वप्न-बो-सच्चाहै जो धर्म और कर्मके प्रभावसँ आयाहो-चाहे भलाहो-या-बुराहो-इसकाफल जरूर होगा.

८-रात्रीकेपहेलेपहरमें देखाहुवा स्वप्न (१२) महिनेमें फलदेताहै. दूसरेपहेरमेंदेखाहुवा (९) महिनेमें-तीसरेपहेरकादेखाहुवा(६) और चौथेपहेरकादेखा(३) महिनेमें फल देताहै. दोघडीरातरहते-यासवेरेसूर्योदयहोतेवख्तका देखाहुवा-स्वप्न जलदीफलदेताहै.

९-दिनमेंसोतेपडेहै और स्वप्नआया-बो झूठाहै, इसका फल न होगा.

१०-अच्छा स्वप्नदेखा-और-नींदखुलगइ तो फिरसोनानहीं. धर्मध्यानकरतेहुवे जागतेरहना चाहिये-यात्ते फिरकोइ खोटा स्वप्न आकर पहेलेका फल बीगाड न डाले.

११-बुरास्वप्नदेखकर जागगये औररातबाकी रहीहै तो सो-जानाठीकहै. लेकीन ! अपशोष इसबातकाहैकि-भलेबुरेकी पहेछा-नभीतो सबलोग नहीं जानते.

१२-पहेलेअच्छास्वप्नदेखा-और-पीछें-बुरादेखा तो अच्छेका फल माराजायगा, बुरा फलेगा, सबवकी-बो-पीछें आया है.

१३-पहेले बुरादेखा-और-पीछेंसें अच्छादेखा-तो-पिछलाही

फलेगा-याने अच्छा फलहोगा. क्योंकि पीछला पहलेका फल उडादेता है.

१४-अच्छा-या-बुरा-जैसास्वप्न-आया जिनप्रतिमाकेसामने जाकर वयानकरदो-रस्तेमें किसीसँकुच्छमतवोलो-देवगुरुकेसामने खाली हाथजाना मनाहै. फल-या-नैवेद्य-प्रतिमाजीकेसामनेधरके स्वप्नका वयानकरना चाहिये. वाद निर्ग्रथमुनि शहरमें मौजूद होतो उनके सामनेभी अदपकेशाथजाकर वयानकरना, और जो कुच्छ-वे-फरमावे उसपर गौर करना. पहलेकालमें-पूर्वगतआम्नायकेजानकार निमित्तिये हाजरथे, लेकीन ! अब वे नही रहे. मिथ्यावादीयोंके सामने जाकर दरयाफ्तकरनालाभकेवदले हानि उठानाहै.

१५-स्वप्नमें जो हाथीपरचढकर समुंदरमें प्रवेशकरे वो थोडे रौजमें राजा बने.

१६-सफेदहाथीपर सवारहोकर जो नदीकनारे चावलोंका भोजन जीमे वोभी थोडेदिनोमें राजाहोजाय.

१७-स्वप्नमें समुंदरकों हाथोंसेतीरकर पारहोजाय वो थोडे दिनोंमें राज्य पदवी पावे.

१८-तीर्थकरकों-निर्ग्रथमुनिकों-और-तीर्थकीजगहकों-स्वप्नमें देखना निहायत उमदाहै, इरादापूर्ण होगा. तीसरीकलममें लिख चुकेहैकि-देखीहुइ चीजका स्वप्न आताहै वो झूठाहोताहै, सोचोकि किसीने कोइ तीर्थकों पहलेदेखाहै और फिर उसीकास्वप्न आया, वतलाओ ! उसे क्याफलहोगा ? (इसका उत्तर.)-यद्यपि-यहवात सचहैकि-देखीहुइवातका स्वप्नआना वृथाहोताहै लेकीन !-तीर्थकर की-मुनिकी और-तीर्थभूमिकीचिंतनावनीरहनाभी तो अच्छाहै.

फिर उसका स्वप्नमें भी दर्शाविहोना क्यों न अच्छा हो, जरूर फायदेमंद होगा.

१९-हाथी-बैल-सिंह-लक्ष्मीदेवी-फूलोंकीमाला-चंद्रमा-सूर्य ध्वज-कलश-पद्मसरोवर-ससुंदर-देवविमान-जवाहिरातकाढेर-और-निर्धूमअग्नि-ये चौदस्वप्न तीर्थंकरकीमाता जब तीर्थंकरकाजीव गर्भमेंआवे देखतीहै. तीर्थंकर उनको कहतेहै जो साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-इनचारोंतीर्थकों स्थापनकरे, जैसे रिषभदेव-अजितनाथ-वगेराचौइसहोगये. उनकीमाताने यहचौदह एक साथ एक हीरात्रीमें देखेथे, बडेभाग्यवाला जीव गर्भमें आवे उसकी माता उत्तमवस्तुस्वप्नमेंदेखे उसमें आश्चर्यही क्या ?-भरतचक्रीवगेरा १२ चक्रवर्ती हुवे उनकीमातानेभी यही (१४) चौदहस्वप्नदेखेथे, लेकीन!-साफनही सबबकि-चक्रवर्त्तिका तकदीर तीर्थंकरकी बराबरी नहींकरशकता, वासुदेवराजा जो आधेभारतखंडका मालिक होताहै जबगर्भमें उत्पन्नहो उसकीमाता इनचौदहमेंसेसातस्वप्न देखकर जागतीहै. जैसे लक्ष्मणजी-और-कृश्र्णजी-आधेभारतवर्षके अधिकारीहुवे-वैसे सातवासुदेवराजे इनसेंपहेलेभी होचूकेथे, कुल्लनववासुदेव हुवे है. कृश्र्णजीको जैनसूत्रमें एकप्रतापीराजाहुवा लिखाहै, बाइसवेतीर्थंकर नेमनाथजीके चाचाकेबेटे भाइ थे. जैनसूत्र मुआफिक कृश्र्णजी-जैनधर्मीश्रावक हुवेहै,-वेदधर्मकेकहनेमुजब-कृश्र्णजी-इश्वरपरमात्मा-सर्वज्ञ-सर्वव्यापी हुवे.-बलदेवकीमाता वलदेवगर्भमें आवे उसवरुत्त इनमेंसे चारस्वप्न देखे, रामचंद्रजी-लक्ष्मणजीकेबडेभाइ थे जैनसूत्रोंकेकहनेमुजब-रामचंद्रजीको वलदेवकी पदवीथी-कृश्र्णजीकेबडेभाइ बलभद्रजीहुवे इनकोभी वलदेवपदवी-

थी. रावण-और-जरासिंध-प्रतिवासुदेव थे. नववासुदेव-नवप्रति-
वासुदेव-और नवबलदेव-हरेककालचक्रके-आधेहिस्सेमेंहोतेहै, मं-
डलिकराजा-गर्भमेंआवे उसकीमाता चौदहमेंसेएकस्वप्न देखे.

२०-स्वप्नमेंजिसको वीणा इनाममें मिले उसको सुंदरस्त्रीसें
मुलाकात होगी.

२१-धजापताका-या-छडी-जिसकोइनाममें मिले उसको थो-
ढेरौजमें दोलत मिलेगी.

२२-स्वप्नमेंजिसको लालरंगकापैशाव-और-लालहीरंगका-
दस्तलगे-उसका दिवाला निकलजाय.

२३-मीटीके हाथीपरसवार होकर जो समुंद्रमें घुसे और
डुबे नही वो थोडे दिनोमें राजा बने.

२४-स्वप्नमेंजिसकीगोंद-फूलोंसेंभरजाय उसे दोलत मिलेगी.

२५-कोइपुरुषस्वप्नमें-स्त्रीवनजाय-और-स्त्री-अगर पुरुषवन
जाय-उनको हरसुरतसेंलाभहोगा-अच्छेदिनभोगेगे-और-परवा-
रकी वृद्धि होगी.

२६-जिसके जीमणेहाथको-सफेदरंगका सांपकाटजाय-उसे
थोडेदिनमें दोलत मिले.

२७-स्वप्नमेंजिसके-हाथ-पांव-मुंह-कान-या-नाक-लंबे बढ-
जाय उसकी-दुनियामेंतारीफबढेगी.

२८-स्वप्नमेंजिसकेहाथी-घोडा-रथ-आसन-गाडी-और-वस्त्र
चौर लेजाय-उसकामानभंग होगा. इज्जतमें बढालगेगा.

२९-स्वप्नमें सिंह-हाथी-घोडे-या-नाहर-जुतेहुवेरथपर सवार
होकर मुसाफरीकरे वो थोढेरौजमें राजा बने.

३०-स्वप्नमें जिसपुरुषका लिंग-और-जिसस्त्रीकी-योनि-छेद नहोजाय-उनको थोड़ेरौजमें विषयजन्य सुख मीले.

३१-गाँवनगर-पहाड-या-मकान-अग्निसे जलरहाहै और उसके शिखरपर तुम सहीसलामत खडे हो तो थोड़ेदिनोंमें खुशी पैदा करोगे.

३२-स्वप्नमेंजिसके नख-और-केश-लंबे-बढजाय उसे कइ तरहकेफायदे होंगे.

३३-स्वप्नमेंजिसका-सुन्ना-चांदी-जवाहिरात-या-हथियार-चौर आनकर चौराकर जाय-उसकी इज्जतमें धब्बालगे.

३४-स्वप्नमें-नदी-सरोवर-कुंड-या-समुंदर-पानीसें भरेहुवे देखे उसकोंगहेराधनमीले, पांचमीकलममें लिखचूकेहै कि-पित्तप्रकृतिवाला जलकोनिवाण बहोत देखताहै. अगर पित्तप्रकृतिके बिकारसेंदेखाहोतो फल न होगा.

२५-स्वप्नमें उल्टीहोना बुरेदिनोंकी निशानी है.

३६-स्वप्नमें गाना गावे उसे रौना पडे.

३७ स्वप्नमें नाटककरे वो बूरोदिन भोगे.

३८-स्वप्नमें गहनेआभूषण-कपडा-मकान-सवारी-या-आशन-जिसकों इनाममें मीले-उसकाइरादा पूर्णहो.

३९-स्वप्नमें जिसके सफेदमलमूत्र आवे उसकी इज्जत बढे.

४०-सजेहुवेमकान-और-शिगारे हाथीघोडेदेखना अच्छेदिनोंकी निशानी है.

४१-स्वप्नमें-सर्प-या-विंछू-देखे और डरेनही उसे धन मीले.

४२-कालेकपडेपहेनीहुइ-कालेरंगकीऔरत-स्वप्नमें जिसकों

दखनदिशातरफ घसीटलेजाय उसका मरना नजीक आया जानना.

४३-जिसके माथेमें खजूरका पेंड उगे वो थोडे रौजमें मरजाय.

४४-कालेकपडे पहनकर कालेघोडेपरसवारहोके-जो-शरूश दखनदिशाको जाय उसे घुरेदिन भोगने होंगे.

४५-स्वप्नमें-शालमली-या-कैलेकेवृक्षपरचढजाय उसे दो-लतमीले.

४६-स्वप्नमें कोइशरूश-गरमगरमपानी-पीइजाय-उसको व-दहजमीरोगपैदाहोगा.

४७-स्वप्नमेंकालेरंगकी जितनीचीजदेखीजाय-बुरीहै, लेकी-न!-हाथी-घोडा-गौ-और-देवीदेवता-कालेरंगकेदेखनेभी-बुरेनही.

४८-सफेदरंगकीजितनीचीजदेखीजाय-अच्छीहै, लेकीन!-क-पास-और-नमक-देखनाअच्छा नही.

४९-स्वप्नमेंजिसकी-जवान हथियारसें काटदियीजाय यद्य-पि-जाहिरातमें बुरीवात है, लेकीन!-इसकाफल अच्छाहोगा.

५०-सूर्यचंद्रको जो शरूश हाथोंसें स्पर्श करे उसे हुकम होदा मिले.

५१-स्वप्नमें सूअर-भेंसे-गधे-या-ऊंटजुतेहुवे रथपरसवारहोके जो-दखन दिशाको जाय-वो-जलदी मरे.

५२-स्वप्नमें मशानकेलकडेपर-सूकेवृक्ष-या-धनुष पर जो शरूश-चढवैठे उसकामरना नजीक आया.

५३-स्वप्नमें जिसकीस्त्रीको चौर लेजाय उसेजाननाचाहिये किसीतरहकानुकशान होगा.

५४-स्वप्नमेंजिसका-पलंग-या-जूता चोराया जाय-उसको-

औरत जलदो मरे.

५५-स्वप्नमें जो पुरुष अपनेघरकेदरवजेकी अर्गला-दूटीहुइ देखे-उसकी स्त्री जलदी मरे.

५६-स्वप्नमें-बादाम-पीस्तेवमेरामेवा-जिसको-इनाममें मीले उसे खुशी पैदा हो, बीमारीसें आराम पावे.

५७-स्वप्नमेंजिसको-अंगुठी-मीले उसकों स्त्रीसें फायदा हो.

५८-स्वप्नमें-अंगुठी-वेचदियीजाय-उसको स्त्रीसें विगाडहोजाय.

५९-स्वप्नमें सेलडीकासांठा-या-रस-देखना अच्छा है खुशीपैदा होगी.

६०-स्वप्नमेंकोइ-आकाशमें-उडे उसकों बडाहोदा मीले.

६१-सितारे चमकतेदिखाइदे-तो-राजामहेरबान हो, इज्जतबढे.

६२-स्वप्नमें रोवे तो खुशीपैदा हो. हसे तो रौना पडे.

६३-अगरकोइपुरुष-स्वप्नमें-स्त्रीका-आलिंगनकियादेखे-उसको स्त्रीसे फायदा हो, स्त्री-अगर किसीपुरुषका-आलिंगनकिया देखे-तो-उसकों पुरुषसें-फायदा हो.

६४-स्वप्नमें-मोर-देखेतो राजासें मुलाकातहो.

६५-स्वप्नमें-जिसकों-मिश्रीकाढेर दिखलाइ देतो उसे खुश खबरीके-समाचार-मीलेंगे.

६६-स्वप्नेमें कुत्तेका भोंकना देखे तो रंज पैदा हो.

६७-स्वप्नमें घोडेसवार होकरचले उसका इरादा पूर्णहो.

६८-स्वप्नमें गेंदसें खेलना देखे उसे थोडेदिनमें दोलतमीले.

६९-अगरकोइपुरुष-स्वप्नमें-किसीस्त्रीका-मुखचुंबनकिया देखे उसकों हरतरहसें फायदाहो.

७०-स्वप्नमें-मोतियोंके भरे थाल-दूसरोंको वांटदेवे वो दूसरोंको विद्या पढायगा-या-उपदेशदेकर धर्मकीतेजी वायगढा.

७१-स्वप्नमें नाचरंग देखे तो खुशीपैदाहो.

७२-स्वप्नमें अपनहाथोंसे-समुंदरको तीरगयादेखेतो उसी भवमें उसकोमोक्षहोजाय-लेकीन !-इसकालमें मोक्षहोना रहानहीं. इसलियेदेवलोक जाना कहो.

७३-स्वप्नमें अपनेआपको मरगयादेखे तो बुरा है तकलीफ होगी.

७४-स्वप्नमें-अपने आपकोगंदगीसें भरगयादेखे उसे फायदाहो.

७५-स्वप्नमें-छत्र मीलें तो राज्यतरफसें फायदाहो.

७६-बागवगीचेकी हरियालीदेखना अच्छा-खुशीपैदा होगी.

७७-स्वप्नमेंजिसके जूत्तेगमजायउसेतकलीफकेदिन भोगनेपडेगें.

७८-स्वप्नमें-जिसके-दांत गिरपडे उसे रंज पैदाहो.

७९-स्वप्नमेंजिसके-केशखिर जाय उसे तकलीफहो.

८०-स्वप्नमेंजिशशखशकी हथेलीपर केश उगे उसे कर्ज लेना पडे.

८१-स्वप्नमें-महेल-कोटकीला-या-उचानकीजगह-चढना दे खे उसकीइज्जत बढे, लेकीन !-छठीकलममें लिखचूकेहैकि-बादी-कीप्रकृतिवाला-ऐसेस्वप्नहमेशादेखताहै उसका उसे फल न होगा.

८२-स्वप्नमें-रौंछजानवरका देखना नुकशानकारी है.

८३-स्वप्नमें-अपनेको पकडनेकोलिये आदमी चलेआते दि-खलाइदेतो-राजकाजरीमाना भोगना पडे.

८४-स्वप्नमें-गधेपरसवार देखे उसको रंजपैदाहो.

८५-स्वप्नमें-अपनेपरकिसीने छाछ छीटकदियी देखे उसकाँ

बुरेदिन भोगने होंगे.

८६-सफेदकपडेवालीस्त्री-स्वप्नमेंदिखलाइदे-तो-अच्छी है, कालेकपडेवाली बुरी. लेकिन !-हितकारिणीस्त्री-चाहे-जिसरंगके कपडेवालीहो-बुरी नहीं.

८७-स्वप्नमें-उंट-या-बकरे पर-सवारहुवादेखे-उसेनुकशानहो.

८८-बीमारशखश-चंद्रसूर्यकह-स्वप्नदेखेजल्दी आरामपावे.

८९-स्वप्नमें उत्सव देखेतौ खुशी पैदाहो.

९०-स्वप्नमें-दूध-दहीं-या-घी-दिखलाइदे अच्छा है इज्जत बढ़ेगी. दूधकेशाथघीमीलाकर-पीनाभी-अच्छेदिनोंकी निशानीहै.

९१-स्वप्नमें-सुंदरलडका-दिखाइदे-तो-अच्छाहै फायदाहोगा.

९२-स्वप्नमें-उल्लुका देखना अच्छा नहीं.

९३-अपनेपर वीजली गिरीदेखे उसे केंद हो.

९४-स्वप्नमें-अंधीआइ-दिखलाइदे-उसकों-टंटेझगडेमें फ-सनापडे.

९५-स्वप्नमें-जिसके दांत सोनेकेहोजाय उसकों एश आराम मीले.

९६-स्वप्नमें-गेहू-यव-और-सफेद सरसोंका देखनाफायदेमंदहै.

९७-स्वप्नमें-जिसकेपेटपर वृक्ष उगे उसे रोगपैदाहो.

९८-स्वप्नमें-जिसकों-नागरवेलकेपान-कपूर-चंदन-तगर या-सफेदफूल-दिखाइदे-या-एसामालूमपडेकि-ये-चीजे भरेघर पैदाहुइ-तो-उसे-जाननाचाहिये फायदा होगा.

९९-स्वप्नमें-हाडके-और-राख-देखना बुरेदिनोंकी नि-शानीहै.

१००-स्वप्नमेंजलसेंभरेहुवेसरोवरमें बैठकर जोशरुश खीर-काभोजनजीमें वो थोड़ेरौजमें राजा बने.

१०१-स्वप्नमें-जो शरुश-अपनेआंतोंसें-गांव-या-नगरकों-लपेटडाले वोभी थोड़े रौजमें राजा बने.

१०२-स्वप्नमें अपनेकों कोइ केदमें डाले-या-रसोंसेंबंधन बांधे-तो-अच्छाहै, फायदाहोगा.

१०३-स्वप्नमें सफेदकपडेवाली-स्त्री-जिसपुरुषको-आलिंगन करे-या-लेंपलगावे उसे दोलत मिले.

१०४-स्वप्नमें कोइशरुश-ऐसादेखेकि-मैने-तेल-या घीसें मालीस करवाइ-उसे बुरेदिन भोगने होंगे.

१०५-स्वप्नमें-कनेर-या-केशुकेशपर चढना टंटे फिसादकी जड है.

१०६-स्वप्नमें-वीणा-चवर-और-आरीसा देखेतो अच्छाहै, हुकमहोदा मिले.

१०७-स्वप्नमें-भींही-भेंस-और-गौके आंचलसें दूध पीयेतो हकुमत मिले.

१०८-स्वप्नमें-जो-शरुश-पहाडोंकों उखेडडाले-वो-थोड़े दिनोंमें राजा बने.

१०९-स्वप्नमें-उंदरा-विलाव-गोह-और-नोलिया देखना अच्छा नही. तकलीफ होगी.

११०-स्वप्नमें-सुन्नाचांदीकेथालमें-खीरकाभोजनजीमें उसे खुशी पैदाहो.

१११-स्वप्नमें-जोशरुशअपनेशीरसें लोहीकीधारा गिरतीदेखे

बो-थोडेरौजमें राजा बने.

११२-स्वप्नमें-दिया देखेतो इरादा पूर्णहो.

११३-स्वप्नमें-आमकेवृक्षको-फल-लगेदेखेउसको हरतरहसे फायदाहो.

११४-स्वप्नमें-मखीयां-या-डांसमच्छर-जिसको काटे-या-चौफेरघेरले-बो-थोडेरौजमें साधु बनेगा.

११५-स्वप्नमें-पकाहुवाफल-छत्र-कन्या-और-धजा-देखेतो इरादापूर्ण हो.

११६-स्वप्नमें-जहाजपरचढे-उसे दोलतमीले.

११७-(१९) नंबरकी कलममें लिखचुकेहैकि-बिनाधुंएकी अग्निदेखना अच्छा है, लेकीन! यहां इतना तफावत है कि-धुंए सहित अग्नि-या-एकीला धुंआ देखना अच्छा नहीं.

११८-स्वप्नमें-हजारपांखडीके कमलपरबैठकर-जोशख्श-खी रकाभोजन जीमे वो थोडेदिनोंमें राजा बने.

११९-स्वप्नमें-लंबेलंबेशींगवालेजानवर जिसको भगायेफिरे-या-सूअर औरवानर-जिसको डरावे उसे राज्यकीतरफसे भयहोगा.

१२०-स्वप्नमें-कालेपीलेरंगका आदमी डरावनीसुरतबनाके-जिसको डरावे उसका मरना नेडे आया.

१२१-स्वप्नमें-आंखोपर अंजन लगावे उसे रोग पैदाहो.

१२२-स्वप्नमें-जो शख्श-मस्तकतक कीचडमें डूवजाय वो थोडे रौजमें मरजाय.

१२३-स्वप्नमें-रवंन्नकदारगांवनगर दिखलाइदे उसे खुशी पैदा हो.

१२४-स्वप्नमें-वानर-और-गींदड़-दिखाइदे बुराहै. फि-साद बढेगा.

१२५-स्वप्नमें-दावानल-लडाइ-वरसात-या-गर्जना-देखेतो राज्यकीतरफसें तकलीफ पैदा हो. जिसको-पित्तप्रकृतिकेविकारसें वरसात-गर्जना-दिखाइदियी हो उसे इसका फल न होगा.

१२६-स्वप्नमें-तारेंखीरना-उल्कापात-या-जमीनकंपनी-दि-खाइ दे-उसे क्लेश पैदा होगा.

१२७-स्वप्नमें-केलेके वृक्षपरचढना दिखाइदे तो हुकम-होदामीले.

१२८-स्वप्नमें-जिनप्रतिमाकोंहसती-रोती-या-खंडित होगइ दिखाइदे उसकों तकलीफ पैदाहो.

१२९-स्वप्नमें-हराघास-चावल-और-तांबूल-दिखाइदे उसे दोलत मीले.

१३०-स्वप्नमें-खीरनीवृक्षपरचढजाय उसे हरतरहसें फायदाहो.

१३१-स्वप्नमें वीणालेकर जहाजपर चढे उसे सुंदर स्त्रीसें मिलाप हो.

१३२-स्वप्नमें-वीर्यपात-होना अच्छानही. नुकशान होगा.

मलमूत्रकी बाधापीडासेंभी-कंड स्वप्नजाल दिखाइदेते है. लेकीन ! वह सच्चा नही समझना. सच्चा वही है जो (७) मी कलममें लिखचूके है. अगर कोइतर्क करे कि-इनमेंसे पांचदशस्वप्न हमनेभी कइदफे देखे लेकीन ! फल नहीं मिला, इसका समाधान यहीहै कि-जिसकाफल मिले वह सच्चा-और जिसका न मिले-प्रकृतिकेविकारवगेरासें आया जानना.

१३६-स्वप्नमें-अपने दिलपसंदगीकी चीज दिखाइदेना अच्छा है, फायदा होगा. नापसंद वस्तु दिखाइदेना अच्छानही.

१३७-स्वप्नमें-अपनीआंखकों जोजोचीज अछीलगतीहो-उन का दिखाइदेना किसीमुरतसें बुरानही, बुरीलगतीहो-उसका दिखाइदेना अलघते!-बुरा है.

१३८-स्वप्नमें-अपनेकानकों-नाककों-जवानकों-और-शरीरकों-सुहातीचीजका-इस्तिमाल करना दिखाइदे-तो-अच्छाहै, फायदा होगा.

(३)-[स्वरविज्ञान]-



१-षडज-रिषभ-गांधार-मध्यम-पंचम-धैवत-और-निषाद-इनसातस्वरोंसें स्वरविज्ञाननिमित्त देखाजाताहै, जितनेमनुष्य-और-पशुपक्षीहै इनसातस्वरसें अलग नही बोलते. किसीकीअवाज षडजमें-किसीकी रिषभमें-और-किसीकी गंधारवगेरास्वरमें होतीहै.

२-मौरकी अवाज षडजस्वरमें निकसतीहै मुरघेकी-रिषभमें,-हंसकी गंधारमें,-गडरियाकी मध्यगमें,-कोकिलाकी पंचममें,-क्रौंच पंखीकी धैवतमें,-और-हाथीकी अवाज निषादस्वरमें निकसतीहै.

३-जिसमनुष्यकी स्वाभाविक अवाज षडजस्वरमें निकसती हो-उसकेपास दोलतझलाझल रहे, स्त्री उसे बहोत चाहे, और खानपानसें खुश रहे, अगर सवालकियाजायकि-मौरकीअवाजभी खडजस्वरमें कहीगयीहै, क्या!-उसेभी-यहफल होनाचाहिये?-(इस

का-जवाप,)-यहवात ठीकनहीं. सबवकि-मनुष्य और जानवरके नसबिका बडाफर्क होताहै, जोवात मनुष्यकेलिये कही गयी जानवरोंकेलिये नहीं समझना चाहिये.

४-जिस मनुष्यकी स्वाभाविक अवाज रिषभस्वरमें निकसती हो-उसे हुकमहोदा मीले, उसका खजाना तर रहे, इतरफुलेल-गेहनेगांठे-और-उमदाकपडे उसकों पहनेके लिये मीले. स्त्री उसके तावेमें रहे. और फुलोंकी शय्यामें शयन करनेवाला हो.

५-जिसमनुष्यकी स्वाभाविक अवाज गंधारस्वरमें निकसती हो-वो-गायनकलामें हुशियार-या-कवीश्वर हो-धर्मशास्त्रकामाहित गार-और-दूसरोकों तालीमदेनेवाला होगा.

६-जिसको स्वाभाविक अवाज मध्यमस्वरमें निकसतीहो-वो बडा खरचीला खुशमिजाज-और-एशआरामभोगनेवाला होगा-आप-हिंम्मतवान् और दूसरोकों हिंम्मत देता रहेगा.

७-जिसकीस्वाभाविकअवाज पंचम स्वरमें निसकती हो-उसे राजाधिराजपदवी मीले, सारीदुनिया बदलजाय डरेनही, बेपरवा ह एसाकि-किसीसे दवे नही, फोजका मालिकहोकर इनाममें ज हागिरी पावे.

८-जिसकी स्वाभाविकअवाज धैवतस्वरमें निकसतीहो-वो-दूसरोकों लडादे और आप अलगनिकलजाय-दगलबाज पूरा-और-जिसघातकों पकड ले उसकों छोडे नही, कुस्तीलडनेमें खे लारी-उसका जोर चलेतो दूसरेकों जानसैं मारडाले, मदिराके न-शेमें मतवाला रहे. धर्मकीवात उसे सुहावे नही. और दाव लगेतो चौरीकरतेभी चूके नही.

९-जिसकी स्वाभाविकअवाज निषादस्वरमें निकसतीहो-वो-हमेशां टंटेझगडोंहीसैं राजी रहे, हिंसाके काममें कसाईसेभी बढकर पापीहो नोकरी करके पेटभरे, और-मजूरीकरके बडी तकलीफ उठावे. सातोंस्वरोका बयान ठाणांग-और-अनुयोगद्वारसूत्रमें-बडे विस्तारसैं लिखाहै, यहां हमने उसीसे उताराकरके लिया है, ज्यादा विस्तार देखनाहो उक्त आगमोंको देखलेना.

१०-षड्जस्वरकास्थान जबानका अग्रभाव-रिषवस्वरका छाती-गंधारका कंठाग्र-मध्यमका जबानके मध्यभाग-पंचमका नाशिका-धैवतका दांत होठ-और-निषादस्वरका स्थान भ्रुकूटिजानना.

११-परदेशजाते-या-किसीअछेकामकी नींव डालतेवरख्त-मनुष्य-या-पक्षीकी-षड्ज-रिषव-और-गंधारस्वरमय-अवाज सुनाईदे तो जानना फतेह होगी.

१२-जिसघरके उपर रातकों सातदिनतक उल्लु बोले उसघरमें रहनेवाला जलदी उजाड होजाय. घरके दरवजेपर बैठकर रातकों तीनदिनतक उल्लु बोले तो उसघरमें रहनेवालाका दिवाला निकल जाय.

१३-परदेशजातेवरख्त पालेहुवे तोतेकी अवाज बामीतर्फ-और घरआतेवरख्त-जीमनीतर्फ सुनाईदे तो अच्छाहै खुशी पैदा होगी. प्रयाणके समय घरसैं निकले और पांचपचीसकदम अगाडीबढेबादवनके तोते उडउडकर सामने आनगिरे निहायत उमदा है. इरादा पूर्ण होगा. पिछाडीसैं क्रांक्रांकरते रोतीअवाजसैं अगाडीआनकर गिरे अच्छा नहीं. मुसाफरीमें फिसाद होगी.

१४-प्रयाणकेवरख्त-या-अछेकामकी शरुआतकरतेवरख्त-हं-

सकी अवाज सुनाईदे-या-हंस खुद नजरआजाय निहायतउमदा है काम फतेह होगा.

१५-परदेशजातेवरुत जिसका घोडा हनहनाटकरे-या-जीमने पांवसें जमीनकों उकेरेतो सवारकी फतेहहोगी. आराम मिलेगा.

१६-प्रवेशकरतेवरुत-जीमनीतर्फ गधा भोंके तो अच्छाहै खु-शीपैदा होगी.

१७-परदेशजाते-या-अच्छेकामकी शरुआतकरते वरुत-पो-रकीअवाज सुनाईदे तो ईरादापूर्ण हो, नाचताहुवा मौर दिखाई-देतो-निहायत उमदा है.

(१८)-परदेशजाते-या-अच्छेकामकी नींवडालतेवरुत-चको-रकी अवाज सुनाईदे-या-खुद चकोर वहांपर नजर आजायतो वहोतअच्छा है. कामजलदी फतेहहोगा, दुसराशरुश चकोर एसा-नाम मुंहसें बोलदे और तुमारेकान अवाज सुनाईदे तोभी निहा-यत उमदाहै.

(१९)-भारद्वाजपक्षीकि-जिसकों मारवाडदेशमें रुपारेल बोलते है इसकी अवाजभी अच्छेकाममें-चकोरकीतरह अच्छी गिनीगई है.

(२०)-परदेशजातेवरुत-गींधपंखी-वामा-जीमना-या-सामने बोले तो अच्छा नही. जानेवालेकों तकलीफ उठाना होगी. पिछाडी बोले तो अच्छा है,

(२१)-चलतेवरुत-या-अच्छेकामकी नींव डालतेवरुत-रौने-की अवाजसुनाईदे तो बुराहै. घंटेघडीयाल-सारंगीतबले-या-सुरी-लेवाजोंकी अवाज सुनाईदेना अच्छाहै, ईरादापूर्णहोगा.

(२२)-पडज-रिपभ-गंधार-मध्यम-पंचम-धैवत-और-निपा-

द-येसातस्वर जो पहेले लिखचूकेहै ईनके विना पहेछाने संगीत कला एसोहै जेसा आस्मानमें चित्र बनाना-तीनग्राम-एकीसमुछेना-और-गुनंचासतान-विनातालीम पाये नही आशकते. डरतेडरेतगाना-या-बेताला. गाना-गवैयोंकेलिये शर्मींदेहोनेकी वातहै. मीठीअवाजसें तालस्वरमें गाना ईसीमें गवैयोंकी तारीफ है.

(२३)-(सा-रि-ग-म-प-ध-नि-) ये सातस्वरकेबीजहै. छराग-छत्तीसरागनी-और अडतालीस पुत्र-कुलपरिवार (९०) हुवे, भेरव-मालकोश-दीपक-हिंडोल-मलहार-और-श्रीराग-इनछहोंरागों कीपहलेजमानेमें वहताहसीरथीकि-असलीभेरवरागसें विनावैलघांणीचलजातोथी-मालकोशसें पथ्थर पानीहोजाता था-दीपकसें दियाजल उठना,-हिंडोलसें झूलना खुद चलने लगजाना-मलहारसें वरसात वरसने लगना,-और-श्रीरागके गानेसें-घरमें लक्ष्मी बढना सहजवातथी. नैयायिकोंके मतमें शब्दकों आस्मानका एक-गुण माना है लेकीन ! जैनमतमें यहवात गलत समझीगईहै, क्यों-कि-शब्द आकाशका गुण किसीसुरतसें नही बनशकता. किंतु पुद्गलका गुण बनशकताहै, ईसका खुलासा देखनाहो तो-रत्नाकरावतारिका-ग्रंथ देखो. निदान ! रागके पुद्गल उसवरत जैसे छाजातेहै जो उपरलिखे बनाव आपही आप बनपडते थे. इसमें देवकारण समझना भूलहै, अगर कोई सवालकरेकि-आजकलके गवैये क्या !-असलीराग नही गाशकते ?-अगरचे गाशकतेहै तो फिर भेरवसें घांणीका चलजाना-मालकोशसें पथ्थर पानी होजाना-वगेराबनाव क्योंनही बनपडते ?-(ईसका जवाप.)-आजकल जमाना एसा आगयाकि-अच्छीबस्तु अपने-अछेपनकों-छोडती ज़ारहीहै,

मंत्राकी ताकात कमजोर होनेलग गई-सच्चकी जगह झूठने आनकर दखल किया-और-धर्मका नाशहोकर अधर्म छागया-गानेवाले ऐसे नैक और पाक-न रहे-बस !-यही सबवहैकि-अच्छीबस्तुमें अब-अच्छापन नहीं रहा जैसा पहले था.

(२४)-भैरव-कालिंगडा-भैरवी-सिंधभरवी-ललित-विभास
बेलावल-गुजरी-पटमंजरी--देवगिरि-रामगिरि-टोडी-आसउरी-
हिंडोल-सारंग-गोडसारंग-नट-सिंधु-मारवी-मुल्तानी-धनासिरि-
भीमपलासी-गोडी-पूर्वी-श्रीराग-दीपक-कल्याण-सुवासोगराई--
कानडा-वागेशरी-जेजेवती-केदारा-भोपाली-हमीर-अडाणा-वि-
हाग-खमाच-सोरठ-मालकोश-परज--सोहनी-जंगला-श्रीझोटी-
जीला-जोगिया-वसंत-देवगंधार-मल्हार-गोडमल्हार-सामेरी-ति-
रुंग-छाया-बहार-ईमन-बिलासखानीटोडी-जोनपुरीटोडी-गुनकली-
माधवी-बेराडी-बंगाली-नटनारायण-छायानट-केदारनट-कोकभ-
जेतसीरी-मालसीरी-देशकार-धुलियासारंग-शुद्धसारंग-बरवा-ब-
इंस-लछासाग-देवसाग-भवसाग-पुरिया-दरबारीकानडा-पंचम-
राग-पंचमबहार-कामोद-तिलकामोद-मारुत्रिहाग-काफी-जलके-
दारी-गोंडमल्हार-सुरकीमल्हार-मियाकीमल्हार-धुलियामल्हार-
और-मालगुंज-वगेरा (३२०००) बत्तीसहजार देवीयरागणी दु-
नियामें अब मौजूद है, जिनकों ईसकाशौख है हजारोलाखोंरूपये
स्वर्चकर सीखते और सुनते है, कंजुसोंकी ताकातनहीकि-रागरा-
गणीका आनंद उठाशके. जो देवलोककी गति भोगकर आयेहै
उनकों गानेबजाने और सुननेका शौखहोताहै. उच्चम गाना-मध्य-
मबजाना-नेष्ट नाचना-विकट-बताजा-यह मसाल उस्तादोंने ठीक-

ही है कि-गाना-सबसे उत्तम है, तालस्वरसे ईश्वरकी स्तूति कियी-जायतो यकीन है कि-पापोंका नाश होकर पुण्यानुबंधी पुण्यका लाभ होशके, -बड़े बड़े गवैये दुनियामें मौजूद है जिनोंने सारी जींदगी इसी-में पूरी कर दिइ-लेकीन ! अब तक उसके खोजी बनेहुवे कहर रहे है हम कुछ नहीं जानते. बाजोमें सबसे बढकर देखना चाहोतो-बीन-सें सब नीचे है, जितनी गुंजास इसमें रही है और बाजोमें नहीं. लेकीन !-गलेसें तो वोभी नीची है, सबब कि-गवैये लोग जितना काम गलेमें करते है साजंदे-बाजोमें नहीं कर सकते. हां !-अगरचे-दों-नो-एकसे मीलजाय तो अलबते !-अच्छा आनंद आ सकता है. गानेके संगमें जो कुछ काम सरंगी देशकती है दूसरे बाजे नहीं देश-कते. बीन-सीतार-दिलरुबा-ताउस-मुरसींगार-रबाब-सरोद-ज-लतरंग-नशतरंग-या-हारमोनियम-कोइ साज हो-लेकीन ! जो कु-च्छकाम गवैयेके साथ सरंगी देगी दूसरे नहीं देशकेगें. इसीलिये सरंगीका दूसरा नाम दूतीभी कहीगइ है, 'सबब कि-गलेकी नकल करना इसीको आता है, अगर सवाल किया जाय कि-दूसरे बाजे फिर क्या कामके रहे ?-तो-इसके जवापमें कह सकते हो कि-दूसरे बाजे-गत तोडा-और-आलाप-देनेमें बहोत ठीक लेकिन ! गानेके संग तो वही दूती काम देगी-अपशोष है तो. इतना ही है कि-दूसरे बाजोंके सामने इसकी आवरु बहोत कम है.

(२५)-गानेमें-और-बाजोमें-वो-ताहसीर रही है कि-जिसके वे मसें लडाइमें नामर्द भी-मर्द-होजाते है. करुणा-वीर-या-शींगार रसम य गाना बजाना होता हो वहां अलबते ! कह सकते हो कि-आदमी का-दिल-औरही-होजाता है, बाजे बाजे ऐसे बजानेवाले है कि-गुं-

हसे बोलेनही और बाजोंमें वजाकर दूसरेको समझा सकतेहैकि-तु-म-उसजगह जाकर वो चीज ले आओ.

(२६)-गानोंमें आदमीके कंठसे औरतकेकंठकी नाजुकता ज्यादा वर्ननकिइगइ है. ऐलममें अलवते ! जीतनी हृदको आदमी पहोचशकताहै औरत हृहरगिज नही पहुंचशकती-लेकीन !-कंठमें उसके ज्यादा मुलामीयत रहतीहै. जवान औरत-मीठा गाना गाती है. श्यावलेरंगकी तेज गातीहै. गौरीऔरत स्पष्ट-कांणी ठहरठहरके और-अंधी-जलदीजलदी गाती है.

(२७)-वंशरी-अलगोजा-तूती-वेहला-और-नफीरीभी-गाने के साथ अच्छासंग करती है, तीर्थकरदेव जब मालकोश-और-भी मपलाश-रागरागणीके जरीये धर्मोपदेश देतेथे-देवते उसवरुत दि-व्यवाजोंसे संगतकरतेथे. सोचोकि-तीर्थकर जैसे सुज्ञगानेवाले और इंद्रादिदेव जैसे स्वरोकी संगतकरनेवाले जहां मिलजाय वहां फिर किस बातकी कमी रहशकतीहै ?-जिनशरुषोंके बडे भाग्य हो-उनहीको जिनेद्रोंकी वाणीमुननेका मौका मीलताहै, आर श्रद्धामें लाशकते है.

(४)-[चूकंप.]-

(१)-भूकंपके वारेमें कइकहतेहै जमीनकेनीचे खारीपदार्थोंमें समुद्रकाजल घुसजानेसे-वे-उभरजातेहै और उसकी भापसे जमी न कांप उठती है. कइ कहते है शेषनाग मथा हिलादे तो जमीन

कांपउठे. स्कोटलैंडमें सन (१७०८) में भारी भूकंपहुवाथा, भूकंप क्यौं हुवा!—इसका भेद जाननेके लिये—एबरडीननगरमें—कृस्टां नपंडितोकी सभा जुडीथी, सभामें कइतरहके मत जाहिरहुवे—को इकुच्छ और कोइ कुछ कहनेलगे—लेकीन? सबबाते ऐसीथी जो माननेमें न आशके, सचहैकि—सर्वज्ञोंके कथन बिदून सीखे पढे सच्चा मार्ग कैसे पाशकताहै?—सर्वज्ञप्रणीत धर्मशास्त्रके मुताबिक—भूकंप—एकभारी उत्पात है. सब चीजका आधार जमीन—जब जमीनही कांप उठे इससे ज्यादा उत्पात और क्या होगा?—भूकंप का होना धर्मशास्त्रमें इसकारणसे लिखाहैकि—जबकभी—पाताल वासीदेवते आपसमें लडाइलडे—या—गुस्सा खाकर—जमीनपर लात मारे—तो—जमीनकांपउठे. अलबते—हजार दोहजार कोशतक कांप उठना कोइ आश्चर्यकी बात नहीं. क्यौंकि—बडेदरजेकेदेवकी ताकात कम नहीं होती. यहबात जरूरहै कि—जब दुनियादारोंका नसीबा कमजोर आवे तभी ऐसे भारी उत्पात होताहै.

(३)—अगर निमकीनपदार्थोंकी भापसेहि जमीन कांप उठती होतो—बतलाइये?—उछलकर उंची क्यौं नहीं आजाती?—कइदफे देखाजाताहै गांव के—गांव—फटकर—बल्किन् पातालमें गायब होजाते है, सोचो!—अगर उक्तबात सच्च होतीतो यह बनाव कैसे बनता? दूसरामत—शेषनागका कहा वहभी जूठहै. सबबकि—अगर जमीन शेषनागके मथेपर ठहरी हो तो बतलाना चाहिये!—शेषनाग—किसके मथेपर ठहरा है?—यह सबबाते लडकपनकी है, सच्च बात वही है जो धर्मशास्त्रका प्रमाण देकर पहले लिखचूके.

(३)—जमीनकंपनेका—फल,—राजाओंमें लडाइदंगे—बडे—बु-

खार-हैजा-महामारी वगेरा रोग फैले-बरसात थोडा बरसे और हरतरह दुनिया दःख पावे,-अन्न न मिलनेसे हजारोंआदमी भूखे मरजाय-लेकीन!-सारी दुनियाके लिये यह बात नही समजना. जिस चौखरेमें जमीन कांपी हो उसी चौखरेके लोगोंको फल होगा, ऐसा जानना.

(४)-जमीनकंपनेसे-लोग-त्राहित्राहि करदेते है-पांच सात चींमटी बजावे उतनी देरका भूमिकंप भी-गजब करडालता है अगर ज्यादा वखततक भूकंप होता रहे खबर नही क्या अनर्थ होजाय?-पहाड-नदी-सरोवर-वृक्ष-और-घर-टूटकर चूरचूर हो जातेहै. कभी एसा भी होजाताहैकि-गांवके गांव जमीनमें दबजाते है. नदीयोंका जल उछलकर कहींका कहीं जागिरताहै, घरआंगण रास्ते-और-बागबगीचे फटकर बडेबडे-जंगल-होजाते है, बेशुमार रौनापीटना-हाहाकार और जानका जोखम-इसी उत्पातसे उठा ना पडताहै, कइ विज्ञानबाजोंने इसका भेद जानना चाहा, लेकी न ! चालाक भूकंपने अपनाभेद किसिसे जाहिर नहि किया और क्यों करे ? संसारमें अपनाभेद किसीकों कौन बतलाता है !-यह तो सर्वज्ञोंहोकी ताकातहै कि-बेपरवाहरूपसे सबचीजोंके गुणदोष और उत्पात विनाश अपने ज्ञानसे स्वतःजानशकते है.

(५)-[उत्पात.]-

(१)-जबदुनियादारोंकानसीबा कमजोर आताहै अनहोते

बनाव बनने शुरु होतेहै, इनहीअनहोतेबनावोंका दूसरानाम उत्पा तकहदो कोइहर्जकीवातनही, जो जो उत्पात जमीनके तालुकहै उनको यहां पांचवे निमित्तमें लिखकर-अंतरीक्षनिमित्तमें आकाश के उत्पात दिखलाये जायगे.

(२)-जो जो उत्पात आमलोगोंकेलिये कहदेना मुनासिबहै वेंही इसपुस्तकमें लिखेजायगें, बाजे ऐसे योगभी है-जो-बडेही योग्य शख्शोंको बतलानेके है-वें-यहां नही लिखेजायगें, उत्पात के कइतरीकेहै जो संपूर्ण लेखकों पढलोगें मालूमहोजायगें. हकीकतमें जब खोटे दिन आतेहै निमित्तभी उल्टे मीलना शुरुहोतैहै.

(३)-जिसदेशके-जंगलमें-गांवमें-या-शहेरमें-उत्पातकाहोना देखो वहां यकीन करलोकि-खोटेदिनोंकी निशानीहै.

(४)-जिसशहेरकेदरवजेपर-या-देवमंदिरके शिखरपर विजली गिरे-वहां-छमहिनेपें दुश्मनका जोर बढे.

(५)-जिसदेशमें नदीयोंकाजल जिसतरफ बहताहो-बदल कर-उल्टा बहनेलगजाय वहां एकवरसके भीतर राज्यकी बढली होजाय.

(६)-जहां देवमूर्ति-खुद्दहसनेलगजाय-या-रोतीहुइ दिखाइ दे-सिंहासनसें बिदून उतारे आपही नीचे उत्तरजाय-वहां-राजा ओमें तलवार चले-हजारों आदमी लडमरे-देशलूटजाय-या-आग लगे, और खजाना जलकर खाख होजाय.

(७)-जहां किसी दिवारपरबनीहुइ चित्रामकी पुतली रौने लगे-इसतीहुइ दिखाइ दे-या-भ्रकुटिचढाकर गुस्ता करे-वहां-उजाड होजाय. और आदमीयोंको घर छोडकर भगना पडे.

(८)—जहां रात्रीकों कागडे बोले वहां दुकाल पडे-या-राज्यमें हीलचल पैदा हो. सवेर होने लगे जवतो कागडे हमेशां बोलतेही है. यहां उसका विचार नहीं किंतु आधीरात बगेरा की बात है.

(९.)—जिस देशके राजेका-डंका निशान-लडाइके लियेचढते वखत-विदूनचोटलगे टूट जाय-उसकों बुरेदिन भोगने पडेगें.

(१०)—जहां देवमंदिरके-या-राजाके चवरमेंसें-विदून अग्नि आगके इंगारे झरनेलगे वहां टंटेझगडेहोकर बहुतोंके मस्तक फुटेंगें.

(११)—जहां दिनकों शियाल और रातकों तीतर बोले वहां दुकाल पडेगा. तीतर दोरंगके होते है. यहां काले रंगका लेना.

(१२)—वृक्षोंमेंसें लोहीकीधारा छुटना लडाइ होनेकी निशानी है.

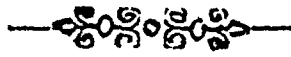
(१३)—जहां राजाके छत्रमें विदूनअग्नि-आग-लंगजाय-वहां राजविरोध जरूर हो.

(१४)—जिसराजेके कोठारमें-या-आयुधशालामें-बिना अग्नि धूआं-निकलने लगे-वहां गदरहोगा.-और-हजारों आदमी-तलवारसें कट मरेगें.

(१५)—जहां वृक्षोंमेंसें-दध-दही-घी-या-सहेतकी-धारा छूटे वहां रोग चाला फैले.

(१६)—जिस उत्पातका फल-छ-या-बारांमहिनेमें-नहो-वह उत्पात झूठा जानना.

(६)-[अंतरिक्षनिमित्त.]—



(१)-जो जो उत्पात-आकाशके तात्तुक है-उनका वयान सुनिये !—

(२)-चंद्र-सूर्यकी-चौफेर मंडल दिखाइ देना किसी सुरत अच्छा नहीं.

(३)-धूमकेतु-यानी-पूँछडीयातारा-दिखलाइ देना बहोत बुरा है, जिसदेशमें धूमकेतु दिखाइ दे उसी देशवालोंको तकलीफ होगी दूसरोंको नहीं.

(४)-लोही-मांस-हाड-तेल-घी-दूध-चरबी-सांप-वींलू-और-कीड़े मकोडोंकी. वृष्टिहोना-भारी उत्पातका-कारण है, दु-कालपडे-देशलूटजाय-या-रोग फैले, लोहीका वरसात फक्त लाल पानीहीसें नहींसमझना-सफेदवस्त्रपर गिराहुवा जल-अगर सुकेवा दभी लालरंगका बनारहे उसको लोहीका वरसात कहना ठीकहै.

(५)-ग्रहोंमेंसें धुए छुटना-सूर्यमंडलसें इंगारे झरना-दुका-लकी निशानी है. चंद्रसूर्यका अकाले ग्रहण होना-किसी सुरतसें अच्छा नहीं.

(६)-संध्याके वख्त-सूर्यअस्तहोनेकेपीछे-और-चंद्रोदयसें पहेले-अगर आकाश एकदम-लाल-होजाय-और कुच्छ समय बना रहेतो पृथ्वीपर प्रचंड युद्धका कारण जानना और उसमेंसें-एकमूर्-त्ति-आदमीके आकार हाथोंको पसारकर निकले-बाद-छिंपजाय और-फिर मथेपर हाथदेकर रोतीहुइ-निकले-वहां छमाहिनेमें तल

वार चले. उजाड होजाय-या-हजारे आदमी वहां बैठकर रोवे.

(७)-जहां दिनमें सूर्यकी तेजीहोतेभी-तारें-दिखाइ दे-और रातकों विल्कुल न दिखे-वहांके मनुष्योंकों-बुरोदिन भोगने होंगे.

(८)-आकाशमें-नकली वाजे-वज वहां गदर होगा.

(९)-उल्कापात उसकों कहते है जो जाजुल्यमान अंगारे-की तरह आकाशमें पैदाहोकर बढती हुइ-लंबी शिखा बनजाय और-पीछें-लॉप होजाय, अगर धजाके आकार होकर लॉप होतो अच्छाहै. हाथी-या घोडेकेआकारभी अच्छा-हंसकेआकार-चंद्रमाके आकार-पाहाड-शंख-वज्र-कमल-श्रीवत्स-और-मच्छके आकार होकर लॉप होनाभी अच्छाहै. इसके शिवाय दूसरी तरहकी-उल्का-बुरीहोतीहै, उल्कापात अक्सर दिनके अंतमें और रातके पहिलेही होताहै.

(१०)-उल्कापात-देवप्रातमापर-या-नगरके दरबजेपर गिरे तो बुरा है.

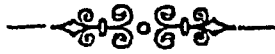
(११)-उल्कापात जहांसे पैदाहुवाहों-वहां-पीछा लोट जाय अच्छाहै, लोटाहुवा-फिर पीछा आवे तो-बुरा, उंचानीचा-या सांपकी तरह बलखाता हुवा दिखाइदे बहोत बुराहै. जिसदिशामें जाकर उल्कापात गिरे उसदिशाके मनुष्योंकी हरतरह हारहोतीहै.

(१२)-तारे आकाशमें बडेजोरसें हीलते दिखाइ दे-या-उन-मेसें धुआं लूटता दिखपडे-वहांके-मनुष्योंकों खोटेदिन भोगने पडेगें.

(१३)-गांधर्वनगर-उसकों कहते है जो आकाशमें कइतरहके पुदगल-तदाकार-परिणमन-होकर-रंगवेरंगमें नगरके आकार-दिखाइ दे-कालेरंगका दिखाइ दे-तो-बुराहै-लालरंगका दिखाइ

दे तो जानवरोंको तकलीफ होगी. चाहे किसीरंगका हो पूरव पश्चिम-और-दखनदिशाका गांधर्वनगर अच्छा नहीं होता. उत्तर दिशाका-गांधर्वनगरकि-जिसमें गेहरा-साफ-और-चमकीला रंग हो-किला-तोरण-वृक्ष-और-पशुपक्षीके-आकार-जिसमें उमदात-रीकेसे दिखाइदेतेहो-वह-अलवते !-अच्छाहै. लोगोंको सुखके दिन उपस्थित होंगे. ये संपूर्ण अंतरीक्षनिमित्त-जो-उपर लिख आये-जिस चौखरेमें दिखलाइ दे उसी चौखरेके-मनुष्यो-उक्त फल-होगा-सारी दुनियाको नही.

(७)-[व्यंजननिमित्त.]-



१-व्यंजनशब्दकरके तील-मसा-और-लहसन-तीनोंही जाननाचाहिये.

२-शरीरकीचमडीपर तीलजैसे आकारका श्यामरंगचिन्ह जो होताहै उसको तील बोलते है.

३-चमडीसे कुछ ऊंची बढ़कर मांसकी छोटीसीगोलगांठ-राइ-या-बाजरीके-मुताबिक हो-उसको मसा बोलतेहै, इससे बडा मसा खूबसुरतनहीकहलाता.

४-लहसन-उसको कहतेहै जो कुंकु-या-कसुंबेके रंगमाफिक लालवर्णका चिन्ह-चमडीपर होताहै. तील-मसा-या-लहसन-को इहो-अगर खूबसुरत और अखंडित होगा अच्छाफल देगा. बद-

सुरत-खंडित-या-छिन्नभिन्न-होगा-अच्छाफल न देगा-महानिशी-
थ-और-प्रवचनसारोद्धारमें-व्यंजनशब्दका-अर्थ तील-और-मसा
लिखा है. तील-मसेका-रंग श्याम-और-लहसनका रंग-वहोतक-
रके लाल-और कुच्छ श्याम होताहै.

५-मस्तकपर-या-कपालमें-तील-मसा-या-लसनहो-वो-हर-
जगह मान पायगा.

६-भ्रूपर-तीलहो-देशांतरमें फायदा उठायगा.

७-आंखपर-तीलहो-नायकपदवी पावे.

८-मुंहपर-तील होतो दोलत झलाझल मिले.

९-गालपर-तील हो खूबसुरत औरत मिले.

१०-नाकपर-तील हो-इतर वहोत सुंधे.

११-होठपर-तील हो-उसकीबात सवाइ रहे. नीचलेहोठपर
हो तो कंजूस रहे.

१२-कानपर-तील हो उसे गेहने आभूषण वहोत मिले.

१३-गर्दनपर-तीलहो उसे ऐशआराम ज्यादा मिले.

१४-छातीपर तील हो-उसको अच्छी औरतसें फायदा हो-
ता रहे.

१५-हाथपर-तीलहो-अपने हाथकी कमाइ भोगे, दुश्मनसें
फतेह पावे.

१६-हथेली-या-पंजेपर-तीलहो-वडाखरचीला हो.

१७-पुरुष चिन्हपर-तील-होतो अच्छी स्त्रीसें मुलाकात व-
नी रहे.

१८-कोषग्रंथीपर-तीलहोतो-प्रतापी हो.

१९-जांघपर-तील हो उसे सवारीचठना बहोत मिले.

२०-पांशपर-तीलहो-वो-परदेशमें ज्यादे फिरे.

२१-अगर कोइ सुवालकरेकि-हमारे-उक्तजगह-तीलहोतेहु-वेभी-फलदायक क्यों नही होता?-(जवाब.) अखंड और खूबसुरत-नहोगा इसलिये फायदा नही पातेहो, पुरुषकों जीमनेअंगपर तील-मसा-या-लहसन-अखंड और खूबसुरत होगेंतोजरुर अच्छा फल करेगें, हां !-इतनाजरुरहेकि-नामर्द और कंजूस आदमीके कोइचिन्ह फलदायक नही होते, सबबकि-उसके अच्छे लक्षण भी कमजोर होजाते है, हिंममत और उदारता पुन्यवानो के लक्षण है.

(अथ,)-[स्त्रीकों-वामेअंगपर-तील-मसा-या-लहसन अखंड-और-खूबसुरतहो-उसका-फल,-]

१-माथेपर-तीलहोतो राजाकी रानी हो.

२-कपालपर-तीलहोतो-बडेघरानेकी स्त्री हो.

३-आंखपर-तीलहोतो-निजपतिकों अतिवल्लभ हो.

४-गालपर-तीलहोतो-ऐशआराम बहोतकरे.

५-नाकपर-तीलहो-फुलगजरे सुंघती रहे.

६-कानपर-तीलहो-जेवरबहोत पहने.

७-गलेपर-तीलहोतो-घरमें हकुमत चलावे.

८-स्तनपर-तीलहोतो पुत्रवतीहो.

९-स्तनका-मुखलालरंगका हो-उसकेपास दोलत झलाझल बनी रहे.

१०-हाथपर-तीलहोतो घरवालोंकों प्यारी लगे.

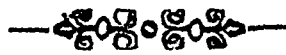
११-योनिपर-तीलहो-तो-मैथुनकिया वहोत चाहे.

१२-जांघपर तीलहो-उसकेपास दासदासी बने रहे.

१३-पांवपर-तीलहो तो परदेशमें वहोत फिरे.

१४-जीमनेअंगपर-तील-मसा-या-लहसन-होतो कमजोर फल देगा, सबवकि-स्त्रीका वामाअंगही प्रधान गिनागया है.

(८)-[लक्षणविज्ञान,]-



१-शरीरके लक्षण कइतरहसैं देखेजातेहै. जिसकेशरीरका रंग-चंद्रमा-सूर्य-बीजली-हीरा-माणक-मोती-सुन्ना-हींगलु-मूंगे-हरताल-मणसील-अग्नि-जल-चंदन-कमल-बरसात-प्रियंगु-शंखया चंपेकी तरह-रंगदार और चमकीला-हो वह प्रतापी होता है, चाहे मर्दहो-या-औरत-उमदाशरीरपाना भाग्यवानीका चिन्ह है—

अगले जमानेमें जैसा कुच्छ रुपरंग था अब वैसा नहीं रहा, इसलिये कहसकतेहैकि-पुन्यवानी अब विदा होतीजातीहै, उपर लिखे-मुताबिक-रंग रुपवाला-अलबते!-खानपानसैं-सुखी होताहै, इतरफुलेल-गेहने आभूषण-और-फुलगजरोसैं-सुशोभित रहताहै,

२-मेघध्वनि-बुंदुभि-हाथी-सिंह-शार्दूल-भ्रमर-सारस-कोकिल-चक्रवाक-क्रौंच-हंस-वीणा-सरंगी-और-घुंघरुकीतरह जिसकी मीठीअवाज हो-वह प्रतापी और सुखी होता है. चाहे मर्दहो-या-औरत-मीठीअवाजवाला हरजगह मानपाताहै, उसकी इज्जतआवरु अच्छी फैलतीहै. गधा-सूअर-और-काककेसमान जि-

सकी अवाज हो-वो-पापी-और दुखी होता है.

३-जिसकी चाल हंसकीतरह-या-सिंह-व्याघ्र-वृषभ-और-हाथीकीतरहहो-वह विजयीपुरुष होताहै. नोकरचाकर-और-मित्र परिवार उसकी सेवामें सदा बने रहेंगे.

४-खूबसुरतरूपवाला चाहे मर्द हो-या-औरत काइ हो-अक्सर!-सुखी और दोलतमंद होते हैं. उमदारूप पुन्य विद्वान नहीं मिलता. दुनियामें सबसँभारी वशीकरणरूप है, शास्त्रमें बयान है कि-अमूककुमारका रूपदेखकर अमूककुमरी मोहित हो गई, अमूक कुमरीका रूपदेखकर अमूककुमर मोहितहोगया बल्किन्-रूपवान् प्राणीपर देवतेभी मोहित होजाते हैं, पुख्तासंठाण. और संघातन भी पुन्यविना-नहीं मिलता.

५-सत्व-नाम-हिंमतका है. जो शख्श बहोत हिंमतवान् हो वो-बडाभाग्यवान् होताहै, खालीवडाइमारनेवाले दुनियामें बहोत है लेकिन!-तकलीफ के वख्त-हिंमतरखे-हम उसे हिंमतवान् कहते हैं. तीर्थकर-गणधर-चक्रवर्ती-वासुदेव-और-महर्द्धिकराजे-अवनहीरहे, सारीदुनिया दुश्मन होजाय और डरेनही वैसेभी कम है, आजकल जैसेकुच्छ हिंमतवान् रहे हैं आपलोगों किसीसँ छीपे हुवे नहीं, वस!-हमे यहां इतनाही कहना बहोत है कि-तकलीफके-वख्तभी गभराय नहीं और हिंमतरखे-उसीकों सत्वावान् की पंक्तिमें गिनलो. एकतर्फ एकतीस लक्षण-और-एकतर्फ-धीरजगुण सबसे बढकर कहा, अगर तुमकों सुखीरहनाहै-तो-हिंमतरखो-या-हिंमतवान् कहे उस माफिक चलो, दुनियामें क-इलावतभी मशाहूरहैकि-मर्दकी गर्दमें रहना-लेकिन!-नामर्दकी

सरहदमें भी नहीं रहना, क्या ! हुवा !!-अगर चे-तुमारा सवधन-माल चलागया; जबतक तुम सहीसलामत हो हजारों तरहके आ-नंद उठाओगे.

६-जिसकेदिलमें दूसरेकों रोता देखकर करुणा नहीं आती वो आदमी नहीं-पशु है, आप उमदा खाना खारहाहै और पास भूखा आदमी रोरहाहै उसको एकटुकडाभी नहीं देता जानना चाहिये-वो-चंडालसेंभी बढकर है, जो लोग खुद्भीक्षा मांगकर लाते है उनकीवात यहां नहीं है, लेकिन ! तोभी देखिये!-बडे पुरुषोंने तो वहांभी अनुकंपा नहीं त्यागी, महावीर तीर्थकरने दरिद्रीकों-अपना आधा कपडाभी फाडकर देदिया था. तीर्थकरदेव दीक्षालेते पहले दान देतेहै वोभी अनुकंपाहीमें दाखिल है, निदान!-सिद्ध हुवा कि-अनुकंपाभी धर्मका एक अंगहै.

७-पित्ताधिकप्रकृतिवाला-चाहै-मर्द-हो-या-औरत हो-अकू-सर बुद्धिमान्-धर्मज्ञ-और-ज्ञानी होता है.

८-जिसकेशरीरकी दमक झलझलायमान-हो-वह-स्वतंत्र सु-खी-और ऐशआरामी सबसे बढकर सदाकाल रहता है.

९-तीर्थकर-और-चक्रवर्तीकेशरीरमें-एकहजार और आठ तरहके लक्षण होते है. वासुदेववलदेवके शरीरमें एकसोआठ-और उनसे नीचेकी पंक्तिवालोंके शरीरमें वत्तीस-लक्षण होते है. छत्र-चवर-धनुष्य-रथ-सरोवर-सींह-हाथी-धजापताका-आरीसा-अंकुश-तोरण-चक्र-समुद्र-कलश-महेल-वैल-माला-मौर-वृक्ष-शंख-स्वस्तिक-मछ-कछ-वावडी-पहाड-कमल-वज्र-जव-लक्ष्मीदेवी-चंद्रमा-और-सिंहासन-ये वत्तीसलक्षण बडेभाग्यवानके शरीरमें हो-

तेहै, इसजमानेमें इनमेंसें कोइभी पांचलक्षण जिनमें मिलजाय भाग्यवान् संमझो, ये लक्षण केवलहाथहीमें नही किंतु संपूर्णशरीरमें कहींभी हो.

१०-जिसपुरुषके-नेत्र-नाक-और-हाथ-लंबे हो-अच्छाहै,पुरुषचिन्ह-छोटा-होवो सदा धनवान् बनारहे.

११-हाथपांवके तलवे-नेत्रके कॉने-नख-होठ-और-जबान-लालरंगके हो तो अच्छा-सुखचैन भोगे. जिसकेनख उपसें हुवे-ढालवे-हो-वो-पुन्यवान् जानना-लालनखवाला-सुखी-और-सफे-दनखवाला-मुनि होताहै. जिसकी जबान काली हो-दूसरेके तहां दासपना करेगा. जिसकी जबान तीक्ष्ण यानी-तलवारकी धार समान अगाडीसें पतलीहो-वो-बुद्धिमान् और हरहमेश मोठाभोजन जीमनेवाला होगा. जिसकी जबान उत्तनी लंबीहो-जो विना जोर लगाये नाककी अणीकों-लगशके-वो-साधु होजायगा-देशदेशमें घूमकर धर्मकी जय करेगा. अगर गृहस्थी रहेगा अपने वंशकी तारीफ बढायगा.

१२-चांम-दांत-नख-और-केश-जिसके पतलेहो-वो-भाग्यवान् होताहै. केश-पतले-और-कालेरंगके-हो वो सुखी रहेगा. जिसकी-चांम-चोकनी-और-मुलाइम-हो वो दोलतमंद और भाग्यवान् होता है. पतली चमडीवाला अकलमंदभी होताहै.

१३-पस्तक-कपाल-और-छाती-बडीहोतो अच्छाहै, ज्ञानासूत्रको टीकामें लिखाहैक-(ललाटकेशाः प्रभुत्वाय.) कपालमें दोनों कनारेपर केश हो-वह-ठकुराइ भोगेगा. जिसका कपाल चार अंगुलसें ज्यादा उंचाहो-यानी-आंखोंसें चार अंगुल उंचे जाकर केश

उगेहो-वो-बडाप्रतापीपुरुष होताहै. ललाटपर केशका होना जो उपर लिखाये वह आजुवाजुकीवात उपरकी नही. जिसका मस्तक बडा और खूबसुरत हो-वो-राजा-या-साधु होगा. छत्रके आकार मस्तक होना निहायत उमदा है.

१४-जिसकी आंखका सफेद भाग स्वभाविकरूपसें कुछ लाल हो-स्त्री उसको-चाहकर मीलेगी. जिसके नेत्रकी पुतली कुछ पीलासलियेहो उसकेपास दोलत बनी रहेगी. जिसके नेत्र-चमकी ले-यानी-तेजस्वीहो उसके बडेभाग्य समझना चाहिये, मुरघेके जैसे नेत्र हो वो-मूर्ख होताहै, विलाइके समान मांजरी आंखवाला बडा दगावाज और पीली आंखवाला खूनी होताहै. सर्पके नेत्र जैसे नेत्रवाला रोगी-स्निग्धलोचनवाला सुखी-दीननेत्रवाला निर्धन-उंडी आंखवाला दीर्घायु-और-टेडी आंखवाला मतलबी होता है. कमलसमाननेत्र उमदा होते है.

१५-जिसके-बत्तीसदांत हो-वो-मुनि-राजा-या-प्रतापी गृहस्थ होगा. एकतीस हो-वो-दिवान-तीसहो-वो-सुखी-और-इससें कमहो-वो-सुखी कम रहता है.

१६-जिसके कपालमें पांच रेखा होवो-(१००) वर्ष-जीयेगा. चार रेखावाला-(८०) वर्ष-तीन रेखावाला-(६०) वर्ष-दो रेखावाला-(४०) वर्ष-और-एक रेखावाला-(२०) वर्ष-जीयेगा. जिसका कपाल उंचा और बडाहो उंचीपदवी पायगा, अर्द्धचंद्रमाके आकार कपाल उमदा कहा. जिसके कपालमें खडा हो-वो-अच्छा नही. बीचमेसें थोडासा उंचा होतो अच्छा है.

१७-जिसकी दाढी मांससें पुष्ट हो-दोलतमंद-होता है, जि-

सकी पतली और लंबी-हो-वो-दरीद्री जानना.

१८-जिसका मुख सदा हसता रहे-वो-कभी दुखिया न होगा. आंखों मीचकर हसनेवाला पापी होताहै. जिसके आंखके पर्दे कनारेपरसें लाल हो-वो-द्रव्यवान् होताहै. जिसकेकान लंबे और खूबसुरत हो-वो-सुखी रहेगा. छोटेकानवाला कंजुस होताहै. जिसके गालमें हसते बख्त खड़े पड जाय वो-परायेधनसें धनवान् बने-और पराइ औरतसें दोस्ताना करे तात्पर्य यह है कि-वो-निज मातापिताका सुख न भोगे.

१९-जिसकी छाती सपाट हो बडेवडे आनंद भोगेगा. जिसकी बीचमेंसें उंडी हो-वो-रुपये पैसेसें तंग रहे.

२०-हरमनुष्यके हाथमें जो तीनरेखा-बडी होती है उनमें कनिष्ठा अंगुलीके नीचेसें चलकर तर्जनी अंगुली तक जानेवालीका नाम आयुष्यरेखा जानना. बीचलीका नाम विभ्वरेखा-और-मणिबंधसें निकलकर अंगुठे और तर्जनीके बीच जामीलनेवालीका नाम जशरेखा है. विभ्वरेखाका दूसरा नाम मातृरेखा-और-जश रेखाका दूसरानाम पितृरेखाभी बोलते है, ये तीनोंरेखा अखंडित और लंबी होतो उसकी-इज्जत आबरू-दोलत-और उमर-पुरीजानना. खंडित होतो खंडित, कइजगह विभ्वरेखासेंभी आयुष्यका विचार करना कहा है, अगर विभ्वरेखा छोटी हो-तो-छोटा-और लंबी हो-तो लंबा आयुष्य जानना.

२१-जिसके हाथमें शंखका चिन्ह हो-वो-दोलतमंद रहेगा. जिसके हाथमें छत्रका-या-धजाका चिन्ह हो-वो-देवकीतरह सत्कार पाता रहेगा. जिसके हाथमें-केशरीसिंहका-या-हाथीका चि-

न्ह हो-वो-राजा-या-राजकी तरफसे हुकमहोदा चलानेवाला होगा. जिसके हाथमें अंकुशका चिन्ह हो उसके घर हाथी बंधे. जिसके हाथमें सूर्यका चिन्ह हो-वो-हिंमतवहादूर होगा. जिसके हाथमें सिंहासनका चिन्ह हो-वो-उंचे आसनपर बैठेगा. जिसके हाथमें चंद्रमाका चिन्हहो-वो-भोगविलासी होगा. जिसके हाथमें बैलका चिन्हहो-वो-बहोत मनुष्योंको पालन करेगा.

२२-जिसके हाथमें देवमंदिरका-या-नंदावर्तिका-आकार हो वो-बडेनभीवेदार हांगा, धर्महीके प्रभावसे उसके सबकाम फतेह होते जायंगे. जिसके हाथमें तलवारका आकारहो-वो-बडा जीदी होगा, जिसके हाथमें-धनुष्यका आकार हो दुनिया उसे बहोत चाहेगी, दूसरोको उसके दर्शन होना भी मुश्किल होगा. जिसके हाथमें फुलमालाका आकार हो-वो इज्जतदारोसेभी बढकर पूजायगा जिसके हाथमें चवरका आकार हो-वो-राजाका दिवानहोकर अपनपर चवर दुलायगा. जिसके हाथमें मुकुटका आकार हो वो-पूज्यपदवी पायगा. जिसके हाथमें रथका आकार हो उसके घर रथ बंधेगा. जिसके हाथमें कलशका चिन्हहो उसके इरादे पूर्ण होते चले जायगे, जिसके हाथमें कमलका आकार हो-वो-भोगविलासी होगा. जिसके हाथमें सांपका आकारहो प्रकृतिका जल्लाद, लेकीन!-दोलतमंद जरूर बना रहेगा.

२३-जिसके हाथमें स्वस्तिकका चिन्हहो-वो-पीछली उमरमें सुखी रहेगा, जिसके हाथमें पदमका चिन्हहो-वो-बुद्धिमान् सहलावानी होगा. जिसके हाथमें मृदंगका चिन्हहो-वो-धीरजवान् होगा. जिसके हाथमें भालाका चिन्हहो-वो-लडाइखोर-और

तीरका चिन्हहो-वो-पंडित होगा. जिसके हाथमें विमानका चिन्हहो-वो-जिनमंदिर बनानेवाला होगा, जिसके हाथमें-वृक्ष-या-तोरणका-चिन्हहो-वो-जहागिरदार होगा. जिसके हाथमें जहाजका चिन्हहो-वो-कोटीध्वज-होगा. जिसके हाथमें हल-मुशल-या-त्रिकोणका चिन्हहो-वो-किसानहोगा-या-जमीन उसे इनाम मिलेगी. जिसके हाथमें पुष्करणीका चिन्हहो उसकीबात सवाई रहेगी. जिसके हाथमें समुंद्रका चिन्हहो-वो-राजाओकाभी राजा बनेगा. जिसके हाथमें त्रिशूलका चिन्हहो-वो-धर्मध्वज होगा. और धर्मचर्चामें बडेबडे पंडितोकाभी लाजवाब करेगा. जिसके हाथमें चक्रका चिन्हहो-वो-हरजगह फतेह पायगा. जिसके हाथमें मौरका चिन्हहो-वो-विजयी होगा, जिसके हाथमें कच्छुवाका चिन्हहो-वो-शांतस्वभावी होगा.

२४-जिसके हाथमें वज्रका आकार हो-उसे-बडाहोदा मिलेगा. जिसके हाथमें योनिका आकार हो-वो-प्रतापी हागा, जिसके हाथमें पहाडका आकार हो-वो-राजाका मंत्री होगा. जिसके हाथपर बहोतकेश उगे हुवे हो-वो-दुखसें जींदगी तैरकरेगा. जिसके हाथकों दशअंगुलीयोमें दशचक्र हो- ३-साधु-या-छत्रपतिराजाहीगा. नवचक्र हो-वो-राजा-दौलतमंद गृहस्थ होगा, आठचक्रवाला हमेशां रोगी रहेगा. सातचक्रवाला सुखी छचक्रवाला कामो-पांच-चार-तीन-दो-या-एकचक्रवालाभी-गणवान् होताहै, जिसके दोनों हाथोंकी अंगुली-और-अंगुठोंमें-जीमनेमें दक्षिणावर्त्त-और-बामेंमें बामावर्त्त-शंख हो-वो-हरतह सुखी रहेगा. जिसके हाथकी अंगुली और अंगुठोंमें सीपका चिन्ह हो-वो-तीनो अव-

स्थामें दुखी रहेगा.

२५—जिमने हाथकी आयुष्यरेखा जितनीअंगुली लंघजाय एकएक अंगुलीपर वीशवीश वर्ष गिनकर संख्या लगाओ. जैसे किसीकी तीनअंगुलीये लंघगइ हो उसकी साठवर्ष आयुः जानना. एकएक अंगुलीपर पचीस पचीस वर्षकी संख्या लगाना भी ठीक है, वीश वर्षकी बात कालहानिके सबब किइ गइ है. जिसकी आयुष्यरेखा बीचमेंसें दूटीफूटी हो उमर उसकी बहोतकम होतीहै.

२६—आयुररेखामेसें अंगुलीयोंकी तर्फकों जितनी रेखा निकसीहो—उतनी उस पुरुषकों विपदा भोगनी पड़ेगी. मणिबंधकी तर्फकों जितनी निकसीहो उतनी उसे धनसंपदा मीलेगी.

२७—मणिबंधसें पांचतरहकी उर्द्धरेखा—जो—अंगली और अंगुंठेकी तर्फकों जाती है उसका वयान सुनिये!—प्रथम उर्द्धरेखा—जो—मणिबंधसें निकसकर अंगठेके नीचे तक जामीले उसकों राज्यकी तर्फसें फायदा होगा. जिसकी दूसरी उर्द्धरेखा मणिबंधसें चलकर तर्जनीतक जामीले—वो—राजा—या—राजका दिवान होगा. इसी तरह जिसकी तृतीय उर्द्धरेखा मणिबंधसें चलकर मध्यमातक जामीले—वो—अगर साधु हो जायतो आचार्यपदवी पावे गृहस्थ रहेतो सेनापति बने. इसी तरह जिसकी चतुर्थ उर्द्धरेखा—मणिबंधसें चलकर अनामिकातक जा मीले—वो—दोलतमंद होगा और बहोतसें मनुष्याकों पालन करेगा. इसी तरह जिसकी पांचमी उर्द्धरेखा मणिबंधसें लगाकर कनिष्ठा अंगुलीतक जामीली हो—वो—बडा इज्जतदार और होसलेवाला होगा.

२८—जिसके जिमनेहाथकी विभवरखा—अखंड वेधवर्जित—

और लंबी हो-वो-अपने खानदानमें-सबसे बढकर प्रतापी होगा, विभ्वरेखासे अंगुलीतर्फ जितनी पल्लवरेखा निकसी हो उतने उसके दुश्मन-और-जितनी अंगुठेकी तर्फ निकसी हो उतने साहाय्यकारक होंगे.—

२९-जिसके मणिबंध-यानी-पहोंचेकी जडमें तीनरेखा आडी पडी हों-वो-बडा प्रतापी होगा. अगर मणिबंधके उपरभी तीनरेखा पडी हो-तो-बहोत बडा राजा होगा. जिसके दोरेखा हो-वो-दिवान होगा, जिसके एकरेखा हो-वो-सामान्य मनुष्य गिना जायगा.

३०-अंगुठेके मध्यभागमें जिसके यवका आकार हो-वो-दोलतमंद होगा, अंगुठेके उपरलेभाग-यानी-पिछलेपासे जिसके यवका आकारहो-वो-सदा सुखी रहेगा.

३१-जिसकी अनामिका अंगुलीकी अंत्यरेखासे कनिष्ठाअंगुली-और-मध्यमा अंगुलीकी अंत्यरेखासे-तर्जनी-बढगइहो-वो दोलतमंद होगा. कमहोतो रूपये पैसेसे तंग रहेगा.

३२-जिसके हाथकी अंगुली खडीकरके देखो और परस्पर मिली हुइ देखाइ दे-वो-दोलतकों इकठी करेगा और जिसके बीचबीचमें अंतरपडा दिखाइ दे-वो-हरकार्यमें बहोत कुच्छ खर्च करेगा, याने दिलका दलेर होगा, अनामिकाके मूलसे-कनिष्ठाअंगुलीका मूल कुछ नीचेकों हो-वो-बुद्धिमान् होगा. इसी तरह जिसका मध्यमासे तर्जनीकामूल नीचेकों हो-वोभी-अकलमंद और उपदेशक होगा. अनामिका अंगुलीके नीचे और आयुरेखाके बीच जीतनी खडी-या-तीरथीन रेखा हो उतना उसपुरुषकों थ-

मज्ञ और शास्त्रवेत्ता जानना, कनिष्ठा अंगुलीके ठीक नीचे और आयुररेखाके सामने जितनी खड़ीरेखा हो—उतनी उस पुरुषको सुखसंपदा मिलेगी.

३३—अनामिका अंगुलीके—निचलेपोरवेमें—जितनी—आड़ीरेखा हो उतनी—वो—पुरुष ठकराई भोगेगा. जितनी खड़ीरेखा हो—उतनी उसकी धर्मश्रद्धा पृष्ठ रहेगी. मध्यमा अंगुलीके निचलेपोरवेमें जितनी आड़ी और उभी रेखा हो—उतनी उस पुरुषकी—ठकुराई—और श्रद्धा—कम—होगी. अनामिकासें मध्यमाका फल शास्त्रोंमें उलटा कहाहै. कनिष्ठाअंगुलीके निचले दोपोरवेमें उर्द्धरेखाकाहोना अच्छाहै.

३४—जिमके हाथमें अंगुठके निचे—और—पितृरेखाके सामने जितनी आड़ीरेखा—हो—उतनी उसको आरामकी जगह मिलेगी.

३५—जैसे जिमनेहाथके लक्षण—पुरुषके देखते है वैसे वामेहाथके भी देखने चाहिये, जिमनेहाथके लक्षण संपूर्ण फल देते है, वामेहाथके न्यूनदेते है, विलकुलव्यर्थ नहीं जानना, कृष्णपक्षमें जन्मे हुवेके वामेहाथके लक्षण दाहनेहाथके लक्षण समान फलदायक होता है, इसलिये निश्चय है कि—वामेहाथके लक्षण भी कार्यकारी है, जैसे जिमनेहाथमें—पितृ—विभव—और—आयुरेखा सबके होती है वैसे वामेहाथमें भी होना स्वाभाविक नियम है, वामेहाथकी पितृरेखा जिमके निर्दोष हो—वो—देवलोककी गतिभोगकर आया जानना इसी तरह विभवरखा निर्दोष हो तो मनुष्यकी गति—और आयुरेखा निर्दोष हो—तो—अधोगति भोगकर—यानी—तिर्यच होकर आया है ऐसा समझो. जिमनेहाथकी पितृरेखा जिसके निर्दोष हो—वो—यहांसे मरकर देवलोक जायगा, विभवरखा निर्दोष

हो-वो-मनुष्यगतिमें-और-आयुरेखा निदाष हो-वो-तिर्यचग-
तिमें जायगा.

३६-जिस पुरुषके वामेहाथकी विभवरैखा अखंड निर्दोष और लंबी हो उसको मनचाहा भोगविलास मीलेगा, जिसके वामेहाथमें कृपाणि अर्थात् खुरपोका आकार हो उसे दुष्टस्त्री मिलेगी. जिसके बजाका और चंद्रमाका आकार हो उसे चंचल और गौरवर्णकी स्त्री मिलेगी. जिसके वामेहाथकी आयुरेखा और कनिष्ठा अंगुलीकी जडके बीचमें जितनी आडी रेखा हो उतनी उस पुरुषके स्त्रीये मिलेगी. जिसका विवाह सारी उमरतक नहुवा हों और उसके उक्तरैखा मौजूद हो तो जानलोकि उतनी स्त्रियोंसे उसकी मोहवत हो चूकी है, जिसको दीक्षारेखा और स्त्रीरेखा दोनों मौजूद है-तो-कहदो-जो-अखंड और निर्दोष होगी. वहीं फलदायक होगी. दीक्षारेखा पुरुषके वामेहाथमें स्त्रीरेखाके अग्रभागमें होती है, दीक्षित हुवे बाद स्त्रीसंगमका अभाव होता है इसलिये उक्त स्त्रीरेखा उनको दूसरी तरहकी प्रभुता देती रहेगी. स्त्रीको पतिरेखा उसके जिमने हाथमें आयुरेखा और कनिष्ठाकी जडके बीचमें होता है, उसको देखकर उसके पतिके सुखका विचार करना. जो स्त्री संसार छोडकर दीक्षा लेती है उसकी पतिरेखा उसे ज्ञानप्राप्तिद्वारा फलदायक होती है. पुरुषके वामेहाथकी कनिष्ठा अंगुलीके और आयुष्यरेखाके बीचमें जो राज्यरेखा होती है. उससे भी दीक्षा-धर्म-और इज्जत आबरुका विचार किया जाता है. जिस पुरुषके वामेहाथकी आयुष्यरेखा अखंड और निर्दोष हो उसको अपनी स्त्रीसे अत्यंत प्रीति रहेगी.

३७-वामेहाथकी चारों अंगुलीयोंके बीचले पौरवेमें जितनी खड़ीरेखा हो उतने उसके बड़े दुग्मन-और जीमनेहाथकी अंगुली-योंके बीचले पौरवेमें जितनी खड़ीरेखा हो उतने उसके प्यारे मित्र होंगे.

३८-एकहजार आठ-एकसौ आठ-या-बत्तीस लक्षणोंमें-एक भी लक्षण-पुरेपुरा स्पष्ट-जिसके हाथमें-या-शरीरमें हो-वो-एकही बहोत कुच्छहै, सारी उमर तक वही फल देता रहेगा, हां! इतना जरूर है कि-जो-सुलक्षण-या-कुलक्षण-बहोत साफ-और-बलवान् होगा वह ज्यादा फल देगा.

३९-हस्तरेखा दिखलाने वाला मनुष्य-उमदाफल-मीटाइ-या नगदरपया-हाथमें लेकर-रेखाज्ञानीके सामने जावे विनयके साथ-रुपया-या-फल-जो कुच्छ लेगया हो रेखाज्ञानीके सन्मुख रखे. यानी-भेट करे. रेखाज्ञानी उसकी जाति-कुल-और-धर्मश्रद्धा-देखकर फल कहे. पहले आयुष्यका हाल बयान करना चाहिये क्योंकि आयुष्य टुकी हो-तो-फल क्या काम आयगा. रेखाज्ञानी अगर-नास्तिक श्रद्धावाला हो तो धर्म पुरुषकों चाहिये उसकों अपना-हाथ न दिखलावे, अधर्मीओंकी विद्या सत्य नहीं होती. अधर्मीकों धर्मीपुरुष हाथ दिखलावे यह योग्य भी नहीं है.

४०-जिस पुरुषके स्त्रीरेखा मौजूद है और कोई कुयोगसें उसका विवाह नहुवाहो तो अनुमान करलोकि-स्यात् इसने पराइ स्त्रीयोंसें संभोग किया है-या-करेगा. रेखाका फल मारा नहींजाता. क्योंकि-आठबरहके जो-कर्म जैन आगममें बतलाये है उनमें नामकर्मकी प्रकृतियोंसें रेखा लक्षण वगेराकी पैदाश कही, निका-

चितकर्म निष्फल कभी नहीं जाते. जरूर भोगने पडते हैं, इसलिये कहे सकते हैं कि—रेखाविज्ञान—बहुत ठीक और प्रमाण करने योग्य चीज है. लेकिन!—देखनेवाला होशियार होना चाहिये.

४१—जो पुरुष—अपने हाथकी अंगुलीयोंसे (१०८) अंगुल प्रमाण उंचा हो—वो—तेजस्वी होगा. क्योंकि—उत्तम पुरुष अपने हाथकी अंगुलीयों एकसोआठ अंगुल प्रमाण उंचे होते हैं (९६)छनुं अंगुल उंचा—मध्यम पुरुष—और चौरासी अंगुल—उंचा हो—वो—सामान्य—और इससे भी कम हो. वो दुखसे जींदगी तैर करेगा खडे होकर लंबी डौर लेना और जीमने पगके अंगुठेसे डवाकर मस्तक तक नापना—फिर उसे डौरको अपनी अंगुलीयोंसे इस तरह नाप देखना कि—कितनी अंगुल प्रमाण डौर लंबी हुई,—इसतरकीवको कोइ न समझ सके—तो—रेखाविज्ञानके भेदीको मिलकर पूछे. विना शिखे पढे कोइ काम ठीकठीक तौरसे मालूम नहीं होता.

४२—जिसके पांवके तलवेमें (९) नव अंगुललंबी उर्द्धरेखाहो वो—निश्चय—राजा—या—निर्ग्रंथमुनि बनेगा. जिसके पैरमें वज्र—हल या—कमलका—चिन्ह हो वो भी—राजा—या—निर्ग्रंथमुनि जरूर हो, जिसकी जंघापर थोडे केशहो—और—रगें—न दिखाइ देती हो—वो—अच्छा आनंद भोगेगा. जिस पुरुषकी जंघा—हिरनजंघाकी तरह हो—पुन्यवानीकी निशानी है. जिसके पांवमें चक्र हो—उसके—बडे भाग्य—समझना चाहिये. जिसके पांवके अंगुठोंमें—या—अंगुलीमें—यवका चिन्ह उसे हकुमत मिलेगी. जिस पुरुषका—शुक्र—वज्रनदार—होगा—वो—प्रतापी—या—पंडित होगा. जिसका शुक्रपात जलदी होता हो—वो—लंबी आयुष्य—भोगेगा. जिसके पांवके तलवेमें—तोरण—

पद्म-अंकुश-और-वज्रका चिन्ह हो-वो-जरुर राजा-या-मुनि हो-
गा. जिस पुरुषकी चाल कागडेकी-उलुकी-या-कुतेकी तरह हो-
वो-दुखसे जिंदगी तैर करेगा. जिस पुरुषका वीर्य सुगंधवाला
हो-वो-स्त्रियोंको-वल्लभ-लगेगा.

४३-जिसकी नाभी उंडी हो-वो-सुखी रहेगा.-कान-नाक-
पैर-हृदय-हाथ-और-नेत्र-लंबे हो-उसकी आयुष्य लंबी जानना.
अत्यंत बुद्धिमान्-अत्यंत कीर्त्तिमान्-अत्यंत शुरवीर-और-अत्यंत
सुखी थोड़ी आयुष्यवाले होते हैं. सबबकि-इस कालमें ज्ञानीयोंने
उमदावस्तुकी नास्ति फरमायी, जिसका नाक-तोतेके नाककी तरह
अनीदार हो अच्छा है, नाकके दोनों छिद्र छोटे होना निहायत
उमदा है. जिसका नाक हमेशा सुका रहता हो लंबी आयुष्य भो-
गेगा. जिसका पुरुष चिन्ह वामीतर्फ झुका रहता हो-वो-स्त्री संभो-
गको वहोत चाहे लेकिन! मिले नहीं. ललाटमें जिसके-एक-या-
दो रेखा हो-उसकी उमर छोटी जानना. तीन-या-चार-रेखा हो
उसके बड़े भाग्य-और-बड़ी उमर समझना चाहिये. जिसके शरी-
रमें हाडके वजनदार हो-वो-दोलतमंद होगा. जिसके शरीरमें
हाड-और-नश-न दिखाइ देते हो-वो-सुखी रहेगा. जिसके शरी-
रकी चमड़ी मुलाइम हो ऐश्व आराम ज्यादा भोगेगा. जिसकी
आंखे लक्षणवती होगी उसे भोगविलास वहोत मिलेगा.

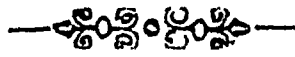
४४-लक्षणवती आंखे उसको कहना चाहिय-कमलसमान
खुवसुरत हो. दोनों कौने लाल-कीकी-श्याम-और-बीचमें सफेदी
होना यही लक्षणवती आंखोके चिन्ह है. सफेदीकी जगह जिसके
काली हो-उसे-स्त्रीकी तर्फसे आनंद रहेगा. हाथीके नेत्रकी तरह

जिसके नेत्र हों सेनापति पदवी भोगेगा. कवूतरकी आंख समान आंखवाला-कामी-होगा, मौरकी आंख समान आंखवाला शल्श न सुखी-न-दुखी. कागडेकी-और-मेंडककी-आंख-जैसी आंखवाला-पापी और चालाक होता है. लंबी आंखवाला लंबी उमर भोगेगा. सर्पके नेत्रकी तरह-नेत्रवाला-हमेशा रोगी रहेगा. दीन नेत्रवाला निर्धन-उंडी आंखवाला-दीर्घायु और-जल भरी आंखावाला दरिद्री रहेगा. एक आंखवाला दगलबाज-और-अँचाताणा-अपने मतलबमें पुरा होगा. जिसकी आंखे विमारीके सववसे लाल-या-सफेद रहती हो-उसकी गिनती यहां नहीं है, यहां जितनी वात लिखी गई है स्वाभाविक नियमानुसार जानना.

४५-रेखा-चिन्ह-और-लक्षण-तीनोंको एक कह दो-कोइ हर्ज नहीं. सववकि तीनोंका मतलब एकही आता है, हां ! इतना जरूर कहेंगे कि-बाह्य लक्षणोंसे अंतःकरणका लक्षण ज्यादा फायदे मंद होता है. जिसका मन साफ और हिम्मपुरी है उसकी देव रक्षा करते हैं. चाहे उसके बाह्यलक्षण- तेइ भी अच्छे-नहो-लेकिन! हिंमतमें पुरा हो-यानी-धीरजगुण करके निर्भय हो-उसको-अलवते! अच्छे लक्षणोंवाला कहना चाहिये. क्योंकि-सत्वगुण-सब लक्षणों से बढकर है. अनुयोगद्वार सूत्रकी टीकामें कहा है कि-(सर्व सत्वे प्रतिष्ठितं.) सब लक्षण सत्वमें आजाते हैं.

(पुरुषोंकेलिये रेखाविज्ञान-पुरा हुवा.)

-[अब स्त्रीयोंका रेखाविज्ञान सुनिये]-



४६-जिसस्त्रीका मुख-गोल-और-केश-लंबेहो तो समझलो-पद्मनीके लक्षण है, जिसस्त्रीकेशरीरपर रौम थोड़ेहो-वो-दोलतमंद बनी रहेगी. पतले हृदयवाली-स्त्री-हरहमेश मीठाभोजन जीमेगी-और-स्वभावसे उदार होगी-जिसस्त्रीका कपाल छोटाहोगा-अच्छा नहीं, बडे कपालवाली स्त्री-सुखी-रहतीहै. जिसस्त्रीके ललाटपर वामेपासे तीलहो-वो-हरजगह मान पावे. बहोत लंबी-और-बहोत ठींगणी स्त्री पतिका हुकम न मानेगी. और-कइतरहके दुःख उठायगी. जिसस्त्रीका नाक छोटा और खूबसूरत हो-वो-सुखसे जींदगी तैर करेगी. जिसस्त्रीके नाककी अणीपर तिलहो-वो-पतिका मुख थोडाभोगेगी. मांजरीआंखवालीस्त्री-बहोतबुरी होतीहै, कोई शख्स उसकी संगतकर नफा न उठायगा. जिसस्त्रीकी-डाढी-या स्तनपर केश उगेहुवे हो-वो-पतिके सुखसेरहित होगी.

४७-जिसस्त्रीके हाथमें धजा-चक्र-छत्र-तोरण-अंकुश-कुंडल हाथी-घोडा-रथ-तीर-चवर-जव-पहाड-मछली-चावल-वेदी-महेल-कलश-पद्म-त्रिशूल-तलवार-नगारा-और-मालाका-आकारहो उसकी दुनियामें तारीफ बढेगी-रानीकीतरह संसारमें उसका आदरसत्कारहोगा. और धर्ममेंभी उसकी श्रद्धा अडोल रहेगी. ये लक्षण यदि किसीस्त्रीके पांवमेंभी मौजूद-हो-तोभी-वही फल कहो जो उपर लिखचुके. जिसस्त्रीके शरीरपर केश थोड़ेहो-नींद-और पसीनाभी जिसके थोडा आताहो-पद्मनीस्त्रीके लक्षण है. जिस स्त्रीके स्तन गोलाकार-होठपतले-और-लालहो-वो-सदा सुखचैन

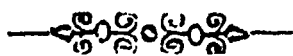
भोगेगी. जिसस्त्रीकी नाभी गंभीरहो-उसकेपास दौलत सदा बनी रहे, जिसस्त्रीके गालमें हसतेवख्त खड़े पडजाय-वो-सदा दूसरेकी तावेदारी करती रहेगी. जिसस्त्रीकी जांघपर केश उगे हुवेहो-वो पतिकों दुःखदेनेवालीहोतीहै. जिसस्त्रीकी-जांघ-लोहीसैंभरी-और-केशकरके-रहित हो-वो-बडेबडे ऐशआराम भोगेगी, जिसस्त्रीके हाथमें-काक-उल्लु-और-सर्पका-चिन्हहोगा बुरेदिन भोगेगी.

४८-कोयलके कंठसमान अवाजवालीस्त्रीके बडेभाग्य समझने चाहिये. उसका खजाना तररहेगा. और-जहां जायगी आदर पायगी. जिसस्त्रीके दांत छोटे और पतले हो-वो-हरहमेश मीठाभोजन जिमेगी. जिसस्त्रीकी नाशिकाके दोंनों छेक-छोटे-केश-पतले-और-गेहरेहो-जिसके नेत्रोंमें शर्म हो-ये-सब पद्मनीके लक्षण है. जिसस्त्रीके स्तनपर-और-मुंछकी जगह-केश-उगे हुवेहो-वो-जल्दी विधवा होजायगी. जिसस्त्रीके पांवकी तर्जना अंगुली अंगुठेसैं लांबी हो-वो-व्यभिचारिणी होगी. जिसके पांवमें सातअंगुललंबी उर्द्धरेखा-वो-राणीकीतरह हकुमत चलायगी. जिसस्त्रीके केश लालरंगके हो-वो-छोटी उमरमें विधवा होजायगी. जिसस्त्रीकी पीठपर केश उगे हुवेहो-वो-पतिके सुखसैं थोडेरौजमें हीन हो जायगी. पद्मनी-हस्तिनी-चित्रिणी-और-शंखनीस्त्रीके-गुण लक्षण आगेचलकर-मानवधर्मसंहितामेंभी लिखना है इस लिये दिग्दर्शन-मात्र बतलाकर इसविषयकों यहांही खतम करते हैं.

(रेखाविज्ञान समाप्त.)

(इति अष्टांगनिमित्त संपूर्ण.)

[शकुनशास्त्र.]



१-शकुन-दोतरहके है, एकदृष्ट-दूसराशब्द-दृष्टशकुन-वो-है जो कार्यारंभ करते वरुत-या-परदेश जाते समय-नेत्रद्वारा दिखा-इदे, दूसराशब्दशकुन-जो-शब्दद्वारा सुनाइ दे.

२-जैनकेनिर्ग्रंथमुनि-राजा-हाथी-घोडा-मौर-बैल-राजहंस-और-पद्मनीस्त्री-या-स्त्रीपुरुषकाजोडला-परदेशजाते-या-घरआते हुवे मिले सबकाम फतेह होंगें, दुंढिये साधु-जोकि-मुंहके अगाडी कपडा बांध रखते है,-वे-जैनकितावोंकीरुंहसें जैनी नही जैनाभा-सहै. सबबकि-जैनकितावमें मुंहकेआगे कपडा बांधना किसी ज-गह नही लिखा.

३-परदेशजाते वरुत-यदि-जिनप्रतिमा-फलफुल-गेहनेआभू-षण-धजापताका-छत्र-चषर-हाथी-घोडा-सुन्ना-चांदी-रथ-पाल-खी-बाजा-वीणा-सरंगी-सितार-मृदंग-मलयागिरिचंदन-आरिसा-जलभराघडा-रसोइकाबाल-दूध-दही-घी-मिटी-गोरोचन-सहेत-सुरमा-कमल-हथियार-पंखा-झारी-बैल-मौर-वनास्पति-सिंहासन-रत्न-अंकुश-तांवा-विनाधुंवेकी जग्घि-चावल-सरसों-धोये हुवे क-पडे लेकर आता हुवा धोवी-तांबूल-मिठाइ-इतर-उमदा वर्णगंध-रस-और-उमदास्पर्शवाली कोइभी चीज हो-सामने मिले तो फ-तेह होगी. इरादा पूर्ण होगा-और-किसीतहरकी तकलीफ नही होगी. कोइ किसीका भलाबुरा करनही सकता, जितने उपर लिखे-निमित्त है-सब-शुभाशुभके सूचक और द्योतके है. होना न

होना सब अपने पूर्वसंचितकर्मके आधीन है, लेकिन! हां!!-इतना जरूर कहेंगे कि-अच्छे निमित्त मिलनेसे अच्छे होनेका-ओर बुरे निमित्त मिलनेसे बुरेका अनुमान किया जाताहै, मनकी गति अस्थिर होनेसे अच्छे निमित्त पाकर कुच्छ धीरज आसक्ती है, कोइ अज्ञानी निमित्तज्ञानकों झूठा समजे तो उससे सर्वज्ञप्रणित तत्व झूठा नहीं हो सक्ता.

४-खुबसुरतपुरुष-या-स्त्री-शगारपहने हुवे-सामने मिले अच्छाहै, गर्भवती-रजस्वला-या-विधवा औरत-सामने मिलना अच्छा नहीं. माता विधवा हो और सामने मिलेतो कोइ हर्ज नहीं. क्योंकि-माता-पुत्रकेलिये सदाहितकारिणी होती है. उंट-गधे-या भैसेपर सवार हुवा-मनुष्य-परदेश जानेवालेकों सामने मिले निहायत बुरा है. हिजडा-या-रोता हुवा आदमी-अगर सामने मिल जाय तो बहुतही बुरा है. गांवनगरमें प्रवेश करते वख्त हसना गाना मना है. पेशवाइमें आये हुवे हसे-या-गायन करे कोइ हर्जकी बात नहीं. लेकिन खुद गाना हसना ठीक नहीं. परदेश जाते वख्त अपने पीछे खालीघडालेकर कोइ-स्त्री-या-मर्द आता हो निहायत उमदा है, जैसे-वो-जलभरकर घर आयगा देशाटन जानेवालाभी दोलत लेकर घर आयगा. सर्प-किरकाटिया-पल्ली-और-गोंह-परदेश-जानेवालेकों आडे उतरे तो बुरा है. काम फतेह नहोगा. परदेश जानेवालेकी बायीतर्फ भ्रमरा आनकर गुंजार करे-या-फुलकारस पीतादिखाइदे अच्छाहै कामफतेह होगा. परदेश जातेवख्त मुरघेकी अवाज सुनाइ देना-या-खुदनजरआना बहोत ठीक है इरादा पूर्ण होगा.

५-लडाइके लिये जानेवालेके-निशान-या-रथपर-सखरा-आनवैठे निहायत उमदा है जीत होगी. सखरेकों कइ लोग वाज-पंखीभी बोलते है. परदेश जानेवालेकों चलते वरुत पहिलाकदम अटक जाय-हाथ पांवको ठोकर लगे-कपडा फंस जाय-या-धजा-पताका गिरपडे-तो-देशांतरमें तकलीफ होगी. लुला-लंगडा-कां-णा-और-अंधा-सामने मिलना परदेश जानेवालोंके लिये तक-लीफकी सुरत है. लकडीका भारा लेकर कठिहारा मिले-बिल्लीयां दंगा करती दिखाइ दे-या-दुर्गंधकी चीज-सामने आना-किसी सु-रत अच्छा नही.

६-अंगारे-राख-हाडके-लकडे-पथ्थर-विष्टा-तैल-गुड-चम-डा-चरवी-खाली और फुटा हुवा भांडा-नमक-सुकाघास-छाछ-कपास-अनाजके छीलके-रसे-केश-कालेरंगकीवस्तु-लोहा-वृक्षकी छाल-दवा-अर्गला-लोहेकी सांकल-खल-अकालवृष्टि-अशुभवर्ण गंधरस-और-अशुभस्पर्शकी चीज परदेश जाते वरुत सामने मि-लेतो अच्छानही. तकलीफ होगी.

७-हाथमें फल लेकर-औरत-या-मर्द सामनेमिले-तो-देशा-टनीकों जानना चाहिये फतेह होगा. सारसका जोडला चाहेकिसी तर्फ दिखाइ दे-या-दोंनों एकसाथ अवाज करे-तो-देशाटनीकों-फायदा जरूर होगा. एकीलासारस दिखाइ देना अच्छा नही. छत्री हाथमें लेकर तंबोल खाता हुवा कोइ शरुखें सामनेचला आ-ताहो जानना चाहिये फतेह होगी. रोते हुवे आदमी शाय हां-वै-सा-मुर्दा-सामने मिलना बुरा है. कइ देशमें मुर्देका वाजेगाजेसें ले जाते है उसका मिलना बुरानही किंतु अच्छा है.

८-परदेशजाते वरुत पिछाडी और दाहनी तर्फका पवन चलताहो-
तो-अच्छाहै फतेह होगी. घर आते वरुतभी यही पवन अच्छे जानना.
सन्मुख-या-वायीतर्फका-वायु देशाटनकों जातेवरुत अच्छा नहीं.
परदेश जातेवरुत-या-किसी कामकी नविंडालते वरुत-नोलिया
दिखाइ दे-या-उसकी अवाज सुनाइ देतो-अच्छा है, काम फतेह
होगा. चलते वरुत-तीतर-या-मुर्घा-दाहने हाथकों मिलेतो फ-
तेह होगी. गधा-वायेहाथकों-भोंके तो देशाटनीकों जलदी फायदा
हो. बंधी हुइ रोटी लेकर कोइ सामने मिले तो निहायत उमदाहै.

९-घरसें चलते वरुत अच्छा शकुनहुवा-और-जहांगयेवहां
पहुंचते वरुत भी अच्छे शकुन हुवे तो जानना चाहिये इरादा पूर्ण
होगा. पहुंचते वरुतके शकुनसें चलते वरुतके शकुन ज्यादा ताक-
तवर होते है. जब अपना चंद्रस्वर चलता हो उसवरुत वामे पासे
जोजो शकुन होयगें पूर्णफल देयगें. सूर्यस्वर चलते वरुत दाहने
पासे जितने शकुन होयगें पूर्णफल देयगें. खालीस्वरमें अच्छे श-
कुनभी कमजोर होजाते है, पूर्णस्वरमें कमजोरभी ताकतवर होकर
पूर्णफल देते है. घरसें निकसे और तुर्तही अच्छे शकुन हुवेतो स-
मझ लो काम जलदी फतेह होगा, कोश दोकोश गये बाद चाहे
जैसा शकुन हो वृथाहै, शकुन उसीका नामहै जो अपने घर-या
गांवके नजीकमें हो.-हां!-इतना जरूर कहेगेंकि-जो-शकुन नजीक
दिखाइ देगा जलदी फल देगा. दूरगयेबाद दिखाइ दे-वो-देरीसें
फल देगा. एकदफे खोटे शकुन हुवे तो थोडी देर ठहर जाना ठीक
है, दूसरी दफेभी ठहरना कोइ हर्जकी बात नहीं, तिसरीदफे खो
टेशकुन होतो जानना चाहिये मुसाफिरीमें जरूर विगाड होगा.

शकुनशास्त्रका लेख है कि-सज्जन-शकुन-और-निमित्तिया-मना करे उसवरुत परदेश जाना अच्छा नही. तकलीफ होगी.

१०-शब्दशकुन उसकों कहते है जो शब्दद्वारा देखा जाय जैसे कोइ शरूश किसी कार्यकी नाँव डालने लगा-या-देशाटनकों चला-चलते ही किसी दुसरेके मुखसे सुनाकि-फतेह होगी बडा आनंद उठाओगे-तो-जानना चाहिये शब्दशकुन अच्छे हुवे. अगरचे-ऐसा सुनाकि-तुमारे काममें गलती है-डूव जाओगे-तुमारे भाग्यमें ही अंधेरा दिखता है-तो-जानना चाहिये शब्दशकुन अच्छे नही हुवे. इस लिये मुनासिब है कि-शब्दशकुन भी-खयालमें रखना. यह बातभी जानने योग्य है कि-निमित्त भी एकसे एक बलवान्-और-कमजोर-होते है. जैसे वारसें-तिथि-बलवान्-तिथिसें-नक्षत्र-बलवान्-नक्षत्रसें करण-करणसें लग्न, लग्नसें निमित्त निमित्तसें मनके भाव-मनके भावसें पूर्वसंचितकर्म-और-पूर्वसंचितकर्मसें धर्म-बलवान् होताहै. सबबकि-धर्मके प्रभावसें सबकाम फतेह होतेहै. मुनासिब है कि-धर्मपर ज्यादे ध्यान रखे.

(इति शकुनशास्त्र.)

[कालज्ञान.]



१-शुक्रके अस्त-और-वृहस्पतिके उदय अस्त-मंगलके च-लित-और-अनिश्वरके उदय अस्त-तथा-राशिप्रवर्तनके समय-ज-

रुर वृष्टिहों, इसमें संदेह नहीं. वृष्टिकालमें जब कन्याराशिपर मंगल और वृहस्पति-इकठे मिले वरसातकों रोके, चौमासेकेकालमें ऐसा भी कहते हैं कि-आगे मंगल पीछे भान-फिर वर्षाकी निश्चय हान,—

२-असाढ सुदी एकमके रौज-जितना पुनर्वसुनक्षत्र-हों-उतना उस चौमासेमें वरसात होगा, अर्थात् ज्यादा होंतो-ज्यादे-और-कमहोतो कम-जानना. (भावार्थ)-पुनर्वसुकों पीछली अमावास्यामें जितना व्यतीत हुवाहों उतना पडवेके पुनर्वसुमें मिलाकर-साठ घटाना अगर कुच्छ बचे तो उमदावृष्टि होगी-और-घटे तो कम होगी, चैत्रमहिनेकी पंचमीके रौज-रोहणी-सप्तमीकों आर्द्रा-और-नवमीकों पुष्य-हों-और-इनतीनों ही दिन वृष्टि होजाय तो जानना चाहिये चौमासा-सुका-जायगा.

३-आषाढ सुर्दा पुनमके रौज अगर पूरवकी पवन चले तो वरसात अच्छा होगा-घास ठीक पैदाहोगा-और-लोक आनंद भागेगे. अग्नि कौनकी पवन चले तो-वरसात थोडा होगा-अन्न भी थोडा-और-रैयतकों तकलीफ पडेगी. दखनकी पवन चलेतो घास नहोगा-और-राजाओंकों-कलेश होगा. नैरुत्यकी पवन चलेतो-वरसात थोडा होकर दुकाल पडेगा. पश्चिमकी पवन चले तो सुकाल, वायव्यकी पवन चले तो सारावर्ष प्रचंडवायु चलता रहेगा. उत्तरकी-या-ईशानकौनकी पवन चले तो अन्न बहोत पैदा हो और रैयत सुखी रहे. जिस देशमें जैसी पवन चले उस देशमें वैसा फल जानना.

४-मंगलके निचे गुरु-आर-गुरुके निचे-शनि-आजाय तो

दुनियाकों भारी तकलीफ हों,—जैसे मेषराशिपर मंगल-मीनराशि पर गुरु-और-कुंभराशिपर शनि हो—(अथवा)—मेषराशिके विशसैं तीस अंशतक मंगल-दशसैं विशतक गुरु-और-शून्यसैं दशअंशतक शनि हो—उपर लिखा योग जानना. तुल-वृश्चिक-धन-मकर-कुंभ-और-मीन-ये संक्रांति अपनी अपनी तिथिके रौज लगें तो दुनियाकों तकलीफ रहे—दुकाल पड़े—और-देश लुटजाय, अर्थात् सप्त-मी-अष्टमी-नवमी-दशमी-एकादशी-और-द्वादशीके रौज अनुक्रमसैं लेना. मंगल-सूर्य-वृहस्पति-और-शुक्र ये-चारग्रह एकराशिपर इकठे हो—तो—दुनियाकों—तकलीफ रहे—रोग फैले—और—अन्न महेंघा बीके. अगर कोई सवाल करेकि—संपूर्ण दुनिया कभी सर्वथा सुखी-या-दुखी-नही देखी जाती फिर उपर लिखी बात कैसे सच्च ठहरेगी! (जवाब.)—यह बात ठीक है कि—सारी दुनिया एकसरखी नही होती उपर लिखी बात वाहुल्यता आश्रित जानना चाहिये,—और—ये उपर लिखे—तथा—अगाडी जो जो योगा-योग लिखे जायगें—वहुधा करके आर्यखंडकेही साथ ज्यादा संबंध रखते है. सबवकि—सूर्योदयद्वारा उपर लिखे योग ज्यादातर इसीसैं संबंध धराते है, देशांतरकी गणित न्यारी भी है.

५—शनिश्चरके स्थानपर—(भावार्थ.)—मकर-वा-कुंभराशिमैं-सूर्य मंगल और शुक्र-तीनों इकठे हों—और—उनमें चंद्रमाभी जामिलेतो दुर्भिक्षका सूचक है. वृषराशिपर मंगल-और-राहु-इकठे होतो छटे महिने दुकाल पडनेका संभव है. सूर्य-चंद्र-मंगल-बुध-वृहस्पति-और-शनि-ये छग्रह एकराशिपर इकठे हो तो राजा प्रजाकों तकलीफ पैदा हो. यहयोग संवत् (१९५६) में आयगा.

शुक्र-शनि-और-मंगल-ये-तीन ग्रह-वृषराशिपर आवे तो देशमें उपद्रव हो.

६-वृहस्पतिसे सातमें शनि-बारहमें राहु-पांचमें मंगल-और-दूसरे सूर्य-आजाय उस वखत देशमें टंटे झगडे फैले-तलवार-चञ्चे देश लूटजाय-और-दुकाल पडे. इनचारों योगोमेंसे एकयोग मिलनाभी बुराहै चारोंही मिल जाय फिर कहनाही क्या?-आर्द्रा तथा स्वातिनक्षत्रपर शनि और राहु बैठे हों और उस वखत चंद्रमा-रोहणी शकटको वेध डालेतो देशमें दुकाल पडे. जिस संवत्में कर्क-और-मकरसंक्रांति-रवि मंगल-या-शनिवारके रौज लगे उस वर्षमें लडाईं दंगे बहोत हो. और बडे हाकिमोंको तंकाळीफ रहै. जबतक मीनराशिपर शनि-कर्कपर वृहस्पति-और-तुलापर मंगल रहे दुनियाके बहोतसे लोग तंकाळीफ भोगे, किसी वर्षमें तीनोंही योग मिल जाय तो बहोत ही बुरा है, अषाढवदी (१०) मीके-रौज-रोहणीनक्षत्र हों तो देशमें अनाज बहोत पैदा हो. दुनियाका तीनहिस्सा सुखी रहे. ग्यारसके रौज होंतो वरस ठीक ठीक-और-बारसके रौज होंतो-दुकाल पडे. यह अषाढवदी(१०) मी-गुजरात देशकी अपेक्षा है. दिल्ली मंडलके निकट श्रावणवदी दशमी जानना.

७-आर्द्रानक्षत्रपर-जब-सूर्य-और-केतु मिलकर आवे उसके आगे एक महिने तक अनाज महघा रहे, रेवतीनक्षत्रपर सूर्य हो-और-उस वखत-स्वातिपर मंगल आजाय राजाओं द्वारा रैयतकों दुख भोगना पडे. चैत्रमासमें-गुरु शुक्र-एकराशिपर इकठे होंतो-एकमास तक-धी-तैल-और-सूतका संग्रह करना चाहिये, अगळे

महिनेमें फायदेमंद होगा. जब मीनराशिपर शनि-हों-उसवख्त कर्कका वृहस्पति और तुलका मंगल होतो-महादुकाल पडे.

८-मूलनक्षत्रपर शनि आवे उन दिनमें अगर स्वातिपर बुध और-मघापर चंद्रमा आजाय-उस वख्तका संग्रह किया हुवा अनाज जरूर फायदेमंद हो. श्रवणनक्षत्रपर जब क्रूरग्रह-(भावार्थ) सूर्य-मंगल-शनि-राहु-और-केतु-आवे तो अनाज और घास महेघा वीके, धनिष्ठानक्षत्रपर शनि-और-मंगल-दोनो इकठे होतो वृष्टिकी हानि-और-घासकों अभाव करे, यह योग संवत्(१९३४) में-था. चोतीसाकाल छिपा हुवा नही है. वृहस्पति-और-शनि-एकराशिपर-या-एक दूसरेके सातमें घरपर होतो रैयतकों दुख-और-अनाजका क्षय जानना. यह योग संवत् (१९५६) के-मृग-शीर्ष महिनेमें आयगा. वृहस्पति-सूर्य-शुक्र-शनि-और-मंगल-एकराशिपर इकठे होतो-राजाओंको पीडा-लडाइकी तेजी-और-अनाज-महघा होगा. यह योगभी संवत् (१९५६) में-आयगा, शनि-और-राहु-एकराशिपर आवे जब अनाज महघा वीके-और राजे महाराजोंको-तकलीफ रहे, एकराशिपर कोइसे सातग्रह जब इकठे हो वहोतसें देश लूट जाय और दुकाल पडे. जब वृहस्पति-का अतिचार हों तब राजाओंको भय-और-प्रजाकों पीडा जानना. अधिकमासमें-मंगल-या-वृहस्पतिका राशि प्रवर्तन होना अधिकवृष्टि होनेका सूचक है.

९-तेरह दिनका पखवाडा भयजनक होता है. हरेक महिनेके कृश्रपक्षमें तिथिका वढना-और-शुक्लपक्षमें तिथिका घटना-अनाजकी तेजी होनेका द्योतक है. और कृश्रपक्षमें तिथिका घटना

शुक्लपक्षमें तिथिका बढना-अनाजकी मंदी होनेका कारण है, जेठ महिनेमें आद्रासें लगाकर नवनक्षत्र सूके जायतो चौमासेमें वरसात बहोत वरसे. एकदो-या-उपर कहे हुवे संपूर्ण नक्षत्रके दिनोंमें अगरचे वरसात वरसे तो चौमासेमें वरसात बिल्कुल न वरसेगा.

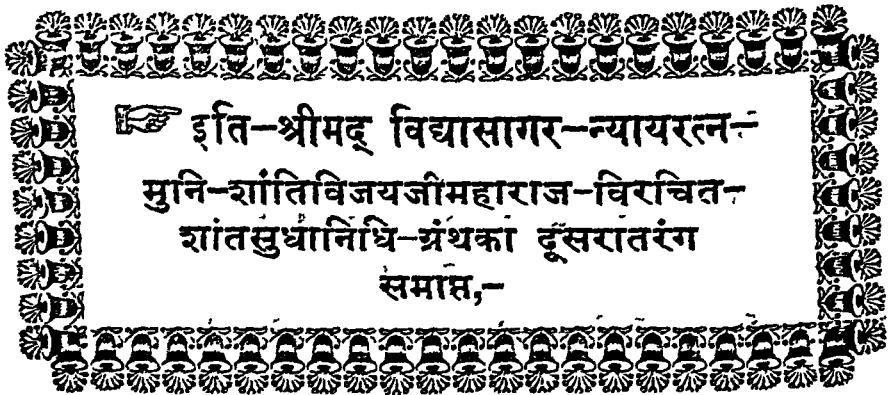
१०-आषाढ वदी पंचमी (गुजरातकी अपेक्षा जेठ वदी) के-रौज चंद्रमा वादलोंमें उदय हों-तो-वरसात अच्छा होगा. निर्मल आकाशमें उदय होतो वरसात थोडा होगा. तीज-चोथ-अष्टमी-नवमी-और-चौदस-इन तिथियोमें-(अथवा) रवि-मंगल-शनश्चर-कों-आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य आवे तो अच्छा नहीं, और शेष तिथिवा-रकों आवे तो अच्छा है तथा-भरणी-कृत्तिका-आर्द्रा-मूल-ज्येष्ठा-अश्लेषा-मघानक्षत्र-मूल-गंड-व्यतिपात-व्याघात-परिघ शिव-व-घृत-अतिगंड-इनयोगोमें आवे तो अच्छा है और शेषमें आवे तो अच्छा नहीं. लेकिन!-जब सूर्य-आर्द्रानक्षत्रपर आवे और उसी रौज वरसात हो-तो अच्छा होतेभी देठ महिनेतक वृष्टिका अ-भाव जानना.

११-कार्तिक सुदी पुनमके रौज भरणीनक्षत्र हों-तो अच्छा नहीं. माघसुदी सप्तमी चंद्रवारी हो तो-बहोतसें देशोंमें दुकाल पडे और-राज्यकी तर्फसें क्लेश रहे. फाल्गुन महिनेमें शुक्र अस्त हो तो भादवेमहिनेतक अनाज महघा बीके. मघानक्षत्रपर-शनि वक्री हो-तो-छत्रपति राजाओंको भय पैदा होनेका कारण है. जिस महिनेकी पुनमके रौज मासनक्षत्र-घडीयोमें-कमहो-तो अनाज व-गेरा शस्ते बीके. सम (अथवा) अधिक होतो महघे बीके. जैसे

कातिकसुदी पुर्णिमा तीसघडी-वारांपल है उस दिन मासनेक्षत्र पच्चीसघडी-सातपल हो-तो-अनाज वगेरा शस्ते वीके, -ऐसा जानना. अगर किसी समय एकराशिपर आठग्रह इकठे हों जाय-तो जानना चाहिये निहोयते बुरा होगा.

१२-जितनी बातें उपर लिखी गई है भरसे करने योग्य हैं. इतनेपर भी कोई बात न मिले तो उसपर हठ करनेना मुनासिब नही. आर्जकल तादृशज्ञानी नही रहे-जो-भूल न जाय. भूल चूके सबके पीछे लगी हुई है. उपयोगी बात जानना और दूसरीको विदित कराना यही ग्रंथकारोको ईरादा रहता है. इसलिये-मैं-आशा करता हूँ कि-सज्जन पुरुष तात्पर्यपर ध्यान देयगें.

(इति कालज्ञानं समाप्त.)



[मानवधर्म संहिता.]

(१)—मानवधर्मसंहिता हजारों ग्रंथोंका सार है. इसके पढ़नेसें अलबते !—थोडा पढ़ा हुवा भी—बहोत कुच्छ फायदा उठा सकेगा. ज्यादा करके इसमें गृहस्थ धर्मका बहोत हाल है. धर्म—अर्थ—और—काम—यथासमय पालनकरना गृहस्थोंका जरूरी काम है. इस लेख—में कइ बातें ऐसी आयगी जिसको पढ़कर अज्ञानी लोग उल्टा विचार करेंगे. लेकिन ! हमको यहां उनकी कोइ परवाह नहीं. तीर्थकर—गणधरोंने यह नहीं फरमाया कि—सच्चवात लिखते—अज्ञानी—कों हानि पहुंचती होंतो नहीं लिखना. बल्किन !—घंटानादकेशाथ फरमाया है कि—सच्च वातकों वेधडक होकर लिखो. कइ लोग कहेगें—साधु होकर शृंगाररस वगेरा क्यों बयान किया ?—(इसके जवाबमें) इतनाही कहना काफी है कि—तीर्थकर गणधर—साधुये—या—गृहस्थ ?—अगर—साध थे—तो—कहिये !—उनोंनें—शास्त्रोंमें शृंगार—रस क्यों वर्नन किया ?—क्या ! उसकों वांचकर कोइ शरूश काम भोगमें ज्यादा ध्यान देगा तो उसका पाप तीर्थकर गणधरोंकों लगेगा ?—कभी—नहीं !!—यथार्थ वात वर्नन करना ज्ञानीयाका धर्म है. समजनेवाले उल्टा समझे तो—वे—डूबेगें. उनोंनें ऐसा पाप—क्यों—किया ?—जिससे अज्ञानी हुवे ?—जो—जैसा करेगा वैसा फल पायगा, यह सिधि सडक है. इसे तोडनेवाला कोइ नहीं जन्मा. जो वात सदाके लिये सर्वोपयोगी हों—उमका बयान करना ग्रंथकारोंका जरूरी काम है. दुर्जनोंके नाक चढानेसें क्या होता है ?—द्वादशांग-

वानोके ज्ञानसें कोइ बात छीपी नही. हां! इतना जरूर है कि—जो बात जिस वरुत पकडने योग्य है पकडना—और—छोडने योग्य है छोड देना.

(२)—मनुष्यों के कर्तव्य धर्मका जिसमें वर्नन किया गया हों उसीका नाम—मानवधर्म संहिता—है, वस!—हमको यहां पहिले यही कहना मुनासिब आया कि—गृहस्थोंको किस वरुत—और—क्या क्या करना चाहिये ?—प्रतिदिनचर्या—जन्मचर्या—और—आंतिमक्रिया—हरे-ककों जानने योग्य हे. सबेर वरुत—जब—चारघडी गत बाकी रहे नींद छोडकर जागृत होना अवलदर्जेका काम है, दूमरा दर्जा दो घडी रात रहते—और—तीसरा सूर्य चढे बादका है. दिन चढे जाय और सौते रहना चतराइकी बात नही. जाग्रत होतेही पहिले—स्वरोदय ज्ञानका—विचारकरना चाहिये. चंद्रस्वर चलता होतो—वाया पांव—और—सूर्यस्वर चलता होतो दाहना पांव जमीनपर रखना अच्छा है. सुखुम्नास्वर चलता होतो पलंगपर ही बैठेरहकर परमेष्ठिका ध्यान करना ठीक है. सुखुम्नास्वर—दशमिनिटसें ज्यादा नही चलता—स्वरोदयज्ञानका भेद इसी ग्रंथमें लिखा गया है—दूसरेतरंगमें—वाच लो.

(३)—पलंगसें उतरकर मलमूत्रकी पीडाकों दूर करें—और—साफहोकर मंत्राधिराजका स्पर्ण करे. तीर्थवंदन—या—स्तोत्र वगेरा जो कुच्छ याद हो—मनमें पढे, कुच्छ भी याद न होतो निचे लिखे श्लोक पढ लिया करे.

(अनुष्टुप् वृत्तम्.)

मोक्षमार्गस्य नेतारं—भेत्तारं कर्मभूभृतां,
ज्ञातारं विश्ववस्तूनां—वंदे तद् गुणलब्धये.

- जिने भक्ति जिने भक्तिः—जिने भक्ति दिनेदिने,
सदा मेस्तु सदा मेस्तु—सदा मेस्तु भवेभवे. २
- नहि त्राता नहित्राता—नहित्राता जगत्रये,
वीतरागसमो देवो—न भूतो न भविष्यति. ३
- वीतरागं स्मरन् योगी—वीतरागत्वमश्नुते,
सरागं ध्यायतः पुसां—सरागत्वं तु निश्चितं. ४
- दर्शनेन जिनेन्द्राणां—साधूनां वंदनेन च,
न तिष्ठति चिरं पापं—छिद्रहस्ते यथोदकं. ५
- अर्हमित्यक्षरं बह्व वाचकं परमेष्ठिनः,
सिद्धचक्रस्य सद् बीजं—सर्वतः प्रणिद्धमिह. ६
- मंगलं भगवान् वीरो—मंगलं गौतमः प्रभुः,
मंगलं स्मूलभद्राद्याः—जैनधर्मोस्तु मंगलं. ७

इन श्लोकोंको—पढकर जो कुच्छ व्रतनियम धारना हो दिल-में धार लेवे. देवदर्शनको जाना तो शरीरसें साफ होकर जाना चाहिये, संभोगके वरुतकी अशुचि बिना साफ किये जो लोग दर्शनको जाते है अच्छा फल नही पाते, कइ देशोमें ऐसी रशमभो देखी जाती हैकि—स्त्रीयें नापाक ही उठकर देवदर्शनको चली जाती है यह बात ठीक नही. संपूर्ण अंगका-या-पंचांग स्नान करके जाना चाहिये.

(४)—सवेरके वरुत जंगलकी हवामें घूमना बहोत फायदेमंद होता है. दोलतमंद गृहस्थ-या-राजा-वादशाह हो-तो-हाथी घोडे-पर बैठकर-या-गडीपर सवार होके-जंगलकी-हवा लेना चाहिये.

साफ हवा सेवन करनेसे शरीरकी ताकत बढ़ती है, बीमारी मिटती है और दिलको आराम मालूम देता है. जो लोग पापके प्रभावसे दूसरेके ताबेदार-या-गरीब है उनको सवारीका योग नमिले तो पांवसे घूम आया करे. जो लोग गादी तकीयाके नोकर है उनको अलवते!-हमारी शिक्षा कभी नहीं रुचेगी, लेकिन!-उन्होपर हमारी निगाह नहीं है. हम यहां मनुष्योंके जरूरी काम लिखनेको बैठे हैं, जिनको न रुचे मत मानना. शास्त्रोंमें जो सुस्ती उडानेके लिये मलयुद्ध करना लिखा है उसीका दूसरानाम पहेलवानोंकी कुस्ती कह दो कोई हर्जकी बात नहीं. ऐसी कुस्ती करना कोई जरूरत नहीं जिससे शरीरको भारी नुकसान पहुंचे, गेंदखेलना-कोश दोकोश पैदल फिर आना-जलमें तैरना-या-जिस महेनतसे शरीरपर थोडासा-पसीना आजाय-वैसी कसरत करना मना नहीं. कसरतका नतीजा यही है कि-जिससे सवरगोंको महनत करना पड़े. सबसे अवल दर्जेकी कसरत वही है जो शुभह और श्याम-जंगलकी साफ हवामें घूमना. दंड पैलना लडकोंकी तरह उठ बैठ करना अच्छी कसरत नहीं. किंतु लडकपन है.

(५)-कसरत करनेसे अनाज अच्छी तरह पच जाता है, रक्त भ्रमण ठीक होता है. जिसदिन शरीरमें कफ ज्यादा मालूम दे उस दिन जरूर परिश्रम उठाना चाहिये. बिल्कुल भूखे-या-पेट भरकर भोजन जिमेवाद-नुर्त्त कसरत करना ठीक नहीं. बुढे आदमीओंको-जोकि-खुद कमाताकत हो चुके हैं उनको कोई जरूरत नहीं कसरत करे. कइ स्त्रियें हरदम घरमें बैठी रहकर कोई काम नहीं करती यह भी एक बीमार होनेकी निशानी है. लाजिम है कि-घरके

काममें लगी रहे और चलती फिरती भी रहे. शरीरमें जब थोडा सा पसीना आजाता है उस वक़्त ठंडी हवासे बचना चाहिये. जैसे कामभोग सेवन करके बचते हो. पसीना आनेसे शरीरके बुरे द्रव्य बाहर निकल जाते है. अगर पसीना निकलना रुक जाय-तो-वे-बुरेद्रव्य शरीरमेंही रह जाय-और रोगकी जड लगे.

(६)-साफ हवा शरीरमें प्रवेश करे तो जानों लाख औषधि सेवन किइ; इसी लिये कहने वालोने कहा है कि-सो दवा-और एक हवा,-श्वासमार्गमें जब कोइ रोग पैदा हो जाता है शरीरका लोही भी बिगडने लगता है. इसी लिये साफ हवा लेनेकी जरूरत है. लोहीका खजाना हृदय है. वामे स्तनके निचे जठराग्नि तप्तमान हो रही है. उसीसे शरीरके सब द्रव्योंका जल्लन होता है. फेफडे छातीमें दोनों तरफ स्वाश्वोस्वास लेनेके यंत्र है. बुरी हवासे इस यंत्रको-और इस यंत्रसे संपूर्ण शरीरको नुक़शान पहुंचता है. कुवे-वावडी-नदी-नालियां-पाखाने-गंदे जलका तांलाव-और जहां-गधे-सूअर-बैठते हों-वहांकी हवा जरूर बिगडी हुई रहती है. कंसाइ-रंगरेज-और-चमार-जहां बसते हों-मर्दे गाडनेकी यों-जलानेकी जगह जहां गांधिके पास हों-वहांकी हवा भी जरूर बिगडी हुई रहती है. बिगडी हवाके पास रहनेसे विस्फोटक-दाह सिरमें चकर आना-बगेरा रोग पैदा होता है. इस लिये गंदी हवासे बचाव रखना बहोत ठीक है. यह बात सबसे अवल दर्जेकी है कि-पूर्व संचितकर्म रोग-किसीका रौका नही रहता. लेकिन!-यहां जो कुच्छ कहा गया है व्यवहार नयको आश्रितहोकर कहा है.

(७)-(मलमूत्र त्यागनेकी विधि)-दिशा जंगल जाना तो दूर

जगहपर जाना चाहिये. देवालयके पास-या-मशानमें दिशा जंगल जाना ठीक नहीं. मलमूत्रकी पीडाकों रौकनेसें आंखोंकी तेजी मंद होती है. सिरमें दर्द-बगैरा कई उपद्रव पैदा होते है. छींक-उल्टी-उवासी-और-प्यास-रौकनेसें शरीरकी तंदुरस्ति विगडती है. नौद वातोत्सर्ग-श्वास-वीर्य-और-आंसु-आते हुवेको रौकनेसें कई तरहके विकार पैदा होते है. जिसको छींक आते ही एकशाय-वीर्य-पैशाव-और-मल-छूट जाय उसको जानना चाहिये आयुष्य अब थोडा रहा धूपसें जलती हुई जमीनपर-छतपर-या-पथथरकी शिलापैर-पेशावकरना बहोत नुकशानकारी है. सबबकि-सूर्यके तापसें उसमें जितनी गर्म हवा इकठी हुई है इंद्रियद्वारा प्रवेशकरके बडेबडे रोग पैदा करती है. गुप्तमोरीमें जहांकि-सदा आर्द्रता बनी रहती हो पैशाव करना कोई चइतराइकी बात नहीं. धर्मशास्त्र के कायदे मुजब बडा पाप लगता है. जो लोग नास्तिक श्रद्धावाले है इस बातको जूठ समझे तो उससें धर्मशास्त्र झूठे नहीं होसकते. सर्प-या-उंदरके-विलमै पैशाव करना महामूर्खोंका काम है. नजरे देखी हुई बात है कि एक शखशने एक विलमें पैशाव करना शुरु किया. उसकी धार जब भीतर पहुंची तुरंत उसमेंसें एक सर्प निकल आया. इधरसें पैशाव करनेवाला मारे डरके ऐसा भगाकि-सब कपडे खराब हुवे और लोगोने हांसी किइ, कहिये ! क्या !! फायदा हुवा ?—

(८)-दातूनकिये विदूनकोई चीज मुंहमें डालनी नहीं चाहिये. जो लोग हरहमेश दातून नहीं करते है उसके मुंहमें ऐसी बदबू आती है कि-उसके पास बैठनेको जी नहीं चाहता. जिसके क-

पडे और शरीर मेंला उसकी बुद्धि भी मैली होती है. इस लिये उचित है कि—हरहमेश दांतून करके पीछे कोई चीज मुंहमें डालना. जिसराँज मुखमें छालें पडे गये हो उस दिन दांतून करनेकी जरूरत नहीं. जिसके मुखमें दाह होता हो—कंठ बैठ गया हो—होठ फट जाते हो—उनको चाहिये धीके कुरलेकर—या—हरेनालियरकी गिरि चावे, जरूर फायदा होगा. दंतकाष्ठ वबूलका करना चाहिये. अगर नमिले तो निचे लिखा हुवा मज्जन बनाकर अंगुलीसें दांतो-पर धिसना—जिससें वात—पित्त—और—कफ—तीनों तरहके रोग दूर होकर आराम मिलेगा. (दांतोकं लिये मज्जन)—हरडे तोलाएक—वहेडे तोलाएक—आवले तोलाआधा—माजुफल तोलादेह—सफेदकथा तोलाएक—छोटीइलाची तोलादो—कपूरकाचली तोलाआधा—मोल—सीरीकीछाल तोलादो—पटाणीलॉथ तोलाआधा—संखद्राव तोला—आधा—और—नागरमोथ तोलाआधा—इनचीजोंको—कुट पीसकरक—पडछान करना—और—बोतल भर रखना, सवेर वरुत थोडासा ले—कर दांतोंकी जडमें मसलनेसें विल्कुल आराम मिलेगा, बदबू मिट जायगी. और अनारके दानोंकी तरह दांत चमकीले बने रहेंगे.

(९)— दांतूनकरके—चमेंली—या—गुलावके सुगंधि तैलमें शरीरको मर्दनकर स्नानकरना चाहिये. तैलके मसलनेसें शरीरकी रंगें पुष्ट होती हैं, जिसको तैरना न आता हो गेहरे जलमें कुदना अच्छा नहीं. साफ और छाने हुवे जलसें नहाना और हरहमेश तिलक लगाना आर्यलोगोंका नित्यकर्त्तव्य है. नंगे होकर स्नानकरना म्लेच्छोंका काम है, कितनेक देशोंमें ऐसी रसम देखी जाती है कि—स्त्रीयें विल्कुल नंगी होकर नहाती हैं, लेकिन!—यह रसम बहोत

वुरी है. एकसाडी-या-दुपट्टा-पहेनकर पीछें नहाना चाहिये. नहाकर कपडे साफ पहने-चाहे थोडी कीमतके हो-कोइ हर्ज नही. लेकिन!-मैले कपडे पहनना वहोत बुरा है, जिसके कपडे मैले उसकी बुद्धि भी मलीन रहती है. अगर कोइ सुवाल करे कि-साधुओंके कपडे बहुधा मैले होते है तो-क्या!-उनकी भी बुद्धि मलीन समझना चाहिये? (जवाब.)-साधुओंके लिये भी वस्त्रका धौना और साफ रखना धर्मशास्त्रोंने फरमाया है कौन कहता है मलीन रहना? अनसमझदारोंके लिये सभी जगह अंधेरा है. कोइ धर्मशास्त्र-या-लौकिक व्यवहार-यह नही कहता कि-मलीन रहो,-

(१०)-अच्छे कपडोंसे मनुष्यकी इज्जत बढ़ती है. झहोरी-और-इतर बेचनेवाला-जितने साफ वस्त्र पहनेगा उसके भालकी तारीफ होगी. इतर गुलाबका-सब इतरोंका सिरदार है, इसकी ताहमीर ठंडी होती है. वारांह आनेसे लेकर तीन-या-पांचरूपये तोले तकका आजकल ज्यादा इस्तिमाल किया जाता है. यूंतो जितना बढ़ाओ बढ़ सकता है, लेकिन!-इतरकी परीक्षा हरेकसें नही हो सकती. जिनोंने वहोत इतर मुंघे हों-खरीदे-या-बनाये हों-वैही-अच्छी तरह पहिचान सकते है. अच्छे इतरकी परीक्षा यह है कि-थोडासा लेकर कागदपर डालदिया जाय-और-निचे अंगुल देह अंगुल दूर अंगारा आगका दिखलाया जाय इसीदम मिनिट देह मिनिटमें उड जायगा. जिसमें रोंसे बगेराका मेल होगा देरीसें-यानी-पांच सात-या-दस मिनिटमें उडेगा, चंदनके तैलकी भी परीक्षा इसीवजह समझलेना चाहिये. जिस इतरका फुमा दोनोंकानोंमें लगाकर रातकों कपडा औढकर सोजाओ और शरीर उ-

सकी खुशबूसेंतर होजाय वही अच्छा जानो. पनरांह रौज जिस इतरके फुमेंकी खुशबूवनी रहे उसकी क्यावात है, ?-वहइतर चार पांच रुपये तोलेसें कम नहोगा. महिनेतक खुशबू रहे-वो-सात आठ रुपये तोलेका होना चाहिये.

(११)-इतरचंपेका-इसकी ताहसीर गर्म-बारांआने तोलेसें लेकर पांचरुपये तोले तकका ज्यादा इस्तिमाल कियाजाता है इतरकेवडेका-इसकी ताहसीर ठंडी और परोपकारी है, जो शरूश केवडेकाइतर लगाताहै उसकी खुशबू उसेकम और दूसरेकों ज्यादा मालूम देयगी, इतरमोतियेका-इसकी ताहसीर न-ठंडी-न गर्म,- इतरकेशरका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरचमेलीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरखसका-इसकी ताहसीर ठंडी,-इतरहीनेका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरजुइका-इसकी ताहसीर ठंडी और माहील, इतरमौलसीरीका-इसकी ताहसीर ठंडी, और माहील, इतर गुलदा-उदीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरपनडीका-इसकी ताहसीर न ठंडी-न गर्म, इतरडमरेका-इसकी ताहसीर गर्म, इतरमदनमालतीका इसकी ताहसीर ठंडी, इतरअरगजाका-इसकी ताहमीर गर्म, गंधीलोग इसकों मुष्कअंबरकाइतर कहकर बेचते है. सबबकि-इसकी खुशबू अंबर और कस्तूरीसें कुछ मिलजाती है. इतर केतकीका-इसकी ताहसीर ठंडी, इतरगेंदेका-इसकी ताहसीर माहील, चंपेके इतरसें लेकर इतरगेंदेतक जितने नामलिखे बारांआने तोलेसें लेकर तीनरुपये तोलेतक अच्छे मिलसकते है, ज्यादा दिन महेनतकरके उताराजाय तो ज्यादा किंमत भी होसकती है, अँलम किसीके घरका नही, जोकरे उसीका है, जैसे आर्यखंडमें सभीदे-

श आवाद है युरप-एसिया-अमरिका-रुस-चीन-जपान वगेरामें भी है, सभीदेशमें इतर बनते है. जिसकों जहांसे मंगानाहो मंगा सकतेहो. पूरव-पंजाब-बंबइ-गुजरात-काठियावार-दखन-मारवाड राजपुताना-दिल्ली-लखनउ-कन्नोज-अजमेर-जॉनपुर-और-जहां-सी-वगेरा-इतरके लिये मशाहूरस्थान है. गर्मीकी प्रकृतिवाला ठंडा इतर और वादीकी प्रकृतिवाला गर्म-इस्तिमाल करे अच्छा है. कंजुसोंकी ताकत नही कि-इतरका-आनंद उठासके. जो लोग उदार प्रकृतिवाले है-वेही-उमदाचीज खरीद सकते है.

(१२)-जिनकों अपनेशरीर-या-केशोपर खुशबूदारतैल लगाना मंजूर हो चमेलीका तैल इस्तिमाल करे. इसकी ताहसीर ठंडी और-नरहै. तैल-हीनेका-गर्म होताहै, जिनकी वादीकी प्रकृति हो हीनेका तैल लगाया करे, अरगजाका तैल भी गर्म होताहै. इसकी खुशबू तीनदिन तक केशोंसें नही जाती. गुलाबका तैल जितनी सुगंधरखता है दूसरा नही रखता. इसकी खुशबू ठंडी और तरहोती है. तैल केवडेका वहोत उमदा और ठंडा होता है. जिनकों मोगरेका तैल पसंद हो-वहोत ठीक-और-ठंडा है. इन सब तैलोंको बनानेकी तरकीब वेही जानते है जो हरवखत बनाया करते है. तिलोंमें फुलोंको वसाकर बडी महनतसें फुलेला बनाया जाता है. दोरुपये सैरपका तैल अच्छा होताहै. तीन-चार-पांच-सात-या-दसरुपये सैर लेना चाहो मिल सकताहै. लेकिन!-उसकी पहिचान करना बडा मुठिकल है. सैरभरपके चमेलीके तैलमें तोलेभर केवडेका-इतर-डालदिया जाय-वाँ-खुशबू-देगी सारा मकान महेक उठेगा. इसीतरह सैरभरपके-तैल चमेलीमें-तोलाभर चमेलीका इ-

तर, हीनेके तैलमें हीनेका-अरगजेमें अरगजाका-गुलाबमें गुलाबका-और मोगरेमें मोमरेका इतर-डालदिया जाय-खुशबू बढेगी. जिसकों जैसा मंजूर हो करे. लेकिन! इतनायाद रहे-जितना इतर अपने शरीर-और स्त्रीपुत्रोंकों-लगाते हो-उतना देवमूर्त्तिकों भी लगाया करो. आधा चोथाइ भी लगाओगे तबभी ठीक-जो लोग अकेले हाडमांसके पुतलेकों ही शिंगारना जानते है, उनके धन-माल और खजानेकों धिक्कार है.

(१३)-जिनमंदिरमें जाना हथियारकों और-उपानहकों-बहार छोडकर जाना चाहिये, देवमूर्त्तिकी दाहनी बाजुसँ तीनपरकम्मा देना और तीननमस्कार करना नित्यकर्तव्य है. साफ पानोसँ सुकी जमीनपर वैठकर स्नान करना-और-उमदा कपडे पहनकर अष्टद्रव्यसँ जिनमूर्त्तिका पूजनकरना सम्यक्तनिर्मल होनेका कारण फरमाया. पूजन करनेका जैसे पुरुषकों अधिकार है वैसे स्त्रीकों भी है. रजस्वला होनेके दिनोंमें अलबते! मना है, लेकिन! सदाकेलिये कोइ शास्त्र मनादी नही करता, पूजामें मन-वचन-काया-और-पहेननेके कपडे पवित्र होना चाहिये. जिसकपडे पहनकर मलमूत्र किया हो-कामभोग सेवाहो-पूजाके वरुत्त बिल्कुल छीना नही चाहिये. नयेकायोग नहो-तो पुरानाही ठीक है. लेकिन! धोया हुवा और साफ होना चाहिये. पूजक पुरुष अपने शरीरमें चार जगह तिलक लगावे. ललाट-कंठ-हृदय-और-नाभि-इनके शिवाय दूसरी जगह तिलक लगाना नही कहा. जिनप्रतिमाके नवअंगपर तिलक लगाना इसतरकीबसे समजना चाहिये. पांवकेअंगुठे-जानु-हाथ-और-स्कंध-इनचार अंगमें तिलक आठ

हुवे-लेकिन !-गिनतीमें चारही गिनेजायगे. मस्तक-ललाट-कंठ-हृदय-और-नाभि-ये-नवअंग और तेरह तिलक हुवे. पूजा-तीन प्रकारकी है. (१) अंगपूजा-(२) अग्रपूजा-और-(३) भावपूजा, नवअंगतिलक लगाना-विलेपन करना-फुल चढाना-और-गेहने आभूषण धारन करना-सब-अंगपूजाके भेदमें है. धूप-दीप-नैवेद्य फूल-अक्षत वगेरा अग्रपूजामें दाखिल है. और-गीतगान-नाटक चवर करना वगेरा भावपूजाके भेदमें है. चैत्यवंदन करते समय-पुरुष-जिमनीतर्फ-और-स्त्री-देवमूर्तिकी वामीतर्फ-बैठे,-बैठनेका अधिकार जघन्य सवाहाथ दूर-और-उत्कृष्ट साठहाथ दूर तक है, (भावार्थ)-मूलगर्भद्वारसें बहारके मंडपमें जितनी गुंजास देखे उतनी दूर बैठे. जिनमंदिरकी चौरासी आशातनासें सदा बचते रहना चाहिये. देवद्रव्य खाना महापाप है. देवमंदिरके रुपये पैसे अपनेको देने हो-तो-जल्दी देदेना चाहिये. जींदगीका भरुसा नहीं-देवद्रव्य देना रह जायगा तो अगले जन्ममें बडे दुख भोगने पडेगें.

(१४)-जिनपूजामें मनः परिणाम-हिंसकरूप-नही इसलिये-भावहिंसा-नही. और भावहिंसा विदूनपापबंध नहीं. अर्थात् पूजाकरते हुवे अशुभकर्मोंकी निर्जरा और-पुन्यानुबंधी पुन्यका प्राप्ति होना सिद्ध हुवा. कोइ भूर्ख-इस आशयको न समझे और कुतर्क करे तो उसके खोटे भाग्य-समझना चाहिये. धर्म-और-प्रोत जोराजोरीं नहीं होती. अगर सवाल किया जायकि-अविधिसें पूजन करनेसें तो न करना अच्छा, (जवाव.) यह बात ठीक नहीं, कोइ शख्स जब किसी कामको करने लगता है तो पहिले ही

यथार्थ नहीं बनता. मिहनत करते यथार्थ भी बन सकता है. इसी तरह पूजनमें भी अविधिसें करते विधि प्राप्त हो सकती है. लेकिन! अविधिके डरसें बिल्कुल छोड़ बैठना अच्छा नहीं. केशर चंदन फल नैवेद्य वगेरा हरहमेश नये चढाना चाहिये. घर चैत्यालयमें—एकसें लगा—ग्यारह अंगुलतक उंचीप्रतिमा रखना ठीक है, इससें बड़ीप्रतिमा घरमें रखना ठीक नहीं. बडेमंदिरमें पधरा देना चाहिये. घरमें रखा जाय—बोभी—धातुकी—या—चित्रामक्री होना ठीक है. पाषाणकी मूर्ति—बडेमंदिरमें रखना अच्छा. परदेश जाते बख्त सिद्धचक्रकायंत्र साथ रखना बहोत ठीक है. खिदून देवदर्शन भोजन जिमना अच्छा नहीं. नया बनवाया हुवा—सिद्धचक्रयंत्र—खिदून—गुरुकेवासक्षेप किये पूजनीक नहीं होसकता. जिनमंदिरमें स्तोत्र—लावनी—स्तवन—पढना तो उमदा भावार्थवाला पढना चाहिये, शास्त्राज्ञासें बखिलाफ—रचनाका—पढना मुनासिब नहीं. पूर्वाचार्य रचित उमदा अर्थाशवाले—स्तवन—पद—थोडे नहीं है

(१५)—अगर ज्ञानी और—त्यागी गुरुका—योग होतो—उनके पास—धर्मोपदेश सुननेकों जरूर जाना चाहिये. शास्त्र श्रवणसें धर्मश्रद्धा दृढ होती है. जो—धर्मोपदेष्टा अधर्मी—और—नास्तिक है उसके पास धर्मोपदेश सुनना कोइ जरूरत नहीं. असल पूछोतो उसकों उपदेश देनेकी योग्यताही नहीं फिर उसका वचन दूसरेकों कैसे असर करसकेगा. !—प्रत्यक्ष देख लिजियेकि—अगर—बैश्याओं—कों—पातिव्रता धर्मका उपदेश देनेके लिये नियत किया जाय तो—क्या !—उनका उपदेश दूसरेकों असर करसकता है? कभी नहीं !! बस !—इसी उदाहरणसें—समजलोकि—धर्मोपदेष्टा गुरु कैसा होना

चाहिये ?—आजकल खुशामदीलोग रह गये. साधुजनभी अपने निस्पृह धर्मकों छोडकर खुशामदी बनते चले जातेहै, कहिये !—फिर सच्चे धर्मका उपदेश कैसे हो सकेगा ?—दोलतमंदकों—और—गरीबकों—एकसा धर्मोपदेश देना मुनिजनोंका मुख्यधर्म है. शास्त्रके पाठकों उथ्थापन करना इसके समान कोइ पाप नही. जिनजिनलोगोंने धर्मशास्त्रोंका—पाठ—उथ्थापन किया उनोंने अच्छाफल नही पाया. इसभवमें बेइज्जती—और—परभवमें दुर्गति—होना इसीका फल है, कइ ऐसे मायावी है जो साधु होकर भी दगावाजीकों नही छोडते, साधुलोगोंने संसार छोड दिया तो अब मुनासिव है साफ दिल रहे और सच्चे धर्मका उपदेश देवे.

(१६)—जीवोंकावध न करना—सच्च बोलना—चोरी न करना—स्त्री संभोग न करना—धन धान्य सुन्ना चांदी रुपया पैसा वगेरा न रखना—इन पांचोंका नाम—महाव्रत है. भिक्षामांगकर खाना—और—रात्रीकों अन्न पाणी न लेना—मुनिजनोंका मुख्य कर्त्तव्य है. साधु साध्वी—श्रावक—श्राविका—इनचारोंकी समुदायका नाम—संघ—बोलते है. एक आचार्यकी वाचनांवाले साधुओंके समूहका नाम—गच्छ—और बहोतसैं एकसरिखे सजातीय गच्छोंके समूहका नाम—कुल—कहते है. आजकल पंचमकालमें—बकुस—और—प्रतिसेवना नियंठेके—मुनि—विद्यमान है, इन्हीके जरीये पंचमकालके अंततकधर्म चलेगा. अगर सवाल किया जायकि—निर्ग्रंथ—सनातक नियंठेके उमदामुनि जब इस कालमें नही रहे—तो—औरों कों—मुनि—क्यों कहना ?—(जवाब.)—पहिले दिनोंमें चौदह पूर्वके पाठीकों—गीतार्थमुनि—कहते थे—तो—क्या !—आजकलके जघन्य आचारप्रकल्प—निशीथ—और—म-

ध्यम आचार प्रकल्प-वृहत्कल्पके-पाठीको-गीतार्थ न कहना चाहिये, ?-पहिले कालमें दश प्रकारके कल्पवृक्षकों वृक्ष कहते थे क्या! आजकल आम्रकों वृक्ष कहना न चाहिये, ?-पूर्वकालमें सहस्रमल्ल-यादोंकों-योद्धा-बोलते थे-क्या !-आजकल किसीकों योद्धा न कहना चाहिये, ?-पूर्वकालमें बडेबडे मंत्र और अंजनधारी चौर थे क्या !-आजकलके साधारण चौरोंकों चौर न कहना चाहिये ! वस !-इन्ही दृष्टांतोंसें समझलो कि-आजकलभी मुनियोंका-अभाव नहीं है. हां !-इतना जरूर है कि-निस्पृहमुनि-थोडे है. साधु होकर जो लोग-स्त्री-धन धान्य घर हाट हवेली मकानात-और-खजाना रखते है, और दुनियाकों मिथ्या उपदेश देते है उनकों साधु कहना मुनासिब नहीं.

(१७)-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-पुस्तक-प्रतिमा-और-जिनमंदिर-ये-सातधर्म-क्षेत्र-जो-शास्त्रोंमें बयान किये है इनके बचावके लिये धर्मोपदेश देकर साहाय्य करना मुनिजनोंके लिये उचित कार्य है, कोइ गृहस्थ देव मंदिरका पैसा खाजाता हो उसकों रोकना-या-उसकों-संघबहार करादेना मुनियोंकों हुकम है. कोइ धर्मशास्त्र नहीं फरमाताकि-इसमें बेपरवाह रहे. कोइ जगह देव मंदिरका पूजारी खुद मालिक बनबैठा हो तो उसकों राज्यद्वारा प्रयत्न करके निकलवा देना, देव मंदिरमें मकड़ीकाजाला-या शिखरपर-कोइ वृक्ष-लग गया हो-तो-उसकों-दूर कराना.—श्रावकलोग धर्मश्रद्धासें पतितहों तो खुद दूर करना. इसमे देव मंदिरकी रक्षाका इरादा होनेसें पुन्यानुबंधि पुन्य.—और-अशुभकर्मकी निर्जरा है पाप नहीं. अगर सवाल किया जाय कि-साधु त्यागी

है उसको क्या गरजकि-मंदिरके काममें पड़े?-(जवाब.)-साधुने पांच इंद्रियके विषयका-और-पापारंभका त्याग किया है धर्मद्वेषीको हठाना नहीं त्यागाहै, साधु-धर्मके थंभ है धर्ममें साहाय्य न देवे तो उनको अधर्मताका दोष आताहै. भगवती सूत्रका-पाठ है कि-संघके लिये-साधु-अपनी-लब्धि-फोरवे, और-शक्ति मुआफिक धर्मकी रक्षा करे. जो-साधु-धनवानके-खुशामदी और धर्मका-सच्चा उपदेश नहीं देते-वे-साधु नहीं किंतु अधर्मी है.

(१८)-शास्त्र सुनने जाना तो हथियार-लकड़ी वगेरा छोड़कर जाना चाहिये. राजा वादशाह वगेरा अपना राज्यचिन्ह-छड़ी चवर-मुकुट बहार रखकर जावे. गुरुद्वारभी एक पूज्यस्थान है, इसमें महत्वताके चिन्ह नहीं लेजाना गुरुकी अदप है, शास्त्र सुनते वरुत मनको एकाग्र रखना चाहिये. वातचित और अवाज करनेसे चित्त डामाडोल होजाताहै. श्रोते-तीन तरहके (१) जानकार (२) अजानकार-और-(३) दुर्विदग्ध-नंदीसूत्रका लेखहै कि-दुर्विदग्धश्रोता-ज्ञान प्राप्तिका अधिकारी नहीं. जहां सभीश्रोते दुर्विदग्ध मिले हों उस सभाको-शास्त्र सुनाना- कोई जरूरत नहीं, कागडेको दूधसें नहलायाजाय कभी सफेद नहोगा इस तरह दुर्विदग्धश्रोता-भी कभी न सुधरेगा. शास्त्रवचनपर श्रद्धावान्-और-उदार-श्रोता धर्मकी उन्नतिकरसकता है, धर्मशास्त्रका अवर्णवादीश्रोता-अगर कुतर्ककरके-अपनी मूर्खता जाहिर करताहोतो मुनासिब है कि-उसको ताडनातर्जना करना. आवश्यकसूत्रके पहिले अध्ययनका वचन है कि-विनय रहित शिष्यके साथ बलाभियोग (यानी) ताडना तर्जना करना. जो साधु-अपनी महत्वताके लोभी वनरक-

ताडनातर्जना नहीं करते—वे अलबते!—इसलोगमें समतावान् कहलाते हैं लेकिन!—ज्ञानीयोंके ज्ञानमे महाअन्यायी समझे जाते हैं. क्योंकि—उनोंने—न्यायमार्गकों लोंप किया और अपनी वाह वाह!—करवाई.

(१९)—आजकल—वैसे—श्रोते नहीं रहे जो—बहोत बारीक बातें समझ सके,—इसलिये सूक्ष्म पदार्थोंका बयान थोडा—और—आवश्यक—ज्ञाता—उवाइ—उपासकदशांग—उत्तराध्ययन—रिषभचरित—वासुपूज्य चरित—शांतिचरित—अरिष्टनेमिचरित—और—पार्श्वचरित वगैरा—वाचना चाहिये. जिससें सबलोगोंकों जल्दी समझमें आवे. शास्त्र सुनकर साधुजनोंकों भिक्षाके लिये प्रार्थना करना चाहिये, साधुओंकों भिक्षा देनेसें बडापुन्य होता है. अपना पेट तो सबलोग भरते हैं लेकिन!—साधुओंकों—मातापिताकों—और—अपने आश्रितलोगोंकों—भोजन जीमाकर खानाखानेवाले बहोत थोडे निकलेगें. एक दुर्विदग्धश्रोताकि—जिसका बयान उपर लिख चूके है एक साधुके पास जाकर कहने लगा—मैं—चेला होनेकों आया हूं. कोइ उपाव ऐसा बतलाइये कि—दिल—साफ होजाय. साधुमहाराज बडे चतर थे, उसकी चालाकी पहिचान गये और तुर्त जवाब दियाकि—भैया! यह कौन बडी बात है! जुल्लाव ले डालो. या—निमकपानीसें एकदो उल्टी कर डालो. दिल क्या!—सारा शरीर साफ हो जायगा. साधु महाराजने ठीक जवाब दिया. ऐसे चालाकोंकों यही जवाब काफी है.

(२०)—जैसे गड्डीके पैयोंमें तैल पहुंचाना जरूरत है देहरूपी यंत्रमें भोजन पहुंचाना भी जरूरी बात है. आटेमें घोडासा निमक—

और-धी-डालकर रौटी बनाना-बहुत ठीक होता है, कच्ची रौटी पचावमें बाधा डालती है मुनासिब है अच्छी तरह पकाकर बनाइ जाय. ताजा आटा मिले तो बहुत दिनका पुराना बिल्कुल छोड़ देना चाहिये. बाजरेकी-या-जवारकी-रौटी भी अगर ठीक ठीक तौरसे बनाइ गई हो अलबते!-ताकतवर होती है. जितने किसान लोग हैं इसीके आधार जीवन-बीताते हैं. काल दुकालमें यही जवार बाजरी-और-मक्की-सहारा देती है, गेहू अलबते!-पौष्टिक पदार्थ है, लेकिन!-सबलोगोंके खानेमें ज्यादातर जवार बाजरी-और-मक्की ही आती है. चावल बहुत हलका और जलदी पचने वाला अन्न है. बहुतसे देशोंमें चावलकाही खाना ज्यादा पसंद रखते हैं. बासमतीके-कमोदके-और-अंबामहोरके चावल अवलंब-बरके गिने जाते हैं. उमदा चावल उसीको समझना चाहिये जो पकनेकेबाद सुगंध देवे. चावलके शाथ-दाल-धी-और सागभाजी ज्यादा फायदेमंद है.

(२१)-करेला-भीड़ी-तुरइ-परवर-सब तरहकी फलियां-वगेरा कुलुभाजी-जो-खाने योग्य है इसलिये खाना चाहिये कि-इनमें सबतरहके क्षार रहते हैं. और-ये-क्षार शरीरको पुष्ट बनानेमें फायदेमंद है. जहां बिल्कुल सागभाजी न मिलती हो-वहां नींबुका रस सेवन करना जरूरी है. हरहमेश एक नींबुकारस सागभाजीमें मिलाकर खालिया जाय कोइ विगाडकी सुरत नहीं. हां!-दांत खट्टे पडजाय उतना खाना जरूर घना है. नींबुका रस-रोचक-और-पाचक-पदार्थ है. इसमें ऐसा गुण रहा है जो-शरीरके लिये उत्तेजक-और-वादीको-हरन करनेवाला-है, इसके पीनेसे तृषा

शांत होती है. सोडा और चीनी-नींबुके रसमें मिलाकर पीनेसे पित्त शांत होते है. तीनदिनके बाद कोइ आचारखाना ठीक नही. धर्मशास्त्रका फरमाना हैकि-तीन रौजबाद उसमें सूक्ष्मजीवोकी उत्पत्ति हो जाती है. आंमका-त्रांसका-कैरका-करोंदेका-इमलीका-ककडी-मीरच-और-गवारफलीका-वगेरा सब तरहके आचार-तिन रौजके बाद अभक्ष्य है. चौथेदिन इनमें बेइंद्रिय जीव उत्पन्न हो जाते है. अगर जूठा हाथ लगाया जाय तो सन्मूर्छिम जीवभी उत्पन्न हो जाय इसलिये अभक्ष्य कहा. नींबुका सुका आचारखाना बहोत फायदेमंद होता है.

(२२)-लाख औषधियोंका नतिजा दूध है. जो शख्श-हरह-मेश-दूध-पीता है कमजोरी उससे हजारकोश दूर रहती है. लेकिन!-दूध-ऐसा होना चाहिये जो जल मिलाया न हों,-बेचनेवाले जलमिला देते है इससे दोनोंकों बडा नुकसान पहुंचता है. गरम करते वरुत अगर उसमें मिश्री मिलादिइ जाय तो क्याही!-उमदा बात है. वो-दूध-कभी अनपच न होगा. ताजामख्वन अंत मुहूर्त्तकालतक शास्त्रकारोंने जीवोत्पत्तिसे रहित कहा. अगर औषध भैषज्यकेलिये-ताजामख्वन (यानी) तुर्त्तका मथनकर निकाला हुवा-इस्तिमाल करे कोइ हर्जकी वात नही. वाद अंतमुहूर्त्तके जीवकी पैदाश होजाती है इसलिये धर्मशास्त्रमें इसका त्याग रखना फरमाया. अंतमुहूर्त्तकालकी मर्यादा शास्त्रोंमें दो घडी तक कही,—

(२३)-अनाजकों पचानेमें दही ज्यादा फायदेमंद होता है,इसके खानेसे रुचि बढती है, गर्मीके दिनोमें निमक और जीराडा-

लकर खानेसें बहोत जलदी फायदा पहुंचाता है, मिश्री-साफ-चमकदार-सुखी-और-सफेद-होतो शरीरके लिये बडी पौष्टिक चीज है. चाहकीपत्ती पानीमें गर्मकर उसमें थोडी मिश्री मिलाके पीना सुस्तीकों दूर करता है. हृदयव्यापारकों बढ़ाता है और मगजमें फुर्ती पैदा करता है. लेकिन!-इतना याद रहे चाहका बनाना हरेककों नही आता, चाहदानीमें पहिले पानीकों खुब तपाना-बाद उसमें चाहकी पत्ती छोडकर तुर्त ढकनेसें ढांक देना. और पांच मिनिटमें जब उसका असर हो जाय-छानकर दूध मिश्री मिलाके पीना-यही इसकी उमदा तरकीब है. बाजे आदमी बहुत चाह पीते है यह अच्छी बात नही. सबचीज मानप्रमाण अच्छी होती है.

(२४)-सवेर वरुत-थोडा खाना-खाकर काममें लगना अच्छा होता है. अच्छे लोग सवेर वरुत-चाह दूध-या-बदामकी-रोटी-बगेरा कुच्छनकुच्छ-खाकर बहार निकलते है, सवेरवरुत-दूध-या-कोइ हलका-अन्न न खानेसें-पेंट खाली रहता है और उसमें बुरी हवाका प्रवेश होकर बिमारी पैदा होती है. इसलिये सवेरवरुत कुच्छ चीज खाना जरुरी है. जिनकों ब्रत नियम हों उनके लिये तो त्यागही रखना चाहिये. सागूदाना-दूध-और-मिश्री मिलाकर पकाना और थोडा ठंडा होनेके बाद पीना-तंदुरस्त-और-बीमार-दोनोंके लिये फायदेमंद है. नारियल खाना शारीक परिश्रम करनेवालोंकों बहुत फायदा पहुंचाता है. कइ देशमें मजदूर लोग ज्यादा नारियलही खाते है. उरदकी दाल-धीकी-तरह-तर और-पौष्टिक वस्तु होनेसें शरीरकी ताकत बढ़ाती है. जिनकों पसंद हो जरुर खाया करे.

(२५)—(रतुका खानपान)—वर्षारितुमें—निमक ज्यादा खाना अच्छा होता है. तरगरम भोजन—सीरा—मोतीचूरकेलाडु—मालपुवे—छुहारे—और—पानसुपारी—खाना ज्यादा फायदेमंद होता है. केशर—जायफल—लौंग मिलाकर—तता किया हुआ दूध पीना भी ठीक है. हीने—या—मोघरेके तैलकी मालिसकरके गर्मजलसें नहाना अच्छा है. (शरदरितुमें) शरदपुनमका चांद रितुका एक अनुपम शिंगार है. इनदिनोंमें—कडुवा—कसायला—और—मीठा भोजन—जीमना बहोत फायदेमंद होता है. जितनी तरहकी हरीवनस्पति इनदिनोंमें आती है गरममसालेके साथ—गहरेघी—या—तैलमें तलकर खाना ठीक है. जल डालकर खानेसें विगाड लाती है. मक्कीके दानें घीमें—भूनकर—मसालेके साथ खाना—कच्ची ककडी—निमक जीरा और कालीमीरच—मिलाकर इस्तिमाल करना कोई हर्जकी बात नहीं. लेकिन!—इतना याद रहे—गलेतक भोजन जीमना इन दिनोंमें बहोत बुरा है.

(२६)—(हेमंतरितुमें)—दूध पीना बहोत ठीक होता है. गरम—चीकना—और—मीष्ट भोजन—ताजी मीठाइ—घी—और—गहरेमसालेके साथ तली हुई भाजी तरकारी वगेरा जो चीज खाना—गरम गरम खाना चाहिये. जलकी कोताइ रखना ठीक नहीं, (शिशिररितुमें) गरम और चरपरा भोजन जीमना ज्यादा फायदेमंद होता है सा मर्ध्य वृद्धिके लिये केशरपाक—आसगंध—मुशली—या—शालमपाक वगेरा—इन दिनोंमें खाना अच्छा होता है. जायफल—जवत्री—लौंग—और—केशर मिलाकर तताकिया हुआ दूध पीना भी बहोत ठीक है. चाह—मेंवा—बादामकी रौटी वगेरा उमदा खाना और उमदा कपडे

इन्हो दिनोंके लिये है. हरेचने-साठें-जामफल-सीताफल-ताजे पिस्ते-दाख-चनेकीभुनी दाल-भजिये-और-सेव-वगेरा-इन्ही दिनोंकी सौकात है.

(२७)-(वसंतरितुमें)-वसंतराग गाना-रंगरंगके कपडे पहनकर बागबगीचोंमें घूमना-सबकों प्यारा लगता है, घृतका खाना इन्ही दिनोंमें फायदेमंद होता है. दूध घी-खाना सदाके लिये ठीक है लेकिन!-इन दिनोंमें-कुच्छ ज्यादा अच्छे है, खारा-और-थोडा मीठा भोजन जीमना इस रितुका शिंगार है. दहीं-गुड-इनदिनोंमें खाना अच्छा नहीं. कफ पैदा करते है. (गृषमरितुमें) गर्मीकेमारे सबकों घभराहट मालूम देती है. कइ सुकुमार शरीरवाले इन दिनोंमें निहायत तंग रहते है. अन्न खाना नहीं रुचता. पानी-या-शरबतपीनेहीपर मन ललचाता है. आवलेका सेंवका और-साठेका-मुरब्बा-इन्ही दिनोंमें अच्छा लगता है. मेंदेका सीरा-जिसमें मिश्री और घी-गहरेडाले गये हों शुभहके वरुत खाया जाय क्याही!-उमदा बात है, दिनभर प्यास नसतायगी. गृषमरितु आमकीतो फसलही है, सबका दिल चाहता है कि-आम-खावे. लेकिन!-अकेला आम-या-उसका रस-बादी पैदाकरता है इसलिये मुनासिव है उसमें घी-और-कालिमीरच-डालकर खावे. कइ देशोंमें आम्रकेरसमें दूध मिलाकर खाते है. देशदेशकी ताहसीर अलग अलग है जिसकों जैसा रुचे वैसा करे. भोजन और कपडा दिलकी पसंदगीके ही तालुक है. मीठाइ-केले-दहीं-और-घी-खाना इनदिनोंमें ज्यादा फायदेमंद है.

(२८)-गृषमरितुमें क्या ! गरीब-क्या !-अमीर-सभीलोग व-

शरबत पीना चाहते हैं. अतारलोग जो सिर्फ मिश्रीकी चासनी बनाकर बेचते हैं उसको फैंककर असली चिकित्सा प्रणालीसे बना हुआ शरबत व्यवहारमें लाना चाहिये, जिनको प्रमेह वगैरा गर्मीकी बीमारी हो उनको—चंदनका—गुलाबका—केवडेका—या—खसका शरबत इन दिनोंमें जरूर पीना चाहिये. लेकिन !—कितना पीना ? किस वरत पीना ?—इसकी सलाह हकीमलोगोंसे पुछो, चंदनका शरबत ठंडा और पीनेसे तबीयतको खुश करता है, दस्त साफलाकर दिलको कुब्वत पहुंचाता है. कफ—प्यास—पित्त—और—लोहीके फिसादोंको दूरकरके दाहको भी मिटाता है. दो तोले चंदनका शरबत—दशतोले पानीके साथ पीना चाहिये. गुलाबका—या—केवडेका—शरबत भी इसीतरकीबसे पीना अच्छा है, गर्मी शांत होकर कलेजातर करेगा. दोतोले नींबुका शरबत—दसतोले जलमें डालकर पीया जाय तो गर्मी शांत होगी. और—भूख—दुगुनी लगेगी. बीस नींबुके रसको—चालीस तोले मिश्रीकी चासनीमें डालकर बनानेसे नींबुका शरबत बन सकता है. अनारका शरबत—चारतोले भरलेकर बीसतोले पानीके साथ—पीया जाय तो नजलेंको मिटाकर दिमागको ताकत पहुंचाता है. जिस गांवमें असली शरबत न मिलसकता हों और गर्मीका जोर बहोत दिखाई दे—तो—पच्चीस वादामकी गिरी—घोटकर एकगिलासभरजल बनावे—और—उसमें मिश्री डालकर पीइ जाय—गर्मी बिल्कुल न सतायगी.

(२९)—चंदन—केवडा—गुलाब—हीना—खस—मोंतिया—जुही—और पनडीके इतरोसे बनाये हुवे—सावुन—गर्मीयोके दिनोंमें दिलको खूबतर रखते हैं. जिनोंने पूर्वभवमें—देवगुरु धर्मकी सेवा किइ है—इस

भवमें जिनोंका दिल धर्मपर-रजु है-और जो उदार स्वभाववाले हैं-उनहीका मनुष्यजन्म तारीफ करने योग्य है. शालदुशाल-कडे कंठी-हुकमहोदा-और-मौतियोंके हार-धर्महीकी, बदोलत मिले है. लेकिन!-अपशोष है कि-इसवख्त उसकों तुम भूले हुवे-हो. इस कालमें ऐसा जमाना वर्त रहा है कि-धनवान् लोग-धनकेनशेमें-पडकर-धर्मकों छोड बैठे है. कहते है हमें क्या! परवाह है किसीकी? लेकिन!-यह सब उनकों पुरेपुरी भूल है. जिससें फल पाये हो-उसकों-नमते रहो, और-आगेके लिये परलोकका रास्ता साफ करो. जो धनवान् और धर्मवान् है उनकी दोनों लोगमें तारीफ है, जिनोंने पूरवभवमें धर्म किया है उनोंकों रोटी कपडेकी तंगी नहीं रहती. पुन्यवानोंहीकों खानपानका सुख रहता है, कइ ऐसे भी है जिन्होंकों खानपानका भी सुख नहीं. दुनियामें इससें ज्यादा तकलीफ और क्या होगी!-जिनकों रोटीका भी ठिकाना नहीं. आदमी सब तरहके दुख भुगत सकता है रोटीका दुख किसीसें नहीं सहा जाता.

(३०)-हमेश थोडी भूख रखकर भोजन जिमना अच्छा-गलेतक खाना कभी अच्छा नहीं होता-ताकतसें बढकर भूखे रहनेसें और भूखसें बढकर खानाखानेसें तंदुरस्तीमें बिगाड पहुंचता है. चौइसघंटेमें एकहीदफे पेटभर लेनेके बदले उतनाही अन्न-दो या-तीनवख्त करके खाना अच्छा होता है. पानी जैसे थोडा पीनेसें बीमारी आती है वैसे ज्यादा पीनेसें भी रोगकी जड लगती है. निमकके घडेमें ज्यादा जल गेरनेसें जैसे निमक जलमय हो जाता है वैसेही भोजन जिमकर तुर्त गहेराजल पीनेसें अन्न-जलमय

हो जाता है, कुवेका-या-नदीका-चाहे जिसका मिले लेकिन!-साफ होना चाहिये. गंदाजल शरीरकी तैजी कम करता है. पानीकों खूवतपाकर टंडाकर लिया जाय और उसीका पान किया जाय तो यकीन है उसकों-फोडा फुनसी या-वाला-कभी न निकलेगा. गंदाजल पीनेसें-और-गंदेजलसें-स्नान करनेहीसें-शरीरमें खुजली-दाद-और-फोडे फुनसी पैदा होते है. जिस-कुवे-या-वावडीमें गंदी चीजे पडी रहती हो उसका जल पीना बीमार होनेकी निशानी है. कुवोंके मुंहपर ढकना रखा जाय तो बहोत ही अच्छी बात है. बुरी चीज उसमें गिरने न पायगी. कमरतक कठेरा होना-और-चौफेरकी जमीन उंची बनाना-कुवोंकी शोभा है. इससें जीव मरनेका-और-कींचड बढनेका-सबतरह बचाव रहता है. जिसकुवे-या-वावडीमें-मनुष्य थुकते और-कुरला करते है-लोट्टा साफ करते है-और-फिर वहीजल रसोइके काममें भी लाते है कहिये!-फिर रोग-क्यों न पैदा हो!—

(३१)—जबकभी बदहजमी होकर-या-और-किसी सबबसें पेटमें दर्द होता है-तो-नाइकेपास पेट मलवाते है-और-कहते है-नाभि-ठिकाने-आजायगी. लेकिन!-यह जूठी बात है. इस तरह न करके अगर पेंटपर अच्छी तरह सेंककरा लिया जाय-या-बातहारक-पाचक-और-रेचक-औषधियां-खाइ जाय-तो-निहायत उमदा बात है. पेंटकों बहोत मसलनेसें आंतोंकों बडा नुकशान पहुंचता है. और-अक्सर कइवार देखा गया है कि-उनमें गांठभी पड जाती है. मुखके पीछे जहां अन्नमार्ग मुखसें लगा है वहीसें उपरकी तर्फ श्वासमार्ग शुरु हुवा है, वह आगे दोशाखोंसें फेंफडोंमें

जाकर मिल गया है. जहां अन्नमार्ग-और-श्वासमार्ग-मुखमें शुरु हुवे है वहांपर-दोंनोंके मध्यमें-एक तरहका-पर्दा है. मनुष्य जब कोई चीज निगलता है तब वह पर्दा श्वासमार्गके द्वारपर ढकना हो जाता है. और बाद निगलनेके उसी वख्त श्वासमार्गको खोल देता है. कभीकभी कोई चीज खाते-या-पीते वख्त-जलदी करनेमें जब उक्त श्वासमार्ग तर्फ चली जाती है उसवख्त बड़े ही जोरसे खांसी उठती है. जीव धभराने लगता है, यह वात किसीसे छीपी हुई नहीं. इसलिये हरेकको खयाल रखना चाहिये कि-खानापीना धीरजके साथ करे. ठंडी रसोइ पेंटमें दर्द पैदा करती है जहांतक-बने तुर्तकी बनी रसोइ जिमे.

(३२)-खाना खाकर मुंहको साफ करनेके लिये तांबूल-खानाभी-एक जरूरी बात है राजसभामें-या-जातविरादरीमें-जाना-तो-पानबीडी खाकर जाना चाहिये. उल्टी हुवे. वाद भी-पानबीडी खाइ जाय कोई हर्जकी बात नहीं, अच्छेलोग-रास्ते चलते भी-पानबीडी खाना बुरा नहीं समजते. जिनलोगोंको व्रत नियम हो-वो-न-खावे-कोइ हर्ज नहीं. पानबीडी सभीलोग खाते है लेकिन! उसकी तरकीब क्या है उसको पहिले जानना चाहिये. पान-सुपारी-भीमसेनीकपूर-कंकोल-लौंग-जायफल-जवत्री-एलाची-बादाम-केशर-कथा-और-चुना इतनी चीज मिलाकर पानबीडी बनाइ जाय तभी तांबुलके गुण उसमें पैदा हो सकते है. शास्त्रोंमें तांबुलके जो तेरहगुण-व्यान किये-है-इस तोरसे बनाइ हुई पानबीडीमें समझना चाहिये. चुना ज्यादा लगाया जाय तो ज्वानको विगाड लाता है, सुपारी ज्यादा होगी तो-रंग-अच्छा न आयगा-इसलिये

कथा-चुना-और-सुपारी-माफिकसर होना चाहिये.

(३३)-खानपानकी चीजें देशदेशके लोगोंने अलगअलग पसंद किइ है. लेकिन!-यह बात सबकी मंजूर रखनी पड़ेगी कि-धुधा वेदनीकर्मके उदयसे ही-जीवकों-आहार संज्ञा पैदा होती. धर्मशास्त्रके पाठकों देखा जाय तो मांसखाना सर्वथा मना है लेकिन! कइ देशवालोंने इसीकों अवल नंबरका खाना समझा है. दूध-दही-घी-मीठाइ-और-अन्न-ये चीजें-भोजनका शिंंगार है लेकिन!-मांसखानेवालोंके मगजमें-ये-अच्छी नहीं मालूम हुइ. आर्यसिद्धांत आर्यलोगोंकों-और अनार्यसिद्धांत अनार्यलोगोंकों मंजूर हुवा, लेकिन! इतना जरूर कहना मुनासिब आयाकि-आर्यसिद्धांत-सर्व ज्ञप्रणीत होनेसें सर्वथा प्रमाणीक है अनार्यसिद्धांत असर्वज्ञप्रणीत होनेसें सर्वथा प्रमाणीक नहीं. इसलिये कह सकते है कि-मांसखाना-अनार्यलोगोंका काम है.

(३४)-मांसखानेवालेकों दिलमें रहेम नहीं रहती, उमदाखाना छोडकर-मांसखाना-कौन तारीफ है?—कइलोग कहते है मंत्र पढकर जीव मारा जाय तो पाप नहीं लगता. जैसे मुसल्मानलोगोंके काजी कल्मापढकर हलाल करते है, इधर वेदमतवाले जन्न यज्ञकरते है तो मंत्र पढकर पशुओंकों होमवे है. लेकिन!—मंत्र-या-कल्मा पढकर जीवमारनेसें पाप नहीं लगता यह बात युक्ति प्रमाणसें सिद्ध नहीं होतो. धर्मशास्त्रोंका फरमाना तो ऐसा है कि-जीवकों मारनेवाला-मांसको बेचनेवाला-मांसकों पकानेवाला-मांसखानेवाला-मांसको बिकात लेनेवाला-मांसखानेकी सलाह देनेवाला-और-मांसका दान देनेवाला-खुद घातक है. इसलिये कहाजा स-

कता है कि-मांसखाना अधर्म है. इसका रिवाज अनार्य-और-ना-स्तिकोंसें ही-शुरु हुवा, जैसे अपनाशरीर अपनेको प्यारा है जानवरोंको भी उन्होंका शरीर उन्होंके नजदीक प्यारा है. शिकार खेलकर-या-अपने घरमें-लाकर-जीवोंका मारना-या-कसाइकी दुकानसें मौललाना-धर्मशास्त्रके कायदे मुताबिक-सभी पापहीमें दाखिल है, जिनका खयाल धर्मपर रजु है मांसखाना कभी मंजूर न करेंगे. कइलोग दलील करते है कि-मांस अगर खाने योग्य पदार्थ न होता तो दुनियाका तीन हिस्सा इसको खाना क्यों मंजूर रखता?-(जवाव.) यह कोइ नियम नही कि-जो-बहोतसें अधर्मो लोग-जिस बातको मंजूर रखे-वह-धर्मियोभो मंजूर रखना चाहिये. निदान!-किसी युक्ति प्रमाणद्वारा यह सबूत नही हो सकता कि-मांसखाना धर्मका अंग है. जब धर्मका अंग न हुवा तो पापअंग आपही कहना मुनासिब आया. जो जो गृहस्थलोग-श्रावकव्रत अंगीकार करना चाहे उनको मांसखाना पहिले छोडना होगा.

(३५)-जमीनके भीतर जितनेकंदहोतेहै-सब अनंतकायके-सामोल जानना चाहिये. जैसे-प्याज-लसन-अद्रक-गाजर-सकर-कंदो-सुरण-रतालु-मूलीकाकंद-अरबी-सलगम-हरिहलदी-और-गिरमीर वगेरा-कंदमूल-धर्मज्ञजनोंको खाना मूनासिब नही. इनके खानेसें-शरीरमें-जितनाफायदा पहुंचता है उससे ज्यादा नुकसान है. कइतरहके विकार पैदाहोकर शरीरकी तंदुरस्तीमेंभी फर्क आता है. और ज्यादाजीवोंका वधहोनेसें पापभी ज्यादा लगता है. जिनको धर्मशास्त्रोंपर श्रद्धा है जवानका-रसछोडकर-जीवोंकी रक्षा-

और-धर्मका पालन करते हैं. दही-छास-और-कच्चेदूधमें-द्विदल (यानी)-जिनकी दोदालहोती है जैसे-मुंग-मोंठ-उरद-रवां-वाल तुअर-मटर-मसुर-और-चने वगेराकी चीज मिलाना इसकानाम द्विदल है. इसके संयोगसें फौरन उसमें वेइंद्रियजीव पैदाहोजाते हैं. कच्चेदही-और-छासमें-दालकेवडे-या-पकोडी वगेरा डालकर बनायाजाय इसको भी द्विदलही समझना चाहिये. धर्मांमनुष्यको मुनासिब है कि-इसे नखावे. अगरचे सवालकियाजायकि-इसमें जीवपैदाहोते है इसमें प्रमाण क्या?-(जवाब.)-प्रमाण यही है कि-ज्ञानीयोंने इसमें जीवोंकी पैदाशहोतीदेखी. इसकोशिवाय दूसरा कोइप्रमाण नही. जिनको श्रद्धाहो माने. दही-या-छास-गरमकरके उसमें द्विदलचीज मिलाइ-जाय-कोइ हर्जकी बात नही.

(३६)-राइ-और-सरसों-द्विदलमें नही, सबबकि-इनमेंसें तैल निकसता है. जिनमेंसें तैल ननिकसता हों और दोदालहोजातीहो उसको द्विदल समझना चाहिये. रोटी-दाल-सागभाजी-खीचडी-नरमपुरी-खीर-और-सिरा-चारपहरकेबाद चलितरस होजानेसें अभक्ष्य है. जिनको बासीअन्नखानेका नियम है उनको मुनासिब है रात बासीरखीहुइ उपर लिखीचीजे न खावें. मीठाइमें जलका अंशनहोनेसें चौमासेंमें पनराहरौजतक खानेयोग्य है. बाद अभक्ष्य होजायगी. पनराहरौजकाभीकुच्छ नियमनही-अगरचे दसदिनमें ही बिगडजायतो दसहीदिनमें फेंक देना चाहिये. उनालेमें वीस दिन-और-शीयालेमें-महिनेदिनतक-मीठाइ-नही बिगडती, कची चासनी-हो-तो-तीनदिनमेंभी-बिगडजाती है यहां जोबात लिखीगइ है बाहुल्यताको आश्रित होकर लिखी है. दही-और-छास

सोलहपहरतक—नहीं विगडते. बाद विगडजाते है. मखखनकेलिये पहिले लिखचूकेहै किं—मथनकरके निकालेवाद—दोघडी पीछे—उसमें जीवोंके उत्पत्ति होजानेसे अभक्ष्य है. नेमिचरितमें—हेमचंद्राचार्य—लिखते है कि—

(अनुष्टुप्चतम्.)

अंतमुहूर्तात्परतः—सुशूक्ष्मा जंतुराशयः

यत्र मूर्च्छति तत्त्याज्यं—नवनीतं विवेकिभिः १,

आचारकेसंबंधमेंभी पहिले थोडासावयानलिखागयाहै यहाँ और भी खुलासादियाजाता है कि—चाहे—धीका—हो—तैलका—हो—या चाहे—पानीका हो—सब तरहके आचार तीन दिनकेबाद अभक्ष्य है. तीनदिनतकभी—वो—आचार—भक्ष्य है जो खट्टीचीजका बनाहुवा हो या—खट्टीचीज—उसमें डाली गइहो—जो—आपखट्टी नहीं है—या—खट्टी चीज उसमें डालीनहीगइ है उसका काल एकही दिनका जानना.

(३७)—कितनेक कहते है—मिरच—या—नींबुवगेराका आचार तीनदिनकेबाद यद्यपि हरारहता है—और—अभक्ष्यभी होगया—कहेगें लेकिन!—चोथेदिन अगर कोइतिथिपंचमी अष्टमीवगेरा आजाय—और—वनास्पतिकेत्यागवाला—वो—आचार खावे तो वनास्पतिखायेका दोष नहीं लगता. सबवकि—वो—तीनदिनकेबाद वनास्पति नहीं रँही,—(जवाब.)—यहबात गलत है. कोइ जैनशास्त्रमें नहीं लिखाकि—तीनदिनकेबाद—वो—वनास्पति—नहीं रहती. अगर कहाजाय अचित्तहोगइ—(जवाब.)—अचित्ततो—शस्त्रलगेवाद दोघडीमें हो जाती है तीनदिनसे क्या मतलब रहा?—तात्पर्ययह निकलाकि—

तिथिकेदिन जिनको हरीवनास्पति खानेका त्यागहो-वो-उसको खाय और दोषनही यहवात गलतहुइ. और सिद्ध हुवाकि-नही खाना चाहिये. अगर इसबातको नही मानो तो-बतलाओ !-भीं-डी-तोरुवगेरा हरिवनास्पति-जो-चाकुसेंकाटकर अग्निपर पकाइ जाती है उसका तिथिकेरौजवनास्पतिकायका सोगनवाला खासकता है-या-नही,?-कहोगे नही खासकता-तो-पूर्वलिखितवात सवूतहोचूकी कि-अचित्त होतेहुवे भी वनास्पतिकायका त्यागी उसको नही खासकता. क्योंकि-उसमें हरीवनास्पतिका आर्द्ररस अवतक मिटानही है. अगर कहाजायकि-तीनदिनका प्रमाण है-तो यहवात किसी शास्त्रमें बतलाना चाहिये. अगरकहोगे-शास्त्रमें भी नही लिखा-फक्त रुढी-चलपडी है-तो-मनोकल्पितरुढीको-मानना कोइ न्याय नही. जोजो हरीवनास्पतिके मुरब्बे बनाये गये हो-तिथिकेरौजवनास्पतिकेसोगनवाला-न-खावे. अगरचे सुकाकर मुरब्बावनायागया हो-तो-तिथिकेदिनभी खासकते हो. क्योंकि-उसमें हरारसनहीरहा. तात्पर्ययह निकलाकि-जबतकवनास्पतिकायकेरसकी आर्द्रता बनी रहेगी-तबतक तिथिकेत्यागवाला नखावेगा मुरब्बे और शरबतका-काल-तबतक है जबतक-वें-चलितरस न होजाय. जबउनमें दुर्गंधआने लगे-बेस्वाद-होजाय-तब न खावे. अगरसवाल कियाजायकि-यहवातकहांलिखी है?-(जवाब.)-शास्त्रोंमें जगहजगह लिखाहै कि-चलितरसहुवेबाद-बस्तु-अभक्ष्य हो जाती है. देखो !-प्रवचनसारोद्धार वगेरा.

(३८)-हरडे-बहेडे-पींपर-बादाम-पीस्ते-दाख-वगेरा मेंवा-जहाजमें-समुंदरद्वारा-सो (१००) जोजन गयेवाद अचित्तहोजाता

है. गेहू-वाजरी-जव-और-कपासवगेरा तीनवर्षकेबाद अचित्त-
 मूंग-मौठ-चने-उरद-कूळथथ-मसूर-वाल-तिल-तूअर-अलसी-को-
 द्रवा-कांगणी-जवार-और-मक्की-इनसबका खुलासा शास्त्रोंमें है दे-
 खलेना. भोजनजिमनेसे पहिले उसकोंनाकसे संघलेना अच्छा
 होता है. याते मालूमहोसके कि-इसमें किसीनेझेरतो नहीमिलाया !
 बहोतरखटाभोजन-शरीरकेबलकों-नाशकरता है. ज्यादे निमक आं
 खकी तेजीकों घटाता है. जिनकों कफज्यादे रहता हो-कोंडा-और
 चरपरा-खानाखायाकरे, जिनकों पित्तज्यादेहो-कसायला-और
 मीठाखाना खायाकरे. जोलोग रुखाखाना खातेहै उनकी अकळ
 तेजनही रहती. मुनासिव है-पांचतोलेधी-हरहमेश्र खाते रहना.
 ज्यादेशाख खाना अच्छानही. भोजनजिमकर तुर्त-दिशाजंगल-
 जाना-या-स्नानकरना निहायत बुराहै. जूतापहने भोजनजिमना
 अनार्यलोगोंकाकामहै. रजस्वलाके हाथका बनाया-या-परोसा
 हुवा-अन्न-खाना विष्कुलमनाहै. देवमंदिरमें-गुरुकों-और-राजा-
 कों-तकलीफहो-तो-भोजनजिमना अच्छा नही. चिकित्साशास्त्रों-
 का वारवार फरमानाहैकि-अजीर्णकेवरुत भोजन मत जिमो.

(३९)-ठाणांगसूत्रके सातमें स्थानमें भोजनसांततरहके बत-
 लाये है, मनगमता भोजन-मधुर-धातुकों बढानेवाला-जठराग्नि ते-
 ज करनेवाला-कामवर्द्धक-और-उत्साहबढानेवाला-इनसातोमें म-
 नगमता भोजन-वो-है-जो-धर्मशास्त्रके कहनेसें वरिखलाफ नहो-
 और-अपनेमनकों रुचता हो. जिसपर अपना मन राजीनही-वो-
 भोजनलाखरूपयेका क्यों न हो-स्नानानही चाहिये. विगाडहोगा.
 वेदोंकों मातापितासें पहिले-और-स्त्रीकों पतिसें पहिले-भोजनजि-

मना मुनासिवनही. कइदेशोमें सभीकपडे पहनेहुवे भोजन जिमने वैठ जातेहै लेकिन!—यहबात ठीकनही. धर्मशास्त्रोमें—धोतीदुपट्टा—पहेनकरही भोजन जिमना कहा. एकदूसरेका—जूठापानी—पीना—या—सामीलवैठकर—जिमना रोगपैदा होनेकी निशानी है. भोजन जिमकर—तुर्त—ज्यादेजल नही पीना चाहिये. दोतीनघंटेबाद जि—तनी प्यास हो वेशक!—पीओ. लेकिन!—इतना यादरहे चंद्र—स्वरमें जलपीना—और—सूर्यस्वरमें भोजन जिमना—तंदुरस्त रहने—की निशानी है.

(४०)—भोजनजिमतेको अंतरायदेना—या—उठादेना—बहोतही बुरा है, क्या!—गरीब—और—तवंगर—सबको भोजनप्यारा है. भूखस—वको सताती है. अगर भूख नलगती—तो—कोइ किसीकी नोकरी न करता. कइजगह देखागयाकि—जबकभी कोइशख्श—विवाह—या मृत्युसंबंधी—अपनेघर जिमनहार करता है पांचदस विनानीतेभी आजाते है, उनको उठादेना कोइबहादूरी नही. सोचो कि—उन विचारोंको—भोजनकी सामग्री—नही मिली होगी तभी तुमारेघर आये. ऐसेदीनहीनोंको उठादेना किसीसुरत अच्छानही. जब इ—जाररूपये खर्चकिये—तो—पांचपचीसकेलिये टोटा नहीआता. ले—किन!—क्या! कहा जाय!!—कंजूसोंका स्वभाव कभी उदार नही होता. दिलकेदलेर होंगे उन्हीको यश मिलता है.

(४१)—जैसे—हवा—और—खानपानसें—शरीरकी हिफाजतकर—ना कहा—वैसे—कपडोसेंभी—करना मुनासिवहै. ठंडी—और—गरमह—वासें बचानेकेलिये कपडेही कामदेसे है. मनुष्यको—अन्न—जल—हवा और—कपडोंका—बडाआसान मानना चाहिये. अगर—ये—नहोते—

तो-मनुष्यका जीना मुश्किलसे होता. शीतकालमें उंनीकपडा ठीक होता है. दोलतमंदलोग-फलालेन-दुसाले-बनात वगेरासें-और-गरीबलोग-कंबल-गुदडोंसें ठंड मिटाते है. बीमारोंको फलालेनका कपडा अच्छाहोताहै. गरमीके-दिनोंमें सूतकाहलका-और-बारीककपडा पहेनना चाहिये. सवरंगमें सफेदरंगका कपडा अच्छा होताहै. पदमीस्त्री सफेदकपडोंहीसें खुश रहती है. बेशदेशकी पोशाक देखोतो बडाही अचंभा होगा, लेकिन!-जिसदेशवालोंने जैसी पोशाक पसंद किइहै उन्होकेलिये वही ठीकहै. कइदेशोंमें-स्त्रीये-कांचली न पहेनकर अंगीयां पहेनतीहै, लेकिन!-यह रसम अच्छेलोगोंने पसंद नहीकिइ. स्त्रीको तो कांचलीपहेननाही मुनासिब कहा. बहोततंग-या-बहोतढीला-कपडा पहेनना अच्छानही. औढनेबिछोनेकेकपडोंकी-सफाइरखना चतरमनुष्योंका कामहै. देवपूजनके-रात्रीके-और-दिशाजंगलजानेके-कपडे अलगअलग रखना चाहिये. जोलोग अपनीइज्जतके मुआफिक मौलदारकपडे नहीपहेनते है उनकेवराबर कोइमुख नही. चारचीजे दुनियामें खूबसुरतीकी निशानी है. केश-कपडे-फुलोंकाशिंंगार-और जवाहरातके गेंहने-शरीरकीदुगुनी खूबसुरती दिखलाते है. अच्छेकपडे पहेननेसें-खजानाकम-नहीहोता. खजानाका कमीबेसीहोना नसीबके तालुक है, जोलोग-गरीबहालमें है उनको चाहे थोडेमौलका कपडा मिलो-कोइहर्जकीवातनही, लेकिन!-साफहोनाचाहिये. मैलेकपडेवालोंकी बुद्धि तेजनहीरहती.

(४२)-जैसे-हवा-जल-अन्न-और-साफकपडे-शरीरको फायदा पहुंचाते है. वैसे रहनेका मकानभी अगर शिल्पशास्त्रकेफर-

माने मुताबिक बना हुआ हो-निहायतउमदावात है. बुरेमकानमें रहना और रोगकों बुलाना एकसरखा है. जिसमकानमें बदबू आतीहो-बहोतअंधेरा रहताहो-और-जिसकेभीतरसें गंदीहवा निकलकर साफहवा-न-आसकतीहो-उसमेंरहना और नरककुंडमें पडना कोइफर्कनही. मकानकी कुरसी गजभर उंची होना अच्छीहोतीहै. याते उसमें बहोतसरदी-या-बरसातका-जल-न-घुसने पावे. मकानकी-लिंपाइ-पोंताइ-हरसाल-करातेरहना चाहिये. वारीशकी-मोशममें-पानी-टपकताहो ऐसेमकानमे रहना बिल्कुलअच्छा नही. जिसमकानमें सदाउजाळावनारहताहो-रौजमरें जिसमें बूहारी दिइजातीहो-और-जहांहरहमेश दानपुन्यकेकार्यकियेजातेहो-वो-घर-देवलोगका नमूनाहै.

(४३)-घरवनानेकी तरकीब देशदेशमें अलगअलग हे. कहीं पथ्थरके-कहीं लकडके-और-कहीं लोहेके-घरबनायेजाते है. जिन लोगोंकों जो पसंदहुवा उन्होंकेलिये-वही ठीक है. अलबते!-लकडेकेघरमें आगका बडाडररहता है. पथ्थरकेघरमें पथ्थरकी छत अगर अचानकटूटपडे आदमीयोंका बेमोंतमरनाभी जरूरहोजाता है. इसलिये अगर-छत-लकडकीबनाकर दूसरासबकाम पथ्थरइंटका बनायाजाय कोइहर्जकीबातनही. लेकिन!-हमारे कहनेलिखनेपर कौन अपनेदेशकी रसमछोडता है? -जिसदेशमें जोजोबुरी रसम चलतीहै उसकोंछोडना बडेहीचतरमनुष्योंका कामहै. कइदेशोंमें चढावके भीतर-बडाहीअंधेरा और दरवजे बहोतनिचे रखेजाते है, लेकिन!-यह समझदारोंका कामनही. हरवरुत माथेमें चोंट लगे-और-निचानमनापडे-इससेतो पहिलेहीसें उंचेदरवजे रखे-

जायतो क्या विगाडहै !-एकसोआठ (१०८) हाथ-लंबा-घर-व-होत अकलहुशियारीसें बनायागयाहो तो रहनेवालोंको बडाही आराम हासिल होतारहे, देवमंदिर-राजमहेल कचहरी-और-धर्मशाला-बडेहोनाही अच्छे, अकेलीलंबाइचौडाइसें कोइगरजनही, संगीन-उमदा-और-हवादारहोना तारीफकीवात है. पचास-चालीस-या-तीसहाथलंबे घरभी-अगर ठीकठीकतौरसें बनेहुवेहो-तो जमानादेखते-अच्छेही है. यूंतो छोटीछोटीकोठरीयोंमेंभी गुजरान करनेवाले करतेही है.

(४४)-घरकी उंचाइ उतनी बढानाचाहिये. जितनी उसकी चोडाइहो. बहोतउंचे घर जल्दीगिरजाते है. सो (१००) हाथसें ज्यादेउंचेघर अच्छेनहीहोते. सीढी चौडी-और-पावडीयें-ऐसीबनानाचाहिये जो-न-बहोतबडी-न-छोटी हो. क्या ! बुढा-और-लडका-मजेमें चढशके. पहेलीमजलसें दूसरीमजल-बारहमाहिस्ता छोटीहोनीचाहिये. घरकी दिवारें जिनको साफरखाना मंजूरहो-साफ-रखे, चित्राम कराना पसंदहो-चित्रामकरावे. काक-बिनागर्दनका आदमी-सांप-या-लडाइका देखाव-वगेराबुरेचित्राम घरमें चित्राना कोइफायदा नही. अगर चित्रामहीकरानाहै-तो-स्वर्गविमान-सिंहासन-नाचतीहुइ अप्सरा-वागवगीचे-वगेराउमदाचित्रकारी कराओ. जिसकेदेखनेसें दिलपसंदरहे. घरकेपास जिनको बडेवृक्ष लगाना मंजूरहों-एकसेंदूसरावृक्ष-पनरांह-वीस-हाथदूर लगानाचाहिये. पासपासलगानेसें-एकदूसरेका स्पर्श होगा-और-उनकेमूल जमीनमें एकमेंकहोजानेसें अच्छीतरह फलेगेंभी नही. ठंडीहवा-या-घाम-लगनेसें वृक्षोंकोभी बीमारी होजाती है. अंकूरे

न-आना-झाखा सूकजाना-पत्ते-सफेदपडजाने-यही इनकेलिये बीमारी है. खजूरीका-बैरका-और-बबूलका-बृक्ष घरकेपास बौना अच्छा नहीं.

(४५)-जिनमंदिरके बामे-या-पिछाडीके पासे बसना फायदेमंद नहींहोता. जिमने-या-सामने-बसना ठीकहोताहै, लेकिन! तोभी-थोडादूररहनाही अच्छा, ऐसासामने-बसनाभी ठीकनही जो-घरमें-भोजनजिमते जिनप्रतिमा नजरआती रहे. इससें बैअद-धी होती है. जिनमंदिरकेशिखरकी धजाछाया जिसघरमें दूसरेती-सरेपहरकों छोडकर पडतीहो-वो-घर फायदेमंद नहींहोता. विष्णु मंदिरकी वामीतर्फ-ब्रह्माजीकेदाहने-और-चंडीदेवीके चौफेर-कि-सीतर्फ-घरहोना-गृहस्थोंकेलिये तकलीफहोनेकी निशानी है. घर-केकाममें-लकड-इंट-पथर-या-चूनावगेरा जोजो मसाला लगाना मंदिर-उपाश्रय-मशाण-या-कुवावावडीका उतराहुवा-नहींलगाना चाहिये. इसमें दुनियादारलोग बुराइकरेंगे. और-धर्मशास्त्रकी हु-कमअदुलीभीहोगी. अनार-इमली-और-बबूलका लकड घरकेका-ममें पायेदारनही होता. जिसघरमें उमदागालिचे विछायेजातेहो-तस्वीरोंसें-और-सुनहरीकामसें-दिवारें झलाझलवनीहुइहो-छतमें मीनाकारीकाम-तरहतरहके-झाडफनुस-और-रोशनदानोंके चटकी ले देखाव-जिसमें दिखपडतेहो-ऐसेघर-उन्हीलोगोंको हासिल हो सकते है जिनोंने पूरवभवमें धर्मकियाहै. कइलोग कहदेते है धर्मतो कुच्छचीजहीनही. जैसा प्रयत्नकरो वैसासुख मिलताहै. लेकिन!- यह उनकीबडीभूलहै. दुनियामें कौन अपनेलियेसुखीहोनेका प्रयत्न नहींकरता!-सभी करते है. लेकिन!-होतेनही. इससें क्यासिद्धहु-

वाकि-कर्म-(यानी) पुन्यपाप-सवसें ज्यादा बलवान् है. पुन्यका उदय हो और उसवख्त जो जो प्रयत्न किया जाय वही फलवान् हो जाता है. पुन्यका उदय न होतो-वही-उद्यम व्यर्थ हो जाता है, गरज सबतरहके-सुख-पुन्यके ताल्लुक है, और पुन्य-देवगुरुधर्मकी सेवाके ताल्लुक है.

(४६)-जैसे मकानकी सफाई रखना फायदेमंद कहा-वैसे-शहरकी सफाई भी अगर रखी जाती हो-तो-क्या ही!-उमदावात है, कचरा कुड़ा-और-मलमूत्र-जहां बहोत जमारहता होगा वहां जरूर दुर्गंध फैलेगी. बड़े बड़े शहरोंमें दिशाजंगल जानेकी बडीतकलीफ उठानी पडती है. घरमेंही कोठरी बनाकर कामलेते है. लेकिन!-कोठरी भी चतराइके साथ बनवाना चाहिये. नही तो सारे शहरमें बदबू छाजाती है. घर बनवानेके लिये हजारेरुपये खर्च कर डालते है लेकिन!-मलमूत्र विसर्जनकी जगह इतनी बुरी हिकमतसें बनवाते है कि-कुच्छ पुछो नही. अवलतो!-उक्तजगह मकानसें अलग होना चाहिये. उपरसें हवा आती रहे और निकलती रहे-तो-दुर्गंध कभी नबढेगी. जमीनसें हाथ भर उंचे-दो-पथथर इसबजहसें चिनोकि-जिसके निचे एकपथथरकी शिला ढलमी बनी रहे. जिससें मलकों बहोतवख्त ठहरेरइनेकी दिक्कत न रहे. दूसरीतर्फ एकछोटी मॉरी इसढबसें बनाइजाय कि-जिससें गंदाजल-या-मुत्रवगेरा तुर्त बहार निकलजाय. इसतरकीवसें कोठरी बनी होगी-तो-दुर्गंध कभी नबढेगी. और मकानकी खूबसुरती भी बनी रहेगी. कइलोग ऐसीबुरी ढबसें उक्तजगह बनवाते है जहांसें बरसोंतक बदबू नहीहठती. मैलावगेरा-दोदो-दिनतकभी नही उठवाते. एकघरमें जहां बहोत आ-

दमी बसतेहो मुनासिबहै एकदिनमें दोदफे सफाई कराया करें. जिससे बदबू बढेनही. मलमूत्रकी बाधाको रोकनाअच्छा नही. व-
होतदेरतक रोके जायतो मलकीगर्मीसे बातपितमिलकर तमाम श-
रीरमें विकारपैदाहोताहै. मुनासिबहै दिनमें दोदफे दिशाजंगलजा
ना और पेशाबकोभी जिसवख्त बाधाहो रोकना नही.

(४७)—शहरके रास्ते छोटेछोटे और बांकेटेडेहोनेसे बडाअन-
र्थहोताहै. राजा-दिवान-सुबाजहागिरदारवगेरा जोकोइ उसजगह-
का अधिकारीहो मुनासिबहै रास्ते सिधे-और-चोडे बनवावे. ख-
ड्डोंको पुरवाके दुरस्त करवावे. कुडाकचरा दूर फेंकवाकर
नालियोंका-यानी-दूर-पहुचानेकी तजविज करे, चमार-रंगरेज-
कसाइ-और-मदिरावेचनेवालोंको-अलगअलग-निवास करावे. ब-
जारमें बदबूदेनेवाला-या-आरोग्यविगाडनेवाला कोइपदार्थ हो-
उसीवख्त-दूर फेंकवादेवे. छोटेछोटेगांवमें सफाईकाकाम-पटेल या
पटवारीकेजिम्मे-रखना चाहिये. राजाओंको-और-हाकिमोंको-मु-
नासिबहै अपनेशहरके दुकानदारोंको बिगाडेनही. अच्छाव्यापार
चलता होगातो हजारंहतरहकी रवंन्नक बढेगी. अलबते!—झूठेतो-
लेमापे-रखनेवालोंको-और-घरमें-धन रखकर दिवालाफुंकनेवालो
को जरूर शिक्षादेनाचाहिये. अर्हन्नीतिवगेरा न्यायशास्त्रोंका फर-
मानाहैकि-न्यायमें दया रखनेसे कामनही चलता. हां!—बिदूनप्र-
योजन किसीको तंगकरना अच्छानही. अपनेशहरकी रवंन्नकबढा-
नेकेलिये अगरखजानेसेभी पैसाखर्चनापडे कोइहर्जकीबातनही.
राजमहेल-कचहरीघर-और-कौतवालीका-मकान-रवंन्नकदार औ
र पायेबंद-बनानाचाहिये. शहरमें सिपाहीलोगोंका पहरा हरव-

रुत चकलेचकलेपरतयार रहे-याते-दंगे फिसादकरनेवालोंकों तुर्त शिक्षा मिलजायाकरे. और-सज्जनगृहस्थोंकों तकलीफ नपहुंचे वैया प्रबंध बनारहे. कइराजे एशआराममें मस्त रहकर विद्याअलम नहींपढते और कहतेहै हमे पढकर क्यालेनाहै?—उनकीअज्ञानताका किस्सा सुनिये!—एकराजासाहबकेपास जाकर एकभाटने कवितसुनाया. राजाजीने खुशहोकर हुकमदियाकि—सवारूपया—इनामदियाजाय!—खजानचीने उसकों सवारूपया दिया. जब—बो—इनामलेकर लोटा तब राजानेपूछा, क्यौरे!—तुजे सवारूपया मिलगया. भाट बोला—हां!—महाराज!!—मुजे बसआने मिलगये. राजा गुस्सेहोकर कहताहै खजानचीकों बुलवाओ!—खजानची आया, महाराज!—क्या! हुकमहै? राजाजी गुस्सेहोकर बेंतोंसे कुटने लगे. और कहतेहै हमनेतो तुजे सवारूपयादेनेकों कहाथा—बीस—आने क्यौं दिये?—इसीतरह तेने मेरेखजानेका नाश करदिया. राजाजीकी बुद्धिमानीकों देखकर भाटसें न रहागया, हाथजोडकर बोला!—महाराज!—सवारूपया—और—बीसआने—एकहीबातहै. राजाजी खजानचीकों—छोडकर—भाटकों तंगकरनेलगे. क्यौरे!! तेने पहिलेहीसें क्यौं नकहाकि—सवारूपया—और—बीसआने—एकहीबात है. देखिये!—अनपढराजाओंकी खूबी!

(४८)—दुनियामें असंख्यराजे वादशाह होगये—लेकिन!—जमीन किसीकेसंग नहीगइ, सबलोग अपनीकमाइ भोगकर खाना होगये—इसीबातकों कोइ सौचले—तो—घरंड—कभी—न—करेगा. सबसें बलवान और दोलतमंद बडाराजा चक्रवर्तीहोताहै. अगरचे सारी दुनियाभी बदलजाय—क्या! हुवा!!—एकिला सबकोंसिधा करस-

कता है. आजकलके राजे बादशाह कमताकत और हथियारसँल-
डाइलडनेवाले रहगये. चक्रवर्ती किसीकी परवाह नरखकर भुजा
बलसें सबको वशमें करता है. एकतर्फ सारो दुनियाका बल-और
एकतर्फ एकीले चक्रवर्तीका बल-कहिये !-विदूनतकदीर एसाहोहा
कौन पासकता है ?-जिसने पूरवजन्ममें तप किया है-देवगुरुधर्मकी
तावेदारी किइ है-और-परोकारकरके धर्मकी बढवारी फेलाइ है-उ-
सीको धर्मज्ञता और राज्यपदवी मिलसकती है, पुन्यकाफल राज
और-पुन्यधर्म-नकरे-तो-नरकगति तयार है.

(४९)-जिनके घर-नवनिधान-चौदहरत्न-सोलहहजार देवते
नोकर-बत्तीसहजार मुकुट बंदरांजे मुजराकरे-खूबसुरतरानीयां-
कौतलघोडे-हाथी-रथ-दिवान-नायबदिवान-डंका-निशान-चौघ-
डीये-गांवनगर-वागवगीचे-राजधानी-रत्नोंकीखाण-सुनाचांदी-
और-लोहेकीखाण-दासदासी-नाटकमंडली-रसोइये-भीस्ती-तंबो
ली-भांड-गोकुल-खच्चर-हल-बंदूक-तापें-मसालची-म्यानेपालखी
और-अष्टांगनिमित्तीये-सदाहाजररहतेथे, छडीचवर-गवैये-और-
वारंगना-जिनकी तावेदारीमें हरखलत उपस्थितरहतेथे-और-जि-
नकी जुतियोंमें अमोलजवाहिरातके नग-झलाझल थे-वेभी-चले
गये-तो-दूसरोंकी गिनती कौन करे ?-चक्रवर्ती जैमे नरहे तो औ-
रोंकी क्याचलाइ ?-जंबूद्वीप-जो-लाखयोजनलंबाचोडाहै उसमें द-
खनदिशाकीतर्फ-भारतवर्ष-एक-सबसें छोटाटुकडाहै. इसकेबडेवि
भाग गिनेतो छहखंड होतेहै. चक्रवर्ती छहोंखंडका मालिक हो-
ताहै. वासुदेव तीनखंडका-मालिक-मंडलिकराजा-उससें छोटा-
मुकुटबंध उससेकम-और-उत्रपति उससेंभी छोटा होताहै. सामंत

राजा-ठाकर-जहागिदार-और-सिरदारवगेरा अपनीअपनी जमीनके राजेही है. दिवान-नायबदिवान-मुवा-राजानही नोकरहै. लेकिन! हां! रैयतके लेखे राजातुल्यही हैं. गवरनरजनरल-गवरनरवगेराहाकिमभी राजानही-राजाकेभेजेहुवे-नोकरहै. बडोकेभेजेहुवे होनेसें अलबते! छोटेकों राजातुल्यही गिनना चाहिये. सबअधिकारीयोंकों मुनासिबहै, न्यायकी सडक चले. एकदिन-वोजमाना था-जो-आर्यखंडकेराजोंकों अनार्यखंडके राजे मुजराकरतेथे,-और-आज-वो-दिनहै-जो-अनार्यखंडकेराजोंकों आर्यराजे मुजराकरतेहै, जब जिसका सितारा तेजहोताहैउसीका जोरशौर फैलजाताहै, कइलोग कहदेते है अपनी अकलहुशियारीसें राज्य मिलताहै, लेकिन!-यहबातगलतहै. जिसका नसीबा तेज हो-उसीकों राज्यका मिलना ज्ञानीयोंने कबूल रखा. हजार अकलहुशियारीकरो और भाग्यमें हकुमत न होतो कभी न मिलेगी.

(५०)-आजकल कइलोग कहदेते है जमीन पचीसहजार मीलके घेरेमेंहीहै. आगे नहीं. लेकिन!-यहवात धर्मशास्त्रोंसें बखिलाफहै. उत्तरदिशाकों सिधे चलेजाओ तो बहोत जमीन-और-आवादी मिलेगी. लेकिन!-जानेवाले वर्षकेसबव-या-शक्तिकी हीनताकेकागण अगाडीजानही सकते. इसीलिये कहदेते है जमीन इतनीही है. लेकिन!-धर्मशास्त्रके फरमाने मुताबिक जमीन बहोत-और-उनकेमालिकराजेभी बहोतहै, राज्यके काममें हरेकों अकलहुशियारीसे चलना चाहियें, विना दरयाफ्तकिये किसीके पक्षमेंसामीलहोना-या-विदून तहकीकातकिये किसीलेखपर दस्तावेजकरना-बहोतबुराहै. वचनका घाव-तलवारके घावसेंभी

ज्यादेहोताहै इसलिये किमीकों कुच्छकहनाहोतो सौचकरकहो. जो आदमी दूसरेकों-रै-रै-तूं-तूं-करकेबुलाताहै वो खानदानके घरानेका नही राजाओंकोंभी-मुनासिबहैकि-जिसकों, बुलानातो उसके होइंमुआफिककहकर बुलाना,—

(५१)—नसाकरना किसीकेलिये अच्छानही, लेकिन!—राजा ओकेलिये—तो विल्कुलठीकनहीकहा. सबकि-रैयतकेन्यायकीडोरी राजाकेहाथमें है. नसेके फंदेमें पडकर कइलोग खराबहुवे है, अपनी फजिती और दुनियाकीहंसी कराना मंजूरहो-वे-मदिरापान करे, संसारमें जितने कुव्यसनहै उनका आधाहिस्सा मदिरापान है. जिसने एकदफे मदिरा पीइली उसकों दूसरीदफेभी पीनेकी इच्छा जरूरहोगी. जैसेकामभोगका सुख दूसरीदफे-जीकों-ललचाताहै मदिरापानभी दूसरीदफेलेनेकीइच्छा जाहिरकरताहै. मगजमें और कलेजेमें दाहपैदाकरना और दिनरातजमीनपरलौटना कौन चतराइकीवातहै!—अगर सवालकियाजायकि-पहेलेजमानमें आर्यलोगभी मदिरापीतेथे-फिर बुराक्याँकर कहतेहो?—(जवाब.)—चाहे-आर्य-या-अनार्य-कोइहो मदिरापान किसीकेलिये अच्छानही. जो पियेगा बडेबडेअनर्थ पैदाकरेगा. मदिरा कइची-जोंकी बनतीहै, जैसेगेहूकेआटका-सत्व-मेंदाहै-मदिराभी-एकतर-हका सत्वहै. लेकिन!—बनावटमें-और-पीनेमें जोजो नुकशानहै इसकेनतीजेपरखयालकर ज्ञानियोंने इसकी मनादीकिइ, अगर को इकहे हमको भोगविलासका सुख मिलताहै इसलिये हम मदिरा पीते है. (जवाब.)—यहवात विल्कूलगलतहै. वल्किन!—इससेतो वीर्यनाडीकों बहोतबडा नुकशान पहुंचकर साराशरीर निकामहोजा-

ताहै. वीर्यनाडीकों ताकतदेनेवालीचीजें दुनियामें थोडीनही है, दूध जायफल-जवत्री-केशर-आसगंध-और-शिलाजित-वगेराक-इचीजें ऐसीहै-जो-वैद्यकीसलाहसं खाइजायतो आशाहै वहोतब्रडा फायदा पहुंचे, लेकिन! अपशोसहैकि-नसेवाजोकों यहचीज क्यों करपसंद होसकेगी!-जिनकों जवरजस्ती लडाइ मौललेना मंजूर है-वे-मदिरापीना कैसे छोडेगे?—

(५२)-अफीम-गांजा-भंग-और-तमाखू-वगेराजितनीनसीली चीजें है उसका खाना पीना-या-सुंघना-नसेवाजोकों-छोडकर कोइ अच्छानही कहता, नसीलीचीजें खानापीना पागल बननेकीनिशानीहै. जिनकों अपनास्वभाव विगाडकर सीरडीवननाहो वो-नसा-करे, कितनेक ऐसे शौकीनहैकि-अपनाव्यसन-अपनीस्त्री कोंभी-लगादेते है. हुक्का-चिलम-या-बीडी-आपपीइकर खुशीकेश थ स्त्रीकोंभी पातेहै, न पीयेतो लोभलालचदेकर पाते है. लेकिन! सौचलो!-इसमें फायदाहै-या-नुकशान?-नसेवाजोका-मुंह-हरव-रुत दुर्गंधवाला बनारहताहै. दूसराआदमी उसकेपासवैठना नही चाहता. अपशोषहै नसेवाजस्त्रीपुरुष जब पासवैठतेहोगें कैसे अच्छा मालूम देताहोगा. अफीम एकवडाविषहै, इसका वहोतखाना अलवते!-हानिपहुंचाताहै. जिसकों रिवाज पडगया हो उसकोंभी अफीमका छोडना कुच्छमुश्किलवातनही, अगरचे दिलमें धार लेवे,-लेकिन!-एकदमछोडदेनाभी नहीवनपडेगा, इसलिये मुनासि-वहै थोडेप्रमाणसं घटातेघटाते विदकुल छोडदे, दूध-और-उसमें थोडा केशरमिलाकर पीया जाय तो सवनसोकों रदकरके शरीरकी दुगुनीतेजी वढायेगा.

(५३)-एकअफीमची नसेकेतारमें छतसें गिरपडा. लेकिन ! यहमालूम नहींहुवाकि-कौनगिरा ?-नोकरसें पुछताहै देखतो !-कौन गिरा ?-नोकरने जवाबदिया, हजूर !-आपही गिरेहै, आपउठकर कहनेलगे-अच्छा !-कोइहर्जनही. मुजे तो तलाशकरना था सोहोगइ. फिर थोडीमीदेरकेबाद आप घोडेसवारहोकर जंगलकी हवाखोरी चले. रास्तेमें नोकर साथही था-आप पुछतेहै अबे !-सहीस !-घोडा किधरहै ?-सहोसने जवाबदिया. आपहीतो सवार होकर चलरहेहो, अफीमची कहने लगे-अबे !-तोभी खयालरखना अच्छाहोताहै, कोइ-ले-न-जाय !-एकअफीमची एकदिन सामकेवख्त दूधलेनेकेलिये अहीरकेघर गये. लोटा अहीरनके हाथ सोंपकर कहनेलगे इसमें दूधदेना-आप !-अहीरनकेघरकेसामने थोडीसीदूर एकदिवारकेशाथ टेकालगाकर खडे होगये. अहीरनने दूधभरके पास रखदिया. लेकिन ! अफीमची नसेमें चकचूर हुवे कुच्छमालूमनहीकि-अहीरन घरकेभीतरसें दूध लाइ-या-नही !-नसेकेतारमें दिवारकेसहारे वहांहो खडेरहेगये. और सारोरात उंघतेरहे. सवेरका वख्तहोनेलगा जब अहीरन पैशाबकरनेकेलिये घरसें बहार निकली, अंधेरेमें अफीमचीकेपास थोडीदूर पैशाबकरनेलगी. अवाजहोनेपर अफीमचीकी कुच्छनींद खुली. दिलमें सौचनेलगे हमारेलिये दूधमें पानी-न-मिलातीहों !-अवाजसें बोले अबे ! रंडी !!-हमारे लोटेमें पानी मतमिलाना. अहीरन हसकर कहने लगीआप यहांहो खडे हैक्या ! अफीमची शर्मिंदे होकर कुच्छनही बोले-और-घरकों चलेगये. अफीमचीयोंकी लीलाका कहांतकवयान करें.

(५४)-भंगपीनेवालाभी नसेमें चकचूररहताहै. लेकिन!-हां! मदिरा और अफीमसें कुछ इसमें नया थोडारहताहै. भंगपीने-वालोंकी कोषग्रंथी पानीउतरनेसें बढनेलगतीहै. उसके वीर्यमें विकारहोनेसें औलादहोनेमें भी-खतराहै. और होभीजायतो किसी लाइक नहीं निवडती. राजाओंके वर्ननमें नसाकावयानलिखना इसलिये मुनासिबआयाकि बहुधा राजेमहाराजेभी नसेमें पडकर बडीबडी तकलीफ उठातेहै. अंग्रेजलोग-गांजा-और-भंगवगेरा-नसेकेपदार्थोंका व्यवहारकरनेवालोंमें कानून बनातेहै और कमीशन नियतकरतेहै. लेकिन! शरावपीनेवालोंपर कानूननहींबनाते-इसकासबब-यही जानपडताहैकि-वै-खुद-शरावप्रियहै. विलायतमें इतनीशराव खर्चहोतोहै-जितनीमिठाइवगेरा खर्च नहींहोती.

(५५)-शिकारखैलनाहोतो-हमकहे उसका खैलो. क्रोध-मान माया-और-लोभ-ये-आत्माके असलीशत्रुहै इनको मारना-इसी-कानाम-असलीशिकारहै, अगर तुमकोशिकारही खैलनामंजूरहै इ-नहींका खैले. जैसे तुमाराशरीर तुमको प्याराहै जानवरोंको अ-पनाशरीरप्याराहै. उनपर हथियारचलाना कौनसी बहादूरीकी बात हुइ?-कोइगुनेहगार मुहमें घासकेतुणकेलेकर सामने आजाय तो क्षत्रीपुत्र उसको फौरन छोडदेतेहै-विचारे खुद मुंहमेतृणालिये हुवे-उनको मारना कितना अन्यायहै?-क्षत्रीपना इसमेंनही जो वे गुनाहवेतकसीर किमीजीवका बधकरना, गुनेगारकोभी उसके गु-नेमुआफिक ताडनादेना न्यायहै, लेकिन! शिकारखैलना कोइ न्यायनही. अगरकहाजायकि-पहिलेजमानेमें आर्यलोगशिकार क-रतेथे, (जवाब)-यहवात गलतहै. हवाखोरीको जाना शिकारन-

हीकहाजाता, राजे महाराजे-या-कोइ-दूसराहाकिम-हवालेनेको-जाय और जीवोंको नमारेतो-इसकानामशिकार नहीकहेगें. आब हवा बदलनाकहेगें. जिसजीवकों वधकियाजाता है वह फिरकभी अपनेको वधकरेगा, जिनको इसबातपर यकीन नही वेही-अनस-मजलोग-शिकार खेलते है.

(५६)-कइ राजे-शिकारके फंदेमें-पडकर जानछोडके चले गये, कइ ऐसेघायलहुवे जो सारी उमरतक यादकरते रहे-सिंहके सामने जैसे वहबिनाहथियारहै वैसे हथियारछोडकर कोइ राजा शिकार नही खेलता, वडेबंदोबस्तकेसाथ-मकानके घैरेमें छीपकर छलकपटसें शिकार खेलते है. लोभदेकर मारते है. कहिये!-यहकौ-नसी बहादूरी और क्षत्रीपनेकी बात है?—क्षत्रीपन उसकानाम है जो धर्मकीरक्षाकरना, और दुखीमनुष्योंको शरणदाता होना.जानवरोंपर लालआंखकर तीखेंभालोंकी मारचलाना कहोतो सही!-कौनसीबहादूरीका काम है?—दिलकों पथ्थरबनानाहै-तो-तुमारे खोटेकर्त्तव्योपर क्यों नही बनाते?—राजनीतिभी यह नहीफरमातीकि-बिनाअपराधीकों मारो, नीतिशास्त्रका वचनहैकि-अपराधीकों भी मारो तो न्यायसें-उसपर सबूतीपहुंचाकर मारो. प्रथम श्याम-दाम-दंड-वगेरान्यायद्वारा शिक्षादो-इतनेपरभी नमाने तो हथियारसें लडो, लेकिन ! तोभी उसको इतलादेकर-नकि-दगल्ल वाजीकरके-लडना. अन्यायसें किसीपर कदम न उठाओ. कहिये!-हिरन-शशे-सुअर-और-मछलीओंने तुम्हारा कौनसा गुनाह किया है?—जो-उनके प्यारे प्राणोंका विछोहा करडालतेहो.

(५७)-आपकी चठीहुइ भ्रूकुटीदेखकर जब बनचरपशु-इधर

उधर दौड़ते हैं-शरीर उनका थरथरकांपने लगताहै-तब-आनंदत-
 रंगे-आपकों खूबदिवाना बनाती है. इसीकानाम आप लोगोंने-
 (जिनकों शिकारखैलना-मंजूरहै)-शिकार समझरखाहै, लेकिन!
 असलपुछोतो यह शिकार नही कुव्यसन है. शांतनुराजा इसकु
 व्यसनसे-बडादुखभोगचूका है. शिकारीआदमी किसीकी दिइनसी
 यत नहीमानता. हां!-अगरशिकारमें गिरपडे-या-कोइजानवर-
 आनकर फाडखाय तभी सिधाहोताहै. अगर कोइज्ञानी आदमी
 उसे मनाकरेतो-वह-कव मानताहै?-पापीआदमी विनाशिक्षापाये
 अपनापाप नहीछोडता. अगरसवालकियाजायकि-शिकारी-ह-
 जारोंजीवोंकों मारडालताहै लेकिन!-इसजन्ममें उसको रोग क्यों
 नहो सताता?-या-उसकेशरीरमें कीडे क्यों नही पडते?-(जवाब)
 जबतक उसकेपूरवजन्मको खरची पुरीनहीहुइहै तबतक उसकों
 सुखकाअभाव कैसे होशकताहै?-(जब खरचीपुरी होजायगी-पाप-
 का-फल-जरूर भोगेगा. वर्त्तमानमें चाहे नमानो-लेकिन!-अगा-
 डीकों वडादुख भोगना पडेगा. जो लोग-पुन्यपाप-और-स्वर्गन-
 रक-नहीमानते है उनकों धर्मशास्त्रपर श्रद्धा बिल्-ल नही आती.
 विद्वान् आस्ता धर्मकीजड लगना मुश्किलहै, ऐसे नास्तिकलोग
 अगर अपनीकुतर्कोंसे ज्ञानीयोंका-कहना-नमाने तो-उससे ज्ञानी-
 योंका-कुच्छविगाड नही, विगाड, उन्हीमूर्खोंका है जो-अपनेही पां-
 वपर कुहाडा मारते है. सच्चानास्तिकहमउसकों समझतेहैजो हमारे
 इसनीचेलिखे सवालका जवाब देवे. (सवाल,) अगरचे पांचतत्व-
 के संयोगसेही जीवकी पैदाशरूहतेहो-तो-वतलाना चाहिये पांच
 तत्व-जडहै-या-चेतन?-अगरचे चेतनहैतो उनमें आत्माकीसिद्धि

विदूषण पांचतत्वके संयोगसें हुई?—तो तुमको मंजूर नहीं, अगर क-
होगे जड है—तो—जडसें चैतन्यकी पैदाशहोना असंभव है. इधर भी
तुमको मुंह खोलनेकी जगह नहीं, वस! इसीसें मालूम कर सकते हो
कि—नास्तिकोंका मत—झूठा है. शिकारखैलनेवालोंका इरादा सदैव
जीवमारनेमें लगा रहता है, और धर्मशास्त्रका फरमाना यह है कि—
भलेबुरे इरादेहीसें पुण्यपापकी पैदाश है, इसलिये हर आदर्मीयोंको
मुनासिब है कि—शिकारखैलना पापसमझकर छोड़ देवे.

(५८)—नसेका—और—शिकारका—बयान—राजाओंके वर्णनमें
इसलिये लिख दिया गया है कि—बहुधाराजे महाराजे इसीव्यसनमें प-
डकर दुखी होते नजर आते हैं. अगरचे छोड़ देवे तो निहायत उमदा
बात है. आर्यावर्तके समस्त धर्मशास्त्र—और—इतिहासिकग्रंथोंका—आ-
शय है कि—अवलसें—यहां—क्षत्रीजातिका स्वतंत्रराज्य—चला आया. कि-
तनेका विदेशी इतिहासकार—चीन—जापान—वगैराको पुरानाराज्य
बतलाते हैं लेकिन!—नहीं!—सबराज्य—और—रीति रसम—पहिले भा-
रतवर्षहीसें (यानी.)—मध्यखंडहीसें प्रचलित हुई है. किसीजगह ज्यादा
और—किसीजगह कम—लेकिन!—सबतरहके न्याय—कलाकौशल्य—वि-
द्याविनोद—और—चतराई—इसीमध्यखंडसें जारी हुई ऐसेकहेनेमें कोई
हर्जनही है, धर्मशास्त्रोंका फरमाना है कि—सभीदिन एकसरीखे कि-
सीके नहीं होते, पहिलेजमानेमें आर्यराजाओंका ऐसा पुण्य था कि—
वे—अनार्याधीशोंको अपनी छायामें रखते थे, और आज—बो—दिन है
कि—आर्यराजे—अनार्याधीशोंकी छायामें हो रहे हैं. इसीका नाम स-
मयका—फेरफार है. जिसमुसलमानोंने इसजमीनपर हकुमत जमाई थी
आज वहीजमीन अंग्रेजोंकी हकुमतमें विराज रही है, राजेमहारा-

जोकों जबतकन्यायका आधारबनारहताहै कभी उनकी पडतीदिशा नहींआती. जोराजा-न्यायसे-नाकचढाताहै-वो-शतरंजका राजा है. उसकों असलीराजा कोइनहीकहता. यह संपूर्णधर्मशास्त्रोंका फरमानाहैकि-जबकिसीआदमीकों हदसेज्यादे घमंडआजाय जाननाचाहिये-इसकीपडतीकेदिन आये, रावणनें घमंडकिया राज्य-संभ्रष्ट हुवा. मुसल्मानीअमल्दारीमें-बादशाहोंने-वजीरोंने-मुल्ला-ओनें-जबबिल्कुलअन्याय किया उसीदिनसें उनकीघटवारी होती गइ, बाद दरख्वानकेपेशवोंने कुच्छदिन अपनाप्रतापसूर्यप्रकाशित किया-लेकिन !-जब अन्यायपरपांव बढानेलगे उसीदिनसें सिकस्त खातेगये. कोइदिन पंजाबके सिखखोंका सितारा तेज रहा. लेकिन !-जब-उनलोगोंनेभी प्रजापर अन्याय चलाया-और-आसपासके राजोकों घासकेवतौर समझे-तभी-उनकाराज्य नष्टहो-गया. निदान !-अन्यायकी सडकचलना किसीकेलिये अच्छा न-ही. जो चलेगा रंज उठायगा.

(५९)-अंग्रेजोका-निष्पक्षपातन्याय-इसवरुत जगतप्रसिद्ध है. इनका अवलदर्जेकान्याय यहहै कि-जोशखश जिसधर्मकाहै उसके शाय धर्मत्रिरुद्धकाम नहींकियाजाता, संवत (१९१४) के बादगद-रसें यहभीप्रतिज्ञाहैकि-हम-अपनेसभीधर्म-और-सभाजातिकीप्र-जाकों-समदृष्टिसें देखेगें. धर्म-तथा-रंगमें-किसीतरहका पक्षपात नहींकरेगें. आजकल जो किसीकिसीन्यायमें अन्यायांश दिखप-डताहै इसमें कानूनका दोषनहींसमझना चाहिये, दोषहैतो-अयो-ग्यन्यायकर्त्ताओंका है, जोकि-थोडेअपराधपर ज्यादे-और-ज्या-देपर थोडादंड डेकर फैसलादेते है. कभीकभी यहभीहोजाताहैकि

न्यायकर्त्तागण-विनासंतोषदायकप्रमाण मिलेभी-पकडलायेहुवेश-
खशकों-अपराधी ठहरादेतेहै. यह भी कानूनकादोष नहीं कहेंगे.
न्यायकर्त्ताओंकाही दोष कहाजायगा. दूसरे-जबकोइ आदमी-अ-
पनीबदचलनऔरत-मारडालनेकेलिये-दोषित-ठहरायाजाता है-त
व-न्यायकर्त्तागण-उसकेचित्तकेभावोंमें-उसव्यभिचारिणीस्त्रीके कु-
कर्मसें उससमय क्या भाव उत्पन्नहुवाहोगा-उसपर गौर नकरके-
उसकों खूनकरनेका-अपराधी ठहरादेतेहै इसपर धर्मशास्त्रका क्या
अभिप्राय है इसकों सोचना चाहिये. खेर!-हजार आक्षेप पैदाहो
कोइहर्जनही-लेकिन!-हां-वर्त्तमानमें राज्यनीतिप्रवर्तकोंका है इस
कहनेमें कोइ दोषनही है.

(६०)-इंग्लंडमें पार्लमेंटकीस्थापना इस्वीसन (१६४०) के
अंदाजनहुइ. सन (१६६५) में-न्युजर्पेपर निकलना शुरुहुवा. इ-
स्वीसन (१६९४) में-डाकखानेजारीहुवे. सारीदुनियामें जितने
डाकखाने अलगअलगराजे महाराजे-रानी-बेंगम-बादशाह-और
शहनशाहवगेराकी तर्फसेंजारी है उनमें-(६०००)-छहहजारतरह-
कीटीकीट चलरहीहै. किसीपर राजारानीकीतस्वीर-कोइपरहाथी
घोडा-सिंह-सांप-सवारवगेरातरहतरहके चित्र बनेहुवे मौजूदहै.
बोलीका हिसाब लगाकर देखागयाहैकि-जगतभरमें (३४२४)-त-
रहकी भाषा बोलीजातीहै. इनमेंसें (९३७) एशियाखंडमें (५८७)
यूरोपमें-(२७६) अफ्रिकामें-और-(१६२४) अमरिकाखंडमें-बो-
लीजातीहै. सबभाषामें पुरानीभाषा कौनहै!-इसकेनतीजेपर ख-
यालकियाजाय तो संस्कृतसें कोइबढकर नहींहोसकती. कइभाषा
इसकेसामनेपैदाहोकर गिरचूकीहै, सबमें फेरफार होताचला आ-

या इसमें एकमात्राकाभी कोई फेरफारनहीं करसका. इसकेनिय-
मही ऐसेहैंजो इस तोडकर कोई नया नहींवनासके, भारतवर्षके
मध्यखंडकी यही मातृभाषा है, और जितने कलाकौशल्यके ग्रंथ
हैं इसीभाषामें बने हुवे हैं इसीकेजरीये-कहसकतेहैंकि-जितनी-
कलाकौशल्य-विद्याविनोद-न्याय-और-चतराइ दुनियामें फैली-
यहांसेही उत्पन्नहोकर फैलीहै. ज्यादातर ज्ञानीयोंकी पैदाश पूर्व-
कालमें यहांहीहुइ, उन्हींकेज्ञानसमुद्रका विंदु दूसरेदेशवाले लगये
और-आज-सभ्यताकाझंडा-उडानेके अधिकारी बनेहैं. और क-
हते हैं संस्कृतवाणी-अंग्रेजी-और-उर्दूके-आगेकुच्छचीज नहीं. ले-
किन!-अंग्रेजी-तो-क्या!-उर्दूभी-जो अपनेआपको साफवर्ननक-
ररही है संस्कृतकेआगे बहोतकमजोरहै. संस्कृत-और-प्राकृत-दो-
वाणीको-सबसे अवलदर्जेकी कहदो-कोइहर्जकीवात नहीं. इनके
गौरवको कोईभाषा नहीं घटासकती. उर्दूअक्षर ऐसे अपूर्ण और
कठिनहोतेहैंकि-अगर-आलूबुखारा-लिखाजायतो-उसे-उल्टु वि-
चारा-पढाजाताहै, धन्य!-उर्दूमहारानी!!-तुम!-देववाणीको इ-
रानाचाहितीहो?-लेकिन!-तुम्हीं हार जाओगी,—

(६१)-भारतके मध्यखंडकेअधिकारी आजकल-अंग्रेज-है.
अंग्रेजोंको भारतकाही ज्यादा आसानमाननाचाहियेकि-जिससे-
विकटोरियारानीको-राजराजेश्वरी (एम्प्रस) की-पदवी-प्राप्तहुइ
जितने उपद्वीप-अंग्रेजोंके-हाथमें है उनमें किसीकीताकतनहीं जो
भारतके मध्यखंडकी बरावरीकरसके, जितनेधनकीप्राप्ति अंग्रेजों-
को भारतसेहोती है उससे अर्द्धांशभी दूसरे उपद्वीपोंसे नहींहोती.
मिसर-काबूल-और-आफ्रिका-वगेरा स्थानोंमें भारतीवीरोंहीने ल-

डकर अंग्रेजोंको विजयप्रदान किइ, जिससे अपनेको फायदाप-
हुंचे उसका आसान मानना चाहिये. रैयतसमझती है राजाओंको
बडाआराम होता है लेकिन!—शाथमें यहभीसमझना चाहियेके—
ज्यादेहकुमतवालोंको—तकलीफभी ज्यादाही रहतोहै. संसारके रा-
जाओंकी आमदनी—और—करजतरफ—खयालकरो—तो—यहीजाहिर
होगाकि—बडोंको जितनाआराम—उतनीचिंताभी—शाथलगी है. रु-
सके जारकी आमदनी—एकदिनमें पांचहजारपौंड—सुल्तानटर्कीकी
(३६००) पौंड—शहनशाहआस्ट्रियाकी (२०००) पौंड—शहनशाहज-
र्मनीकी (१६००) पौंड—शाहइटली—भारतेश्वेरीविकटोरिया—और—
शाहबेलजियममेंसे—प्रत्येककी (१३००) पौंड—प्रेसीडेन्टफ्रांसकी
(१०००) पौंड—और—प्रेसीडेन्टयुनाइटेडस्टेट्स (संयुक्त अमरिका)
की—(२५०) पौंड—दैनिकआमदनी है. एकपौंड आजकल (१६)सो-
लहरूपयेमौलका समझना चाहिये.

(६२)—अंग्रेजीराज्यका प्रबंध—लंडनमें जहां मल्कामहेजमा र-
हतीहै दोस्थानहै. एककानाम लार्डहाउस—दूसरेकानाम कामन्सहा-
उस—पहिलेमें जो गवर्नरजनरल भारतसे पीनसल पाकर जाते है
दाखिलहोते है. और दूसरेमें बहुसंमतिद्वारा चुनेजाकर दाखिल-
होते—और—ये—सब—पार्लमेंटके मेंबर कहलाते है. इनकेउपर मल्का-
विकटोरिया—प्रेसीडेंट—है. (यानी)—प्रमुखहै. उसपार्लमेंटके—आधीन-
एकसेक्रेटरी औफ स्टेटस्है. जिसकानाम संस्कृतमें महामंत्री भार-
तवर्ष है. उसपार्लमेंटकी तर्फसे भारतमें एकगवर्नरजनरल रहताहै.
और उसकेशाथ सेक्रेटरी ओफ स्टेटकी लिखापढी होती रहाकर-
तीहै. भारतमें गवर्नरजनरलकीतर्फसे एकसभा—(यानी)—कौन्सल

है. जिसमें बड़ेबड़ेदेशीराजेभी सामिलहै, और उसमें भारतसंबंधी कानून बनायाजाताहै. गवर्नरजनरलके आधीन-एक कमांडरचीफ है. जिसको जंगीलाट कहतेहै, यह संपूर्ण भारतमध्यखंडसैनाका अधिपतिहै. बंबइ-और-मद्रासमें एकएक गवर्नर रहतेहै. इनका पद-गवर्नरजनरलके पदसे-इतनाछेटाहै जितना पार्लमेंटके पदसे गवर्नरजनरलका-और-सबसामग्री-इनकेपासभी अपनेअपने हाते में स्वाधीनहै, इसकोशिवाय-कलकत्ता-इलाहाबाद-लाहोर-ये-तीनछोटेहातेहै. इनमें एकएकलेफ्टेंटगवर्नर रहतेहै, जो संपूर्णकार्योंमें गवर्नरजनरलकी आज्ञा पालन करतेहै. और लखनौ-नागपुर-आसाम-ब्रह्मा-लंकामें-एकएकचीफकमीशर-रहतेहै. इंदोरमें एक एजंटगवर्नरजनरलभी रजवाडोंपर रहतेहै. ये-सब-गवर्नरजनरलके आधीनजानना. बडागवर्नरजनरल-और-कमांडरइनचीफ-शीतकालमें कलकत्ता-और-उश्कालमें-शिमला रहतेहै, या-देशाटन-करतेहै. और बंबइ-मद्रासके-गवर्नर अपनेअपने इलाकेमें इसीतरह करतेहै. लेकिन!-कलकत्तेका लेफ्टेंटगवर्नरनरउश्कालमें कलकत्तेके किलेकी अंग्रेजीकमेटीका प्रमुख कहलाताहै और उसके इलाकेका नाम बंगाल-इलाहाबादके इलाकेका नाम पश्चिमउत्तर-लाहोरवालेके इलाकेका नाम पंजाब-ब्रह्माआसामका ब्रह्माआसाम-नागपुरका मध्यप्रदेश-लंकाका सिलौन-लखनौका अवध-और-इंदोरका राजपुताना-कहलाताहै. इनकेतावेमें कमीशर-और-उनकेतावेमें कहीं कलकटर-और-कहीं डिष्टीकमीशर-एकएकजिलेके मालिक होतेहै. अपनेअपने सूबेमें जैसे गवर्नर-या-लेफ्टेंटगवर्नर-बड़ेहाकिमहैवैसेही कलकटर-या-डिष्टीकमीशरको-समझों.

(६३)-क्वीनविकटूरियाने इंग्लंडकाराज्य (६०) वर्षसें ज्यादा भोगा. साठवर्षसें पहिले इंग्लंडमें रैल नही थी. तार-न-था, जहाज-न-था, विकटूरीयाहीकेराज्यमें अंग्रेज-भारतके सर्वमय-कर्त्ता-हुवे. अफ्रिका-और-आष्ट्रेलियामें-प्रभुत्व-बढा, यहांतककि-क्रिमियाकी-लडाइमें-रुसकों-निचादेखाकर-अंग्रेज-दिग्विजयी होगये. जिसवख्त जिसकासितारा तेजहोताहै उसीकी रौशनी झल-झल चमकने लगती है. जगहजगह-रैल-और-तारकेहोजानेमें एक स्थानकीबनीहुइचीज-दूसरेस्थान जलदी पहुंच सकतीहै. कितनेक बहुदर्शी-अंग्रेजव्यापारी-कहरहे हैकि-विलायतका माल भारतमें-बंबइ-या-कलकत्तेमें-जाकर-जहाजकेजरीये उतरताहै, वहांसे पंजाब-राजपुताना-अवध-बुदेलखंडवाले-रैलद्वारा-अपनेदेशोंमें ले-जाते है, इससें उनकों दुगुनाकिरायावगेरा खर्च होताहै. अगरविलायतसें जहाजद्वारा माल-करांची-उतारदियाजाय-और करांचीसें-दिल्लीतक रैल बनादिइजाय-तो-उक्तदेशवालोंकों-थोडेखर्च में-विलायतका माल पहुंचसके.

(६४)-अखबारोंमें जाहिर होचूकाहैकि-जगतमें रैलके अंजन एकलाख और नवहजार चलतेहै. इनमेंसें यूरोपमें (६३) हजार एशियामें (३) हजार-आष्ट्रेलियामें (२) हजार-आफ्रिकामें (७००) और-बाकीरहे-सो-अमरिकामें चलतेहै. कितनेक कहदेते है जो जो विद्या और ऐलम-आजहै-पहिलेजमानेमें नही थे. (जवाब.) यह बात गलतहै, वलिकन्! जोजो विद्या-चातुरी-पहिलेथी-अब नहीरही. त्रिकालज्ञपुरुष पहिलेजमानेमें होगये अबनहीरहे. जोजो कलाकौशल्य-और-चातुरीकेग्रंथ-पहिले कालमें थे उसकेद्वारमें

हिस्सेंभी अब नहीरहे. पहिलेकालमें रैलनहीथी तो मनुष्योंको आकाशगामिनीविद्या सिद्ध थी. विद्याकेवलसे विमानबनाकर उसमें लाखोमनुष्योंको बैठाके एकगांवसे दूसरेगांव लेजातेथे. शास्त्रोंमें सुनतेहीहोकि—अमूकविद्याधर—अमूकशखशकों—यहांसे—वहां लेगया रामचंद्रजी—लंका—जीतकर अयोध्या आये जब विमानद्वारा आकाशमार्ग आये. सोचो!—अगर उसवख्त आकाशगामी विमान नही चलतेथे तो—यह लेख क्यों होता!—रैलकों रौकनेकेलिये एकपथर काफीहै विद्याधरके विमानकों पहाडभी नहीरौकसकताथा. टेशनमास्तरोंकी असावधानीसें जब—दोंनोंरैल—आपसमें—लडतीहै. या—पटरीसें गिरजाती है—उसवख्त—जोकुच्छतकलीफ उठानीपडती है विद्याधरोंके विमानमें यह बात कब होतीथी?—रहा—तार—घडी—फोटोग्राफ—और—छापखाना—सो—जैसे—दूसरीकइचीजें—चतराइकेता ल्लुकहै—येभी—चतराइसें बनाइगइहै. जिसकेपास—बुद्धि—और—दोलत—दोंचीजे—मौजूदहो वडेवडेसंचे—और—कारखाने—बनासकता है, इसमें चकितहोनेकी कोइवातनही, अनादिसंसारमें कइरीतिरसमें चलती—और—बंदहोती चलीआइ, हां! इतनाजरुर कहेगेंकि—कोइ रीति—मध्यखंडकेलोगोंसें जारीहुइ और—कोइ अन्यखंडकेलोगोंसें हुइ. कइ कलाकौशल्य और चतराई—आर्यखंडसें बंद होकर अनार्यमें—और—कइ अनार्यखंडसें—बदहोकर आर्यखंडमें चलती रही. किसीवख्त आर्यखंडकेवासीदोंका पुन्य प्रवल रहा—किसीवख्त अनार्यखंड निवासीयोका रहा. सदा एकसरीखे दिन किसीके नहीरहते.

(६५)—कइलोंग समझरहे हैकि—रूपडेबूननेकी—कल—अंग्रेजोंसें चली है लेकिन! यहवात गलतहै, चीनदेशमें इसामसीहके जन्मसें

(३०००) तीनहजारवर्ष पहिले कपडेंबूननेकी कल मौजूदथी और इसामसीहसें(३०००)तीनहजारवर्षपहिले-चीनमें-नोंटभी-चलताथा, रुसके-अजायब घरमें-अबतक-एक-इसामसीहसें (२) दोहजारवर्ष पहिलेका-नोंट-रखाहुआहै. ये-नोंट-रेशमीकागजपर-नीलीस्याही-सें छपते थे. कइलोग-समझरहे है-नोंटका-चलाना-अंग्रेजोंहीसें जारीहुवाहै. लेकिन !-नही !-पहिलेभी चलता था. इससेंकहसकते हैकि-अनादिसंसारमें अपारकलाकौशल्य चलाआताहै, कभी-कम-और-कभीज्यादेहोना यहतो एककुदरतीनियमहै, लेकिन !-जो लोग कहरहे हैकि-पहिलेजमानेमें अंधेरा था अब उजाला हुवाहै उनकों सोचनाचाहियेकि-इमाराकहना कहांतक सच्चहै, ?—

(६६)-काठकेकबूतर उडजाना-और-फिर वहांही आजाना-काठकी मख्खी-अंगुठेपरसें उडकर घरमें घुमआना. बोलनेवाली पुतली-जिसकों कहो अवाजसें बुला ले, काठका वानर सारंगीब-जाकर गान करे, दरबजेपर काठका कुत्ता-बंदूकउठाकर पहरादे-वे. और कोइ उसे हाथलगावेतो दांत किडकिडाकर उंचीअवा-जसें भौंके, शतरंजका खिलारी शतरंजबिछाकर संदूकपर बैठे और सच्चे आदमीके सामने खेंलखैले. अगर आदमी भूलकरे तो काठका-खिलारी संदूकपरथापदेकर हंसे, जैसे-ये-चीजें-शिल्पशास्त्रोंके जान-नेवालोंने भारतमध्यखंडकी शिक्षासें बनाइ है-वैसे-तार-फोटोग्राफव-गेराभी परमाणुओंके-संयोग-और-आकर्षणद्वारा बनाइगइहै. जैनशा-स्त्रोंका लेखहैकि-हरेकचीजमेंसें हरवख्त-आठस्पर्शीपरमाणु निकसते और प्रवेशहोतेरहते है, अगर यह वात नहोतीहो-तो कालांतरमें जवान बूढा-और-नयीचीज-पुरानी-क्यौंकर हो सके ?-आरीसेमेंजब-अपना

मुखदेखाजाताह तो शरीरसें निकसेहुवे जो परमाणुं उसपर जा-
गिरेहै वही अपनेकों दिखते है. वस ! वही परमाणुं द्रवाकेजोरसें
वहांहीलगारहनेकी तरकीब बनादिइगइ-इसीकानाम-आलोकयंत्र
या-फोटोग्राफ-कहागया.

(६७)-यह ज्ञानीजनोंका फरमानावहोतठीकहैकि-मांसआ-
हारीयोंकेदिलमें रहेमनहीहोती. अन्नपानीखानेवाले-अध्यात्मिक-
यानी-धर्मी-ज्यादे-और-मांसाहारी-भौतिक-अर्थात् वैभवके चा-
हनेवाले ज्यादेहोते है, ज्यादे पापारंभकरके दौलतपैदाकरना अ-
ध्यात्मिकों कों नामंजुर और भौतिकोंकों मंजुरहोताहै. ज्ञानीयोंके
वचनोंपर खयालकरते है तो दौलत शाय नहीचलती-धर्म-शाय च-
लेगा. देशका हितचाहना-और-वाणिज्य व्यापार अच्छाचले-वै-
सा-पबंधकरना-राजाओकेलिये वेशक ! मुनासिबहै लेकिन !-धर्मकों
सावतरखकर-नकि-खोकर कोइ कामकरना, औरकुच्छ-बबनेतो
मांस-मदिरा-शिकार-चोरीयासी-और-दगावाजी-तो-जरुर-छोडना-
चाहिये-जोलोग-धर्मकों कुच्छचीन-न-समझकर कोरीजवानजोरीक-
रते है-वै-आदमी-नही-जानवर है, जोजो राजेमहारसजे नीतिसें
चलते है उनकी सबलोग तारीफकरते है, धर्मशास्त्रके फरमाने मु-
जब उनकों स्वर्गलोगकी गति मिलेगी. राजाओंकों रानीयें कइ-
होतोहै लेकिन !-अपशोष हैकि-वै-सबकों एकसरखी खुश नहीर-
खते. मुनासिबहै सबकों एकसरखी-पोंशाक-गहने-और-जहागीरी
देवे. कमीवेंसी करनेसें हुनियामें तारीफनहीहोती, यद्यपि किसी-
पर-ज्यादे-और-किसीपर-कम-मोहवतरखना यहतो होसकताहै
लेकिन !-नोभी-चाहियेकि-जिसकोंहाथपकडकर लायेहो-उसे-वे

गुनाह-बेतकसीर छोडना नही, हां!-जो-बदचलन-या-हुकमअ-दुली-करती हो-उसे-बेशक ! छोडदेना कोइहर्जकी बातनही. ले-किन!-वैश्याओंके वशमें पडकर खासरानीयोंकों-तकलीफदेना किसीसुरत अच्छानही. कितनेक ऐसेभी देखेगयेहैकि-वैश्याओंके ताबेदार बनकर बडेबडेअन्याय करचूके है, वैश्याओंकों-गांव-न-गर-जमीन-या-अपने पहेननेका गेहना देदेना कोइ न्यायमार्ग नही. अगरचे आपको यहीमंजूर है कि-अपनी पासवनकों खुश करना-तो-खैर!-उसे-लाख-दोलाख-पांखलाखरुपये देदो, नोकरचाकर रखदो-अपनी मरजीकीबात है, लेकिन!-महैलसँ अलग-और दू-ररखना अच्छाहै. याते अपनी खासरानी और बेटोंकों तकलीफ नपहुंचे. चक्रवर्ती-और-वासुदेव-वगेराकों हजारें रानीयें होतीथी, लेकिन!-वे-न्यायवान् किसीकों दुखनहीदेतेथे. उनके शरीरमें य-हभी ताकतथी कि-रात्रीकेवख्त-रानीयोंकेपास-वैक्रियलब्धिकेप्र-भावसँ-एकहीवख्त-अनेकरुपकरके जाते थे. अर्थात् जितनी रा-नीयें उतनेस्वरुप-बनाकर-उनकेपास जाते थे. हजारोंरानीयोंके श्राथ भोगकरनेसँभी उनकों रोग नहीहोताथा. आजकल वह पुन्य-वानी कहांरही?-जितनी है उससँभी घटवारी होतीचली जारहीहै. पुन्यकियाथा तो राजे-बनेहो-अब मुनासिबहै न्यायसँ चलना. बें गुनाह-बेतकसीर-किसीकों कैद करना-गोलीसँ मार देना-तल-वारसँ कतल कसदेना-या-जरीमाना लेकर उसकी इज्जतमें धब्बा लगाना. किसीसुरत अच्छानही है.

(६८)-इक्ष्वाकुवंश-सूर्यवंश-चंद्रवंश-हरिवंश-यादववंश-मो-र्यवंश-त्रिलोक्यवंश-चावडावंश-शौलंकीवंश-कदंबवंश-परमारवंश

शकवंश-और-गुहिलवंश-वगेरा कइवंश दुनियामें मौजूदहै, लेकिन !-इनमें-इक्ष्वाकु-सूर्य-चंद्र-हरि-यादव-और-मौर्यवंश-ज्यादे प्राचीन है, रिषभदेव-इक्ष्वाकुवंशके थे. उनके (१००) वेटेहुवे. भरत सबसेबडाथा, उसके सूर्ययशा बेटाहुवा, उससे सूर्यवंशीराजोंकी शुरुआत हुइ. बाहुवली-जोकि-भरतसे दूसरेनंबरका था उसके चंद्रयशा बेटा हुवा. उसकी औलादमें जोजो राजेहुवे-वें-चंद्रवंशी-कहलाये, इसीतरह-अपनेवडेरोंके नामसे-या-उनकीकिइहुइ नैकी-से-उनकेवंशकी पैदाशहोतीचली आइ. जैसे श्रीपालजीके वख्तमें सातसेसुभदोंने बहादूरी किइ जिससे-राणे-कहलाये. इसीतरह असंख्यवाते है, कौन कहांतक गिनतीकरे ?-अपारसंसारमें वंश और गोत्र बेंगिनत होचूके. रिषभदेव-काश्यपगोत्रके थे. मुनिसुव्रत-और-नेमिनाथजीकों छोडकर-और तीर्थकरभी-काश्यपगोत्रमें-हुवे, वारह चक्रवर्तीभी इसीगोत्रमें हुवे है, जितने यादववंशीलोगहुवे सब गौतमगोत्रमें समझना चाहिये.

(६९)-कइराजे-गायनकलामें लीन रहकर न्यायकों भूलजाते है, कइ-वैश्याओंके-नाटक देखनेमें राजीरहते है, कइ-कामभोगमें आसक्तहोकर हजारान्हऔरतोंसे महोबत करते है, कइ-चित्रांमदेखने बनानेहीमें लगेरहते है, और कइ-देशाटनकरनेमें सारी उमर पूरीकर राज्यकार्यकों एकतर्फ रखदेते है, लेकिन !-नही !-राजाओंकों सबसे ज्यादा यहीवात मुनासिवहैकि-प्रजाके-न्याय-करनेमें-हरवख्त खयाल रखे. नाटक-रंगराग-स्त्रीसंभोग-और-देशाटन-कौनकों अच्छानहीलगता ?-सभीकोंप्यारा लगताहै, कौन नहीचाहताकि-हम-ऐशआराम-न करे !-लेकिन !-तारीफ उनकी

है जो-ऐशआरामके वखत ऐशआराम-और-न्यायके वखत-न्यायमें उपस्थितरहे. राज्यमें जितनाधर्म होताहै-राजा-अगर उसका साहायक और रक्षकबना रहे-तों-शरीरसें बिनाधर्म किये भी-धर्मकाफल-पासकताहै. सबवकि-उसका इरादा धर्मपररजु रहा. अगर पापकेकाममें साहाय देगा तो इरादा अधर्ममयहोनेसें पापफल हासिलकरेगा, जिनकों धर्म-प्याराहो-धर्मकेसाहायक बने, पाप-प्याराहो-पापके साहायकबने.

(७०)-न्यायसें किसीशख्शपर गुना सबूतहोजाय-और-राजा उसकों बिनापक्षपात दंड देवे-तो उसमें पाप नहींलगता. सबवकि-न्यायमार्गभी-धर्ममें सामीलहै. दंडदेना-सोभी-धर्मकी रक्षाहीकेलिये देनाहै. जीवहिंसा-चौरायासी-और-दगाबाजीवगेरा अन्यायकरनेवालोंकों दंड न दियाजाय तो अधर्मकी वृद्धिहोकर धर्मकानाश होजाय, इसलिये कहाजासकताहैकि-न्यायधर्मसें बिनापक्षपात किये दंडदेना पापनही. हां!-अगर बेंगुनाह बेंतकसरि किसीकों दंड दिया जाय-या-रागद्वेषकेप्रभावसें-कमीबैसी-कर-दिया जायतो अलबते!-पापहै. हरेकराजेमहाराजोंको-और-न्यायाधीशोंकों-मुनासिबहैकि-सत्यपर खडे रहकर न्यायसें कामकरे. जाँदगी थोडेदिनकी है, और सबकों विदाहोनाहै. जो जो राजेमहाराजे और हाकिमलोग-धर्मकों जूठा संमझते है उनकेलिये न्यायसें चलतेभी कुच्छ धर्म नही होसकता. सबवकि-उनकेलिये-तो धर्म-कुच्छचीजही नही फिर किसकी रक्षाकेलिये न्याय करेगें, असलमें उनसें न्यायहोनाभी मुश्किल है. एकमुसाफिरने किसी गांवके एकमसकरेसें पूछा कि-भैया!-इसगांवका मालिक कौनहै?

मसकरेने जवाबदिया-अपनेअपने-घरके मालिक सबहै, मुसाफिरने कहा नही!-भैया!!-मैं-यह पुछताहूं इसगांवका ठाकुर कौन है?-मसकरेने जवाब दिया-किसकिसकों वताउ,?-अपनेअपने घरमें सबकेवहां ठाकुरजी है. किसीके शिवजी-किसीके घर कृश-जी-किसीके घर रामचंद्रजी-और-किसीकेघर गणेशजी विराजरहे है, आप किसकों पूछते है,?-उसने कहा!-भैया!-मैं-इनठाकुरोंकों नही पूछता, इसगांवका राजा कौनहै? मसकरेने जवाबदियाकि-कल इसगांवमें एकचमार मरगयाथा-सो-उसकी स्त्री-यह कहकर रोतीथीकि-हाय! मेरे राजा! हाय मेरे राजा!!-इससें यह-मैं-जानताहूँकि-अपनेअपने घरके सभीराजा है, मुसाफिरने कहा-यह क्यावातहै,?-मसकरेने जवाबदिया-आप समझे!-इसगांवकाराजा अन्यायी है इसलिये मुजे इतनी तरकीबे सुनानी पडी.

(७१)-जहां-राजा-न्यायवानहोगा उसकी रैयतभी अकसर न्यायवती होनीचाहिये. यह नहीकहा जासकताकि-सभी-लोग एकसे बनजायगें. लेकिन! हां!-इतनाकहना बनसकताहैकि-जैसा राजा-वैसी रैयत.-युंतो संसारमें ऐसेऐसे अधमीं पडे है जिनका बयान सुनकर कलेजा कांप उठताहै, लेकिन! खैर!-यही कहना बनसकताहैकि-सभी एकसरखे नही होते. दौलतका भूखा संसार है. आदमी इरादे बडेबडे बांधताहै लेकिन! पार पाना मुश्किल है. ज्ञानीलोग-उसका सौचफिकर नहीकरते-अज्ञानी करते है. वस! ज्ञानी और अज्ञानीका यही तफावतहै. असलमें सौचफिकरनेसें कुच्छ बनता नही, बनता वहीहैजो-जिसके भाग्यमें है. कइ लोग दौलतकों जोडजोडकररखते है लेकिन! जवजानेवालीहो

एकघंटेमें चलीजाती है. बडेबडेराजे दौलतकेलिये लडमरे औरमरते है रैयत विचारी कौनगिनतीमे? लेकिन! तारीफ उन्हीकी है जो धर्ममें खरचकरते है. कइलोग ऐसे है जो आप खरचकरना चाहते है वैटे खरचने नहीदेते. कइ ऐसे है जो दूसरेकी दौलतदेखकर झूरते है और अपनेकों कोडी एक नहीमीलती. दौलतकेलोभसँ नकरनेकेकाम करगुजरते है, युवानीमें औरतसँ और धनसँ बेपरवाह रहना बडेहीनसीवेदारका कामहै. दौलत मीलना पुन्यकेताल्लुकहै. दौकतपाकर सवर नकियातो उसकेसमान कोइ बेवकुफ नही.

(७२)—धर्मीजीव—चंदनकीतरह अच्छे—और—पापीजीव थोहरकीलकडीकीतरह बुरे होते है. कइआदमी ऐसे है जो अपनेआपको खोटेकर्त्तव्योंसँ हठासकते है दूसरोंकों नहीहठा सकते. कइअपनीऔरतकों अपने हुकममें चलासकते है कइ नही चलासकते, कइ ऐसे है जो—आप—नाराजहै लेकिन! दूसरोंकों नाराज नहीकरते, जोशख्श विद्यामें और ऐलममें बडाहै उमरमें अगरछोटाहोतोभी—उसकोबडा समझनाचाहिये. जैसे राजहंस जिसनदी—या—सरोवरके कनारे पानी नहीदेखते वहांसे चलेजाते है तुमभी अगर जहां तुमारी कदर न होतीहो चलेजाया करो, दुनियामेंइज्जतसमान कोइ धन नही, ऐलमदारोंकी कदर जितनी पहिलेजमानेमें होतीथी अब नहीहोती, बल्किन्!—आजकल ऐलमदारोंके दुश्मन बहोत, सारीजींदगी एकसरखे दिन किसीके नहीहोते. वंदेकों चाहिये सदाहिंम्मत रखे. हिंम्मत बराबर कोइचीज नही. एकतर्फ बत्तीस लक्षण—और—एकतर्फ धीरजगुण सबसे बढकर कहा. वें—वेंबकुफ है

जां दौलतके चलेजानेपर बेहोश होजातेहै. हिंममतहारनेवालोंकी दूसरीदफे तेजी नहींहोती.

(७३)-कइ ऐसे शख्सहै-जो अच्छेखानदानकेघरानेमें-जन्मे-लेकिन! इरादा उनका हमेशां निचे कामोंमें लगारहताहै. कइ ऐसेहै-जो-निचेकुलमें पैदाहुवे लेकिन! इरादा उनका उंचेकामोंमें रजु रहताहै. कइ रुपरंगसें बडेखूबसुरत-लेकिन!-विद्यासें रहित है. कइ दौलतसें झलाझल-लेकिन!-चलन अच्छानहीं. कइ चलन अच्छाचलते है लेकिन! दौलत उनकेपास नहीं. कइ परीपकारकरनेमें होशियार-और-कइ अपनेही पेंटभरनेमें मस्त है. कइ आंखोंसें अंधे है लेकिन! अकलसें अंधे नहीं. कइ अकलसें अंधे है आंखोंसें अंधे नहीं. कइ ज्ञानगुणसें बढ़तेजाते है लेकिन! मान गुमान विल्कुल नहीं करते. कइ विल्कुल मूर्ख है लेकिन! घमंड इतनारखते हैकि-कुच्छ पूछोनहीं. कइ ऐसेहै-जो-अपनी-औरतसें निगाहभी नहीं मीलाते-और-पराइऔरतसें पसंद रहते है, कइ अपनीऔरतशिवाय दूसरीपर कभी खयालही नहींकरते. कइ-दूसरोको-सच्चाउपदेश देसकते है आप उसमुजब नहीं चलसकते. कइ शरीरसें कमजोरहै लेकिन!-घमंडसें कर्मजोर नहीं है, कइरुपवान् है शीलवान नहीं-कइ शीलवान् है रुपवान् नहीं.

(७४)-कइलोग-म्यानेपालखीमें बैठेहुवे तकलीफ मानते है-और-कइ पैदलचलनेहीमें-राजी है. कइलोग घरसेंवहार कदमरखनाभी नहीं चाहते-और-कइ जंगलमेंही पडे मस्तहै. कइ-खूबसुरत औरतकेशाय पलंगमें सौतेहुवेभी दुखी है कइ झोंपडीमेंही बैठे आनंदमानरहे है. कइ हाथीघोडेपर सवारहोना नहींचाहते-और-कइ

उसीकीमाला फरतेरहते है कि-कव हमकों मीले. कोइकों हजाररुपयेभी कुच्छचीजनही-और-कोइकों सोरुपयेभी बहोतकुच्छ है,दौलतमंद वाजरीकी रौटी खानाचाहताहै गरीब-मेंवेके-लडु चाहता है. कोइकों शहरका रहना पसंद-कोइकों विल्कुल नापसंदहै. कोइ गुडसें राजी-कोइ मीसरीसें राजी, कोइकों एकरतिभर अफीम नहीसुहाता-कोइ तोलेभर खाजाताहै. एककों लाटियोंसें कुटो-लेकिन!-कुच्छपरवाह नही, और एककों फूलकीछडीभी बहोत है, घमंडकरनेसें और जूटीवातका हठकरनेसें आदमीकी इज्जतमें धव्या लगताहै.

(७५)-आदमीकों हुकमहोदेका सुख उसवरुतमालूम देताहै जब उससें गिरजाय, इसीसें कहाजाताहैकि-जोकुच्छकरनाहो वरुतपर करलो, नहीतो पीछेसें पस्ताना पडेगा. आजकलके जमानेमें सारीउमरतक भाग्योदयवनारहना बहोतही मुश्किल समझो. किसीके पहिलीउमरमें सुख-और-किसीके पीछलीमें सुखहोताहै, कइ-ऐसेभी है जिनोंने सारीउमरतक तकलीफ उठाइ आराम एक दिनभी नहीपाया. जिसने पूरवभवमें पुन्यानुबंधिपुन्य उपार्जन कियाहै-वो-यहांभी सुखी-और-परभवमेंभी सुखीहोगा. जैसे अच्छेसाधु-अच्छा गृहस्थ-और-अच्छाराजा. जिसने पूरवभवमें पापानुबंधिपुन्य उपार्जनकियाहै-वो-यहां सुखी-और-परलोकमें पापकैप्रभावसें दुखीहोगा. जैसे वैश्या अन्यायीराजा-और-अन्यायीगृहस्थ, इसका मतलब यहहुवाकि-पूरवकेपुन्यसें तो यहां सुखी हुवे लेकिन! उस पुन्यकेभोगतेभोगते बांधलिया पाप-इसलिसे उक्तपुन्यका नाम-पापानुबंधिपुन्य-कहागया. पुन्यानुबंधिपाप-वो-है

जो-पूरवकृतपापसें यहां दुखीहुवे लेकिन ! यहां पुन्यकेकाम करताहै इसालिये अगलेभवमें सुखी होगा. जैसेकोइ गरीबआदमी यहां खानेपीनेसेंभी तंग है लेकिन !-पुन्यकेकामकरनेसें अगाडीभवमें सुखी होगा. पापानुबंधिपाप-बो है-जो पूरवकृतपापसें यहां दुखी और यहांभी फिर पाप करताहै इसालिये परभवमेंभी दुखी होगा. जैसे कसाइवगेरा हिंसकजीव होते है,—

(७६)—जिसराजासें-या-बडेहाकिमसें तुमारा विरोध हो गया-तो-मुनासिवहै उसकेराज्यकों छोडकर दूसरेराज्यमें चलेजाना, बडेलोगोकेदिलमें गुस्साभी वडा रहताहै. जहां एक चीजपर दोशखश मालिकहोगें वहां कभीनकभी जरूर दंगाहोगा. इसालिये मुनासिवहैकि-पहिलेहीसें उसके दोहिस्से करदियेजाय. अगर किसीस्त्रीसें दोशखश मांहवत रखना चाहतेहो-तो-यह कभी न-होगा, समझदारकों मुनासिवहै उसस्त्रीसें अपनी दोस्तीकों खतम करे. और यह सौचतारहेकि-मर्दकेलिये औरत-और-औरतकेलिये मर्द-प्रीतिहोनेसें इसीभवमें हितकारी है, लेकिन !-पापबंधके हेतु होनेसें परभवमें हितकारी नही, कइ शखश ऐसे है जो बोलीसेंमीठे-लेकिन !-कामपडे बुरे, कइ बोलीसें कठोर लेकिन !-कार्यपडे अच्छे है, और कइ दोनोतरहसें निकामहै. जहां बहोत लोग-गप्पमारनेवाले-बैठेहो वहां अकलमंदकों मुनासिवहै चूप रहे. जिसकों समझानेपर हसदेताहै उसे वैशरम समझो. जो मालिक नोकरोंका हक नहीजानता-बो-खता खाताहै. दौलत और जवानीका ठहरना बहोतदिन नहीहोता, मुनासिवहैकि-अपनीनेकचलन न छोडना.

(७७)—भारतकेमध्यखंडकों छोडकर इसवख्त जितनेदूसरेदेश मशाहूरहै तरंहरहकेलोगउनमें बसते है, उनकी जातबिरादरी-और-कुटुंबकेभेद गिननेलगे तो कव पारपासकते है, उनकीचालचलन और-खानपानका-व्यौरा-यहांलिखनाशुरुकरे तोभी-अंत न आसकेगा. एकदेशवालें जिसबातकों पसंदकरते है दूसरेदेशवालें फौरन उसे नापसंद करदेते है. इसीसेकहाजाताहैकि-खानपान-और चालचलन-चाहे जिसतर्फसें लिखनाशुरुकरोगे पार न पासकोगे. इंग्लंड-अमरिका-अफ्रिका-आस्ट्रेलिया-न्युसौथवेलस-चीन-होलांड वेंलजियम-नरवे-स्वीडेन-युनाइटेडस्टेट्स-न्यूफॉडलैंड-डेनमार्क-स्पेन-रुस-ग्रीस-इटाली-पर्तुगाल-जामेका-वहामा-जंगरी-जर्मनी-जापन-हवाइ-हंगरी-बगेरा जोजो देशहै उनकी जातबिरादरी वंश और-चालचलन हजारहतरहके है. कइदेशवालें झींगामछलीकों जीतीही खालते है, एकगिलासमें जल भरके उसमें मछलीको डालदेते है, फिर उसमें शरावका सिरका और तैल डालकर थोडी सीदेरवाद जव मछलीयां नशेमें आके कूदनेलगती है उनकों पकडपकडकर जीतीहीकों खाजाते है. धन्यहै ! उनके हृदयकों-उनकी लीलाका कहांतक वर्नन करे ! जिनकों जीतेजीव खानेसेंभी नफरत नही. कइदेशमें बीमारघोडेकों गोली मारदेना दया समझते है. कइ देशवालें पक्षीयोंकेअंडेकों सुइलगाकर उसका रसपीजाना अच्छासमझते है. कइदेशकी पढीगुनीस्त्रीयोंकों-थियेटर-सैर-नाविल-सिंगार-बनाव-नाच-बाल-खेल-तमाशोंसें एकघडी फुरसत नहीमीलती. कइदेशकी स्त्रीयें-पतिसें-जरानाराजहुइकि-तलाकके लिये अदालतमें हाजिर होजाती है. कइदेशकीस्त्रीयोंने पुरुषोंकेकाम

छीनलिये है जैसे-डाक्टर-एडिटर-वारीष्टर-जज-कप्तान-इंजिनियर-वकील-मास्तर-बल्लमटेर-कलर्क-मजदूर-सबकुच्छ स्त्रीयां है. अमरिकाकीस्त्रीयें कइवातोंमें पुरुषकी बरावरी करसकती है. विलायतमें कुच्छपद ऐसेभी है जो अवतकस्त्रीयोंको नहीमीले, पार्लमेंटकी मेम्बरी-फौजकी करनैली-और-जहाजकी कप्तानी-अवतक उनको नही मीलो है. हां!-फ्रांसकी स्त्रीयोंको मर्दाना कपडें पहेंनकर निकलनेकी आज्ञा मीली है.

(७८)-कइदेशकी स्त्रीयोंने शरावपीनेमें पुरुषोंको मात दीहै. कइदेशकीस्त्रीयोंने चुरटपीनेमें-और-पैरगाडीपर बैठकर शैरकरनेमें पुरुषोंको पीछाडी करदिये है, कइदेशवाले कहरहे है स्त्रीकी-स्वाधीनताको रोकना चाहिये, लेकिन! क्या करे! रुकती नहीं. देशदेशमें विवाहकी रीति अलगअलगहै. कइदेशमें सरेवाजार स्त्रीयां विकती है. कइदेशवाले कुत्तोंको और कइ विल्लीकों-पालना पसंदकरते है, चीनदेशके अनेकस्थानमें-लोग-कागजके वस्त्र पहेंनते है और कहते हैकि-कागजकेकपडेकी ताहसीर रुइके कपडेसे ज्यादा गर्महोती है. पानीसेतो सबलोग नहातेही है लेकिन!-कइजगह दूधसेभी नहाना पसंदकरते है-वतलाते है दूधसें नहानेसें शरीर स्वच्छ और खूबसुरत होजाताहै, इसीमतलवसे आजकल अमरिकाके न्यूयार्ककी-मेमें-दूधसें नहायाकरती है, एकऔरतके नहानेकेलिये दससेरदूध चाहिये, कइदेशोंमें गर्मजलकेकुंड-और-ज्वालामुखीपहाडोंको-करामात-समझते है, और कइदेशकेलोग-अधिकायकेजीवोंकी पैदाश वहां ज्यादासमझकर-करामात नही समझते. हमारी रायभी यही हैकि-करामात नही-जमीनकी ताहसी-

रहै. कइ देशकीजमीन हरसाल आधावर्ष बर्फसेढकी रहती है और कइदेशमें बर्फका नामनिशान तक नहीं, कहीं ढेरआवादी और कहीं विरानपडाहै, कइदेशके वाशिंदे कालेरंगके-और-कइके-लाल-या-गौरेहै. कइदेशवाले-दूसरेदेशवालोंको नयीदुनियाकी पैदाशके कहते है और कइ अपनेआपको नयेकहकर दूसरोको पुरानेबतलाते है. कइदेशवाले खुलेमैदानपडी हुइ दूसरेकी चीज नहीं उठाते और-कइदेशकेलोग नजरकेसामनेसे चीजलेजाय और मालूम न-होनेदे. कइमहाशय फरमाते है-(जुओ-वडारोजगार-जो-हार-न-होती,)-(चोरी-बडाव्यापार-जो-मार-न-होती,)

(७९)-जगतभरमें मुसलमानोंसे इशाइलोग दुगुने है, इस्वीसन (१८८२) की-मर्दमसुमारीको-देखते है-तो-जगतभरमें-बारहकरोड चौदहलाख-मुसलमान-और-वाइंसकरोड-सीत्तेरलाख-इशाइ-गिनतीद्वारा मालूमहोते है, संपूर्णबंगालहातेमें सातकरोड आदमी बसते है और इंग्लैंडमें कुल चारकरोडही बसते है, लेकिन!-जिनका पुन्यप्रबल उन्हीका जोरशौर पसारहोताहै, आदमी बडानही है तकदीर बडाहै. हां! किस्मत और उद्यमका जोडा जरूरहै लेकिन! तोभी इतनाजरूरकहेगेकि-किस्मतबडा-और-उद्यमछोटा है. सबबकि-उद्यम झूठाभीहोजाताहै किस्मत झूठा नहींहोसकता-मनुष्यका भव-आर्यावर्तमें पैदाश-शरीरसे तंदुरस्त-लंबीउमर-धर्मपर आस्ता-और-न्यायमार्ग-इतनीबस्तु अच्छेपुन्यविदून नहींमिलती, जिन्होंने पुन्यकिये है सबतरहकेसुख-और-धर्म-उन्हीको प्राप्त होसकते है,—

(८०)-भारतकेमध्यखंडमें-क्षत्रीय-ब्राह्मण-वैश्य-और-शुद्र-

येचार कौम अनुक्रमसें उत्तम-मध्यम-गिनीगइहै. इनकेभी भेदानु भेद कइहै लेकिन!-वे-सब-चारमेंआजाते है इसलिये बडेभेद चा- रहीकहे. जिनमेंभी क्षत्रीयजाति सबके सिरताज इसलिये कहीगइ कि-वें-लोग हिम्मतबहादूर सबसेंअवलदजेके होतेहै. क्षत्रीयोंका यहधर्महो हैकि-अन्यायीपुरुषोंकों धर्मका विध्वंसकरते रौके. देव- मंदिर-धर्मकेस्थान-साधु-सती-और-दीनदुखीका जहांतकबने व- चावकरे. परमेष्ठीमहामंत्रका जाप-और-जिनेंद्रदेवका पूजन-हरह- मेशा करतारहे. रातकों खानपान न करे. धर्म-अर्थ-और-कामकों यथासमय पालनकरे. अन्यायकी लडाइ-न-लडे-और-न्याययु- द्धसें कभी पीछा-न-हठे, देवगुरुधर्म-और-प्रजाकेरक्षणमें अपनी जान देनेकोंभी तयाररहे. शरणागतकी रक्षा करे-लेकिन!-अन्या- यीका शरणदाताभी-न-बने, शिकार-न-खैले. अगर खैलनाहोतो क्रोध-मान-माया-और-लोभ-जो-जीवकेअसलीदुश्मनहै उनकेसा- थ खैले. कितनेही क्षत्रीयपुत्रोंने अपना कुलधर्म छोडदियाहै. ले- किन! दुनिया बिल्कुल निर्वाज नहीं, कइ ऐसेभी है जो अपने व्र- तनियममें अडौलरहकर सदा नैकीसें चलते है. बडेबडे राजेमहा- राजे-और शूरवीरपुरुष इसीवंशमें हुवै है. हरेकक्षत्रीयकों अपनेवं- शकी कीर्त्तिपर खयालरखना चाहिये.

(८१)-मांसखानेकेलिये आर्यधर्मशास्त्रकी किसीकों मंजूरी नहीं है. चीडीया-तोते-कवूतर-हिरन शशो-सूअर-वगेराके-प्राणों- का विछोहाकरना और-उनकामांसडालकर पुष्टाइचाहना कौनसा न्यायमार्ग है. जीवोंकी हिंसाकिये विद्वान मांस उत्पन्ननहीहोसक्ता? जीवोंकोंमारना स्वर्गसुखकों देनेवाला नहीं. इस वाक्यसें मांसखा-

ना पाप ठहर सकता है. जीवोंको बांधना-मारना-निर्दयोंका काम है, जिसके दिलमें रहेंम नहीं उसे-धर्मीआदमी-कौन कह सकता है ? इसवाक्यसें मांसखानेवाले अधर्मी सबुत हो सकते है. बस!-इससें ज्यादा क्या कहे?—और कहेगें भी तो बुरामानेगें. मांसखानेसें शरीरमें रोगभी पैदाहोताहै, सबबकि—वह—भारीचीज होनेसें ठीक-ठीक नहींपचता. तर्ककरनेवाले कहेगें क्या ! घी-दूध-भारी-नहीं है!—इसेभी नखानाचाहिये!—(जवाब.)—मांससेंबढकर घी-दूध-भारीनहीं कइलोगकहते है यज्ञमें मांसखानेसें दोषनहींलगता ऐसा मनुस्मृतिकावचनहै—(जवाब.)—यहबात गलतहै—सबबकि—दोषनहींलगता इसमें प्रमाण क्या?—बिनाप्रमाण—कहनासुनना—वृथाहै. क्या! जो कुच्छमनुस्मृतिमें विनाविचारे कहदिया वही प्रमाणहोसकताहै? कभी—नहीं, देखिये!—मनुस्मृतिके कइ वचन—अविचारशील—है, जहां पिछलेअध्यायोमें मांसका वर्ननलिखाहै (५६) में—श्लोकमें पाठहै कि—मांसभक्षणमें दोष नहीं. मदिरा पीनेमें दोष नहीं,—तथा—मैथुन करनेमें दोष नहीं—यह प्राणियोंकी—प्रवृत्तिहै. इसमें दोष नहीं. लेकिन!—इनसें निवृत्तिकरना तो महाफलदायकहै. इसपरसवाल कियाजाता हैकि—जिसकी प्रवृत्तिमें पाप नहींलगता उसकी निवृत्तिमें पुन्यफल कहांसें आया?—इसको गौरकर सौचना चाहिये, बडा नामधराना सहजहै लेकिन! पूर्वापर विरोधरहितवचन बोलना सहजनहीं. अगरकोइ मनुस्मृतिकारागी—इससें—नाराजहो—तो—शास्त्र वचनसें लडे. कइलोग कहते है मनुस्मृतिका अभिप्राय आपनेनहीं जाना, उसकाअभिप्राय ऐसाहैकि—मांसभक्षणमें दोषनहीं ऐसानहीं कहना—वलिकन्! दोषहै ऐसा कहना, (जवाब)—मूलपाठमें ऐसाअ

र्थ नहीनिकलता-अगरचे निकलता होता-तो-प्रवृत्तिरेषा-भूतानां यहपाठ-न-होता. विनाप्रमाण प्रतिपक्षीलोग कब मानेंगे. अगर कहाजायकि-कस्तूरी गौरोचनभक्षणकरना मांसभक्षणमें आगया- इसलिये मांसभक्षण किससें छूटाहै?-(जवाब,)-कस्तूरीगौरोचन-मांसनही, किंतु-जैसे केश-वगेराहै वैसे कस्तूरीगौरोचनभी-मांससें अलगचीज है. सोभी प्राणीकी विदून हिंसाकिये मीलसकते है, लेकिन!-मांस-प्राणियोंकी हिंसाविदून नही मीलता, अगरकहां-जायकि-माहिंस्यात् सर्वभूतानि-यहवचनभीतो स्मृतिवगे-रामें मौजूदहै-(जवाब.) सौचो!-फिर क्या सिद्धहुवा?-'इससेतो यह पायागयाकि-किसीजीवकी हिंसा नहीकरना. फिर!-यज्ञमें हिंसा-करना किसस्वर्गकेलिये कहागया?-'क्या पितृदेवताओंकी-पूजा-जलचंदनकेशर-और-घो-दूधवगेरासें नहीहोसकती? अगरचे हो-सकती है-तो-त्रसजीवोंकी हिंसाकरना कैसे मुनासिब ठहरसकता है. निदान!-त्रसजीवोंकी हिंसाकरना मांसखाना-शिकारखैलना-और-मदिरापानवगेरा अयोग्यवर्तावरखना कोइ आर्यधर्मशास्त्र न-ही फरमाता. क्षत्रीयपुत्र वडेनसीवेदार और राजस्वीतेजवालेहोते है, मुनासिवहै आर्यधर्मशास्त्रके फरमाने मुताबिक चले. और अ-पनेवंशकी कीर्त्ति कायम रखे.

(८२)-ब्राह्मणोंको शिक्षा-आप-धर्ममेंपावंदरहे और दूसरों-को पावंदरहनेकी तालीमदेवे. अर्हन्देवकी-त्रिकालपूजा-करे, पर-मेष्टिमहामंत्रका हरहमेशपाठकरे. और निर्ग्रंथमुनियोंकी सेवाभक्तिमें-सदैव हाजिररहे. गृहस्थधर्मके-जो-गर्भाधान वगेराह-सोलहसंस्कार है उनमेंसें एक-त्रतारोपसंस्कारको-छोडकर बाकीके पनराहसं-

स्कार गृहस्थलोगोंके घरजाकर करावे. सत्यबोले—प्राणीरक्षामें ह-
रवख्तखयाल रखे-और-खेतीवारीका-काम-खुद नकरे. जलकों
छानकर पीए-कंदमूलफल-न-खावे-रातकों खानपान न-करे-क्ष-
त्रीय-और-वैश्यकेघरका पवित्रभोजन जीमे-तो-कोइहर्जनही. ले-
किन! वनतेप्रयत्न अपनेहाथकाही वनायाभोजन खानाअच्छाहै,
जो ब्राह्मण क्रियावान् नही है उसकों ब्राह्मण कहना मुनासिबन-
ही. तोनतंतु-गलेमें-पारखनेसें ब्राह्मण नही बनसकते. ब्राह्मणहो-
कर-जो-मांसमदिराखातेपीते है उनकों कसाइकहना कोइ हर्जकी
बात नही, शुद्रकेघरका अन्न-और-देवकेसामनेचढायाहुवा-नैवेद्य
ब्राह्मणके लिये खाना मनाहै. जोलोग खातेहै शास्त्रके बखिलाफ
कामकरते है. अपनीज्ञातोबिरादारीका कोइशखश मांसभक्षीहोजा-
य फौरन उसे अलगकर देवे. क्रियासें पाकरहनेहीसें अपनाउपदेश
दूसरेपर असरकरसकताहै. राजेमहाराजे-और-दूसरेलोग-अगर
क्रियासें नापाकरहोगें कब इज्जत करेगें?—इसलिये मुनासिबहै श-
रीरसें और मनसें-साफ-रहे.

(८३)—अगर सवाल कियाजायकि-ब्राह्मण-किसकों सम-
झनाचाहिये ?—क्या !—शरीरकानाम-ब्राह्मणहै ?—या-जीवका नाम
ब्राह्मणहै?—अगर जीवकानाम ब्राह्मणहै तो सारीदुनियाकों ब्रा-
ह्मणकहनापडेगा. सबबकि-जैसाजीव ब्राह्मणकेहै-वैसा-सबकेहै,
अगर कहोगे शरीरकानाम ब्राह्मणहै तो सभीदुनियादारोंकों शरी-
रहै, इसलिये शरीरकानाम ब्राह्मण नहीबनसकता. अगरकोइ ब-
होतहीहठकरबैठेकि-शरीरकानामही ब्राह्मणहै तो बतलावे!—जब
ब्राह्मणकेबेटे अपनेमातापिताके मरजानेपर उनके मुर्दोंकों जालते

है तब क्या!-ब्रह्महत्याकरनेके पातकी वनते है?-अगरकहाजाय पातकी तो नहीवनते फिर शरीरकानाम ब्राह्मणमानना कैसे सबुत होसकताहै? अगर जातिकानाम ब्राह्मण माने तो यहबातभी नही वनसकती. क्योंकि-ब्राह्मणकीजातिके शिवाय दूसरेभी तपकरके ब्राह्मण कहलाये है. इसलिये ब्राह्मणपना जातिके तालुक नही ठहरसकता. महाभारतकेशांतिपर्वमें-वयानहै कि—

(अनुष्टुप्वृत्तम्.)

कैवर्तीगर्भसंभूतो-व्यासो नाम महामुनिः	
तपसा ब्राह्मणोजातः-तस्माज्जातेरकारणं	१
उर्वशीगर्भसंभूतो-वशीष्टस्तु महामुनिः	
तपसा ब्राह्मणो जातः-तस्माज्जातेरकारणं	२
श्वपाकीगर्भसंभूतो पारासरमहामुनिः	
तपसा ब्राह्मणो जातः-तस्माज्जातेरकारणं	३

धीवरकीलडकीके पेटसे व्यासजी पैदाहुवे-लेकिन ! तपकरके ब्राह्मण कहलाये. उर्वशीकेगर्भसे वशीष्टजी-और-चांडालीकेगर्भसे पारासरजी-पैदाहुवे, और तपकेजोरसे ब्राह्मणकहलाये. इसप्रमाणसे जाहिरहुवाकि-ब्राह्मणहोना-नहोना-जातिकेतालुकनही. अगरकहाजायकि-पंडितकानाम-ब्राह्मणहै-तो-यहकहनाभीठीकनही. सबवकि-क्षत्रीय-वैश्य-और-शूद्रभी-विद्यापढनेसे पंडितहोसकते है. विद्या-जोकोइ-पढे उसीकी है, कुच्छब्राह्मणोंने उसका ठैका नही लिया इसलिये कहसकते है कि-ब्राह्मणपना-शरीरजातिवगेरके तालुकनही. किंतु व्रतके तालुक है. महाभारतमें वयानहै कि-

(अनुष्टुप्वृत्तम्.)

न योनि नापि संस्कारो—न श्रुतं नापि संततिः

कारणानि द्विजत्वस्य—व्रतमेव तु कारणं १

ब्राह्मस्वभावः कल्याणि !—समः सर्वत्र दृश्यते
निर्मलं सकलं ब्रह्म—यत्र तिष्ठति सद्बीजः २एकस्मात् स्थानतो जन्म—क्रियाः षष्ट्यादिकाःसमाः
पश्चात्तंतुत्रये क्षिप्ते—द्विजोहं इति किं मदः ३

उत्पत्ति-मंस्कार-विद्या-और-औलाद-ब्राह्मणहोनेका हेतुन-ही-ब्राह्मणहोनेका हेतु-व्रत-है. जिसमें निर्मलब्रह्मस्वभावहो-वही-ब्राह्मणहै, तीनतंतु गलेंमें डालदिये उससे ब्राह्मणहोनेका दावा नही होसकता. किसी धर्मशास्त्रमें नहीलिखाकि-मरनेवालेकेपीछे-उसके निमित्त-दियाहुवादान-उसे पहुंचसकताहै, लेकिन ! ब्राह्मणलोग उसवातकों क्यों जाहिरकरे?—इमसे तो उनकों चीजबस्त मीलनेकी हानि पहुंचे-लेकिन ! हां ! दुनियामें सभीब्राह्मण एक सरखे नही है.-कइ ऐसेभी है जो शास्त्रकेफरमाने मुजब चलते है-और मिथ्याउपदेश कभीनही देते, वैसे ब्राह्मणोंकों-अलबते ! सज्जन समझना ठीक है,

(८४)—वैश्यपुत्रोंकों शिक्षा न्यायसँ व्यापार करे, अन्यायसँ पैदाकिइहुइ दौलत वहोत वरुततक ठहरतीनही है. झूठबोलना-या देवधर्मकी कसम खाना किसीसुरत अच्छानही, जिनप्रतिमाकी विदूनपूजाकिये-दुकानपरजाना मनाहै, निर्ग्रंथमुनि-व्याख्यान-दे-तेहोतो-मुनासिवहै उनकीसभामें शास्त्रमुननेकों जाना, सबकाम शास्त्रमुननेकेनोचे है. जिनपूजाभी शास्त्रमुननेहोसँ जानीजाती है,

इसलिये अगर शास्त्र पहिले सुनलियाजाय और पूजन पीछे हो-
तो-कोइ हर्जकीबातनही. वडेवडे पापारंभ-न-कर-थोडेमें अपना
गुजरानचलसकताहो-तो-वहेत्तर है उतनेहीमें संतोष रखना, एसा
देशहित-और-पापारंभकरना कोइ जरूरत नही-जिससें अपना-
जीव पापमें लिपटकर नरककुंडका अधिकारी बने-आठपहरमें ती-
नघंटे-तो धर्मकाममें-जरूरलगानाचाहिये. इसकेविना परलोकका
रास्ता साफ-न-होसकेगा. किसीकी बुराइकरना अच्छानहीहोता.
जिसमेंभी-राजाकी बुराइकरना विल्कुलठीकनही. राजाकी अपने
परबहोत रहेमनजरहो-तोभी-उनसेंहरवरुत खोफरखनाचाहिये,
सबवकि-राजस्वीतेजवालोंको गुस्सा आतेदेर नहीहोती. होदेदा-
रोसें हरवरुत बचकर चलनाचाहिये. मांसमदिरा-रात्रीभोजन-
और-कंदमूल-खाना वडेपापोंकी गिनतीमें-है, अगर औरकुच्छ
न-वनसके-तो-बडेपापोंसें जरूर बचना मुनासिवहै.

(८५)-ओशवाल-श्रीश्रीमाल-श्रीमाल-पोरवाल-पल्लीवाल-जै-
सवाल-खंडेलवाल-हुंवड-मोंढ-वायडा-गोलालारे-श्रावगी-पर-
वाल-बीजावर्गी-नीमा-भटेरा-बगेरा-वैश्योंकेकइभेदहै. जो जिस-
भेदमें-हो-न्यायमार्गसें उल्टा न चले.-जींदगी थोडेदिनकी है.
दौलत किसीकी थीर नहीरही. गृहस्थोंकेलिये दानपुन्यकरना नि-
हायत उमदाकामहै. घरसें बहारनिकसना-तो-हरवरुत-पांचदस-
रुपये-पासररखकर निकसना चाहिये. एकदोरुपयेसें-तो-कम-कभी
रहना ठीकनही. तुमकों अच्छेगृहस्थ समझकर किसी दिनदुखीने
कुच्छ याचना किइ और तुमारेपास कुच्छ-न-निकसा-तो
कितनेशर्मादेहोनेकी बातहै?-राज्यका महसूल न देना चौराकेभेद-

में दाखिल है. जो जिस चीज का व्यापार करता हो जैसे—जवाहिरात—सुन्ना—चांदी—कपडे अनाज—रुई—अफीम—सराफी—तांबा—पीतल—लोहा—रेशम—हुंडी—घी—तैल—आटा—दाल—मीश्री—सूत—दियासलाइ—लौ—नमीरच—तमाखू—मेंवा—मीठाइ—रंगरोगन—सालदुसाले—गोटे कीनारी पघडी—दुपट्टे—कागज—छापखाना—दवाबुटी—शेयर दलाली—इतर—फुलेल—घडी—चश्मे—नकलीसुन्नाचांदीकेगेहने—गालीचे—पानसुपारी—चीनीरुसी—या—अंगरेजीमाल—वगेरा—जिसजिस चीजकी दुकानदारी चलतीहो उसमें—दगाबाजी—हथफेंरी—या—अदलबदलकरना—अच्छानही, इज्जतके कांकरे—और—दौलतका नाशकरनाहो—तो दगाबाजी करो. दगाबाजी बहोतदीनतक नहींचलती, कोइनकोइदिन जाहिरात जरूरआतीहै. अपनीचौरी अपनेसैं—तो—छीपीही नहींरहती, दूसरे केवलज्ञानी देखतेहै, तीसरे जब चौरीकाभेद खुलजाताहै तब दुनियाभी देखलेतीहै, इसलिये मुनासिबहैकि—चौरी दगाबाजी—न—करना.

(८६)—एक—बापबेटा—दूसरेकेखेंतमेंजाकर हरहमेश चौरीकरलिया करतेथे. एकदिनकीबातहै दोनों मिलकर खेंतमें चौरीकरने कों गये. बापने चारोंतर्फ नजर फैलाकर देखा—जब—कोइ—नहींदिखनेमें आया चौरीकों हाथ चलाया. लडका कहनेलगा सबतर्फतो आपने देखलिया—लेकिन!—एकतर्फतो भूलही गये. पिताने विचारा इसने किसीकों आते देखलियाहै, उसीविखत चौरीहुइ वस्तु इधरउधर फैंकदिइ—और—पूछनेलगा किधर कौन आताहै?—वेटेने कहा उपरदेखना तो भूलही गये. परमेश्वर देखताहै—या—नहीं?—पिता! बोला!—सच्चहै यहतो हम भूलहीगयेथे. वस! उसदिनकी बात

है और फिरकभी चोरी नहींकिइ. इसतरह अगर हरकिसीको असरहोनेलगे-तो-क्याही ! अच्छीवातहै.

(८७)-~~१०~~ (अकलके फुव्वारे.)

- | | |
|-------------------------|--------------------------|
| -सच्च बोलो, | -वारुदसँ दूररहो, |
| -विद्या पढो, | -सांपकों छुओ मत, |
| -धर्मपर श्रद्धा रखो, | -दिलकों साफ रखो, |
| -पूरा तोलो, | -वकवाद मत करो, |
| -बडेसँ अदप रखो, | -दुश्मनसँ बंदोवस्त रखो, |
| -गातेवरुत खुल्लकर गाओ, | -वहेमी मतवनो, |
| बडेकेघर बडाअंधेरहोताहै, | -शास्त्रकी वातें यादरखो, |
| -तकलीफमें होशियार रहो, | -कालका भरोंसा नही, |
| -सोचकर बोलो, | -बदनकों साफरखो, |
| -गयावरुत फिर नहीभाता, | -आंखें हृदयके आइनेहै, |

(८८)-सभामें जाते शर्म मतकरो, शास्त्रकेहुकमपर सबकोई लाचार है,

दुनियामें बोली सँकडोंतरहकी है लेकिन!-चतराइबिदून एक भी कामकी नही,

दौलतमंदहोकर खानेपीनेमें कौताइकरे बडानालाइक है, किमीपागिरी आजकल विदाहोगइ इस तीतलाशकरना सी-रडीआदमीर्योंका कामहै.

दूसरेके मकानपर जाओ-तो-इतलादेकर जायाकरो, क्या जाने घरवाले किसतरहवेठेहो ?

जितनीताकत उतनाही वौजाउठाना चाहिये;

जो शख्श-लुगाइकेकहनेमें चलताहै, उसकी इज्जत नहींबढती.
दिलकीवात दोस्तकोंभी एकदम मतकहो, नमालूम! किसव-
ख्त दुश्मन होजाय,

एकदिन ऐसाभी आयगा जिसमें दोस्तभी दुश्मन बनजायगें,
आजका काम कलपर मतढालो एकदमकाभी भरोंसा नही,
इशारेसें न समझे-वो-आदमीनही गधा है,
जोशख्श बहोतमौलकीचीज थोडेमेंदेताहै-जाननाचाहियेचौ-
रीका मालहै,

चलतीगाडीसें कुदना किसीसुरतअच्छा नही, अगर कुदना-
ही है तो फुरती करो,

आदमी जैसा दुश्मनसें डरताहै' अगर पापसेंडरे तो क्याही !
उमदा बात है!

(८९)-तकलीफदार कपडे-और-जूते-पहेनना समझदारोंका
काम नही.

रजस्वलाऔरतसें भोगकरना रोगकों बुलानाहै,
मुख-बालक-और-बीमार-गालीदेबैठे उसपर खवाल मतकरो,
दौलतमीलनेपर बहोतआदमी थकलसें अंधे होजाते है,
दूसरेकों नंगाकरना-या-आप-नंगेहोना बडीबेइज्जती है,
कुच्छरूपयेपैसें हरवख्त पासरखनाचाहिये-नजाने किसवख्त
कामपडजाय,

दोआदमी बातकरतेहो बिनाबुलाये जानानही,
कोइशख्श-चीठी-या-खत-लिखरहाहो बिदूनहूकम उसेमतदेखो,
पैसेकेलालचसें इज्जत हलकी मतकरो,

बेवकूफोंके सामने जीदकरना ठीकनहीं, अगरचे अपनीबात सच्चीभी-हो,-

किसीके धमकानेसें दिलकों रंजमें डालना कोईजरुरतनहीं,
अगर कोईशरूख तुम्हारीवहोतहीखुशामद करे-तो-समझलो !
कुच्छमतलबहै,

कदरदान अगरचे गरीबहै-तोभी-उसकेपास जानाचाहिये,
(९०)-जैसे लडाइकेवख्त सुनेसें-लोहा-ज्यादेकामदेताहै अ-
कलभी वख्तपर दौलतसें बढकर कामदेती है,

गुनेहगारकों माफी जब देना अगर-वो-अपनीभूल कबूलकरे,
स्त्रीकारूपदेखकर जिसपुरुषकों-और-पुरुषकारूपदेखकर जि-
सस्त्रीकों विकारनहींआया उसकी तारीफ है,

भोगकेवख्त योगयाद आवे उसे पक्का सम्यक्तवान् समझना,
जिसकों बुरीबात समझकर छोडनाचाहो-और-छूटेनहीं तो
उसमें-पापकाउदय-जानना,

हरहमेश दातूनकरना-और-हाथपांवधोकर रसोइजिमना-च-
तरआदमीका कामहै,

मित्रकों-या-अपनेप्यारेकों-महिनेमें एकदफे चीठीलिखना
फायदेमंद होताहै,

धर्मादिके पैसैकों जलदी लगादेनाचाहिये, नालाइकबेटे पी-
छेसें लगायगें नहीं,

घरमें गहेराधनहै फिर क्या ! चाहते हो ?-इतनेपरभी कंजूस-
वननाहै-तो-तुमारे जैसा कोई मूर्ख नहीं,

मीठाभोजन-और-मीठीवोली सबकों प्यारीं लगती है,

जोशस्त्र अपनेको नहीचाहता उसकी मुलाकातको जाना फजूल है,

धर्मकी बराबर कोई करामात नही,

लोभीआदमीको वेवकूफ कहना सच्च है,

हिंमत्ववान् आदमी हजारोंमें एकहोता है,

जहां वैमतलब अपना मानभंगहोताहो वहां रहना अच्छानही,

बाहियातरखर्च करनाभी मूर्खोंका कामहै,

(९१.)—जहां खुशी वहां नाराजीभी आयगी,

आगामी-संचित-और-प्रारब्ध-यहतीनहिस्से कर्महीके समझना चाहिये,

भविष्यकालमें जो जो कर्म बांधोगें उसकानाम आगामी-पूर्वकालमें बंधेहुवेकानाम-संचित-और-वर्तमानमें मोहममत्वकर रहे हो-इसकानाम प्रारब्धकर्म है,

उत्तम-मध्यम-और-अधम-येतीनदर्जे हरवस्तुपर कायम हो सकते है,

दुखीको सताना कोई बहादूरी नही,

जिसको अपनीइज्जतबढाना मंजूरहो-नेकचलन-चले और हाथका उदार रहे,

जिसशरीरकी इतनीहिफाजत किइजाती है-वोभी-अपनानही तो-दूसरेको अपना कैसे समझे, ?

नास्तिकलोग कहते है पृथ्वी-जल-वायु-अग्नि-और-आकाशके योगसे जीव पैदा होताहै, इससे न्यारा परलोकसे जीव नही आता, लेकिन ! यहकहना झूठहै,

सबकि-पांचतत्वमें-जोजोगुणहै चैतन्यगुण किसीमें नही,
यह सीधीसडक है कि-जोगुण जिसमें नही-वो-संयोगसेंभी नही
पैदाहोता,

अपनेवरुतकी नियमावलीवांधनेसें सबकाम फुरतीसें बन
सकते है,

हाथमें लकडी रखनसें हरतरह अपना बचाव होसकताहै,
पुरुषार्थ कमजोर होजानेसें कइरोग पैदाहोते है मुनासिब है
इसे कमहोने न देना,

प्रेमकेबंधनकों हजारहाथी-और-हजारघोडेभी-नही तोडसकते,
उल्टेअर्थकरनेवालेकों शास्त्र-शास्त्ररूपहै,

(९२)-जोलोग दुनियामेंभी नहोसमातेथे, तीनहाथजमीनमें
समागये-बडे आश्चर्यकी बात है,

कामविकारसें फतेहपाना बडेहो भाग्यसें मिलता है,
रुपसें विद्याका दर्जा बडाहै,

दुश्मनकाभी दुखदेखकर हसना नहीचाहिये,

जिसकां मालिक अंधा उसकी फौज कुवामें,

एकविद्याभी जिसकों अच्छीतरहआतीहो- संरी-उसे जल-
दी आसकेगी,

धर्मका मूल श्रद्धा-और-पापका मूल कदाग्रह,

जिसकेपास पैसानही उसकों दुखीकहनाठीक है-लेकिन!
जिसकेपासहै और खर्चे नही उसकों अवलदर्जेका दुखी कह-
ना चाहिये.

जिसकाममें इज्जत न बडे और धर्ममेंधक्कापहुंचे-वो-कामकर-

ना मुनासिब नही,

जोशख्श अपनेसैं प्रीतिरखे उससैं टैडे रहना अच्छानही, मूर्खोंका कामहै,

रातकों स्नान और भोजनकरना मनाहै लेकिन!—कामभोग करके स्नानकरना मना नहो,

जोलोग नंगेहोकर स्नान-और-शयनकरते है-वे-आर्यपुत्र नही है,

जैसे-दूधमें घी-तिलमें तेल-और-काष्ठमें अग्निरही है वैसे शरीरमें आत्मा रहाहै,

आत्माकों प्रत्यक्षपने संसारीजीव नही देखसकते, सर्वज्ञ देखसकते है,

जबतक रोंमरोंममें धर्म नही फरसा तबतक मुक्ति न होगी, अगर दुनिया इश्वरने बनाइहै-तो-एकदुखी-एकसुखी क्यौ? क्या-वो-किसीपरनाराजभी रहताहै?—अगर सुखदुखकाहोना तकदीरसैं है-तो-फिरउसनामर्दनैं क्या किया?

मन-मोती-और-काच-टूटेपीछे मीलतेनही,

मन-तो-फिरभी मीलसकताहै अगर साफसाफ बातें हों,

एकअवगुणकों देखकर बहोतगुणवान्कों छोडनानहीचाहिये, अग्निमें धुआंनिकलनेका अवगुण है लेकिन?—छोडनेसैं काम नही चलता,

देवमंदिरका पैसा जिसकेघरमें रहजायगा उसघरका नाश होजायगा,

(९३)—नयातीर्थ-और-नयेसाधुओंकों-जरुरदेखने चाहिये,

लेकिन! कूतीर्थ-और-धर्मभ्रष्टसाधुकों देखना कोई जरूरतनहीं,
अगर छायापुरुषदेखनेका ऐलम सीखेहो-तो-उसकादेखना
भी बहोतठीकहै,

अधर्मीपुरुषकों छायापुरुषका ऐलम तकलीफ देताहै,
किसीकामकेलिये स्थानसे चलना तो-जो-स्वरचलताहो-उ-
सीतर्फकेपांवकों पहिले उठाकर चलना-जरूरफतेहहोगी. कर्मयोग
फतेह न-हुइ-नुकसान-तो-कभी नहोगा,

जिसशहरमें बहोतकजुस-लोभी-और-क्रोधीआदमी बसतेहों
वहां-धर्मकी तेजीहोना मुश्किलहै,

साधुलोगोंको वैसे शहरमें-न-जानाचाहिये-जहां बाहियातझ-
गडे थानपडतेहो,

जहां दुश्मनोंका जोरहो-वहां-अकेलेजाना मुनासिबहै,
सत्यधर्मके उपदेशकोंको जरूरसाहाय्यकरना चाहिये,
अपने अवगुण आपहोसें हठते है दूसरेके हठाये नहीहठते,
समुंदर अपनीलहेरआपंही सकोचकरसकताहै. दूसरेकी ताकतनही.
औरतकी तावेदारी और बेटोंको कुलधनमाल सांपदेना अ-
खीर पस्ताना होगा,

भाटलोगोंकी तारीफसें फुलजाय-वह-बिनापूँछका बैल है,

(९४)-विदून्नरोग दवाखाना क्या जरूरत?

नोकरोंसें डरे-वो-मालिक नही तावेदारहै,

हांसीखुशीमें गुस्साकरे-वो-सूख है,

साधुहोकर भोगविलासका सुख चाहे-बडीभूलहै,

बडेबडे ज्ञानीहोगये लेकिन!-अधर्म-किसीसें नही हठा-इस

लिये अधर्मभी बड़ा है एसा समझना बेवकुफाँका है, क्या! चाँडालकों कोइ स्पर्श नहींकरसकता इससें वह बड़ाहोसकताहै!-

काम एसाकरना चाहिये जिससें सज्जनलोग स्वतःअपनेपर भक्तिमान् बने रहे,

(९५)-जर्मनीवालोंके हिसाबसें-दुनियामें-एकअबज-(७०) करोड मनुष्यकी आबादी है,

इस्वीसन (३५०) में-पाणिनि नामके पंडितने अष्टाध्यायी व्याकरण बनाया,

इस्वीसन (७१०) में-शंकराचार्य जन्मे-और-बत्तीसवर्षकी उमरमें मरगये, कितनेक कहते है शंकराचार्यने जैनीयोंको हराये और देशनिकाला दिलाया था-लेकिन!-यह बात जूठहै, शंकराचार्यका वादानुवाद बौधलोगोंसेहुवाहै, जैन-और-बौद्ध-एकनहीं न्यारेन्यारे है, जोलोग एकसमझते है बडीभूल करते है.

इस्वीसन (१०००)में-मुसल्मानलोग-भारतकेमध्यखंडमें आये और-उन्होंने हिंदुस्थाननाम रखा, पहिले भारतवर्ष नामथा,

इस्वीसन (५७) में-विक्रमसंवत्-और-(७८) में-शालिवाहन-शक-जारीहुवा,

(९६)-उससभामें बिल्कुल नबोलनाचाहिये जहांअपनीवातकी कदर नहोतीहो,

बेमौके बातनिकालना मूर्खोंका कामहै,

अच्छेलोग तुमकों वरसोंसें समझातेरहे लेकिन! तुमने अपनीबकवाद नहीछोडी,

... तुम्हारामगज कुत्तेकेमगज जैसाहो तो बेशक!-बकवाद करो,

लेकिन! याद रखो । भैंसके सामने भैरवीरागनीगाना कोइ फायदानही,
 जहां मूर्खोंका समाजमिलाहो-वहां-नसीयत-क्यों देना ?
 शरीर थोडेदिनकाहै-दुखपडे दुखसहो-सुखमें घमंड मतलाओ,
 मनकों धीरजवाला बनाओगें बडा फायदा होगा,
 वैश्याके साथ व्यापारकरना अच्छा नहीं,
 कामीपुरुषके चित्तमें धीरजनहीहोती,
 विरहिन लुगाइका मन उसके बशमें नही रहता,
 तामसीआदमीके दिलमें छलकपट ठहर नहीसकता.

(९७)-सुनार-दरजी-लुहार-सुतार-नाइ-कुंभार-धोबी-क-
 सारे-नीलगर-छीपे-घांची-कलाल-भील-चारण-भाट-सीकलीग-
 र-पींजारे-भडभुजे-गुजर-अहीर-माली-गंधी-रंगरेज-चूडागीर-नट
 जुलाहे-मोंची-और-चमार-वगेरा कोइ हो अपनेअपने ऐलममें द-
 गलवाजीकरे उसकों अकलमंद नहीं समझना, अकलमंद-बो-है-
 जो-नेंकीसें चले. जोलोग दगावाजीकरके दौलत मिलाना चाहते है
 वे-कभीनकभी पकडेजायगें, छलकपट जाहिरहोगा इतनेशमींदे
 होनापडेगा-जो-उनका दिलही जानेगा.

(९८)-ज्योतिष्-चिकित्सा-स्वरोदयज्ञान-अष्टांगनिमित्त-
 और-मंत्रविद्या जाननेवाले सबजगह-सन्मानपाते है. वैद्यलोगोंकों
 मुनासिवहैकि-बीमारआदमीसें औषधकेदाम पहिलेसे लेलियाकरे
 बीमारी मीटेबाद कोइ नही पूछेगा, व्याकरण-काव्य-कोश-न्याय
 और-अलंकारका पढाहुवा-सबशास्त्रोंका-अर्थ करसकताहै,-शास्त्र
 पढकर सभाकों रंजनकरना-बहोतही तेजबुद्धिका कामहै, मूर्खलोग
 मर्मकों नहीपहेचान सकते, बडेलोगोंने इसीलिये कहाहैकि-दाना

दुश्मन अच्छा-लेकिन ! मूर्खमित्र अच्छानहीं.

(९९)-मूर्खशब्द यद्यपि विद्याहीनोंकाही वाचकहै लेकिन !-न-मालूम-इनअढाइअक्षरोंमें क्या !-ताकतरहीहैकि-इसकेसुननेसे जगतभरके मनुष्य गभराजाते है, कभीकभी यहशब्द पंडितोंकीस-भामें लडाइभी करादेताहै, यह शब्द जितना उसके वाच्यार्थको दुखदायी नहीहोता पंडितोंको होपडताहै, जरा किसी पंडितको-मूर्ख-ऐसाकहदोकि-तुर्त्त-लडाइ होजातोहै, इसलिये कहसकते है कि-मूर्खशब्दमें एकतरहकी ऐसीबडीभारीताकत रहीहुइ है जो दूसरेमें होना मुश्किलहै, एकरास्तेहोकर तीनमूर्ख कहींकोजारहेथे थोडीदूरपर उन्होंको एकउंचा मीनारा दिखाइदिया, जबपासगये और उसके बननेका विचारकरनेलगे. एकमूर्खनेकहा-देखो ! अगाडीकेआदमी कितनेलंबेहोतेथे जो ऐसी ऐसी ऊंचीमीनारे बनाकर तयारकरदेतेथे, दूसरेनेकहा तूं ! बडामूर्ख है !-कुच्छभी नही समझता, अगाडीकेआदमी इतनेलंबे नहीहोतेथे, बल्किन् !-पहिलेदिनोंमें ऐसे ऐसे लंबेमीनारे जमीनपर बनाकर खडाकरदिया करदेते थे. तीसरेनेकहा तुमदोंनो मूर्खहो-तुमने इसकाभेद नहीपाया-असलमें यह मीनारा नही है, किंतु कुवा है-जो उल्टाकरके खडा करदियागयाहै, अगर इसको सुल्टाकरदियाजाय तो वनावनाया कुवाही है,

(१००)-(औरभी-मूर्खोंके दृष्टांत सुनिये-)-एकरौजकीवातहै एकआदमीकी भेष मरगइ-जब उसको वहोतदिलगीरी आइ और रोनेलगा-पडोंसीने आनकर पूछाकि-भैया ! क्यों रोतेहो ?-वो-बोला !-मेरी भेष मरगइ जो सारे कुणबेको पालतीथी-पडोंसी क-

हनेलगा-धीरजधरो-हमे तुमे कालेरंगकी वस्तुसैं फायदा नही-मैरो भी आज काली हंडीया-फूटगइहै. इसवातकों सुनकर सबलोग हसनेलगे, मूर्खोंकी लीला अपरंपारहै, (दूसरा दृष्टांत.) एकसमय-कीवातहै कचहरीमें जजसाहबके सामने एकशख्खका मुकदमाचलताथा, जजने पुछा! तुम व्याहेहो-या-नही!-वो-कहताहे हजूर! मैं तो नही व्याहा, मैरी औरत व्याहीहुइहै, जजने कहा क्या! अदालतसैंभी मश्करी करते हो!-वहकहताहै हजूर! मैरी क्यामजाल है!-जो मश्करी करूं? असलवाततो यहहैकि-मैरी औरतने मुजे छोडकर दूसरेसैं पुनर्लग्नकर लियाहै. इसबयानकों सुनकर सब लोग हसने लगे.

(१०१)-बेटेकी-और-चेलेकी-तारीफ उसकेखरुमें करना अच्छानही अलवते! औरतकी तारीफ उसकेखरुमें करना ठीक है.-याते-वह-ज्यादे-ताबेदारी करतीरहेगी, वापकों-और-गुरुकों मुनासिवहै कि-बेटे-और-चेलेकों अपनासंपूर्ण ऐलम सीखला दे, हां!-अगर नालाइकहो कोइजरुरतनही, लाइकवरोंहीकों ऐलम सीखलाया जाताहै. दुर्जनकों विद्यापढाना और सांपकों पालना एकसरखाहै, मुनासिवहै योग्यकों विद्या देना,-किसी लेखपत्रकों या-प्रबंधकों लिखने-बैठना तो एकचित्तहोकर बैठना चाहिये, ध्यानकों इधरउधर डोलानेसैं अच्छालेख नही लिखा जाता. चीठीलिखनेमेंभी बडीचतराइ चाहिये. विनाविचारे कुच्छलिखदिया जाय तो पीछेसैं शर्मोदा होनापडताहै, एकमहाशय!-अपनी औरतकों चीठीलिखने बैठे. लिखते लिखते उपरसैं चींड़ियाने कागजपर बींठ करदिइ, आपने उसीतर्फ ध्यान लगादिया-और गु-

स्सेमें आनकर पत्रमेंभी लिखदियाकि-क्या करु! दूरहै-अगर पा-सहोती तो टांगपकडके सीधी करता-चीठी जब स्त्रीकों पहुंची-वाचकर वहोतनाराज हुइ-और जबपतिकेपास आइ ओलंभा दि-या-आपने चीठीमें क्यालिखा था,?-महाशय! शर्माँदंहुवे-और-कहनेलगे मेराध्यान उसवरुत चीँडियामें था.

(१०२)-जिसकों वरुतपरजवाबदेना नहीआता-उसकों मू-खोंकीपंक्तिमें गिननाचाहिये. हाजिरजवाब आदमी बाजेवरुत बडे मौकेकों साधलेताहै, (एकवरुतकी बातहै)-बादशाहने हुकमदिया कि-रातकों कोइशखश शहरमें रास्ता न चले. तमामलंगोंने बा-दशाहके हुकमसें मकानकेबहार पग नही रखा. लेकिन!-एकयु-वान-लडका-रास्ते चलता-सिपाइयोंकों मिला. सिपाइने टौका कि-क्यौरे!-तेने बादशाही हुकम नही सुना?-लडकेने कहा, बे-शक! सुनाहै, सिपाइ बोला!-फिर हुकम अदुली क्यौ! किइ? -लडकेनेकहा-तुजेमालूमभी है? मै! किसका लडका हूं?-याद रख! मै-उसका लडका हूंकि-जिसके सामने तमामबादशाह-सरदार-और-शाहजादे-गर्दन झूकातेहै. सिपाइकों मालूमहुवाकि-खलिफ-हजाम-नाउका-लडका था. हजामकी औलाद बडीसैतान होतीहै. यहां उसके हाजिरजवाबकी तारीफ लीइगहै.

(१०३)-हरहमेश खुंशमीजाजरहनेकी आदतडालना बुद्धि-मानेशखशोंकाकामहै, हरवांतपर बहोत फिकरकरना कोइजरुत नही, जैसा जिसकाभाग्य होगा अखीरमें वैसाहीवनाव बनेगा. बाजेआदमी ऐसे बहेमीहोतेहैकि-भूत-डाकिन-या-जादूकेडरखो-फमेंही दिनरात दवेरहतेहै. किसीरौज-भेंस-या-गौने-दूध-नही

दिया तो वह मलाते हैकि-नमालूम-इसपर किसीने जादू किया होगा, लेकिन! यह बात अच्छी नहीं. किसीका मुंह-ट्रैडा-बांका-होजाय तो-कह देते है किसी देवताका इसपर कोपहुवा है, लेकिन! यह नहीं सौचतेकि-इसको रोग क्या है?-ज्ञानीयोंने बारबार कहरखा हैकि-जब तक जिसके भाग्य अच्छे है-कोइ-रोग-या-तकलीफ-नहीं होसक्ती,-रोगी-औषधसे अच्छानहो-तो-उसमें वैद्यका-या-औषधका-दोषनिकालना कोइजरुरतनहीं. वैद्यलोग इलाज करनेके अधिकारी है आयुष्यके अधिकारी नहीं. एकतरहकी गर्मीके रोग-कों मूर्खलोगोंने शीतलाकारोग कहरखा है लेकिन!-बड़ीभूल है कि रोगकों-देवीका कोपसमझना. शीतलादेवीका पाखंड अकसर और तोंहीसे चला है, आजकल जमाना ऐसा वर्त रहा हैकि-जिसमें औरतोंका कहना मंजूर रखनेवाले ज्यादा-और-उनको अपने कहनेमें चलानेवाले थोड़े है. शीतलादेवीके नामसे मानता करना-सप्तमी-केरौज वासीभोजन जिमना-और-शीतलादेवीकों-औलाद बचानेवाली समझना बड़ीभूल है, असलमें शीतलादेवी-कोइवस्तु-नहीं औरतोंने अपनीमूर्खतासे एककल्पितबात जाहिर कर रखी है. समझदार औरत कभी इसमें सामिल नहींहोती.

(१०४)-सुन्ना-चांदी-मुंगा-हींगलु-पारा-हरताल-लाहो-कथीर-तांवा-पीतल-सीसा-मीटी-पथ्थर-सुरमा-नमक-अवरख-हीरा-पंजा-मानक-नीलम-वगेरा पृथ्वीकायके भेदमें है, मतलबकि-इनमें पृथ्वी कायके जीव पहिले उत्पन्न होचूके है. हथियार लगनेसे जीव मरगये और कलेवर रहगया. कुवा-नदी-समंदर-कुंड-वगेरा के जितनेपानी है सब अपकायकेभेदमें जानना चाहिये. धनोदधि-

एकतरहका जलपींड है, लेकिन !-जमेहुवे घीकीतरह पृथ्वीके नीचे रहाहुवा-यहभी-अपकायकेहीभेदमें समझना चाहिये. जलकों तताकियेबाद उसमें जीव नहींरहते, (यानी)-अग्निकेजरीये जीव मरजातेहै, दवाबुटी-मिश्रीवगेरा मिलानेसेंभी जल-अजीव-होजा ताहै. जोलोग उश्नजल बनाकर ठंडाकिये बाद पीतेहै उनकों फौ-डेफुनसी-वाला-कभी नहीं निकसता. जगहजगहकेपानी उसकों विगाडभी नहींलाते. सबवकि-उसकाविकार अग्निकेयोगसें नास होजाता है. उश्नजलपीनेवालेकों कामविकारभी नहीं सताता. सब तरहकी हवा-वायुकायके भेदमें जानना चाहिये. वृक्ष लता-ब-ल्लरी-सबतरहके छोटेछोटेपेण्ड-बीज-अंकूरा-फल-फूल-पत्ते-और जितनी औषधिये है-सब-वनस्पतिके भेदमें-समझनाचाहिये-(यानी) इनमें जीव-उत्पन्नहोना-और-सुकजानेसें उनमेसें नास हो जाना सहीवात है.

(३०५)-पृथ्वीमें-अगर जीव नहोते तो-मूंगे-नमक-और-पथरमें-जो समानजातिके अंकूर उत्पन्नहोतेहै-न-होनेचाहिये. होते जरूरहै इसलिये कहसकतेहो कि-पृथ्वीमें-जीवकाहोना स-हीवातहै. पानीमें जीव-न-होते तो जमीनके खोदनेसें आपहीआप बहार-न-निकलआता. और दूर्दूरकीतरह निकल जरूर आताहै. इसलिये जलभी जीवमयहै ऐसाकहना झूठवात नहीं. अगर-अ-ग्निमें जीव-नहोते तो घी-वगेरा उसमें डालनेसे उसकी बढवारी न-होती, और होती जरूरहै इसलिये अग्निमेंभी-जीवका होना सही है. वायुमें जीव न होते तो-बिदून प्रेरणाकिये-उसमें नियत तीरश्चीनगति नहोसकती. और होतीजरूर है. इसलिये इसमें जीव

माननाभी सहोदुवा-(यानी) जीवमय पवनहै ऐसा कहना कोइहर्ज की बात नहीं. बनास्पतिमें जीव-न-होतेतो-लाजवंतीवगेराके पैड हाथलगानेसे संकोच-न-होजाते, जलकेसंयोगसे लतावल्लरीयाँकी बढवारीहोना यहभी जीवकी पैदाशकॉ संवृतकरताहै. प्रियंगुवृक्ष-न-खीलताहो ओर पद्मनीस्त्री-उसे प्रीतिकेशाथ स्पर्शकरेतो खीलजायगा. अशोकवृक्ष-पद्मनीस्त्रीके नैवरपहनेहुवेपांवके प्रहारसे विकासमानहोजाताहै, तोलक-और-कुरवकवृक्ष-पद्मनीस्त्रीके-कटाक्षमारने-और-आर्लिगनकरनेसे विकस्वर होजाते है. कर्णिकावृक्षके नीचे पद्मनी नृत्य करे तो आवादहोजाय. वगेरालक्षणोंसे जानाजाताहै कि-वनस्पतिमेंभी-एकइंद्रियजीवहै. एकइंद्रियजीव उ-सकॉ समझनाचाहिये जिसकॉ-जवान-नाक-आंख-और-कान-न हो, फक्तएकीलाशरीरधारीही हो.

(१०६)-अगर सवालकियाजायकि-जमीन-पानी-हवा-और वनस्पतिमें जीवहै-तो-वें-धूपकेवरखत छांवमें और छांवकेवरखत धूपमें क्यौं नहीं चले आते?-(जवाव,) जीव दोतरहके-एकस्थावर-दूसरेत्रस-जो एकइंद्रिय-यानी-केवलशरीरधारीही होते है-वें-स्थावरजीव कहेगये, दूसरे त्रसजीव-वें-द्वींद्रिय-त्रींद्रिय-चतुरिंद्रिय-और-पंचेंद्रिय-है. वें-धूपमेंसे तकलीफहोनेपर छांवमें-और-छांवमें से धूपमें चलेजाते है, त्रसजीवोंका यही भेद हैकि-वें-त्रस-पाकर इधरसे उधर चलेजाय-स्थावर नहीं जाय. शंख-कृमि-पानीमें पैदाहोनेवाले पूरे-और-जॉक-ये-द्वींद्रियजीवोंकेभेदमें है, शरीर-और जवान-इनकॉहोती है, कनखजूरे-खटमल-जूं-चींटी-मकॉडे-कुंथुयें और-गोंवरकेकीडें-यें-तीनइंद्रियवाले जीवहै, शरीर-जवान-और

नाक-इनकों होते है. वींछू-भवरा-भवरी-डांस-मच्छर-तीड-पतंगीये-और-मखखी-ये-चारइंद्रियवाले जीव है, इनकों-शरीर-जबान-नाक-और-आंखे होती है, सांप-मच्छली-मौर-कौवा-चिल्लोता-चीडा-चींड़ी-कुत्ता-गधा-गौ-बैल-घोडा-हाथी-सिंह-और-मनुष्य-ये-पांचइंद्रियवालेजीवहै. इनकों-शरीर-जबान-नाक-आंख-और-कान-होते है. जीव जैसीकरनीकरताहै वैसाफल पाताहै, एकजन्मसे दूसराजन्म-और-दूसरेसेतीसरा-इसतरह जबतक निस्पृहत्पकरके सबपापोसें मुक्त नहोगातबतक-वह-संसारमें अटनकरता रहेगा. जीव अनंतहै यानी उनकी गिनतीकरे तो पारनही आता. एकसुखी एकदुखी-एकराजा-और-एकरंक-यहसब अपने अपने किये हुवे पुन्यपापका फलहै,

(१०७)-आकाशमें ग्रहण होताहै तब कइलोगकहते है चंद्र जब-पृथ्वी और सूर्यके बीचमें आताहै और उसवरुतजब चंद्रकी छाया सूर्यपर पडतीहै तब-सूर्यग्रहण होताहै. और जब पृथ्वी-सूर्य और चंद्रकेबीच आती है उसवरुत जब-पृथ्वीकीछाया चंद्रपर पडती है चंद्रग्रहण होताहै. (जवाब.)-यह कहना गलत है, सबबकि-यहबात तब बनसकती है जब पृथ्वीकों अस्थिर यानी फिरतीहुइ माने. पृथ्वीका फिरना युक्तिप्रमाणसें साबीतनहीहोता जो लोग साबीतकरते है-वे-बूठेप्रमाणसें कुतर्कद्वारा करते है, पृथ्वीकी-दैनिक-और-वार्षिक-दोतरहकी गतिमानकर कहना कि-अपनी धूरीपर-ब्रह फिरती है यह बात सही नही ठहरती. क्योंकि वह धूरी किसके आधार है! अवलतो इसका जवाब कोइ नही दे सकता.-और-कोइ देताभी है. तोबताता है कि-वह धूरी-एक-

कल्पितरेखा-समझो-(जवाबमें) कहनेवाले कहसकते हैं कि-जब धूरी कल्पितरेखाहै तो उसपर रहकर पृथ्वीका फिरना-कल्पित-क्यों नहीं?-वस! इत्यादि प्रमाणोंसे पृथ्वीका फिरना और उसकी छायासे चंद्रग्रहणहोना वगैरा सही नहीं होसकता. ग्रहणहोनेका सबवयहहैकि-आकाशमें-एकपर्वराहु-और-एकनित्य राहु-यहदो-विमान भ्रमण करते हैं जैसेकि-और-ग्रहोके भ्रमण करते हैं, उक्तदोनोंराहुके विमान श्यामरंगके हैं-और चंद्रसूर्यके विमान तेजस्वी है, प्रकाशवाले विमानकी बराबरीमें जबश्यामरंगके विमान आजाय तो अलबते! उनपर श्यामताका प्रतिबिंब दिखाइदे, वस! ग्रहणहोनेका यही सबवहै दूसरा कोई नहीं, पृथ्वी स्थीर-और-चंद्रसूर्य वगैरा ज्योतिषचक्र-अस्थीर-(यानी)-आकाशमें फिरता हुआ है, पृथ्वी स्थालीके आकार गोल और इसके कनारे आकाशमें उपररहकर ज्योतिषचक्र-जैसे घाणीके चौफेर वैल फिरे-वैसे-मैरुकी चौफेर फिरताहै. जो लोग-पृथ्वीकों-गेंदके आकार गोलमानकर मसालदेते हैंकि-अगर पृथ्वी गोल-न-होती तो समुद्रके जहाजकी धजा पहिले क्योंदिखती?-(जवाब.)-यह वातगलतहै, पहिलेधजाही नहीं-किंतु-जहाजही खुद एकछोटासा आकारका दिखाताहै, सबवकि-दूरकीचीज छोटी दिखना यह नेत्रोंकी ताहसीरही है, जैसे जंगलमें सीधीसडकपर खडेहोकर दूरनिगाहसें देखोतो पावोंकीजगह सडक चौड़ी-और-दूरपरवही सडक-सकड़ी मालूमदेतीहै, कहिये! सडकतो वहांभी एक सरखी चौड़ी है फिर सकड़ी क्यों दिखी?-सौचो-तो-यही सबवहैकि-दूरकीचीज छोटी दिखना. मैदानमें खडेहोकर देखनेसें यहभी मा-

लूमहोताहैकि-आकाश-पृथ्वीके चौफेर मोलाहुवा-एकतंबुकी व-
राबर गॉलहै, अगरकहाजायकि-पृथ्वीकी गॉलाइसैं आकाशभी
गॉल दिखताहै-तो-यहवात गलतहै, सबबकि-पृथ्वीकी इतनी दू-
रमें इतनीगॉलाइ नहीहोसक्ती. वल्किन्! नेत्रोंहीकी ताहसीर है
दूरकीचीज थोडीदिखना, इसीसबबसैं जिधर देखो? गॉलाकार
मालूम देताहै,

(१०८)-तीर्थकर-चक्रवर्ती-वासुदेव-प्रतिवासुदेव-और-मंड-
लीक राजे जब मौजूदथे उसजमानेमें उनकेनामसैं संवत् चलता
था. इसलिये कहसकते हैकि-दुनियामें संवत्-कइ-चलचूके. और
आगेकों-कइचलेगें. जिसबख्तमें जो राजा प्रतापी हुवा-उसबख्त
उसीकेनामका संवत् जारी होगया और अगला लॉप हुवा. कइ-
लोग अपनेअपने धर्मप्रवर्तकोंके-नामकों अगाडीरखकर संवत् च-
लाचूके है, इनदिनोंमें चारतरहके संवत्-भारतकेमध्यखंडमें जारी
होरहे है. अवल-विक्रमसंवत्-वाद-शालिवाहनशक-इस्वीसन-
और-हिजरी—

(१०९)-कोइशख्त जब कैद होजाताहै-या-दौलत-चलीजा-
तोहै-उसबख्त बडाही अचंभामानकर कहताहै हाथ!-ये-दिन-मै-
रेलिये कहांसैं आये!-लेकिन! अगरसोचाजाय तो-सबदिन एक-
सरखे किसीके नहीरहते. जैसेजैसे-कर्म-किये गयेथे-वैसे-सामने
आये-अबं घबडाना क्यों?—कियेहुवेकर्मके उदयसैं रिषभदेवजीने
वर्षदिनतक भोजन नही पाया, मल्लिनाथ-स्त्री-हुवे, रामचंद्रजीकों
वनवास करना पडा, रावणकी लंका हाथसैं गइ, सुभूम चक्रवर्ती
समुंदरमें डुबा, कलावतीसतीके; दोनोंहाथ छेदन हुवे, सब अपने

अपने किये हुवे-कर्मोंका फलहै, खेंतीकरो और विगडजाय-कि-सीकेघर भोजन जिमने जाओ और-परोसनेवाला कंजूस मिले-अपनेकर्मोंका दोष समझना चाहिये. अच्छाखाना खाया और उ-समें मखखी-खाइगइ-सब उल्टानिकालना पडेगा. साधुलोग भि-क्षामागनेगये-और-योग-न-मिला. किसीशख्शकों धनदौलत बहोतहै-लेकिन?-अच्छी औरत-नही-मिली. अच्छी औरत मि-ली-तो-धनदौलत नही,-सब-अपनेअपने खोटे कर्मोंहोका फलहै. ज्ञानोशख्श दिलगिरी नहीलाते अज्ञानी लाते है, वस!-समझदां-रोमें और मूर्खोंमें इतनाही फर्क है,

(११०)-हरबात बोलनेसें पहिले सौच लेना चाहियेकि-जो कुच्छ-मैं-बोलता हूं-दूसरेलोग उसकों समझ सकेगें-या-नही?-अगर न समझसके वैसे लोग जहां मिले हो-वहां-उसबातका बया-नकरना कोइजरुरतनही आदमीकों हरबात बोलते पहिले सौचलेना चाहियेकि मुजे इससे क्या फायदा-और-नुकसानहोगा?-इसबख्त कौन भैरेदुश्मन और कौन दोस्तहै?-किसराजाके राज्यमें मैं बैठा हूं?-जमाना कैसाहै?-लोगोंकी हवा किसतर्फ चल रही है?-और कौनकौन भैरे यहां मदतगारहैं?-इनबातोंकों सौचकर बोलनेवा कभी खता नही खाता, सबबात बुद्धिके तालुकहै. बुद्धिमान आ-दमी विकारकों प्राप्त होजायगा तो भी अपने आपकों संभाल स-केगा. देशाटनकरनेसें-और-सभामें भाषणदेनेसें बुद्धि तेज होती है, देशाटन किये विदून देशदेशकी चालचलन मालूमनहीहोती. लेकिन? इतना यादरहेकि अपनाधर्म-खोकर-देशाठनकरनाभी कोइफायदा नही. धर्म रखा उसने सबकुच्छ रखा, दोलत धर्मकी

दासी है, एकशरश-दौलतके घमंडमें अंधाहोयाहुवा-वगीपर स-
वारहोकर हवाखोरीकों जारहाथा. रास्तेमें कुच्छ रातपडगइथी
और दरवजेकेपास एक अंधा उसके सामने मिला, जो एकलडके
के कंधेपर हाथदेकर दूसरहाथमें लालटेंनलिये हुवे आरहाथा. व-
गीपर बैठनेवाला धनाट्यशरश-उस-अंधेसें-पुछताहैकि-अवे ! अं-
धे !!-तुशे-लालटेंन रखनेसें क्या ! फायदा पहुंचता है ?-अंधेने-
जवाबदिया-लालटेंन-मैरेलिये नही है, लेकिन !-जो-पैसेके घमंडमें
अंधे होरहे है उनकेलिये है. सबबकि-दौलतमंड आदमी आंखोंके
होते हुवे भी अंधे होजाते है. वो-चूपहोकर-आगेकों चलागया.

(१११)-दोस्ती उसकेशाथ रखना मुनासिवहै जो-हिम्मत-
बहादूर-उदार-और-चतरहो. मूर्खमित्र जानका जोखमहै. अपनी
खूबसुरतीकी तारीफ करे-या-दुनियामें मैरी वरावर कोइ अकल-
मंद नही ऐसा घमंडकरे-वो मूर्ख है. दुनियामें एकसेंएक बढकर
पडे है, जो मनुष्य मनःपरिणामसें खोटेइरादे कररहाहै ज्ञानीजनोंने
उसकों भावहिंसक कहा, अगर इरादाकरेकि मैरे दुश्मनके घर
आगलगे. हैजा-होजाय, उसका धन चौर लूट जाय, वो-नदीमें
डूधमरे, वगेरा खोटाध्यानकरनेसें उसका कुच्छ नही होता, व-
लिकन् ! अपनेकों पापलगत है, मनवचनसें कियाहुवापाप-अगर-
पश्चातापद्वारा-आत्मशाक्षीसे-या-गुरुसाक्षीसे-आलोचे-नींदे-नही-
तो अगले जन्ममें कायासें भोगना पडे, जिसका मन विरक्तहै-वो
सदा त्यागी है, क्रोध-मान-माया-और-लोभ-इनचारोंकों जिसने
कमकिये-उसनेधर्मका रास्ता पहिचाना ऐसाकहनेमें कोडहर्जनही,
देवमंदिर-या-धर्मका-पैसा देनाहो-तो-जलदी देनाचाहिये. न-

मालूम-कल क्या होगा?—देवके-केशरचंदनसें तिलक नहींकरना-
 देवकेजलसें स्नान नहीं करना—और देवके भांडेवर्त्तन-सारंगोत-
 बले-भेंरी-सितार-नगारेवगेरा कोइचीज-हो-अपने काममें नहीं
 लानाचाहिये. इससें देवकी वेअदबी होती है, मनःपरिणाम मली-
 न होनेसें पाप लगताहै, और लौकिकमेंभी बुराइ जाहिरहोती है.
 देवकेसामने चढाहुवा-फल-नैवेद्य-चावल-बादाम-नालियेर-सोने-
 चांदीकेवरक-गेहनेआभूषण-अंगीयां-छत्रचवर-और-नगदरुपये
 पैसे-जोकुच्छहों देवमंदिरके भंडारमें रखनाचाहिये, फक्त-फल-
 और-नैवेद्य-जोकि-रात्रीकों रखेनहीजाते-वे-मालीवगेरा जो देव-
 केलिये फुलवगेरालातेहो उनकों देदेना चाहिये. सोभी एकहीकों
 नहीं, आज एककों तो-कल-दूसरेकों-इसतरह जो नेंकीसें काम
 करताहो उसकों देना ठीकहै, एकहीकों देनेसें-वो-घमंडमें आकर
 जहागीरदार बनजाताहै, कोइदिनपिछें कहनेलगेगा-मैंही-इसका
 मालिक हूं-इसीलिये. धर्मशास्त्रोंमें फरमायागयाहै कि-देवमंदिरोंमें
 पूजारीलोगोंकों रखो तो उनकी तनखाह मुकरर करके रखो,
 चढापा उसकों देकर वें तनखाह मत रखो.

(११२)—कंजूसआदमी सबकों बुरालगताहै. उसकीतारीफ
 कोइनहीकरता. कंजूसआदमीकों धर्मपाना वहोतमुश्किलहै, जबत-
 कउसकों मिटीपर मोहब्वतहै धर्म प्यारा कैसे होसकताहै?—विदून
 धर्मके प्यारेवने मुक्तिहोना कोइधर्मशास्त्र नहींफरमाता, कंजूस-
 और-लक्ष्मीके दोएक-सुवाल-जवाव-सुनलिजिये!—

[सोम-लक्ष्मीके-सुवाल-जवाब.]

(लावनी.)

सोमलक्ष्मीदोनोंका झगडा-सुनजो पंचों! चित्तलगाय,
 कहती लक्ष्मी सुनो! सोमसें-ना खरची ना खाइजाय, १
 कहता सोम तूं! सुनवें लक्ष्मी!-तुजे कभी नहीजाने दूं,
 खाडाखोदके रखूं तुजेकों-ना खरचूं ना खाने दूं, २
 योगीजंगम आवे मांगने-ना मुठीभर दाने दू,
 बजारमेंसें रे! कभी पैसेकी-चीज नही लाने दूं, ३
 ऐसी जुगतसें रखूं तुजेकों-तूंभी जाने रखी छिपाय,
 कहती लक्ष्मी सुनो! सोमसें-ना खरची ना खाइ जाय, ४
 कहती लक्ष्मी सुनवें! सोम तूं-है मूरख पापी नादान,
 परपुद्गलका मोह त्याग दे-करले निज आतम पहिचान, ५
 कहता सोम तूं सुनवे! लक्ष्मी-महापापिनी हत्यारी,
 दौलतखातर बहेनने मारी-भाइपर कटहारी, ६
 भाइभाइमें शिशकटावे-बेंटा बापसें लडता री!,
 तेरे कारने बिचारे!-कइहुवे दुर्गतचारी, ७
 तूं! पापी चंडाल सोम-तेरेसें कछु नही धर्मदेवाय,
 कहती लक्ष्मी सुनो सोमसें-ना खरची ना खाइ जाय, ८

(११३)-बचनाचाहिये कंजूसोंकी दोस्तीसें-दुर्जनकी संगतसें
 कुपढके व्याख्यानसें-वैश्याओंकी कीतानसें-बारुदकी कोठीसें-जु-
 आरीओंकी मुठीसें अजीर्णरोगसें-और-बचनाचाहिये बदचलन
 औरतके नखरोंसें,-जो शरुस फक्तजवान जोरीही करना जानते

है और-रूपयापैसाहोतेहुवेभी-खरचनहीकरते-वें-कभीनकभी-वें-इ-ज्जतीका फल उठायगें. गृहस्थोंको चाहियेकि-वख्तपर-धनखरचनेमें कंजुसपना नकरे, साधुओंको चाहिये कि-धर्मशास्त्रका पठन-करे याते कोइउसें धर्मचर्चामें लाजवाव न करसके, अखवारवाले हमेशा लेखनीकीलडाइलडते है, लेकिन!-हां ! तलवारोंकीलडाइसें लेखनीकीलडाइ-ज्यादेमुश्किलहै इसमें कोइशक नही. जो सभा-जिसकामकेलिये-उठीथी-वह-काम-न-करसकी तो उसको बिलि-योंकी वरात समझनाचाहिये. अखवारोंको पढनेवाले-वहोतकुच्छ अकलहोशियारी पासकते है इसलिये सबमहाशयोंको मुनासिवहै कि-अखवार रौजमरें-पढा-करे.

(११४)-आजकल भारतकेमध्यखंडकी खेंतीकाव्यापार-और देशीचीजोंका-आदर इसलिये घटगयाकि-देशीचीजोंपर उनकी अरुचि-और-विदेशीवस्तुओंपर रुचि बढती गइ, यद्यपि कमदा-मोंकी चटकीलीचीज-स्वदेशकीबढिया और पायेदारचीजोंके आगे कुच्छभी ताकतवर नही है, लेकिन ! इसतर्फ उनका ध्यानही-नही-ठहेरता इसका क्या ! कहाजाय, !! पारिसशहरमें-दुपहिया-तीनपहिया-पैरगडीपर-बैठनेका बडारिवाज है, वियोसनामके मै-दानमें-इतवारकेरौज तोसतीसहजार पैरगडीयां देखीजाती है. इ-नमेंवहोतसी गाडियां स्त्रीयोंहीकी-और-थोडी-मदोंकी सबबकि-पुरुषोंसे-स्त्रीयोंको-वहां-हरवातका ज्यादेशोक है, कइदेशोमें लोग कुत्तोंको-पालकर हरवख्तपासरखते है लेकिन ! ज्ञानीजनोंने-जा-नवरोंको हरवख्त पासरखना अच्छानही फरमाया. नमालूम कि-सवख्त वेइज्जती-करवैठे ?-एकसभ्यवीवीको-कुत्तापालनेका-वहोत

ही शौक था. हरवख्त उसकों प्यार करतीथी, लेकिन!—एकवख्त वैसेमझकुत्तेने उसकेमुंहपर ऐसादांतमाराकि—उसविचारीकों दवा-खानेजाना पडा. यद्यपि पशुओंमें कुत्ता बहोतहीचतर—परिश्रमी—और—स्वामीभक्त—होता है, मालिकका खोंफ रखना, सिपाहीके बतौर घरोंमें पहरा देना—जो मिले उसीकों सबररखके भोजनकरना, अपनेमालिककी हमेशा तर्फदारीमें—रहना—और—हमेशा—चौरोंसें—मालिककों—बचाना वगैरा कइगुण—कुत्तेमें—मौजूदहै लोकेन!—अखीरमें जानवर जानवरही है, इसका बहोतसंगरखना फायदेमंद नहीं.

(११५)—बारहआदमीकाबल एकबैलमेंहोताहै, दसबैलोंकाबल एकघोडेमेंहोताहै,—और—बारहघोडोंका बल एकभेंसेमें होताहै. पांचसोभेंसाकाबल एकहाथीमें—पांचसोहाथीकाबल एकसिंहमें—दोसेंसिंहकाबल एकअष्टापद जानवरमें दोसेंअष्टापदोंकाबल एकबलदेवमें—दोवलदेवोंकाबल एकवायुदेवमें—नववासुदेवोंकाबल एकचक्रवर्तीमें दशलखचक्रवर्तीका बल एकदेव एककरोडदेवताओंकाबल एकइंद्रमें—और—तीनकालके इंद्रोंकाबल एकअरिहंतमें होताहै, आजकल एसेवलवानपुरुष नहींरहे, कोइशखश घमंडकरेतो उसका घमंड झूठाहै, आदमीओंमें—और—जानवरोंमें—जोजो—ताकत पहिले जमानेमेंथी अवनहीरही, पहिलेकालकेराजे ऐसे वलवानथे—जो—रैयत वदलजायतो अकेले उसकों बशमें लासकतेथे, इसवख्तकेराजे अगर फौज वदलजाय कुच्छनही करसकते, ताकतभी एकवहोत वडीचीजहै, कइ पहेलवान ऐसेभीमौजूदहै जो जमानादेखते उनकों दूसरेलोगोंसें वलवानकहना ठीकहै, लेकिन? वैसेनहीरहे जो पहिले कालमें थे.

(११६)—सातव्यसनोंमें जुआव्यसन सबकासिरदारहै, जिसको जाहन्नमसे जानाहो जुआको खेले. जुआरीआदमी जहां मिलते है आपसमें कहते है खेलो भाइ! जुआ, जुआसे भाग्यकी परीक्षा होती है, आजतो दिवालीहै हम एकरात जुआ खेलकर वर्षभरके भाग्यकी परीक्षा नकरे?—अमृतसे मीठा जुआ, जुएसे मीठा संसारमें कौनहै?—दुनिया भूलमें पडीहै जो जुआ नहीखैलती. वेंमौके दूधकीमलाइभी फायदा नहीपहुंचाती. लेकिन! जुआ वेंमौके भी फायदापहुंचताहै, किसीवरुतमें जुआ वेंचैनी नहीदेता, हमतो-राज्य-खजाना-औरत-और-वेटावेटी-तिलांजलिकरदेवे, लेकिन! जुएको न छोडे. सावासीदेना चाहिये पांडवोंकीछातीको—जिनोंने अपनीऔतरकोंभी धरदिइ, इससे ज्यादाें औरक्या होगा? हमारेपास हारनेजितनेको क्यारखाहै?—लेकिन!—तोभी—हम जुआतो जरूर खेलेंगे. जुएवाजोंकी लीला अपारहै, कहांतक समझावे? अगर जुआही उमदाहोता तो सारी दुनिया जुआही खेलैकरती, लेकिन! सबजहान मूर्खनही है, मूर्ख-वेंही-है-जो-जुआ खेलते है, जुआखैलनेसे पांडवोंने जोजो तकलीफपाइ उनको-न-सौचकर द्रौपदी हारजानेकी वहादूरीपर जिनको सावासीदेना मंजूर है उनको कौन समझासकताहै?—जिनको नीतिपर लातमारकर चौरीधारीको मौललेनाहो-या जिनको वेंडज्जतीका तकमाहासिलकरना हो-जुआको-खेले,—नलराजा जुआकेखैलसेही राज्य हारगया था.

(११७)—(स्त्री-शिक्षा,)—(१)पद्मनी (२)चित्रनी (३)हस्तनी और—(४)शंखनी—येचारभेद जहानभरकी स्त्रियोंपरदाखिलहोस-

कते है, पद्मनीस्त्रीकी बोली मीठी होती है, आंखोंमें शर्म-मुखः चंद्रमाकीतरह गोल-नाक तोतेकाचंचसमान खूबसुरत-दांत अनारकी कली-केश पतले-शरीर चंपेकेरंगकीतरह, चमकीला-कमरपतली-नाभी विचमेंसें उंडी-हृदय खूबसुरत-शरीरकी चमडी मुलाइम अंगुलीलंबी-नख लाल-निलाड पांचअंगुल उंचा-अर्द्धचंद्रमाके आकार-होठ लाल-और-पतले-पसीनेमें चंदनकी तरह खुशबू आवे-हंसनीकीतरह अच्छीचाल-नींद थोडी-काम थोडा-घमंड बिल्कुलनही-इतरफुलेल बहोत चाहे. पद्मनी स्त्रीकेरजमें फुलोकीतरह खुशबू आवे-रातकों पद्मनीके शरीरकी झलक ऐसी दिखाइदे जैसी वीजलीकी चमक हो-शींगारपहेनना बहोतरुचे-गहने अच्छे लगे-स्वभावसें बडीदलेरहो-रूपयेपैसेकों कंकरकीतरहसमझे-अवाजकरके कभीहसेनही-हसे तो थोडासा हसे-पद्मनीके औढनेमेंभी खुशबू महेकती रहे-धोकर सुकावे तो खुशबूकेमारे भवरें उसपर आनबैठे-पद्मनीका खजाना तर बना रहे-देवदर्शन-और-तीर्थयात्रामें खुशरहे-धर्मपर श्रद्धा अटल होय-साधुलोग बहोतप्यारे लगे धर्मस्नेही पुरुषोंकों, साहायदेतीरहे-शास्त्रसुनना और पुस्तकपनेबाचना-पद्मनी बहोत चाहे-धर्मकेकाममें खर्चकरके पुरुषोंकोंभी मातकरुडाले-पद्मनीस्त्रीकों, धर्मकीपुतली कहदो कोइहर्जकीवातनही पतिकेदिलकों कभी नाराज नकरे दासदासीसें लडाइ नलडे-वचन ऐसाबोले जो सबलोग खुशहोजाय-बामे अंगपर उसके अच्छे लक्षण मौजूद रहे. पद्मनीस्त्रीके स्तन सुंदर-पोनि लक्षणवाली-और-आंखें-कमलकीतरह रसीली-होती है,-जिसके अच्छे भाग्य हो-पद्मनीस्त्री-मिले,-पतिसें जुदाइ कभी नहीसमझती-रसोइवना

नेमें चतर-पानबीडी खाये विदून चैन-न-पड-सदा-ताबेदार बनी रहे-ये-सब पदमनीस्त्रीके-लक्षण बर्ननकिये गये. स्त्रीकेलिये पतिकेकहनेमें चलना इसकेशिवाय दूसराकोइवशीकरण नहीं-पदमनी स्त्री-चौसठकलाकी पूरी जानकार होती है.

(११८)-चित्रणीस्त्रीकों रंगरंगीलेकपडे अच्छेलगे-शरीर ब-होतसुंदर हो-हिरनीकी तरह नेत्र उसके चकितरहे-खर्चकरनेमें दलैरहोय-चतराइकरके सबका मनमोहलेवे-मुख चंद्रमाकीतरह गोल-शरीर गौरा-ललाट चारअंगुल उंचा-भ्रू-तीक्ष्ण-फुलोंका शिंगार बहोतचाहे-चित्रणीका-वीर्य-सहेतकीतरह खुशबूवाला-केश पतले लंबे-चित्रकारी औढना उसकों अच्छालगे-चित्रकारीकाममें चतर हो-दांत खुबसुरत-होठ पतले-स्तन गौल-बोली रसीली-वनास्पति खाना बहोत चाहे-कामकलामें चतर-कटाक्षमारकर पुरुषकों वश करे-बातवातमें पतिकों रिझावे-नाटककरनेमें बडीचतर-बीणाब-जाकर मोहितकरे प्रेमकरना पदमनीसें चित्रणीकों ज्यादा आताहै पतिका मन फुलकीतरह विकासमान करे-इतरफुलेलसें खुशबूदार रहे-बामेअंगमें तील हो-तरहतरहकेपाक बनावे-मोतियोंकेहार और जवाहिरातलगे गहने चाहकर पहने-देवदर्शन-और-तीर्थयात्रामें राजीरहे साधुलोगोंकी सेवाभक्ति बहोतकरे-धर्मशास्त्रका सुनना ज्यादा रुचे-जिसके अच्छेभाग्यहो उसके चित्रणीस्त्रीका योग मिले चौसठकलामें चित्रणीभी पुरीमाहितगार होती है-पदमनी भोले-स्वभाववाली चित्रणी कुच्छ स्वभावसें चालाक होती है.

(११९)-हस्तनीस्त्री-पदमनी चित्रणीसें-अलबते ! कमदर्जेपर है, लेकिन ! तोभी अच्छीहोती है, हस्तनीस्त्रीका शरीरपुष्टहोता है,

हथनीकी तरह सदा मतवाली-और-मंदमंद चाल चले-शरीरका रंग-गेंहूवर्ना-कामभोगसें तुष्टि नपावे-लाज थोड़ीरखे-हस्तनीका वीर्य-हाथीके मदकीतरह गंधवालाहो, धर्मश्रद्धा होवेभी-ना-भी-होवे-जैसीसंगतमीले वैसाधर्मकरे-कला-और-चतराइ हस्तनी के मंद होय-(शंखनीस्त्रीका वर्नन सुनिये!)-शंखनीस्त्री सरलबो-लीबोले-प्रेम क्याचीजहै बिल्कूल पहिचानेनही-शरीरका रंग तथा अंगोपांक ठीकनही-लिखनापठना न-जाने-लाज बिल्कुलनही-बे-शर्महोकर हसे-शंखनीका वीर्य मरीहुइमछलीतरह बदबू मारे-नींद बहोत-अच्छेलोगोंकी संगत उसे पसंदनही-अपना अवगुन-न-प-हिचाने-धर्मपर श्रद्धानही-साधुलोग उसकों बुरेलगे-दान-पुन्य क रना जाने नही प्रीतकरनेकी तरकीब यादनही-येसब शंखनीकेल क्षण है. आजकल पदमनीस्त्री दुनियामें बहोतकमहै, चित्रणीभी कमही है लेकिन! तोभी जिनकेअच्छेभाग्यहो मिलभी जाती है,- आजकल ज्यादातर हस्तनी-और-शंखनीही नजर आती है, अस-लमें चाहे पुरुष-हो-या-स्त्री-हो रुपपाना पुन्यके आधीन है, अ-कलहुशियारीपाना उससेभी ज्यादा पुन्यके आधीन कहा; और धर्मपाना सबसे बडे पुन्य हो तब मिल सकता है.-आजकल मनु-ष्य पुन्यहीन रहगये, अच्छे आदमी या अच्छीस्त्री ज्यादा कहां से मिलसके, ?—

(१२०)-पदमनी चित्रणी हस्तनी और शंखनी इनके अवां-तरभेद गिने तो एकएकके सोलहसोलहभेद होते है. चारोंके मि-लानेसें (६४) भेद होसकते है, जाति लक्षण और गुण तरहतरहके है, विद्वान ज्ञानी उसका पुरेपुराहाल कौन माळूमकरसकताहै ? इस

लिये बड़े चार—और—उसकेनीचे चौसठ कहेगये वही बहोत है, ज्ञातयौवना अज्ञातयौवना प्रौढा मध्या धीरा वासकशय्या अभि-सारिका कामकंदनी मुग्धा विप्रलब्धा विस्रब्धा और प्रौषितभट्ट-का वगेरा जिसजिसतरहकीस्त्रीये कामशास्त्रोंमें वर्ननकिइ है यहां कहांतक लिखे, ?-जिसशास्त्रकों वर्ननदेखा अपार है, और इमकों वहां थोडेमें बहोतकुच्छ कहनाहै इसलिये इतनाही लिखाण यहां पर ठीक समझा गया.

(१२१) स्त्रीकों विद्यापढना जरूरचाहिये, जैसे कच्चेघडेपर जोजो चिन्ह कियेजाय वह कभी नही मिट सकते वैसे छोटीउम-रकी पढीहुइविद्या जींदगीतक यादरहती है, विद्याविदून मनुष्य अंधाहै अगर अंधेकों अंधी मिलजाय फिर बिगाडकीसुरत पैदा-होगी या नही? स्त्रीकों पढानेवाली स्त्री होनाचाहिये, धर्मपुस्तक और कलाकौशल्यताकेग्रंथ स्त्रीकों पढना ज्यादे फायदेमंद है, जो लोग स्त्रीकों पढाना बुरावताते है वे-असलमें मूर्खोंकेसिरदार है, अगरकहाजायकि स्त्री विद्यापढेगी तो-खोटेकामोंमें खयाल करेगी, (जवाब.) पुरुष पढाहुवा अगर खोटेकामोंमें खयालकरेतौ इससे पढना बुराकहसकते हो?—अगर नहीकहसकते तो, फिर पढनेसे क्या!—बिगाड आया! हां! ऐसी स्वाधीनता स्त्रीकों न दो जि-ससे वो मतवाली बनकर पुरुषकों कुच्छ न समझे, आर्यलोगोंके कायदेही ऐसे है जो स्त्री कभी स्वाधीन होही नहीसकती, हमारा कहना यहनही हैकि स्त्री केवल अंग्रेजी और फार्सीही पढे, स्त्री-कों धर्मशास्त्र और कलाकौशल्यताके ग्रंथ पहिले पढना चाहिये जो कि-संस्कृतभाषामें-बनेहूवे है. स्त्रीशिक्षाका मतलब यह नही है कि-

स्त्री-किताबें बगलमें दवाकर मिशनस्कूलोंमें जाके बायबिल पढे, बी०ए०-एम०ए०पासकर हाईकोर्टकी वकालत और डाक्तरी करे, कांग्रेसकी डेलीगेंट बनकर स्पीचोंका गौला छोड़े, और विलायतजाकर सिविलियन बने, बरन्!-स्त्रीशिक्षाका यह मतलबहै कि-स्त्रीयां-संस्कृतपढकर धर्मग्रंथ बांचतीरहे, गृहस्थधर्मके कार्य सीखें, पतिसें किसतरह बर्ताव रखना, अपने होनहारबेटाबेटीकों किसतरह बिद्यापढाना, धर्ममार्ग कौनसाहै-वगेराबातोसें माहित-गारबने, माता पढीहुइहोगी तो अपनीऔलादकों खोटेमार्गसें रौकेगी. और ऐसी शिक्षा देगी जिससे-वे-अंग्रेजीपढकरभी होटलमें टोटल देकर बोटलकेवशीभूत नबनेगें. और ऐसा मंत्रभी-वह-उनके कानमें फुंकदेगी जिससें-वे-कभी-अपनेधर्मसें भ्रष्ट न होसकेंगें.

(१२२)-वहुतेरे अकलके अंधे-जो-कहरहे हैकि-स्त्रीकों-पढना-अच्छानही उनसें पूछा-जायकि-बतलाइये!-उपरलिखे गुण पढनेसें हासिलहोसकते है-या-मूर्खरहनेसें-पढीलिखीस्त्रीयोंमें सेंकडे एक-बदचलन निकलेगी-मूर्खणीस्त्रीयोंमें सेंकडे ननाणुं बदचलन निकलेगी.-कहिये! यह फायदा हुवा-या-नुकशान?-स्त्री-पुरुषकी अर्धांगनी कहलाती है और दुखमें मित्रवत् पतिकों सहायता पहुंचातीहै, कहिये! कौन ऐसा मूर्खहोगा-जो-आधेअंगकों साफ और आधेअंगकों मलीन रखना मंजूररखेगा?-जो आपही कुवेकीमेंडकी है वह पतिकों क्या! फायदा पहुंचासकेगी? पुरुष तो चौदह बिद्याका खजाना और स्त्री कालाअक्षर भेंस बराबर गिने, कहिये! उनका मेल कहांतक ठहरसकताहै?-और-उनका-प्रेम कहांतक वृद्धिकों पहुंचसकताहै?-इनवातोंकों सौचकर अगरकोइ कुच्छ

कहेतो-उसपर-गौरभी होसकताहै, लेकिन! जो कोरा शंखनाद करजानते है उनका क्याकहाजाय?—सबशास्त्रोंमें लेखहैकि-स्त्रीकों बिद्या-जरुर पढना चाहिये, चौसठकलामां लिपिविज्ञान-एककला लिखी हुइहै, मूर्खोंके फरमाने मुजब अगरस्त्रीकों शास्त्रकारोंने मूर्ख रखना मंजूर था-तो-ऐसालेख क्यों लिखते?—त्रगेराप्रमाणोंसे सबूतपाया जाताहैकि-स्त्रीशिक्षाकी परिपाटी ज्ञानोर्योंकों मंजूरथी, मूर्खलोगही इसबातसे नाक चढाते है,

(१२३)-स्त्रीकों ऐसाखैल न-खैलनाचाहिये जिससे बेशर्म-भरीबात मुंहपर चढजाय. विद्यापढनेका वख्त छोटी उमरही है, छोटीउमरमें मातापिताके हुकममें चलना-और-विवाहितहोयेबाद पतिके हुकमकों शिरचढाना-स्त्रीकेलिये निहायतउमदाहै. पतिसे छलकपटकी बात कभी-न करना स्वामीकेदियेहुवे धनकों बाहियातकाममें नही लगाना. मनसेभी परायेपुरुषकी चाहना न रखना पतिहीकी सेवामेंदाखिलहै. पीठेंवचनबोलना-और-पतिके उपभोगमें अनुकूलरहना-खानदानस्त्रीकी निशानी है, कोइस्त्री अपनेस्वामीकों वशीकरणकरना चाहे सच्चीपतिव्रता होकर रहे, स्वामीके हुकमकों फूलकी तरह सिरपर चढावे. शय्या-कपडे-और-मकान साफरखना-चतरस्त्रीयोंका कामहै. रूपवतीस्त्री-अगर अपनेरूपका घमंड-करेतो-प्रतिकों मुनासिवहै उससे अपना मन खेंचलेवे. बोलना वंदकर उससे अलगशय्यामें सोवे. वहस्त्री-कौनकामकी-जो स्वामीके हुकमपर-न-चले, वैसीस्त्रीकों-रोटीकपडे जितना खानपान-देकर-अलगकरदेना चाहिये. सोभी-अगर-सदाचारिणी-रहे-तो-अगर-व्यभिचारिणी-होजाय-तो खानपान-देनाभी-मु-

नासिव-नहीं,—जो लोग स्त्रीकों अपने शिरपर चढालेते है—वे—अंतमें बड़ीवेइज्जती—और—तकलीफ उठाते है, अच्छेलोगोंने वारवारफर-मायाहै कि—स्त्रीकों—बहोत—शिरपर—न—चढाओ, एकस्त्रीके मरजाने-पर जब कइपुरुष—दूसरीस्त्रीकों विवाहते है तब पहिलेवालीके बे-टेकों बडीतकलीफ—पहुचाते है, नयीस्त्रीकों खुशकरनेके लिये उस लडकेकों मारपीट करते है, घरसें अलगकर जितनाहिस्सा उसकों देनाचाहिये नही देते है. लेकिन!—यहबात न्यायमार्गसें बखिछाफ है. संसारव्यवहारमें जितनानाम—बेटेसे—चलता है स्त्रीसें नहीचलता मुनासिबहै उसपुत्रकों—नयीस्त्रीसें—ज्यादेआनंदमें रखे, उसके पुन्य उदयमें—खामीथी—जो उसकी असलीमाता मरगइ. अब बल्किन्! उसलडकेकों ज्यादे दिलासा देनाचाहिये,—नयीस्त्रीके प्रेममें लंप-टहोकर जो लोग बेटोंकों कुच्छ चीज नही समझते उनकी दुनि-यामें बुराइ—और—परलोकमें दुदर्शा होतीहै.

(१२४)—कामविकार मोहनीकर्मका—एक—अवांतरभेद है, इ-समें फसकर—स्त्री—पुरुष—अंधेहोजाते है. तारीफ उनकी है—जो—अंधे न—बने, हाव—भाव विलास और विभ्रम ये चार—कामविकारके ब-ढानेके हेतुहै, कामीमनुष्यका चित्त मलीनइरादोंसें—गर्क—रहताहै, कइलोग कहदेते हैकि—स्त्री जितना पुरुषकों नहीचाहती उतना—पुरुष स्त्रीकों चाहताहै. (जवाब.) यह बात गलत है, सबबकि—काम विकार—एसीबस्तु है—जो—इसमें पडकर दोंनों बेहोश होजाते है, संसारमें निगाह फैलाकर देखलो—खुद मालूमहोजायगा. हां! इतना कहसकते हो—कामविकार—जीतना बडामुश्किल है. जिनोंने इसकों जीतलिया तारीफ उनकी है. अगर सवालकिया जायकि—किसीने.

जीताभी है?—जवाबमें—इतना कहसकते होकि—हां!—ज्ञानीजनोंने इसकों—जीतभी—लियाहै, जो लोग—कामविकारतर्फ दिल बहोतबढाते है उनकों अलवते! इससें फतेहपाना—मुश्किल है. कोइवृक्ष दुनियामें. ऐसानही. जिसकों हवा—न—लगीहो, जैसे यह मसाल ठीक ठीक सही है—वैसे कामविकारकी हवा लगनाभी. मनुष्यकेलिये एक कुदरतीनियमहै, लेकिन! तारीफ उसकी है—जो—टूटेफूटे नही.

(१२५)—पूरवजन्मके—कियेहुवे—सुकृत्यसें मनुष्य रूपवान् होते है. चाहेस्त्री—हो—या—पुरुषहो,—जैसे अकल होशियारी एकतरहका वशीकरण है वैसे अच्छारूपभी एक वशीकरण समझो. रूपदेखकर कइपुरुष—और—कइस्त्री मोहित होगये है. घरछोडके एककेपोछे एक चलेगये—यहवात किसीसे छीपीहुइनही. जिसपुरुषकों जिसस्त्रीके साथ रागहै उसकों धर्मशास्त्रका वचन जितना असर नहीकरता—उस स्त्रीका वचन असर करता है. अगर कोइ—मुनि—उस पुरुषकों धर्ममें धनखर्चनेका उपदेशदेवे तो खर्चे—या—नभी—खर्चे, लेकिन ! अगर वहस्त्री उसपुरुषकों—कहेकि—आप—इतने रूपये—इसकाममें देदो—तो—उसी वख्त देदेगा. इसीतिरह जिसस्त्रीकों जिसपुरुषकेसाथ रागहोगा—उसकों—अगर—वहपुरुष कहे कि—तुम!—इसकाममें—इतनाधन देदो उसीवख्त देदेगी. राग—बो—चीजहै—जो इसकेवशमें पडकर बडेबडे चकरा जाते है. संसारके तीनहिस्से ऐसे नजर आते है—जो ऐशआराममें गर्कहै. मुठीमें पारा रखना और कामविकारसें दिलकों वचाना एकसरखाहै, जिसपुरुषका या जिसस्त्रीका मर्म तुमने देखलियाहै. उसकोंभी बनतेप्रयत्न जाहिरकरनेसें वचाव रखो, दूसरेका मर्म जाहिरकरनेसें अ-

स्त्रीमें बड़े झगड़े आनपड़ते हैं. स्त्रीका पक्षकरके जो जो पुत्र अपने मातापितासे लड़ते हैं वे आदमी नहीं जानवरहै, मातापिताकी बें अदबी करना या अपनी स्त्रीसे उनका मानभंगकराना वेवकूफों-का कामहै, तुमको लाजिमहै कि मातापिताकी ताबेदारी करो. उन्होंने तुमको पालाहै, पैशावपाखाना उठाया है, रातरातभर तुमारे लिये जागे है, तुम अब उनकेसामने बोलतेहो या स्त्रीसे उनको गालीयां दिलवाते हो,—तुमारेसमानकोइपापी अधमीं और भाग्यही न नहीं, शिरपरचढानेयोग्यपदार्थको खाखकीवतौर समझते हो.

(१२६)—जो शरूश मातापिताकी ताबेदारीकरते हैं उनकी स्त्रीभी मारेडरके साससुरसे कभी सामना नहीं करती लेकिन ! अपशोषहैकि—आजकल ऐसे लाइकवर पुत्र बहोत थोड़े रहगये. स्त्रीकी और अपनीमाताकी लडाइहोजाय तो मुनासिबहै पहिले अपनी स्त्रीको हठाना. सबबकि माताका दर्जा बडाहै, मातापिताका अन्यायहो—तोभी—आप—स्त्रीका पक्षपकडकर—उनकेसामने—न बोले—मुनासिबसमझेतो—उनकेदोस्तोंसे—ताबेदारीकेशाथ—कुच्छबिज्ञप्तिकरावेकि—आप—क्षमाकरे, जो—पुत्र—मातापितासे—ऐसाजवाबदेता हैकि—वहू—छोटीहै आपतो बडेहो—समता करो, वह—पुत्र—नहीं—दुश्म नहै, इससेतो अपनीस्त्रीका पूरेपूरापक्ष सबूत होजाताहै, स्थानांग-सूत्रके तीसरेस्थानमें लिखाहैकि—मातापिताका—और—धर्माचार्यका बदला—कभी—नहींदियाजाता. अगर कोइपुत्र—मातापिताको—फुलैलतैलसें मालीसकराके—हरहमेश—स्नानकरावे—अच्छेकपडे पहनाकर छत्तीसतरहकेभोजन जिमावे, और सारीउमरतक सेवा करे तो भी उनकाबदला—न—देसके हां !—अगरचे ! सर्वज्ञकथितधर्मसुनाकर

उनको धर्मश्रद्धामें प्रक्रे करे-तो-अलवते! उनका बदला देसकता है, जिनको ऐसे बचनोपर श्रद्धाहै कभी मातापिताका सामना न-हीकरते. कितनेक ऐसे शखश है-जो-स्त्रीकेवशमें पडकर भाइका अपमान करते है, लेकिन!-तकलीफकेवखत-भाइही-कामआताहै, रामचंद्रजीको भाइनेही-कामदिया था. रामचंद्रजी ऐसे शूरवीर थे जो कभी कचेदिल नहीहुवे, लेकिन!-जब लंकायुद्धमें लक्ष्मनको मूर्छाआइथी-रों-दिया था, भाइहो-तो-ऐसेहो, बेटामरजायतो दू-सरीस्त्री-विवाहनेसें-दूसरा-पैदाहोसकता है, लेकिन!-सगीमातासें जन्माहुवा-भाइ-मिलनामुश्किलहै. वों-नालाइकहै-जो-भाइकेशाथ दुश्मनीरखते है. हरेकभादमीको मुनासिबहै देवगुरुधर्मको अवल नबरमें समझे-और-उनकेशाथ वर्तावभी ऐसाही रखे, वाद माता-पिताको दूसरेनंबरमें-समझे-भाइको तथा बेटोंको तीसरेनंबर और स्त्रीको-चौथेनंबरपर समझे. और उसमुजब वर्तावभी रखे. स्त्री-के-रागमेंपडकर उपरलेदर्जेवालोंको कुच्छचीज-न-समझना. वडी भूलहै.

(१२७)-एकशेठकेबेटेको एकवैश्यासें वडीमोहवतथी. सबधन उसको खीलादिया, जब खर्चसेंतंगहुए शहरछोडकर देशांतरको गये, नसीबकेकारण वहां नौकरी मिलगइ, तहसीलदारहोगये. दो चारमहिनेकेवाद अपनेनोकरसेंकहा-यह-(५००) रुपये लेजाओ.- इसमेसें-(४००)-हमारीवैश्याको-और-(१००) रुपये-हमारीघरवा-लीको देना, रसीद लेते आना. नौकर चतरथा पहिलेही वैश्याके घर गया. कहनेलगा तुम्हारे सबसें ज्यादेप्यारेदोस्तने-(४००)-रु-पये-भेजे है, सो-लेलो!-और-उसकेनामकी रसीद देदो, वैश्या

बोली !-रुपये किसने भेजे है !-नौकर कहता है तुम्हारे प्यारे दोस्तने-
 वैश्या-बोली-उसका नाम-क्या-है ?-नौकर बोला ! क्या ! तुम नहीं
 जानती हो ?-वैश्या बोली-मेरे बड़े प्यारे दोस्त तो नहै. नौकरने उ-
 नतीनोंके नाम लिखलिये. लेकिन ?-अपने मालिकका नाम नहीं आ-
 या, वैश्याने फिर-तेरह-और-फिर-छप्पनभी-नाम लिखवाये. ले-
 किन !-किसीमें अपने मालिकका नाम नहीं आया. नौकरने फिर
 पुछा कि-अब भी कोइवाकी रहता है ?-वैश्याने कहा !-यूतो-सैंकडे
 भडवे मैरी गलीमें फिरा करते है. नौकर चला आया, और-(५००)
 रुपयेही अपनी मालकीनकाँ दे दीये. रसीद लेकर मालिकके पास
 आया, रसीद दिइ, मालिक नाराज हुवे. कहने लगे उसके हाथकी
 सही क्यों नहीं ?-नौकर बोला !-हजूर ! हिसाब सुन लिजिये !-न
 तीनमें-न-तेरहमें, न-छप्पनमें-बहत्तरमें. बतलाइये !-आप किस ग-
 लीके भडवे हो, ? वैश्याकी दोस्तीका यह नतीजा है जिसकाँ अप-
 नी इज्जतमें कलंक लगाना हो वैश्याकी दोस्ती करे.

(१२८)-उपदंशवृग्गोराबीमारी जो-अक्सर मर्दोंकाँ-होजाती है
 वैश्याका संग भी एक-रोगकी जड है. बातसच्च भी है कि-जहां बहोत सैं
 आदमीओंका वीर्य मिलेगा रोग क्यों-न-होगा ?-जिस जगह उपदं-
 शकारोगी पैशावकरे उस जगह पर पैशाव करने वालेकाँ भी यहरोंग
 लगजाता है. इस वीमारीवालेकाँ चाहिये छिपावे नहीं. शर्मके मारे दू-
 सरेकाँ-न-कहोगे-वीमारी वढती जायगी. उपदंशकरोगीकाँ मुनासि
 व है वैद्यकी सलाहसैं इंद्रिय जुल्लावलेकर रोगका इलाज करावे. जव-
 तक आराम-न-हो-स्त्रीके पास-न जावे, मनके ढंगेसैं खाइहुइदवा-
 कार-नहीं करती. वैद्यकी दिइहुइ थोडी चीज भी फायदा पहुंचाती

है, मासिकधर्म कमीबैसीहोनेसें स्त्रीकों-कमरमेंदर्द-वेंचैनी-सिरमें दर्द-बगेराबीमारीजारीहोता है. कभी-काला-या-बहोतगर्म-रक्त-निकलना,-हमेशा शरीरगर्म रहना,-हाथपांवके तलवोंमें पसीना आना,-कलेजा धडकना-कमर और जांघमें दर्द-पेटकेनीचेभीदर्द रक्तजारीहोनेसें पहिले तकलीफहोकर फिर मीटजाना-ये-सब मा-सिकधर्म कमीबैसीहोनेके लक्षण है.

(१२९)-स्त्रीकों-पुरुषकीवनीस्पत कामविकार ज्यादाहोना फरमाया. पुरुषकीतरह जाहिरातमें मुखसें नहीकहती, लेकिन! छलकपटकेजरीये आंखोंके इशारेसें मालूमकराती है, पुरुषका काम-विकार थोडी देरतक-और-स्त्रीका-बहोतदेरतक रहताहै. स्थानांग सूत्रके तीसरेस्थानमें स्त्रीकी योनि तीनतरहकी वर्नन किइ,-(१)-कूर्मोन्नता-(२)-शंखावर्त्ता-और-(३)-वंशपत्रिका-जिसकी कु-र्मोन्नतर्यानिहो उसस्त्रीके-गर्भमें-तीर्थकर-चक्रवर्त्ता-बलदेव-और-वासुदेवबगेरा उत्तमपुरुष पैदाहोते है. चक्रवर्त्ताकी चौसठहजारस्त्री-योंमें-जो-पटरानी-होती है उसकों शास्त्रमें रत्नस्त्री कहा. रत्नस्त्रीक-हनेसें यह मतलबहैकि-दूसरीस्त्रीयोंसें उक्तस्त्री-ज्यादे-रूपवतीहोती है, इसकी योनि-शास्त्रोंमें-शंखावर्त्तके आकार फरमायी. इसके गर्भ नहीरहता, चक्रवर्त्ताराजा-जब-संभोगकेलिये इसकेपासआता है तब मूलशरीरसें आताहै, और दूमरी-जो-तेसठहजार-नवसें-ननापुंस्त्रीरही उसकेपास जाताहै तब वैक्रिय लब्धिकेजरीये न्यारे न्यारेरूपवनाकर जाताहै.

(१३०)-स्थानांगसूत्रके पाचवेस्थानमें विनासंभोगकियेभी-स्त्रीकों-गर्भरहनाफरमाया, यद्यपि यहवनाव बहोतथोडीजगह बन-

ताहै लेकिन!-जोवात-बनने योग्यहै उसका बयानकरना कोइ ह-
 र्जकीवातनही, अगर सवाल कियाजायकि-विना-वीर्य-गर्भस्थिति
 कैसेहोसकेगी,?-(जवाव.)-कौनकहताहै? विना वीर्य-गर्भ-रहे. अ-
 लवते!-संभोगकिये विदून-गर्भ-रहनाकहासो ठीकही है. सुनलि-
 जिये!-कोइस्त्री-किसीपुरुषका-वीर्य-मंगाकर अपनीयोनिमें स्था-
 पनकरे और वह गर्भाशयतक जाकरस्थितहोजाय-तो-गर्भरहना
 संभवहै. दूसरा यहभी सबबहैकि-जबकभी-किसीसरोवरमें-या-कुं-
 डमें-स्त्री-स्नानकरनेजाय वहां समझो कोइपुरुष-पहिले स्नानकर-
 गयाहै और उसका स्खलितहोयाहुवा-वीर्य-उसजलमें तैररहाहो-
 वो-वीर्य-लोहचूंककीतरह आकर्षणहोकर गर्भाशयमें संचार हो-
 जाय तो गर्भ रहना संभवहै. इसीलिये स्त्रीकों-नग्नहोकर स्नानकर-
 ना मुनासिब नहीफरमाया. आदमीभी अगर नग्नहोकर स्नानकरे
 तो उसेभी कौन अच्छा कहताहै,?

(१३१)-[अप्राप्तयोवना]-बारहवर्षसे कमउमरवाली-
 स्त्री-आजकलकेजमानेमें-अप्राप्तयोवना-कहीजाती है, एसी कमउ-
 मरवालीस्त्री-पुरुषकेसंयोगसेंभी-गर्भधारण-नहीकरसकती. सबब-
 कि-छोटीउमरमें उसकों रितुधर्म नहीआता, पचवनवर्षकी उमर-
 वालीस्त्रीकों आजकल [अतिक्रांतयोवना]-कही, उसकों रितुधर्म-
 केअभावसें गर्भ नहीरहसकता. किसीस्त्रीकों खानपानकी सामग्री
 अच्छीमिलनेसें ज्यादाउमरतक ताकतवर बनीरहे-तो-उसकों गर्भ-
 रहभी सकताहै, लेकिन! बहोतस्त्रीयोंकों-न-रहनेसें-यहीकहना मु-
 नासिबआयाकि-पचवनवर्षके बाद-स्त्री-अतिक्रांतयोवना है. स्त्री-
 पुरुष-दोंनों-युवाअवस्थाकेहो-गर्भाशय-मार्ग-रक्त-शुक्र-अनिल-

और-हृदय-येछहचीजनिर्दोषहो-तो-ताकतवरपुत्रपैदाहोनेकासंभवहै उक्त छहचीज दोषितहोतो कमताकत होगा. स्त्रीका-रज:-ज्यादेताकत वरहोतो गर्भमें-लडकी-और-पुरुषका-वीर्य-ज्यादेताकतवरहो-तो-लडका-होनेकासंभवहै. जन्मसें लगाकर-जो-स्त्री-निर्बीज-(यानी) बंध्याहो वह पुरुषकेसंभोगसेंभी गर्भ-न-धरेगी. सबबकि-उसने पू-रवभवमें एसेहीकृत्यकिये है जिससे उसके गर्भाशयमें औलादहो-नेकी ताकत-न-हासिलहुइ. जिसस्त्रीकों हरहमेश रक्तप्रवाह बहता रहे उसकोंभी गर्भरहनेका संभवनही जानना. रितुधर्म-आयेबाद पनराहरौजबतीतहुवेपीछें बाकीके-जो-पनराहरौज-अगलेरितुधर्म-आनेकेबीचमें-रहे उनमें संभोगकरनेसेंभी गर्भ नहीरहता, स्त्रीकों जब रितुधर्म आवे तीनरौजतक संभोगकरनाठीकनही, करनेसें स्त्री और-पुरुष-दोंनोंकों रोगपैदाहोताहै, कइ एसेभी है-जो-इनदिनों-मेंभी संभोगकिये बिदूननहीरहते. और अस्त्रीरमें बीमारीपैदाकर हकीमोंके घर तलाशकरते है, रितुधर्म-आयेपीछें तीनदिनकेबाद-जो-बारह-रौज-रहे उनदिनोंमें संभोग-न-कियाजायतो-गर्भ-नही रहे. सबबकि-गर्भस्थितिहोनेके-यही-दिनहै. जिसस्त्रीकों रक्त-पि-त्तकेप्रकोपसें गर्भहोगयाहो उसकोंभी गर्भस्थिति नहीहोसकती. क-इस्त्री-जडीवूटीखाकर अपनेगर्भाशयकों शक्तिहीन करदेती है उस-कोंभी गर्भरहना संभवनही जैसे-कइवैश्या-और-विधवा-कामावि-कारकी चाहनासें ऐसा करलेती है,

(१३२)-वाजेआदमी कहदेतेहैकि-दुनियामें-एक-स्त्रीही-उ-मदा चीजहै. (जवाब.)-यहवात गलतहै, क्या?-स्त्रीकेलिये पुरुष उमदाचीज नही?-जब एकदूसरेकेलिये एकसरस्त्रीवातहै फिर-ए-

ककों उमदा-और-एककों नहीकहना कौन चतराइ, ?-कितनेक कहते है स्त्रीका-स्पर्शकरनेसें जब आरामपैदाहोताहै-तो-फिर-वो-अच्छीचीज क्यौ नही?-(जवाव.)-क्या! स्त्रीकों-पुरुषका स्पर्शकरनेसें-आराम-नहीहोता? अगरचेहोताहै-तो-फिर-एकहीकों अच्छीचीजकहनेसें क्या! जरूरत?-हां!-इतनाकहना मुनासिबहैकि कामजन्यसुख-दोनोंकेलिये एकसरखाहै. कितनेक कहते है पुरुषकी पैदाश-स्त्रीसें-है, इसलिये उसकीनींदा करना मुनासिब नही. जवाव.)-क्या!-स्त्रीकी पैदाश पुरुषसें नही?-अगरकहाजाय एकदूसरेकोमिलापसें दोनोंकी पैदाशहै-तो फिर सौचो! क्याबात सिद्ध हुइ? और नींदा किसचीजका नामहै पहिले उसे सौचलिजिये! महाशय! सच्चबातकों सच्चकहना नींदा नही. नींदा उसकानामहै जूठाआरोप कियाजाय, पुरुषकेपुन्यसें स्त्रीका-पुन्य हीन-है, इसलिये उसकों छोटेदजेपर कहीगयी. अगरइसबातकों नींदासमझे-तो-अलगबातहै,-या-आपकों स्त्रीकापक्षपकडनाही मंजूरहैतो-उससें हमे कोइपरवाह नही. कइलोग कहतेहै-महिनेमहिने-स्त्रीकों-जो-रितुधर्म आताहै वही उसकेसवपापकों दूरकरदेताहै. (जवाव.)-यहबात गलतहै, अगर इसीसें उसका पाप चलाजाताहो-तो-फिर-उसे धर्मकरनेकी क्या! जरूरत रही?-महिनेमहिने रितुधर्म आना उसके रुधिरदूरहोनेका-हेतुहै-पापदूरहोनेका हेतुनही. नास्तिकलोग काम क्रीडाहीकों उमदाचीज समझे-तो-मरजीकीबात है. लेकिन!-धर्मशास्त्रके फरमानेवाले बेंजा बातकों सच्च नहीकहसकते. कितनेक कहते है संभोगकेवख्त-पुरुष-स्त्रीसें-प्रियभासन-करता है पीछेसें नहीकरता. (जवाव.)-क्या! स्त्री-पुरुषसें-प्रियभासन-नहीकरती!

अगरचे करती है-तो-फिर-पुरुषकेही शिर बौज क्यों!-क्या! पुरुष-और स्त्री-सदा एकसे रहनेवाले बहोतथोडे निकसेगें. महाशय! जितनी धीरज पुरुषमें होती है उसके हजारदर्जेकमभी-स्त्रीमें नहींहोती. पतिकेपीछे जलमरना कोइउमदावात नहीं. वरन्! खोटी गतिजानेका कारनहै,

(१३३)-कितनेक कहते है-स्त्रीकेलिये-पुरुष-कइतरहेके मंतर जंतर करता है इससे-स्त्री-कुच्छअच्छीचीज समजना चाहिये, (जवाब.)-जैसे मंतरजंतरके उपाव-पुरुष करताहै-स्त्रीभी-करती-है, यहवात दोनोंकेलिये एकसरखी है, चाहे-स्त्री-हो-या-पुरुषहो इसवातमें एकदूसरेकों कमीवेंसी कहना नहीं बनसकता. कितनेक कहते है दूसरेकेदोष-वयानकरे-वो-दुर्जन-और-गुणवर्नन-करे-वो सज्जन जानना.- (जवाब.)-यहवात शास्त्रकेहुकमसें वरिखलाफहै, हरेकवस्तुके गुण-और-दोष-यथार्थ वयानकरना-ज्ञानीजनोका-कामहे. दोषवर्ननकरनेका नाम-मूर्खलोगोंने नींदा कहरखाहै, लेकिन! नींदा उसका नाम नहीं. नींदा-वो-है-जो-जूठीवात कही जाय. अगर एकीलेगुणही वयानकियेजाय-और-दोष-न-वर्नन करे-तो-वो-यथार्थवक्ताही क्या!-खुशामदीहुवा,-कितनेकलोग अपनीलडकीका मॉललेकर स्यादीकरते है लेकिन!-जिसने मॉललिया उसने कन्यादान नहींदिया-वल्किन्! लडकीवेचनेका-एक धंदा-शुरुकिया जानना. कहिये! शास्त्रज्ञपुरुष इसवातकों कैसे अच्छाकहसकते है, ?-आजकल मनुष्य धर्मपरदृष्टिरखनेवाले थोडेरहे-गये, बूढेहोकरभी-लोग-विवाहकराना चाहते है इधर लडकीका वाप चाहताहै-बेटी-बडीहो-और-मुजे धन मिले. लेकिन!-अच्छे

लोग इसबातकों पसंद नहीकरते,

(१३४)—जापानदेशमें गेहूआरंगकी-स्त्री-बहोरुपवती समझी जाती है. असलमें ज्यादेगौरापनभी अच्छानहीहोता. ज्यादेगौरीचांम कोढीमनुष्यकों होती है-तो-वें-बुरेही-कहेजाते है. भारतकेमध्यखंडकी-स्त्रीयें-अपनदांतोंकों-मसाला-लगाकर-काले-करलेती है, और चीनदेशकी-स्त्रीयें-हरें-और-पीलेंरंगोंसे रंगाकरती है. इसीसे कहा जाता है कि-शींगार-और-पोंशाकमें-अपने अपने दिलकी रुचिही प्रधान है. रसोइबनाना-कुबेसें जललाना-और-शय्या विछाना-वगेराघरकाकाम-स्त्रीके-तालुक है, जो-लोग-स्त्रीकों-इतनी-महेनत-सेरहित करदेते है उनकीस्त्रीये अभिमानके शिखरपर चढकर स्वामीकों यत्किंचित् गिननेलगजाती है, जोलोग दौलतमंदहोते है उनकेघर नौकरचाकरोंकी कमी अलबते! नहीहोती, लेकिन! तोभी उनकों इतना जरूरचाहियेकि-अपनेखानेकी रसोइ अपनीस्त्रीसेंही बनवावे, याते उसकेलिये एक-उद्योग-बनारहे, बिल्कुलबिठायेरखनेसें दोंनोंकेलिये बिगाडकीसुरत है.

(१३५)—विषयसमुद्र अगाध है, धीरपुरुषभी इसमेंपडकर कायरहोगये, देवता देवांगना, नर नारी, सिंहसिंहनी, हाथीहथनी, शुकसारिका, हंसहंसनी, -और-चीडाचीडीतक-इसकेरंगमें गाफल होचूके है, जिनोंने कामविकार ज्यादे सेवन किया है उनकों पिछलीउमरमें बडीतकलीफउठानी होगी. आंखोंका तेज कमहोजाना कानोंसें बहेरेहोना-और-दम चढना-वगेरा इसीकेबुरे नतीजे है. जो-पुरुष-या-स्त्री-कामविकारसें वचनाचाहतेहो-मुनासिव है एक मकानमें-इकठे-न-रहे, एक शय्यामें-न-सोवे, कामविकार पैदाहो

वैसेशब्दोंसे-पेमकीबातें-न-करे, विकारकी दृष्टिसे-न-देखे, माजू-मवगेरा-नसेंकी चीज-न-खावे, और-जहांतकवने चित्तको डामा-डोल-न-होने दे, तपकरना-जंगलवासीवनना-और-हजारोंआद-मीओंके सामने बहादूरीसे लडाइलडना-मुश्किलनही, लेकिन!-युवानीमें कामविकारको जितना मुश्किलहै, रूपवतीस्त्री-पुरुषका-और-रूपवान् पुरुष-स्त्रीको-मोहपैदाहोनेकेहेतुहै. तथापि जिनको मोह-नही-आता-तारीफ उनकी है.

(१३६)-पहिलेकालमें जैसे सुखी-गृहस्थ-होतेथे अवनहीरहे, लेकिन!-तोभी-नास्ति-नहीकहसकते, कइएसे सुखीभी है-जो-वर्त्तमानमें-होने चाहिये. दौलत इतनी है-जो-खानपानसें खुटेन-ही. नोकरचाकर-गेंहनेकपडे-मेवामीठाइ-और-इतरफुलेल-सबहै, शरीर तंदुरस्त-और-शींगार-जैसाकरना-चाहे करसकते है, लेकिन! जिनका स्वभाव कंजूसहै उनकी लीला-तीनलोगसें-निराली है. दौलतपाकर जिनोंने धर्ममें-और-शरीरकेआराममें-खर्च-नहीकिया उनको पूछना चाहिये तुमको दौलतपानेका क्या फलहुवा?

(१३७) —[अनुष्टुप्चत्तम्.]—

सुगंधो वनिता वस्त्रं-गीतं तांबुलभोजनं,

मंदिरं वाहनं चैव-अष्टौ भोगाः प्रकीर्त्तिताः ?,

(अर्थः)-सुगंधिचीज-स्त्री-कपडे-गीतगान-तांबूल-भोजन म-कान-और-सवारी-ये-आठचीजे भोगविलासके अंगहै. जैसे स्त्री-केलिये सोलहशींगार शास्त्रोंमें बयान किये है-वैसे-पुरुषोंकेभी-ब-गिंतहै, लेकिन!-चतराइ-और-उदारता-दोनोंही शींगार सबसे बडे समझेगये है. यूंतो येभी शींगारही है-जैसे-ज्ञानकरना इतरफु-

लेल लगाना-केशोंको सवारकररखना-अच्छेकपडे पहनना-हाथमें अंगुठा रखना. सदा हिंम्रतवहादूर रहना-हाथका सखीहोना-वचनदेकर बदलनानही-सच्चबोलना-और-देशाटनमें होशियारहोना-वगेरा औरभीकइहै लेकिन! चतराइ-और-उदारतामें सभी अंतर्गतहोजाते है. स्त्रीकेलिये-स्नानमज्जन-अच्छेकपडे-कडे-कंठी-बाजुबंद-कंकण-पांवांमें नेवर-आंखोंमें लाजशर्म-और-चतराइ-ये-सब-शींगारहीके भेदहै.

(१३८)-स्थानांगसूत्रके पांचमें स्थानमें-कामसेवन-पांचतरहमें होना फरमाया. (१) पुरुष-या-स्त्री-मनमें-कामभोगकी चाहना करे इसकानाम-मनःपरिचारणा-बयान किया, (२)-काम विकार जागे वैसेशब्दोंसे वार्तालापकरना इसकानाम-शब्द परिचारणा-कहा, (३)-परस्पर रागजागे वैसी दृष्टिसे देखना इसकानाम-रूपपरिचारणा-(४)-आलिंगन वगेरा केवलस्पर्शमात्रसे कामसेवना इसकानाम-स्पर्शपरिचारणा-और-(५)-एकशय्यामें संपूर्णअंगसे अंगमिलाकर-कामभोगकरना-इसकानाम-कायपरिचारणा-फरमाया. संभोगकियेवाद तुर्त जलपीना मनाहै, सबवकि-उसवख्त-वीर्यनाडी-खालीहोंजाती है उसमें जलगिरनेसे रोगपैदा होगा. शरबत-कडुआ-कसायला-और-खट्टाखाराभोजन जीमना भी उसवख्त ठीकनहीं. तुर्त ठंडीहवामें चलेजानेसेभी रोगपैदाहोताहै मुनासिवहै कुच्छकाल ठहरकर जावे. उश्ररुतुमें कामभोग थोडासेवनकरना चाहिये, रुतुकास्वभाव गर्महानेसे शरीरमें कइतरहकेरोग पैदाहोजाते है.

(१३९)-संभोगकियेवाद गर्भमें लडका-या-लडकी-जोकुच्छ

होनाहो तुर्त्त आजाताहै, जोलोग-महिने दोमहिनेवाद जीव उत्पन्नहोना बतलाते है झूठे है, गर्भरहेवाद जिसस्त्रीकों अच्छेस्वप्न दिखाइदे-समजना चाहीए पुन्यात्माजीव गर्भमेंआयाहे बुरेस्वप्न दिखाइदे-जानना-बुराजीव गर्भमें आयाहै. गर्भवतीस्त्रीकों-सताना ठीकनही. ऐमेभी-जोस्त्री-अपनेकहनेमुजब चलतीहो-अपनेकों देखकर खुशहोतीहो-उससे नाराजरहना मुनासिवनही. प्रसूतक्रियासें विना तकलीफ पारहोना स्त्रीकेलिये-एक-दूसराजन्महै. इस अवस्थामें उसको गौररखना जरूरत है.

(१४०)-गर्भवतीस्त्रीकों बहोतमार्ग चलना-रातकों जागना-वातपित्तकों बढानेवाली चीजखाना-दोमहिनेहुवेवाद मैथुनसेवना-और-जुल्लावलेना किसीसुरत अच्छानही, गर्भवतीकों सातमहिनेहुवेवाद स्तनमें दूध पैदाहोनेलगताहै, आठनवमहिने होजाय-तो-भोजनदेखकरअरुचि आवे, भोजन जिमतेजिमते उल्टीहोजाय, वगेरा कइतरहकी वेंचैनी पैदाहोती है. हंसीकीजगह चूपहोजाना मौनकीवख्त हंसउठना-अक्रेलीरहनेकी मनसाहोना-और-मानसिकविकारसें कइतरहकी तकलीफरहना-एक-स्वभाविकनियमहै, इनवातोंसें-गभराना नहीचाहिये. किसीकिसीस्त्रीकों बालकजन्मनेसें पहिले शरीरमें सूंजन आजाती है, इसवख्त असलपुछोंतों स्त्रीकेलिये मौतकीनिशानी है, जिसके बडे भाग्यहो गर्भप्रसूतहोतेसमय सुखचैन रहे. जिसस्त्रीके दहिनेस्तनसें दूध पहिले निकसे-चलतेसमय दहिनापांव पहिले उठावे-जिसके-पेटका दहिना पासा उचाहो-और-दहिनेपासेकी रोंमपंक्ति उठीहुइहो-जानना-चाहि इसको लडका पैदाहोगा, जिसस्त्रीमें-इससें उल्टेलक्षण पायेजाय-जानना इसकेलडकी पैदाहोगी.

(१४१)—स्त्रीकीनाभिके नीचे-दोनाडी-कमलफूलकीतरहवनी हुइ अधोमुखकमलाकार है, गर्भका ठहरना इसीमेंहोताहै, इसके नीचे-जैसे आंमकीमांजरहो-एक-मांसमांजरहै. और उसमांजरके नीचे योनिहै, महिनेमहिने जो-स्त्रीकों-रतुधर्म-आताहै इसीमांजर-सैं लोही गिरकर योनिकेरस्ते वहार आताहै, रतुस्नानकियेबाद चोथेदिनसैं लगा वारहदिनतक गर्भठहरनेका काल पहिले लिख चुके है. कायपरिचारणासैं कामभोग सेवेबाद-उस-वीर्यश्रोणितमें कच्चीचोइसघडी (नवघंटे और छत्तीसमिनिट) तक-गर्भठहरनेकी ताकत रहसक्ती है, वादनही. सबवकि-फिरजब दूसरीदफे संभोगकियाजायगा तब होगी. इसीमानवधर्मसंहिताकी (१३९) मी-कलममें जो-लिखआये हैकि-संभोगकियेबाद-जीव-उत्पन्नहोनेवालाहो-तो-तुर्त्त-होजाताहै इसका मतलब यहहैकि-महिनेदोमहिने-बाद नही किंतु चौइसघडीके भीतरभीतर उत्पन्नहोजाताहै, गर्भमें जीव आतेही-पिताके वीर्य-और माताकेरुधिरका आहार लेकर-अपना सूक्ष्मशरीर-जो-अगलेभवसैं शायलायाहै जिसकेशायमें तरहतरहकीकर्मप्रकृतिभी-है-उसकों गर्भाशयमें डालकर उसकेजरीये स्थूलशरीरकी रचना शुरूकरताहै, जीव-एकगतिसें मरकर जब दूसरीगतिमें जाताहै तैजस-कार्यणरूप-सूक्ष्मशरीर-उसकेशाय रहता है. पुन्य-पाप-वगेरा कर्मभी उससूक्ष्मशरीरके शाय लगेरहते है. बस!-इसीतरह जबतक-संसारमें-जीव-भ्रमणकरताहै तबतक उसके उक्तसूक्ष्मशरीरका अभावनही होसकता. जबमुक्तहोकर शरीरहितहोगा जन्ममरण-शरीरवगेरा-न-करनेपडेगें. जिसके राग द्वेषमोहवगेरा उपाधि कमहोतीजाय उसकेपूर्वसंचितकर्म जल्दी छूट

सकते हैं, दुनियाकेपदार्थोंका-और-आत्मतत्त्वका-सच्चाज्ञान होनेसे रागद्वेषमोहवगेरा उपाधि कमपडतीजायगी, किसीचीजकी-ममता न-रखकर-तपकियाजाय-तो-सबतरहकेकर्मोंकी उपाधि छूटसकेगी और-जीवकी मुक्ति होसकेगी जबतक कर्मउपाधिमें लिप्तहै तबतक जीव-संसारी-यानी-हुँनियादार है कर्मउपाधिसँ रहितहोजाय-तब वहीजीव-मुक्तहुवा-कहलाताहै. जीव-शरीरके संयोगवियोगकी अपेक्षा-अनित्य-और-आत्मधर्मकीअपेक्षा-नित्यहै. जैसे-दीयाकांचा दना छोटैकानमें संकोच-और-बडेकानमें-विस्तारसँ फैलताहै वैसे आत्मा-पूरवकृतकर्मानुसार छोटैबडेशरीरमें विकासमानहोता है, जब आयुष्यकर्मकी पूर्णताहोनेपर दूसरेजन्मका आयुष्य उपा-र्जनकरके इसशरीरका छोडताहै लोग कहते हैं-मरगया, जीव अ-सलपूछोतो मरतानही है यानी उसका नाशनही होता. हाँ! स्थूल शरीरका नाश जरूरहोताहै.

(१४२)-गर्भठहरेवाद सातदिनमें उसवीर्यश्रोणितका गर्भा-शयमें कुच्छ गाढापन बनताहै, बाद सातदिनकेपीछे उसका और ज्यादेतर कठिनपींड बंधकर आंमकीगुठलीकीतरह बनताहै, बाद सातदिनकेपीछे उसपींडकी कठिनमांसग्रंथी बनकर महिनेभरमें-वह-सोलहतोले-वजनदार होजाती है, दूसरेमहिने कुच्छज्यादे क-ठिनहोकर तीसरेमहिने-दूसरेलोगोंकोभी-गर्भकाआकार मालूमदे-नेलगताहै, पांचवेमहिने हाथपांव-और-मुख-तयार होते हैं, छठे-महिने पित्त-और-लोहीवननेकीशुरुआतहोती है, सातवेमहिने छोटी नसें-और-आठवेमहिने पूरेपूराशरीर तयारहोजाताहै, नवमेंमहिने हाड-केश-और-नखवगेराबनते हैं. माता-जोकुच्छ खातीपीती है

उसका-रस-पहुचकर गर्भकों ताकतमिलतीरहतीहै. अंधेरकोठरीमें पडेहुवे आदमीकी तरह अकसर उसकों तकलीफही उठानीपडती है, गर्भकों गिरादेना बडाहीपापहै, कइस्त्रीयें-और-वैद्यलोग-इस-कामकों करते है और अपनेआपकों नरककुंडमें डालते है. गर्भमें जीव-रोमक्रेजरीये खानपानकरताहै. जैसेहमतुम खाते है-वैसे-नही करता. तीसरेमहिने गर्भवतीकों-दोहद-उत्पन्नहोनेलगते है, अर्थात् कइतरहके इरादे पैदाहोते है, पुन्यात्माजीव गर्भमेंआयाहो अच्छे इरादे होंगे. पापीजीव आयाहो बुरेइरादे होंगे, कितनेक कहते है इश्वरने पुतलाबनाकर औरतकेपेटमें डाला और नवमहिनेबाद वह जन्मा-(जवाब,) यहबात जूठहै, सबबकि-सबजीवोंका शरीरवगे-राबनाव उसके पूरव जवके कियेहुवेकर्मके जरीयेसें बनते है. ऐसा न-होताहोतो-एक-दौलतमंद-और-एक-गरीब क्यों!-एकराजा-एकरंक क्यों?-एकखूबसूरत-एकज्ञानी एकमूर्ख क्यों?-क्या इश्वरका उन्होंने कुच्छ बिगाड-सुधार-कियाथा?-अगरचे नहीकिया था तो विचित्रबनाव क्यों?-अगरकहोंगे जैसेजैसे जीवके कर्मथे-वैसे-रूप-रंग-आकार-सुख-दुख-हुकमहोदा-ज्ञान-और-अज्ञान-उसकों प्राप्तहुवे-तो-बतलाइये? फिर उस ईश्वरने क्या! किया?-असलपुछोतो-काल-स्वभाव-कर्म-और-उद्यम-इनकेसमागमसें सब बनाववनते है, जिनमेंभी पूरवकृतकर्म-सबसें-ज्यादेताकतवरहै, पूरवभवके कियेहुवेकर्मानुसार जैसा कर्मका संचा-जीव-शाथलेता आयाथा उसकेजरीये माताकेपेटमें अपना रूप बनाया, जैसे खांडकोखलौने संचेक्रेजरीये बनायेजाते है जीवभी अपनाशरीर पूरव संचितकर्मरूपसंचेद्वारा बनाताहै. इश्वरकर्ता माननेवालोंकों यहबात

नापसंदहुइ-और-निर्दूषण परमात्मा रागीद्वेषी बनकर कुंभारकी तरह हमारातुमाराशरीर दिनरातवनाता रहे यह पसंद हुवा.

(१४३)-जगतकाकर्त्ता इश्वरहै ऐसामाननेवाले-नवीनवेदांती-नैयायिक-वैशेषिक-पातंजल-नवीनसांख्य-इशाइ-और-मुसलमान है, जैन-बौध-प्राचीनसांख्य-वगैरा-जगतकाकर्त्ता इश्वर है, ऐसा नही मानते. अगरजगतकाकर्त्ता इश्वरहै ऐसामानाजाय-तो-पंहिले यहस्वाल पैदाहोगाकि-इश्वर-देहधारी है-या-देहरहितहै,?-अगर कहोगे देहधारी है-तो-उसके पुन्यपाप होनेचाहिये. विदून पुन्य-पाप-शरीर-नहीबनसकता. अगरकहाजाय-देहरहितहै-तो-विना हाथपांव किसीसें कोइचीजकी रचना नहीहोसक्ती. अगरकहाजाय इश्वरने लीलामें आनकर दुनियावनाइहै-तो-वह-रागवानहै, इश्वर नहीकहाजायगा. सबकि-रागद्वेषहोना इश्वरकेलिये दूषणहै. अगरकहाजाय कृपाकरके रचनाकियीहै तो एककोसुखी और एकको दुःखी क्यों बनाये ? अगर कहाजाय सुखदुख-काहोना जीवोके कर्माधीनकीबातहै-तो फिर-बतलाना चाहिये उस इश्वरने क्यावनाया?-इतनेपरभी कोइइश्वरवादी हठवादकरे उसको यह सवाल पुछनाचाहियेकि-जब उसने जीवोंको बनाये तब-बतलाओ!-निर्मल-बनायेथे-या-मलीन?-अगरकहोगे सब-कों निर्मल बनायेथे-तो-बतलाना चाहिये फिरकौनकों निर्मलहो-नेकेलिये धर्मशास्त्र रचेगये?-अगरकहोगे मलीन बनायेथे-तो-वि-नाही पापकिये उनकों पापरूपमलीनता क्यों लगादिइगइ?-ऐसे अन्यायीकों इश्वरकहनाभी नहीबनसकता. कितनेककहते है इश्वर अपनीइच्छासें सबजीवोंकों सुखदुखफल देताहै. (जवाब.)-वो इ-

च्छा-इश्वरसें भिन्नहै-या-अभिन्नहै?-अगर भिन्नहै-तो-वह-इश्वरका कुच्छ नहीकरसकती. अगर अभिन्नहै-तो-उसका घडीमेंउत्पन्नहोना-और-घडीमें नाशहोना-नित्यइश्वरमें नहीहोसकता.

(१४४)-अगर इश्वरवादीयोंकी खातिरसें जगतकाकर्त्ता इश्वरहै ऐसामाने-तो-उपादानकारण कौन रहा?-अगर इश्वरकीशक्तिकों उपादानकारण माने-तो-सवाल पैदाहोताहै-वो-शक्ति-इश्वरसें भिन्नहै-या-अभिन्न?-अगर अभिन्नहै-तो-वतलाना होगा वो-जडहै-या-चेतन,?-अगर जडहै तो-कहिये!-नित्यहै-या-अनित्य?-अगर भिन्न-और-नित्यहै-तो-यह जो कहनाहोताहैकि-सबसें पहिले-एक-इश्वरही-नित्यपदार्थ था-यह झूठ हुवा, अगरकहोगे-वो-शक्ति-अनित्यहै-तो-उसका उपादानकारण कौन,?-और-यह नियमहैकि-नित्यसें अनित्यकी पैदाश नहीहोती. अगर-वो-शक्ति इश्वरसें अभिन्नहै-तो-फिरसबवस्तुकों इश्वरहीकहानाचाहिये. उंच नींच-राजारंक-नरकस्वर्ग-धर्मअधर्म-सबइश्वरही बना. फिर इश्वरने जगत-क्या!-रचा-बल्किन्! अपनास्वरूपही विगाडलिया, ठीकहै महाशय! आपका इश्वर ऐसाही होनाचाहिये, जो अवतार बनकर सुंदर स्त्रीयोंसें भोगकरे. चौरबनकर चौरीकरे-दूसरेसें-सगाइकिइहुइस्त्रीकों भगाकर लेजावे-दूसरोंकों दिलासादेकर ठगाइ करे-बाजा बजावे-नाचेखैले-और-फिर-निर्मलज्योति स्वरूपबनजावे, धन्यहै!-ऐसे इश्वरकों!-अपनीस्त्रीकों-कोइ हरणकरजावे-तो उसकेपीछे रोताफिरे एकभाइबनाकर उसकों जब लडाइमें घाव लगे-बहोतरोवे, उसकों आरामहोनेकेलिये जडीबूटी मंगावे-जो-इश्वर-बैलपर चढे-एकस्त्रीकों अपने अर्द्धांगमें रखे-किसीके आगे

नंगाहोकर नाचे किसीकों वर और किसीकों सराप देवे. तथा जो-अप्सराकारूपदेखनेके लिये चारमुखवनावे-और-अपनीबैंटोंसे भोगकरे धन्यहै जो ऐसे अन्यायीकों जगतकेकर्ता-हर्ता-तथा-इ-श्वर-मानते हैं, कइलोग कहते हैं इश्वरने जलमें अपनावीर्य छोडा उसका-अंडा-बना-फिर उसअंडेके-दोहिस्से-वनकर-एककानाम पृथ्वी और एककानाम स्वर्ग कहलाया, कितनेककहते हैं इश्वरही जगतमें घुसकर सबखैल खैलरहाहै.

(१४५)-कितनेकहते हैं-मनुष्योंकों अपनेउद्धारका कोइरस्ता नही मिलातव वें रौनं लगे तव करुणानिधान विश्वपिताने उसकों सुनकर एक-वैदज्ञरिषिके हृदयमें प्रकटहुवे, ऐश्वरीयशक्तिसे बल-वानहोकर महर्षि खडेहुवे और संसारकों कहनेलगे हे ! विश्वपुरवा-सीलोग !-सुनो ! मैने उसअनादिपुरातनपुरुषकों जानाहै, आदि-त्पकीतरह उसका वर्ण है. अज्ञानीलोग उसकों स्पर्शनही करसक-ते. उसकों जाननेसें तुमलोग मृत्युकेहाथसे चूटोगे. इसकेशिवाय दूसरामार्ग नही है. धन्यहै ! क्या ! कहना यहभी खूबढंगहुवाकि इश्वर रिषियोंकेशरीरमें घुसकर बोले-सत्यवातवही ठहरसक्ती है कि-जीव और-जड अनादिसें मिलेहुवे इनकों किसीने बनायानही. अगरवनायाकहे-तो-उसका मसाला (यानी) उपादानकारणरूपप-दार्थ कौन था जिससे वें बनाये गये ? अगरकहोगे मसाला पहिले बनाहुवा अनादिसें था-तो महाशय ! फिर इश्वरने क्या बनाया ? यौगिक-या-मिश्र पदार्थोंके सूक्ष्मअणु दो-तीन-हजार-लाख-करोड-संख्यात असंख्यात या अनंतपरमाणुओंके बने स्कंध कभी अल-गअलगभी होजाते हैं, लेकिन ! मूलपरमाणुओंका विश्लेष नही

होता. (यानी)—एकपरमाणुके दोहिस्से नहीहोते, इससे-सिद्ध हुवाकि-मिश्रपदार्थ विनाशशीलहै, असलीपदार्थ-विनाशशील-नही, जीवअनादिअमरहै-एकदेहसें दूसरीदेहमें जानेका नाममृत्युहै, वर्तमानअवस्था पूरवकृतकर्मके अनुसार-और-आगामीअवस्था-वर्तमानमें-जो-कियेजाते है-कर्म-उसके अनुसारहै. यह आत्मा जब तक-सबतरहके-कर्मोंसेरहित-न-होगा-जन्ममरणकेचक्रमें-घूमतारहेगा. शक्तिमान् होतेहुवेभी-मदिरापीये हुवे मनुष्यकीतरह निर्बल हो रहाहै.

(१४६)—कितनेककहते है-इश्वर-वायुचलाताहै-वरसात वरसाताहै-जीवोंको-जन्म देताहै-मारताहै-और-जोकुच्छकरताहै उसीकी रचनाहै -(जवाब.)-क्या!-इश्वरको ऐसे करनेसें कुच्छफायदाहै-जो-इसतरहकी महनतको उठाताहै?-अगर कहोगे-हां!-उसेफायदा है-तो-बतलाइये-क्या! अबतक-उसके असलीस्वरूपमें कुच्छकमी रहगइहै-जो-इसफायदेसें पूरीकरना चाहताहै?-अगर कहोगे बिनाफायदे ऐसा करताहै-तो-सोचो!-उसकेवरावर अज्ञानी कौन रहा-जो-फायदे विदून तकलीफ उठावे. पुरुषविना-स्त्री-नही, स्त्रीविना-पुरुष-नही, बीजविना वृक्षनही,-वृक्षविना बीजनही-हवा-पानी-जमीन-और-आकाश-इनकेविना-मनुष्योंकी-और-वृक्षोंकी स्थिति-होनामुश्किलहै,-जड-और-चैतन-इनदोपदार्थोंमें सबपदार्थ-अंतर्गत-होसकते है, हरपदार्थमें अपनाअपनागुण रहाहुवाहै, मिट्टीमें यहगुणरहाहै कि-वो-अग्निमेंपडकर कठोर-और लालरंगहोजाती है. लेकिन! कागजको अग्निमेंजलाकर कोइ कठोर-नहीकरसकता, इसीतरह लकड़ीमें यह गुणहैकि-उसपर

दूसरी लकड़ीधरकर मेंख ठोंकदिइजाय-तो-दोनों जुडजायगी, किंतु धूलपर धूलरखकर मेंख लगानेसें-जुड नहीसकती. इसीतरह संसारकेसंपूर्ण पदार्थोंकी परीक्षाकरनेसें सिद्धहोताहैकि-इनवस्तुओंमेंही जुदेजुदेस्वाभाविकगुण रहेहै, जिनके मिलनेविच्छडनेसें अनेकनवीनभाव उत्पन्नहोते है, जैसे श्याम-और-पीतरंग मिलकर हरितभाव पैदाहोताहै, घासका बीज-जमीनमें-कौन-डालनेजाता है?-जैसे-वह-बरसातकायोगपाकर खुद पैदाहोताहै इसीतरह संसारमें पदार्थोंका अलट पलट प्रवर्तन होकर कइतरहके नवीनभाव उत्पन्न-और-नाशहोतेरहते है, बस!-इसीकानाम-थोडी बुद्धिवालोंने ईश्वरकीरचना समझ रखाहै. कइलोग कहदेतेहैकि-ईश्वरकों जगतरचनाकी क्यों इच्छाहुइ?-तथा-वैठेवैठाये किसीकीनिंदास्तुतिका क्यों पात्र बना?-इसका भेद कौन बतासकताहै,?-(जवाब.)-महाशय!-जव इतनाभी नहीवतासकते-तो-मालूमहोताहै तुमकों ईश्वरका कुच्छपक्षपातहै. न्यायप्रियहोतेतो-झूठवातको पकड-न-वैठते. अगरकहाजायकि-निराकारहोकरभी-जगतरचनाकरनेकी उसमें ताकत-न-हो-तो-वह-सर्वशक्तिमान् कैसे ठहरे?-(जवाब.)-सर्वशक्तिमान्-उसकानाम-नही-जो-अपना स्वरूपविगाडकर-कोइ काप्र-करे, जगतरचनाकरनेसें उसकों रागीद्वेषीबननेका दोष आताहै, कितनेक कहते है जगतकों ईश्वरने नही बनाया-तो-क्या! आपहीआपवनगया?-(जवाब.)-हां-जैसे-तुमारा-ईश्वर-आपही आपवनाहुवा अनादिसिद्धहै-वैसे-जड-चेतनपदार्थभी आपहीआपवने हुवे अनादिसिद्धहै, जीव-जैसेजैसे कामकरते है तदनुसार उनकों फलप्राप्त होते रहते है ईश्वरकों इसमें फसनेकी कोइजरतन-

ही. कोई ऐसा न्यायीशरूख दुनियामें नहीं-जो-रागद्वेषरहित-इ-
श्वरकों जगतका बनानेवाला सबूतकर शके, जोलोग पक्षपातरूप
गुदडी औढकर बैठे है युक्तिप्रमाणकों कुच्छचीज नहीं समझते-वे
अगर अपनी वक्तृतासें सबूतकरदेवे-तो-उसकों बुद्धिमान्लोग
मान्य नहीं करसकते. इतना कहनाबनसकताहैकि-कारणरूप दु-
निया-(यानी)-जड-चैतनपदार्थ-अनादिसें है-और-कार्यरूप दु-
निया-(यानी)-तरहतरहकीचीजें जो बनीहुइ नजरआरही है उ-
नके बनानेवाले सबसंसारीजीवहै. इश्वर इनका कर्त्ताहर्त्ता नहीं.

[अनुष्टुप्चतं]

स्वयं कर्म करोत्यात्मा-स्वयं तत्फलमश्नुते,
स्वयं भ्रमति संसारे-स्वयमेव विनश्यति, १
कर्त्ता कर्मभेदानां-भोक्ता कर्मफलस्य च
संसर्त्ता परिनिर्वाता-सह्यात्मा नान्यलक्षणः

(अर्थः)-आत्मा अज्ञानकेउदयसें बुरे-और-ज्ञानकेउदयसें
अच्छेकर्म आपही करताहै. आपही संसारमें भ्रमणकरताहै और
उमरपुरीहोनेपर आपही एकगतिसें दूसरीकों जाता है, जिसकों
जाहिरातमें लोग कहते है मरगया. जब सबबातसें निस्पृहहोकर
धर्मसाधनकरेगा जन्ममरणसें छूटकर सबकर्मोंसें मुक्तहोजायगा.
और संसारमें न-रुलेगा.

(१४७)-निदान ! माताके-पैटमें-जीव-जब दूसरीगतिसें आ-
ताहै-पूर्वभवके पुन्यपापानुसार भला-या-बुरा-शरीर बनाता है.
शरीरपूर्णहोनेपर जन्मपाताहै. आयुष्य थोडाहोगा तुर्त्त मरजाय-
गां-ज्यादेहोगा वहोतअसेंतक-जीयेगा. अच्छेभाग्य होंगे-सुखी-

बुरहोगे-दुखी-होगा-यह सीधीसडकहै, इसको छोडकर चलेगा खता खायगा. इश्वरवादीयोंकी-चीं-पीं-इसलिखाणसें वंदहोसकती है, उनकी खौंपडी ठंडीहोकर कंधेसें कुतर्करूपीभूत नीचे उतर सकताहै, व्यर्थबकवादसें बचनाचाहै तो बचभी सकतेहै, लेकिन! अपशोप इतनाही हैकि-हठवादीयोंका मन निर्वल होनेसेंभी-वें-मुखसें कब-हां!-करसकेगें?-खैर!-तोभी-इतनाफायदा जरूरहोगाकि-जामेसें बहारहोकर-जो-मगज माराकरते है स्यात् नहीमारेगें. इश्वरलीलाकी-तान-नही उडावेगें, जिनका मस्तक खराब होगया होगा इसलिखाणसें कुच्छ दवा मिलसकेगी, कइमहाशय फरमाते है जोजो चीजे इश्वरने बनाइहै उसका सबवयहहैकि-उनको देखकर लोग मुजपर विश्वासलावे, लेकिन ! यहवातभी गलतहै सोचोकि-उसको दुनियासें विश्वासहासिलकरानेकी क्या ! जरूरत थी?-इतना विश्वासका लालची क्यों ! बना?-दुनियाके विश्वास न लानेसे उसका क्या ! विगडता था?-अगरकहोगे-उसका इसवातसें कुच्छ बिगाड था-तो-महाशय !-वो इश्वर नही होसकता. सबवकि -उसको परतंत्रताका दोष आताहै. इश्वर अपने स्वरूपमें स्वतंत्र होनाचाहिये.

(१४८)-[गर्भाधानवगेरा सोलहसंस्कारोंका-बयान-]

संस्कारकरना एकधर्मरूपमर्यादाका किलाहै, इसकाविधान कइशास्त्रोंमें देखागया-आजकल कइलोगोंने भाषामेंलिखकर छपवायाभी-लेकिन ! लेखप्रणाली अच्छीनहोनेसें कइ लोग उसे समझभी-न-सेके, संस्कृतसें भाषा किइ और उसभाषासेंभी-जब पुरेपुराफायदा-न-पहुंचा-तो-उसके बनानेसेंभी क्या लाभहुवा ?

निदान! भाषा ऐसी बनाना चाहिये जिससे हरकोई समझसके. संस्कारकराना असलमें कुलगुरुका अधिकारहै-जो-धर्मज्ञ-और-धर्मपरश्रद्धावान्-हो, धर्मभ्रष्ट-अनाचारीकुलगुरुसें कोईकार्य कराना मुनासिवनही, कुलगुरु गृहस्थ होताहै, ऐसा धर्मज्ञ कुलगुरु-न-मीले-तो-जानकार श्रावक-हीं-करादे कोईहर्जकीवातनही है, संस्कार गृहस्थधर्मके सोलहहोते है. (१)-गर्भाधान, (२)-पुंसवन, (३)-जन्म, (४)-सूर्यचंद्रदर्शन, (५)-क्षीराशन, (६)-षष्टिपूजन, (७)-शूचिकर्म, (८)-नामकरण, (९)अन्नप्राशन, (१०)-कर्णवेध, (११)-केशवपन, (१२)-उपनयन, (१३)-विद्यारंभ, (१४)-विवाह, (१५)-व्रतारोप-और-(१६) अंतकर्म.

(१४९)-(१)-गर्भाधानसंस्कार गर्भठहरेवाद पांचवेमहिने कराया जाताहै, गर्भस्थिति होनेकी मालूम चतरस्त्रीकों-तो-उसीवखतहोजाती है, लेकिन!-उसकानिश्चय जब एकमहिनेकी अस्त्रीमें रजस्वला-न-हो-पुरेपुरा होसकताहै. दोतीनमहिनेवाद-तो-सभीकों-जाहिरहोजाताहैकि-इसेगर्भ-रहा. पांचवेमहिने-जिसरौज सोम-बुध-गुरु-या-शुक्रवार-हो,-दुज-तीज-पंचमी-सप्तमी-या-दशमीतिथीहो,-रोहिणी-हस्त-स्वाति-अनुराधा-श्रवण-शतभिषा-तीनों उत्तरा-या-रेवती-नक्षत्र हो,-उसरौज मेष-और-मकरलग्नकों छोडकर-दूसरेलग्नमें ग्रहशुद्धिदेखकर गर्भाधानसंस्कार कराना-चाहिये. अगर स्त्रीकों स्वरोदयज्ञानकी पहचानहो-तो-अच्छे रौज चंद्रस्वर चलतेसमय उक्तसंस्कार करायाजाय निहायतउमदाहै. जितने स्थिर और प्रभावशालीकार्य है चंद्रस्वरमें करने अच्छेहोते है, गर्भाधानसंस्कारकरानाहो उसरौज कुलगुरु-नहाधोकर अच्छे-

कपडे पहेंनके केशरकातिलक लगाकर गृहस्थकेघर आवे. गर्भव-
तीस्त्री-और-उसकापति-साफजलसें-स्नानकर अच्छेकपडे पहेंनके
जिनमंदिरमें जाय, उसवरुत अगर वाजेगाजे सहित-मंगलगान
गाती हुइ सोहागनस्त्रीयेंभी साथचले बहोतठीकहै. जिनमंदिरमें
जाकर कुलगुरु-स्नात्रपूजनकरावे-और-जिनप्रतिमाका स्नात्रजल
एक बर्तनमें लेकर सबलोग घरकों आवे. फिर गर्भवतीस्त्रीकों एक
सोहागनस्त्री-केशरवगेरासुगंधीचीजका-विलेपनकरे, कुलगुरु-पतिके
दुपट्टेकेसाथ-गर्भवतीके औढनेकी साडीसें ग्रंथीबंधनकरे. और इ-
समंत्रको पढे-(ग्रंथीयोजन मंत्र)-ॐ अहं-स्वास्ति संसारसंबंध-व-
द्धयोःपतिभार्ययोः-युवयोरवियोगस्तु-भववासांतमाशिषा, फिर ग-
र्भवतीकों-और-पतिकों अलगअलग चोंकीपर पासपास विठावे-
आप उनकेसामने बैठकर-जिनप्रतिमाका स्नात्रजल-तथा-दूसराप
वित्रजल जिसमें गुलाब या केवडेकापानीभी मिलायाहो लेकर कु-
*शाग्रसें गर्भवतीस्त्रीके शरीरपर थोडाथोडा सिंचन-करे, और
नीचेलिखेहुवे मंत्रकों सातदफे पढे, [मंत्रः]-ॐ अहं-जीवोसि जी-
वतत्त्वं असि-प्राणी असि-जन्मी असि-जन्मवानसि संसारादिसंसर
न्नसि-कर्मवानसि-कर्मवद्धोसि-भवभांतोसि-भवविभ्रमिषुरसि-पूर्ण
पिंडोसिजातोपांगोसि जायमानोपांगोसि स्थिरोभव नंदीमान् भव
वृद्धिमान् भव पुष्टिमान् भव ध्यातजिनो भव ध्यातसम्यक्तो भव त-
त्क्षुर्यात् न पुनर्जन्मजरामरणसंकुलं संसारवासं-गर्भवासं प्राप्नोसि
अहं ॐ,-पढकर सातही दफे जलसिंचनकरतारहे. चाद ग्रंथीबंध-
नकों छोडकर ग्रंथीमोचनमंत्र पढे, [मंत्रः] ॐ अहं ग्रंथौ वियोज-

मानेस्मिन्-स्नेहग्रंथिः स्थिरोस्तु वां शिथिलोस्तु भवग्रंथिः-कर्मग्रंथि
दृढीकृतः-इतनाविधानहुवेवाद पहिले पति और पीछें स्त्री उठे, कु-
लगुरुकों रुपया श्रीफल या मोहोर वगेरा शक्तिहो देवे, कुलगुरु
इसमंगलकाव्यकों पढकर अपनेघरकों जाय [काव्यं]-ज्ञानत्रयं ग-
र्भवतोपि विंदन् संसारपारैकनिवद्धचेताः-गर्भवस्यपुष्टिं युवयोश्च तुष्टिं
युगादिदेवः प्रकरोतु नित्यं,-इति०-सोहागनस्त्रीयें जो मंगलगीतगा-
नेकों आइथी उनकों मेवामिठाइ वांटना और जिनमंदिरमें अंगी-
रौशनीकराना मुनासिवहै.

(१५०)-(२) दूसरा पुंसवनसंस्कार गर्भवतीके आठवेमहिने
करायाजाताहै. जिसरौज मृगशिरा पुनर्वसु-पुष्य-हस्त-मूल-या-श्र-
वणनक्षत्रहो, षष्टि-अष्टमी-द्वादशी-अमावास्या-रिक्ता-दग्धा-क्रूर-ब-
ढीहुइ या दूटीहुइ तिथि न हो, किंतु दुज-तीज पंचमी-सप्तमी-द-
शमी त्रयोदशी या पौर्णिमा तिथिहो, रवि भौम या बृहस्पतिवार
हो उसदिन लग्नशुद्धिदेखकर पुंसवनसंस्कार कराना चाहिये. ल-
ग्नशुद्धिमें-केंद्र-त्रिकोणस्थित-बृहस्पति-होना निहायतउमदा है.
पापग्रह-केंद्र-त्रिकोण-अष्टम-और-द्वादशस्थानसें रहित-अन्यकि-
सीस्थानमें बैठेहो-तो-बहोतठीकहै-बस!-इसतरहकीलग्नशुद्धिदेख-
कर उक्तसंस्कार करायाजाय-बहोतअच्छाहै. जिसरौज पुंसवनसं-
स्कारकराना मुकररकियाजाय उसरौज सवेरेही सोहागनस्त्रीयें
गर्भवतीकेघर इकठीहोकर मंगलगीतगान करे, गर्भवतीकों चमेली-
केतैलसें मालीसकरके अच्छेजलसें स्नानकरावे, और अच्छेगहने
कपडें पहनाकर बाजेगाजेकेशाथ जिनमंदिरकों दर्शनलिये लेजा-
य, जिसगांवमें जिनमंदिर-न-हो-वहां-एक-अलगमकानमें-चांदी

या-पीतलका-वनाहुवा सिद्धचक्रयंत्र-काष्ठकीचौकीपर स्थापनकरके उसके सामने लेजाय. मंदिरमें-या-सिद्धचक्रयंत्रके सामने जाकर तीनपरकम्मादेकर गर्भवतीस्त्री नमस्कार करे, कुलगुरु-स्नात्रपूजन करावे, और जिनप्रतिमाका स्नात्रजल एक भाजनमें लेकर घर आवे, गर्भवतीके हाथमें एकश्रीफलदेकर एकचौकीपर बिठावे, और स्नात्रजल तथा दूसरा पवित्रजलकि-जिसमें गुलाबकेवडेका पानी मिलायाहो-लेकर-दूर्वासें गर्भवतीके शरीरपर थोडाथोडा छांटताजाय और इस मंत्रको पढतारहे. [मंत्र]-ॐ अर्हन्मः-तीर्थ-करनामकर्मबंधसंप्राप्तपुरासुरेंद्रपूजाहते-आत्मन्-त्वं-आत्मायुःकर्मबंधप्राप्तमनुष्यजन्मगर्भावासमाप्तोसि-तद्-भव-जन्मजरामरणगर्भासविच्छित्तये-प्राप्ताहर्द्धमो-अर्हन्नक्तः-सम्यक्तनिश्चलः-कुलभूषणः-मुखेन तव जन्म-अस्तु-भवतु त्वन्मातापित्रोः कुलस्याभ्युदयः-ततः शांतिः पुष्टिः तुष्टिः ऋद्धिः वृद्धिः कांतः सनातनी-अर्ह ॐ-इसमंत्रको सातदफे पढे, फिर गर्भवतीस्त्री-चौकीपरसे उठकर-कुलगुरुको-रूपया-श्रीफल-मोहर-जोकुच्छेदेनाहो देने. जिनमंदिरमें नैवेद्यका थाल भेजे, शक्तिहो-तो-उसरौज पंचकल्याणिककीपूजा अंगी-रौशनीवगेरार्धमके कामकरनेमें ध्यानदेवे, अपनीअपनी जातविरादरीकी रसम सबलोग करतेही है लेकिन!-घाथशाथ धर्मकीबढवारीकेकामभी जरूरकरतेरहना चाहिये. गीतगाने आइ हुई स्त्रीयोंको मंत्रामिठाइ बांटना-और-अपनेकुटुंबपरिवारको मिष्टान्न-भोजनजिमना-गृहस्थोंके कर्तव्यकार्य है. जिनमहाशयोंको इस भोजनजिमनेका नियमहो-वे-न-जिमें.

(१५१)-(३)-तीसरा जन्मसंस्कार-जिसवखत पुत्रकाजन्महो

अच्छे ज्योतिषीकों बुलाकर जन्मग्रहस्पष्ट कराना-और-उसकों-रू-
 पया-श्रीफल-मोहर-जो कुच्छमुनासिव समझाजाय देना गृहस्थध-
 र्मके उचितकार्य है. सूर्यवगेराग्रह-किसीका भलाबुरा नहींकरते.
 किंतु शुभाशुभके द्योतकहै. जैसेकिसीकार्यकों चले-और-सामनेही
 डंकानिशान-मिला-तो-कहाजाताहै काम अच्छाहोगा, वैसेही ज-
 न्मके वरुत ग्रहोंकी अच्छीस्थितिदेखकर कहसकते हैकि-इसलडके
 के पुन्य अच्छे है. ज्योतिषी जन्मग्रहस्पष्टकरके उसकाफलादेश ब
 र्ननकरे-और-आगेलिखेहुवेमंगलकारी वाक्य सुनावे, ओँ अर्ह-
 कुलं वो वर्द्धतां-संतु शतशःप्रपौत्राः-अक्षीणमस्त्वायुर्धनंयशः सुखं
 च-अर्ह ओँ-[काव्यं]-आदित्योरजनीपतिः क्षितिपतिः सौम्यस्तथा-
 वाक्यतिः-घृक्रःसूर्यसुतोविधुंतुद इतिश्रेष्ठाःग्रहाःपातुवः-अश्विन्पादि
 कमंडलं तदपरोमेषादिराशिक्रमः-कल्याणं प्रतनोतु वृद्धिमधिकंसं-
 तानमप्यस्य च-१,-[दूसरा काव्य.]-योमेरुशृंगेऽत्रिदशादिनाथै-दै-
 त्यादिनाथैस्सपरिच्छदैश्च-कुंभामृतैःसंस्नपितःसदेवः-आद्योविदध्या-
 त् कुलवर्द्धनं च,-[२]-इसतरह ज्योतिषीके मंगलवाक्य पूर्णहुवेबाद
 कुलगुरु-बालककोस्नानकरानेकेलिये-नीचेलिखेहुवे मंत्रसें पानीको
 मंत्रितकरके तयारकरे,-[मंत्रः]-ओँ अर्ह-नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्या-
 यसर्वसाधुभ्यः-[काव्य,]-क्षीरोदनीरैः किलजन्मकाले-यै मेरुशृंगे
 स्नपितो जिनेन्द्रः-स्नानोदकं तस्य भवत्विदंच-शिशोर्महामंगलपु-
 न्यवृद्धयै-१,-इसमंत्रको (७) सातदफेपढकर जलको अभिमंत्रित
 करे-और-सूतिकाकर्मकरनेवाली-कुलवृद्धा-इसजलको लेकर सु-
 तिकाघरमें जाके पुत्रको स्नानकरावे, और-नाल-छेदनकरे. प्रसू-
 तास्त्री-किंचित्उष्णजलसें स्नानकरे-इसहालतमें शरीर कमजोर

होजाताहै इसलिये मुनासिबहै सवतरहसावधान रहे, जन्मक्रियासँ आरामकेशाथपारहोना-स्त्रीकेलिये-दूसराजन्महै. खानपानमें पौष्टिकपाकवगेरा-जोकुच्छ-वैद्यलोग सलाहदें खानाचाहिये, अशौचनिर्णयकेलिये-निशीथसूत्रके सोलहमे उद्देशमें-और-व्यवहारसूत्रकीभाष्यमें-जन्म-तथा-मृत्युकेघरकों-अशौचयुक्त-कहा. जिसके घर पुत्रजन्मे दसदिनतक अशौच-यानी-दसदिनतक उसघरमें भोजनजिमनेवाले-मनुष्य-जिनेंद्रभगवानकी पूजा-नकरे, धर्मशास्त्र-नछुहे, और मुखसँ स्तवनपाठवगेरा-न-बोले, अगरकोइशख्श भोजन दूसरेकेघर जिमे-और-अलगरहे-तो-उसकों-अशौच-न-लगनेसे जिनपूजावगेरा करनेकी मनादी नही. जिसकेघर लडकी जन्मे उसके वहां ग्यारहदिनका अशौच-सगेभाइके घर बालकजन्मे और पासपासरहनेसँ कइतरहके खानपान वगेरामें-संयोगसंबंध-होतेहो-तो-मुनासिबहै सगेभाइकों पांचदिनतक अशौचमानना, अगर संयोगसंबंध-न-होताहो तो-अशौचनही, परदेशमें अपनी औरतकों बालकपैदाहो-तो-जिस दिनमुने उसीएकदिनका अशौच, जिसघरमें रहतेहो उसमें किसी दासदासीकों बालकपैदाहो तो-चौइसपहरका अशौच, गौ-भेंस-उंठणी-घोडी-या-बकरी-घरमें प्रसूतहो-तो-एकदिनका-अशौच मानना. निदान!-पुत्रजन्मका दसदिनतक अशौच कहा-इसलिये-जिनमंदिरमें पूजन-अंगी-या-रौशनीकरनेकों-नगदरूपये भेजने अच्छेहै, राजेलोग पुत्रजन्मकी खुशीमें-जितनाचाहे उत्सवकरसकते है. केदखानेसँ केदीयोंकों छोडदेना-गरीबलोगोंकों भोजन जिमाना-और-कइतरहके राज्यकीय-महसूल-माफकरना-रैयतकेलिये-बडीखुशीकी वातहै. कुल-

गुरुकों दानदेकर खुशकरना-और-प्रसूतास्त्री-तथा-पुत्रकों-साफ मकानमें-रखना वहोतठीकहै, याते उनकी तंदुरस्ति अच्छी बनी रहे.

(१५२)-(४)-चोथा-सूर्यचंद्र दर्शनसंस्कार,-जन्मदिनसें दो-रौजवतीतहुवेवाद तीसरेरौज कुलगुरु सूतिकाघरके नजदीक अलगमकानमें-जिनप्रतिमा-या-धातुमय सिद्धचक्रकायंत्र स्थापनकर अष्टद्रव्यसें पूजनकरे. पीछें एक दूसरीचौकीपर-सुन्नैकी-या-ताबै-कीबनी सूर्यकीमूर्ति स्थापनकरे-और-आगे-लिखाहुवामंत्र पढकर अष्टद्रव्यसें उसकी पूजाकरे.-[मंत्रः]-आँनमःसूर्याय-सहस्रकिरणाय-जगत्कर्मसाक्षिणे-इहजन्ममहोत्सवे-सायुधः-सबाहनः-सपरिच्छदः-आगच्छआगच्छ-इदंअर्घ्यं-पाद्यं-बलिं-गृहाणगृहाण-सन्निहितो भवभव स्वाहा जलं गृहाण-गंधं-पुष्पं-अक्षतान्-फलानि-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-मुद्रां-सर्वोपचारान् गृहाण-शांतिकुरुकुरु-तुष्टिकुरुकुरु-ऋद्धिं-वृद्धिं-सर्वसमीहितंदेहिदेहि स्वाहा-इसमंत्रसें सूर्यमूर्तिकीपूजाकरके-साक्षात्सूर्य-जो-आकाशमें उदय होरहाहै-पुत्रकों-मातासहित-उसका दर्शनकरावे. और-कुलगुरु-इससूर्य मंत्रकों-जो अगाडीलिखाहै पढे,-[मंत्रः]-आँ अर्ह-सूर्योसि-दिनकरोसि-तमोपहोसि-सहस्रकिरणोसि-जगच्चक्षुरसि-प्रसीद-अस्यकुलस्य-तुष्टिपुष्टिप्रमोदं-कुरुकुरु शांतिहितो भव-अर्ह आँ,-और-इस अगाडीलिखे हुवे-छंदकों-पढकर-आशीर्वचन बोले, [आर्या छंदः]-सर्वसुरासुरवंद्यः-कारयिता पूर्वसर्वकार्याणां-भूयात्रिजगचक्षु-मंगलदस्ते सपुत्रायाः-१,-फिर जिनप्रतिमाकी-तथा-सूर्यमूर्तिकी-स्थापना-जो किइथी विसर्जनकरे, अशौचके सबबसें-घरवाले उनकों छुवे नही.

फिर जब संध्यासम आवे-चंद्रदर्शनसंस्कारकेलिये-पुनः-उसीतरह जिनप्रतिमास्थापनकरके अष्टद्रव्यसें पूजनकरे. और-दूसरी चौकी-पर-चांदीकी-या-सफेदचंदनकी-वनीहुइचंद्रमूर्त्ति-स्थापके-अगाडी लिखाहुवा-मंत्रपढकर-अष्टद्रव्यसें उसकी पूजाकरे,-[मंत्रः]-ॐ नमश्चंद्राय-तारागणाधीशाय-मुधाकराय-इहजन्ममहोत्सवे-सायुधः-सवाहनः-सपरिच्छदः-आगच्छआगच्छ-इदंअर्घ्यं-पाद्यं-वलिं-गृहाणगृहाण-सन्निहितो भवभव स्वाहा-जलगृहाण-गंधं-पुष्पं-अक्षतान् फलानि-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-मुद्रां-सर्वोपचारान् गृहाण-शांतिकुरुकुरु ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहिदेहिस्वाहा. इसमंत्रसें चंद्रमूर्त्तिकी पूजा करके साक्षात् चंद्र-जब उदयहोवे-पुत्रकों-मातासहित-उसकादर्शनकरावे. और कुलगुरु इसचंद्रमंत्रकों जो-अगाडी लिखाहै पढे,-[मंत्रः]-ॐ अर्हं-चद्रोसि-निशाकरोसि-नक्षत्रपतिरसि-सुधाकरोसि-औषधीगर्भोसि-प्रसीद-अस्य-कुलस्य-तुष्टिंपुष्टिंप्रमोदं-कुरुकुरु शांतिहितो भव-अर्हं ॐ,-और इसअगाडीलिखेहुवे-काव्यकों-पढकर-आशीर्वचन बोले. [काव्यं,]-सर्वौषधीमिश्रमरीचिराजिः-सर्वापदां संहरण प्रवीणः-करोतुवृद्धिं सकलेपि वशे-युष्माकमिंदुः सतत प्रसन्नः-१,-फिर कुलगुरु जिनप्रतिमा तथा चंद्रमूर्त्तिकों विसर्जनकरे, घरवाले-रुपया-मोहरवगेरा-जो कुछ कुलगुरुकों देना हों-देवें. रुपये पैसों अशौच नहीहोता. आजकल-इस संस्कार कीजगह-लोग-आरीसाही-लडकेकों दिखलादेते है.

(१५३)-(५)-पांचवाक्षीराशनसंस्कार-जिसरौज चंद्रार्कदर्शनसंस्कार करायाजाय-उमीरौज-या-उसके दूसरेदिन-वालककों स्तनपानकरानाचाहिये. जन्मकालसें तीनरौजतक प्रमृतास्त्रीकादूध

विकारवालारहताहै, इसलिये उनदिनोंमें औषधीद्वारा-या-गौक्रे-
 दूधसें-वालकका रक्षणकरना ठीकहै, जोलोग जलदी करतेहै उ-
 नके वालककों-कइतरहके रोग पैदाहोते है. स्तनपानकरानेसें प-
 हिले कुलगुरु-इसमंत्रद्वारा-ओं-अमृते-अमृतोद्भवे-अमृतवर्षिणी-
 अमृतं श्रावयश्रावय-स्वाहा-(१०८)-इफे-पानीकों अभिमंत्रितक-
 रके प्रसूतास्त्रीकों-देवे, प्रसूतास्त्री-उसजलसें स्नानकरके-जिसत-
 र्फकास्वर-चलताहो उसतर्फका स्तन-लडकेकों-पहिले पिलावे.
 कुलगुरु उसवख्त एक चौकीपर सामनेवैठकर इसमंत्रकों पढे.-
 [मंत्रः]-ओं अर्ह-जीवोसि-आत्मासि-गुरवोसि-शब्दज्ञोसि-गंधज्ञो
 सि-रसज्ञोसि-स्पर्शज्ञोसि-सदाहारोसि-कृताहारोसि-अभ्यस्ताहा-
 रोसि-कावलिकाहारोसि-लोमाहारोसि-औदारिकशरीरोसि-अने
 नाहारेण-तवांगं वर्द्धतां-बलं वर्द्धतां-तेजो वर्द्धतां-पाटवं वर्द्धतां-सौ-
 ष्टवं वर्द्धतां-पूर्णयुर्भव-अर्हं ओं,-तीनदफे इसमंत्रकों पढे, बस! इ-
 तनाहीविधान इससंस्कारमेंकियाजाताहै, कुलगुरुकों रुपया-मोहर
 जोकुच्छदेनाहो-देवे.

(१५४)-(६)-षष्टिपूजनसंस्कार-जन्मसेंछठेरौज करायाजाता
 है. उसरौज श्यामकेवख्त-न्यातगोतकी-स्त्रीयें-इकठीहोकर प्रसूता
 स्त्रीके स्थानपर मंगलगीत-गानकरे, और काठकी एकचौकी ले-
 कर चांटी-या-कांसेका स्थाल स्थापनकर उसमें केशर-या-कुंकु-
 मका साथिया बनावे, फिर उसपर चावलोंद्वारा चक्रेश्वरी देवीके
 चरणोंकी स्थापनाकरे. फिर सोहागनस्त्रीयें कुंकुम अक्षत धूप दीप
 नैवेद्य फुल वगेरासें उनकी पूजाकरे, और प्रसूतास्त्रीकों सुगंधकी
 धूप देवे. फिर कुलगुरु-परमेष्टिमंत्रसें जलकों मंत्रितकरके वालक-

पर दुर्वासैं अभिषेक करताहुवा-इसमंत्रको पढे,-[मंत्रः]-ओं-अहं
जीवोसि-अनादिरसि-अनादिकर्मभाक् असि-यत्त्वया-पूर्वे-प-
कृति स्थितिरसपदेशैः-आश्रववृत्याकर्मबद्धं-तद्वंधोदयोदीरणा स-
त्ताभिः-प्रतिभुंक्ष्व-माशुभकर्मोदयफलं भुंक्ष्व-उच्छेदं दध्याः-नचाशु
भकर्मोदयफलभुक्त्या-विषादमाचरे-तवास्तु-संवरवृत्या-कर्मनिर्ज-
रा-अहं ओ, -कुलगुरुको-रूपया-मोहर-जोकुच्छदेनाहो-देवे.

(१०५)-७-सातवा शूचिकर्मसंस्कार-जन्मसमयसैं दशदिन
बतीतहोनेकेबाद-ग्यारहमें-रौज करायाजाताहै. लेकिन!-अगर-
उसरौज-भरणी-कृत्तिका-आर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-अश्लेषा-मघा-चि-
त्रा-विशाखा-मूल-श्रवण-धनीष्ठा-और-पूर्वाभाद्रपद-ये-नक्षत्र-या
रवि-मंगलवार-आजायतो उसरौजको बचाकर एकदोरौज आ-
गेको करना चाहिये. जिसरौज शूचिकर्मसंस्कारकराना-हो-उस
रौज-अपनेघर उमदावाजा बजवाना-और-दीनहीनलोगोको-अ-
नुकंपादान-देना-जरुरीकामहै. जिसमकानमें जन्महुवाहो-उसको
लींपापौताकर साफकरना-सवतरहसैं दुर्गंधको हठाकार-सुगंधी
धूपसैं पवित्रवनाना-और-प्रमूतास्त्रीको-तथा-पुत्रको-उवटनालगा-
कर स्नानकरानाचाहिये. साफकपडें पहेनकर अशौचदूरकरना-
वहेनभाणेजको-वस्त्रआभूषण देना-और-न्यातविरादरीको-मिष्टान्न
भोजन जिमाना-गृहस्थधर्मके उचितकामहै. ज्यादेशक्ति-न-हो-तो
श्रीफल-मोहर-मीठाइवगेरा देना, धनवान-और-राजेलोग-तरह-
तहरके-भोजनजिमाकर-जातविरादरीको-तथा-संपूर्णरियासतको-
सत्कारकरनाचाहे-तो-करसकते है. लेकिन!-जितनाधन-संसारके
कामोंमें लगागाजाय-उतनाही-धर्ममेंभी लगायाजाय तभी तारीफ

की बात होगी. पंचम कालकादोष बताकर कोइमहाशय !-कहना चाहे-आजकल-ऐसे धर्मीशख्श कहांहै ?-जो इतनाधन धर्ममें लगावे ?-(जवाव.)-इतना-न-लगासकेतो-आधा-या-चौयाइ हिस्सातो अलबते ! लगानाचाहिये. क्या ! जिनमंदिरमें अंगीरौशनी कराना-स्वधर्मीवात्सल्यकरके-धर्मकों उत्तेजनपहुचाना-इतना-भी-न-बनसकेगा ?-जितनावने उतना बनानाचाहिये, जगतमें सारवस्तु-धर्मही-है.

(१५६)-८-आठवा-नामकरणसंस्कार-यह-संस्कार उसीरौज करदियाजाताहै जिसरौज शुचिकर्मसंस्कारकरना उपर लिख आये. अगर उसरौज लडकेकानाम-न-रखागयाहो-तो-जिसरौज मृदु-ध्रुव-क्षिप्र-और-चर-संज्ञावाले नक्षत्र हो. चंद्र-बुध-बृहस्पति शुक्रवारहो-चौथ-अष्टमी-नवमी-चतुर्दशी-अमावास्या-पौर्णिमा-संक्रांतिकेदिन-तथा-पंचककेदिन-न-हो-और-लग्नशुद्धिमें-गुरु-शुक्र चोथे भुवनमें-बैठेहो-ऐसे-अच्छेखरुतपर-नाम-रखनाचाहिये. वही तरौजतक विदून-नाम-रखना अच्छानही. ज्योतिषशास्त्रके फरमाने मुताबिक-जिसराशिका-चंद्रमा-उसके जन्म समय-हो-उसराशिकेहफोंपर-लडकेका नामरखना ठीकहै. चू,चे,चो,ला, (अश्विनी १-) ली,लू,ले,लो, (भरणी-२) अ,ई,ऊ,ए, (कृत्तिका-३) ओ, वा,बी,बू, (रोहिणी-४) वे,वो,का,की, (मृगशिरः-५) कू,घ,ङ, छ, (आर्द्रा-६) के,को,हा,ही, (पुनर्वसु-७) हू,हे,हो,डा, (पुष्यः-८) डी,डू,डे,डो, (अश्लेषा-९) म,मी,मू,मे, (मघा-१०) मो,टा,टी,टू, (पूर्वाफाल्गुनी-११) टे,टो,प,पी, (उत्तराफाल्गुनी-१२) पु,ष,ण,ठ (हस्तः-१३) पे,पो,रा,री, (चित्रा-१४) रू,रे,रो,ता, (स्वातिः-१५

ती,तू,ते,तो, (विशाखा-१६) ना,नी,नू,ने, (अनुराधा-१७) नो,
या,यी,यू, (ज्येष्ठा-१८) ये,यो,भ,भो, (मूलं-१९) भू,ध,फ,ढ, (पू-
र्वाषाढा-२०) भे,भो,ज,जी, (उत्तराषाढा-२१) जू,जे,जो,खा, (अ-
भिजित्-२२) खी,खू,खे,खो, (श्रवणं-२३) ग,गी,गू,गे (धनिष्ठा-
२४) गो,सा,सी,सू, (शतभिषक्-२५) से,सो,द,दी, (पूर्वाभाद्रप-
दा-२६) डू,ञ,झ,थ, (उत्तराभाद्रपदा-२७) दे,दो,च,ची,
(रेवती-२८)

अश्विनीभरणीकृत्तिकापादे [मेषः] कृत्तिकाणां त्रयः पादारो-
हिणीमृगशिरोर्द्धं [वृषः] मृगशिरोर्द्धं आर्द्रापुनर्वसुपादत्रयं [मिथुनः]
पुनर्वसुपादमेकं पुष्य-अश्लेषांतं- [कर्कः] मघाच पूर्वाफाल्गुनी उ-
त्तराफाल्गुनी पादे [सिंहः] उत्तराफाल्गुनीपादत्रयं हस्तचित्रार्द्धं
[कन्या] चित्रार्द्धं स्वातिविशाखापादत्रयं [तुला] विशाखापादमेकं
अनुराधा ज्येष्ठांतं [वृश्चिकः] मूलं च पूर्वाषाढा उत्तराषाढापादे
[धनुः] उत्तराणां त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्द्धं [मकरः] धनिष्ठार्द्धं श-
तभिषक् पूर्वाभाद्रपदापादत्रयं [कुंभः] पूर्वाभाद्रपदापादमेकं उत्तरा
भाद्रपद रेवत्यांतं [मीनः]-

इसतरह ज्योतिषकेकायदे मुजव नाम रखाजाय तो अच्छाहै,
नामशब्दका संबंध जवतक आत्मा शरीरमें बनारहताहै तवतक
रहताहै. इसलिये नाम ऐसा उमदा और सार्थक रखनाचाहिये-
जो-बोलतेही खुशी पैदाहो. वहोतसे लोग-अपनेवालकका नाम-
(यह समझकरकि-इसपर किसीकी खोटीनजर असर-न-करे)-
कुडा-छीतर-गोवर-गांडा-घेला-वगेरा रखदेते है यह ठीकनही.
वल्किन्!-उनको वडेहोनेपर संसारमें सदाकाल अपमानितशब्दोंका

सहन करना पड़ता है, इसलिये-नाम-वह-रखना चाहिये-जो गुणनिष्पन्न-और-आल्हादजनक हो. नामका निश्चय करके पीछे स्वजन-कुटुंबपरिवारके सामने बोल देना चाहिये कि-इसबालकका नाम-यह-रखा गया.

(१५७)-९-नवमा अन्नप्राशनसंस्कार-लडकेको-छमहिने-और-लडकीको-पांचमहिनेबाद कराया जाता है. जिसरौज-अश्विनी-रोहणी-मृगशिरः-पुनर्वसु-पुष्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अनुराधा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये-नक्षत्र-निर्दोष-(यानी)-क्रुराक्रांतवगेरा दोषवाले-न-हो, रवि-सोम-बुध-गुरु-और-शुक्रवारहो, रिक्ता-अमावास्यातिथि और-व्यतिपात-वगेराखोटेयोग-न-हों, उसरौज लग्नशुद्धिदेखकर अन्नप्राशन कराना चाहिये, [लग्नशुद्धिः]-लग्नमें सूर्य-मंगल-शनि-या कृश-चंद्रमा-पडाहो-तो अच्छानही, बुध-पडाहोतो-लडका-ज्ञानवान्-होगा, शुक्रपडाहो-तो-एशआरामकरनेवाला-होगा. वृहस्पति-या पूर्णचंद्र-हो-तो-दातारहोगा. येही बुधशुक्रवृहस्पति-केंद्रत्रिकोण-या-आठमें-बारहमें-एकशाय-या-अलगअलग-पडेहो-तोभी-अच्छे है, चंद्रमा-छठे-आठमेंभुवनमें पडना ठीकनही. जन्मराशिकी गिनतीसें चंद्रमा-चोथे-आठमें-या-बारहमेंहोनाभी अच्छानही. इस-तरह लग्नशुद्धि देखकर अन्नप्राशनका वस्तु मुकरर करना. जिसरौज यहसंस्कारकरानाहो-जिनमंदिरमें स्नात्रपूजन कराना चाहिये. नैवेद्यकीजगह-क्षीर-लड्डु-पैडे-पुरीकचौरी-या-चावलवगेरा जोकुच्छ-अपनेघर बनायाहो-एकथालमें रखकर जिनप्रतिमाकेसामने चढाना, जिसगांवमें जिनमंदिर-न-हो-वहां-धातुमयसिद्धच-

क्रयंत्र-रखकर उसके सामने यह विधान करना, फिर घर आकर कुलमें जो बडेरीहो-लडकेको एकचौकीपर बैठाकर मुखमें भोजनका कवल देवे. और कुलगुरु उसवखत सामने बैठकर इसमंत्रको जो-अगाडी-लिखाहै तीनदफे पढे,-[मंत्रः]-ॐ अर्ह-भगवानर्हन्-त्रिलोकनाथः-त्रिलोकपूजितः-सुधारितशरीरोपि कावलिकाहारं आहारितवान्-तपस्वन्नपि पारणाविधौ-इक्षुरसपरमान्नभोजनात्-परमानंदात्-आपकेवलं-तद्देहिन्-औदारिकशरीरमाप्तः-त्वमपि-आहारय आहारत-स्ते-दीर्घमायुरारोग्यमस्तु-अर्हं ॐ,-इसतरह अन्नप्राशन-संस्कारकरायेवाद् कुलगुरुको रुपया-श्रीफलबगेरादेना चाहिये. आजसें लडकेको-अन्न-खाना शुरुहुवा.

(१५८)-१०-दसमा-कर्णवेधसंस्कार-तीसरे-पांचमें-या-सातमें-वर्षकराना ठीकहै जिसरौज-अश्विनी-रोहणी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अनुराधा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-या-रेवती-नक्षत्रहो-रिक्तातिथिको छोडकर अन्यतिथि-रवि-मंगल-बृहस्पति-शुक्रवार-और-अच्छायोग हो-उसरौज-लग्नशुद्धिमें-तीसरे-ग्यारहमें शुभग्रह बैठेहो-और-शुभग्रहकेस्थानमें पापग्रह-न-बैठेहो-एसेवखतपर-अच्छे-कर्णवेधक पुरुषको बुलाकर लडकेके कान वींधाना चाहिये. और-उसको रुपया-या-बस-देकर खुशकरना मुनासिवहै.

(१५९)-ग्यारहमा-केशवपनसंस्कार-जिसरौज-मृगशिरा-पुनर्वसु-हस्त-चित्रा-स्वाति-ज्येष्ठा-श्रवण-धनिष्ठा-और-रेवतीनक्षत्र हो-१-२-३-५-७-१०-११-१३-ये-तिथिहो-सोम-बुध-और-शुक्रवारहो-उसरौज चंद्रबल-तथा-ताराबलदेखकर-लडकेके प्रथमके-

श उतराना चाहिये. जिस रुमालमें केशपडे उसमें रुपया वगेरा कुच्छद्रव्य लडकेकेशिरपर उवारकरके डालना-और-नाइकों शिरोपावदेकर खुशकरना मुनासिवहै, क्योंकि-उसने-लडकेके-केश पहिलपहिले उतारे है, केशउतरायेवाद-दहीं-या-दूधसें-लडकेका मस्तक धुलाकर साफपानीसें उसको नलहानाचाहिये. शक्तिहो-तो-जातविरादरीकों मिष्टान्नभोजन-जिमाकर सत्कारकरना-और जिनमंदिरमें-अंगी-रौशनी-कराके-धर्मको उत्तेजन देना-जरूरी कामहै.

(१६०)-१२-वारहमा-उपनयनसंस्कार-आठवर्षकी उमरहुये वादकरायाजाताहै, जिसरौज-अश्विनी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-हस्त-चित्रा-स्वाति-श्रवण-धनिष्ठा-और-रेवती-नक्षत्रहो-२-३-५-७-१०-१३-ये-तिथिहो-बुध-गुरु-या-शुक्रवारहो-उसरौज-त्यागी गुरुकेपास आनकर-स्वधर्मका मंत्र लेना चाहिये. पहिले कालमें जिनोपवीतरखनेका रवाज था-लेकिन!-इसकालमें वह रवाज रहानही, वर्त्तमानमें उसके मुकाविला निर्ग्रथगुरुसें वासक्षेपकराके निजधर्मका मंत्रलेना यही रवाज देखाजाताहै इसलिये उसीमुआफिक वर्त्तना ठीकहै, कइलोग पहिले विद्यारंभ संस्कारकराना जरूरत समजते है, लेकिन!-नही!-पहिले उपनयनकराकर फिर विद्याध्यनकराना योग्यहै. जिसरौज उपनयनसंस्कारकरानाहो-लडकेको-स्नानमज्जनकराके-अच्छे कपडेपहनाकर-बाजेगाजेकेशाथ निर्ग्रथगुरुकेपास-लाना, और उनकेसामने नमस्कार कराके-एक चौकीपर चावलोंका स्वास्तिक बनाना-उसपर-श्रीफलवगेरा चढाकर ज्ञानपुस्तककी पूजाकरना,-(यानी)-पुस्तकपर-रुपया-मोहरव-

गेरा-कुच्छद्रव्य चढाना, निर्ग्रंथगुरु त्यागीहोते है उसद्रव्यकों ज्ञानमें लगादियाजाय कोइहर्जकी वात नही. इतनेकार्य होजानेवाद निर्ग्रंथगुरु जब अपनाचंद्रस्वर चले-वर्द्धमानविद्या-पढकर शिष्यपर वासक्षेप करे, और परमेष्ठिमंत्र सुनाकर उसकेमुखसें तीनदफे उच्चारण करावे. वर्द्धमानविद्या-और-परमेष्ठिमंत्र-यहां इसलिये नहीलिखेकि-वें-गुरुओंके कंठहीहोते है. हां!-परमेष्ठिमंत्रकी तारीफ सुनाकर-बयानकरेकि-यहमंत्र सबशास्त्रोंका-सार-और-सबतरहके पातककों दूरकरनेवालाहै, हरवखत इसकों यादरखना, इससें तेरी धर्मभ्रद्धा अचल रहेगो-और-धर्मकेप्रभावसें सबकाम अच्छे होते रहेगें. जग्तमें सारवस्तु धर्म है. मुनासिबहै कि-हरहमेश जिनप्रतिमाका दर्शन-और-निर्ग्रंथगुरुकों-नमस्कारकरके फिर दूसराकाम करना. जितलियेहो-रागद्वेषवगेरा-दुश्मन जिसने-उसकानाम-जिन है, और-निर्गता-(यानी) दूरहोगइहो-लोभलालचरुप-ग्रंथि-जिसकी-उसकानाम-निर्ग्रंथ-है. इसतरह उपनयनसंस्कार पूर्णहुयेबाद जिसतरह वाजेगाजेके साथ गयेथे-वैसेही-पुनःअपनेघरआना-और-जो-लोग-साथ-गयेथे-उनकों श्रीफल-या-मिठाइवगेरा बांटकर विसर्जनकरना चाहिये. इधर निर्ग्रंथगुरुकों आहारकी निमंत्रणाकरके उनकों आहार प्रदान करना-और-जिनमंदिरमें अंगीरौशनी बनाकर धर्मकों उत्तेज्जन पहुंचाना-अवश्यकर्तव्य-है.

(१६१)-१३-तेरहमा-विद्याभरंसंस्कार,-जिसरौज-अश्विनी-मृगशिरःआर्द्रा-पुनर्वसु-पुष्य-अश्लेषा--पूर्वाफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाति मूल-पूर्वाषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-शततारका-और-पूर्वाभाद्रपद ये-नक्षत्रहो-२-३-५-७-१०-११-१२-१३-ये-तिथिहो-रवि-सोम-

बुध-गुरु-और-शुक्रवारहो-उसरौज अच्छेलगमें-वालककों-विद्या पढाना गुरुकरना चाहिये. विद्यारंभकरतेवरुत-अगर-पढनेवालेका सूर्यस्वर-चलताहो-तो-अच्छाहै, विद्या जल्दी आयगी. जोलोग-पढानेवालेपंडितकों-अपने घरबुलाकर लडकोंको तालीम दिलवा-तेहै उससे पाठशालामें भेजकर तालीम दिलाना ज्यादे फायदेमंद है, जितनीविद्या उसकों पाठशालामें हासिलहोगी घरमें बैठकर प-ढनेसें-न-होगी, विद्याविदून मनुष्य जानवर बराबरहै. विद्वान्म-नुष्य हरऐलमकों सप्रज्ञसकता है. विद्यासें बडेबडे होदे मिलसकते है, विद्याकों ज्ञानीलोगोने जवाहिरातसेंभी बढकर कहा. विद्याके बलसे आदमी दिग्विजय करसकताहै. पढनेकी मिहनत पहिलेतो तकलीफदेतीहै लेकिन! अखीरमें बडेबडेफायदे पहुंचायगी.

[पाठशालामें लडकोंको-ये-वाते जरूर सिखलाना चाहिये.]

जीव अनादि है,-संसारकी आदि नहीं,-

दुनियाका बनानेवाला कोइ नहीं.-

सुखदुख-अपने पूर्वभवके कियेहुवे-कर्मोंका-फलहै,
पुन्यकर्मसें स्वर्ग मिलताहै-पापकर्मसे दुर्गति होती है.

धर्मप्रवर्त्तक-तीर्थकर-सर्वज्ञ-होते है,

मनुष्य-आज-महेलमें है-कल-न-मालूम कहांहोगा,?

चाहे राजाहो-या-रंकहो-मरना सबकेलिये है,

दौलत विद्याकी दासी है-इसकाघमंड-न-करनाचाहिये,

राजे लोगोंने पूर्वभवमें पुन्य कियेथे-लेकिन! यहां-न-करेंगे तो-उनकेलिये बुराहै,

जिसवरुत जिसकाराज्यहो-उनकी विद्याकोंभी जरूरपढना चाहिये,

जितनी उमर-जीव-पूर्वभवसें-बांधलायाहै उतनीही भोगेगा,
 रास्तेचलते आकाशतर्फदेखना मूर्खोंका कामहै,
 वरुत चलाजायगा फिर-न-मिलेगा,
 सोकर भोरही उठो-और-सुहाथ थोडालो,
 मातापिताकों मुजरा करो. और-फिर-जंगलकी हवाखानेकों
 जायाकरो,
 सवेरकी हवा बडी फायदेमंद होती है,
 कपडे साफ पहेनों-और-माथेके केशोंकों चमकदार रखो,
 भौजनजिमें वरुत बोले मतकरो-चवाचवाकर खाओ,
 खाकर थोडीदेर सोजाओ-तुर्त्तही मत खैलो,
 पिताका कहना हंसीमें मत उडाओ,
 गहरेजलमें मत खैलो-डूब जाओगे,
 तमाखूकी-डिब्बी-मत खोलो,
 अफीम-भंग-माजूम-तमाखू-चिलम-और-हुक्का-मतखरीदो,
 छतपर चढकर मतबैठो-छूरीकटारी मत खोलो,
 झूठतुफानकरना नालाइकोंका कामहै,
 जैसीबातहो-वैसी-साफ कहो-झूठ मत बोलो,
 दूधका गडवा खुला मतरखो-विल्ली-आकर पीइजायगी,
 मांसखाना बडापापहै, मदिरापीना बडा दोषहै,
 शिकार खैलना पापीलोगोंका कामहै,
 आरामकेवरुत सब तुमकों चाहेगें-तकलीफमें कोइ-नही-चाहेगा,
 बहत्तरकलाजाननेवाले शरुश बहोत थोडे होते है,
 चौंसठकलाकी माहितगारस्त्री-हजारोंमें-एकहोती है,
 वर्ताव ऐसा रखो-जो-सदा एकसरखा चलाजाय,

अगरकोइशख्श सिधादखनदिशातर्फ समुंदरमें चलाजाय-
फिर-पिछा-न-आसकेगा-यानी-दोलाखयोजनतक समुंदरहीसमुं-
दरहै-जातेजाते मरजायगा-उससमुंदरके आगे दूसरीदुनियाभी है,
जिसको शास्त्रोंमें धातकीखंड कहा.

जिसमें हमतुम रहते है उसकानाम भारतवर्ष है, जो जंबूद्वीप-
का एकछोटाभाग समझना चाहिये.

राजधानी उसको कहते है जहां राजा रहताहो,
शहर उसको कहते है जहां व्यापार-और-आबादी ज्यादाहो,
कस्बा उसको कहते है जो छोटीवस्तीहो, गांव उसको बो-
लते है जहां फक्त पांचदस झोंपडेंही आबाद हो-व्यापारका नाम
निशान नही,

जो राजा अपनीरैयतको तकलीफ पहुंचाताहै कभी खता
खायगा.

आकाशमें जो सूर्य-चंद्र-तारावगेरा देखतेहो इश्वरकेबनाये
हुवे नहीहै, द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा नित्य और पर्यायार्थिकनय-
की अपेक्षा अनित्यहै, उनमें देवतालोग वसते है और-वैही-देव-
उनको चलाते है, थोडी बुद्धिवाले उसकामका बौजा इश्वरकेमाथे
डालते है, शरीर-हाथपांव-कान-नाक-दांत सभी अपनीअपनी?
तकदीरसे बने है, बंदेकी तकदीर और तदबीर उसे सबतरहके
भलेबुरे नतीजेपर पहुंचाती है, अगर इश्वरमें ताकतथी तो सबको
एकसरखे सुखी बनाता, एकको अंधा-और-एकको-आंखोंवाला
क्यों बनाया?-क्या ! इश्वरभी पक्षपाती है?-जैसे रैलगाडी जमी-
नपर चलती है पहिलेजमानेमें विद्याधरलोग आकाशमें विमान च-

लातेथे, लोगोंको एकगांवसे दूसरेगांव पहुंचातेथे. रैलमें जैसे मृत्युका खतराहै विमानमें नहींथा. जैसे डाककेजरीये चीठीयां आजकल एकगांवसे दूसरेगांव आदमी पहुंचाते है पहिलेकालमें विद्याधरलोग आकाशद्वारागमनकर पहुंचातेथे. जोलोग कहते है दुनियामें पहिले अंधेरा था-अब-उजयाराहुवाहै बड़ीभूल करते है, वल्किन-पहिलेकालमें ज्यादा उजयारा था-बडेनसीबेदार और बडीउमरवाले आदमी होतेथे. धनदौलत. रुपरंग और पुन्यवानी लाखदर्जे तेजथी, आजकल धर्मक्रेषटजानेसें सवतरहक्रीपुन्यवानी भी घटने लगगइ. भारतवर्षके-छह-खंड-जो जैनशास्त्रोमें लिखेहै उनमेंसें वैताढ्यकी दखनतर्फके जो तीनखंडहै इतनेहीकों आजकलके लोग संपूर्णदुनिया समझरहे है, सववकि-वैताढ्यपूर्वतकों उलंघके आगेकों-आजकल कोइ नही जासकता. असलमें भारतवर्षकी दखनहीकी तर्फ समुंदरहै, लेकिन!-सगरचक्रवर्ती नहेरखोदकर जब समुंदरकेजलकों उरे लाया-तबसें-उरछीखाडीकोंहीलोग समुंदर कहने लगगये. इसीसे भारतवर्षक्षेत्रकी मर्यादा चलविचल होगइ. जैसे आजकल नदीकों काटकर अलग नहेर लेजानेसें-क्षेत्रकीमर्यादा छिन्न भिन्न होगइ है-वैसे-सगरचक्रवर्तीके वरुतसें बडा फेरफार होगयाहै, पहिलेकालमें वारुदकों अग्निचूर्ण कहतेथे, तोपोंकों सहस्रग्री कहते थे, अग्न्यास्त्र-वज्रास्त्र-मोहनास्त्र वगेरा कइतरहकेहथियार पूर्वकालमें होतेथे. जो आजकलके हथियारोसें लाखदर्जे बढकर थे. भारतवर्षका मध्यखंड आजकल-दारा-सिकंदर मुसल्मान-और इशाइयोंके युद्धसें निर्वल होकर पराधीन हुवाहै. नकशा उसकों कहते है जिसमें देश, राजधानी, नगर,

गाव-पहाड-नदी-वन-और-जंगलका आकार बतायागयाहो.

पृथ्वी गेंदकीतरह गोलनही-स्थालीकी तरह गोलहै,

एकघडेमें वादाम भरीहुइथी एकलडकेने उसकों देखा और उसमेंसे वादाम लेनेकों हाथ डाला, मुठीभरकर निकालने लगा लेकिन ! घडेका मुंह छोटाथा, हाथ न निकल सका. उस्तादने कहा इतनीवादाम एकशाथ कैसे निकलसकेगी ? थोडी ले, लडकेने आधीमुठी छोडदीइ-और-हाथ तुर्त वहार निकल आया. इसीलिये कहते हैकि-लोभकों घटातेरहो.

देखो !-हाथी कैसा बडागंभीरहे. किसीकों मारता नही, चाहे कोइ पास जावे, आदमी तो उसपर बैठतेही है, गधा देखो ! कैसा खराबहै जो जरा उसकेपास जाओकि-छात मारदे, कहो ! तुमकों हाथी बनना है ?-या-गवा ?-सौचकर जवाब दो, बिदून सौचे जवाब देना सूखोंका कामहै,

- . मातापिताकों गाली बोले सो मुख,
- बिदूनमतलब दूसरेके घर जाय सो मुख,
- तैरना न आताहो और जलाशयमें कुदे सो मुख,
- गुप्तवात करतेहो वहां विनाबुलाये जावे सो मुख,
- सभाका काम सभाकी सल्लाह बिना करे सो मुख,
- नग्नहोकर शयनकरे सो मुख,
- दोस्तके साथ दगलबाजीकरे सो मुख,
- देवगुरुधर्मकी कसम खावे सो मुख,
- पंडित होकर गर्व करे सो मुख,
- भयकी जगह एकीला जावे सो मुख,

सर्पकेशाथ खैल खैले सो मुख,
 धर्मीपुरुषकी नाँदाकरे सो मुख,
 हांसीखुशीमें गुस्ताकरे सो मुख,
 बातकरते आप हंसे सो मुख,
 किये उपकारकों न पहिचाने सो मुख,
 देवदर्शन विना किये भौजन जिमे सो मुख,
 अनमिलती बस्तुकी चाहना करे सो मुख,
 देवद्रव्य भक्षणकरे सो मुख,
 स्त्रीकों गुप्तवात कहे सो मुख,
 विना हुंकारा बातकरे सो मुख,
 अजीर्णहुवे खाना खावे सो मुख,
 विना सवार उंठ घोडेपर चढे सो मुख,
 वैश्याकेशाथ व्यापार करे सो मुख,
 नाइके घरजाकर हजामत करावे सो मुख,
 धूपमेंबैठकर भौजन जीमे सो मुख,
 मृत्युके दिनकों हरदम याद न रखे सो मुख,
 तकलीफके वखत परमेष्टिर्मंत्रकों भुलजाय सो मुख,
 दुखआनेपर गभराजाय सो मुख,
 बुखार खांसीबगेरा रोगमें मैथुनसेवे सो मुख,
 ज्ञानदर्शनचारित्रके उपकरणकों परिग्रह समझे सो मुख,
 न्यायाधीश होकर अन्यायकरे सो मुख,
 नमस्कारकरनेवालेसें आकड रहे सो मुख,
 पैशावमें मुखदेखे सो मुख,

पैदाशमेंसें सोलहमा हिस्साभी धर्ममें न लगावे सो मुख, व्याकरणपढकर संस्कृतबोलते न जाने सो मुख, युक्तिप्रमाणकों न माने सो मुख, भोजन जीमकर तुर्त दिशाजंगल जावे सो मुख,

पढानेवाले गुरुसें हंसीमश्करीकरे सो मुख,—एकमास्तरसाहब मदसेंमें लडकोंकों पढारहेथे, उनमें एकलडका ऐसाथा जो हरवख्त सामनेबौलदियाकरता था—और—मास्तरकीबातकों कुच्छ खयालमें नहीलाता था, मास्तरसाहब एकदिन बेंतकों सिधाकरके बोले!—हमारे बेंतके कौनेके सामने एकगधा बैठाहै, जो लडका बेंतके ठीकसामने बैठाहुवाथा बोल उठा, अजी! मास्तरसाहब! बेंतके दोकौने होते है! आप किसतर्फके कौनेका जीकर करते है?—मास्तरकों इस वेंअदबीसें ऐसा गुस्सा आयाकि—उसलडकेकों खूब पीटा—और—मदसेंसें निकाल दिया. पढनेवालोंकों चाहियेकि—उस्तादके सामने न बोलना—और—हरवख्त ताबेदारी करते रहना, विद्या जभी आयर्गा.

मनुष्य जितना दिनभर मजदूरीकरनेसें नही थकता उतना तीन घंटे लगातार मानसिक परिश्रमकरनेसें थक जाताहै, जिनलोगोंकों लिखने पढनेका—और—वाचनेका बहोतकाम पडता है, जो हरवख्त धर्मशास्त्रका उपदेशदेते रहते है, लडकोंकों तालीमदेते है, अदालतमें वकालतकरते है, समाधिलगाते है, और—जो—न्यायकरनेकी मिहनत उठाते है, उनकों जरूर मानसिक परिश्रम उठाना पडता है, उनकाशरीर ताकतवरहोनेसेंभी थक जाते है; उनकों चाहिये कि—खानपानकी सावधानी—रखे, दूध—घी—मीश्री—द्राख—केशर—शि-

लाजित्-गेहूँकेबने पदार्थ-उर्दकीदाल-ताजीमिठाई-ताजीक्षीर-ता-
जासीरा-पके फल-पानबीडी-और-तती रसोइ-हरहमेश खायाक-
रे; और चीजोंका समागम न मीले तो खेर !-लेकिन! रसोइ
तो जरूर ततीजिमना चाहिये; ठंडीरसोइ विल्कुल फायदा
नहीं पहुंचाती,

हरहमेश आठघंटे शयन करो; बायीकरवट सोजाओ-जी-
मनाकरवट सोना तो घंटा आधघंटाही सोना चाहिये, बहुधा बा-
यीकरवट सोना फायदेमंदहै, संभवकि जठराग्निका स्थान उसी-
तर्फकों है, सोनेकेमकानकी खिडकीयें खुल्ली रखाकरो, पलंगकों
दिवारसें लगाकर मत बिछाओ, पगकों साफकरके बिछौनेपर
बैठो, खारापानी कभी मत पीओ-अगर तुमारेशरीरमें अच्छीता-
कतहै-तोभी-हरहमेश पांचतोले-घी-जरूर खायाकरो, शरीरके
संचे इससें तेज रहते है,

अबतक लोग जानतेथेकि-चीनदेशका-किनपान-अखबार
सबसें पुराना छपाहुवा मिलताहै, लेकिन !-अब मालूमहुवाहैकि-
चीनराजधानी पेकिनका-सिंष्ट्रपाव अखवार उससेंभी पुराना छ-
पाहुवाहै, किनपानकों छपते अभी एकहजारवर्ष ही बीते है, परंतु
सिंष्ट्रपाव बराबर (१४००) वर्षसें छपरहा है. इसमें सब बादशाही
खबरे रहती है,

चीनदेशमें अगरकोइ शख्स दूसरेको टोपीउतारकर सलाम
करे तो मश्करी किह समजीजाती है, अमेरिकामें एकवृक्ष ऐसा
पायागयाहै जिसमेंसें रात्रीकेवख्त मसालकीतरह प्रकाश निकल-
ताहै, सारा जंगल चांदनासें-झलाझल बनजाताहै, काश्मिरके रा

स्तेमें पीरपंजालके दाहनेपासे जो पाहाड है जहां बनकशागुल-बुटी पैदाहोती है, वहां कइ वृक्ष ऐसे है जिनमेसें रात्रीकेवख्त दी-येकीतरह अग्निका लाट निकलती मालूम होती है, मणिमंत्रौष-धीनां अचित्यप्रभावः-ठीकहै, शास्त्रोंमें मणिमंत्र और औषधी-योंका अचित्यप्रभाव इसीलिये ज्ञानीपोंने बयान किया,

(१६२)-१४-चौदहमा विवाहसंस्कार तत्र कराया जाताहै जब स्त्रीपुरुष उमरलाइक हो, जैसे कच्चाफल खाना ठीकनहीं वैसे कच्चीउमरमें विवाहकाहोनाभी ठीकनहीं फरमाया, विवाह दूरदे-शमें होना अच्छाहै, एकगांवमें कन्याकों दिइगइहोतो-पिताकोंभी कइतरहकी तकलीफ रहती है, जबजब कन्या पिताकेघर आयगी कुच्छनकुच्छ देनाही पडेगा, एकगांवमें विवाहहोनेसें स्त्रीकों अपने पिताकी सहायताका भी धमंड रहेगा, जब-जब लडाइ दंगा होगा तुर्त आपने पिताकेघर चलीजायगी, पतिकेसंबंधी स्त्रीके संबंधीयोंसें लडे गें, जिनके मातापिताकों बवासीर-क्षय-दमा-मीरगी-और-कोढका-रोगहो उनके बेटाबेटीसें विवाहहोना ठीकनहीं, माजरीआंखवाली तथा भुरेनेत्रवालीकन्या कुलक्षणी होती, पुरुषभी मांजरीआंखवा-ला बडा दगलबाज होताहै, इसकालमें पनरांह-सोलह वर्षकी कन्या और बीसवर्षका पुरुष अगर विवाहशंखलासें योजितकिये जाय तो समयानुर ठीकहै, लेकिन!-अपशोष हैकि ग्यारहवर्षकी लडकी और बारहवर्षका लडका-विवाहितकरदिये जाते है, आजकल शास्त्रके हुकमपर कोइ खयाल नहीलाता, जमाना वारीक आरहाहै, इस लिये-कोइदिनोंमें यहभी वर्ताव देखोगे जो बहोतही-त्रेमुनासिव होगा, स्त्रीसें-पति-उमरमें सवाया-देढ-या-दुगुनाहो-तवतक वि-

वाहका होना फिरभी ठीकहै, लेकिन? पचास साठवर्षके बुढ़ेसे दश ग्यारवर्षकी लडकी विवाहदेना किसीसुरत अच्छा नही. अपशोषहै कि-आजकल इसवातकाभी कोइ खयाल नहीकरता. अगर सवालकियाजायकि-जिसस्त्रीके भाग्यमें-जो पति-होनाहो-वो कैसे मीटे?-(जवाब.) तथापि व्यवहारमें तो यहवात अयोग्यही कहीजायगी. जहांतकबने व्यवहारनयभी प्रमाण करने योग्य है, असलमें-तो-निश्चयनय-मुजबही-बनावबनेगा लेकिन! तोभी बर्तावतो व्यवहारनयमुजबही रखनाचाहिये, निश्चयनय जाननेयोग्यहै और व्यवहारनय प्रवर्त्तिमार्गमें लानेयोग्यहै,

(१६३)-जिस स्त्रीकी बोली अच्छी-न-लगतीहो-और-जिसका रूप सोहावना-न-हो-उसकेशाथ विवाहकरना ठीकनही, अच्छीबोली-और-अच्छारूपभी-भाग्यवानीकी निशानी है, आजकलके जमानेमें पुरुषकों अच्छीस्त्री और-स्त्रीकों-अच्छापुरुष मिलना बडाहीमुश्किलहै, जबतक स्त्रीपुरुषका मन नहीमिलता सुखकी स्थिति नही होती. मन जभी मिलताहै दोनोंमें चतराइ-या रूप-हो, इसलिये मातापिताकों-मुनासिबहैकि-अपने बेटाबेटीकों पहिले पुछलेवे, और उनकी रुचीमुजब विवाहकी बातकरे, अगर दोनोंमेंसे किसीकी इच्छा बखिलाफ देखे तो उनकेशाथ स्या दी न करे, अगर कोइ सवालकरेकि-ऐसी-शर्मभरीवात-कैसे पुछीजाय?-(जवाब.)-अगर आप न पुछशके तो उनके मित्रोंसे तलाशकरावे, विदून इच्छा विवाहकरनेसे अगाडीपर विरोधपेदा होगा, जिनकों मित्रोंसे दरयाफतकरातेभी शर्म आतीहो-उनकों-हमारा कहना-अलवते? न-रुचेगा, खेर!-उनकों चाहिये अपनी-

मरजीपर आधार रखे, हमको तो यहां जो मुनासिवबातहो लिख देनाचाहिये इसइरादेसें उक्तवात लिखीगइहै, जिसको मंजूररखनाहो रखे-न-रखनाहो-मत रखे, कइदेशवाले कहते है एकस्त्री-एकहीपुरुषकेशाथ-या-एकपुरुष-एकहीस्त्रीकेशाथ-उमरभर विवाहकी रस्सीसें बंधे रहे यहवात अच्छीनहीं, वल्किन्! जब शर्तमें फर्क आजाय तुर्त विवाहबंधन छूटजानाचाहिये, आर्यलोगोंने यह वात फिसादकी जड समझकर मंजूर नहीरखी, संसार अपारहै, यहनहीकहसकतेकि-अमूकरसमें अमूकदेशमें सनातनसें चलतीआतीहै कभी नही बदली, हरजमानेमें रीतिरसम बदलतीरहती है, लेकिन!-अच्छेलोगोने पुनर्लगकी रसम फिसादकीजड समझकर अच्छीनहीकही,

(१६४)-पुनर्विवाहसें इतनेदोष पैदा होंगे, अवलतौ स्त्रापुरुषमें पुरेपुरा प्रेम-न-रहेगा, जहचाहे तब पुरुषको-स्त्री-और-स्त्रीको पुरुष-छोडकर दूसरेसें विवाहकरलेगें, अगर एक दूसरेके मरनेके बाद दूसरा विवाहकरलेना ऐसनियम जारीकियाजाय तौभी कइतरहके दोष पैदाहोंगे, स्त्री-जब विधवाहोकर दूसरेसें विवाहकरलेगी-तब-पहिलेवालेपतिकी चीजबस्तको उडालेजानेका-उपाव करेगी, उनकेकुटुंबीलोग उसस्त्रीसें लडेगें, बहोतसें धार्मिककुलोंका नामनिशान न रहेगा, और उनके पदार्थ छिन्नभिन्न होजायगें.अच्छेलोगोंने इसीलिये पुनर्विवाहकी मनादी किइहै, अच्छेलोगोंने जोजो कायदे वुरे समझकर नामंजूर रखे है उनको अब चलाना चाहतेहो-तो-सौचकर चलाओ, अगरकहाजाय कि-पुनर्विवाहकी रसम जारी-न-होनेसें व्यभिचार दोष बढताहै, (जवाब.)-क्या!

पुनर्विवाह होनेसें व्यभिचार नहोगा?—अगरकहोगे—इसवातका ठै-
 का हम कैसेलेसके?—तो—फिर सौचलो उक्तवातकेजारीहोनेसेंभी
 क्या फायदा निकला!—अगर कहा जाय—गर्भपात होते बचावहोगा
 इसकाजवावभी—यहीहैकि—चाहे उक्तरसम जारीकरो—या—न—करो,
 पापकर्म तो संसारमें सदाही होता चला आया—यहतो जभी मीट
 सकताहै धर्मपर श्रद्धा बढेगी, विदून धर्मश्रद्धा पापकर्मका हटना
 मुश्किलहै, अगर सवालकियाजायकि—स्वदार संतोषव्रती पुरुष—
 किसीवैश्याकों मौजूदकर कोइकालतक अपनीस्त्री—बनावे—और—उ-
 सकेशाय भोगकरे तो उसकेव्रतमें दोषलगे—या—नही?—(जवाब)—
 दोष जरूरलगे, क्योंकि—वैश्या अपनीस्त्री—नही. स्त्री—वो—है—जो पं-
 चोंकी साक्षीसें शास्त्रोक्त विधानद्वारा विवाही गइहो. अगर कहा
 जायकि—स्वदारसंतोषव्रतीपुरुष अपनीस्त्रीके मौजूदहोतेहुवे—या—प-
 रजानेकेवाद दूसरीस्त्रीसें विवाहकरेतो—उसकों अतिचार—या—अ-
 नाचार—लगे—या—नही?—(जवाब.)—उसकों अतिचार—या—अना-
 चार—न—लगे, सबकि—उसकों अपनीस्त्री—खुली है, (सवाल.)—इ-
 सीतरह कोई स्वपुरुषसंतोषव्रतधारणीस्त्री—अपनेपतिके मौजूदहोते
 हुवे—या—उसके मरजानेकेवाद दूसरेपुरुषसें पुनर्विवाहकरे तो उस
 स्त्रीकों अतिचार—अनाचार—लगे—या—नही?—(जवाब.)—जैसे पुरु-
 षकेलिये पुनर्विवाहकरना मर्यादा है वैसे स्त्रीकेलिये भी अगर पु-
 नर्विवाहकरनेकी मर्यादा सर्वसंघमिलकर जारी करदेवे तो स्त्रीकों
 भी अतिचार—अनाचार न लगे,—(सवाल.)—सर्वसंघ मिलकर उ-
 क्तमर्यादा जारी न करे—और—कोइस्त्री—अपनी स्वछंदतासें—पुनर्वि-
 वाह करलेवे—तो—उसकों कैसी समझना चाहिये?—(जवाब.)—उसकों

वदचलन-समझना चाहिये, क्योंकि-उसने अच्छेलोगोंकी मर्यादा-उल्लंघन कीइ, अगर सवालकियाजायकि-आपने खूबबंधनडाला-सवसंधकी सलाह एकसरखीहोवे नही-और पुनर्विवाहकी रसम जारीहोनही. (जवाब.)-श्रेष्ठपुरुषोंके बांधेहुवे कायदेकों रदकरके नयीरसम जारीकरना चाहतेहो-तब-इसतरहसबकी संमतिलिये विदून समाधिकैसे रहेगी. चाचे-तायेकी-बेटी-या-मामा-फुफीकी बेटी-एकअपेक्षा बहेनही हुइ, लेकिन!-पहेलेजमानेमें ऐसे बहेन भाइयोंका विवाहना अच्छे कुलवाले लोगभी बुरा नही समझतेथे, और अब ऐसे बहेनभाइयोंका विवाहना बुरासमझते है, कहिये! पहिलेकालके कायदे जब रदकिये होंगे तो सबकीसलाहसँ किये होंगे-या-एकदोशखसोनेही मिलकर करदियेहोंगे?-अगर एकदो-शखसनेही किये होते-तो-सब-संध-कभी मंजूर नकरता, इसीलिये कहाजाताहैकि-सबकी सलाहसँ कामकरना चाहिये, यहबात सबकोइ कहसकतेहैकि-पंचमकालके प्रभावसँ दिनप्रतिदिन-धर्मकी हानि-और-अधर्मकीवृद्धिहोना बढताजायगा, देवगुरुधर्मकों लोग कुच्छचीज नही समझेगें, सच्चबोलना छोड देयगें, राजेलोग रैयत-कों तकलीफदेयगें, साधुलोग लोभी होजायगें, अच्छेघरानेकीस्त्री व्यभिचारिणी होजायगी, पुनर्विवाहकेलिये लोग हठवाद करेगें, बेटे बापका सामनाकरेगें, धर्मीलोग दुखी और अधर्मी मौज उ-ढायगें, कालदोषसँ ऐसेऐसे बनावबनेगें जो-बहोतहीबुरेहोंगें, ले-किन! खैर!-अबतकतो फिर भी दुखमयकालका पहिलाही-हि-स्सा-बर्त्तरहाहै, अबसँही-क्यों?-इतिश्री-करने बैठेहो-जहांतकवन पडे धर्ममर्यादाका पालन करनाचाहिये, इसन्यायसँभी मुनासिब

आयाकि-वनतैप्रयत्न अच्छेकाममें पावंद रहना.

(१६५)-कोइस्त्रीपुरुष प्रेमानुरागसें आसक्तहोकर मातपिता-की विदूनरजामंदी गुप्तविवाह करलैवे इसकानाम गांधर्वविवाह कहतै है, किसी मकानमें एकांत मिलकर औरत कहेकि-मैं-आ-पकी-स्त्री-हूं-और-पुरुषकहे-मैं-तुम्हाराभर्ता हूं-वस! इतनेविधा-नसेंही विवाहहोगा मानलेवे-इसकानाम विषयासक्तलोगोंने गां-धर्वविवाह रखाहै, लेकिन! ज्ञानीलोगोंने इसकों प्रमाणीक नहीं कहा, सबकि-शास्त्रकेहुकमसें बखिलाफहै, शर्त्तलगाकर कन्या देना इसकानाम असुरविवाहहै, जैसे जुआखेलतेबख्त कोइशख्श शर्त्तलगावेकि-मैं-इसमे हारजाउगातो अपनी लडकी तुमकों देदूंगा, जोराजोरी दूसरेकी लडकी लेकर अपनी स्त्री बनालेना इसकानाम राक्षसविवाह कहते है, छलकपटसें-या-विद्याकेजोरसें-किसीकीलड-कीकों उडालेजाना इसकानाम पिशाचविवाह कहतेहै, कइमतावलं-बीयाकों मंतत्र्यहैकि-घरछोडकर वनमें जारहना और-स्त्रीपुत्रकोंभी साथरखना कोइहर्जकीवात नहीं. घरछोडनेसें वेभी मुनी कहेजायेंगे, लेकिन! ज्ञानीलोगोंका फरमाना इससें विरुद्धहै, वे-फरमाते है जबतक धनदौलत-बेटाबेटी-और-स्त्री-नहींछोडी तबतक मुनि न-हीकहेजासकते-खेर!-हमकों यहां-आर्षविवाहका भेद बतलानाहै इसलिये समझलो वैसे वनवासीमुनि-अपनी लडकीकों दूसरे वन-वासी मुनिके लडकेसे विवाह ते समय फक्त एकगौ-या-बछडा-देकर षाणिग्रहणकरावे इसकानाम आर्षविवाह बोलते है, प्राजापत्यविवाह जो-मातापिताकी रजामंदीसें पंचोंके रुवरु शास्त्रोक्त प्रमाणसें क-रायाजाताहै बुद्धिमानोंकों यही विवाह मंजूररखना चाहिये, यही विवाह जगत् प्रसिद्धहै,

(१६६)-विवाहमुहूर्त्त किसतरह शोधनकरनाचाहिये?—उसका वयान,—रोहिणी—मृगशिरा—मघा—उत्तराफाल्गुनी—हस्त—स्वाति—अनुराधा—मूल—उत्तराषाढा—उत्तराभाद्रपद—और—रेवती—ये नक्षत्र—विवाहके योग्यहै, लेकिन!—इसमें लत्ता—पात—एकार्गल—वेध—उपग्रह वगेरादोष नहोनेचाहिये, नक्षत्रगंडांत—तिथिगंडांत—भद्रा व्यतिपात और—वधृति वगेरा खोटेकालकोभी विवाहमुहूर्त्तमें वचाकर शोधन करना चाहिये, जानकारज्योतिषी क्रांतिसाम्य—दग्धातिथी—अधिक—मास—चौमासा—वगेरा वचाकरकेही शोधनकरते है, बढीहुइ—या—दूटीहुइतिथि—रिक्ता—अष्टमी—षष्टिद्वादशी—और—अमावास्याकों छोडकर जिसरौज—२—३—५—७—१०—११—१३—१५—तिथिहो उसरौज विवाहमुहूर्त्त शोधनकरना चाहिये, जिसवख्त सिंहराशिका वृहस्पति—और—धनमीनका सूर्यहो—तथा—गुरुशुक्रग्रह अस्तहो—उसवख्त विवाह—दीक्षा—और—प्रतिष्ठा—करनामुनासिव नही. संक्रांतिके रौज तथाउसके दूसरेरौज—ग्रहणहो—उसरौज—तथा—उसकेबाद सातरौज तक—विवाहकरना मनाहै, जन्मलग्न—जन्मवार—जन्मनक्षत्र—जन्मतिथि—और—जन्ममासमेंभी—विवाहकराना निषेधहै, जन्मलग्नकास्वामी अस्तंगतहो—या—कूरग्रहकरके पराजितहो उसवख्तभी विवाहकराना अच्छानही, जन्मराशिसें और जन्मलग्नसें आठमें लग्नमें विवाहहोना नेष्टहै, बुध—गुरु—या—शुक्रवार इनमेंसें कोइहो—विवाहकेलिये अच्छे है, स्थिर—द्विःस्वभाव—या—चर—इनमेंसें कोइसा लग्नहो अच्छे है, हां! उत्पात वगेरादोषकरके—रहित—और—लग्नशुद्धिमें उत्तमता जरूर देखलेनाचाहिये, विवाहलग्नकी उदयशुद्धि और अस्तशुद्धि भीअच्छे लोग जरूर देखलियाकरते है, लग्नकास्वामी—और—लग्नके

नवांशकास्वामी-नवांशकों देखताहो-या-नवांशमें युक्तहो-उसकों उदयशुद्धि बोलते है, सप्तमनवांशकास्वामी-सप्तमनवांशकों देखता हो-या-सप्तमनवांशमें युक्तहो-उसकों अस्तशुद्धि बोलते है, लग्न-दोपापग्रहोंकेबीचमें होनाठीक नही, चंद्रमाभी दोपापग्रहोंके बीच या-पापग्रह करके दृष्टहोना अच्छानही, लग्नमें शुभग्रहका नवां-शहो-और-उसकों शुभग्रह देखातेहो-वैसे-लग्नपर विवाहकरना अच्छाहै, सूर्य-तीसरे-छठे-या-दशमेंभुवनमें होना अच्छा, चंद्रमा पहिले-छठे-और-आठमेंभुवनकों छोडकर अन्यभुवनमें होना श्रेष्ठ, मंगल-तीसरे-छठेभुवनमें होना अच्छा, बुध-पहिले-दूसरे-चौथे-पांचमें-छठे-आठमें-या-दशमेंभुवनमें होना ठीक, बृहस्पति-पहिले-दूसरे-पांचमें-सातमें-नवमें-या-दशमेंभुवनमें होना अच्छा, शुक्र पहिले-पांचमें-छठे-या-दशमें-भुवनमेंहोना अच्छा, शनि-तीसरे-छठे भुवनमेंहोना उमदा, ग्यारहमें भुवनमें सभीग्रह श्रेष्ठहोते है, छठे-या-तीसरेभुवनमें राहू-हो-और-पांचमेंभुवनमें कोई पापग्रह न-हो-और सप्तमभुवनमें शुभाशुभ कोईभी ग्रह-न-हो-ऐसे लग्नपर विवाहका मुहूर्त्त शोधनकरना ठीकहै, स्त्रीकेलिये बृहस्पतिकाबल देखनाचाहिये-पुरुषकेलिये सूर्यबल देखना अच्छा, और-चंद्रबल दोनोंकेलिये देखना अच्छा-और-चंद्रबल दोनोंकेलिये देखना-वहोतठीक होताहै, इसतरह शोधनकरके विवाहमुहूर्त्त निश्चय करे,

(१६७)-अगर ऐसा शुद्धलग्न-न-मिलेतो-सामान्यदिनशुद्धि देखकर चंद्रस्वरचलते वरुत विवाहकार्यमें प्रवर्तना चाहिये, वरात चढतेवरुत जरूर चंद्रस्वर लेकर चलना-तोरणछवतेवरुतभी चंद्र-स्वर होतो उमदाहै, चंद्रस्वर अमृतनाडी फरमायी, इसमें गृहस्थ-

धर्मके जितने स्थिर और प्रभावशाली कार्य हैं अच्छे होते हैं, जि सपुरुषका विवाह अच्छे लग्नमें-या-चंद्रस्वरमें नहींहुवाहै उसको अपनीस्त्रीसें प्रेम नहींरहता, इसलिये मुनासिबहै अच्छे लग्न और अच्छेस्वरमें विवाहकरे, अगर लग्न कमजोरभी हो-कोइहर्जकी वातनही, स्वर चंद्र होनाचाहिये, हस्तमेलनके वख्त तो चंद्रस्वर जरूरहोना चाहिये, अगर सवाल कियाजायकि सारीरात चंद्रस्वर न-चलेतो क्याकरना?-(जवाब.)-स्वरका बदलना घंटेघंटेभरमें हुवाकरताहै, सारीरात-चंद्रस्वर न चले यह नहींबनसकता, अगर सवाल कियाजायकि-ऐसी देखादाखीकरके खालीवहेममें पडना क्याफायदा?-(जवाब.)-जिसकी इच्छा नहो मतदेखो, शास्त्रकारोंका फरमाना जो माने उनकेलिये है, नमाने उनकेलिये शास्त्र क्या?-सर्वज्ञभी कुच्छचीजनही है, ज्ञानीयोंका फरमाना अच्छे लो गोंने हजारदफे शिरपर चढायाहै, और अबभी लाखोंकरोडों लोग शिरपर चढाते हैं, कुच्छ गिनतीके लोगोंने नमानातो कुच्छ पर-वाह नही.

(१६८)-विवाहका मुहूर्त मुकरर होजाय जब वरके संबंधी लोग कन्याके संबंधीयोंकों लिखेकि-अमूकरौज विवाहकामुहूर्त है, फिर कन्याकेसंबंधी ज्योतिषीकों बुलाकर लग्नपत्र लिखावेकि-हमारेकुलकी अमूकनामकीकन्या तुम्हारेकुलके अमूकनामके वर-कों पंचोंकी साक्षीसें दिइजायगी. उसका यहलग्नपत्र भेजाजाता है, वह लग्नपत्रजब वरके मातापिताकेपास पहुंचे आदरपूर्वक लेवे, उसवख्त वरकीतर्फका कुलगुरु इसआगे लिखेहुवे मंत्रकों पढे, [मंत्रः]-ॐ अँई परमसौभाग्याय-परमसुखाय-यरमभोगाय-

परमधर्माय-परमयशसे-परमसंतानाय-भोगोपभोगांतराय-व्यवच्छेदा-
य-इमां अमूकनाम्नीकन्यां-अमूकगौत्रां-अमूकनाम्नेवराय-अमूक-
गोत्राय ददाति प्रतिगृह्णाण अँहँ औँ, -फिर मरके मातापिता-गेहने
कपड़ें और इतरफूलें कन्याकेघर भेजवावे, जब विवाहकेपहिले
अंदाजन पनराहरौज रहजाय-अच्छेवरुतपर सोहागनस्त्रीयें मि-
लकर वाजेगाजेशाय कुंभकारके घरजाय, -और-चार मंगलकलश
बधायकर अपनेघर लावे, मीटीका घडा सबकार्यमें मंगलीक मा-
नागयाहै, सोनाचांदीके कलश अलबते! मौलमें ज्यादे है, लेकिन!
अच्छेकाममें पहिले मीटीका घडाही अच्छासमझागयाहै, दूसरा
यहभी कारण हैकि-इसअवसर्पणोकालमें रिषभदेवभगवान्के वरुत
पहिलपहिले कुंभकार शिल्पही जारीहुवाथा, इसलिये गृहस्थावा-
सके अवसरमें उसका सत्कारकरना पहिले बयानकियागया, इस-
तरह चाकबधायकर कुंभकारके घरसें चार मंगलीकघडे अपनेघर
लाना-और-उसकों अच्छेकमरेमें स्थापन करना चाहिये, इसरौ-
जसें समझो विवाहका आरंभहुवा, कुंभकारकेघरसें मंगलकलश
लाना जैसे वरकेघरसें होताहै कन्याकेघरसेंभी होनाचाहिये, दों-
नोंके घर गीतगान होना-पीठीवटनालगाकर स्नानमज्जनकरना-
और-शिगारपहेनना-ये-कार्य शुरुकरने चाहिये, जब विवाह
मूर्हुतके आडे सात-या-पांच रौज रहजाय वरके तथा
कन्याके दोंनोंके घर जवारारोपन करना चाहिये, पांचप्याले मी-
टीके लेकर उसमें जवधान्यकों वॉना और उनकों उसमंगलीक
घडेकेपास स्थापनकरना, इसतरह जवारारोपन कियेबाद वहांही
उसकेपास एकचौंकीपर सातकुलकरोंकी-और-एकचौंकीपर शा-
सनदेवीकी स्थापना करनाचाहिये,

(१६९)-सप्तकुलकरोंकी स्थापना इसतरहकरना, स्थापनकी-
 येहुवे चार मंगलकलश-और-जवारारोपनकेपास-सौनेचांदीका-
 या-काष्ठका-पट्ट-स्थापनकरे, स्थापनकरतेवख्त-[ओँ आधारायन-
 मः आधारशक्तयेनमः आसनायनमः] इसमंत्रको सातदफे पढे, फिर
 [ओँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतं वर्षिणी अमृतं वर्षय वर्षय स्वाहा,] इ-
 समंत्रको पढकर कुंकुमचंदन अक्षतसें पढका अभिषेककरे, (यानी)
 उसकी पूजाकरे, और उसपर इसतरह ॐॐॐ सातपुंज चावलों-
 का बनावे, फिर एकएकपुंजपर एकएककुलकरका मंत्रपढकर उ-
 सकी स्थापना श्रीफल और पुष्पमालसें करे, प्रथमकुलकरकी स्था-
 पनाका मंत्र इसतरहहै,-[मंत्रः]-ओँ नमः प्रथमकुलकराय-कांचन
 वर्णाय-श्यामवर्णचंद्रयशाप्रियतमासहिताय-हाकारमात्रख्यापित-
 न्यायपथाय-विमलवाहनाभिधानाय-इहविवाह महोत्सवादौ-आग-
 च्छ आगच्छ-इहस्थानेतिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भव भवसेमदो भव-उत्सव-
 दो भव-आनंददो भव-भोगदो भव-कीर्त्तिदो भव-अपत्यसंतानदो भव
 स्नेहदो भव-राज्यदो भव-अर्घ्य-पाद्यं-बलिं-अर्चा-आचमनीयं गृहाण
 गृहाण-सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण-ऐसामंत्र पढकर सातपुंजोंमेंसें
 उपरकेप्रथमपुंजपर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापनाकरे और उ-
 सपर एकरुमाल-रूपया-या-शक्तिहोतो-एकमहोर-चढावे-फिर धूप
 दीप-नैवेद्य-फल-फुल-और-इतर-चढाकर-उसस्थापनाकेपास-दो
 पानबीडी धरे, यह प्रथमकुलकरकी स्थापना और पूजाहूइ, [दु-
 सरेकुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरहहै.]-(मंत्रः)-ओँ नमः द्विती-
 यकुलकराय-श्यामवर्णाय-चंद्रकांताप्रियतमासहिताय-हाकारमात्र-
 ख्यापितन्यायपथाय-चक्षुष्मानाभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ

आगच्छ आगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्)-इसतरहमंत्रपढकर श्रीफल-और-पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपरलिखेमुजव करना, [तीसरेकुलकरकी] स्थापनाका मंत्र इसतरह है. [मंत्रः]-ओंनमःतृतीयकुलकराय-श्यामवर्णय-सुरूपामियतमासहिताय-हाकारमात्रख्यापितन्यायपथाय-यशस्मानभिधानाय इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्) इसतरह मंत्रपढकर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपरलिखे मुजवकरना, [चौथे कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरहहै.]-(मंत्रः)-ओंनमःचतुर्थकुलकराय-श्वेतवर्णाय-श्यामवर्णप्रियतमासहिताय-माकारमात्रख्यापितन्यायपथाय-अभिचंद्राभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितोभवभव-(शेषं पूर्ववत्) इसतरह मंत्रपढकर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपर लिखे मुजव करना. [पांचमें कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरहहै,]-(मंत्रः) ओंनमःपंचमकुलकराय-श्यामवर्णाय-चक्षुःकांताप्रियतमासहिताय धिकारमात्रख्यापितन्यायपथाय-प्रसेनजिदभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थानेतिष्ठतिष्ठ-सन्निहितोभवभव-(शेषंपूर्ववत्)-इसतरह मंत्रपढकर श्रीफल और पुष्पमालकी स्थापनाका पूजा उपर लिखे मुजव करना--[छठेकुलकरका-मंत्रइसतरहहै,]-(मंत्रः)--ओंनमःषष्ठमकुलकराय-स्वर्णवर्णाय-श्यामवर्णप्रियतमासहिताय-धिकारमात्रख्यापित न्यायपथाय-मरुदेवाभिधानाय-इहविवाहमहोत्सवादौ-आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितोभवभव-(शेषं पूर्ववत्)-इसतरहमंत्रपढकरश्रीफल और पुष्पमालकी स्थापना पूजा उपरलिखेमुजव करना, [सातमें

कुलकरकी स्थापनाका मंत्र इसतरहहै,]-(मंत्रः)-ॐ नमःसप्तमकु-
लकराय-कांचनवर्णाय-त्र्यामवर्णप्रियतमासहितायधिकारमात्रख्या-
पितन्यायपथाय-इहविवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने
तिष्ठतिष्ठ-सन्निहितो भवभव-(शेषं पूर्ववत्.)-इसतरहमंत्र पढकर श्री-
फल और पुष्पमालकी स्थापनापूजा उपरलिखेमुजब करना, सप्त-
कुलकारोंकी स्थापना कियेवाद् उनकेपास दूसरी चौकीपर शास-
नदेवीकी स्थापना करनाचाहिये, सोनेचांदी-या-काष्ठका-पट्ट स्था-
पनकरना-और उसका अभिषेककरनावगेरा जैसे-कुलकारोंकी
स्थापनाकेलिये लिखआये-वैसे-करके एकचौकी स्थापनकरना-
और-उसपर चावलोंका एककमल आठपांखडीका बनाना, [शा-
सनदेवीकी-स्थापनाका-मंत्र इसतरहहै.]-ॐ नमो भगवतीशासनदे-
वि!-चतुर्थगुणस्थानवर्तिनि-जैनेन्द्रधर्मालंकारसज्जितांगि-पुन्यमुखि!
अस्मिन्विवाहमहोत्सवादौ आगच्छआगच्छ-इहस्थाने तिष्ठतिष्ठ-स-
न्निहिताभवभव-धूपं-दीपं-नैवेद्यं-अलंकारं गृहाणगृहाण-सर्वसिद्धिं
कुरुकुरुस्वाहा. इसमंत्रको पढकर उसकमलपर श्रीफल-और-पुष्प-
माल स्थापनकरना-और-धूप-दीप-नैवेद्य-मुद्रावगेरा चढाना,-
फिर षोडशविद्यादेवीयोंके नामसें जिसतरह दिवारपर सोलह टीके
लगाना-और जिसतरह चित्रमय स्वस्तिक तथा मंगलकलश ब-
नाना उसकी स्थापना निचेमुजबबतलाइ जाती है,

[कौतुकागारकी स्थापनाका आकार.]



(षोडश-विद्यादेवीकी स्थापना,)



मंगलकलश-२,
जवाराकेप्याले-२,

सप्तकुलकरकी

स्थापना.

*

जवारेकाप्याले-२

शासनदेवीकी

स्थापना.

*

जवाराकेप्याले-२,
मंगलकलश-२,

चार मंगलकलश-सातकुलकर-शासनदेवी-जवारा रोपन-षोडशविद्यादेवी-चित्रमयस्वस्तिक-और-मंगलकलश-उपरलिखेमुजब देखलो, चारमंगलकलश-पांचजवाराकेप्याले-सप्तकुलकर-और-शासनदेवी-इनकीस्थापना भूमिपर करनाचाहिये, और षोडश-

विद्यादेवी-स्वस्तिक-और-चित्रमयकलश-इनकी-स्थापना दिवार-पर करना चाहिये, षोडशविद्यादेवीयोंके नाम-रोहिणी प्रज्ञप्ति-वज्रगुंखला-वज्रांकुशी-अप्रतिचक्रा-नरदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गंधारी-महाज्वाला-मानवी-वैरुट्या-अच्छुम्भा-मानसी-महामानसी इनमें-जो-काली-महाकालीनामकी देवी है उनको समक्तवतीही जानना, जिस कालीमहांकालीको भिथ्यात्वश्रद्धावाले मानते हैं, मांसमदिरा चढाते है उसको-यहां नही समझना, भूमिपर चारमंगलकलशकी स्थापनाकरना जो उपरलिखआये-वो-इसतरह समझनाकि-दोनोंवाजु दोदो कलश-एकपरएक उपरनीचे धरना-नीचेकाकलश कुच्छवडा और उपरका कुच्छछोटाहोनाचाहिये, याते खूबसूरती मालूम दे, उपरलेदोनोंकलशोपर एकएकश्रीफल और लालरुमाल-लच्छेसहित बांधदेनाचाहिये, उनकलशोंके बीचमें-जमीनपर जो दोहाथका फासला छोडाहै उसमें कुलकर-और-शासनदेवीकी स्थापनाकी चौकी-तथा जवारेके पांचप्याले उपरवतलायेभुजब्र स्थापनकरना. इसस्थानकानाम शास्त्रोंमें कौतुकागार-फरमायाहै, जहांजहां विवाहसंस्कारमें कौतुकागार नाम लियाजाय वहां यही स्थान जानलेना, इसकीस्थापना वरके तथा कन्याके दोनोंकेघर किइजाती है, और विवाहपूर्णहुवेबाद सातदिनतक रखीजाती है,

(१७०)-विवाहके प्रारंभमें जिसदिन मुनासिबसमझाजाय घरकेपास साफजगहपर एकमंडप बनानाचाहिये: स्थंभोंपर आरीसे दरवजोंपर-तोरण-धजापताका-मंडपके उपर- चांदनी-हांडीतखते वगेरा मकानकीसजावट अकसर विवाहकाममें जरूरकरना पडती

है, कन्याके घर मंडप ऐसा बनाना चाहिये कि-जिसमें-ठीक वीचमें-
 एक बेंदी और चौराबनानेकी जगह तयार रहे, कइलोग विवाह
 कार्यमें लाखोंरुपये लगा देते है और कइलोग इज्जतमें कलंकलगा-
 कर कंजुसाइका टीका लगवालेते है असलपूछो तो दोनोंबातें ठीक
 नहीं, घरवेंचकर संसारमें बाहवाह कराना, या-धनवान् होकर
 कंजूस बनना दोनोंकाम अच्छे नहीं, आदमी उसकानाम है-जो-अ-
 पनीशक्ति-और-इज्जतकों संभालकर चले, हां?-इतनाजरूर कहे-
 किगें-फजूलखर्च करनामुनासिब नहीं, लग्नदिवससे पहिले जब
 बरात चढे तब अच्छे गेहनेकपडे पहनकर वर अश्वारूढहोके चले,
 सबके अगाडी बाजा-उसकेबाद-बरातीलोग-और वरके-पिछाडी
 सोहागनस्त्रीये मंगलगीतगातीहुइ प्रयाणकरे, कइदेशोमें गवैपेलोग
 और वारांगना नृत्यगानकरती हुइ बरातमें शायचलती है, यह दे-
 शदेशकी रसम न्यारीन्यारी है, लेकिन! हां!-ज्ञानीलोग इसकों
 पसंद नहींकरते, बल्किन्! मना फरमाते है, असलमें यहबात ठी-
 कभी हैकि-इसका नतीजा अच्छानही. अकसरकरके नयीउमर-
 वाले युवान मोहितहोकर घरका धन जरूर उडादेते है, आतिस्वा-
 जो-(यानी)-वारूदखाना-छोडनाभी अच्छेलोगोंने पसंद नहींकि-
 या. इसमें दोतरहके नुकशानहै एकतो फजूलखर्च लगना-और-
 दूसरे जीवहिंसाका पाप शिरचढना-इसलिये मुनासिबहैकि-वारू-
 दखाना-न-छोडनाचाहिये, क्या!-राजा-या-रंक-कोइहां-विवा-
 हहोनेकी खुशी दोनोंकेलिये एकसी है, गरीबहोगा उसकोंभी ए-
 कदफेतो खुशीकी लहेरे असर करजायगी. जैसे लडकापैदाहोने-
 की खुशी राजाकों और गरीबकों एकसा होती है वैसेही विवाह-

कीखुशीभी एकसा समझनाचाहिये, इसमें दौलतमंद अपनी दौ-
लतका घमंड लावेकि-जैसी मुजेखुशीहुइहै वैसी गरीबकों नहुइ
होगी तो उसकाघमंडलाना फजुलहै. यह खुशीतो गरीबकों भी
वैसीही होती है,

(१७१)-इसतरह वरात चलतीहुइ अगाडीवढे. और कुल-
गुरु शांतिमंत्रपढताहुवा शाथचले,-[शांतिमंत्रः]-ओँ अँह-आदिमो
अँहत्-आदिमोनृपः-आदिमोदाता-आदिमोनियंता-आदिमोगुरुः-
आदिमः श्रेष्ठः-आदिमो भर्ता-आदिमोजयी-आदिमोनयी-आदिमः
शिल्पी-आदिमोविद्वान्-आदिमोजल्पाकः-आदिमःशास्ता-आदि-
मःसौम्यः-आदिमःकाम्पः-आदिमःशरण्यः-आदिमोबंध-आदिमः
स्तुत्यः-आदिमोज्ञेयः-आदिमोभोक्ता-आदिमः सोढा-आदिमएक
आदिमोनेकः-आदिमस्थूलः-आदिमः कर्मवान्-आदिमोऽकर्म-
आदिमोधर्मवित्-आदिमोऽनुष्टेयः-आदिमोऽनुष्टाता-आदिमःसह-
जः-आदिमोदशवान्-आदिमः सकलत्र-आदिमोविवोढा-आदिमो
ज्ञापकः-आदिमःकुशलः-आदिमोवैज्ञानिकः-आदिमःसेव्य-आदि
मोगम्यः-आदिमोविमृश्यः-आदिमोविमर्षा-सुरासुरनरोरगप्रणतः-
प्राप्तविमलकेवलः-दयालुः-परोपेक्षारहितः-परात्मा-परंज्योतिः-परं
ब्रह्म-परमैश्वर्यभाक्-जगदुत्तमः-सर्ववित्-सर्वजित्-सर्वप्रशस्यः-स-
र्वबंधः-सर्वपूज्यः-सर्वात्मा-असंसारः-अव्ययः-हृतशंस-यदूतः-
विश्वसारो निरंजनो निर्ममो निकलंका-निःपापः निःपुन्यः
निर्मनाः-निर्देही-निःशंसयो निराधारो निरवधि प्रमाणप्रमेयप्रमा-
ता-जीवजीवपुन्यपापश्रावसंवरबंधमोक्षप्रकाशकः-सएवभगवान्-शां
तिकरोतु-तुष्टिकरोतु-पुष्टिकरोतु-रुद्धिकरोतु-वृद्धिकरोतु-सुखं करोतु

सौख्यं करोतु-लक्ष्मीं करोतु-अँह आँ,-[इतिशांतिमंत्रः]-इसतरह चलतीहुइ बरात-जिनमंदिरमें और निर्ग्रथगुरुकेपास नमस्कारकरने-कों जाय, फिर अगाडी बढे जिसगांवजानाहो एकगांवसें दूसरे-गांव प्रस्थानकरतेहुवे जाय, जब उसगांवमें पहुंचे-कन्याकेसंबंधी लोग-बरातकी-पेशवाइकरें, बरातसहित-वर-जब तोरणछवने जा-य-उसवखत कन्याकेदरवजेपर-जो-आम्रपत्रका तोरण लगा होता है उसकों अपने दाहनेहाथसें स्पर्शकरे, राजालोग तलवारसें स्पर्शकरते है, उसवखत बाजेगाजेवालोंकों और याचकोंकों प्रीति-दान देनाचाहिये, अच्छेलोगोंका कायदाहैकि-अपनेकों खुशीहो उसवखत-दूसरोंकाभी खुश करना तोरणछत्रकर पीछा फिरे और जहां बरातका डेरा मुकरर कियागयाहो वहां जाय,

(१७१)-जब विवाहमुहूर्तमें घंटाभरका फासलारहे-वर-बरा-तीलोगोंकेशाथ-घोडेपरसवारहोकर-कन्याके मंडपद्वारपर जाय, व-हां सासु-एककोरा मीटीकाघडा और कुंकुमवगेरा तीलककरनेकी सामग्रीलेकर सामने आवे और-वरकों-तीलककरे, वर-उसमीटी-के घडेमें रुपया या-मोहर-वगेरा डाले, फिरवरके पांव-सासु-दू-धसें प्रक्षालनकरे,-और-मंथान-हल-मुशल-धूसर-तथा-चरखेकी त्राकसें वरकों-पौखे,-(यानी)-इनचीजोंकों लालकपडेमेंलेपेटकर अलगअलग तीनदफे वरके मस्तकतक फिरातीहुइउतारे, येचीजे वहोतछोटीछोटीवनीहुइ-इसीकामकेलिये तयाररहती है. ज्ञानीलोग इसपौखनेका मतलब इसतरह फरमाते हैकि-सासु-जो-तुमको मं-थान दिखलाता है इससें जानलो विवाहहुवेवाद तुम गृहस्थावासमें मथे जाओगे, हल दिखलानेका यहमतलबहैकि-तुम-जमीनकीतर-

खेडातेरहोगे, मुसल दिखलानेका मतलब तुम अनाजकीतरह खंडातेरहोगे, धूसर दिखलानेका मतलब तुम बैलकीतरह जोतेरहो- और चरखेकीत्राक दिखलानेका तात्पर्य तुम मायाजालसें लपेटे- रहोगें, सासु इसतरकीबसें तुमकों होशियार करती हैकि-अबभी-सौचलो-और-समझजाओ-विवाहमें कोइफायदा नही. वर-इसका अर्थ-ऐसे समझताहैकि-सासु-जो-हमकों येये चीजें दिखलाती है इससें हमारे येये फायदे होंगें, मंथानकोदिखलानेसें-जानाजाताहै हमारेघर दूधदर्हीं बहोतहोगा. हलदिखलानेसें जानाजाताहै हमारे खेंतीवाडी बहोतहोगी, मुसल दिखलानेसें जानाजाताहै. हमारेघर अनाजबहोत खंडातारहेगा, धूसरदिखलानेसें जानाजाताहै हमारे घर गाडी बैल बहोत चलतेरहेगें, और चरखेकीत्राकके दिखलानेसें कहसकते हैकि-हम-इसकी लडकीकेशाथ स्नेहतंतुसें बंधहुवेर-हेगें. इसलिये विवाहकाहोना अच्छा है ऐसा मानकर परवानगी देताहै, इतनेकामहुवेबाद-सासु-चूपहोकर बरकों भीतरआनेकी-अगाइ देती है, इसतरह अगाइहुवेबाद-वर-भींतरप्रवेशकरे, और जहां सप्तकुलकरवगेराकीस्थापना फिइहुइहो उसजगह कौतुका-गारमें जाय,-

(१७३)-वहां शींगारपहनकर कन्या पहिलेसें आनकर हा-जिररहे, कुलगुरु उसकों वरकीदाहनीतर्फ और कुलकरोंकी स्था-पनाके सामने बैठावे, फिर कुलगुरु-केशरचंदन-श्रीफल-और-सु-पारीवगेरासें-कुलकरोंकी और शासनदेवीकी पूजाकरावे, (यानी) सातश्रीफल-सातकुलकरोंकी स्थापनापर-और-एक-शासनदेवीकी स्थापनापर चढावे, केशरचंदनकुंकमके टीकेदिलावे, बाद लालसू-

त्रकी वरमाल बनाकर वरकन्याकों धारणकरावे, और फिर वरके दुपटेसें कन्याकी चुंदरीकी ग्रंथीबंधन करे, और पीसीहुइ शमीवृ-क्षकीत्वचा-तथा-पोपलवृक्षकीत्वचा-मिलाकर वरकन्याके दाहने हाथमें देकर दोनोंका हस्तमेलन करावे, और इसमंत्रकों पढे, [हस्तयोजनमंत्रः]-**ओअह-आत्मासि जीवोसि-समकालोसि-सम-कर्मासि-समाश्रयोसि-समदेहोसि-समक्रियोसि-समस्नेहोसि-समचेष्टितोसि-समाभिलाषोसि-समेच्छोसि-समप्रमोदोसि-समविषादोसि समावस्थोसि-समनिमित्तोसि-समवचोसि-समक्षुत्तृणोसि-समाग-मोसि-समविहारोसि-समविषयोसि-समशब्दोसि-समरूपोसि-सम-रसोसि-समगंधोसि-समस्पर्शोसि-समैद्रियोसि-समाश्रवोसि-समसं-वरोसि-समबंधोसि-समनिर्जरोसि-सममोक्षोसि-तदैकत्वं इदानीं अहँओ-**इतिहस्तयोजनमंत्रः,-फिर कन्याके संबंधीलोग मंडपमें वेंदीवनानेकीतयारी करे, वेंदी चारहाथलंबी होनाचाहिये, उसके चारों कोंनेपर हरेवांशकी चौरी बनावे, सात-या-नव-छोटेछोटे मोटीकेघडे एकएकतर्फ क्रमसें बडेपरछोटा इसतरहरखे,-और-त्रि-कोण हरेवांससें उनकों बंधन करे, इसतरह चौरी बनाकर चारों तर्फ आम्रपत्रकातोरण बांधे, वेदीके ठीकबीचमें त्रिकोणाकार अग्निकुंड बनावे, फिर कुलगुरु कौतुकागारसें मंडपमें आनकर उ-सवेंदीकी प्रतिष्ठाकरे, पुष्प-चावल-कुंकुम-हाथमेंलेकर वेदीकाप्र-तिष्ठाकामंत्र पढे,-[वेदीप्रतिष्ठा मंत्रः]-**आँनमःक्षेत्रदेवतायै शिवायै क्षौक्षीक्षूक्षौक्षः-इहविवाहमंडपे आगच्छआगच्छ इहवलिपरिभोगंगृ-न्हृगृन्ह-भोगंदेहि-सुखं देहि-यशोदेहि-संततिंदेहि-रुद्धिंदेहि-वृद्धि-देहि-सर्वसमोहितं देहिदेहिस्वाहा,** इसमंत्रकों पढकर चारोंकोंनेपर

चावल-पुष्प-वगेराचढावे, चौरीके कलशोंपर लालवस्त्र गजभरलं-
वाचौडा लेकरढकं और फूलकीमाला उनपर चढावे, फिर तोर-
णकी प्रतिष्ठा इसमंत्रसें करे, [तोरणकी प्रतिष्ठाका मंत्र इसतरहहै]
ओंह्रिँद्वारश्रिये सर्वपूजिते-सर्वमानिते-सर्वप्रधाने-इहतोरणस्था-स-
र्वसमीहितं देहिदेहिस्वाहा-इसतरहतोरणकी प्रतिष्ठाकरके त्रिको-
णाकार अग्निकुंडमें मंत्रपढकर अग्निस्थापन करे, [अग्निस्थापनमंत्रः]
ओंरंरंरंरंरंरंरंः-नमो अग्नये-नमो बृहन्नानवे-नमो अनंततेजसें-नमो-
अनंतवीर्याय-नमो अनंतगुणाय-नमो हिरण्यतेजसे-अत्रकुंडे-आगच्छ
आगच्छ-अवतरअवतर-तिष्ठतिष्ठ-स्वाहा, त्रिकोणाकार कुंडमें अ-
ग्निकों स्थापनकरके कौतुकागारमें वरकन्याकों मंडपकीवेंदीमें
लावे, वेंदीमें प्रवेशकरतेवरुत दखनकेदरवजेसें प्रवेशकरना चाहिये,

(१७४)-वेंदीकामें पहुचेबाद वरकन्याकों चौकीपर पूर्वकीत-
र्फमुखकराके बैठावे, कुलगुरु उत्तरदिशातर्फमुखकरके पास बैठे,
कइदेशोंमें ऐसारवाजहैकि-वरकन्याका-हस्तमेलन-इसवरुत-वेंदी-
कामें आयेबाद कराते है, लोकिन!-आवश्यकसूत्रकी टीकामें जहां
रिषभदेवजीकेविवाहका वर्ननचलाहै वहां हस्तमेलन कौतुकागार-
मेंही करनेका लेखहै, इसलिये वहांही करना मुनासिबहै, चौरीमें
बैठेबाद कुलगुरु त्रिकोणाकारकुंडमें-जो-पहिले अग्नि स्थापनकि-
इहै उसकों पींपल-या-कपिथ्ववृक्षके काष्ठोंसें प्रज्वलितकरे, और
उसमें घृत-मिश्री-जव-तील-इंद्रजव-नागरमोथा-छाडछडीला-लॉंग
एलाची-रूपूरकाचली-और-चंदनकावुरा वगेरा हवनकीसामग्रीसें
होम करे, फिर वरकीदाहनीतर्फ वेठीहुइ कन्याकों उठाकर वरके-
सामनेविठावे, और यह मंत्र पढे, [मंत्रः]-ओं अहं-इदमासनम-

ध्यासीनौ-स्वध्यासीनौ-स्थितौ-सुस्थितौ-तदस्तु-वां-सनातनःसं-
 गमः अर्हँ औं, -इसतरह मंत्र पढकर दुर्वासं पवित्रजलद्वारा वरक-
 न्याकों अभिषेक करे, फिर कन्याका दादा-पिता-बडाभाइ-या-
 कोइ वृद्धपुरुष-हो-वरकन्याकेपास बैठे, उसवरुत-कुलगुरु-नमोर्ह-
 त्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः-ऐसापढकर कहेकि-आपके गौ-
 त्रोंकासंबंध मैने जाना-लेकिन ! इससमय सबकेरुवरुभी प्रकाशित
 होनाचाहिये, ऐसासुनकर वरकेसंबंधीलोग अपना गौत्र-जाति-वंश-
 प्रकाशकरे, फिर कन्याकेसंबंधीलोगभी इसीतरह गौत्रजातिवंशादि
 प्रकाशकरे, तदनंतर कुलगुरुइसतरह गौत्रकां उच्चारणकरे, ओं अर्हँ
 अमुकगोत्रीयइयत्प्रवरःअमुकज्ञातिः-अमुकान्वयः-अमुकप्रपौत्रः-अमु-
 कपौत्रःअमुकपुत्रःअमुकगोत्रीयःइयत्प्रवरःअमुकज्ञातीयःअमुका-
 न्वयःअमुकप्रदौहित्रःअमुकगोत्रीयःइयत्प्रवरःअमुकज्ञातीयःअमु-
 कान्वयःअमुकप्रपौत्री-अमुकपौत्री-अमुकपुत्री-अमुकगोत्रीयःइयत्प्र-
 वरः-अमुकज्ञातीयःअमुकान्वयःअमुकप्रदोहित्रीअमुकमात्रीयः-इय-
 त्प्रवरःअमुकज्ञातीयःअमुकान्वयःअमुकप्रदौहित्रीअमुकावधू-तद्गु-
 वयोर्निविडो विवाहसंबंधोस्तु-शांतिरस्तु-तुष्टिरस्तु-पुष्टिरस्तु-धनसंता-
 नवृद्धिरस्तु-अर्हँ औं, फिर वरकन्याकेहाथसें गंधपुष्प-धूप-नैवेद्यव-
 गेरासें अग्निकी पूजाकराके चावलकीधाणी अग्निमें प्रक्षेपकरावे,
 और अपनीदाहनीतर्फ वरकों-और-बामीतर्फ कन्याकों बैठाकर
 इसमंत्रकों पढे, [मंत्रः]-ओं अर्हँ-अनादिविश्वं-अनादिरात्मा-
 अनादिकालः-अनादिकर्म-अनादिसंबंधो देहिनां-वेदानुमतानुग-
 तानां-क्रोधाहंकारलज्जलोभैः संज्वलग्नप्रत्याख्यानाप्रत्याख्याना
 नंतानुबंधिभिः शब्दरूपरसगंधस्पर्शेच्छापरिसंकलितैः संबंधो

नुबंधःप्रतिबंधःसंयोगःसुगमः सुकृतःस्वनुष्ठितः सुप्राप्तःसुलब्धो द्रव्य-
भावविशेषेण अर्हँ औँ,

(१७५)—फिर कुलगुरु ऐसावाक्य उच्चारणकरे—तदस्तु-वां-
सिद्धप्रत्यक्षं—केवलिप्रत्यक्षं—चतुर्निकायदेवप्रत्यक्षं—विवाहप्रधानाग्निप्र-
त्यक्षं—नामप्रत्यक्षं—नरनारीप्रत्यक्षं—जनप्रत्यक्षं—गुरुप्रत्यक्षं—मातृप्रत्यक्षं
पितृप्रत्यक्षं—मातृपक्षप्रत्यक्षं—पितृपक्षप्रत्यक्षं संबंधःसुकृतःसदनुष्ठितः
सुप्राप्तःसुबंधःसुसंगतः—तुमारा विवाहसंबंध सिद्धप्रत्यक्ष केवलीप्र-
त्यक्ष मातापिता सर्व जनप्रत्यक्ष उत्तमप्रकार हुवा, अग्निकीचौत-
र्फ प्रदक्षिणा दिजिये, फिर वरकन्या ग्रंथीबंधनसहित अग्निकी
चौतर्फ प्रथम फेंराफिरे जिसमें कन्या आगे और वर पीछें रहे,
पहिलाफेरा फिरकर पूर्वोक्तआसनपर बैठे, चावल-या-चावलोंकी
धाणी हाथमें रखे, तदनंतर कुलगुरु इसमंत्रकों पढे,—[मंत्रः]—औँ
अर्हँ—कर्मास्ति मोहनीयमस्ति दीर्घस्थित्यस्ति निविडमस्ति—दुच्छेद्यम
स्ति अष्टाविंशतिप्रकृत्यस्ति क्रोधोस्ति मानोस्ति मायास्ति लोभोस्ति
संज्वलनोस्ति—प्रत्याख्यानावरणोस्ति अप्रत्याख्यानावरणोस्तिअनं-
तानुबंध्यस्ति—चतुश्चतुर्विंधोस्ति—हास्यमस्तिरतिरस्ति—अरतिरस्तिभ-
यमस्ति जुगुप्सास्ति शोकोस्ति पुंवेदोस्ति—स्त्रीवेदोस्ति नपुंसकवेदो-
स्ति—मिथ्यात्वमस्ति—मिश्रमस्ति—सम्यक्तमस्ति—सप्तकोटाकोटीसागर
स्थित्पस्ति—अर्हँ औँ, तदस्तु-वां—निकाचितनिविड वद्धमोहनीयक-
र्मोदयकृतः स्नेहसुकृतोस्तु सुनिष्ठितस्ति—सुसंबधोस्तु—आभवमक्षयो-
स्तु—अग्निकीचौतर्फ प्रदक्षिणा दिजिये, फिर वरकन्या ग्रंथीबंधन
सहित दूसरा फेरा फिरे, धाणीकीमुष्टि अग्निमें प्रक्षेपकरे, इसमेंभी
कन्या अगाडीरहे, फिर उसीतरह चावलोंकीधाणी मुष्टिमें लेकर

पूर्वोक्त आसनपर बैठे, और कुलगुरु इसमंत्रकों पढे,—[मंत्रः]—औं अर्ह—कर्मास्ति वेदनीयमस्ति सातमस्ति असातमस्ति सुपुंवेद्यंसातं दु-
 पुंवेद्यं असातं—सुवर्गणाश्रवणंसातं—दुर्वगणाश्रवणं असातं—शुभपुद्गल-
 दर्शनंसातं—दुःपुद्गलदर्शनं असातं—शुभपुद्गलास्वादनंसातं—अशुभपुद्ग-
 लास्वादनं—असातं—शुभपुद्गलस्पर्शनंसातं—अशुभपुद्गलस्पर्शनं—असातं
 सर्वसुखं कृतं सातं—सर्वदुःखं कृतं असातं—अर्हँ औं, तदस्तु—वां—सातावे
 दनीयं—माभूदसातावेदनीयं—तत्प्रदक्षिणी क्रियतां विभावसुः—फिर
 वरकन्या उसीतर तीसरा फेरा फिरे, धाणीकी मुष्टि अग्निमें प्रक्षे-
 पकरे, इसमेंभी कन्या अगाडी रहे, और उसीतरह पूर्वोक्त आसन
 पर बैठे, फिर कुलगुरु इसमंत्रकों पढे, [मंत्रः]—औं अर्हँ सहजोस्ति
 स्वभावोस्ति संबन्धोस्ति—प्रतिबन्धोस्ति—मोहनीयमस्ति वेदनीयमस्ति
 नामास्ति गोत्रमस्ति आयुरस्ति हेतुरस्ति आश्रवबद्धं अस्ति—क्रिया-
 बद्धमस्ति कायबद्धमस्ति—तदस्ति संसारिकसंबन्धः अर्हँ औं,—इसमंत्रके
 पूरेहोनेपर कुलगुरु—कन्याके—पिता—चाचा—बडाभाइ—या—जोकोइ—
 कुलमेंबडाहो उसकेहाथमें तील—जव—कुश—और—जलदेकर ऐसेकहे,
 अद्य अमुकसंवत्सरे—अमुकायने—अमुकऋतौ—अमुकमासे—अमुकपक्षे—
 अमुकतिथौ—अमुकवासरे—अमुकनक्षत्रे—अमुकयोगे—अमुककरणे—अ-
 मुकमुहूर्ते—पूर्वकर्मसंबंधानुबद्धवस्त्र गंधमाल्यालंकृतां—सुवर्णरूपमणि
 भूषणभूषितां—कन्यां—ददात्पयं—प्रतिगृन्हीथ—ऐसाकहकर वरवधूके
 हाथपर जल निक्षेप करावे, उसवरुत—वर—कहे—प्रतिगृन्हामि—कुल-
 गुरु—कहे—सुप्रतिगृन्हितास्तु—शांतिरस्तु—तुष्टिरस्तु—पुष्टिरस्तु—ऋद्धिरस्तु
 वृद्धिरस्तु—धनसंतानवृद्धिरस्तु—इतनाकहकर—वरकों—अगाडी और क-
 न्याकों पिछाडीकरके कहे—अग्निकीचौतर्फ प्रदक्षिणा किजिये, प-

हिलेके तीनफेंरेमें वरकाहाथ कन्याकेहाथसें नीचे रखागयाथा-इ-सचौथे फेंरेमें-वरकाहाथ-उपर-और-कन्याकाहाथ-उसकेनीचे र-खनाचाहिये, फिर वरकन्या अग्निकीचौतर्फ चौथाफेंरा फिरे,धा-णीकीमुष्टि अग्निमें प्रक्षेपकरे, चौथे फेंरेके अंतमें कन्याकों वरके वामीतर्फ पूर्वोक्त आसनपर बैठावे, इसवरुत-कन्याका-पिता-या-उसकेकुटुंबका-औरकोइवृद्धपुरुषहो-वस्त्र-आभूषण-हाथी धोडा-रथ पालखी-दासदासी-जोकुच्छदेनाहो-शक्तिमुआफिक देवे, औरभी कुटुंबीलोग जोकुच्छ देनाहो-इसवरुत-देसकते है, फिर कुलगुरु-दुर्वा-अक्षत-वगेरा सुगंधिबस्तु हाथमेलेकर-येनानुष्ठानेन-आद्योअ-र्हन्-शक्रादिदेवकोटि परिवृतोभोगाय-संसारीजीवव्यवहारमार्गसंद-र्शनाय-सुनंदासुमंगले-पर्यणैषीत्-ज्ञातमज्ञातं-वा-तदनुष्ठानानुष्ठितम-स्तु,-ऐसा कहे और वरकन्याके मस्तकपर प्रक्षेपकरे, फिर कन्या-कापिता-जव-तील-कुश-और-जलकों हाथमेलेकर वरकेहाथमें दे-वे. और ऐसेकहेकि [दायंददामि] अर्थात् दायचादेताहूं-वर-कहे [प्रातिगृन्हामि]-अर्थात् लेताहूं, इसवरुत कुलगुरु कहे [सुगृहित-मस्तु-सुपरिगृहितमस्तु] इसवरुत जमीनजहागीर भांडेबर्तन जोकु-च्छ देना हो फिर देवे, इसतरह दायचादियेबाद कुलगुरु ऐसेकहे वधूवरौ-वां-पूर्वकर्मानुबंधन निविडेन-निकाचितवद्धेन-अनुपवर्त्त-नोयेन-अनुपायेन-अश्लेषेन-अवश्यभोग्येन विवाहःप्रातिबद्धो बभूव तदस्तु-अखंडितो अक्षयो अव्ययो निराबाधःसुखदोस्तु-शांतिरस्तुपु-ष्टिरस्तु ऋद्धिरस्तु वृद्धिरस्तु धनसंतान वद्धिरस्तु, ऐसे वचनबोल-कर तीर्थजलसें कुशाग्रद्वारा वरकन्याकों अभिषेककरे, इतनेकार्य हुवेबाद चौरीमेसें उठाकर कौतुकागारमें जहां कुलकरोकीस्थाप-नाहै वहां लेजाकर बैठावे,

(१७६)—वहां कुलकरोकी स्थापनाके रुवरु कुलगुरु ऐसे कहे अनुष्ठितो—वां—विवाहः—समस्नेहौ—समभोगौ—समायुषौ—समधर्माणौ—समसुखदुःखौ—समशत्रुमित्रौ—समगुणदोषौ—समवाङ्मनःकायौ—समाचारौ समगुणौ भवेतां—इसप्रकारकहकर—करमोचनकरनेका मंत्रपढे, [करमोचनमंत्रः]—ओं अँह—जीवस्त्वं कर्मणावद्धः—ज्ञानावरणेनवद्धः दर्शनावरणेनवद्धः—वेदनीयेनवद्धः—मोहनीयेनवद्धः आयुषावद्धः—जात्यावद्धः—गोत्रेणवद्धः—अंतरायेणवद्धः—प्रकृत्यावद्धः—स्थित्यावद्धः—रसेनवद्धः—प्रदेशेनवद्धः—तदस्तु—ते—मोक्षोगुणस्थानक्रमारोहक्रमेण—अँहँ औं, मुक्तयोःकरयोस्तु—वां—स्नेहसंबंधो अखंडितः—एसाकहकर वरवधूका हस्तमोचन करावे, इसवरुत—कन्याकापिता—जमाइकों—जोकुच्छदे—नाहो देवे, फिर कुलगुरु इसकाव्यकों पढे—[काव्यं] पूर्वयुगादिभगवान् विधिनैव येन—विश्वस्य कार्यकृतये किल पर्यणैषीत्—भार्याद्वयं तदमुनाविधिनास्तु युगं—एतत्सकामपरिभोगफलानुबंधि—१,—इसतरहमंगलवाक्य उच्चारणकरके ग्रंथीमोचन करावे, [अचलसौभाग्यं अस्तु भवतां] ऐसा आशीर्वचन बोले, फिर कौतुकागारसँ चलकर वरवधू वहार आवे और—वरातीलोगोंकेसहित जिसआडंबरसँ आयेथे वाजेगाजेकेशाथ अपने डेरे पर जाय, दोचाररौजकेवाद जब वरातकी विदागीरीहो—वहांसँ—चलकर अपनेशहरे आवे, और वाजेगाजेकेशाथ अपनेघरमें प्रवेश करे, याचकलोंगोंकों दानदेवे, जिनजिन नोकरचाकरोंकी जितनीजितनीतनखाह ठहराइहो तुर्त देवे, वरात घरआये वाद सातरौजपीछे—कुलकरकी स्थापनाकों—विसर्जनकरे, विसर्जनकरतेसमय प्रत्येककुलकरकी पूजाकरना और प्रत्येककुलकरका मंत्र जो (१६९)मी कलममें लिखआये है देख-

कर पढना-मंत्रपुराहोनेपर-[पुनरागमनाय स्वाहा]-इतनापद बोलकर प्रत्येककुलकरकी स्थापनाकों विसर्जन करना, इसीतरह शासनदेवीकीभी पूजाकरके-मंत्र-जो-उसी (१६९) मो-कलममें-लिखआयेहै देखकर पढना, मंत्रपुराहोनेपर [पुनरागमनाय स्वाहा] कहकर शासनदेवीकी स्थापनाकों विसर्जन करना,

(१७७)-विवाहकी रसम कइदेशोंमें न्यारीन्यारीहै लेकिन! उपरलिखीहुइ विधि सबकों मान्यरखनेयोग्यहै, विवाहकाकाम पुराहोजाय तब धर्मके उत्तेजनमेंभी ध्यानदेनाचाहिये, विवाहमें तरहतरहके खानपानकिये, तरहतरहके आनंद भोगे,-और तरहतरहके गायन सुने, तो अबधर्ममेंभी ध्यान देना चाहिये,-स्वधर्मावात्सल्यकरके धर्मज्ञजनोकों जीमानाचाहिये,-जिनमंदिरमें तरहतरहके नैवेद्यधरके रागरागणीसैं पूजन करानाचाहिये, तीर्थयात्रामें और साधुसाध्वीयोंकी सेवामें द्रव्यव्ययकर धर्मकीबढवारी करनाचाहिये, संसारीककाममें हजारांह रुपये लगाये तो आधाचोथाइ दशांशषोडशांश धर्मकाममेंभी लगाना मुनासिबहै, अपशोषहैकि-आजकलकेजमानेमें धर्मतर्फ लोगोंकी निगाह घठतीजाती है, धर्मकी बातें बतलानेवालोंकों-लोग-हंसोमें उडाते है,-लेकिन! यादरहे! सुख और आनंदजितना तुम पायेहो धर्मरूपी कल्पवृक्षका; फलहै, सुंदरस्त्री-अच्छेमकान-अच्छासवारी-और-अच्छाखानपान सब धर्मकी बढौलतमिलाहै, पूरवजन्ममें तुमने धर्म कियाथा उसीका यह नतीजाहै,

(१७८)-विवाहहुवेबाद स्त्रीपुरुषमें स्नेहवृद्धि जरूरहोती है, लेकिन! ऐसा स्नेह किसकामका जो अपनीइज्जतमें कलंक लगे,

स्त्रीकों मुनासिबहै पतिके हुकममें चलना, जो पुरुष अपनीस्त्रीकों अपनेहुकममें नहींचलाते उनकों पुरुष नहीं बल्किन् ! स्त्री-कहना चाहिये, ज्यूंज्यूं स्त्रीकों शिरचढाओगें बहोतपस्ताना पडेगा, जिनकेघर दोस्त्री है उनकों महाविडंबना रहेती है, आजकल वैसे पुन्यवान् नहीं रहे जिनकेघर बत्तीसबत्तीसस्त्रीयें होतेहुवेभी टंटेझगडेका कुच्छकामनही था, दोस्त्रीकी चाहना छोडकर एकहीमें संतोषकरो तो अच्छाहै, राजाओंकी देखादेखी तुम राजे मतबनो, अपनीपुन्यवानी तर्फ खयालकरो, ज्यूंज्यूं स्त्रीकों बहोतमनाते जाओगे-तुमारे शिरचढतीजायगी, स्त्री-पुत्र-नोकर-और-चेला-पहिले दिनसेही अंकुशमें रखोगे तो अच्छाहै, अगर तुम समझतेहोगें पीछेसे अंकुशमें करलेगें तो यहसमझना फिजुलहै, इसपर अनुयोगद्वारसूत्रकी टीकामें जो एककथा लिखी है यहांपर सुनादेते है, सुनकर अमलकरना, एकस्त्रीकों तीनलडकीयें कवारी मौजूद थी, जब उसमेंसे एकलडकीका-विवाहहुवा माताने उसकों सिखलायाकि-बेटी ! जब तूं अपनेपतिके पास जाय उसकीपीठपर पांवसे एकलात मारदेना, और वह जोकुच्छ तुजेकहेसुने सबेरे आनकर मुजे कहना, लडकीने विवाह हुवेवाद पहिलेरौज उसीमुताबिककिया, (यानी)-लात मारदी, पति-कुच्छनहीबोला, उल्टाकहनेलगा तेरेपांवमें लगीतो नहीं? बस ! इसीतरह वातेकरते हुवे-रात पूरीहुइ जब लडकी अपनीमाताकेपास गई, माताने सबवात सुनी, औरकहा बेटी ! तेरे पतिमें कुच्छदम नहीं है, तेरे आधीनमें रहेगा, जो तूं नाच नचावेगी नचेगा, खुश रहना, दूसरी बेटीका विवाह हुवा तब उसकोंभी सिखलायाकि-तूंभी जब तेरेपतिके पासजाय

उसकीपीठपर एकलात मारदेना, उसनेभी पतिकेपासजाकर उसकीपीठपर एकलात मारदीइ, पतिने गुस्साखाकर कहा-नालाइक ! तूं किस चांडालकी लडकीहै?—क्या ! पतिसैं पहिल पहिले मिलतेवखत ऐसे करना चाहिये?—खेर ! आजका गुनाह माफकर-ताहूं, लडकीने सबेरे जाकर अपनी माताको सबबातकही, माताने कहा बेटी ! तेरापति कुच्छ हिम्मतवहादूर और कुच्छनार्मद है, इसलिये कुच्छ डरतीभी रहना और कुच्छ हुकमभी चलाना, फिर तीसरी लडकीका विवाह हुवा और उसकोभी सिखलादियाकि-पतिकी पीठपर लातमारदेना, उसने उसीमुआफिक पतिकेपासजाकर उसकीपीठपर लात मारदीइ, पतिने उसीवखत स्त्री के मुंहपर दोतमाचे ऐसे धरेकि-मुंहमेसैं लोही निकल आया, लालआंखकरके कहनेलगा नालाइक तूं किसचांडालकी लडकीहै ? इसीवखत मेरेघरसैं चली जा, ऐसाकहकर गलापकडकर बहार धकेलदिइ, सारीरात-बो-रोतीरही, लेकिन ! पतिने मुंहसैंभी नही बुलाइ, सबेरहोनेपर उठकर अपनी माताकेपास गइ और कहने लगी तेने अच्छीसिखा दिइ, आज मेरातो मरनाहोजाता, माताने कहा क्या हुवा?—बेटीने सबबात बयानकिइ, माताने कहा-बेटी ! मेंतो-तेरे अच्छेकेलिये यहबात सिखलाइथी, याद रख !—तेरापति बडा बहादूरआदमी है, उससैं सदा डरती रहना, कभी सामने नहीबोलना, जोकुच्छ-बो-कहे उसमुजबकरना इसीमें तेरा अच्छा है, महाशय ! इसकथाका मतलब समझसको तो समझलो, और तुमको जिसमें दाखिलहोनाहो उसपंक्तिमें बैठजाओ, स्त्रीको अपनेहुकमसैं बखिलाफ चलनेदेना अच्छानही, मुनासिवहै हुकममें

रखना, जो लोग कायरहै उनको यहकथा कभी-न-सोहायगी, और जो बहादूरशरूनाहै उसको आपहीआप रुच जायगी.

(१७९)-पनराहमा-व्रतारोपसंस्कार-जिसपुरुष-या-स्त्रीको व्रतलेनाहो-स्नानमज्जन करके अच्छेकपडे पहनकर निर्ग्रथगुरुकेपास जाय-और-नमस्कारकरके प्रार्थना करेकि-महाराज! मुजको-व्रतलेनाहै, तब गुरु उसकीयोग्यतादेखकर यदि वह दीक्षाकेयोग्य और अभिलाषीहो-दीक्षा-देवे, और जो दीक्षालेनेकी ताकत-न देखे-तो-उसको गृहस्थधर्मके बारहव्रतमेंसें जितनेव्रतकी इच्छाहो अंगीकारकरावे, और समझावेकि-इसवख्त-तुम्हारीयोग्यता इतनीही है, कितनेकसाधु जोराजोरी व्रत प्रत्याख्यान दिलवाते है यहवात ठीकनही, कितनेकसाधु-गच्छकेपक्षपातसें-दूसरेगच्छके श्रावकको अपनेगच्छमें खेंचते है यहभी मुनासिवनही, कोइगच्छका साधु-या-श्रावकहो-जो-सर्वज्ञप्रणीतवचनानुसार धर्मपालनकरेगा उसका निर्वाण होगा, हां! जो सर्वज्ञप्रणीतशास्त्रके पाठको उथ्यापन करेगा उसका निर्वाणहोना मुश्किलहै, दुनियामें जितनेमतमांतरवाले है सब अपने आपको सत्यवादी बतलाते है लेकिन! सत्यवादी वही है जो सर्वज्ञप्रणीतशास्त्रसें बखिलाफ-न-हो, सर्वज्ञ-उसको समझना जिसकेवचनमें पूर्वापरविरोध-न हो, मिथ्या-भाषण न-करताहो सत्यसत्यवातका बयानकरनेवालाहो-आजकल-सर्वज्ञपुरुष नही रहे, उनके कथन कियेहुवे शास्त्र-जो-मौजूद है उन्हीके फरमाने मुजब चलना चाहिये, सर्वज्ञोंको इसकालमें प्रत्यक्ष कोइ नहींवतासकता सबबकि-वें-रहे नही, हां! अनुमान प्रमाणसें सबूतकरसकते हैकि सर्वज्ञ-जरुरहुवे,क्योंकि-

दुनियामें-जितनेपदार्थ है-वें-प्रमेयरूपहै-जोजो प्रमेयरूप है-वे-
किसीकोजरुर-प्रत्यक्षहोनेचाहिये, इसलिये जानाजाताहैकि-प्र-
मेयवस्तुका-जाननेवाला सर्वज्ञपुरुष जरुर हुवा.

(१८०)-दीक्षामुहूर्त्त-जिसरौज-अश्विनी-रोहिणी-मृगशिरा-
पुनर्वसु-पुष्य-पूर्वाफाल्गुनी-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाति-
अनुराधा-ज्येष्ठा-मूल-पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-शत-
भिषा-पूर्वाभाद्रपद-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये-नक्षत्रहो-रवि-बुध
गुरु-शनिवारहो-रिक्तातिथिकों छोडकर और कोइ तिथि-व्यति-
पात वैधृति भद्रावगेराकुयोगसँ रहित हो-उसरौज दीक्षादेनेका मु-
हूर्त्त शोधनकरनाचाहिये,-गणिविज्जापयन्नेमें जो-संध्यागत-रवि-
गत-विटेर कुराक्रांत-विलंबी-राहुगत-और-ग्रहभिन्न-ये सातदोष
जो नक्षत्रके बयानकिये है-उनकों-तथा-वेध-लत्ता-पात-और-ए-
कार्गलवगेरादोषोंकों बचाकर शुद्धनक्षत्रकों लेनाचाहिये, हां!कोइ
अच्छायोग मिलजायतो नक्षत्रचाहे जो हो-हर्जनही जानना. धन-
मीनके सूर्यमें वृहस्पतिके अस्तमें-अधिकमासमें जो पहिलाहै उस-
में-तथा-चौमासेकेकालमें दीक्षादेना मनाहै, मिथुन-वृश्चिक-धन-
और-कुंभलग्न दीक्षाकेलिये अच्छे है, वृषभ-और-तुलालग्न अ-
च्छेनही. वृषतुलाका न्वांशकभी दीक्षाकेलिये निषेधहै, और लग्न
दीक्षाकेकाममें साधारणहै, लेकिन! लग्नशुद्धिमें बलवान् निकले
तो लेना मनाभी नही, लग्नकी उदय और अस्तशुद्धि देखना
चाहिये, दोनों एकसरखी-न-मीलेतो-उदयशुद्धि तो जरुर देखना
चाहिये, दीक्षालग्नमें सूर्य-दूसरे-पांचमें-छठे-या-ग्यारहमेंभुवनमें
बैठाहोतो अच्छा, चंद्रमा-दूसरे-तीसरे-छठे-वारहमें होतो अच्छा,

मंगल-तीसरे-छठे-दसमें-ग्यारहमें होतो ठीक, बुधभी-तीसरे-छठे-दसमें-ग्यारहमें होना अच्छा है, बृहस्पति-केंद्र-या-त्रिकोणमें होना उत्तम, शुक्र-तीसरे-छठे-नवमें-वारहमें होना अच्छा, शनि-दूसरे पांचमें-आठमें-ग्यारहमें होना ठीक, सूर्य-तीसरे-भुवनमें बैठना अच्छानहीं. चंद्रमा-दसमें ठीकनहीं, बुध-या-बृहस्पति-आठमें-वारमें अच्छे नहीं, शुक्र-केंद्रमें-या-आठमें-ठीकनहीं, शनि-तीसरे-छठे-अच्छानहीं, मंगल-शुक्र-और-शनिसं-सातमें चंद्रमा ठीकनहीं, चंद्रमासं सातमें-राहु-केतुभी अच्छेनहीं, सूर्यके साथ चंद्रमा बैठजाय तो राज्यकी तर्फसें भय पैदा हो, मंगलके साथ चंद्र बैठे तो कलेशकारी जानना, बुधके साथ चंद्र बैठे तो-तकलीफकी निशानी है, बृहस्पतिके साथ चंद्र बैठे तो बड़ी तकलीफ होगी, शुक्रके साथ चंद्र बैठे तो मान भंग होना पड़े, शनिके साथ चंद्र बैठे तो-विपत्ति पैदाकरे, चंद्र बुध गुरु-या-शनिका-लग्न-और-इन्हीका नवांशक दीक्षाके वरत होना अच्छा है, होराद्रेष्काणवगेरा षड्वर्गभी इन्हीका होना ठीक होता है,

(१०१.)-दीक्षा किसी अच्छे स्थानमें जाकर देना चाहिये, बाग बगीचेमें-या-किसी दूसरे रमणीक स्थानमें तीन चौकी एकपर एक रखकर उसपर सिंहासन धरके जिन प्रतिमा स्थापन करना, और दीक्षा लेनेवाले शिष्यकों वहां ले जाना. वहां पहुंचनेपर नमस्कार कराके जिन प्रतिमाके सामने चार पांच हाथके फासलेपर उसको खड़ा रखकर पांच सात फुल उसके हाथमें देना-और-जिनप्रतिमाके सिंहासनपर क्षेपन कराना, अर्थात् सिंहासनपर फुल उछालना, अगर एकभी फुल सिंहासनम न पड़ेतो

जानना इस श्रृंखलसे दीक्षा न पल सकेगी, फिर दूसरी दफे प्रक्षेप कराके देखना, और फिर तीसरी दफेभी इसीतरह देखना, अगर एक दफेभी सिंहासनपर फूल जागिरे तो जानना अच्छा है, तीनोंही दफे फूल खाली जाय तो मुनासिब है अयोग्य समझकर उसको दीक्षा न देना, अगर सवाल किया जायकि-इतना महोच्छव-करकेभी क्या वृथा जानेदेना चाहिये? (जवाब.) हां!-बेशक!-वृथा जानेदेना, कोई हर्जकी बात नहीं. जिस काममें अगाडी जाकर बुरा नतीजा पाना है उसको पहिलेहीसे क्यों करना!-यह अधिकार पंचाशक सूत्रकी टीकाके अधिकारसे लिखा गया है, जिनको शंसय हो देखलेना. अगर कोई सवाल करेकि-साधु होकर श्रावकके पास सचित फूल कैसे उछलवावे?-(जवाब.) शास्त्रोंमें कइ जगह ऐसा बयान है कि-शिष्यकी परीक्षा के लिये-गुरु बहार भूमिका जाते हुवे रास्तेमें जान बुझकर आप वनास्पतिपर कदम देते हुवे चले. अगर चेला गुरुके पीछे पीछे वनास्पतिही उपर चला आवे और विनयके साथ कहेभी नहीं कि-आप रास्तेकी मौजूदगीमेंभी वनास्पतिपर किस कारणसे चलते है?-तो-जानना चाहिये कि-चलेके दिलमें रहेम नहीं है, अगर सवाल किया कि-इसमें गुरुको दोष लगाया नहीं?-(जवाब.) हरगिज नहीं लगा, सबवकि-इरादा उनका शिष्यकी परीक्षा करनेका था, इसीतरह यहांभी शिष्यकी पुनपवानीकी परीक्षा करनेके लिये फूल उछलवाना कोई हर्जकी बात नहीं. कोई श्रृंखल बहेंमलावेतो उसकीभूल है, पहिलेसेही किसीकार्यकी परीक्षाकरना औरज्ञानियोंके-कहनेपर बहेंमलानायही मूर्खोंकाकाम है. यहांतक

परीक्षाकरना लिखा है कि-दीक्षादेतेवख्त-प्रतिमाकी चारोंतर्फजो-चारदीपक धरेजातेहै उनमेंजीतनेदीपकोंकी शिखामंदहोजाय-या-बुझ जाय उतनेही अंश उसकीदीक्षाकी कमजोरीजानना, अगर दीपशिखा-ज्यूंज्यूंतेज होतीजायत्यूंत्यूं उसकीदीक्षाकी तेजीहोगी ऐसाजानना. ज्योतिषके कायदेमुजव अगरलग्न कमजोरमीले तो उसकोंछोडकर सामान्यदिनशुद्धि देखलेना, और जिसवख्त दीक्षालेनेवालेका चंद्रस्वर चलनेलगे उसवख्त उनकोंदीक्षादेना, चंद्रस्वर अमृतसमानफलदेनेवालाहै, उसमेंभी अगरपृथ्वी-या-जल तत्व-चलताहोतो निहायतउमदाजानना, अगर सवालकियाजाय कि-जिनप्रतिमाके सिंहासनपरफूल उछालनेकीपरीक्षामें उत्तीर्ण-न-हुवाहो-उसकोंभी-चंद्रस्वरमेंदीक्षादेनाठीकहै ?-(जवाब.)नही!-बोतो-पहिलेही अयोग्यहोचूका,-यहांउसकीबातहै जो उसपरीक्षामें उत्तीर्णहुवाहो-वैसा-शरूश-अपनेचंद्रस्वरचलतेवख्त-अगर-दीक्षा-लेगा बहोतउमदातरहसैं पालन करसकेगा.उसके धर्मोपदेशसैं बड़ें बड़ें अच्छेकाम बनेगें.औरउसके ज्ञानकीख्यातीसबलोगमंजुर करेगें.

(१८२-)-जिसकी ताकत दीक्षालेनेकी नहो वो गृहस्थधर्मके वारहव्रतअंगीकारकरे, मुहूर्त्तकेलिये दीक्षामेंजोजोनक्षत्रवारवगेरा वयानकरचूके-उसमुजवअच्छायोगदेखलेना-चंद्रस्वरसबमेअच्छाहै.

सच्चेदेव-सच्चेगुरु-और-सच्चेधर्मपर श्रद्धालाकर उनकों मानना पूजना-इसकानाम-सम्यक्तत्वहै, झूठेदेव-झूठेगुरु-और-झूठेधर्मकों-माननापूजना या उनपरश्रद्धालानाउसकानाम मिथ्यात्वहै. अपने कियेहुवेकर्मकों कोइफेरनहीसकता, फिरक्याफायदा संसारीकफायदेकेलियेभी कुदेवादिक्कों माननेसैं ?-बडीभूलहैकि-अपनेपुण्यके

शिवाय दुसरेकों फायदादेनेवाला समझना, हुंढियापंथीलोग स-
 वालकरतेहैकि-वारहव्रतमें प्रतिमाकीपूजाकरना कौनसेव्रतमेंसमज-
 ना? (जवाब)-प्रतिमाकीपूजा सम्यक्त्वमेंही दाखिलहै और सम्य
 क्त्व सबव्रतकामूलहै, इसलियेजिनप्रतिमाकी पूजा गृहस्थोंकों करने
 योग्यहै, (१)निरापराधीत्रसजीवकों बिनाकारण नहीमारना इसका
 नाम प्राणातिपातविरमणव्रतहै, (२) झूठबोलनेका त्यागकरना इ-
 सकानाम मृषावादविरमणव्रतहै, किसीकीधरीहु थापनकों नामुकर
 जाना-झूठालेखलिखना-और-झूठीगवाहीदेना इसव्रतबालेकों छोड
 देनाहोगा, (३)धाडा मारना, रास्तेचलतेकों लूटनाजोराजोरी कि-
 सीकीचीजखोंसलेना, किसीकीधरीहुइ अनामतचीजपचाजाना,
 चीजकीअदलबदल करदेना, एकचीजमेंदूसरीझूठीचीज मिलाकर
 वेंचना, विनामंजूरीकिसीकीचीजउठाजाना, यहसब चौरिकेभेदमें
 दाखिलहै, तीसरे अदत्तादानविरमणव्रतवालेंकों न करना चाहिये,
 जंगलमें पडीहुइचीजभी व्रतधारीपुरुष नउठावे, (४)परस्त्रीविरमण
 व्रतवालापुरुष-दूसरेकीस्त्रीकों न भोगे किंतु अपनीस्त्रीपरही संतोष
 रखे, इसीतरह स्त्रीभी अपने पतिकेशिवाय दूसरेकों नभोगे, वेश्या
 कोइकी स्त्री नहीहै-तो-अपनीभी नही, इसलियेउसकोंभी न भोग-
 नाचाहिये. सारांशयहहुवाकि-कवारो-विधवा-सोहागन-वेश्या-
 और अपनीविवाहितास्त्री-इनमे एकअपनीनिजस्त्रीकों छोडकर
 सवपरस्त्रीहै, जोलोगविधवास्त्रीका पुनर्लग्नकरनाचाहतेहै उनसेपूछ-
 नाचाहियेकि-आपलोगकिसका पुनर्विवाहकरनाचाहतेहो? क्या!
 -जोस्त्री पतिके जीतेजीभीउससँनाराजरहकर अलगकोठरीमें सोतो
 है उसका-या-जो-पतिसँ पुराप्रेमरखतीहै उसका-? बतलइये!

किसका पुनर्लग्नकरनाचाहतेहो?—अगरकहाजायकि—जो—नाराज रहतीहै उसका—तो—महाशय! वोटो पहिलेहीसें दूसरेकीहै. अगर पतिसें प्रेमयुक्तहै उसका कहोगे—तो—सौचो! त्रोपतिकेमरनेवादभी दूसरेकों कैसे चाहेगी?—जिसकीकामाग्नि नही बुझीहै वो तो पहिलेहीसें अनेकगुप्तपतिकरचूकीहै, जिसकी कामाग्नि बुझगइहै वो क्यों दूसराविवाहकरनाचाहेगी?—खैर!—अगर विधवाकापुनर्विवाहकिया और कर्मयोग—वो—दूसरापतिभी मरगया—बतलाइये! फिर वो तीसरा करे यानही? अगरतीसराभी मरजायतो चोथा करे या नही? इसतरह कितने पतितक करतेजाना इसकाभी भेद खोलकरपुनर्लग्नकी रसमजारीकरनाचाहिये. विधवाविवाहजारीहोनेसें देशकी उन्नति नही नाशहोगा. ज्ञानीलोगोंने जो विवाहकी रसमजारी कररखी है बहोत सौचसमझकर रखीहै, आर्यलोगोंका मस्तकजोअनार्योंसें उंचाहै इसीउमदाकाररवाइयोंसें है. आर्यलोगोंमें भी अगर यह खोटीरसमजारीहोजायतो जो स्त्रीयोंकी महाभक्ति पतिपर रहाकरतीहै यह उठजायगी. क्योंकि—वहसमझेगीकि—इसकों छोडकर दूसरापतिचाहे जब करलुंगी. (सवाल.) क्या! पुरुषनही चाहेगाकि—मैं—दूसरीविवाह लुंगा—(जवाब.)—चाहेगा, लेकिन! यह मालूमहैकि—दोंनोमेंसें किसकों अपनाघरछोडकर दूसरेके घरआना पडताहै?—स्त्रीकोंअपने पिताकाघर छोडकर पतिकेघर आना पडताहै, इसीसें कहागयाहैकि—स्त्रीका—पुन्य कमजोरहै, उसकों मुनासवहैकि—पतिके आधीनरहे. अगरआर्योंमेंभी पूनर्लग्नकी रसमजारी होजाय तो इग्लांडदेशकीतरह तल्लाकके मुकदमोंसें अदालतकों फुरततक नमीले. हमऐसी अवस्थामें कभी

सहमत नहीं हो सकते कि—इस मर्यादानाशक पुनर्विवाहकी रसमजारी किइजाय. जो लोग विधवा स्त्रीयोंका दुख देखकर दयावान बनते हैं सो ठीक है, लेकिन ! यह नहीं सौचते कि—इससे नतीजा क्या आवेगा. काम बोक रना जो दूरदेशी अच्छे नतीजेवाला हो,

[सवैया.]

देवगुरुशास्त्रकी श्रद्धासें प्रीतिकरों—
 यही सब सूत्रसिद्धांतोंका मूल है,
 इनमें जो शंशय करे चारों गत भ्रम फिरे
 धिग्धिग्संसार कहेके सी बड़ी भूल है,
 आदरसत्कार नहीं होय ऐसे जीवनका
 अपजशका पूंज बने शीशपडे धूल है
 राजमें भी उनकी सुनवाइ कहां कैसे होय ?
 धर्मसें प्रतिकूल जाके दुनियां प्रतिकूल है,

(५) पांचमें परीग्रहप्रमाणव्रतमें अपनी इच्छामुजब. दोलतका प्रमाण करना कि—लाख—दो लाख—या—पांच लाख—रुपयें—मैं—रखुंगा, इससें ज्यादे हो जायें तो धर्मकाममें खर्च दूंगा, कोइ बडा आदमी—या—राजा हो—तो—बो—करोड—दो करोड—अबजतक रखे,

(१८३)—छठे दिशापरिमाणव्रतमें पूर्व पश्चिम उत्तर दखन चारो तरफ—दो दो हजारकोस—पांच हजार—या—उससें कमीवेंसी—जितना रखना हो—रखे, (७) मांसमदीरा—रात्रिभोजन—जमीकंद—वगेरा अभक्ष्य चोजोंका त्याग करना और चौदहनियमधारन करना—इसका नाम—भोगोपभोगविरमणव्रत है, (८)—आर्त्तरौद्रध्यान करना—हाथी—वैल—

मुरघे-मैढे-और-भैसे-वगेरालडाना, विनाकारण वृक्षपरलाठीमार देना, किसीकों फांसी दिइजाय-और-उसमेंखुशोमानना, इसका नामअनर्थदंडहै, इसमेंवचना चाहिये, (९)नवमासामायकव्रत-दिनमें कमसेकम एकसामायिक जरूरकरनाचाहिये, (यानी)दोघडीतक एकस्थानपर बैठकर वाचनापठना-याध्यानकरना, (१०)दशमा देशावकासिकव्रत-(११)ग्यारहवा-पौषधव्रत-पर्वतिथिकेरौज जरूरकरनाचाहिये, (१२)-वारहमें अतिथिसंविभागव्रत-इसकानामहै जो साधुजनोंकों आहारपानीदेकर भोजन जिमना-अगर-योग-न-मिलेता-भावना रखना,

(१८४)-जैनपर्व,-दीवालीकेराज महावीरतीर्थकरका निर्वाण हुवा, कार्तिकसुदीपंचमीकेरौज ज्ञानपंचमीपर्व, कार्तिकपौर्णिमाकेरौज शत्रुंजयतीर्थकीयात्रा, मगसीरसुदी एकादशीकेरौजमौनएकादशी पर्व पौषवदी दसमी-गुजरातीमहिनेकी अपेक्षा मगसीरवदी दसमीके रौज पौषदशमीपर्व,-माघवदी-(गुजरातीकीअपेक्षापौषवदी)त्रयोदशीके रौज मेरुत्रयोदशीपर्व-वैशाखसुदी तृतीकेरौज अक्षयतृतीयापर्व, भाद्रपदवदी-(गुजरातीकीअपेक्षा श्रावणवदी)द्वादशीसे भाद्रपद सुदीचौथतक पर्युषणपर्व, पर्वकेरौज देवपजा-व्रतनियम-या-ज्ञान भंडारकी वृद्धिकेकाम ज्यादाकरनाचाहिये,

(१८५)-जनक (१०८)तीर्थोंके नाम, १, शत्रुंजयताथ सौराष्ट्र-देशमें पालिताणानगरकेपासहै, पहाड चढाइमें वडासहजहै, वृक्षोंकी घटा-जलकेकुंड-पानीकेझरने-औररंगवेरंगीलतावल्लीयोंसे सारा पहाड मानों वागकीतरह फूलरहाहै, चारोंतर्फ फलफूल हंसरहेहै, इसपहाडकीसुंदरसोहावनीजगह मनकों मोहे लेतीहै, जोयात्री इस

तीर्थका संयोगकरलेताहै फिर नहीं चाहताकि-इसका विरहहो, क्र-
पणसे अधिकक्रपण क्यों नहो? यहां आनकर दिलका दरियाव-
होजाताहै, इसतीर्थपर जैनमंदिरोंकी योजना और अगणितधनकी
लागत कौनकेदिलकों चकितनहीकरती.कौन ऐसासुंदरमंदिरहै जो
इसतीर्थपर नहो?—कौन ऐसीसुंदर जैनमूर्तिहै जो यहां नहो?—वी-
तरागकी निरागमयमूर्ति मनकों वीतरागबनाडालतीहै,मंदिरोंकी
धजा पवनको झकोरसें नाचरहीहै,जब रिषभकूटकेमध्य बीमलवसी
टोंकपर जातेहै तो मानो मंदिरोंकी श्रेणी औरआस्मानकी छब
एकहोजातीहै,दिलनही चाहताकि-नीचे उतरें, वर्षमें चैत्री और
कार्तकी पौर्णिमाकेरौजयहां दोदफेमेंलाभरताहै,जिसमें कार्तिक
पौर्णिमाका मेंला देखनेलाइकहै,(१)गिरनारतीर्थ इसीसौराष्ट्रभू-
मिकादूसराशींगारहै,जुनागढसें दोकोश अगाडीबढो तो गिरनार
पहाड शुरुहोताहै,वृक्षोंकी शाखापर वानर कलोलें करतेरहतेहै,
जलकेकुंड-पानीके झरनें-और-सरोवर ठोरठोरपरनजरआताहै,
मयूर-क्रॉच-तोंते-वगेरापक्षी लतावल्लरीयोंमें आनंदकररहेहै, तरह
तरहकी वनास्पति यहांपर मौजूदहै,आदमीकी ताकतनहीकि-य-
हांकी जडीबुटीयोंकापारपासके,गिरनारकी गुफायें दुनियामें म-
शाहूरहै,इसतीर्थपर नेमनाथभगवानकेदर्शन-सहस्राम्रवन-और-पां-
चमीटोंक-देखनेलाइकहै,

(१८६)-३,-सम्मेतशिरखत र्थ-पूरवदेशमें-अतिउत्तमजगहहै,
इसकोंवहांके आमलोग पारसनाथकापहाडकहकरबोलतेहै,इसपहा-
डमें हरड बहेडें आवलें सतावरी सफेद स्याममुशली-चीरोंजी-
और-कसुंवावगेरा कइचीजेंपैदाहोतीहै, मधुवन-गंधर्वनाला-सी-

तानाला-चंदाप्रभुकीटोंक-शामलीयामहाराजकामंदिर-और-तीर्थ-
 करोंके चरणपादुकाकी छतरीयें यहां देखनेलाइकहै, ४, आबुती-
 र्थ-मारवाडमें एरावली घाटीमें मीलाहुवाहै, इसकी हवा बडीनि-
 रोग और पुष्टिकारकहै, देलवाडेमें विमलशाहशेठका-बनायाहुवा
 रिषभदेवभगवानकामंदिर-और-उसकेपास-वस्तुपाल तेजपालका
 मंदिर-कारीगरीमें भरपूरहै, संगमरमर पथ्थरमें कारीगरोंने जो जो
 कामकियाहै देखकर दिल चकितहोजाताहै, जिसजिस इतिहासमें
 देखोगें आवुकेजैनमंदिरकी तारीफ लिखीहुइ नजर आयगी, अ-
 चलगढ जो इसीपहाडका एकउत्तंगशिखरहै इसमें धातुमय जिन-
 प्रतिमा बहोतखुबसूरतहै, तरहतरहकी वनस्पति-यहांपर मौजूदहै,
 सुन्नाचांदी-तांवाशीशा-रांग-और बिलोरांपथ्थर-यहांकी खानिमें
 पैदा होते है, ५, केशरीयाजीतीर्थ मेवाडदेशमें उदयपुरके पासहै,
 इसतीर्थकीयात्रा करनेकों आमलोग जाते है, असलमें इसीलिये इस-
 कानाम केशरीयाजीतीर्थ कहागया, दुंढियापंथीलोग मूर्त्तिकों नही
 मानते-लेकिन ! यहांपर आनकर केशर फुल नगदीरुपया चढाते
 है और नहाधोकर पूजाभी करते है, सवाल होनेकी जगहहैकि-
 जब मूर्त्तिकों मानना मंजूरनही था-तो-वहांजाकर पूजा कैसे किइ ?
 अगरकहाजायकि-हमने अपने संसारीक मतलबकेलिये किइतो ब-
 तलानाचाहिये तुमकों धर्म प्यारा रहा-या-लडकालडकी प्यारे र-
 हे ? वडीशर्मकी बातहै कि-जिसकेधर्मकों मानना उसीकी मूर्त्तिसें
 नाकचढाना. ६, हस्तिनापुरतीर्थ-कुरुक्षेत्रमें दिल्लीमेरटके पासहै,
 ७, अंतरिक्षतीर्थ-वराटदेशमें मौजूदहै, ८, मकसीतीर्थ-मालवादे-
 शमें उजेनकेपासहै. ९, तारंगातीर्थ-गुजरातकी उत्तरसीमापर-पा-

लनपुरकेपासहै. १०, फलोदीपार्श्वनाथकातीर्थ-मारवाडमें अजमे-
रकेपासहै. ११, शंखेश्वरतीर्थ-गुजरातमें राधनपुरकेपासहै. १२,
स्थंभनपार्श्वनाथकातीर्थ-गुजरातमें खंभातशहरमें है. १३, वरका-
णा, १४, घाणेराय, १५, नाडोल, १६, नाडलाइ, १७, राणक-
पुर-यह छोटीपंचतीर्थी-मारवाडमें पालीकेपासहै, १८, लाटदेशमें
नर्मदाकेकनारे भरुचमें मुनिसुव्रत स्वामीकातीर्थ है, अश्ववबोधतीर्थ
भी इसीका दूसरानामसमझीये, बंबइइलाकेमें नाशिक्यशहर चंद्र-
प्रभुकातीर्थ है. २०, दखनदेशमें सोपारकपत्तन-यहांपर-रिषभदेव
भगवानकातीर्थ है, २१, दखन हेदरावादसें तीसकोसदूर कुल्पपा-
कतीर्थ-इसमें माणिक्यदेवकामंदिरहै, इसको श्वेतांबर-दिगंबर-
दोनोंमानते है, मूलमूर्ति श्वेतांबर और आसपास दिगंबर मूर्तिहै,
रैलकेटेशनसें तीनकोस आगे जाना पडेगा.

(१८७)-२२, किष्कंधापर्वतमें शांतिनाथकातीर्थ है, २३, लं-
कामें शांतिनाथकातीर्थ-मंदोदरीदेवतावसर पहिले था-अब नही
रहा. २४, महाराष्ट्रदेशमें गोदावरीकेकनारे प्रतिष्ठानपुरतीर्थ है-
इसका दूसरानाम पेंठण बोलते है, २५, त्रिकूटपर्वतमें शांतिनाथ-
कातीर्थ है, २६, विंध्याचलपर्वतमें गुप्तपारसनाथ-तथा-श्रेयांसना-
थकातीर्थ है. २७, मांहेंद्रपर्वतमें छायापार्श्वनाथकातीर्थ है-२८, त्रै-
कारपर्वतमें सहस्रफणापार्श्वनाथकातीर्थ है. २९, पुंद्रपर्वतमें महावी-
रस्वामीकातीर्थ है-३०, मलयगिरिमें पार्श्वनाथका-तथा-श्रेयांसना-
थकातीर्थ है. ३१, सेगमतीगांवमें-(जहांसें नर्मदानदी निकसी है)
अभिनंदनस्वामीकातीर्थ है, ३२, उदंड विहारमहानगरीमें रिषभ-
देवभगवानकातीर्थ है-३३, हेमसरोवरमें-बहत्तरजिनालयकातीर्थ है

३४, चारिणसी-और-३५, दंडखातमें-पुष्करावर्त्तपार्श्वनाथकातीर्थ है. ३६, कोयाद्वारमें-सुविधिनाथकातीर्थ है. ३७, तारणमें-और-३८, बंदरीमें-अजितनाथजीकातीर्थ है-३९, काशहृदमें-त्रिभुवनमंगलकलशआदिनाथकातीर्थ है. ४०, अंगदिकानगरीमें-अजितनाथशांतिनाथकातीर्थ है, ४१, खेंगारगढमें-उग्रसेनपूजितमेदिनीमुकूटआदिनाथकातीर्थ है. ४२ अणहिल्लपुरपटनमें-पंचासरा पार्श्वनाथकातीर्थ है. ४३, करहेटकमें-उपसर्गहरपार्श्वनाथकातीर्थ है. ४४, डाकुलीभीमेश्वरमें-पार्श्वनाथकातीर्थ है ४५, भायलस्वामीगढमें-देवाधिदेवपार्श्वनाथकातीर्थ है, ४६, गुजरातदेशमें हरिकंखीनगरमें-पार्श्वनाथभगवान्का तीर्थ है, ४७, आंवुरीगांवमें श्रीमतीदेवकातीर्थ है, ४८, हारवतीमें-अनंतनाथजीका तीर्थ है. ४९, माणिकदंडस्थानमें-मुनिसुव्रतस्वामीकातीर्थ है, ५०, प्रभासपटनमें-शशिभूषणचंद्रप्रभुकातीर्थ है,

(१८८)-५१, हिमालयपर्वतमें-छायापार्श्वनाथ-मंत्राधिराज-और-स्फुलिंग पार्श्वनाथकातीर्थ है, ५२, नेपालभोटानमें जैनका तीर्थ था-अब नहीं रहा-५३, पांचालदेशमें उत्तर दिशातर्फ सौवीरदेशमें जहां उदयनराजाहुवा-वहां-वीतभयपत्तनमें-महावीरस्वामीकातीर्थ था-आजकल वीतभयपत्तननगर नहींरहा, उस जगह-जेहलमनदीकी दखनतर्फ भेंरागांव बसताहै, कौशांबीनगरीका-उदयनराजा-दूसरा हुवा-और-उक्त-वीतभयपत्तनका-उदयनराजा दूसरा हुवा, ५४, कात्रुलगजनीतर्फ तखतशिलानगरीमें पहिलेकालमें-रिषभदेवकेपुत्र वाहुवलीजीका बनायाहुवा धर्मचक्रतीर्थ था-अब-नहींरहा, ५५, गंगायमुनाके संगममें जहां अब इला-

हावादहै प्रियंगुवटकेनीचे जैनतीर्थ था-अब-नही रहा, अबभी किल्लेमें जैनमूर्ति मौजूदाहै, ५६, बनारससेछकोश-सिंहपुरीमें विमलनाथजीकातीर्थ है. ५७, ज्वालामालिनी देवतावसरमें-गणधरगौतमस्वामिप्रतिष्ठित-चंद्राप्रभुकातीर्थ है. ५८, हिमालयकेपास-गंगाकीझीलमें-विमलनाथजीकातीर्थ है. ५९, पूर्वतर्फ कोशलदेशमें अयोध्यानगरी-जैनकातीर्थ है-विनीतानगरी-कौशला-और-साकेतपुर-इसीअयोध्याके-दूसरेनामहै, ६०, पूरवमें मगधदेशकी राजधानी-राजगृही-जैनकातीर्थ है. विभारगिरिपहाड यहांही है. ६१ इलाहाबादसेदखनकीतर्फ (४०) मीलदूर-कौशांबीनगरीमें-छठे पदमप्रभुतीर्थकरका तीर्थ है, आजकल कौशांबीकीजगह कौसुंभगांव बसताहै, पहिलेजमानेमें वत्सदेशकीराजधानी-कौशांबीनगरी बडीआबादथी, उदयनराजा जो शतानीकका बेटाथा. इसिकौशांबीका-मालिक था, ६२, अयोध्याकेपास-सरयूनदीकेकनारे-रतनपुरीमें-धर्मनाथकातीर्थ है. ६३, अयोध्याका शाखानगर-पुरिमताल जैनका तीर्थ है. ६४, पूरवमें अंगदेश चंपापुरी-वासुपूज्यभगवान्का तीर्थ है. सुभद्रासतीने कुवेसें चालनीभरकर पानी इसी चंपानगरीमें निकालाथा, ६५, पूरवमें विदेहदेशकी राजधानी मिथिलानगरी-जैनकातीर्थ है, जो दरभंगा और चंपारनके पासहै, आजकल उसजगहका नाम तीरहुत्तदेश बोलते है, ६६, इलाहवादके और भरवारीटेशनकेपाससावथ्यीनगरी-संभवनाथका तीर्थ है, ६७, सुरसेनदेशमें मथुरानगरीकेपास-शौरीपुरनगर-जैनकातीर्थ है यहां बाइसमें नेमनाथ तीर्थकरका जन्म हुवा था, आजकल इसजगहकानाम-वटेश्वर-बोलतह, यहां-चरणपादुका और छतरी वनी

हुइ है, ६८, विहारभूमिमें लखीसरायके पास काकंदी नगरी जैनका तीर्थ है, ६९, पूरवमें राजगृहीनगरीकेपास क्षत्रीय कुंडगांव-जैनका तीर्थ है-यहां महावीरभगवानका जन्म हुवाथा, ७०, चंद्रावती नगरी-जिसको-आजकल चंद्रपुरी-बोलते है बनारसके पास-जैनका तीर्थ है, ७१, पूरवदेशमें शीतलनाथजीकी जन्मभूमि-भदीलपुर-जैनका तीर्थ है, कइलोग कहते है भोपालके पास जो भैलसागांव-है यही भदीलपुरथा, लेकिन ! यहवात गलत है, सबकि-यहां-कोइ चिन्ह-ऐसा नही मिलता जो उक्त वातको सबूत करता हो, भैलसागांव-हमने देखाहै, ७२, सुरसेनदेशकी राजधानी मथुरामें-कल्पद्रुम पार्श्वनाथका तीर्थथा-आजकल मथुराकी गिर्दको ब्रजभूमि बोलते है, मथुराके जैनटीलेमेंसे अबभी जैनमूर्ति निकसती है, ७३, पूरवमें कायमगंजके पास-कांपिल्यपुर-विमलनाथ तीर्थकरकी जन्मभूमि-जैनका तीर्थ है. ७४, माणिकदंडक स्थानमें मुनि सुव्रत स्वामिका तीर्थ है ७५, श्री पर्वतमें-मल्लिनाथजीका तीर्थ है,

(१८९)-७६,-पूरवमें मगधदेश-पावापुरीमें-महावीर तीर्थकरका निर्वाण तीर्थ है. ७७, कलिंगदेशमें-रिषभदेवभगवान्का तीर्थ है, ७८, कादंबरी अटवीमें कुंडसरोवरके कनारे अहिच्छता नगरीमें कलीकुंडपार्श्वनाथका तीर्थ है, ७९, शंखजिनालयमें पातालगंगाभिध-नेमनाथ भगवानका तीर्थ है. ८०, श्रीरामशयनमें प्रद्योतकारी वर्द्धमानस्वामीका तीर्थ है. ८१, नंदीवर्द्धनकोटीभूमिमें-महावीर भगवान्का तीर्थ है. ८२, चर्मणवतीनदीके कनारे-ढीपुरीनगरीमें जैनका तीर्थ है. ८३ क्रौंचद्वीपमें तथा ८४, हंसद्वीपमें-सुमतिनाथभगवान्की चरणपादुकाका तीर्थ है, ८५, श्रीमाल

पत्तनमें तथा ८६, उपकेशपुरमें—महावीरभगवान्का तीर्थ है. ८७, गुजरातमें अहमदाबादके पास भोयणी जैनकातीर्थ है, इसमें मल्लिनाथ भगवानकी प्रतिमा अतिशययुक्तहै, ८८ पाटलीपुत्र (पटना)—जैनकातीर्थ, स्थूलभद्रमहर्षि इसीपटनाके रहनेवाले थे, सुदर्शनशेठका मकानभी यहांपर मौजूद है, ८९, ताम्रलिप्ती नगरी जैनका तीर्थ है. ९०, मारवाडमें नाणेबेंडेमें—महावीर भगवान्का तीर्थहै. ९१, मालवादेशकी राजधानी उज्जैनमें अवंतीपार्श्वनाथका तीर्थहै. ९२, कच्छदेशमें अंजारकेपास भद्रेश्वर—जैनका तीर्थ है, ९३, मारवाडमें पिंडवाडेके पास बंभणवाल जैनकातीर्थ है, ९४, कच्छदेशमें दूसरा तीर्थ—सुथरीगांवभी—प्रभाविक तीर्थ है, ९५, गुजरातमें खंभातकेपास कावीगंधार जैनका तीर्थ है, ९६, द्वारकामें—नेमनाथभगवान्कातीर्थ—पहिलेजमानेमें था—अब नहींरहा, ९७, मालवेमें धारानगरीके पास मांडवगढ जैनका तीर्थ है, ९८, मारवाडमें सांचौरगांवमें—महावीरभगवान्का तीर्थ है. ९९ कुंकणमें श्रीपालराजा कास्थापित जैन तीर्थ था—अब नहीं रहा, १००, विशालानगरी—जैनकातीर्थ—पटनेसे उत्तरकीतर्फ तिरहुतमें आजकल (बुस्स) नामसे मशाहुरहै, चेडाराजाके मरनेबाद कौणिकने उजाड करडालीथी अब—नाममात्र रहगइहै, १०१, पूरवतर्फ श्वेतंबिकानगरी जैनका तीर्थ था, अब नाममात्र समझीये, १०२, मालवदेशमें दशपुरनगरसे चारकोसदूर वहीपार्श्वनाथका जैनतीर्थहै, दशपुरका दूसरानाम मंदसौर समझना चाहिये, १०३, दशार्णभद्रराजाकीराजधानी दशार्णपुर—जिसका दूसरानाम आवश्यकसूत्रकी टीकामें एडकाक्षपुर लिखाहै दशार्णभद्रने महावीरतीर्थकरकों नमस्कार करते वरुत य

हांही अपनी राजरिद्धिकामान कियाथा, इंद्रने अपनीदेवसेनासहित यहांही समवसरणकी चौफेर प्रदक्षिणादिइथो, हाथीयोंके पांवसें जमीनमें खड्डे पडजानेकेलिये लोगोंने इसनगरका नाम गजपंथाभी बोलना शुरूकरदियाथा पहिले यहां श्वेतांबर जैनतीर्थथा, अब पहाडमें दिगंबरोने दिगंबर मूर्तिये उकेरवालिइ इसलिये हालमें दिगंबरोका तीर्थ मशाहूर होगयाहै, आजकल इसकानाम गजपंथातीर्थ बोलाजाताहै, नाशककेपासजोअब मौजूदहै क्या जाने ! यही दशार्णपुरकी जगहहो ? कितनेक मंदसौरकों दशार्णपुर बतलातेहै लेकिन ! यहबात गलतहै, १०४, बनारसमें-१०५, चित्तोडमें, १०६, काश्मिरमें, और-१०७, गौडदेशमें-पहिलेजमानेमें प्रभावशाली जैनतीर्थ थे, अबनाममात्र रहगये है, १०८, अष्टापदतीर्थपर भरतचक्रवर्त्तोंने चौइसतीर्थकरोकेमंदिर बनवाये थे, आज कल वहां-जाना मुश्किल है.

(१९०)-सिंधमें-वराडमें-माढेरमें-टंकास्थानमें-सरस्थलमें-मुंडस्थलमें-और-मेतुंडकस्थानमें कइजगह जैनकेतीर्थथे, अबनही रहे, अनार्यदेशोंमें जैनतीर्थ कमहोनेकासबब-यहहैकि जैनमें मांस मंदिरका त्यागरखना फरमाया, और अनार्यलोग मांसमंदिरके प्रेमी ज्यादे ठहरे, फिर उनलोगोंमें धर्मका-या-तीर्थका फैलाव कैसे होसकताहै ?-[वर्षचर्यामें]ज्ञानी लोगोने फरमायाहै कि-आदमीकों-एकवर्षमें एक नयेतीर्थकी यात्रा जरूर करना चाहिये-अपनी पैदाशमेसें-अर्द्धांश-चतुर्थांश-दशांश-या-षोडशांश-धर्मकेलिये खर्चकरना, अपने गुरुकेदर्शनकरनेकों जाना, और एक नवीन पुस्तक मौललेकर धर्मकीपुस्तकालयमें धरना गृहस्थलोगोंकी फरज

है, [जन्मचर्यामें] लिखाहैकि-सारी जींदगीमें एकदेवमंदिर-या-देवमूर्ति-जरूर बनानाचाहिये, व्रतनियमलेकर पालन करना चाहिये, देवद्रव्यभक्षणका त्याग-दीनदुखीका उद्धार-पुर्धमरुषोंको मदत-और मातापिताकी सेवाकरना जींदगीका सारहै, अगर ताकतहोतो एक-अपूर्वग्रंथ-बनाकर दुनियामें रखजानाचाहियेकि-जिससें अपने मरेवादभी-लोगोंको उससें फायदा पहुंचतारहे, वनतेप्रयत्न संसारछोडकर दीक्षाभीलेनाचाहिये-जिससेंपर लोग-का रास्ता साफहो, इतनेकार्यमेसें जिसने एकभीकार्य सच्चेदिलसें कियाहो उसको वारंवार धन्यवादहै,

(२००)-तीर्थनाम उसकाहै जहांजाकर आदमी संसारसमुद्रसें तीरे, जैनतीर्थको जैनी बौधतीर्थको बौध-वैदिकतीर्थको वेद-मतावलंबी-मक्कामदीनाको मुसलमान-और-अपने-गिरजेघरको अंग्रेजलोग-तीर्थ-(यानी)-पवित्रजगहसमझकर उसमें जातेहै, वहां ईश्वरकाध्यान और प्रार्थनाकरतेहै, इसाईलोग जरूजलमस्थानकोतीर्थ मानतेहै. कोइलोग मनोमयमूर्तिकों-और-कोइलोग साक्षात् मूर्तिकों नमतेहै, मूर्तिविदून किसीकाकाम नहीचला, मशजिद् और-गिरजा-क्याचिजह?-सौचोतो!-यही कहना बनेगाकि-ईश्वरकाघर है, जब ईश्वरकाघर माना तो उसकी मूर्तिमाननेमें क्याबिगाडथा?-अगर कहाजाय-निराकार ईश्वरकीमूर्ति नहीबनसक्ती-(जवाब.) जैसेमूर्ति नहीबनसक्ती वैसे निराकारईश्वरकाघरभी नहीबनसक्ता, ईश्वरकाघर मानना और उसकी मूर्ति नहीं मानना एक जिदहै, जिद्वी आदमी-को कौन समझाशकता है. ? कुरान और बाइबल क्याचीजहै ? इसको सौचतेहै तो यहीकहना बनताहैकि-वह-पाकपरवर्दीगारकी जवानहै,

कहने वाले कह सकते हैं कि—जब जबानका इतना आदर करना तो मूर्तिके आदर करनेमें क्या हर्ज था ? जब जुबीलीका जलसाहुवाथा अपने देशके हजारां हलोगोंने जो कि—मूर्तिमाननेसें नाराज भी थे भास्वरीविक्टोरियारानीकी मूर्तिकों मुजरा कियाथा और फुलोंकी मालाभी पहनाईथी, कहिये ! उसवख्त मूर्तिमाननेकी नाराजी कहां चली गईथी ?—दयानंदसरस्वतीके मतानुयायी दयानंदजीकी मूर्तिका आदर करते हैं और ईश्वरकी मूर्तिसें नाराजरहते हैं यह उनकी जिद है—या—नहीं ?—ढुंढीयापंथीलोग अपने मुहबंधे गुरुओंकी मूर्तिको नमस्कार करते हैं और जिनेद्रोंकी मूर्तिसें नाराजरहते हैं यहभी उनकी जिद है या नहीं ?—शिखल लोग—उनके ग्रंथ साहबका आदर करते हैं—और—देव मूर्तिसें नाराज रहते हैं यह उनकी जिद है या नहीं ?—लेकिन ! क्या कहा जाय ! जो लोग अपनी अकलके सामने दूसरेकों कुच्छचीज न समझे—उनकों कौन समझा सकता है. ?—अदालतमें हरेकमतावलंबीकों कहाजाता है कि—अपनेअपनेधर्मकी—कितावकों—या—अपने ईश्वरकी मूर्तिकों—हाथमें लकर कहोकि—मैं—सच्च बोलताहूं, उसवख्त सबलोग उसी मुआफिक करते हैं, मूर्तिसें नाराज रहने वालोंकों पुछना चाहियें उसवख्त आपकी नाराजी कहां गायब होजाती है ?—अगर कहाजायकि—यह कामतो अदालतके खोफसें क्रिया जाता है—तो—बतलाना चाहिये—क्या—ईश्वरकी हुकमअटुलीके खोफसेंभी अदालतका खोफज्यादे है ?—आजकलके नयीरोशनीवाले कुच्छ अंग्रेजी फारसीपढकर मंदिरमूर्तिसें नाराज रहते हैं लेकिन ! यह नहीं सौचते हमारेही तालीमदेनेवाले बडेबडेसमझदार अपने गिरजे घ-

रमें जाकर ईश्वरकी प्रार्थना करतेहै, मशजिदमें जाकर शिरझुकाते है, कहिये ! गिरजाघर औरमशजिद् कुच्छ चीज नहीथी तो ये कारवाइ क्यों करते ?—निदान! तीर्थकी जगह भी ईश्वरकों और धर्मकों—याददिलानेवाली है, उसमेंजाकर देवमूर्तिकी पूजा करना, उसजगेह बैठकर ध्यानसमाधिकरना धर्मका एक अंग है, मेरुशिखरपर—मानुषोत्तर वगेरापर्वतोंपर—नंदीश्वरद्वीपमें—और—रुचकद्वीपमें जो जैनतीर्थ है उसका बयान यहांइसलिये नहीलिखाकि—वहांजानेकी ताकतवाले मनुष्य इसजमानेमें नही रहे, विद्या और लब्धियोंके कारणसें जो आकाशगामिनी विद्या पहिले जमानेमें लोगोंकी थी अब नहीं रही, पवनके यंत्रसें आकाशमें उडना एकनकली आकाशगमन है, इससें वैसा फायदा नही होता जैसा विद्यापढकर आकाशमें उडनेसें होताथा, बेलूनमें बैठकर आजकल कइ लोग उडते है लेकिन ? इसमें खतरा बहोत और फायदा थोडा हासिलहोता है. बल्किन् ! कइ लोग इसकाममें जान खो बैठे है एकअखबारमें एक शख्शने लिखाथाकि—कइ बेलूनवाजसाहब—बेलूनमें चढकर मेरुपर्वतकी तलाशकों गयेथे, लेकिन ! पीछे नही लौटे, एक साहब गुब्बारेमें बैठकर पधारेथे, अपनी पहोंचकी खबर—कितने करौजतकतो—वे—अपनेकबूतरोंद्वारा भेजतेरहे, लेकिन ! अखीरमें कबुतर आनेभी बंदहुवे, सौचो !—मेरुकी तलास क्या इसतरह हो सकती है ?—उतनी ताकतका नहोना ज्ञानीयोंने पहिलेंही फरमा दिया, फिर क्या फायदा इसतरह जानकी जोखममें पडना, ब्रतारोपसंस्कारमें तीर्थका बयान इसलिये लिखा है कि—तीर्थम जानाभी मनुष्योंकी एक फरज है, अभिग्रहप्रत्याख्यानभी कइतरहेके

है जिनको खायेसही आवश्यक सूत्र और प्रवचन सारोद्वार ग्रंथ देखे, व्रतारोपसंस्कार पूरा हुआ—अत्र अंतकर्म संस्कारका बयान सुनिये.

(२०१)-१६-सोलहमा-अंतकर्मसंस्कार, अंतकर्मका दूसरा नाम-मृत्यु-है, संसारमें कोई ऐसा नहीं जो मृत्युसे बचा हो, जितना आयुष्य कर्म पूर्व भवमें जीव बांधलायाहै उसका पुरा होजाना इसीकानाममृत्युहै, क्या राजा-और-रंक-सभीको मरना है, मनुष्य अपनी जीवित दशामें धनपवाद और सुख्याती प्राप्त करसकते है. लेकिन ! गुणाविदून सुख्याती कभी नहीं फैलती, फुलनही लेकिन ! गुणोजनोंकी खुशबू बनीहुइ है, दुनियामें आदमीको-मान अपमान-सुखदुख-और-हंसीखुशी-अलबते ! प्राप्त होतीहै लेकिन ! तारीफ उनकी है-जो-समभाव रहे, जलमें डूब मरना-या-झेर खाकरमरना बेवकुफोंका कामहै, क्या ! इसतरह मरनेसें स्वर्गमिलता है ?-कभी नहीं ! बुरीगतिहोकर जन्म जन्ममें तकलीफ उठानी पड़ेगी, अगर अच्छे लोगोंकी तालीम पाइ है तो याद रखो इस तरह जानखोना बुरा है, स्थानांग सूत्रके दूसरे स्थानमें लेखहै कि-क्रोध-मान-माया-और-लोभ करके आत्मघातकरना दूर्गतिका हेतु है, अज्ञानी अत्रतीका मरना बालमरणमें दाखिल है, ज्ञानी और सर्व विरतिका मरना पंडितमरण है, देशविरतिका मरना बालपंडितमरण है, आराधना करके अच्छे ध्यानमें मरना अच्छी गति पानेका सूचक है, स्थानांगसूत्रके सातमें स्थानमें-और-आवश्यकसूत्रका निर्युक्तिमें-सात कारणसें आयुष्य टूटजाना फरमाया, जैसे अकाले किसीवृक्षको फलआजाता है वैसे खोटे निमित्तमिल-

नेपर अकालमरनाभी होजाताहै, जैसे भस्मरोगी मनुष्यों बहोत कालमें पचनेवाला भोजन थोडेकालमें पच जाता है वैसे निमित्त पाकर आयुष्य भी थोडे कालमें भोगलिया जाता है, जैसे पचास हाथलंबीडोंर एकतर्फके कनारेपर अग्निलगानेसे बहोतकालमें जलकरखाखहो सकती है, लेकिन-वहीडोंर इकठी करके अगर आगमें धर दीइजाय तो जलदी जलजाती है वैसे आयुष्यभी उपक्रम लगनेसे जलदी भोग लिया जाता है, यानी टूट जाता है, ऐसा कहनाभी कोई हर्जकी बातनहीं, १, अतिराग और-अतिखोफके मारेभी आयुष्यटूटजाता है, २ चाबक-तलवार-बरछी-बंदूक-तांप वगेरा निमित्तसे भी आयुष्य टूट जाता है, ३, ज्यादाे खाना खानेसे और ज्यादाे भूखारहनेसे-४, मर्मप्रदेशमें अत्यंततकलीफहोनेसे ५, दीवार परसे या-पहाडकेशिखरसे-गिरजानेसे-कुवावाव-डी-नदीसरोवर समुंदरमें पडजानेसे आगमें गिरनेसे-वगेरा कारणसेभी आयुष्य टूट जाता है, ६, सर्प काटखाय-या-झेरकाप्याला पोइलीया जाय तोभी आयुष्य टूट जाता है, ७, स्वासरुकजानेसे (यानी) फांसी वगेराके निमित्तसेभी आयुष्य टूट जाताहै, अगर सवाल किया जायकि-वैसाही होनहार था जिससे वैसा निमित्त मिला और मर गया-इसमें आयुष्य टूट गया-वैसा क्यों कहना?-(जवाब)-अगर वैसानिमित्त न मिलता तो वो शख्स न मरता ऐसाभी ज्ञानीयोंने अपने ज्ञानके जरीये देखाथा-इसीलिये उन्होंका फरमाना हुवाहै कि-वैसा निमित्त मिलनेसे आयुष्य टूट भी जाता है, अगर सवाल किया जायकि-कइलोग-प्राणांत करनेवाले निमित्तमिलनेपरभी जितेरहगये है, फिर आयुष्य टूटना कैसे स-

बूतरहा, (जवाब.)—जितेभी रहजातेहै और मरभी जाते है, इस लिये यह निश्चय नही कहाजासकताकि—जितेही रहे—या—मरही—जाय, हां ! इतना कहना बनसकता हैकि—उपरलिखे निमित्त मिलनेसें मरजानेकी संभावना है, इसलिये बनतेप्रयत्न इन निमित्तोंसें बचना चाहिये,

(२०२)—जिसरोगीकों रात्रीमें नींद न आवे, सभी इंद्रियें अपने अपने कार्यकों छोडदेवे—तो—जानना रोग असाध्य है, स्वास चलना, सूल उठना, हीचकीचलना, तृषा बहोतलगना—सभी पदार्थ लालरंगके दिखनेलगना, वृक्षोंतर्फदेखनेसें जलते हुवे मालूमदेना—ये—सबलक्षण असाध्य रोगके समझना चाहिये—लेकिन ! इतना यादरहेकि—बहोतदिनके विमारकेलिये—ये—बातें है, तंदुरस्तकों किसीकारणसें एकदम ऐसा हो जाय तो उसके लिये एक दम नहीं समझनाकि—यह असाध्यरोग होगया. जिसरोगीके पांव गर्मरहे और सावधानीसें वातेंकरे उसको असाध्यरोग हुवा नही जानना, आंखकी चमक मोतीके पानीकीतरह उतरजाय, और किसीकों पहचाने नही तो जानना कुच्छ असाध्यरोगके लक्षण शुरुहुवे, जिसकों अपनी जवान—आर—नाककी अणी—अपनी आंखोंसें—विदून आरीसे न दिखे उसकों जानना चाहिये मरना नजदीक आया, जिसको अपनी छायामें अपना मस्तक न दिखाइदे—तो—जानना—मृत्यु—नजदीक आया, जिस वीमारका खाना पिना बिल्कुल छूटजाय या—जिसकी गर्दन आपही आप स्थिर न रहसके—उसेजानना रोग असाध्य है, दोंनों कानमें एकशाय दोंनोंअंगुली दवाकरदेखनाकि—भीतरका धोंर शब्द अपनेकों सु-

नाइदेता है—या नही ?—सुनाइदेवे तो ठीकहे नहीतो मरना नजदीक आया जानना, बीमारआदमीकी—भू—टेंडी होजायतो—जानना नवदिन जीनारहा, कानसें अवाज न सुनाइदेवेतो सातदिन—नाकसें किसीचीजकी खुशबूलेना बंदहोजाय—यानी—घ्राणइंद्रियकी ताकत हठजायतो—पांचदिन—आंखोंसें—हाथकी रेखा दिखनी बंद होजायतो—तीनदिन—और—जबानसें—किसीचीजका गुण मालूम होनाबंदहोजाय तो—एकदोदिन जीना रहा ऐसा जानना, छींक और मलमूत्र एकसाथ खलास होजाय—यानी—छींक आइ औरउसीदम मलमूत्रके द्वारभी खुलगये तो जानना मरना निकटआया, जिसको ध्रुवकातारा रात्रीके वरुत न दिखाइदे—तो समझना मृत्युपास आगया.

(२०३)—जव वृद्ध अवस्था होनेपर आवे तो मनुष्यकों चाहिये धपने किये हुवे पापोंकी आलोचना लेवे, जीवहिंसा किइहो, झूठ बोलाहो, चोरीजारी किइहो, व्रतनियमलेकर तोडडालेहो, सामायिक—प्रतिक्रमण—पौषधव्रतवगेरामें दोष लगाया हो—तीर्थयात्रामें दोषलगाया हो—देवद्रव्यभक्षण किया हो, झूठीगवाइ दीनी हो—किसीपर झूठा दोष लगाया हो—वगेरा जोजो खोटेकाम अपनेसें बन पड़ेहो—निर्ग्रंथगुरुकेपासजाकर सुनाना चाहिये, मनवचनसे किया हुवा पापभी अगरआलोयानींदा नजायतो कायासेंभोगनापडताहै. निर्ग्रंथ गुरुउसकोंसुनकर शास्त्रमें देखके उसे प्रायच्छितदेवे, प्रायच्छितदेनेके कइरस्ते है, जिसकी ताकत तपकरनेकी नहो उसकों ज्ञानध्यानकरनेका फरमावे, जिससें ज्ञानध्यानभी न होसकता हो उसकों द्रव्य खर्च करनेका फरमावे, जिसकेपास द्रव्यखर्चकरनेकों ताकत नहो उपवास—वगेरा करनेकों फरमावे,

स्वाध्याय-तीर्थयात्रा-मंदिर-मूर्ति-पुस्तकालय-वगेराकार्यमें तनमनधनसें जितना उससेवनसके उतना कार्यकरना फरमावे, बस ! इसीकानाम प्रायच्छित है, कितनेकलोग इज्जतकेमारे आलोचनानहीलेते-लेकिन ! यह उनकी भूल है, गुरुकेपास अपना पाप जाहिरकरनेसें-बडाफायदा है, मनमेंशल्यरहजाना अच्छानही गुरुकों मुनासिवहैकि-एककी आलोचना दूसरेकेपास जाहिर न करे, शिष्य कोंचाहिये जोकुछ प्रायच्छित गुरु बतलावे दूसरेकेसामने वयान करे.

(२०४)-बीमारआदमीकों चाहियेकि-अपनेमरनेसें पहिले धर्मकामकेलिये द्रव्यनिकालकर देवमंदिरमें-या-धर्मसमाजमें भेजदेवे. पीछेसें बेटाबेटी न मालूम कैसें निवडेगें-कइलोगोंके घरमें धर्मका द्रव्य रहगयाहै, और वे पापसें डूब गयेहै-नालाइकबैटे बापका निकालाहुवा धर्मद्रव्य पीछेसें देतेनहीहै, इसलिये मरनेवालोंकों मुनासिवहैकि-अपनी हयातीमें सप्तक्षेत्रकेलिये धन निकालकर तुर्त जहांकातहां भेजवादेवै, लेकिन ! अपशोष है कि-हीनपुन्यलोगोंसें धर्मकाम होता नही-बल्किन् ! बेटाबेटीकेमोहमें पढकर हाथपांव तडफातेहुवे मरजाते है, लाइकवर बेटे-वें-है-जो-अपने मातापिताके फरमाने मुजब-रुपयोंकेतोडे उसीवरुत देवमंदिरमें-या-धर्मसमाजमें भेजदेवे, कितनेकलोग-बडाइकेलिये कहदेतेहैकि-हमने-हमारे मातापिताकेपीछें इतनेरुपये धर्मकामकेलिये निकाले है, लेकिन ! पीछेसें फुटीकोडीभी नहीदेतेहै, धिक्कार है उनके जीवकों,-मरनेका वरुत नजदीक आगया मालुमदेवे तब कुटुंबपरिवारके लोगोंकों मुनासिव है कि-उसकों धर्मशास्त्रका वयान सुनावे, देवगुरुका शरण दिलावे, और वारवार कहतेरहेकि जगतमें सारवस्तु धर्म है,

उसके स्वरु कोइ तरेहकी नाराजी न बतावे, लाइकवर बेटा वो है जो अपने मातापिताकों धर्मकाभत्ता शायदेवे, अच्छी औरत-वो है-जो-अपने खाविंदकों मरनेकेवख्त धर्म सुनावे, रोवेनही और कहेकि-आपकी काररवाइसें-मैं-सुखीहूं-किसीतरहकी चिंता आप अपनेपास न आने देवे,

(२०५)-जिसवख्त मनुष्यका मृत्यु हो अच्छाध्यान रहे तो जानना चाहिये उसकों अच्छीगति प्राप्तहुइ, मरनेबाद जीव तुर्त दूसरीगतिकों प्राप्त हाजाता है, रास्तेमें उसकेसाथ पुन्यपाप वगेरा कर्म साथलगेरहते है जबतक जीवकी मुक्ति नही होती कर्म अलग नही होते,-कर्म-क्याचीजहै उसकाभेदजाननाहो-तो-कर्मग्रंथ-देखो अगर उसकोंभी तुमने नहीपढाहैतो थोडेमेंउसकाबयान समझलो कि-जीवके साथ जो शुभपुदगललगे है उसकानाम पुन्य है-अशुभ पुदगललगेहै उसकानाम-पापहै, जीवकों भलीबुरीगति वेंही लेजा-तेहै, यानी लोहचूबकके न्यायसें खेंचायाहुवाजीव कर्मकेही उदयसें भलीबुरीगतिकों जाताहै, अगर पुन्यकिये होगेंतो स्वर्ग मिलेगा, लेकिन ! अपशोष है अखीरमें वहांसेंभी मरना पडेगा, जहां कं-कर-कंटक-रज-कींचड-पशु-पक्षी-नहीहै, निर्मलवायु अच्छेबाग बगीचे साफजलकी बावडीयां-फ्रिडा करनेकेलिये मौजूद है, जहां पुन्यविपाकसें-तरहतरहकेरत्न-तरहतरहकेनाटक-गीतगान-और-अप्सराके भोगविलास मौजूद है. जहांदेवांगनाकों गर्भ रहनेका कु-च्छकाम नही बलिकन्-उत्पातशय्यामेंही एकमुहूर्त्तभरमें पैदाहोकर जवानी आजाती है, जहां बडी बडीलंबी उमर है, लेकिन ! अप-शोष हे अखीरमें उनकोंभी मरना है, हां ! जिनोने-रागद्वेषवगेरा

सबतरहके कर्म दूर करके देव-पनुष्य-नरक-और-तिर्यंचगतिसें छुटकारा पाया है अलबते ! उन्हींको मरना नही है, दूसरे सबको मरना है तो इसकी चिंताकरना भी फिजुल है, इसलिये मुनासिब है कि-धर्मतर्फ खयाल रखकर किसी चीज पर मोहमत्व नही लाना, इसीमे अपना भला है,

(२०५)

(दोहा.)-

- जैसे कंचुकत्यागसें-विनसत नाही भुजंग,
 देहत्यागसें जीवफुन-तैसे रहत अभंग. १
- जो उपजत सो तुं नही-विनसत सो पिणनाह,
 छोटा मोटा तूं नही-समज देखदिलमांह. २
- तूं सबमें सबसें अलग-न्यारा अलख सरूप,
 अकथकथा तेरीमहा-चिदानंद चिदरूप. ३
- जनममरण जहांहैनही-ईतभीतलवलेश,
 नही सिर आण नरींदकी-सोही अपनादेश. ४
- बेंडी लोहकनकमयी-पापपुन्य युग जान,
 दोनोंसें न्यारा सदा-निजसरूप पहिचान. ५
- युगलगति शुभपुन्यसें-इतर पापसें जोय,
 चारोंगति निवारीये-तव पंचमगति होय. ६
- पंचमगति विन जीवकों-सुख तिहू लोकमझार,
 चिदानंद नही जानजो-ये मोटा निरधार. ७
- मैं मेरा इमजीवकों-बंधन पुरुता जान,
 मैं मेरा जाकों नही-सोही मोक्ष पहिचान. ८
- रागद्वेष जाकों नही-ताकों काल न खाय,
 काल जीत जगमें रहें-मोटा विरुद्धराय. ९

(२०६)-सबकामका मुहूर्त्त लोग देखतेहै लेकिन ! मरनेका मुहूर्त्त कोइ नही देखता, देखे कौन ? मरनेकी आफतही ऐसीहै. मृतकलेवरकी अंतिमक्रिया देशदेशमें अलगअलगतारसें किइ जाती है, लेकिन ! जो जलादेनेकी रसम है सबसें उमदाहै, कइलोग मुर्देकों जमीनमें गाडदेते है, कइ समुंदर-या-नदीमें-डालते है, कइ सूर्यके तापसें सुखानेकेलियेया सडगलजानेके लिये जंगलमें छोड आतेहै, कइलोग मसालाभरके संदूकमें रखते है, कइ मकानमें-और कइलोग इंटचुनेके कमरेवनाकर उसमें सोलादेते है, लेकिन ! सबसें अच्छीरसम आगमें धरकर जलादेना ठीकहै, किसीजमानेमें जंगलमें रखआनाभी लोग पसंदरखतेथे लेकिन ! इसजमानेमें तो जलादेनाही अच्छासमझागयाहै, छोटेछोटे बालकोंकेलिये अबभी जमीनमें गाडदेनेकी रीति जारी है, दो-या-तीनहाथलंबा-खड्डा खोदवाकर उसमें गाडना चाहिये, सूकीभीटी उसपर डालना अत्यंत जरूरीहै, जब मनुष्य मरजाता है नजर नही आताकि-कहां गया ?-नजर कैसे आवे ?-जीव अरुपी ठहरा, और उसके शाय जो कर्मलगे है वे चारस्पर्शी है,-जो-छदमस्थोंके दृष्टिगोचर आनहीसके, जैसे मकानबंदकरके तलघरमें नगारा बजाओ-और-उसकी अवाज बहार निकलआतीहै वैसे जीवभी-भींतके बीचमें होकर निकलजाताहै, अवाजके पुदगल आठस्पर्शी है और आठकर्मके पुदगल चारस्पर्शी ठहरे, फिर दिवारके आरपारहोतेक्याबडीवात है ?-जीवके चलेजाने बाद मुर्देकों नहलाकर अच्छे कपडे पहेना नाचाहिये नइबनाइहुइ बांसकी शय्यापर घासबिछाके मुरदेकुं सुलाना और कंधेपरधरकर मशाणभूमिकामें लेजाना यह

अंतकर्मसंस्कारकी बातें किसीसे छिपी हुई नहीं है, मुर्दे-केपीछे रोतेपीटतेजाना इससेतो गंधर्वलोंगोंको बुलाकर सारंगीतबलेकेशाथ वैराग्यरसके पद गातेहुवे जाना हजार दर्जे अच्छाहै, कइदेशोंमें यह रसमें जारी है, जबकोइ शख्स मरता है तब उसके पीछे इसीतरह गायन करतेहुवे लोग जाते है, हमारी ही समुदायके एकसाधु जब मरगयेथे वैराग्यरसकेपद गातेहुवे लोग उनको लेगयेथे, उसवख्त पाषाणहृदयपुरुषोंनेभी रोदियाथा, मोहनीकर्ममें पढकर रौना इससें यहरौना हजारदर्जे अच्छा है, इससें सबलोगोंकी निगाह धर्मपर बढ़तीहै, अगर सबसंसारीलोग इसी मुजब करतैरहेतो कैसी उमदाबातहो ?-लेकिन ! अपशोषहैकि बुरीरसमको रोकनेवाले लोग इसजमानेमें बहोत थोडेरहगये, बल्किन् ! इसवातको कइमूर्खलोग हंसीमें उडादेयगे, लेकिन ! अच्छेलोगोंको चाहिये कि उनका एकतिलमात्रभी खोंफख्यालमें न लावे. ज्ञानीयोंकी बातको मूर्खलोग हंसीमें न उडावे तो फिर उनकी मूर्खता कैसे जाहिर हो ?

(२०७)-एकनालाइक बेटा जुआरीओंके संग जुआ खेलता था-उसवख्त किसीने आनकर कहा-तेराबाप मरगया, चल !-उसनेकहा तुम तयारीकरो-मैं-आया, थोडीदेरकेबाद फिर आनकर उसशख्सने कहा-चल ! भैया !-तयारीभी होचुकी, तब जुआरी बोलाकि-चलना-तो-इसीरास्तेसें है, तुम लेआओ, मैंभी यहांसें साथहोचलुंगा, महाशय !- एसेबेटेसे तो न होनाही अच्छा है, सबलोगोंको चाहिये कि दुश्मनकोभी तकलीफके वख्त सहायतादेना, दुश्मनकेघरभी शोककेवख्त जरूर मिलनेको जाना चा-

हिये, सबकों मरना है, सुख और आरामका घमंडलावे सो मूर्ख है हां ! अधर्मी-और-नास्तिकोंके पासजाना कुच्छ जरुरत नहो. म-शाणमें पहुंचनेपर काष्ठकी चितामेंधरके-मुर्दों-आगलगादेना चा-हिये, साधुलोगोंका मृतकलेवर होतो उसकों काष्ठके विमान ब-नाकर उसमें बैठाके लेजाना-और-चंदनकेकाष्ठसे अग्नि संस्कार करना चाहिये, तीर्थकरके कलेवरकों अग्निसंस्कार कियेबाद उनके अस्थिक्षीरसमुद्रमें देवोंद्वारा वहनकरादिये जातेहै, उनकी डाढा इंद्रलोगलेजाते है और उनकों रत्नकेडब्बोंमें रखकर पूजते है, अ-गरकोइ ग्रहस्थ अपने मातापिताके अस्थि लाकर तीर्थस्थानमें प-हुचादे तो कोइ हर्जकी बातनहो, तीर्थस्थानमें कोइनदीहो तो उ-समें वहनकरादेना, नदी-न-होतो-तीर्थस्थानकी जमीनमें-पहाडकी कंदरामें-या-गर्तमें-खड्डा खोदकर उसमें रखकर मीटीडालके पुर देनाचाहिये, पूज्यभूमिमें कालांतरसें परिणामांतरहोकर तदाकार होजायगें निहायतउमदाबातहै, मुनिजनोंके मृतकलेवरकों शींगारे हुवे विमानमें बेठाकरजब गृहस्थलोग श्मशानमें लेजातेहै तो-वहां पहुंचनेपर ध्वजावगेरा उतारलेतेहै और अपनेघर इसलिये लेआ-तेहैकि-इससें हमारा अच्छाहोगा, लेकिन ! यहरीति शास्त्रोक्त न-हीहै, इसमेंधर्मकी और गुरुकी बेअदबी होतीहै इसलिये मुनासिब है जिनकों दिया जाता हो उनलोगोंकों देदेना,

(२०८)-मरनेवालेकेपीछें बहोतदिन शोककरना अच्छा न-ही, जिसकेघर मृत्यु हो उसकेवहां बारहदिनतक अशौच जानना, बारहदिनतक उसघरके मनुष्य जिनप्रतिमाकी पूजा न करें, दर्शन दूरसें बेशककरे, मृतकलेवरकों कंधालगानेवाला (२४) पहरतक

जिनप्रतिमाकी पूजा न करे, वेष बदलकर शायजानेवाला (८) पहरतक अशौचमाने, दासदासी जो अपनेघरमें मरेतो तीनदिनका अशौच, जिनदिन बालक जन्में अगर उसीदिन मरजायतो एक दिनका अशौच,—आठवरसका या आठवर्षके निचेका बालक मरेतो आठदिनका अशौच. जितनेमहिनेका गर्भ पडे उतनेदिनका अशौच, हाथी-घोडा-उंठ-उंठणी-गौ-भैस-कुत्ता-बिल्ली-अपनेघरमें मरे तो जबतक कलेवर बहार न पहुंचायाजाय तबतक अशौच, साधुलोगकालकरजाय वहां एकदिनकाही अशौच जानना, पुरुषके पीछे सतीहोना यानी जीतेहीउसकेसाथ जलमरना बडापाप है, मोहनीमें पडकर कइस्त्रीयें इसतरह जलमरी है लेकिन ! यह महा मूर्खताकाकाम उन्होंनेक्रिया है, किसीमतावलंबीयोंके धर्मशास्त्रमें यह बात नही लिखी-न-मालुम यहरसमकहांसे चलपडोथी, कितनेककहतेहै सतीहोतेवरुत उसकों सत चढजाताहै, उसवरुत अगर वो स्त्री किसो बंदकियेहुवे मकानकों या तालेकों हाथ लगादेतां उसीदम खुलजाता है, (जवाब.) यह बात विल्कुल गलत है, कषायके उदयसे मरनेवली और उसमें सत आजाय यह समझना वेवकुफोंका काम है, अच्छेलोग इसबातकों कभी नही मानसकते, आजकलतो बहोतही अच्छीबातहुइहैकि-यह रसमही उठा दिइगइ, कइवातमें स्वार्थीलोगोंने अपना मतलब बनालियाहै कि मरनेवालेकेनामसे हमकों जो कोइ पलंग-थाली-लोटा-पौशाक-और-गौ-बगेरा देयगें उनके पितरोंकों स्वर्गमें-वें-चीजेमिलेगी, लेकिन ! यहवात अच्छेलोगोंने विल्कुल झूठ फरमाइ, हां जोकुच्छ वो मरनेवाला अपनेअंगसे करगयाहै वहीधर्म उसके साथ गया जान-

ना,—याउनकेरुवरु जोकुच्छ धर्मकार्यमें खर्चकरना कहदिया हो और उसको उसवख्त सावधानीहोनेपर अपनेदिलसे उसवातकी अनुमोदनाकिइहो—तो—उसका—पुन्य उसवख्त वोबांधकर शायलेगया जानना, विदून कियेकराये अनुमोदे—आत्माको कर्मबंधनही होता, मनवचन विना—एकीलीकायासे कियाहुवाकर्म—इरादा नहोनेसे आत्माके साथ बंधकोप्राप्त नहीहोसकता, बेटे अगर उसवख्तके निकालेहुवे धर्मद्रव्यको पीछेसेभी खर्च करे तो उनकादोषहै, लेकिन! यहां जो उनकेनामसे दूसरोकोदेवे वोउसकोस्वर्गमें जाकर मिलेयसमझनाबडोभूलहै,

(२०९)—बेलाजियमदेशमें मुर्देको जैसीधूमसे लेजाते है वैसी धूम दूसरेदेशोंमें विवाहके वख्तभी नही होती होगी, मरनेकीखबर कुटुंबीनातेदारोंको नोटिशद्वारा दिइ जाती है, और जब—वें—लोग आतेहै,—तो मरनेवालेकेघर अपने अपनेनामके क्यार्ड देकरआते है, मुर्देकी गाडी गहनेकपडोंसे खूब सजाइजाती है, हांकनेवाला टोंपी चोगा पहनकर बैठता है, गाडीमें कालेघोडे जोतेजाते है, सबसामान काला होताहै, गाडीकेपीछे दोचारआदमी नोकदार टोंपी और कमरतक झंडीयोके फरहरे लगाये चलते है, टोंपीयोपर काले तुरे फरफरातेरहते है, इनकेपीछे जितनीगाडीयांहो मरनेवाले कीतारीफ है, किसीस्त्रीका प्यारा पुरुष—या—स्त्री—मरजाय उसके जलानेको स्त्रीकेबदले उसकापति जाता है, गाडीकेसाथ जोलोग घोडेपरचढकरजातेहै रास्तेमें चुरुटपीतेरहते है. देशदेशकी रसम न्यारी है, कहांतक बयानकरे ?—हरशखशको यादरखना चाहिये एकदिनमेरेशरीरकी खाखहोजाना है, कहां पैदा हुवे और न मालुम कहां मरनाहै, जिनके जन्मसमय किसीने खुशीनही मनाइ और मरनेके वख्त किसीने रोयानही—ऐसेशखशभी दुनियामें ला-

खोंकरोडें होगये और जिनके जन्ममरणमें अद्वैत हर्षशोकसें संसार चकित होगया ऐसेभी लाखोंकरोडें होगये, किसकिसकी गिनती करे ?—छत्रपति और कंगालपति—दोनोंकेलिये मरनेकी सडक एकसीहै, अगर दुनियामें मरना न होता तो न मालूम लोग क्या क्या अन्याय कर गुजरते ? जो-जो-राजेमहाराजे दुनियाभरमें नही समातेथे तीनहाथजमीनमें समागये, जिनपर चवरछत्र होतेथेउनपर गोंदड पैशाव करते है, संबंधीलोग मीटीके ढेंलेकीतरह मुर्देको छोडकर पीठदेके चले आतेहै कोइ किसीके साथ नही जाता, समझ शकोतो समझलो मोहममता और घमंड किसपर करते हो, ?

(२१०)—जोशरूख बिना औलाद मरगया हो—उसकी दौलतका वारीसकौनहो ?—उसकावयान अर्हन्नीतिके कानून मुआफिक यहां लिखाजाताहै,—जैनशास्त्रोंमें पुत्रपांच तरहके फरमाये, दोतरह के मुख्य और तीनतरहके गौण—

(अर्हन्नीतिका—दायभाग प्रकरण.)

औरसो दत्तकश्चैव—मुख्यौ क्रीतः सहोदरः

दौहित्रश्चेति गौणास्तु—पंचपुत्रा जिनागमे. ६८

धर्मपत्न्यां समुत्पन्नः—औरसो दत्तकस्तु सः

यो दत्तो मातृपितृभ्यां—प्रीत्या यदि कुटंबजः ६९

ऋयक्रीतोभवेत् क्रीतः—लघुभ्राता च सोदरः

सौतःसुतोव्रवश्चेमे पुत्रा दायहराः स्मृताः ७०

(अर्थः)—औरस—और—दत्तकपुत्र ये—दोनों मुख्यके भेदमें दाखिलहै द्रव्यदेकर लियाहो—सो—क्रीत—और—छोटाभाइ तथा लडकीका लडका ये तीन—गौणपुत्रकेभेदमें दाखिल है, निजस्त्रीसें

पैदाहुवाहो-उसकानाम औरसपुत्र है, मातापिताने खुशहोकर दियाहो उसकानाम दत्तकपुत्र है, दत्तकके ग्रहण करनेके पीछे आत्मजपुत्रपैदाहोजायतो पघडी आत्मजपुत्रके बंधेगी, और दत्तककों ज्यायदादसें चोथाहिस्सा मिलेगा, अगर पहिलेसेंही दत्तकपुत्रकों पघडी बंधादिइ गइ होतो दोनोंकों बराबर भाग मिलेगा, निचे लिखेहुवे आठतरहके पुत्र जैन आमनायमें हिस्सेदार नही माने, दूसरेमतवालोंने माने है.

पौनर्भवश्चकानीनः प्रछन्नःक्षेत्रजःतथा,

कृत्रिमश्चापविद्धश्च-दत्तश्चैव सहोढजः, ७१

अष्टावमी पुत्रकल्पा-जैने दायहरानहि,

तीर्थीतरीयशास्त्रे च-कल्पिताः स्वार्थसिद्धये, ७२

(अर्थः)-भर्त्तारकेमरेबाद अन्यसें उत्पन्न हुवाहो सो पौनर्भवपुत्र-कवारीसें पैदाहुवाहो सो कानीन त्र-भर्त्ताकेजीतेहुवे परपुरुषसें पैदाहुवाहो सो प्रछन्न पुत्र-देवरवगेरासें पैदाहुवाहोसो क्षेत्रज ग्रामवगेराआजीवकाका लोभदेकर पुत्र बनालिया हो सो कृत्रिम मातापिताका-निकाल दिया हुवा जिमतिस उपावकरके पुत्रबना लिया हो सो उपविद्ध-मातापिताने छोडादियाहो-या-उसक माता पिता मरगये हो-वो-खुदआकरपुत्र बने सोदत्त-और-कन्या अवस्थामेही गर्भवतीहोगइहो-उसकाविवाहहुवेबाद चन्म हो सो सहोढजपुत्र-ये-आठतरहकेलडके जैनशासनमें प्रमाणीक नही गिने, इसीलिये इनकाहिस्सा नहीहोता, मिताक्षरावगेरा अन्यमतावलंबीयोंने इनकों हिस्सेदार फरमाये है, लेकिन ! यह बडी अंधेरकी बात समझना चाहिये, इनका हिस्सा किसहेतुसें होसकता है सो

बतलाना चाहिये, लेकिन ! क्या बतलावे ?—जिनके घरमें सवामन-
तैल होतेहुवेभी अंधेरारहताहो उनको कहांतक तारीफ करे ?—

(३११)—कौइशख्स मरजायतो उसकेवाद उसकी स्थावर
जंगम मिलकतपर हक किसका पहुंचे उसकावयान—अहंन्रीतिके
काननमुजब—ऐसेहै,

पत्नीपुत्रश्चभ्रातृव्याः—सर्पिंडश्च दुहितृजः

बंधुजो गोत्रजश्चस्व—स्वामी स्यादुत्तरोत्तरं, ७३,

तदभावेच ज्ञातीयै—स्तदभावे महीभुजा

तद्धनं सकलं कार्यै—धर्ममार्गे प्रदाय च, ७४,

(अर्थः)—पुरुषकेमरनेवाद उसकीकुलज्यायदादकी मालकी-
न अवल उसकी स्त्रीहै, दूसरेनंबरमें उसका बेटा—उसक नहोनेपर
भतीजे—चौथेनंबरमें सर्पिंडकहनेसें उसकी सातपीठीतककाभाइ पां-
चवेनंबरमें बेटा—छठेनंबरमें बेटाकाबेटा—सातमेंनंबरमें चौदहपीठीत-
कका भाइ—आठमेंनंबर गोत्रज—नवमेंनंबर ज्ञातिवाले—और जब वें-
भी नहो—तब—उसद्रव्यको राजा लेकर धर्मकाममें लगादेवे, अपने
खजानेमें नडाले, पतिकेमरनेवाद विधवास्त्रीकों अखतियार हैकि
पतिकी कुलज्यायदाद अपनेतालुकरखे, अगर पुत्र किसीकाममें
खर्चकरना चाहेतो माताकी सलाह विदून नकरसकेगा, माताकी
मौजूदगीमें दत्तपुत्रकों या आत्मजपुत्रकों अखतियार नहीकि—स्था-
वर जंगममिलकतकों दान—या—विक्रय करसके, मिताक्षरादिवगेरा
अन्यमतावलंबीयोके ग्रंथमें पुत्रके अभावमें स्त्रीकोंपतिकी ज्यायदा-
दकी मालकीन होना लिखा, लेकिन ! यह अन्याय है, स्त्री नि-
राधार होजाय और उसकों धनदौलतकाभी आधार न दियाजाय

तोफिर उसे आश्रय किसचीजका रहेगा, इधर पति मरगया और इधर लडकोंने धनमालका अखतियार लेकर उसकों निराधार करडाली, कहिये ! यह अन्याय है या नहीं ?-अगर कहाजायकी-स्त्रीकापुन्य-पुरुषके पुन्यसें कमकहा फिर पुत्रकोंछोडकर स्त्रीकों पतिकेधनकी अधिकारिणी क्यौं किइजाती है ? (जवाब.)-पुन्य अलवते ! स्त्रीका कमहीहै लेकिन ! पतिकी मिलकतमें पुत्रसें पहिले स्त्रीका हकपहुचना न्याय है, क्यौंकि-जबपतिकेजीतेहुवेभी पतिकीअर्द्धांगीथी तो पीछेसें उसके धनमालकीमालकीन क्यौंनहो?

(२१२)-अगर कोई संतानरहित पुरुष बीमारीवगेरासें दुखीहोकर अपने घरके बंदोबस्तकेलिये वसीयतनामा लिखनाचाहेतो उसकेनाम लिखसकता है जो स्त्रीकी आज्ञापालनेलाइकहो, पतिकेमरनेबाद अगर वसीयतनामावाला बदनीयतहो जाय तो-वो विधवास्त्री उसवसीयतनामेकों खारीजकर दूसरेकेनाम दूसरा वसीयतनामाकरसकती है, धर्मकामकेलिये या ज्ञातीव्यवहारकेलिये पतिकी मिलकतको गिरवीरखसकती है और बेचभी सकतीहै आत्मजपुत्र-या दत्तपुत्र विनयवान् मातृभक्त और विद्याध्यनतत्परवगेरा गुणोकरके सहित है तोभी-वो-कुलागतव्यवहारके शिवाय-ज्यादे काम माताके हुकमबिदुन नहीं करसकता, अगरसवालकियाजायकि-माता-उसे-न-चाहतीहो-और हमेश नाराज रहती हो-तो क्याकरनाचाहिये ?-(जवाब.) उसका हुकम उठाना वे-फिर-कैसे-नाराजरहेगी-अगर कहाजायकि-वो-झूठेधर्मकीश्रधावाली है और लडका सच्चेधर्मकाश्रद्धावान् है-तो क्याकरनाचाहिये. (जवाब)-धर्मकामकों छोडकर दूसरेसंसारी

काममें मुनासिब है माताकेहुकम मुआफिक करतारहे, मातापिता-
कों अखत्रियार है कि-अगर-आत्मजपुत्रभी-अपनेसैं विरुद्धहोजाय
या-धर्मभ्रष्टहोजाय तो उसकों निकालदेवे और दूसरापुत्र रखलेवे,
दत्तपुत्र लेकर उसका विवाह-करदिया हो-और-कुल्लअधिकारभी
देदियाहो-तोभी-अगर-मातापितासैं प्रतिकूल होजाय तो अधिका-
रहै मातापिताकों उसे बहारनिकालदेवे, अर्हन्नीतिका फरमानाहै
कि-उसका अभियोग राजाकोंभी मुननेका अधिकार नही,

[अर्हन्नीतिका दायभागप्रकरण.]

पितृभ्यां प्रतिकूलःस्यात्-पुत्रोदुष्कर्मयोगतः

ज्ञातिधर्माचारभ्रष्टो थवा व्यसनतत्परः ८५

संबोधितोपिसद्वाक्यै न त्यज्येद् दुर्मतिं यदि

तदा तद्वृत्तमाख्याय ज्ञातिराज्याधिकारिणः ८६

तदीयाज्ञां गृहित्वा च सर्वै कार्यो गृहात् बहिः

तस्याभियोगः कुत्रापि श्रोतुं योग्यो न कर्हिचित् ८७

इसका अर्थ उपर आगयाहै, जबपुत्रकोंभी अगर प्रतिकूल
होजायतो घरसैं निकालदेना फरमाया तो-चेल-नोकर-पूजारी-
और सेवकोंकी क्यागिनती रही?-इसीकानूनसैं उसकाअधिकार
खोसकर निकालसकते हो, कितनेक मारवाड-मेवाड और माल-
वेके श्रावक-सेवकलोंगोंकों अधिकारीसमझकर सिरपर चढादेते
है कितनेक एसेभीहै कि-जो-सेवकोंकों नमस्कार करतेहै, कित-
नेककहते है सेवकलोग हमारेहाथकी रेखाहैकैसेदूरहो? लेकिन! यह
नहीमालूमकि-हमारे धर्मप्रवर्त्तकतीर्थकरगणधर क्या फरमाते है ?
कइजगह सेवकोंने जैनमंदिरमें अपने अपने देव धरदिये है, कित-

नेक सेवकोने जैनधर्मही छोड़दिया है, सौचनेकी जगहहैकि जब जैनधर्मही उन्होंने छोड़ दिया तो फिर उनका जैनीयोंके साथ किसवातका सगपन है ?—अगर कहाजायकि—हमारेबड़े जैनीयोंके साथ वटलेहै. (जवाब.) क्यों वटले ?—किसनेकहाथाकि—तुम—जैनी बनो ?—अगर कहाजाय—जैनाचार्योंने उपदेश दियाथा जिससे हमजैनी बने—(जवाब.) तो—फिर जैनधर्मपालो, और अपनी मेहनतसे अपना गुजरा करो,—किसजैनाचार्यने तुमको परवाना करदियाहै कि—तुम—जनसंघसे हकदारहो ?—अगरकहाजायकि—हम लोगोंने—जैनमंदिरोंकी पहिले सेवा किइथी—मूर्त्तिकों सिरपरलेकर फिरेथे. (जवाब.)—जोनोकरहोताहै मालिकका कामकरताही है, उसकी एवजीमें नोकरी पाइथी. लेकिन ! हकदार कहांसें बने?—कइजगह सेवकलोगोंने मारवाड मेवाडवगेरा देशमें मंदिरमूर्त्तिपर दावा करके मालकी जाहिरकिइ फिरभी मूर्खलोगोंने उनको निकालकर अलगनहीकिये बडीभूल है. इसबातमें गुजरातके जैनसंघकी तारीफ करना चाहियेकि—उनोंने पहिलेहीसे सेवकोंके पाषंडकों अलग करदिया. जब तीर्थकरगणधरोने जैनकानूनमें खुलेखुला बयानकरदियाकि—बेटाभी—अगर बखिलाफ चलेतो उसको निकालदेना—फिर—दूसरोंकी क्या गिनती रही ?—कानून सच्चे सच्चा बयान फरमाता है फिरभी अकलके अंधोंको नही सुझता क्या कहाजाय, ?

(२१३) स्त्रीभी अगर पतिसें बदलजाय तो कानूनफरमाताहै निकाल दो, बदचलन औरतकेलिये रोटीकपडेंकाभी दावा नही है, कइविषयासक्तपुरुष स्त्रीके बदचलनचलतेहुवेभी उसकी

तावेदारी उठातेहै, और कहते है क्या करे ? स्त्रीकों कैसे निकाले ? लेकिन ! कानून फरमाता है निकालदेना चाहिये, जोलोग नही निकालते है और पश्चात्ताप करके बैठेरहते है ज्ञानियोंने उनकों मनुष्य नही जानवर फरमाया, कोइपुरुष विनापुत्र मरगया और उसकी स्त्रीने दत्तपुत्रलिया, वो पुत्र पिताका कुछ अखतियार पाकर कवाराही मरगया तो माता उसदत्तपुत्रके नाम दूसरालडका गोंद नही बैठासकती, किंतु अपने गोंद लेसकतीहै, सासुकी मौजूदगीमें मरेहुवे बेटेकीबहूकों कुलागतद्रव्यमें रोटीकपडेके शिवाय दूसरा कुच्छ अखतियार नही है, पुत्र गोंदलेना वगेरा सभीकाम सासुके मनोनुकुल करनेंमुनासिब है, क्योंकि-सासुका अधिकार बडाहै, मातापिताकेमरनेबाद पुत्र अपनेअपने हिस्से अलगकरना चाहे तो सबकेहिस्से एकसरखे होने चाहिये, जीतेहुवे हिस्साचाहे तो पिताकी इच्छा मुआफिकहोगा, मिताक्षरावगेरा अन्यमतावलंबीयोंके ग्रंथमें कइतरहके मतभेदहै, भाइयोंमें जो भ्राता अविवाहित हो उसकाविवाहकरके वाकी वचाहुवाधन सबभाइ बराबरहिस्से बांटलेवे, वहोतसें भाइयोंके बीचमें एक-या-अनेक बहेनहो-तो-सभीभाइ अपनेअपने हिस्सेसें चोथा हिस्सा निकाल कर उनका विवाह करे, भाइयोंमेंसें कोइभ्राता पिताकेधनकों न खर्चकर नोकरीकरके लडाइमें वहादूरीपाकर-या-अपने एलमके जोरसें लाभ उठाकर जो कुछ धनदौलत हासिल करे उसमें दूसरेभाइयोंका कुछ हक नही पहुंचसकता, कोइदोस्तसें इनाम पावे, विवाहमें सुसरालसें-जोकुच्छधन पावे उसमेंभी दूसरे भाइयोंका कुछहकनहीपहुंचता. पिताका डूवाहुवा धन पिताने या

भाइयोंने नही निकाला उसकों अपनीताकतसें किसीभाइकी मदतविना निकाले यानी हासिलकरे तोभी उसमें किसीभाइका हकनही पहुंचता, मिताक्षरा वगेराग्रंथोंमें अनेकमतभेद है, विवाहितापुत्री मरजाय और उसकों मातापिताने जोकुच्छ धन दिया हो उसके मालिकउसलडकीके मातापिता नही किंतु पति उसका मालिकहै, जिसस्त्रीकों विवाहमें-या-विवाहकेपीछे-गांवनगर-या-गेहनेकपडे जोकुच्छ उसके मातापिताने दियाहो-चाचाने-बडी बहेनने-भूआने-मासीने-भाइने-या-उसकेपतिने-जोकुच्छ दियाहो-वो-उसीका है, किसीका उसमें दावानही, दुर्भिक्षबगेरामें आपदा आनपडे उसवरुत अगर वोरजामंदीसें देवे तो लेना बनसकताहै, हां ! पतिको अखतियारहै कि-संकटकके वरुतस्त्रीसें मांगलेवे, स्त्रीका भी धर्महैकि-संकटकवरुत साहायतादेना, जुआवगेराखोटेकामोंमें धनहारजाना और स्त्रीके गंहेनकपडेउतारलेंनायह लाइकवर आदमीका कामनही.

(२१४) मातापिताकी मौजूदगीमें आत्मजपुत्र भी-कोइ-ज्यायदादकों-गिरवी-या-विक्री नहीकरसकता, कोइ भ्राता दीक्षालेकर साधुहोजाय तो उसकी स्त्रीको-स्त्रीधन-शिवाय अविभक्तधन जो उसके जेठदेवरोकेपास मौजूद है उसमेंसें उसकेपतिके हिस्से मुआफिक मिलनेका हक है. भाइयोमेंसें बडाभाइ पुत्ररहितहो-तो-वो-ज्यायदादमेंसें किसीकार्यकेलिये विदूनभाइयोकी-या स्त्रीकी-सलाह-धन नहीदेसकता. अगर वहोतसें भाइ हो और उसमेंसें कोइभाइकी स्त्री-न-हो-और वो मरजाय-तो उसका धन उसकेभाइ या भतीजे समभागकरके बांट लेवे. वहोतसे भाइयो-

मेंसें कोईभाइ पंगु-उन्मत्त-या-अंधत्वादिदोष युक्तहो तो उसका भाग उसकेताल्लुक न करके अपनेपास रखे-और-सबभाइ मिलकर उसका पालन करे, जिससें उसकों तकलीफ नहो और उसकाधनभी कोई ले न जाय. पतिकी मौजूदगीमें जो गेंहना स्त्री पहनेहो-या-उसीके पासहो उसकों कोई नही लेसकता. विधवा स्त्री अपनेपतिका धन जोकि-सासु सुसरके कबजेमें हो उसकों नही लेसकती. किंतु पति जीतेजी जो देगयाहो उसीहीमें उसका अधिकार है, अगर वो विधवा स्त्री लडका गोंदलेना चाहेतो सासु सुसरके हुकम विदून नही लेसकती. मातापिता जो चीज जिस दूसरे शख्सकों-या-अपने कुटुंबपरिवारकों देजाय उसकों बेटा नही लेसकता,

(२१५) जहां यवन-अधर्मी-कसाइ-वैश्या-नट और-जुआरीलोग ज्यादा बसते हो उसमहोलेमें अच्छेलोगोंकों निवासकरना ठीकनही. दुर्गंधवालीजमीनमें-बसना पहिलेलेखचूकेहैकि-नरककुंडमें पडना एक सरखा है. जिसजमीनके नीचे मनुष्यका हाड डटाहुवाहो वहां बसनेवाला सुखीनहीरहता. गधेका हाड डटा हुवा हो तो राज्यभय-कुत्तका हाड होतो संतानकी हानि-और-जहां गौका हाडहोतो जानवर उसघरमें वृद्धि न पावे, जब कभी तुमकों धर्मचर्चाकरनेका काम पडे तो-वादी-प्रतिवादी-सभादक्ष-दंडनायक-और-शाक्षीद्वारा कियेकरो, शुष्कवादकरनेमें कोई फायदा नही. जिसराजाके राज्यमें न्याय नहो वहां रहना जिंदगीकों केदखानेमेंडालनाहै, एकराजाकी अदालतमें एकशख्सने इसबातकी नालीशकिइकि-इसने मेरी स्त्रीकों-इतना मार मारा जो उसके पांचमाहिनेका गर्भपात होगया, मूर्खराजाने न्यायकियाकि-अच्छा !

मुद्दईकी औरत तबतक मुद्दाइलेके घरमें रहे जबतक उसको पांच महिनेका गर्भ नहोजाय, धन्यहै राजासाहब ! खुब न्यायकिया ! ऐसे राजाओंके कोठारीभी ऐसेही होतेहोंगे, एकदफे ऐसे अकल मंद कोठारीसाहब राजाजीके पास बैठे हुवे थे, नोकरने आकर कहा, चलिये !-अनाजके कोठोंमें आगलगी है, कोठारीजी हसकर बोले, लगाकरे-कुंचोतो मेरेही पास है, किसरस्ते होकर-वो मकानमें घूसेगी ?-कोठारीजी गयेनही-और-वहां अग्निने सबकाम पुराकरदिया. धन्य है! ऐसे कोठारीयोको कहांतक तारीफकरे.

(२१६)-रात्रीको सोतेवख्त-देवगुरुका स्मरणकरके सोना चाहिये, सब पापारंभसे निवृत्ति सूचक त्यागप्रत्याख्यानकरके जो शखश सोवेगा अगर रात्रीमें मरना भी होजाय तोभी अच्छी गतिको जायगा, स्त्रीसे अलगहोकर दूसरीशय्यामें सोना बलवृद्धि होनेका हेतु है, सारीरात स्त्रीसे मीलकर सोना ज्ञानीयोने अच्छा नहीं फरमाया, ऐसेस्त्रीकोभी विवेक रखना चाहिये, कामभोगमें जैसा रागके परिणामसे पुरुषको पापलगता-वैसा-स्त्रीकोभी लगता है, स्वप्नमें अगर किसीस्त्रीको या पुरुषको वीर्यपात होजाय तो उसको अतिचार दोष लगता है, उसके निवारणकेलिये साफहोकर सवेरे कायात्सर्ग (१०८) स्वासोत्स्वासतक करना चाहिये, अनादिकालसे जीव अज्ञाननिद्रामें सोता हुवा पडा है, क्रोधादि दुश्मन उसे खराब कररहे है, ज्ञानी लोग ज्ञानरूप खड्गकेप्रहारसे जागृत करते है. [अनुष्ठुग्वृत्तम् .]

क्रोधमानमायालोभा-देहे तिष्ठंति तस्कराः

ज्ञानखड्गप्रहारेण-तस्मात् जागृत जागृत. ९

मातानास्ति पितानास्ति-नास्ति भ्राता सहोदरः
 अर्थो नास्ति गृहंनास्ति-तस्मात् जागृत जागृत. २
 जन्मदुखं जरादुखं-मृत्युदुखं पुनः पुनः
 संसारसागरे दुखं-तस्मात् जागृत जागृत. ३
 आशा हि लोकान् वध्नाति-कर्मणा बहुचिंतया
 आयुः क्षयं न जानासि-तस्मात् जागृत जागृत. ४

निद्रा एकतरहकी विश्रांतस्थिति है. निद्रामें प्राणी अचेतन पडा रहता है. रक्त भ्रमण और श्वासोत्श्वास-ये-दोकार्यही होते रहतेहै. नवघंटे-या-छघंटे रातकों नींद नलिइजायतो वदहजमीरोग पैदाहोजाता है. जिसजिसतरहके स्वप्नआते है उसमें कौनसा स-चा और कौनसा झूठा-इसका बयान इसीकिताबके अष्टांगनिमित्तविषयमें देखो. आतीहुइ नींदकों मतरोंकों. जहां नींदलेनाहो वहां साफ हवा आनेका बंदोबस्त जरूर रखो. खालीजमीनपर सोने-सें बीमारी पैदाहोतीहै. जमीनपर या पलंगमें नरम बिछौना डालकर सोना चाहिये. कइलोग सोतेवरुत अपने सब शरीरकों ढांकलेतेहै मुखकोंभी खुला नहीरखते, इससे बुरीहवा जो उत्स्वास द्वारा शरीरसें बहार आतीहै उसीका अंश फिर स्वासलेतेवरुत भीतर जाताहै, थोडीदेर ऐसाहोनेपरहर्ज नही लेकिन ! बहोतदेर ऐसाहोनेसें बीमारीआतीहै, इसलिये सोतेवरुत मुखकों खुला-या-आधा-खुला रखेकरो, रातकों जल्दी सोना और सवेरकों जल्दी जागना सुखकी निशानीहै,

(२१७)-पहिलेजमानेमें मनुष्योंकी उमरवडीवडीलंबी होती-थी, ज्यूंज्यूं उतार होतागया उमरभी कमहोतीगइ, कालकाभी उ-

तारचढाव अकसर होताहीहै, जैसे गाडीकाचक्र उपर नीचे चढता उतरताहै वैसेकालचक्रभी समझनाचाहिये, पहिलेजमानेकी बाते जाने दिजिये ! आजकल मनुष्योंकी उमर बाहुल्यतासे देखीजाती है तो (१२०) वर्षके अंदाजपर है, कइदेशोमें दोसे देढसेवर्षके मनुष्यभी अबहै लेकिन ! थोडोंकी गिनती नहीकिइजाती, जो बातकही जातीहै बहोतोंकी अपेक्षा किइजातीहै. तुमकों अगर अखबारपढनेका शौकहै तो कइजगह पढाहोगाकि-बडीबडी उमरवालेभी शरूश देशांतरमें है. जापानदेशमें एकआदमी इसवरख्त ऐसा मौजूद है जिसकी उमर (१३५) वर्षकी है. उसकी स्त्रीकी (१३३) वर्ष और बडापुत्र (१०८) वर्षका है, इसीलिये कहसकते है कि-१२० वर्षकी उमरजो कहीगइ है वो बहोतोंकी अपेक्षा समझना. आजकलकेवरख्तमें स्त्री (५५) वर्षबाद-और-पुरुष (७५) वर्षबाद निर्बीज होजातेहै. (यानी) उनके रजोवीर्यमें संतानपैदाहोनेकी ताकत नही रहती. कोइकोइकों सो (१००) वर्षतक लडके पैदाहोते है लेकिन ! बहोतसे लोगोंकों तो वही बातहोतीहै जो उपर लिखचूके, संभोगकरतेवरख्त पिताका जैसा मन होगा लडका वैसा स्वभाववालाहोगा, कइ हसमुखे देखतेहो यही सबवहै उनके मातपिताउसवरख्त खुशमिजाज थे. आजकल हाथी (१२०) वर्ष जीतेहै. घोडे (४८) वर्ष, गधे (६०)-(६४) वर्ष, कुत्ते (१२) वर्ष, हिरन-शियाल-(२४) वर्ष, बिलाव (१२) वर्ष, हंस (१००) वर्ष, तौता (१३)-(१३) वर्ष, गेंडा (२०) वर्ष, बुगला (६०) वर्ष, सांप (१२०) वर्ष, उंदरा दोवर्षसे लगाकर (२०) वर्ष, सप्तावारां चौदावर्ष, चींटी (३)वर्ष, सूअर (५०) वर्ष, उंट-गौ-भेंस(२५) वर्ष

जू-तीनमाहिने, वींछु-छमाहिने कागडे (१००) वर्ष, सिंह (१००) वर्षसें ज्यादाे जीता है, बडेमगरमच्छभी जो मध्यसमुंदरमें होते है लंबी उमरवाले होतेथे.

(२१८)-आजकलके हरेकतंदुरस्तमनुष्यके शरीरमें दशशैर लोही-पांचशेर चरबी-दोशेर मलमूत्र-एकीसतौलेपित्त-दशतौले वीर्य-और-दश तोले कफ रहताहै. भारीशरीरवालेके मांस ज्यादा-पतलेकों कम, लेकिन ! यहवात एकअंदाजनसें कही गइ है, सोभी लडके और बुढेकों छोडकर जवानकी बनीस्पत जानना. पहिलेजमानेमें बडाशरीरथा उसमुआफिक गिनतीथी अबके लोगोंकी इसजमाने मुजब है, कइदेशके आदमीकमजोर और कइ देशके जोरावर होते है, लेकिन ! हां इतना कहसकते है पहिले जमानेमें जो ताकत-और-धनदौलतथी इनदिनोंमें नही रही. इस्वीसनसें (३३१) वर्ष पहिले युनानके बडेबादशाह सीकंदरने जब भारतमध्यखंडपर चढाइ किइथी उसवखतकेवयानमें-वो-लिखता हैकि-मगधदेशका राजा-नंद-पुरीतेजीपर था, उसकी फौजमें छलाखयोद्धे पैदल थे, बीसहजारसवार-और-नवहजार हाथीथे. चीनके मुसाफिरलोग जब भारतमें शैरकों आयेथे उनोंने भी अपने इतिहासमें भारतकी तेजी लिखी, जगहजगह सडकें-वृक्षांकी श्रेणियां-जगहजगह धर्मशाला-थी, हजारांहमंदिर और हजारांह मूर्तिं सुन्नेचांदीकी मौजूदथी. अनाज-घी-गुड-मिथ्री-मेंवा-मिठाइ इतने शस्ते वीकतेथे जो आजकलके जमानेसें आठदसगुने ज्यादाे थे. कइनगरीयां ऐसीथी जिसमें तीसतीसहजारतमोलियोंकी दुकानथी,-जहां इतने तमोली होंगे वहां शौकीन कितनेहोंगे इसका

खयाल करना चाहिये, कोटकांगडोंकी लूटमें महमूद गजनवोने (२०७) मण सुन्ना-(२००७) दोहजारमण चांदी-(२०) मण जवाहिरात लूटा, मथुरासें पांचमूर्ति फक्त सुन्नेकी-जिसमें एकमूर्ति चारमण पक्केकोथी लूटी-चांदी इतनी लूटी जो (१००) उठोंपरे लादीगइ थी, कइजगहतीर्थोंमें मंदिरोंके थंभोपरसें जवाहिरात इतना लूटा जो उठाना मुश्किल था. शाहबुदीनगौरीने हजारंहमांदिर तोडवा दिये, शम्शुदीनअलतिमशकि-जिसने मालवेमें धारानगरीकेपास मांडवजीके जैनमंदिर तोडें, जगहजगहसें सुनाचांदी और जवा हिरात लूटा-इसलिखनेसें मतलब कहनेका यहहैकि-पहिले जमा नेमें देश रिद्धिसिद्धिसें भराथा. बडेबडे एलमदार और आकाश गामिनीविद्यासिद्धपुरुष मौजुदथे, ज्यूं ज्यूं पुरानेवख्तकी तलाश करोतो निःसंदेह मालुम होताहै कि पहिले जमानेमेंदेश-पुन्यवान जीवोंसें भरपुर था, मानवधर्मसंहिताका वाच्यार्थ पूराहोताहै, इसमें सवरेसें लगाकर रात्रीतक जोजोकार्य करनेमुनासिब थे बतलादिये गये-यंतो शास्त्रसमुद्रकापारनही, लेकिन ! हां ! जो बडेबडे विषय जाननेयोग्य थे बयानकियेगये, इतना और रहगयाकि-जातबी-रादरी-या-धर्मसें भ्रष्ट होगया हो उसको क्या दंडप्रायछितदे-ना-सो-अर्हनीतिके कानुनसे यहां लिखना था-लेकिन! विस्तार बहुत बढ गयाहै इसलिये नहींलिखा. दिनचर्या-रात्रीचर्या रितुचर्या-वर्षचर्या-और-जन्मचर्या इसमेंठीकठीकतोरसें लिखीगइ, ज्योतिष मंत्र-और-मतमतांतरके भेद चोथेतरंगमें बयान करेगें.

इतिश्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-
शांतिविजयजीमहाराज-विरचित-मानवधर्मसंहिता-
वा-शांतसुधानिधिग्रंथका-तीसरा तरंग समाप्त,-

[ज्योतिष शास्त्रका वयान.]

१-ज्योतिर्विद्या-एकदिव्यचक्षु है, जितनाफायदा मातापिता और मित्र नही पहुंचासकते उतना ज्योतिर्विद्या पहुंचासकती है तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करण-और राशिके नाम पहिलेकंठकरना चाहिये, चंद्र-सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-और-शनिवगोराग्रह किसकिस नक्षत्र और राशिपर कषकव आते है, उदयअस्तकव होते है, इसकी पहेचानभी सिखनाचाहिये, इष्टशोधनकरके लग्न निकालना और उसपर ग्रहोंको स्थापनकरना जिसको इतना आज्ञायगा ज्योतिर्विद्या रुपकिलेमें उसकाप्रवेश ठीकतोरसे होसकेगा.

२-गणितविद्याप्रकीर्णकमें नक्षत्रकेसप्तदोष इसतरहवयानाकियेहै सुन लो, (१)-सूर्यअस्तहोते वरुत जिसका उदयहुवाहो उसको संध्यागतनक्षत्र बोलतेहै, इस रोज कोइकार्य शुरुकियाजाय क्लेश पैदा होगा, (२) जिसनक्षत्रपर सूर्य वैठाहो उसको रविगतनक्षत्र बोलते है, इसमें जोकार्य प्रारंभकियाजायगा पूरा नहोगा, (३) विटेरनक्षत्रमें फतेह नहोगी.(४)जिसपर क्रूरग्रह वैठाहो उसको सग्रहनक्षत्र बोलते है, इसमें कोइकामका मुहूर्त्तकिया जायगा तो विघ्नहोगा, (५) जिसपर सूर्यवैठा हो उसकेपीछाडीके एकनक्षत्रको विलंबीनक्षत्र बोलते है इसमें कोइनयाकाम किया जाय तो विवादपैदाहोगा, (६) जिसपर ग्रहणहुवाहो उसको राहुगतनक्षत्र बोलते है, इसमें नयेकार्यकी शरुआत कियीजाय तो मरणांतकष्ट होगा, (७) जिसके बीचमें ढांकर कोइसाग्रहनिकसे उसको ग्रहभिन्ननक्षत्र बोलतेहै, इसमें मुहूर्त्तकियाजाय तो लोहीवमन होगा,

३-जिसनक्षत्रपर सूर्यहो-उससें दैनिकनत्र-४-६-९-१०-
 १३-या-२०-मा होतो उमरौज रवियोग कदा. बडाउमदा है. इ-
 सरौज जोकामकरोगे अच्छाहोगा, जिसरौज सोम-मंगल-बुध-या-
 शुक्रवारहो, १-५-६-१०-११-ये तिथिहो, भ्रश्वनी-राहिणी-पु-
 नर्वसु-मघा-हस्त-विशाखा-मूल-श्रवण-या-पूर्वाभाद्रपद-ये-नक्षत्र
 हो, इनमेंसें किसी तीनोंकायोग मिलजाय उसदिन कुमारयोग हो-
 ता है. इसमें जिसकामकी शुरुआतकरोगे फतेहहोगी, रवि-मंगल-
 बुध-शुक्रवार हो, २-३-७-१२-१५-ये तिथिहो, भरणी-मृगशिरा
 पुष्य-पूर्वाफाल्गुनी-चित्रा-अनुराधा-पूर्वाषाढा-धनिष्ठा-या-पूर्वाभा
 पद-येनक्षत्रहो, इनमेंसें किसीतीनोंका-योगमिले उसरौज जिस
 कार्यकी शुरुआत किड़ जायगी हकूमतके शाय पार पडेगी.

[जन्मपत्रिकाके बारहभुवनके नाम.]

४, (१) तन, (२) धन, (३) सहज, (४) मुख, (५) संतान,
 (६) शत्रु, (७) जाया, (८) मृत्यु, (९) धर्म, (१०) कर्म, (११)
 लाभ, (१२) व्यय, -पांचमा-नवमाका नाम त्रिकोण, पहिला-
 चौथा, सातवा, दसवाका-नाम केंद्र, केंद्रके अगाडीके चारभुवन
 पणफर-और-पणफरके अगाडीके चार-आर्षोक्षिम-कहेजातेहै,
 कौन ग्रह किसराशिका मालिकहै? -किसराशिपर आनेसें उंचनीच
 और किसकिसराशिपर शत्रुपित्रक्षेत्री कहलाताहै? इतनीवात
 जानेगा उसको जन्मपत्रदेखनेकी राह मालूमडेगी,

५-जबकोइशखश किसीअच्छे जानकारज्योतिषीकेपाम जाय
 तब उसको मुनासिबहैकि-खालीहाथनजावे. जैनआम्नायमें चंद्रम

ज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति-गणित विद्याप्रकीर्णक-ज्योतिष्करंडक-त्रैलोक्यप्र-
कश-जन्मांभोधि-आरंभसिधि-और नारचंद्र वगेरा-कइग्रंथ ज्यो-
तिर्विद्याके वयानकरनेवालेहै, आजकल इस विद्याकी कदर इस
लिये कमहोगइकि-उत्तमग्रंथ पढनेवाले बहोतथोडे रहंगये और
पुछनेवाले विनाखर्चकिये मतलब निकालनेवाले बनगये,

६-जन्मग्रह-देखकर मालुमहोसकताहै कि-इसशरूखकी बुद्धि
कैसी होगी ?-धर्मश्रद्धा ध्रुवहोगी या नहीं ? जींदगीमें एशआराम
कवकव भोगेगा ? मोहनीकर्म कमजोरहे या भारी ? इज्जतकितनी
वढेगी ? स्त्रीका सुख इसके होगा या नहीं ? पुत्रपुत्री कितने होंगे ?
उमर कितनी लंबी भोगेगा ?-दौलत कितनी वढेगी ? किसगतिसे
आया और किसमें जायगा ? जींदगीमें इसको राजयोग होगाया
नहीं ?-बीमारी कवकव आयगी-देशाटन कितना करेगा-मंत्रविद्या
सिखेगा या नहीं ?-भोजनकी तकलीफ रहेगी या आनंद ?-स्त्रीसे
प्रेमरहेगा या लडाइ-? केंदहोना-आगमें पडकर जलमरना-नदी-
समुद्रमें गिरपडना-फांसी होना-या-झेरखाकर मरना-अैसेअैसेकु-
योग इसके है या नहीं ?-व्यभिचार योग इसकेहै या नहीं ? जीं-
दगीमें कितनी स्त्रीयें विवाहेगा ?-दीक्षा उदयआयगीया नहीं ?
इमकेघर हाथीघोडे वंधेगें या सवारोसेंभी तकलीफ रहेगी ? देव-
पंदिर-मूर्ति-वागवगोचे-या-नयेनयेमकान बनवायगा या नहीं ?-
स्त्रीकोपतिमें प्रेमकैसा रहेगा ? कौनसीस्त्री राज्यभोगेगी-कौनसीस्त्री
दिवानगिरि करेगी-कौनसीस्त्री दीक्षालेयगी-कौनसीस्त्रीको लखपति-
करोडपति-भर्तारमिलेगा-कौनसीस्त्री वालविधवा होजायगी-कौन-
सी वंध्यारहेगी-और-कौनसीस्त्री राजाकी रानी बनेगी ?-वगेरावातें

जन्मग्रहदेखकर मालुमहोसकती है, लेकिन! देखनेवाला पुरापढाहुवा होनाचाहिये किसीकी जन्मपत्रिकामें फर्कहोगातो-गणितकरके-उसकों अच्छाज्योतिषी निकाल सक्ताहै,

७-एकज्योतिषीकेपास एकशरुश गया-और-पुछनेलगा बत-लाइये ! पंडितजी ! आपके ज्योतिषमें जमाना कैसा मालुमदेताहै?—पंडितजी कुच्छ पढेहुवे नहीथे-शेखीमें आनकर कहने लगे-मेरे ज्योतिषमें असामालूम देताहैकि-बलवान्कमजोरकोंसतायगें, देशमे फूट मचेगी, किसीदेशकी जमीन कंपेगी, चौइसघंटोंकेबाद दूसरा-दिन लगेगा, दिनमेंचांदना और रात्रीमें अंधेरा रहेगा. मित्रोंमें प्रीति और दुश्मनोंमें नाराजी रहेगी. इसबातकों सुनकर पुछनेवालाशरुश कहनेलगा धन्य ! पंडितजी-धन्य ! तारीफहै आपकी अकलकी; जैसेजैसेफल तो हम बिनापढेही कहसकतेहै, इसमें आपने कौनसी अपूर्वबात कही ?-निमित्तज्ञ उसकानामहै जो अपूर्वबात कहे,

८-गर्भाधान-पुंमवन शूचिकर्म-नामकरण-अन्नप्राशन-कर्णवेध-केशवपन-उपनयन-विद्याध्ययन-विवाह-और-व्रतारोपवगेराके मुहु-र्त्त-सोलहसंस्कारकेबयानमें लिखचुकेहै, यहां औरभी जो ज्यादै उपयोगीहै लिखदेयगें. [दुकान खोलनेका मुहूर्त्त,]-जिसरौज अश्विनी-रोहिणी-मृगशिरा-पुष्य-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-चित्रा-अ-नुराधा-उत्तराषाढा-उत्तराभाद्रपद-अभिजित्-और-रेवती-ये-नक्षत्र हो, चौथ-नवमी-और चतुदर्शीकों छोडकर दूसरीतिथिहो, उसरौज अपना चंद्रस्वर चलतेवरुत दुकान खोलना चाहिये, गदी बिछा-कर मुहूर्त्तकरना, और सवासैर सवापांचसैर-या-सवामन मीठाइ बांटना-जिनमंदिरमें स्नात्रपूजन-अंगीरौशनो कराना, साधुजनोंकी

भक्ति-और-स्वधर्मीभाइयोंको-प्रभावना देना, दुकानमें फायदा होगा. जोशरूस सूर्यस्वरमें दुकानखोलेगा, फायदा न उठायगा, ज्योतिषसें स्वरोदयज्ञान बलवान् होता है. [नोकरीके अधिकार लेनेका मुहुर्त्त.]-जिसरोज अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य-हस्त-चित्रा-अनुराधा-अभिजित्-और-रेवती-ये नक्षत्र. हो, बुध-बृहस्पति-शुक्र-या-रविवारहो-उसरौज जब अपना चंद्रस्वर चले नौकरी रहनेको मालिकके घर जाना-और-जिसकामका अधिकार अपनेको सोंपे वह लेना, फायदा होगा और इनाम पाओगे.

९-[प्रतिष्ठाका मुहुर्त्त.]-उत्तरायणसूर्यमें प्रतिष्ठाकरना अच्छा होता है, मृगशीर्ष माघ फाल्गुन वैशाख जेठ और अषाढ ये महिने प्रतिष्ठाकेलिये ठीकहोतेहैं, अधिकमासमें-गुरुशुक्रके अस्तमें और प्रतिमावैठानेवालेके जन्ममासमें प्रतिष्ठाकराना अच्छानही. संक्रांतिकादूसरादिन-ग्रहणदिन-ग्रहणहुवेर्पाछेंके सातदिन-रिक्ता-षष्ठी-अष्टमी-द्वादशी-अमावास्या-घटीवढीतिथि-भद्रा-नक्षत्रगंडांत-तिथि-गंडांत-दुष्टवार-व्यतिपातवैधृतिवंगरा कुयोग-प्रतिमा वेठानेवालेका जन्मनक्षत्र-जन्मतिथि-जन्मवार-जिसरौज नहो उसरौज प्रतिष्ठाका मुहुर्त्त मुकररकरनाचाहिये. नाडीका अविरोध, षडाष्टकपरिहार, योनिका अविरोध, वर्गका अविरोध, गणका अविरोध, लभ्यालभ्यसंबंध, राशिकेस्वामीका अविरोध, प्रतिष्ठाकारकगुरुको चंद्रवल, और शिष्यको गोचरशुद्धिभी देखनाचाहिये.

१०-रोहिणी-मृगशिरा-पुनर्वसु-पुष्य-मघा-उत्तराफाल्गुनी-हस्त-स्वाति-अनुराधा-मूल-उत्तराषाढा-श्रवण-धनिष्ठा-उत्तराभाद्रपद-और-रेवती-ये नक्षत्र प्रतिष्ठाकेलिये अच्छेहैं, लेकिन ! गणि-

विज्ञापयनेके दिखलायेहुवे सप्तदोषोंकरके वर्जित होनाचाहिये. प्रतिमावैठानेवाले पुरुषके जन्मनक्षत्रसें प्रतिष्ठाकानक्षत्र-१०-१६-१७-१८-२३-और-२५-मा होना ठीकनही. तिथियोंमें-शुक्रपक्ष-को दसमीसें कृष्णपक्षकी पंचमोतक अच्छोकही. जिसमेंभी-१-२-५-१०-१३-१५-ज्यादेतर अच्छीहै, वारमें सोम-बुध-गुरु-शुक्र ठीकहै. योग अगर अच्छा मीलजायतो-तिथिवार चाहे जैसे हो कोइहर्जको वातनही. कुंभस्थापनाकेलिये सूर्यनक्षत्रसें आगेके पांचनक्षत्रछोडकर उसकेआगेके आठनक्षत्रलेना, फिर आठ छोडकर आगेके छनक्षत्र लेनाठीकहै. जिसनक्षत्रपर सूर्यहो-उससेसातमान-क्षत्र भस्मयोगवाला कहलाताहै,

११-प्रतिमाजी वैठानेसें घंटादोघंटा पहिले कोइ उत्पात हो-जाय-तो-मुनासिवहै उसदिन प्रतिष्ठाकाकाम बंदरखना, उत्पात किसको कहतेहै इसकेलिये इसीकितावमें अष्टांगनिमित्तका विषय देखलो-बीजलीका कडाका होना,-अग्निके किणके आकाशसें गिरना-धूलकरके आकाशमंडल छादित होजाना-दिवारपर चित्रांमकीमूर्तियां कुचेष्टा करनेलगजाना-हसनैरौने लगना-अखिफाडकर डरानेलगजाना-येसब उत्पातके लक्षणहै, उसदिनके मुहुर्त्तको बद-लदेना चाहिये, अगर सवाल कियाजायकि-इतनाकामकरकेभी क्या ! प्रतिष्ठाबंदरखना ठीकहै ?-(जवाब.) हां !-जरूरबंदरखना. जोलोग इसमुआफिक नहींकरते खना खातेहै.

१२-प्रतिष्ठालग्नमें ग्रह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिंशांश, इनमें सौम्यग्रह आवेतो-अच्छाहै, पांचवर्ग-या-चारवर्ग शुद्धितकभी ठीक, इनसेंकम होतो ठीकनही. मेष कर्क तुला और

प्रकर ये चरराशिहै. वृष सिंह वृश्चिक और कुंभ ये स्थिरराशिहै, मिथुन कन्या धन और मीन ये द्विस्वभावरशिहै, प्रतिष्ठालग्रकी उद-यास्तशुद्धि देखना जरूरीकार्यहै,

[प्रतिष्ठालग्रशुद्धिः-]-[शार्दूलविक्रीडितं-]

सौरार्क क्षितिसूनवास्त्रिरिपुगा द्वित्रिस्थितश्चंद्रमा
एकद्वित्रिखपंच बंधुषु बुधःशस्तः प्रतिष्ठा विधौ
जीवः केंद्रनवस्वधीषु भृगुजो व्योमत्रिकोणेगतः
पातालोदययोः सराहृशिखिनः सर्वेषुपांते शुभाः (१)

खेर्कः केंद्रनवारिगः शशधरः सौम्यो नवास्तारिगः

षष्ठो देवगुरुः सितस्त्रिधनगो मध्याः प्रतिष्ठाक्षणे

अकेंदुक्षिजिताः सुतेसहजगो जीवो व्ययास्तारिगः

शुक्रो व्योमसुते विमध्यमफलः सौरिश्च सन्निर्ततः २

(अर्थः)-शनि सूर्य-या-मंगल-तीसरेछठे बैठेहोतो अच्छेहै,

चंद्रमा-दूसरेतीसरे अच्छा, बुध पहिले दूसरे तीसरे चौथे पांचमें-

या-दशमें-होतो ठीक, वृहस्पति केंद्रमें दूसरे-पांचमें-या नवमें होतो

अच्छा, शुक्र-पहिले पांचमें सातमें नवमें-या-दसमें-होतो ठीक,

राहुकेतुकेशाथ ग्यारहमेंभुवनमें सभीग्रह अच्छेहोतेहै, पांचमें-या-

दसमें सूर्यहोतो मध्यम,-केंद्रमें-पांचमें-छठे-या-नवमें-चंद्रमा होतो

मध्यम, बुध-छठे-सातमें-या-नवमें-होतो-मध्यम, तीसरे छठे वृह-

स्पति मध्यम, शुक्र-दूसरे तीसरे छठे सातमें-या-बारमें मध्यम,

मंगल-पांचम-और-शनि पांचमें-या-दसमें होतो मध्यमजानना,

१३-प्रतिष्ठालग्रमें सूर्य निर्बलहोतो प्रतिमा बैठानेवालेका ना-

शहो, चंद्रमा-निर्बल होतो प्रतिमाबैठानेवालेकी स्त्रीका नाशहो,

शुक्र-निर्वलहोतो उसके धनका नाशहो, केंद्र-या-त्रिकांणमें-सूर्य-शनि-या-मंगल बैठेहोतो थोड़े कालमें उसमंदिरका नाशहोजाय-मंगल-शनि-राहु-सूर्य-और-केतु-इनमेंसें कोइसाभी-ग्रह-सप्तमस्थानमें शुक्रकेशाथ बैठाहो-तो-कारिगरकों-प्रतिमाबैठानेवालेकों-और-प्रतिष्ठाकारकगुरुकों-तीनोंकों नुकशानकारकहै, केंद्र-या-त्रिकोणमें-शनि-शनि-बलवान्होकर बैठजाय और उसकों मित्रग्रह देखतेहो-तो-उसवरुत अच्छेकामकी नाँव डालना ठीकनहीं,

१४-प्रतिष्ठालग्नमें मंगलअगर आठवे-नवमें-बारमें-या-केंद्रमें बलवान्होकर बैठाहोतो समझलो हजारहतरहकी तकलीफ पैदा-होगी, चंद्रमा-क्रूरग्रहकरके दृष्टयुक्तहो-वैसे लग्नमें प्रतिष्ठा कराइजाय तो प्रतिमाबैठानेवालेकों मरणांतकष्ट होगा, प्रतिष्ठालग्नमें शनि-बलवान्हो-मंगलबुध-बलहीनहो-मेषवृषका सूर्य-या-चंद्रहो-अैसे वरुतपर जिनप्रातमा बैठाइजायतो निहायत उमदा है, प्रतिष्ठालग्नमें तीसरे छठे-या-ग्यारहमेंभुवनपर सूर्य बैठाहो-तो-तिथिवार-नक्षत्र बुरेभीहो-कोइहर्जकीबातनहीं, चंद्रमाभी अनूकुल नहोतोभी कुच्छपरवाह नहीं, सभीतरहके दोष दूरहोजायगें, प्रतिष्ठालग्नमें पहिले चौथे पांचमें नवमें-या-दसमें-शुक्र-या-वृहस्पति बैठेहोतो निहायतउमदाहै, सूर्य-चंद्र-मंगल-शनि-या-केतु-तीसरे छठे-या-ग्यारहमें बैठेहोतोभी निहायतउमदाहै, बुधवृहस्पति-या-शुक्र-इनमेंसें कोइभी बलवान्होकर केंद्रमें बैठजाय और उसकेशाथ कोइ क्रूरग्रह न बैठाहो-तोभी-बहोतठीकहै, लग्नमें-या-केंद्रमेंबुध बैठाहोतो-लग्नसंबंधी सेकडेदोष निवारन होसकतेहै, शुक्र-लग्नमें बैठाहोतोहजारदोषदूरहो-सकतेहै-और-वृहस्पति-अगरलग्नमें बैठाहोतो लाखदोषदूरहोसकतेहै,

१५-अैसीलग्नशुद्धि मिलजाय और उसवरुत प्रतिमावैठाने-वालेका चंद्रस्वर चलताहो-तो-निहायतही उमदायोगहै, चंद्रस्वरमें किइहुइ प्रतिष्ठा बहोतही फायदेमंद होतीहै, सूर्यस्वरमें प्रतिमावैठानेसें कइतरहके विघ्न पैदाहोगें. (सवाल) फिर ज्योतिषशास्त्र कौनकामका रहा ? (जवाब.)-स्वरोदयज्ञानके आगे ज्योतिषशास्त्र अलवते ! कमजोरहीहै, गणिविज्जापयन्नेमें खुलासावयानहैकि-निमित्तज्ञान सबसें बढकरहै, ज्योतिषशास्त्र निष्फल नही लेकिन ! हां ! इतनाजरुर कहसकतेहैकि-स्वरोदयज्ञानकेआगे जरुर कमजोर है, चंद्रस्वर अमृतनाडीकही. जितने प्रभावशाली और स्थिरकार्य करनाहो इसीमें करने चाहिये, याते सबतरहसें आनंदरहेगा.

१६-प्रतिष्ठाकरानेवाले आचार्य-उपाध्याय-साधु-या-व्रतधारीश्रावक-कोइहो उसकाभी प्रतिमावैठातेवरुत चंद्रस्वर चलताहोगा तभी अच्छाहै, प्रतिमावैठातेवरुत-गुरु-जवअपना चंद्रस्वर आवे तव संघमेंसें जिसशरुशका उसवरुत चंद्रस्वरचलताहो-उसीकेहाथसें प्रतिमा तरुतनशीन करादेवे. प्रतिष्ठाका मुहुर्त्त जिसरौज मुकररकियाहो उसलग्नकेसमयपर अगर-गुरुका-या-प्रतिमावैठानेवालेका चंद्रस्वर न चले-तो-वेहत्तरहै उसवरुत प्रतिष्ठा न करना, ज्योतिषशास्त्रका जिसकों ज्यादाज्ञान न हो-वो-अगर सामान्यदिनशुद्धि देखकर चंद्रस्वरचलतेवरुत प्रतिमा वैठावेतो कोइहर्जकीवातनही. हां ! लग्नभी अच्छा मिले-और-गुरुका तथा प्रतिमावैठानेवालेका-उसवरुत-चंद्रस्वरचलताहोतो निहायत उमदाहै, प्रतिष्ठामें-दीक्षामें-और-विवाहमें-चंद्रस्वर चलना बहुतअच्छाहोताहै, इतिप्रतिष्ठा-मुहुर्त्त समाप्त.

१७-देशाटनकरनेका मुहूर्त-अश्विनी मृगशिरा पुनर्वसु पुष्य हस्त अनुराधा ज्येष्ठा मूल और रेवती ये नक्षत्र देशाटनकेलिये बहोत उमदा है, तीनोंपूर्वा-रोहणी चित्रा स्वाति श्रवण धनिष्ठा और शततारका-ये नक्षत्र देशाटनकेलिये मध्यम है, इनके शिवायके नक्षत्र अच्छे नहीं. जिसमें भी तीनों उत्तरा भरणी कृत्तिका आर्द्रा मघा अश्लेषा और विशाखा-ये बिल्कुल अच्छे नहीं, जो जो नक्षत्र उमदा और मध्यम उपर लिखचूके वें भी सप्तदोषकरके रहित होने चाहिये. रोहिणी नक्षत्रमें पूरवदिशाकों जाना ठीक नहीं. हस्त नक्षत्रमें उत्तरदिशाकों जाना अच्छा नहीं, चित्रा नक्षत्रमें दखनदिशाकों और श्रवण नक्षत्रमें पश्चिमदिशाकों जाना ठीक नहीं, शनिवार सोमवारकों पूरवदिशातर्फ दिग्शूल होता है, गुरुवारकों दखनतर्फ-रविवारशुक्रवारकों पश्चिमदिशातर्फ-और-मंगलबुधकों उत्तरदिशातर्फ-दिग्शूल होता है, मुकदमेके और लडाइके कामकों छोडकर और सब कामके लिये देशाटनकरना तो चंद्रस्वरमें घरसें चलना ठीक होता है, जो शरूश देवगुरुकों नमस्कारकरके-या-परमेष्ठिमहामंत्रकों पढकर देशाटन करेगा फतेह पायगा,

१८-[रोगावलिचक्र.]-जिसरौज रोगपैदाहो उसरौज नक्षत्र और वार कौनसा है?-इसकों देखकर इसचक्रकों वांचलेना-और-मालूमकरलेना कि-यहरोग इतनेरौजतक रहेगा. मरनेकी बीमारी आती है वोतो कभी नहठेगी. लेकिन ! हां ! जो आगंतुकरोग है उसकीस्थिति कितनेरौज रहेगी ? इसचक्रके पढनेसें मालूम होसकेगी. नक्षत्र-मीले-और-इसमें लिखेमुजव-वार-न-मीले तो बीमारी साधारण जानना.-जिसरौज अश्विनीनक्षत्रहो-और-रवि-

सोम-या-शुक्रवारहो-उसरौज बीमारी आवेतो जानना एकीसरौ-
जतकलीफरहेगी. पीछें आरामहोगा. भरणीनक्षत्रकेरौज बीमारी
आवे तो मरणांतकष्टजानना, कृतिकानक्षत्र-गुरुवारके रौज बीमारी
आवेतो (८) आठदिनतकलीफ रहेगी, रोहणीनक्षत्रकेरौज बीमारी
आवेतो (७) रौज तकलीफ फिर आराम, मृगशिरानक्षत्रकेरौज
कोइवारहो-बीमारीआवेतो (१) महिना तकलीफ-फिर आराम,
आर्द्रानक्षत्रकेरौज-मंगल-या-शुक्रवारहो-और बीमारी आवेतो म-
रणांतकष्टहोगा, पुनर्वसुनक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारीपै-
दाहोतो (२५) दिनतकलीफ फिर आराम, पुष्यनक्षत्र-सोम-बृह-
स्पतिवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (१३) तकलीफ फिर आ-
राम, अश्लेषानक्षत्र-सोम-शुक्रवारकेरौज बीमारीपैदाहोतां मरणां
तकष्टहोगा, मघानक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो
दिन (१९) तकलीफ फिर आराम, पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र-सोम-
गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (११) तकलीफ फिर आराम,
उत्तराफाल्गुनीनक्षत्र-सोम-शुक्रवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन
(२५) तकलीफ फिर आराम, हस्तनक्षत्र-रवि-बुध-शनिवारके
रौज बीमारी पैदाहोतो-दिन (१५) तकलीफ फिर आराम, चि-
त्रानक्षत्र-सोम-गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (१५) तक-
लीफ फिर आराम, स्वातिनक्षत्र रवि-बुध-शनिवारकेरौज बीमारी
पैदाहोतो दिन (१०) तकलीफ फिर आराम, विशाषानक्षत्र-रवि
मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्टहोगा, अनुरा-
धानक्षत्र-बुधवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन (४) तकलीफ
पीछें आराम, ज्येष्ठानक्षत्र-गुरुवारकेरौज बीमारीपैदाहोतो दिन

(२०) तकलीफ फिर आराम, मूलनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारके रौज बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, पूर्वाषाढानक्षत्र-सोम-बुधवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन (५) तकलीफ फिर आराम, उत्तराषाढानक्षत्र-गुरुवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन (३) तकलीफ, श्रवणनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन (२५) तकलीफ फिर आराम, धनिष्ठानक्षत्र-कोइवार हो-उसरौज बीमारी पैदाहोतो दिन (२५) तकलीफ फिर आराम, शततारकानक्षत्र-गुरु-शुक्र-शनिवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो (१००) दिनतक तकलीफ फिर आराम, पूर्वाभाद्रपदनक्षत्र-रवि-मंगल-शनिवारकेरौज बीमारी आवेतो मरणांतकष्ट हांगा, उत्तराभाद्रपदनक्षत्र-सोम-बुधवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन (८) तकलीफ फिर आराम, रेवतीनक्षत्र-गुरु-शुक्रवारकेरौज बीमारी पैदाहोतो दिन (१००) तकलीफ फिर आराम,

(१९)—जिसमनुष्यकी जन्मराशि मेषहो-उसको अगर पूर्वा फाल्गुनी-पूर्वाषाढा-या-पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, वृषराशिवालेको हस्तनक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो-मरणांतकष्ट, मिथुनराशिवालेको स्वातिनक्षत्रमें, कर्कराशिवालेको अनुराधामें, सिंहराशिवालेको पूर्वाषाढामें, कन्याराशिवालेको श्रवणमें, तुलाराशिवालेको शततारकामें, वृश्चिकराशिवालेको रेवतीमें, धनुराशिवालेको भरणीमें, मकरराशिवालेको रोहणीमें, कुभराशिवालेको आर्द्रामें, और मीनराशिवालेको अश्लेषानक्षत्रमें बीमारी पैदाहोतो मरणांतकष्ट होगा, इतिरोगावलीचक्र,

(२०)—तुमाराचंद्रस्वर चलताहो उसवरुत-कोइशरुश-आ-

नकर वामीतर्फ खडाहोके पुछेकि-वरसात होगा-या-नही!-(ज-वाव.) कहदेना होगा. दोशखशकी लडाइहोरहीहो-और किसी तीसरने आनकर पुछाकि-दोनोंमेंसे किसकी फतेहहोगी? उसव-रुत अगर तुमाराचंद्रस्वर चलताहो-तो-जिसका पहिले नाम लि-या उसकी फतेह होगी कहना, खेतमें बीजडालतेवरुत अगर डा-लनेवालेका चंद्रस्वर चलताहोतो अनाज वहतहोगा. कोइशखश आनकर पुछेकि-हमारा-एकआदमी केदहुवाहै छुटेगा-या-नही? उसवरुत अगर तुमारा सूर्यस्वर चलताहो और उसने पूर्णदिशामें स्थितरहकर प्रश्नकियाहोतो कहदो छूटजायगा. इसीतरह रोगदूर होनेका प्रश्न-अधिकारसें गिरेहुवेकों फिरपानेका प्रश्न-और-च-र्चामें जय पराजयका प्रश्न-सूर्यस्वरमें पूर्णदिशातर्फ रहकर कोइ पुछे तो-कहदो फतेहहोगी, कोइशखश पुछेकि-मैं-दुश्मनसें मिलने जाताहूं-मैरी वात ठीकरहेगी या उसकी?-उसवरुत अगर तुमारा सूर्यस्वर चलताहो-और पूर्णदिशाका प्रश्न होतो कहदो-तुमारी वात अच्छीरहेगी. अकस्मात् किसीकों कोइ डर आनपडा उसके दूरहोनेका प्रश्न पूछे-या-लडाइमें हमारी जयहोगी-या-हार ?-ऐसा पुछे-उसवरुत अगर तुमारासूर्यस्वर चलताहो-और-प्रश्न-पूर्णदिशाका होतो कहदो-फतेहहोगी.

[मंत्रशास्त्रका खुलासा.]

(अनुष्टुप्चत्तम्.)

निर्वीजं अक्षरं नास्ति-नास्ति मौलमनौषधं

निर्धना पृथिवी नास्ति-आम्नायाः खलु दुर्लभाः १,

(१)-अक्षरोंके संयोगका नाम-मंत्र-है, मंत्रके उच्चारणसे जो जो परमाणु फैलते हैं उससे एकतरहकी असर पैदाहोकर फायदा पहुंचताहै, कइअक्षरोंके संयोगमें ऐसी ताकतरही है जिसके पढनेसे सर्पका झेर उतरजाताहै दूसरेका मन अपनेअनुकूल हो सकताहै, और दुष्टदेवोंका स्थंभनभी होसकताहै. पहिलेकालमें ऐसे मंत्र थे-जिनकापाठ किया और तुर्त फल हुवा. ऐसे पाठसिद्धमंत्र आजकल नहींरहे. रहेभी है-तो-उनके जाननेवाले नरहनेसे विछेदहोते जाते है, कइमंत्र ऐसे है जिनके पढनेसे देवता आसके, लेकिन ! आजकल तो कालदोषसे देवतेही आने बंदहोगये-फिर उसका जिकरही क्या ?-पंचमकालमें देव-प्रत्यक्ष-नहीं-आते, हां ! आंखोंमींचकर बैठो और मंत्रपढोतो सामने खडे होकर बातेंकर जाते है, लेकिन ! आंखे खोलनेसे दिखाइ नहीं देयगें, कइमंत्रऐसे है जिनके पढनेसे आत्माका भलाहो-जैसे परमेष्ठि महामंत्रका पाठकरनसे आत्महित पैदाहोताहै,

(२)-वर्द्धमानविद्या-सूरिमंत्र-अपराजितमहाविद्या-जो जैन सूत्रोंमें लिखीहुइहै मुनिजनोंकों जरुर पढतेरहना चाहिये, इससे शिथिलनिकाचित अशुभकर्मकी निर्जरा होसकती है, अगर सवाल कियाजायकि-जैनखास्त्रोंमें-तो-कर्मही बलवान्कहेफिरमंत्रक्याकामके रहे ? (जवाब.)-जब अच्छेकर्मका (यानी) पुन्यका उदय हो तभी अच्छे मंत्रका योगमिलता है, मंत्र-अगर ध्यानदेकर स्वाध्यायरूप पढेजायतो-वें-शिथिलनिकाचित अशुभकर्मोंकी निर्जरा के हेतु होसकते है, इसीअपेक्षा मंत्रोंकी साफल्यता समझी गइहै, रिषिमंडलस्तोत्रके बीज अक्षरोका विधिसहित पाठकियाजाय तो

स्वप्नमें अरिहंतकी प्रतिमाका दर्शावहोकर अधिष्ठातादेवसें कइवा-
तोंके खुलासें मिलसकते है, उंचपंक्तिकेदेव दिव्यज्ञानी होते है उ-
नकों सबबात अपनेज्ञानसें मालूम होसकती है, उपसर्गहर-तिजय
पहुत्त-भक्तामर-और-शक्रस्तव वगेराके बीजमंत्र अशुभकर्मकी नि-
र्जराके हेतुहोकर फायदे जनक होसकते है,

(३)-कइ बीजाक्षर ऐसे है जो अटवीमें संकटकेवख्त पढ़े
जायतो भय दूरहोसकताहै. समुद्रमें-अग्निमें-या-सिंह-सर्प वगेरा
दुष्टजानवरोंके सामने लडाइदंगेके वख्त-राज्यसंबंधी भयमें-और
केदखानेमें अगर मन-वचन-और कायाकों स्थिरकरके पढ़े जायें
तो-सवतरहसें साहायकारक होसकते है, मंत्रोंकी ताकत इसीवख्त
हीतो कामदेती है, जबकि-दुनिया सारी बदल जाय,

(४) ज्योतिषद्वारा-सुन्ना चांदी-अनाज-और-अफीमवगेरा
चीजोंकी-मंदीतेजी होना मालूमहोसकता है, लेकिन!-जोकाम-मं-
त्रसाधनकरके देवोंसें दरयाफत किये जाते है वो-ज्योतिषसें नहीं
होसकते, आजकल संसारमें मतलबी शरूश ज्यादा रह गये. मत-
लवविदून वात नहींकरते, धर्ममें धनखर्चनेको कबूलकरके मुकर
जाते है, इसलिये शास्त्रवेत्ता मुनिजनकों मुनासिबहेकि-धर्मकेका-
ममें-(यानी) सप्तक्षेत्रमें पहिले धनखर्चकराके पीछे उनकों कोइ
चीजका साधनवतलाना, दुनियादारोंका आजकल भरोसा नहीं
वैसे-श्रद्धावान् नहीं रहे जो अवलसें अखीरतक एकसरखे रहे,
जमाना बदलाहुवाहै, वाप बेटेसें परहेज रखताहै, इसलिये समझ
सौचकर वातकरो. अगर सवाल कियाजायकि-साधुलोग-त्यागी
होते है उनको धनदौलसें क्या मतलब?-(जवाब.)-साधुलोग

अलवते! संसारीक कामके त्यागी है लेकिन! धर्मवृद्धिकेकाम करानेकेतो त्यागी नहीं है, पूर्वाचार्योंने कइकार्य इसतरह करायै है, विधिवादमें तोर्थकर गणधरोंका हुकमभी हैकि-धर्मकी बढवारीके छिये साधुलोग अपनीलब्धिभी-स्फुरायमान-करे और अधर्मीकों शिक्षादे-तो-योग्यवातहै, अयोग्यनही, तोर्थकर गणधरोंने शास्त्रोंमें जगहजगह क्यों मंत्र-विद्या-धर्मकेलिये चलानी वर्ननकिइ ? तीर्थ-करगणधर साधु थे-या-गृहस्थ ? अगर साधु थे-तो-सौचो !-क्या ! सिद्धहुवा ?-आजकल दुनियादार जैसे रहगयेहैकि-मतलबभी निकालजाय और पीछेसे अवर्णवाद बोले, लेकिन ! जो-ज्ञानी मुनिहै कभी उनके फंदेमें नहींफसते, पहिलेसे सप्तक्षेत्रकी पुष्टि पढ़ुंचाकर बतलातेहै,

५-अगर सर्वालकियाजाय कि-जिनकेपास-द्रव्यखर्चकरनेकी ताकातनहीहै-तो-क्या उनकेलिये क्या करनाचाहिये ? (जवाब.) उनकेलिये अपनेभाग्यकी कमजोरी समझकर उसकामको नकरना चाहिये. जैसे कोइ किसान खेत बोंकर अनाज पैदाकरना चाहता है लेकिन ! बीजडालनेको सामग्री नहोनेसे वह-अनाज पैदानही करसकता-वैसे धर्मक्षेत्रमें बीजडालेबिदून मंत्रसाधनभी नहींकरसकेगा, अनाज बोंवेगातो पीछेसे फलमिलेगा-बोंवेहीगा नहींतो फल कैसे हासिलकरसकेगा, इसलिये मुनासिबहै कि-साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका-पुस्तक-प्रतिमा-और-मंदिर-इनसप्तक्षेत्रमें द्रव्यव्यय करनेका प्रथम ध्यानदेना, हुंठियेपंथीलोग जो मुंहबांधरखतेहै और जैनीकहलातेहै-वे-इसीलिये जैनी नहींकि-उनोने सातक्षेत्रमेंसे प्रतिमा-और-मंदिर-ये-दोक्षेत्र उडादिये, कइ गृहस्थ जैसे चालाक

होतेहैं-जो-धनखर्चनेमें नपुंसकहै और साधुलोग जब उनको धन खर्चनेका उपदेशदेवे तब नींदाबोलनेपर कमरकसतेहैं-उनको अधर्मासमझकर लाजिमहैकि-मुंह-नलगावे, जोशब्द दौलतमंदहै-और-ब्रह्म-कोइ देवसाधनकरना चाहे तो-मुनासिवहै पहिले धर्म-काममें खर्चकरे, राजावादशाह-हो-या-कोइ लखपति करोडपति गृहस्थहो-उनकेलिये उनकीताकतमुजब-और-पांचपचासहजाररूप-येवाला साधारणगृहस्थ-या-इससेंभी कोइगरीबहो-उसकेलिये उसकी ताकतमुजब-धर्मकाममें खर्चकरनाचाहिये, जोलोग इसतरहनहीकरते हैउनकादिल लोभीलालचीहोनेसें उनको अच्छाफल नही होसकता.

६-(मंत्रके बीजाक्षरोकार्थः)-१, नमःसंपत्तिकरं, २, ॐ-जगत्रयवशीकरणं-परमेष्ठिवाचकं-जिनपतिबीजं वा, ३, ॐ-लक्ष्मी-बीजं-ज्ञानबीजं वा, ४, अहं-सिद्धचक्रबीजं-जिनपतिबीजं अष्ट-महासिद्धिबीजं, वा, ५, ॐ-कामबीजं, ६, ॐ-अंकुशबीजं-निरो-धबीजं वा, ७, ॐ-द्रावणबीजं,-८, हू-विद्वेषणबीजं, ९, स्वाहा-पुष्टौ, १०, स्वधा-तुष्टौ-११, घेंघें-मारणे, १२, हः-सहस्ररूक्-१३, खंशखं, १४, हौ-ज्ञानं, १५, वषट्-वश्यकरं, १६, वौषट्-आकर्षणे, आह्वानेच, १७, संवौषट्-आमंत्रणबीजं, १८, फुट्-विसर्जने, १९, फट्-अस्त्रबीजं, २०, ओ-प्रणवः-ध्रुवविनयप्रदीपतेजो बीजं,-२१, द्रां द्रीं ॐ-वृषः-पंचसायकाः-२२, स्वा-वायुबीजं-२३, हा-आ-काशबीजं, २४, हंसं-विपापहारबीजं, इत्यादिवीजाक्षरोंके अर्थ-अनेकतरहके हैं, यहां कहांतक लिखें, मंत्रशास्त्रका जिनको शौख है-वें-शास्त्रांतरसेंभी तलाश करलेयें, इसलियेयहांइतनाहीलिखना मुनासिव समझा गया.

७-हरमनुष्यकों चाहियेकि-सर्पके जहेरदूरकरनेका मंत्र जरूर सीखलेवे. इसमें अपना और दूसरेका दोनोंका भलाहै, परविद्या उच्छेदनमंत्र-और-दूसरेप्रभाविकमंत्र-भी-किसी ज्ञानीपुरुषसोंमिलकर सीखलेनाजरूरीहै, जिसशख्शकों जो-मंत्र-सिद्धहोगा-उसका दिया हुवाही-जलदी चलेगा-पोथीमेंसे निकालकर वाचलिया और मंत्र-वादी बनगये यह कभी नहोगा. हमने यहां कइउपयोगीमंत्र लिख-देनेका इरादाकियाथा-लेकिन ! इसलिये-वो-मोकुफरखाकि-मंत्र-गुरुकेमुखसेही लेनाअच्छाहै, जबतक ठीक ठीक भेदबतलानेवाला नमीले तबतक-लिखाहुवा मंत्र फायदेमंद नहीहोता-इसलिये अच्छे लोगोंसे मिलकर उनकी सेवाकरो और जब-वें-खुशहोकर तुमकों बतलावे-तब उनकेफरमानेमुआफिक विनयभक्तिसे सीखो, तभी तुमारा मनोरथ सिद्धहोगा.

८-अगर मनुष्योंकी पुनपवानी कमजोरहोनेसे कलिकालमें कोइमंत्र तात्कालिक फल नदिखलावे तो दूसरी-या-तीसरीदफे उसका साधन करना चाहिये-जो तीनदफे साधनकिया और फलित नहुवा तो उसे छोडदेनाठीकहे, इसकालमें मंत्रतंत्र औषधि और फलफूलोंकी सत्ता कमहोना ज्ञानियोंने पहिलेही बयानकर-रखाहै. रूपसौभाग्य जैसे पहिलेथे अबनहीरहे, जातिस्मर्ण-अवधि-मनःपर्याय-और-केवलज्ञान विच्छेदहोगये. जवाहिरात नाममात्र रहगइ, सत्त्वसंहनन-यशःकीर्त्ति-और-दौलतकमहोतीजातीहै, दातार धनहीन-और-धनाढ्य सुम बनतेदेखतेहो, धर्म श्रद्धा [इतिश्री] होगइ, जिनकल्पमार्ग बंद हुवा. राजेलोग रैयतकों फिजुल दंडतेहै, वरसात अकालमें होतीहै, जमीन थोडाफलदेतीहै, मतमतांतर इतने

फैल गये जिनोने धर्मकों चकनाचूर कर डाला. लोभीमिध्याभिमानी-पाषंडी और धूर्तोंकी तारीफ बढी. पुण्यवान् धर्मवान् और प्रज्ञावान् थोड़ीजींदगीमें मरजातेहै, बापकों बेटे और गुरुकों चेले तमाचे मारतेहै, देवोंमें देवत्व-और-सतीमेंसतीत्व विनाशहोताजाताहै, और साधुलोगोंमेंभी पाषंडवृद्धि चलरहीहै, कहिये ! ऐसे बुरेजमानेमें अगर कोइमंत्र फल नदे-तो-कोइ क्या करे ? तुमारे भाग्योदयकी कमजोरी समझो,



[छंदःशास्त्रका वर्नन.]

(छंदःशास्त्र विदूनपढे कविताकरना ठीकनही.)

१-छंदः-स्तवन-बनानेवाले ऐसीशिघ्रताकरतेहैकि-उसके नियमोंपर कुच्छभी ध्यान नही देकर कविता बनाडालतेहै, लेकिन ! यादरहे !! अच्छेलोगोंके सामने उनकीकविता मीटीसमान गिनी जातीहै. यद्यपि छंदशास्त्र वहोतबडाहै और उनकेभेदानुभेद अपार है तथापि जिसके जानेविदून छंदस्तवनादिकका बनाना फिजूल है-वो-थोडासाभेद यहांलिखदेतेहै,

वर्णमालाके (५२) अक्षरहै उनमें(१६) स्वर-और (३) क्ष-त्र-ज्ञ-अंतकेमिश्रितव्यंजन हठाकर जो बाकी (३३) व्यंजन रहतेहै उनमें कां०) अक्षर नीचेलिखेमुआफिक दग्धहै,
 अनेक[पूर्णदग्ध.] -ख-छ-ठ-थ-फ-र-ष,
 है-वै-शास्त्र[दग्ध.] -घ-झ-ढ-ध-भ-व-ह,
 मुनासिव सर[शिदग्ध.] -ट-ड-ण,

इनउपरलिखे दग्धअक्षरोंको देवस्तुतिमें अगर-आद्य-लगादिये जाय-तो कोइहर्जकीवातनहीहै, लेकिन ! कविका धर्महै जहांतक होशके जरूर वचावे. जोजो चतुर्थांश और अर्द्धदग्धहै-न-वचेतो-खेर !-कुच्छ हर्जकीवात नही-लेकिन ! जो पूर्णदग्धहै उनको जरूर वचानाचाहिये, यद्यपि दग्धअक्षरोंका विस्तार-फलाफल-शुभाशुभ-और-भेदानुभेद-इतनाहै-कि जो लिखनाशुरुकरे तो पार नआवे-इसलिये छोटेकविकों इतनाही जाननाठीकहै.

२-अब थोडासा गणभेदभी बतला दिया जाताहै.

मगण---भगण--जगण-सगण-नगण-यगण---रगण--तगण,
चोराशी-काजल-विहार-चरखा-गगन-दिवाना-श्राविका-बाजार,
SSS---SII---|S|---||S---||---|SS---SIS---SSI,
लक्ष्मी---कीर्त्ति-रोग---भय---आयु-वृद्धि---नाश---अफल,

तीनअक्षरमिलनेसें एकगण कहलाताहै. सो यदि-तीनअक्षर-गुरुहो-जैसे (चोराशी) तो-इसको मगणगण कहतेहै-जिसछंदकी आदिमें यहरखागयाहो तो-बनानेवालेको अच्छाहै, दौलतकी बढ-वारीहोगी. जहां एकअक्षरगुरु-और-दो-अंतके लघुहो जैसे (काजल) इसको भगणकहतेहै. जिस छंदकी आदिमें यह रखाजाय उसछंदसें बनानेवालेकी दुनियामें इज्जत बढेगी, जहां तीनअक्षरोंकेबीचमें आद्यअंतकाअक्षर लघु और मध्यका गुरुहो-जैसे (विहार) इसको जगणकहतेहै. जिसछंदकी आदिमें यह रखाजाय बनानेवालेको बीमारीआनेकी सुरतहै, जहां आद्यकेदोअक्षर लघु और अंतका एकगुरुहो-जैसे (चरखा) इसको सगणकहतेहै, जिसछंदकी आदिमें

यह रखाजाय बनानेवालेकों कुटुंबीयोंसें भयहोगा, जहां तीनोंअक्षर लघहो-जैसे (गगन) इसकों नगण कहतेहै, जिसछंदकी आदिमें यहरखाजाय बनानेवालेको शरीर तंदुरस्तीका हेतुहै. जहां आद्यका एकअक्षरलघु और अंतकों दो-गुरु-हो-जैसे (दिवाना) इसकों यगणकहतेहै, जिसछंदकी आदिमें यह रखाजाय बनानेवालेकों अच्छेकामोंकी वृद्धिहोगी. जहां आद्यअंतमें गुरु और बीचमें लघुहो-जैसे (श्राविका) इसकों रगण कहतेहै, जिसछंदकी आद्यमें यह रखाजाय बनानेवालेकों हरसुरतसे-नाशहोगा. जहां आद्यके दोअक्षरगुरु और अंतका एकलघुहो-जैसे (बाजार) इसकों तगण बोलतेहै, जिसछंदकी आदिमें यह रखाजाय बनानेवालेकों कुच्छ फायदा नहोगा.

३-इसतरह देखकर अच्छेगणका ग्रहण-और-बुरेका त्याग करनाचाहिये. चार यगण मिलानेसें एकचरण और-सोलह यगणका पुरा भुजंगप्रयातछंद बनजाताहै,

[भुजंगप्रयातछंदः]-(उदाहरण.)

तमाखू तमाखू तमाखू तमाखू-पियेसो दिवाना दिवाना दिवाना,
जुआकों जुआकों जुआकों जुआकों-नखेले वहीहै सयाना सयाना, १

४-दोहाछंदमें प्रथमचरणकी (१३) मात्रा-दूसरेकी (११)-फिर तिसरेकी (१३) और चौथेकी (११)-मात्रा रखीजातीहै.

[दोहाछंदः]-ज्ञानीध्यानी संयमी-सुराधीरा अनेक,
तपिया तो दीसे घना-शीलवंत नर एक.

दोहाकों आधाकरके पहिलापद पीछे-और-पीछलापद पहिले

पढनेसें सोरठाछंद होताहै. सवैये दोतरहके-एक-तेइसा-और-एक-एकत्तीसा-इनमें गणका भेद नहींहोता-हरिगीतछंदमें एकपदकी अठाइसमात्रा रखीजातीहै, जैसे चारचरणोंके मिलानेसें पुरा एक हरिगीतछंद बनजाताहै. विमलकेवलज्ञानकमलाकलितत्रिभुवनहितकरं-सुरराजसंस्तुतचरणपंकज नमो आदि जिनेश्वरं-यहजो शत्रुंजयतीर्थका चैत्यवंदनहै इसको हरिगीतछंद जानो. चौपाइछंदके लक्षणमें जाननाचाहियेकि-एकएकचरण पन-रांहपनरांह मात्राका होताहै जैसे चारचरण मिलानेसें चौपाइछंद बनजायगा. जिसचौपाइके हरेकचरणमें सोलहमात्रा रखीगइहो-उसको रूपकचौपाइ जानना, जैसेही छंदोंके अनेकभेदहै जिनको खायेसहो बडेग्रंथोंसें तलाशकरलें, यहांतो फक्त उसविषयकावर्नन जरुरीसमझागया था-जो-छोटेकविकों जाननेयोग्यथा, इसलिये इतनाही समझलेना काफीहै.

[जैन और दयानंदसरस्वती]

इसलेखमें हमारा और दयानंदजीका लेखनीद्वारा युद्ध होगा. सावधान होकर देखना.

१-आर्यसमाजके आदिकर्ता दयानंदसरस्वतीने जो-सत्यार्थ प्रकाशग्रंथ-रचा और उसके बारहवेसमुल्लासमें जैनधर्मपर जोजो

आक्षेपकिये उसपर यह लेख बतौर जवाबके समझना चाहिये. इसको बांचनेसें समाजीलोगोंको जैनोंको-और दूसरेभी जो धर्म-केज्ञाताहै फायदा पहुंचसकेगा, लेकिन ! पक्षपातरूप चश्मा हठाकर इसको देखना चाहिये-इसमें कोई बात झूठ मालूमपड़े-और-उसका कोई जवाब लिखना चाहे बेशक ! लिखे-धन्यवादकेशाथ दूसरी आवृत्तिमें उसका शोधन कियाजायगा, दयानंदसरस्वतीजीकीतिरह कहकर बदलेंगे नहीं. लेकिन ! हां !-जो कोई वृथा कुवचनकहकर हमारे इष्टदेवकों-या-धर्मकों-आक्षेप करेगा उसको हम क्या ?-सब कोइ अज्ञानी कहेगा. दयानंदजीके जीवनचरित-और-उनकीतर्फ-दारीके लेखोंके पढ़नेसें जाहिरहोताहैकि-वें-गुजरातकाठियावांडकी सीमापर राज्यमोरवीइलाकाके रहनेवाले ब्राह्मणथे. दयानंदजी खुद कहतेथे मेरापिता धनाढ्य जमीदारथा. दिलकुशायंत्र-फतहगढकी-छपी-दिनचर्याका छेलापत्र देखतेहैतो जाहिरहोताहै दयानंदजीका नाम गृहस्थपनमें मूलशंकर था. दयानंदजी अपने जीवनचरितमें लिखतेहैकि-जब-मैं-घरसें चला संवत् (१९०३) विक्रमीथा. उनके फरमानेमुजब वें कइ साधुसंन्यासीयोंसें मिलें-विद्या पढी-और सन्यासी हुवे.

२-दयानंदजी संस्कृतविद्याके जानकरपंडित थे. प्राकृत-अर्वा-या-अंग्रेजीभाषा-व-नही जानतेथे. संस्कृतविद्याकेभी पूरेजानकार नहीथे-क्याकि-संस्कृतवाक्य प्रबोध-नामकी एकछोटीसी किताब उनोंने रची उसमें कइजगह व्याकरणके नियमविरुद्ध रचना किइ है. पंडित अंबिकादत्तव्यासजीने इनकीअशुद्धियां-एक-अवोधनि-वारण किताब बनाकर जाहिर किइ है-जो काशीके भारतजीवन-

प्रेसमें छपी हुई मौजूद है, जिनको संदेह हो देख लेना चाहिये. दयानंदजी वैदिकमतके संन्यासी थे—और हमको यहां उनके मतका कुछ बयान लिखना है इसलिये पहिले वेदोंका हाल सुन लो!—असलमें वेद जड़मूलसे एक नही था. हजारों रिषियोंके—पास—हजारों मंत्र थे उनको व्यापजीने इकठे किये. और उनके चारहिस्से बनाये, कोइ कहता है निराकार इश्वरके कहेहुवे है—काइ कहता है ब्रह्माके मुखसे प्रकटहुवे—और कोइ कहता है अनादिभी है. खैर! हालतो तुम शुक्ल-यजुर्वेदकी माष्यमें जो कुछ कहा है सुन लो!—वहां असापाठ है कि—ब्रह्माको परंपरा में वेदको व्यापजीने पाया. और मनुष्योंकी अकल कर्महोता देखकर उन इकठे कियेहुवे मंत्रोंके चारहिस्से कायम किये, जिनके नाम (१) रिग् (२) यजुः (३) साम—और—(४) अथर्व है, फिर उनको पैल—वैशंपायन—जैमिनि—और—सीमंतुको यथाक्रमसे दिये. कहरौज गुजरेबाद वैशंपायनजी अपने शिष्य याज्ञवल्क्यपर गुस्सा खाकर कहने लगे—मेरेसे पढाहुवा यजुर्वेद त्याग करदे, कहते है उसने योगसामर्थ्यसे उसका त्याग किया, और सूर्यको आराधनकर दूसरा यजुर्वेद हासिल किया. उस त्यागेहुवेका नाम कृष्ण—और—हासिल कियेहुवेका नाम शुक्ल-यजुर्वेद कहा गया,

३—चारवेदके चारब्राह्मणविभाग ऐसे जानना चाहिये. रिग्-वेदका अतरेयब्राह्मण—यजुर्वेदका शतपथ—सामवेदका तांड्य—और—अथर्ववेदका गोपथब्राह्मण—ग्यारह उपनिषदके नाम सुनिये ! इश-केन—कठ—प्रश्न—छांदोग्य—बृहदारण्यक—मुंडक—मांडुक्य—श्वेत—तैत्तरीय—और—अतरेय, वेदके छः अंगोंके नाम इसतरह है. शिक्षा—कल्प—व्याकरण—निरुक्त—छंद—और—ज्योतिष्, स्मृतिशास्त्रके करनेहारे कइ है

लेकिन ! उनमेंसे नीचे बतलायेहुवे आचार्य ज्यादा मशाहूर है, मनु-याज्ञवल्क-विष्णु-हारित-उशना-अंगिरा-यम-आपस्तंब-संवर्त-कात्यायन-बृहस्पति-पाराशर-शंख-लिखित-दक्ष-गौतम-शातातप-और-वशिष्टवगेरा. अवतार उसकों समझना चाहिये-जो-निर्गुणका सगुणहोना अर्थात् बडेपदसे छोटेपदमें उतरना. मच्छावतार-कच्छावतार-वाराहावतार-नरसिंहावतार-पशुरामावतार-रामचंद्रका अवतार-कृष्णावतार-गौतमबुद्धावतार-और-कल्कीका अवतार-ये(१०) दसअवतार वैदिकधर्मवालोंने मानेहै. सत्य-त्रेता-द्वापर-और-कलि, यहचारयुग क्रमसे परिवर्तनहोतेरहतेहै. और यहभी कहतेहैकि-धर्म रूपवृषभ-सत्ययुगमें चारोंपांवसे खडाथा-त्रेतामें तीन-द्वापरमें दो-और-कलिमें एकपांवपर खडाहै. ब्राह्म्यपुराण-विष्णुपुराण-शिवपुराण-पद्मपुराण-नारदीय-मारकंडेय-भविष्य-ब्रह्मवैवर्त-लिंग-वाराह-स्कंद-वामन-मत्स्य-गरुड-ब्रह्मांड-और-भागवतवगेरापुराण-वैदिकमतवालोंके धर्मग्रंथहै, महाभारत-रामायण-गीता-वगेराभी उनकेही ग्रंथहै, गायत्रीमंत्र वैदिकमतावलंबीयोंका मूलमंत्रहै. वेदके भाष्यकार-तथा टीकाकेकरनेवाले-उव्हट-सायनाचार्य-महीधर-और-रावणवगेरा प्राचीनवैदिकाचार्यहै, मूर्तिपूजा तीर्थ स्नान-तथा श्राद्धतर्पण-वैदिकलोग मननकरतेहीहै यहतां किसीसे छिपाहुवा नहीं. वस ! आप इतनी बातें यादरखकर अब दयानंदजीके कहनेपर खयाल किजिये.

४-दयानंदजीने जितनेशास्त्र मत्स्यमानेहै उनकेहाथका लिखाहुवा विज्ञापनपत्र जो कानपुरके शोलेतूर छापखानेमें छपाथा उसीकेमुताबिक यहां लिखदेतेहै, इतनायादरहे उनोंने संस्कृतमें लिखाथायहां

उसकी भाषाकिइहै. सुनो !-१ रिग्-२, यजुः-३, साम ४, अथर्व-
 येचारवेद, ५, आयुर्वेद, ६ धनुर्वेद,-७, गंधर्ववेद, ८ अथर्ववेद,
 इसमें शिल्पविद्याहै, ९, शिक्षाग्रंथ, १० कल्पशास्त्र, ११ व्याकरण,
 १२, नैरुक्तं, १३, छंद-इसमें गायत्रीवगेराहै, १४, ज्योतिषमें एक
 भृगुसंहिता. १५, इश-केन-कठ-प्रश्न-मुंड-मांडुक्य-तैत्तय्यैतरी-छां-
 दोग्य-बृहदारण्यक-श्वेता-स्वतः-कैवल्य-इत्यादिबारह उपनिषद,
 १६, शारीरकसूत्र, १७, कात्यायनादिसूत्र-१८, योगभाष्य, १९,
 वाकोवाक्य, २० मनुस्मृति, और-२१, महाभारत-ये एकीसशास्त्र
 सत्यहै, मनुष्यराचित ब्रह्मवैवर्त्तादि (१८) तरहके पुराण पहिला
 गप्प-पाषाण वगेराकी मूर्त्तिकों देवबुद्धिकरके पूजना दूसरागप्प,
 शैवशाक्त वैश्रवणपतिवगेरा संप्रदाय तीसरागप्प, तंत्रग्रंथोंमें कहा-
 हुवा वाममार्ग चोथागप्प, भंगपीनावगेरा नशाकरना पांचवागप्प,
 *पराइस्त्रीगमनकरना छठागप्प, चोरीकरना सातवागप्प-और-छल-
 कपट अभिमानतथा जूठ बोलना आठवागप्पहै. रिग्वेदवगेरा (२१)
 एकीसशास्त्र +परमेश्वरकेबनाये यहपहिला सत्य. ब्रह्मचर्याश्रममें
 गुरुसेवा और अपने स्वधर्मपर चलकर वेदोंका पढनादूसरा सत्य,
 *वेदमेंकहेहुवे वर्णाश्रम धर्मसंध्यावंदना अग्निहोत्रादि तीसरासत्य,
 यथोक्तस्त्रीगमन-पंचमहायज्ञोंका अनुष्ठान-रितुकालकेसमय अपनी
 स्त्रीकेपास जाना-और श्रौतस्मार्तआचारवगेरा अनुष्ठान चोथासत्य.

* फिर-सत्यार्थप्रकाशमें-एकस्त्रीकों ग्यारहपतिहोनेकीआज्ञा कैसे दिइ गइ,

+ निराकारइश्वरने रचना किस मुखमें किइ ?

* वेदमेकहाहुवावर्णाश्रम और धर्म सत्य-और-दूसरेका वर्णाश्रमधर्म झूठ, क्या
 खूब पक्षापातरूपजामा पहनाथा ?

शमदमतपःचरणयमादिसमाधितकउपासना और सत्संगपूर्वकवान प्रस्थादि पांचवामत्य, विचारविवेकवैराग्यविद्याभ्यास और संन्यासग्रहणपूर्वक संपूर्णकर्मोंके फलकों छोडदेना छठासत्य, ज्ञानविज्ञानसे सर्वअनर्थ-जन्ममरणहर्षशोक कामक्रोध लोभमोहसंगदोष त्यागवगेराअनुष्ठान सातवासत्य, अविद्यारागद्वेष अभिनेवेश तमःरजः *सत्त्वगुण-सर्वक्लेश निवृत्ति-पंचमहाभूतमें न्यारा-मांक्षस्वरूप स्वराज्यप्राप्तहोना आठवा सत्य. [दयानंदसरस्वत्पारव्येनेदं

पत्रं रचितं, नत्सज्जनै वेदितव्यम्—] जोलेतूरमें छपा. यहविज्ञापनपत्र दयानंदजीने छपवायाथा इसमें (२१) शास्त्रसत्य मानेथे लेकिन ! पोलें जब नवोनसत्याथप्रकाश लिखा तब बदलेथे,

५-संवत् (१९२६) में-जब दयानंदजी काशीगयेथे स्वामी विशुद्धानंदजी तथा बालशास्त्रोकेशाथ उनका वादानुवाद हुवाथा. लेकिन ! प्रकटरूपसे किसीकी विजयनहोहुइ. दोनोंदल अपनीअपनी विजय मान बैठरहे. इसविषयमें भारतेंदु-बू हरिश्चंद्रजीने अपनोवनाइ दूषणमालिकाकी भूमिकामेंइसतरह लिखा कि-“दयानंद नामो-क्याजाने कौनजात-वा-किसआश्रपके कोइनग्रपुरुष सबदर्शोंमें भ्रमणकरतेहुवे-मनातन-धर्मरूपोंमूयेंकों राहुकोभांति ग्रासकरतेहुवे-मूर्खों और आलस्यभरंजीवोंकों अपनेरंगमेंरंगतेहुवे-और अपने वाक्यवाणोंसे साधुलोगोंके हृदयकों दाहकरतेहुवे काशीमें आये. मन १८५० .स्वी.-काशी-(हरिश्चंद्र,)-संवत् (१९२९) में जब दयानंदजी पुनःकलकत्त गयेथे-वहांभी पंडित ताराचरणजो

* यहां सत्त्वगुणभी त्यागने योग्य कह दिया ठीकहै-जो मनःकल्पितमतवाले-होतेहै जरूर मूळजातेहैं बतलाना चाहिये विना गुणभीकोइ पदार्थ होसक्ताहै ?

जो गांवभाटपाडेके रहनेवाले थे शास्त्रार्थ किया था. लेकिन! ननी-जा कुच्छ नहीं निकला. दोनो दल अपनीअपनी विजयका डंका बजाते रहे. संवत् (१९३०)में जब द्रव्यकीसहायतामिली लंगोट बांध नंगा फिरना छोडकर अच्छेकपडे और बहुमूल्य जूता पहनने लगे.

६-संवत् (१९३१)में उनका प्रथम सत्यार्थप्रकाशग्रंथ छप करतयारहुवा-उसमें लिखाथा कि-सृष्टिकी आदिमें अग्नि वायु आदित्य और अंगिराके हृदयमें वेदोंका प्रकाशहोना, दसपुरुषों तकसें नियोगकी आज्ञादेना, मांमादिपदार्थोंसें सवेरसांझ दोनोंवरुत होमकरनेकी आज्ञा फरमाना, मांसभक्षणकी पुष्टि करना, यज्ञमें वंध्यागौ और बैलआदि नरपशुओंके वधकी विधिकरना, स्वर्गनर्कलोकका नमानना, प्रतपक्षादि आठ प्रमाणमानना, इत्यादि-बाते विद्वान् लोगोंमें-छिपीहुइनहीहै. इसकेबाद दयानंदजी बंबइ गये-और-इन दिनोंमें यह इगदाकियाकि-विद्यमानचारोंवेदोंकी मनमानी टीकाबनाकर फेलाइ जाय ताठी कहै, दयानंदजीका प्रथमआर्यसमाज बंबइमें स्थापितहुवा, और दाननियमभो बनायेगये, तोसरेनियममें लिखाकि-वेद-सत्पविद्याओंका पुस्तकहै, वेदोंका पढनापढाना सुननासुनाना सबआर्योंका धर्महै. संवत् (१९३२)में दयानंदजी पुनातर्फ गये. फिर वहांसें पीछेलोटे, और-दिल्लीहोकर पंजावमें लुधिहाना लाहोर-अमृतसरवगैरातर्फ विचरनेरहे, संन्यासी-योंकेलिये पैदल चलनाकहा. लेकिन! आरनवासीसें देशाटनकरतेथे. लाहोरमें जब दयानंदजी व्याख्यानदेनेलगे पुरानेवेदिकमतवाले इनसें नाराजहुवे, एकजगहनहीहरजगह यहीहालथा. सबकि-पुराने

वैदिकमतसें इनकाइरादा भिन्नथा. जहां जातेथे यही फरमातेथे कि-उव्हट-सायन-महीधर-और-रावणवगेराके बनायेहुवे-वेदभाष्य महाभ्रष्ट और अंधकार बढानेवालेहै. मूर्तिपूजा गप्प-और-तीर्थोंमें भटकनाभी निरा झूठहै. इधर पुरानेवैदिकमतवाले जाहिरकरतेथे कि-दयानंदजीका व्याख्यान-वेदसें-विरुद्ध है, सुननानचाहिये.

७-मंगलदेवपराजय पृष्ठ(१९)पंक्ति(१३)मेंछपाहैकि-दयानंद-जीनेप्रथमसत्यार्थप्रकाशमें विस्तारपूर्वकयुक्तिसहित-मृत्युहुवेपुरुषोंके श्राद्ध और तर्पणकीविधि लिखी. फिर जबकि-उसका खंडनकरने लगे-और-लोगोंने आक्षेपकियाकि-आपने अपने पुस्तकमें क्या लिखाहै?-और-व्याख्यान क्या ! देतेहो !-तब वेदभाष्य अंक (२) के टाइटलपेंजपर झूठाविज्ञापन जाहिर कियाकि-सत्यार्थप्रकाशमें-तर्पण और श्राद्धके विषयमें जो छापागयाहै सो लिखने और शोधनेवालोंकी भूलसें छपगयाहै, खूब ! कहा ! कहकर बदलना इसीका नामहै. अपनी लिखीवातसें मुकरना और दूसरेकों दोषदेना संन्यासधर्मधारियों मुनासिब नहोथा. संवत्-(१९३४)में-फिल्लोर-जिला-जालंधरनिवासी-पंडितश्रद्धारामजीसें दयानंदजीका शास्त्रार्थहुवा. उनोंने दयानंदजीकी खूब खबर लिइ, लेकिन ! जो शरूश जानबुझकर जिसवातकों स्थापनकरना चाहताहो उससें कैसे हठेगा ?

८-दयानंदजीने सत्यार्थप्रकाशके वारहवेसमुल्लासमें जो जैनमतका खंडनलिखाहै उसमें नास्तिकमतके लेकर-जैनधर्मकेलोगोंकों कलंक दिया और-कहाकि-देखो ! ये श्लोक जैनोंने बनारखेहै, सत्यार्थ-प्रकाशके पृष्ठ (४०२) पंक्ति (२०) से पृष्ठ (४०३) पंक्ति (१८) तक लिखाहैकि-

[श्लोकाः]

यावज्जिवं सुखं जीवेत्-नास्ति मृत्योरगोचरः

भस्मीभूतस्य देहस्य-पुगरागमनंकुतः, ?, (इत्यादिसँलगाकर)

त्रयोवेदस्य कर्त्तारो-भांडधूर्त्तनिशाचराः,

जर्फरी तुर्फरीत्यादि-पंडितानां वचःस्मृतं,

अश्वस्यात्रहि शिक्षं तु-पत्नीग्राह्यं प्रकीर्त्तितं,

भंडैस्तद्वत् परं चैव-ग्राह्यजातं प्रकीर्त्तितं,

मांसानां खादनं तद्वन्-निशाचरसमीरितं,

(यहाँतक तेरांह श्लोक) लिखकर कहदिया ये श्लोक जैनोंने बनारखेहै, लेकिन ! यहवात सरासर झूठहै, ये श्लोक जैनकेनही किंतु सर्वदर्शनसंग्रहग्रंथ जो वैदिकमतानुयायीमाधवाचार्यने रचाहै उसके है. जिनकों शंशयहो कितावसर्वदर्शनसंग्रह मंगाकर देखले, कलकत्ताके सारसुधानिधियंत्रमें छपीहै. सत्यार्थप्रकाशमें असा घोखादेनेवाला लिखाणदेखकरपंजाब-गुजरांनवाल निवासी-ला-लाठाकुरदासजी जैनधर्मावलंबीने-चीठीद्वारा जब दयानंदजीसे प्रमाणमांगा-और पुछाकि-बतलाइये ! ये श्लोक कौनसे जैनआग-ममें लिखेहै ? तब कुच्छसमयतकतो अनेकप्रपंचभरे जवाबदेतेरहे, कभी पुस्तक *विवेकसारका सहारा लिया, कभी कल्पभाषाको जा देखा, कभी यह जवाब लिखा आपको शुद्धभाषा लिखनाही नही आता, इसंतरह अपने हठधर्मकोही पालन करतेरहे. अंतमें लालाठाकुरदासजीने बंबइ जाकर-[जवकि-दयानंदजीभी बंबइ आयेहुवेथे] तारिख (१३) जून-सन (१८८२) इस्वीको-मिस्टर स्मिथ-अॅड-फ्रियर-हाइकोर्टके सोलिस्टरकीमारफत दयानंदजीको

* सोचना चाहिये-विवेकसार कौनसा जैनआगम था ?

नोटिस दिया. उसके जवाबमें दयानंदजीने तारिख (१९) जून-सन (१८८२) इस्वीकों मिस्टर पेंनी-अंड-गिल्बर्ट मारफत उत्तरदिया, - जिसका मतलब नीचे मुजबहै. हमारे मवक्किल स्वामी दयानंद सरस्वती यह समझरहेहे जैनमतके किसी विद्वानके रचितहीयहश्लोक है-इसलिये तुमारा मवक्किल या कोइदूसरा जेनी हमारे मवक्किलकों यह सिद्ध करदेगाकि-पूर्वोक्त श्लोक जैनधर्मसे विरुद्धहै तो सत्यार्थप्रकाशपुस्तकके छपानेवाले-राजाजयकृष्णदास-सी-एस-आई-मुरादाबादनवासी दूसरीवारछपनेके समय उनश्लोकोंको पृथक् करदेवेंगे. इरुमें हमारे मवक्किलकों कुछ उजर नहीहै. महाशय !- देखिये ! क्या उत्तर दियाहै ?-यहतो दयानंदजी खुलाखुला कैसे कहशकेकि-हम-भूलेहै, लेकिन ! समझनेवाले समझसकतेहै कि-जब उनश्लोकोंको उक्तग्रंथसे पृथक्करदेनेमें कुछ उजर नहीरखते-तो जानाजाताहै कि-उनकंदिलमें सबूतहोगया येश्लोक जैनके नही. महाशयदयानंदजी ! इन्नी कमजोरी क्यों बतागये ? अगर पहिलेसेही ऐसी आदत नडालतेतो कितना अच्छा था ? यह सबूत-होचूकाकि-ये-श्लोक नास्तिकमतके है, जैनके नही. इसकी गवाही सर्वदर्शनमंग्रह किताबहै शंभयहो देखलो-अच्छाहुवा जोदयानंद-जीने नवीनसत्यार्थप्रकाशमें इनश्लोकोंको जैनका नही कहा, किंतु नास्तिकमतका मान लिया, नहीतो हमको इसका यथार्थ भेद और दयानंदजीकी अधिकपॉल खोलनी पडती, सत्यार्थप्रकाश तीन-चारदफे छपाहै इसलिये परस्पर पृष्ठसंख्या नमिले तो बारहवा समुल्लाम देखलेना जिसमें जैनकावर्नन जैनबौधऔर नास्तिकको पिश्रितकरके लिखाहै.

९-संवत् (१९३९) में-दयानंदजी जब उदयपुर गयेथे वहां-जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा-संवेगीसाधु-श्रीमान्झवेरसागरजीमहाराजसे उनका जोकुच्छ वादानुवाद हुवा यहाँलिखाजाताहै. श्रीमान्झवेर-सागरजीको जब यहसमाचार मिलाकि-दयानंदजी जैनोंकेनास्तिकवतलातेहै एकआदमीको उनके पास भेजकर यहपुछाकि-तुम जैनोंको नास्तिक किसग्रंथके प्रमाणसे कहतेहो ? अगर प्रमाण रखतेहो तो लिख भेजो-या-विदितकरो. नहींरखतेहो तो यह तुमको अथवा कोइभी विद्वान्को मुनासिवनहीकि-विनाप्रमाणके किसीको अनुचितशब्द कहे, इसपर दयानंदजीने अपने दोनवीनशिष्य जो उदयपुरमेंही कियेथे सहजानंदादिको श्रीमुनिझवेरसागरजीके पासभेजे, उनोंने मूर्त्तिपूजा-और-जीवराशिपर प्रश्न किये-जिनका जवाब उक्तमहाराजने दिया. फिर कुछदिनोंकेपीछे-श्रीमान् झवेरसागरजीने दयानंदजीकेपास एकशखशको भेजकर यह कहलायाकि-आपने जो निजरचितसत्यार्थप्रकाशके द्वादशसमुल्लासमें जैनोंके नामसे झूठे श्लोक लिखेहै सो-यातो-उनको अपनेग्रंथसे निकालडालो. और जो उनको किसीजैन शास्त्रसे सिद्धकरनेकी सामर्थ्यरखतेहोतो सन्मुखहोकर शास्त्रार्थकरलो, यह समाचार सुनकर स्वामीजीके छके लूटगये. मनमें विचाराकि-ठाकुरदासतो अल्पज्ञी भिडनेको तयारथा-यह-साक्षरपुरुष शास्त्रार्थको स्वतःउद्यमीहुवा. अब क्या कहाजाय ! बस ! इसबातके घमंडमें आनकरकि-यहाँके महाराणा साहिब हमारेरागीहै श्रीझवेरसागरजीका कुछभी उत्तरनहीदिया. जबयहसमाचार श्रीझवेरसागरजीको विदितहुवे तो उनोंने एक विज्ञापन बडेहफोंसे लिखा-और-काष्ठकी तखतीपर लगाकर अपने

उपाश्रयके दरवाजेपर (जहां) सर्वलोगोंकी दृष्टिपडे लटका दिया. उसमें यह लिखाथाकि-दयानंदसरस्वतीने अपने बनायेपुस्तक सत्यार्थप्रकाशमें कुच्छनास्तिकमतके श्लोकलेकर उनको जैनमतका कह दियाहै. इसविषयमें हम दयानंदसरस्वतीसे शास्त्रार्थकरना चाहतेहै, और यह प्रतिज्ञाभी करतेहै कि-यदि शास्त्रार्थमें हमारी पराजयहुई तो हम दयानंदजीके शिष्य होजायेंगे-और-जो हमारी विजयहोगी तो दयानंदजीको हमारा शिष्यहोना पडेगा,

१०-जिसदिनसे यह साइनबोर्ड (तखती) लटकाइ गइ दयानंदजीको बडा कष्ट हुवा. श्री झवेरसागरके संबंधमें मनमानेअपशब्द बोलने लगे. कइप्रकारका डरभय दिखलाया-जब कोइ कामठीक नहुवा तो महाराणाजीसेही कहना पडा कि-आपके अखंडप्रताप राज्यमें-झवेरसागरसंवेगीने विज्ञापन लगाकर हमको महान्कष्ट दिया. इस विज्ञापनकेतखतेको जबतक नहठाय जायगा हमको बडाकष्टहै. इसको महाराणाजीने स्वीकारलिया, तब-एक-श्रीझवेरसागरजीका शिष्य श्रावक उस समय दयानंदजीकेपास उपस्थित था इससमाचारको सुनकर चलपडा-और श्रीझवेरसागरजीके पास आनकर कहनेलगा-यह विज्ञापनका तखता स्वतःउतारदियाजाय तो ठीक है नही तो महाराणाजीकी आज्ञासे उतार देना पडेगा, आज दयानंदजीने उनसे आपकी बहुत बुराई किइहै.-तब-श्रीझवेरसागरजीने कहा कुच्छ फिकरनही सवकार्य ठीक होजायगा. श्रीझवेरसागरजी सवेरे और श्यामको दोनोवखत बहार दिशाजंगलको जायाकरतेथे सो इसरोजवेँ इसतरफ पधारे जहां उदयपुरके एजंट साहेबकी कोठीथी, दीशाजंगल होकर सीधे एजंटसाहबके

बंगलेपर चले गये. पहरवालेने साहिब बहादूरको खबर दिइ कि-कोइ फकीर बहार खडाहै. साहिब बहादूर बहार आये-श्रीझवेरसागरजीको सलाम किया. कुरसीपर बिठलाकर पूछा-पूज्यसाहिब ! क्यों आनाहुवा ? श्रीझवेरसागरजीने कहा-हजूर ! आपके स्वतंत्रनिर्मलराज्यमें एकअनुचितकार्य तो यह होगयाकि-दयानंदजीने हमारे धर्मसंबंधी झूठे श्लोक नास्तिकमतके लेकर उनको हमाराकहकर हमारादिल दुखाया, दूसरा अनर्थ यह होनेवालाहैकि-मैने एकपाटिये (साइनबोर्ड) पर एक विज्ञापन इसविषयका लिखकर अपने मकानपर लटकायाहै कि-दयानंदसरस्वतीने जो श्लोक अपनेपुस्तकमेंजैनियोंके कहकरलिखे है वह जैनके किसीग्रंथकेभी नहींहै. सो दयानंदजीको हमसे शास्त्रार्थ करना चाहिये, जो हम हारेंगे उनके शिष्य होंगे. वह हारे हमारा शिष्य होजाय. इसपर दयानंदजी शास्त्रार्थ तो नहींकरते किंतु राणाजीसे कहकर वह तखता (साइनबोर्ड) हटाना चाहतेहै-सो क्या ! यह अन्याय नहींहै ? इसपर साहबबहादूरने कहा-हम समझ गये-तुम कुच्छ भय मतकरो. हमारे देखेबिदून तुमारा साइनबोर्ड (तखता) नहीं हटैगा. और कलरौज शुभह हम उसको जरूरदेखेंगे. श्रीझवेरसागरजी अपने स्थान चलेआये. दूसरेरौज निजवचनानुसार एजंटसाहब-श्रीझवेरसागरजीके उपाश्रयपरआये. विज्ञापनको पढा-और कहा-इसमें राज्य विरुद्ध कोइ लेख नहींहै. और अपने सत्वकी रक्षाकेलिये सबकोइ ऐसा करसंक्ताहै. यह नोटिस राज्यके हुकमसे नही उताराजायगा. और इन्होंने तो अपने निजस्थानपरही लगायाहै, इसमें कुच्छ राज्यका हर्जनही, बराबर लगारहने दो.

यह कहकर एजंटसाहिब चलेगये. और दयानंदजीको चुप होजाना पडा. कुच्छ बननहीपडा. और इसबातका ज्यादातर खेद हुवाकि- एकछोटेसें कार्यमें बहुतबडे प्रतिष्ठित महाराणासाहबकी सहायता चाही और अफल हुई,

११-संवत् (१९३९)में-दयानंदजीको अपनी पूर्वोक्तसंपूर्ण रचना तथा व्याख्यानोंका विश्वास त्यागकर नवीनसत्यार्थप्रकाश-लिखना पडा. जो प्रथम सत्यार्थप्रकाशसें बहुत विरुद्धहै. जैसे जैनसें दुंढियेलोग बदलतेहै पुरानेवैदिकमतसें दयानंदजीबदलतेथे. अच्छा ! अब हमको यहां वहबात दिखलानाहै जो जैनोके संबंधमें दयानंदजीने लिखाहै, पुराना सत्यार्थप्रकाश-तथा नवीनसत्यार्थ-प्रकाश जो (१९३९)में दयानंदजीने लिखा-और-तीसरी-चोथी-दफे प्रयाग वैदिकयंत्रालयमें छपा है यहां उनतीनोंकी पृष्ठसंख्या लिखकर जवाब दियाजायगा. सबबकि-हमारे पासतीनों सत्यार्थ-प्रकाश मौजूद है,

१२-सत्यार्थप्रकाशपृष्ठ ३९८ पंक्तिमेंदयानंदजी लिखतेहै-जैन वौध-और नास्तिक-इन तीनोकामत कोइकोइबात छोडकर एकसा है, फिर सत्यार्थप्र. पृष्ठ ४०९ पंक्ति १६ में-कहतेहै राजा शिवप्रसाद सितारेहिंदने इतिहासतिमिरनाशकग्रंथमें लिखाहै कि-इनके दो नामहै. एक जैन और दूसरा वौध ये पर्यायवाची शब्द है फिर सत्यार्थप्र. पृष्ठ ४१० पंक्ति १० में लिखाहै कि-अबदेखो ! अमरकोशमें बुध जिन औरवौध तथा जैन एकके नामहै वा नही ? क्या ! अमरसिंहभी बुध जिनके एक लिखनेमें भूल गया ?-(जवाब.) महाशय ! अमरसिंहजीने दोनोंमत एक नहीकहे. नाम एकहोनेसें

मत एक नहीं होसकता, तनक दोनों मतके शास्त्रोंको देखकर लिखते तो अच्छाथा. अमराचार्य नहीं भूले आपही भूले हो. जो जो देव-गरु-शास्त्र-और-तत्व *जैनकेहै बौधके नहीं. नास्तिक दोनोंसें उ. उग है. आपने इतनी ओछीतहकीकातपर क्यों एक कहनेकी बहादूरी जाहिरकिई ?-यहतो-साधारण विद्वान्भी जानते है कि-जैन.और-बौध-न्याराहै. पर्यायवाचीशब्द जो राजाशिवप्रसादजीनेकहा उसपर जो आपकोइतनाहठहैतो देखो ! उन्हीकीलिखीचीठीमें वे क्याकहरहेहै ?-जो पंजाब-गुजराणवालेके जैनोने मंगवाइ थी. [चीठीकी नकल]-श्री,पं-सकल जैनपंचायत गुजारा न्वालाकों शिवप्रसादका प्रणामपहुंचे, कृपापत्र पत्रोंसहितपहुंचा. (१) जैन बौध मत एकनहीहै,सनातनसें भिन्नभिन्न चले आये. जर्मनीदेशके एकबडे विद्वान्ने इसके प्रमाणमें एकग्रंथ छापाहै,(२) चार्वाक और जैनसें कुच्छ संबंधनही.जैनकों चार्वाक कहना ऐसा है जैसा स्वामीदयानंदजीमहाराजकों मुसलमान कहना.(३)इतिहास तिमिरनाशकका आशय स्वामीजीकी समझमें नहींआया.उसकी भूमिकाकी नकल.इसकेशाय जातीहै उससें विदित होगाकि-संग्रहहै, बहुतबात खंडनकेलिये लिखीगइ.मेरे निश्चयके अनुसार उसमें कुच्छ भी नहीं हे ४ जोस्वामीजी जैनकों इतिहास तिमिर नाशकके अनुसार मानतेहै तो-वेदोंकोंभी असके अनुसार क्यों नहींमानते ? [आपकादास शिवप्रसाद.] बनारस-?जान्युआरी. सन १८७३ इस्वी. देखिये ! राजाप्रसादजीने जैनबोधमत एकनहीकहा. चोथी कलममें वे लिखतेहैकि-इतिहासतिमिरनाशकके अनुसार स्वामीजी

वैदोंकोंभी क्यों नहीं मानते ?—अर्थात् मैंने जो बतलायाहैकि—वेद थोड़ेकालके रिषियोंकेवनायेंहुवेहै. उसकों—इश्वरप्रणीत और सृष्टिकी आदकेवने क्यों फरमातेहै ?

१३—दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४१० पंक्ति १६ में—लिखते है कि—सर्वज्ञ—वीतराग—अर्हन्—केवली—तीर्थकृत—जिन—ये छःनास्तिकों के देवताओंके नामहै. (जवाब.) बतलाना चाहिये कोनसे नास्तिकग्रंथमें ये छःनाम उनके देवताके लिखे है, बडे अफशोषकी बातहैकि—जो लोग देवही नहींमानते—वें—सर्वज्ञ—वीतरागकों क्यों मानने लगथे ?—यहतो दयानंदजीकी इर्षाका नमूनाहैकि—किसी सुरत जैनकों नास्तिकहकर अपना हठधर्मपालन करना, फिर सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४११ पंक्ति ११ में दयानंदजी लिखते हैकि—अगर अनादिइश्वर नहोता तो “अर्हन्” देवके मातापिताआदिके शरीरका सांचा कौन बनाता ?—(जवाब,) यह चिंताजैनोंकों नहीं वें—जगत्कों अनादि स्वतःसिद्ध सबूतकरदेते है. यह दोष तो आपहीको आताहै जो निराकारको विकारमें पडकर जगत्का घना-नेवाला मानतेहो ? क्यों ! अंगविनाभी कोइशरुश किसीचीजकों घनासकताहै ?—अगर नहीं बनासकता तो फिर यह कैसे सबूत करसकतेहोकि—निराकारने जग्तवनाया, सर्वशक्तिमान् कहदेनाही जानतेहो या कुच्छ प्रमाणभी रखतेहो ?—जग्तकर्त्ताका खंडन देखना होतो इसकितावके पृष्ठ (५२७) पंक्ति ८ सें लगाकर (५३४) तक देख लो.

१४—सत्यायप्र—पृष्ठ ४१४ पंक्ति २६ में—दयानंदजी लिखतेहै कि—आदिसृष्टिमें—जीवके शरीर और सांचेकों बनाना इश्वराधीन

पश्चात् उनसें पुत्रादिकी उत्पत्ति करना जीवका कर्तव्य काम है (जवाब.) क्यों ! इतनेहीसें क्यों थक गये ? क्या ! निराकारइश्वर जगत्वनानेकातो शौकीन बने और पालनकरनेमें कायरपन बतलावे यह मुनासिब है ?—दयानंजी सत्यार्थप्र-पृष्ठ २१५ में लिखते हैं आकाश नित्यहै—और फिर नवीनसत्यार्थप्र-पृष्ठ २१९ में—रिग्वेदका—मंडल १ सुक्त १९ मंत्र ३—“सूर्यचंद्रमसौ घाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवं च पृथ्वीचांतरिक्षमथोस्वः बतलाकर फरमाते है कि—आकाश पृथ्वी सूर्यचंद्र वगेरा इश्वरके बनायेहुवे है. खूब पूर्वापरविरोधभरी बातकिइ. एक जगह आकाशको नित्य और एक जगह बनायाहुवा कहना—यह कौनसी बुद्धिमानीका काम है ?

१५—दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १७१ में लिखतेहैकि—यज्ञके लिये जो पशुओंकी हिंसाहै सो * विधिपूर्वकहै, पृष्ठ (३०३) में गौमेधादिकमें बंध्या गौ और बैलआदिनरपशुओंका मारना लिखा, पृष्ठ (३९९) में लिखाकि—पशुओंके मारनेमें थोडासा दुख होता है परंतु यज्ञमें चराचरका उपकारहोताहै, इसके प्रतिकूल—गौकरुणानिधिमें—तथा गौरक्षणीसभाके स्थापितकरते वरुत व्याख्यानोंमें मांसका निषेध किया, देखिये ! दयानंदजीकी परस्परविरोधीबातपरखयाल किजिये ! नवीनसत्यार्थप्रकाश चोथी वारका छपाहुवा जो हमारेपास इसवरुत मौजूदहै उसके पृष्ठ ३९९ पंक्ति ११ में लिखाहैकि—पशुमारकर होमकरना वेदादिसत्यशास्त्रोंमें कहीं

* उसविधिकों खोलकर क्यों नलिखी ?—मुसल्मानभी तोयही कहते हैं कि—हमभी विधिसे मारते हैं.

नहीं लिखा. इससे तनक अगाडी बढ़तो पृष्ठ ४०० पंक्ति ६ में लिखा है—वेदोंमें कहीं मासका खाना नही लिखा. [इसकाजवाब] वेदोंकी भाष्य और टीकाकरनेवाले—उन्हट—सायनाचार्य और मही धराचार्यवगैरोंने साफसाफ लिखा है कि—यज्ञमें—इसतरह हिंसाकरना. दयानंदजी नमालूम क्यों कभी कबूल और मुकरते है, देखिये ?—रिग्वेदमें अश्वमेधका हालयों लिखा है कि—घोडेको नहलाकर और उसपरकीमतीसाज चढाकर और उसके आगे रंग बरंगकी बकरियां रखकर उससे अग्निकी परिकम्मा दिलाइ, और फिर खंभेसे बांधकर और हथियारसे काटकर उसकामांस सीखपर भूना और उवाला और गोले बनाकर खागये. और एकजगह ऐसाभी लिखा है कि—मैत्रावरणी बशामालनेत्—अर्थात् मंत्र और वरुणके लिये वांझगौ मारनी चाहिये. रिग्वेदके ऐतरेयब्राह्मणमें—और शुक्लयजुर्वेदके शतपथब्राह्मणमें पशुमारनेकी बात है. अथर्वणवेदके गोपथब्राह्मणभागके द्वितीयप्रपाठकमें ऐंद्राग्नि देवताकी प्रीतिके लिये पशुवधकरके यज्ञकरना लिखा, आपस्तंबीयधर्मसूत्र जो छपाहुवा हरदत्तनामकीटीका युक्त है उसमें गौवधकरके मधुपर्क करना लिखा,—इधर शंकराचार्यजी (जहां बौधोकेशाथ उनका संवादहुवाहे) वहां फरमाते है रे रे! नीच !! तूं क्याक्या बोलरहा है कि—अहिंसा धर्म है?—सुन! वेदसंबंधिनीहिंसा धर्मरूप है—सर्वदेवोंकी तृप्तिहोनेका कारण है—तद्वारास्वर्गप्राप्ति वगैरा फल देखेजाते है इसलिये यज्ञमें पशुकी हिंसा करनीयोग्य है. उसका पाठ शंकरदिग्विजय जो आनंदगिरिने बनाया है उसके (२६) में—अध्यायसें यहां लिखते है “रे रे! सौगतनीचतर! किंकि जल्पसि! अहिंसा कथं

धर्मो भवितुमर्हति ? यागीयाहिंसा-धर्मरूढत्वात्-(तथाहि) अग्निष्टोमा-
दिऋतुः छागादिपशुमानयागस्य-परमवर्धत्वात्-सर्वदेवतृप्तिमूलत्वा-
त् च-तद्द्वारास्वर्गादिफलदर्शनाच्च-पशुहिंसा-श्रुत्पाचारतत्परैरंगी
करणीया, देखिये ! दयानंदजी ! आपके शंकराचार्य क्या फरमा-
गये है ?-इधर महाभारत क्या-कहता है ?

ध्रुवं प्राणवधो यज्ञे-नास्ति यज्ञ स्त्वाहिंसकः

ततो हिंसात्मको यज्ञः-सदा कार्यो युधिष्ठिरः

इत्यादि प्रमाणोंसे सबूतपायाजाताहैकि-वेदमें हिंसाकरनी
फरमायी है, आप क्यों मुकरतेहो ?-क्या ! दूमरोंके तर्कतापसे
घभराते हो ? सबूतहोताहैकि-वेद अज्ञानीयोंके रचेहुवे है, क्या !
वैदिकमतवालोंके घरमें सुन्नाचांदी झवाहिरात-और-मेंवाभिठाइ
नही थे जो देवोंकेसामने अर्पण करके पूजा करते-क्या ! वैदिक
देवोंको मांसशिवाय तृप्ति नही आतीथी-अगर कहाजायकि-जैन-
लोगजो-प्रतिमाकेसामने फलफुल चढाकर पूजाकरते है इसमें क्या
हिंसा नही होती ! (जवाब.) फलफुल चढानेमें जीवके गलेका-
टनेकी तरह रौद्रभाव नहीआता-कहां पशुवध-और कहां फलपु-
ष्प ?-मौचसमजकर तर्क उठाये करो.

१६-महाभारतवगेरासें जाहिर होताहैकि-पांडवोंने यज्ञ
किया. उत्कंठमहादेवकेपास जावालिरूपिने यज्ञ किया जिसका
नाम खैरनाथ जाहीर है. दयानंदजी वैदिकयज्ञोंकी हिंसा छिपाना
चाहते है लेकिन ! छिप नहीसकतो. कइलोग यज्ञमें घृत-दूध-और
उर्दकीदाल वगेराके पशुवनाकर होमकरते है. और कहदेते है,
वेदमें हिंसा नही कही. लेकिन ! यहसब दूसरोंकीतर्कतापसें बच-

नकेलिये वहाना है. यज्ञमें पशुवधकरनेसे उसपशुका भला है ऐसा मानाजाय तो इसलाभसे मनुष्यकों क्यों वंचित रखागया?—अगरकहाजाय उसमें पशुका कुच्छभला नहीं होतातो बतलाना चाहिये निरापराधीके गले छूरीफेरना कौनसा न्यायहै? दयानंदजी तो खैर! बातवातमें बदलते है, लेकिन! औरभी कोइ वैदिक महाशय इसके संबंधमें प्रमाणरखतेहो तो बतलावे. रिग्वेदकी संहितामें गौवलिदानकरनेकी रिचाहै—और उसीमें लिखाहैकि—जो पशुकावलिदान करताहै स्वर्गकी तरह आनंददाताहै, सत्ययुगमें रिगकेतुने गौका वलिदान किया. ब्राह्मणलोग एकदफे विश्वामित्रके यज्ञमें (१००००) दसहजार गौ खागये. दयानंदजी! आपने चतराइ किइकि—वेदकीहिंसासे मुकरगये, नहींतो आजकल नमालूम ऐसेकामकरनेहारोंकों क्या क्या दंड दियाजाता?—गौकों पवित्र समझना और उसके वधकी आज्ञाफरमाना यह परमपवित्रवेदोंहीकी वाणी है. देखो! यजुर्वेद अध्याय २४ मंत्र २७—इसमें लिखाहैकि—वृहस्पतिकेलिये गो मेध कियाजाय यानी गौका होम कियाजाय. यजुर्वेद अध्याय २४ मंत्र २८ में लिखाहै प्रजापतिकेलिये नरमेध यज्ञहो. इसपर दयानंदजी फरमाते हैकि—इसका अभिप्राय यह नहीं जो—हम—मनुष्योंका—वध करे. इसका मतलबतो यहहैकि—मनुष्य परमेश्वरकेलिये अपने आपको जीताही अर्पण करदेवे. विद्वान् लोगो! मुनलिजिये! दयानंदजीका वेदभाष्य क्या उमदा अर्थ फरमाताहै! आप ऐसे चतरथेकि—किसीका निशाना नहींबनते थे. और दूमरोंकी तर्कतापसे वचजाते थे. लेकिन! जब गोमेधकेलिये पूजाजायगाकि—बतलाइये! गौ—अपनेआपको

परमेश्वरकेलिये कैसे अर्पण करसकेगी ?-इसके जवाबमें दयानंद-जी क्या कहसकेगे ? खेर ! दयानंदजी तो रहे नहीं, उनका कोई आर्यसमाजही इसका जवाब दे तो बड़ीखुशीकी बातहै, याद रहे ! इसीलिये दयानंदजीके बनाये वेदभाष्यकों काशीवगेराके वैदिक-पंडितोंने मंजूर नहीं किया. सबबकि-पदपदपर अर्थ उल्टाये हुवे है. समाजीलोग दयानंदजीकेलिये चाहे जितना बुगल बजावे-उ-ससें होता क्याहै ?

१७-यहमत कहनाकि-दयानंदजी-वेदोंके ब्राह्मणभागकों नहीं मानते थे. देखो ! सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ६०१ पंक्ति १४ सें आगे लिखाहैकि-चारोंवेदोंके ब्राह्मण-अंग-उपांग-चारउपवेद-और- (११२७) वेदोंकी शाखा जोकि-वेदोंके व्याख्यारूप-ब्रह्मादिम-हर्षियोंके बनाये ग्रंथहै उनकों परतः प्रमाण-अर्थात् वेदोंके अनु-कूल होनेसें प्रमाण और जो इनमें वेदविरुद्धवचनहै उनकों अप-माण मानताहू. [इसपर मंगलदेव पराजय पृष्ठ ३१ पंक्ति (२) पर लिखाहैकि]-यहां ब्रह्मादिमहर्षियोंके बनाये ग्रंथोंमें वेदविरुद्ध व-चन कहनेसें स्पष्ट सिद्धहैकि-स्वामीदयानंदजीकों-ब्रह्मादिमहर्षि-योंसें अधिकविद्वान् होनेका अभिमान था. और उनका अज्ञान उन्हीके लिखे हुवे सत्यार्थप्रकाशादिग्रंथोंसें सम्यक्प्रकटहै, यहां हमकों इतनाहीलिखना बहुतहैकि-दयानंदजीने लाखचतराइकिइ लेकिन ! झूठहोनेसें चली नहीं.

१८-जिस वैदिकमतावलंबीकों यह अभिमानहोकि-वेद-इ-श्वरप्रणीतहै-वह-इसलेखकों सावधानीसें पढे. रिग्वेदभाग (२) मंत्र (७)में-लिखाहैकि-वेद-परमेश्वरसें आये है-इसलिये सवतर-

हकी स्तुतियोग्य है. यजुर्वेदके शतपथमें लिखा है कि-चारोंवेद पर-
 मेश्वरके *श्वात्सें निकसे. मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक (२३) लि-
 खा है कि-ब्रह्माने अग्निवायु और, सूर्यसें-रिगवेद-यजुर्वेद-और-
 सामवेदको आकृष्ट किया. और यहभी उसीश्लोकमें कहा दिया कि-
 तीनों वेद असलमें सनातन है, शारिरिक अध्याय १-पाद ३-सूत्र
 १९ में लिखा है वेद अनादि है. इधर महाभारत और दयानंदजी-
 की बनाइ रिगवेदादिभाष्य भूमिकामें लिखा कि-जब प्रलयहोगा
 तब वेद परमेश्वरमें लीन होजायगे. क्योंकि-वे-उसीसें प्रकटहुवे है
 जब फिर दूसरीसृष्टि होगी तब रुषिलोग परमेश्वरकी आज्ञासें त-
 पस्या करेगं और वेदोंको पायगें. दयानंदजीका यहभी कहना है
 कि-१, वृंद ९६, करोड ८, लाख (५२) हजार-९७५ वर्षहुवे वेद
 संसारमें आये. (१००) करोडका एक अरव-और-(१००) अर-
 वका एकवृंद कहाजाता है. इसमें मनुस्मृति-और-ब्राह्मणोंका पं-
 चांग साक्षी है. (जवाब.)-वेद इश्वरके फरमाये हुवे इसलिये नहीं
 कि-उसमें अप्रमाणीकवाते जाहिर है जो इश्वरके कथनकरने योग्य
 नहो. वेद पौरुषेय-या-अपौरुषेय? इसके नतीजेपर खयालकरते है
 तो यही मुनासिब ठहरता है कि-शब्दरूपवाणीका उच्चारण देहधा-
 री विदून नहीं होसकता. निराकार इश्वर-मुखसें बोले-यह मुखोंके
 शिवाय दूसरे नहीं मान-सकते. अगर इश्वरने रुषियोंपर प्रेरणा
 किइ माने तोभी देहविदून प्रेरकका मानना युक्तिविकल है, वेद
 शब्दरूप है-और जो जो शब्दरूप है सो सो देहधारीका कथन होना
 चाहीये-इसवातको कोइ तोड नहींसकता. वेदोंमें कइमंत्र ऐसे है

कि-इश्वर-(रुद्र-सूर्य-त्र्यंबक-और चरुणवगेरासें)-विज्ञप्तिकरताहै कि-पेरा यह काम तुम करदो, रिग्वेदके ऐतरेयब्राह्मणभागमें अष्टमपंचिकाके (२८)में खंडमें लिखाहैकि-इसअनुष्ठानसें राजाके सबशत्रु मरजाते है, इसमंत्रकों जपेतो फतेहमिले-इसपर कइ वैदिकलोग जवाबदेते हैकि-यहबात इश्वर थोडाही कहताहै किंतु मनुष्योंकों सिखलाताहैकि-तुमलोग ! इसतरह मेरी प्रार्थना करो लेकिन !-यहविल्कुल गलतहै-सबबकि-वेदोंमें किसीजगह यह नही लिखाकि-इश्वर मनुष्योंकों कहताहो, तुम ! ऐसे मेरी प्रार्थना करो, न किसी प्राचीन भाष्यकारने ऐसा अर्थ किया. असलपुछोतो वेदकी उत्पत्ति मनुष्यसें है इश्वरसें नही, इससें बहुतेरे वैदिकमतवाले अलबते ! नाराज होगे-लेकिन ! क्या कहाजाय-बिदून प्रमाणके कैसे कहदेवेकि-इश्वरप्रणीत वेदहै. कपिल-गौतम-पतंजलि और कणादवगेरोंने जो वेदोंकों छोडकर नवीनसूत्र बनाये, इससें मालूम होताहै उन्हांकों वेदोंकीप्रक्रिया अच्छी नही लगी होगी, असलमें वेद एकशखशके बनाये नही बल्किन् ! कइरुषियोंके बनाये हुवे है, रिग्वेदकी संहितामें बहुतजगह ऐसा लेखहैकि-वेदमंत्र रुषियोने उत्पन्न किये. रिषेमंत्रकृतास्तोमैः कश्यपोद-र्घयन्गिरः-इत्यादि प्रमाणोंसें कहसकते हैकि-वेद इश्वरके कहेहुवे नही.

१९-आर्यतत्त्वप्रकाशग्रंथके पहिले व्याख्यान पृष्ठ २० में लिखाहैकि-रिग्वेदका पहिलामंत्र विश्वामित्रके पुत्र मधुछंदस्ने-बनाया. और अंतका मंत्र अघमर्षणरुषिने-बनाया, इसलिये कहसकते हैकि-रिग्वेद उससमयका रचाहुवाहै जबकि-मधुछंदस् और

अधमर्षण वर्त्तमान थे. मधुच्छंदस् रुषिजिनोने पहिला मंत्र बनाया रामचंद्रजीके समयवर्त्तमान थे, इसकारण रिग्वेदके आरंभका समय प्रगट होगया. रामचंद्रजीसें सुमित्रतक वैदिकग्रंथोके अनुमार (५६) पीठियां होती है, और छमनपीठियोंके (११२०) वर्ष निकलते है. इसमें विक्रमादित्यसें आजतकका समय अर्थात् संवत् (१९५२) मिलानेसें विदितहोताहैकि- अबतक (३०७२) वर्ष होते है जबकि-रिग्वेदका आरंभहुवा था." यूरोपखंडके नामी विद्वान् मोक्षमूलरवगेराकोभी यही कहनाहैकि-वेदकेवचन ऐसे है जैसे अज्ञानीयोके मुखसें अकस्मात् निकसेहो-और इनकी रचना अनुमान तीनहजार (३०००) वर्षोंसेंहुइहै. वेदोंमें जहां दीर्घायुहोनेकी प्रार्थना किइहै यही कहाहैकि-मैं-(१००)-सोवर्षतक जीसकूं-कठ उपनिषदमें यम-नचिकेतासें कहताहैकि-तैरे बेटे-और-पोते मांग जो सोसोवर्षतक जीये. इत्यादिप्रमाणोंसे सबूतपाया जाताहैकि-वेदोंकी रचनाकों वने बहुतवर्ष नहीं गुजरे. महाशय ! अब कैसे कहाजायकि-वेद-निराकारइश्वरके रचेहुवे-या-उसके श्वाससें निकसे है ?-कैसे कहाजाय ब्रह्माजीने अग्निवायु और सूर्यसें आकृष्ट किये ?-कैसे कहाजायकि-अनादिहै ? और दयानंदजीकीतरह यहभी कैसे कहदेवेकि-वेद-इश्वरसें प्रकटहुवे और प्रलयके वख्त उसमें लीन होजायगे. फिर जब दूसरीसृष्टि दयानंदजीका निराकार इश्वर पैदाकरेगा तब उसकी आज्ञासें रुपिलोग तपस्या करेगें और वेदोंको पायगें. ऐसी ऐसी असंभववाते कौन मानसकताहै ? जिसमतमें एकवातपर कोइ कायमनही-कोइ कुच्छ और कोइ कुच्छ कहताहै उसपर कहांतक कोइ दरयाफत करे ? यह

निश्चय है कि—वेदोंमें पूर्वापर विरोध पिष्टपेषण—और—निष्प्रयोजन-वर्नन बहुतसीजगह है, इसलिये सबूतहोगया कि—वेद—इश्वरके कहे हुवे नहीं,—

२०—स, पृष्ठ ४३६ पंक्ति २९ से—दयानंदजी लिखते हैं कि—जितना मूर्तिपूजाका झगडा चला है वह सब जैनोंके घरसें और पाखंडोंका मूलभी जैनमत है. पुराने मंदिरोंको सुधरानेसें मुक्ति होजाती है, एककिसीने पांचकोडीका फूल चढाया उसने अठाराह देशका राज्य पाया. उसकानाम कुमारपालहुवा था. जैनलोग मंदिरोंमें लाखहां रुपये लगा देते हैं जिनसें कुछ संसारका उपकार नहीं होता. (जवाब.) दयानंदजीको मूर्तिपूजासें कुछ उपकार नहीं दिखता यह उनकी उत्तम समझका फर्क है, वाल्मीकीयरामायणको वैदिकलोग जैनमतसें पहिले लिखी गइ समझे हुवे है, और उसके सर्ग(४४)श्लोक(४२-४३)पर लिखा है कि—रावण शिवमूर्तिकी पूजा करता था. बतलाइये! दयानंदजी! फिर आप किस मुंहसें लिखते हो कि—मूर्तिपूजाका झगडा जैनोंके घरसें चला है?—मनुस्मृतिमें आठतरहकी मूर्तिका बयान है. रामायणको दयानंदजी इनकार करना चाहे तो नहीं कर सकते. पहिले सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ (६८) में मनुस्मृति—वाल्मीकीयरामायण और महाभारत प्रमाणीक मानचूके हैं. अगर आपमूर्तिसें नाराज थे तो आपने अपनी तस्वीर फोटोग्राफमें क्यों उतरवाइ? आपतो मूर्तिपूजाके उडानेको झंडा लेकर खडे हुवे थे. पाषाणादिको देवबुद्धिकरके मानना गप्प फरमा गये और कागज स्याहीसें बनीहुइ आपकी मूर्तिको दयानंदजीकी बुद्धिकरके मानना गप्प क्यों नहीं फरमाया? समाजीलोग अपने

घरमें आपकी रंगीनतस्वीर दिवारोंपर लटकाकर-उसका-आदर-सत्कार क्यों कर रहे है!-कोइ आपके रागी आपकी तस्वीरको यानी एककुरसीपर रखकर उसपे इतर फुल चढाके-गायन करे और-आपके जन्म-या-मृत्युकेदिन जलसा करेतो उसने मूर्तिपूजाका आदर किया जानना या-निरादर?-इश्वरकी-और-अन्य अन्य रुषियोंकी मूर्तिसे नाराज रहना और अपनी तस्वीर देशमें फैलाना यह पक्षपातनहीतो क्याहै? अगर आप सच्चे मूर्तिद्वेषीये. तो सत्यार्थप्रकाशमें पुत्र कन्याके विवाहसंबंधके लिये फोटोग्राफकी मूर्तिकों काममें लानेकी आज्ञा क्यों दिइ? कहिये! कागज-स्याहीकी मूर्तिकों स्त्री और मर्दकीबुद्धिसे देखनातो मंजूरहुवा-और देवमूर्तिकों देवबुद्धिसे देखना मंजूरनही यह कौनसी बुद्धि-मानीका काम किया? याद रहे! मूर्तिपूजासें कोइ नही बचा. परमात्मा-इश्वर-ओ-शिव-सत्-चित्-प्रजापति-ये क्याचीजहै? अगर कहाजाय ये खुद इश्वरनही किंतु इश्वरकी यादि दिलानेके आलंबनहै (जवाब.) फिर इसीतरह मूर्तिभी खुद इश्वरनही ले-किन! उसकी यादि दिलानेका आलंबन माननेमें क्या हर्जथा? अगर कहाजायकि-निराकारका आकार नही बनसकता-तो-यह भी कहसकते हैकि-निराकारका अक्षरभी नही होसकता. क्योंकि अक्षर साकारहै, और निराकार इश्वर जगत्कों भी नही बनासकता. रचना करना देहधारीका कामहै. दयानंदजीने तृतीयसमु-ल्लासमें-वेंदी-प्रोक्षणीपात्र-वगेरा पांच चित्र इसलिये बतलाये है कि-इसके आकारका. सभाजीलोगोंको ज्ञानहो देखिये! जड वस्तुके ज्ञानकरानेमे तो आप अपने चेलोंको मूर्ति बिना काम न

चाल-और-फरमाते है निराकार इश्वरका यूंही मनमें ध्यानकर लिया करो यह कौनसी बुद्धिमानी जाहिर करगये ? दयानंदजी ! सच्च कहना ! सब पाषंडोंका मूल जेन है या आप ?-पुराना या-नयामंदिर तभी सुधरवायाजायगा जब उसकी बुद्धि धर्मपर रजु होगो. जिसकी बुद्धि धर्मपररजु हो उसकी मुक्ति कौन रोकसकता है. पांचकोडीके फुलसें अठाराहदेशका राज्य कुमारपालने पाया इसबातकों आप किस प्रमाणसें तोडसकतेहो ?-पांचकोडीपर बात है या-उसके अंतःकरणकी भक्तिपर बातहै ?-पूरवजन्ममें वह दीन हीनथा. उसने पांचकोडीके फुल मौललेकर भक्तिसें देवकों चढाये और नमस्कार किया-जिससें अगले जन्ममें उसके पुन्यकी वृद्धि हुइ और राज्यपाया-इसमें कौनसी असंभवबातथी ?-मूर्तिके देखनेसें उसदेवकी यादी आती है उससें मनःपरिणाम शुद्धहोकर मनुष्यकों फायदा पहुंचताहै. दयानंदजीकों-ब्रह्माविष्णुमहेशकी-मूर्ति-स्त्री और हथियारवाली देखकर कुच्छ फायदा नही दिखताथा तो जैनोंकीतरह समाधि युक्तमूर्ति-बनवाकर उसकी उपासना करनेकी रसम जारीकरते, सन्यासीहोकर धनसंचयकरना-और-अपनी तस्वीर पूजवाना-बनपडा और यह काम क्या नही बनसकता था ?—

२१-सत्यार्थ-पृष्ठ (४३९) पर-पंक्ति १ में-दयानंदजीने जैनोंका नमस्कारमंत्र लिखकर बतलायाकि-इसमंत्रका बडा महात्म्य लिखाहै और सब जैनियोंका यह गुरुमंत्रहै. इसका ऐसा महात्म्यधराहैकि-तंत्रपुराण भाटोंकीभी कथाकों पराजय करदिया, इसमें जैनके अरिहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-और साधुओंकों

नमस्कार क्रिया है, यद्यपि मंत्रमें जैनपद नहीं है तथापि जैनियोंके अनेकग्रंथोंमें विना जैनमतके अन्य किसीको नमस्कारभी न करना लिखा है, (जवाब.)—जैनलोग पहिले जिसको (नमस्कारमंत्र मानते है उसको सुनलो.) नमो अरिहंताणं—नमोसिद्धाणं—नमोआयरियाणं—नमोउवझायाणं—नमोलोएसव्वसाहूणं—एसोपंचनमुकारो—सव्वपावप्पणासणो—मंगलाणंच सव्वेसिं—पढमं हवइ मंगलं. (अर्थः) अरिहंतकों—सिद्धकों—आचार्यक—उपाध्यायका—और—सवसाधुओं—कों—नमस्कारहो. यह पंचतरहकानमस्कार सब पापोंका नाशकरनेहारहै—और—सवतरहके मंगलोंमें अवलनंवरका मंगलीकहै. कहिये ! इसमें कौनसे पक्षपातकी बातहुइ ? अरि नाम शत्रुका—सो—कामक्रोधादि आत्माके शत्रुकों जिमनेहनडालेहो सो अरिहंत—जो मुक्तहुवेहो उनका नाम सिद्ध—आचार्यउपाध्याय—आर—साधु—जो कि—संसारके त्यागी और धर्मके उपदेष्टा होते है सबकिसीको जाहिरही है. इनको नमस्कारकरनेसे बडा फल जो जैनोंने वयान किया—इसमें दयानंदजीकी क्या बुराईथी ? जयति रागद्वेषादि—शत्रून्—इतिजिनः—ऐसी निष्पक्षपातकी बातसेभो दयानंदजी चीडे तो उनके दौर्भाग्यके शिवाय और क्या कहाजाय ? आप फरमागयेकि—जैनोंने इसमंत्रके महात्म्यसे तंत्रपुराण भाटोंकी कथाको भी पराजय करदिया, लेकिन !—यह क्यों नहीं बतला गयेकि—हमारे गायत्रीमंत्रकीभी कुच्छ तारीफ गाइगइहै. वैदिकलोगोंमें गायत्रीका जप सवसे बडी विशेषता रखताहै. मनुजी अपनेशास्त्रमें फरमाते हैकि—मनुष्य—गायत्रीपढनेसे निःसंदेह मुक्तिपाताहै—चाहे वह अपनेमतकी औरकुच्छवात करे—या—नकरे. वेदको भी वही

जानता है जो गायत्रीका पहिला अक्षर जानता हो. जो तीन वर्ष तक गायत्रीकों हरहमेश पढेगा वह आकाश और पवनकी तरह साफ होकर परब्रह्ममें लीन हो जायगा. गायत्रीसें कोई बडानही. उपनिषद्में बयान है कि—जो सूर्यके सामने बैठकर जाप करेगा निडर हो जायगा. गायत्रीके प्रभावसें एकक्षत्री विश्वामित्ररुषिसें ब्रह्मरुषि हुवा और नयी सृष्टिरचनेकी सामर्थ्य पाइ. दयानंदजी ! आपने सुना !—आपके वैदिक आचार्य—गायत्रीकी क्या तारीफ कर गये है ? (समीक्षक)—सुना दिजिये ! गायत्रीमें क्या बयान है ? (जवाब.) गायं तं त्रायते इति गायत्री, पढनेवालेकी रक्षा करे उसका नाम—गायत्री है. (समीक्षक,) हम पुछते है उसका पाठ क्या है ? सुना दिजिये. (जवाब)—मकानकी चौफेर और गली कुचोंमें देख आओ कोई सुनता तो नहीं. चढनेकी सीढीमें भी देखलो. हम नहीं चाहते कि—कोई अनार्य मनुष्य इसको सुन लेवे. जरा पास आनकर कानमें सुनलो. [ओं नूर्नुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं—न्नर्गो देवस्य—धीमहि धियो—यो—नः—प्रचोदयात्]—अर्थः—भू-आकाशस्वर्ग हम सूर्यकी बडी ज्योतिका ध्यान करते है वह हमारी बुद्धिकी प्रेरणा करे, अर्थात् तेजोमय सूर्यको हम नमते है वह हमारी बुद्धिको रास्ते पर लावे. बस ! यह वेदमतवालोंका गुरुमंत्र है. जिसपर इतना अभिमान रखते है कि—कुच्छ कहान जाय. कहिये ! इसमें कौनसे परमात्माका ध्यान है ? दयानंदजी वत लाइये ! चारणभाटकी कथाको किसने हरा दिया ?—जरा पक्षपात रूपजामेंसें बहार आनकर कुच्छ कहते तो अच्छा था.

२२—जैनलोग जो कहते हैं कि—कुगुरुकीसेवा नकरना चाहिये. सांपकीसंगतसें एकभव मरनाहै लेकिन! कु रुकेसंगसें भवभवमें मरनापडेगा. इसपर चीडकर दयानंदजी सत्यार्थ—पृष्ठ ४२८ षष्ठी शतककी गाथा लिखकर पंक्ति २६ में कहते हैं देखिये! जैनोकेस-मानकठोर—भ्रांतद्वेषोनिंदक भूलाहुवा दूसरेमतवाले कोइभी नहोगे. इन्होंने मनसें यह विचाराहैकि—जो हम अन्यकी नींदा और अप-नीप्रशंसा नकरेगें तो हमारीसेवा और प्रतिष्ठा नहोगी, परंतुयह बात उनके दौर्भाग्यकी है. (जवाब.) कुगुरुकी सेवा नकरना चा-हिये यहकहना जैनोंका किसीसुरत बुरा नही. क्योंकि—जो कंच-नकामनोका भोगी—और—शास्त्रोंसें उल्टा उपदेशदेनेवालाहै वह कु-गुरु उसकों मानने पूजनेसें कोइपारमार्थिकलाभनही—इसमें दया-नंदजी क्यौ! चीडें? जैनोंने इसमें किसकी नींदाकिइ? और कौनसी अपनी प्रशंसाकिइ?—जैनगरुओंकी सेवाकरनेवाले लाख हांलोगहै उनके दौर्भाग्यकी बात क्यौ हो?—दौर्भाग्यतो आपका थाकी—आपके वैदिक मतवालेही आपको नहीमानते थे. और कहते थे वेदविरुद्ध इनका उपदेश होनेसें न सुनना चाहिये. वेदोंका अमूकअर्थ सच्चा—या—दूसरा ऐसीभ्रांति आपको थी—या—जैनोंकों? महीधरादि पुरानेवैदिकाचार्योंके नींदक आपथे—या—जैन? भूलाहुवा आपका निराकारइश्वरथा—जिसने जूठे अर्थलिखनेहारें महीधर सायनवगेराकी अंगुली न तोडडाली और आपको उनसेंपहिले जन्म नहीदिया.

२३—दयानंदजी स. पृष्ठ ४२८ पंक्ति २ में—लिखते हैं कि—दुष्ट कर्मरूपसागरमें डुबानेवाला जैनमार्ग है. क्योंकि—येलोग—सृदेवसृगु-

रुसुधर्मकोंही मानो ऐसा कहकर दूसरोंकों कुदेवकुगुरुकुधर्म कहते हैं, जैनकेशिवाय दूसरेकों मानना पूजना नहीं फरमाते. यहतो बैरवेचनेहारी कुंजडीकेसमान अपने बैर मीठे दूसरेके खट्टे बतानेवाले हैं. (जवाब.) जैनलोग-रागद्वेषकामक्रोध-और-स्त्रीसंगसें रहित देवकों सुदेव-कंचनकामनीकेत्यागी और सच्चेधर्मोपदेशककों सुगुरु-और-ऐसे निरागी और ज्ञानीके कथनकियेहुवे धर्ममार्गकों सुधर्म कहतेहैं. कहिये ! इसमें क्या झूठ कहा ? कुदेवकुगुरुकुधर्मकों जैन क्या ! सबमनुष्य इनकारकरते हैं-इससें दयानंदजी क्याँ नाराजहुवे. देखिये ! जिसभर्तृहरिके ग्रंथका आप अपने ग्रंथमें काव्य लिखकर प्रमाणीक सबूतकरते हों वही भर्तृहरि-क्या कहगये हैं ?

[काव्य.]

शंभुस्वयंभुहरयो हरिणेक्षणानां-येनाकृतं सततं गृहकर्मदासाः
वाचामगोचरचरित्रपवित्रिताय-तस्मै नमो भगवते ! कुसुमायुधाय, ?
अर्थ:-जिस कामदेवने ब्रह्माविष्णुमहेशकों-स्त्रीयोंके दास वनादिये ऐसे अगोचरचरित्रवाले कामकों-मैं-नमस्कार करता हूं. दयानंदजी ! देखिये ! यह आपकें वैदिकदेवोंका हाल पढलिजिये ! जिसदेवकेपास हथियारहै-या-जो-दूसरे दैत्योंकी छातीपर पांव-धरके खडाहै उसकों ध्यानसमाधिलीन कौन कहसकताहै ? इसलिये जैनोंका कहना किनीसुरत झूठ नहींहोसकता, न झूठवा-तका जैन पक्ष करते हैं. जिनशब्द विशेषस्तिग्धहै, जो रागद्वेषश-त्रुकों जीतगयाहो वह जिन-और उसके कहेहुवे मार्गकानाम जै-

नमत है. आपने जो सत्यार्थप्रकाशके बारहवेसमुल्लासमें जैनकेषष्ठी शतकग्रंथकी जो(२९)गाथके अंदाज लिखकर जोजो अर्थ किया सबझूठ और मनःकल्पित है, क्योंकि-दयानंदजीकों प्राकृतभाषाका ज्ञाननहीथा. अगर कोइ आर्यसमाज अभिमान रखताहोकि-हमारे स्वामीजी झूठ कैसे लिखे-तो-प्राकृतभाषाके जानकार पंडितके सामने सत्यार्थप्रकाशके लिखाणकों भेजकर तहकीकात करलेवे. क्योंकि-दुनियामें विद्वान् लोगोंकी नास्ति नहीं-दूसरा जानकार विद्वान् प्राकृतयाठी जोकुच्छ अर्थ करे वही सबकों प्रमाणकरना होगा. दयानंदजी! जगहजगह लिखगयेकि-जैनी बडे हठवादी होते है, दूसरेमतवालोंकों मानना पूजना नहीं फरमाते. अपने वैर मीठें और दूसरेके खट्टे कहते है, (जवाब.) सत्यार्थ प्र० पृष्ठ. ५२) पंक्ति १७ में लिखाहैकि-जो वेद और वेदानुकूल आसुरूपोंके किये शास्त्रोंका अपमान करताहै उसवेदनींदक नास्तिककों जातिपंक्ति और देशमें बहार करदेना चाहिये. खूब! क्या कहना ! दयानंदजी! आपके वचनकीतो तारीफही है जैन-वौध-कपिल-गौतम-पतंजलि-कणाद-कविर-गुरुनानक-इशाइ-मुसलमान वगेरा जो आपके वेदकों नहींमानते उनकों आपदेशनिकाला देना चाहतेहो?-शंकराचार्य-शंकरदिग्विजयमें-प्रकरण (२६) पर फरमाते है तद्व्यतिरिक्तस्पैव पाषंडत्वात्-वेदके व्यतिरिक्त सब पाषंड है. इधर मनुजी सबसे बढकर फरमारहे हैकि-वेदनिंदापरा यतु-तदाचारविवर्जिताः-तेसर्वे नरकंयाति-यद्यपिब्रह्मवीजजाः-वेदकी निंदाकरनेहारे और उसकेकहेहुवे आचा-

रसेरहित-सब नरक जायेंगे. क्या कहना! दयानंदजी! आप-
और-आपके मनुजी तथा शंकराचार्य-खूब पक्षपातरूपवाडाबंधी
कर गये, देखिये! अब जरा खोलकर कहदिजिये! कुंजडीके
समान अपने बैरमोठे दूसरेके खट्टेकहनेवाले जैनहै?—या-आप
लोग? दुष्टकर्मरूपसागरमें डुबानेवाला जैनमार्ग है?—या-वैदिक-
मार्ग ?—

२४-सत्यार्थप्र० पृष्ठ ४२५ पंक्ति-५ सें-आगे लिखते हैक-
जैनमतवाले दूसरेमतवालोंको-नमस्कारकरना-या-अन्नपानीदेना
भी अच्छानही समझते. कितनेदयाहीनहै? (जवाब.) अनुकंपा-
लाकर दानदेना जैनलोक कभी बुरानही समझते. देखिये! कल्प-
सूत्रमें क्या लिखाहै?—जैनकेमहावीरतीर्थकरने दीक्षालीयेबादभी
एकदलिद्रीब्राह्मणको देवदुष्पवस्त्र देदिया, जो बहुमूल्यहोनस उस
ब्राह्मणको बहुतसमयतक फायदेमंदहुयाथा?—दयानंदजीने यहबात
क्यौ जाहिर नकिइ? जैनोंका दानगुण दुनियामें मशाहूरहै, जैन-
शास्त्रोंमें लिखाहैकि-जैनके चौइसतीर्थकरने जबकि-वें संसारमें
थे. सबमतवालोंको अनुकंपादानदिया. यह आपहीके वैदिकमत-
वालोंका हठवादहैकि—नगच्छेत् जैनमंदिरं—जैनमंदिरमें नही
जाना. जैनलोग-धर्मभ्रष्ट और पापशास्त्रके उपदेशकोको धर्मबुद्धि
जानकर नमस्कारकरना--और-अन्नपानीदेना इसलिये अच्छानही
समझतेकि-उनसँ धर्मसंबंधी कोइ लाभनही. दीनहीनजानकर अ-
नुकंपादान देना जैनलोग मना नही फरमाते, बतलाइये? अगर
जैनलोग दयाहीन और कठोरहृदयवाले कैमे सवृत हुवे? क्या!
आपको सचेधर्मके उपदेशक नही समझे इसलिये?

२५-दयानंदजी सत्या० पृष्ठ ४२० पंक्तो ९ में-लिखते हैंकि जिन्होंने वेदोंसे विरोधकिया-करते हैं-और-करेंगे-वें-अवश्य अ-विद्यारूप अंधकारमें पडकर जितना दुख पावे उतनाही न्यूनहै. इसलिये मनुष्यमात्रकों वेदानुकूल चलना समुचितहै. (जवाब.) दयानंदजी! बहुतहुइ-अब माफ फरमावे. पहिलेबहोत कुच्छ लिखाभी गयाहैकि-वेद-अविद्यारूप अंधकारकीगुफाहै-इसमें जो कोइ जागिरेगा वही पस्तायगा. दयानंदजी इसीपृष्ठ पंक्ति २६ में लिखते हैंकि-चारवाकसैं वौध और जैनियोंका भेदहै-परंतु नास्तिकता-वेदइश्वरकीनोंदा परमतद्वेष-और जगत्काकर्त्ता इश्वरनही इत्यादिवातोंमें सबएकही है. (जवाब.) जैनलोग-अष्टा-दशदोषरहितइश्वर मानते हैं. जगत् अनादि स्वतःसिद्ध मानते हैं जो जैसाकर्म करेगा वैसाफल भोगेगा. जो सर्वज्ञप्रणीतधर्म पालन करेगा उसका निर्वाण होगा मानते हैं इसलिये नास्तिक नही, जै-नोंकों यह हठवादनहीकि-परमतमें कोइ विद्वान् नही, इश्वर ज-गत्कों बनावे यह किसीयुक्ति प्रमाणद्वारा सबूतनहीहोता इसलिये कर्त्ता नही मानते. अगर जगत्कों इश्वरने बनाया मानेतो मसाला कहांसे लाया?-अरुपीइश्वरसें रूपीपदार्थोंकी पैदाशमानना प्रमा-णस वाधितहै. अगर जीवका कर्त्ता इश्वरकोंही मानाजाय तो प्र-त्यक्षप्रमाणसें विरोधआताहै. सबवकि-कार्य अपने उपादानकार-णस भिन्न न होता. अगर जीवोंका उपादानकारण इश्वरहै तो बतलाना चाहये जीव-इश्वरकी एक्यतामें अंतर क्यों माननेहो? आर इश्वरकी इच्छासें प्रतिकूल जीव क्यों देखे जाते हैं? इसलिये कबूलकरनाचाहिये जीव अनादि-और-इसकाकर्त्ता इश्वरनही,

इसपरभी जिनलोगोंको हठवादहै वें बतलावेकि-एकमनुष्यसें दूसरेका घातकराना-और-फिर घातकों राज्यद्वारा फांसी दिलाना-इश्वरकेलिये कौनसी बहादूरीका काम था?-अगरकहाजाय एककाम इश्वरने किया-दूसराजीवने-तो-फिर बतलाना चाहिये वह सर्वशक्तिमान् कहां रहा? तैतरेयब्राह्मणभागमें लिखाहैकि-परमेश्वरने अपने आपमें चाहाकि-मैं-सकलवस्तुको उत्पन्न करू-इसइरादेको पुराकरनेकेलिये तप किया. फिर सकलवस्तुके मूल कारणको उत्पन्नकिया. उनको अपना आत्मादिया और इसप्रकार सकलवस्तु बनगया. सौचना चाहिये-निराकारने तप कैसे किया! साकारचीजोंको आत्मा कैसे दिया? सकलवस्तुकेमूलकारणको किसमसालेसें बनाया? पहिलेतो एकीला निराकारही था-इधरउधर फिरकर पीछा जैनोंकेघर आना आपलोगोंको मुनासिब नही था.

२६-सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४२१-पंक्ति १३ में दयानंदजी लिखते हैकि-जीव और जडका लक्षण तो जैनलोगठीककहते है लेकिन! जडरूप पुद्गलहै वें पापयुक्त कभी नहीहोसकते. (जवाब.) कौन कहताहैकि-जडपदार्थ पापपुन्ययुक्तहै? अपने दिलसें चाहे सो कहदो. किसी जैनशास्त्रमें यहबातनही लिखी. अच्छे बुरे अभिप्रायसें जो जीवकेशाथ अच्छेबुरे पुद्गल बंधते है-वें-चारस्पर्शी परमाणु पुद्गलहै इसको उल्टा समझे हुवेहोतो अलगबातहै. सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४० पंक्ति ११ में-दयानंदजी लिखते है जैनियोंके साधुओंकी लीला देखिये!-एक जैनमतका साधु-कोश्या वेश्यासें भोगकर पश्चात् त्यागीहोकर स्वर्गलोकको गया. (जवाब.)

पटनानगरके शकडालमंत्रोके बेटे स्थूलभद्रजी जब संसार अवस्थामें थे—एक ब्रह्मपाकेघर (१२) वर्षतकरहेथे. पीछेंसें उसका संग छोडकर वें साधु हुवे. धर्मपालन किया—और—उमर पुरीहोनेपर मरकर स्वर्गगतिकों प्राप्तहुवे. कहिये ! इसमें कौनसी विरुद्धवात थी ? क्या ! कोइ आर्यसमाजी ब्रह्मपागामी हो—पीछेंसें संन्यासी बने दयानंदजीके इरादेमुजब वेदोंके हुकमपर चले—आर—निराकार इश्वरका ध्यानकरे तो मुक्तिकों पासके या नही ?—अगर पासके तो जैनकेस्थूलभद्रजीसाधु सच्चासाधुधर्म पालनकरके स्वर्गलोग क्यों न प्राप्तकेगे ?—दयानंदजी बारवार जो सत्यार्थप्रकाशमें लिखते है वेदादिशास्त्रोंका नांदक बौध—वा—जैनमत—प्रचलितहुवा—इससें जानाजाताहैकि—दयानंदजीकों पंजाबगुजरांनवालनिवासी ठाकुरदासजीने—तथा—मेवाड उदयपुरमें श्रीमान्झवेरसागरजीने ऐसा जलायाकि जैनकों बुराकहते उनकों शांति नहीआतीथी. फिरआप फरमाते हैकि—जैनोंके साधुओंकी लीला देखिये ! (जवाब.) जैनोंका धर्म निर्विकारहै उसमें लीलाक्रीडा या—विकार—प्रथमहीसें निषेध है, लीलाक्रीडा तो आपक ब्रह्माविष्णुमहेश—परशुराम—और पाराशररुपिवगेराकी देखना चाहिये—जो—कामक्रोधरुप समुद्रमें डूबे डूबे थे, आपनेभी संन्यासावनकर खूब लीला जाहिरकिइ—पहिले लंगोट बांधकर नंगे फिरे—पीछेसें—कलावतूनका चौगा—कोटशालदुशाले—और—जूता पहनकर संन्यासधर्म पाला, सवारीपरचढे खजाना तरकिया—और—परमहंस परिव्राजकाचार्यभी बने—खूब किया. आपकी लीला भी कुच्छ कम नहीथी.

एककरोड साठलाखकलशोंसें मेरुपर्वतपर देवोंने महावीरतीर्थकरकों स्नानकराया यह असंभवबातहै (जवाब.) महाशय!-जिस-बातकों दूसरे बुद्धिमान् असंभव नकहसके-वो-आपके कहनेसें असंभव नहीं होसकती. आप जो पक्षपातरूप अग्निसें जलहुवे हृदयकी साक्षीदेगयेहो शिवाय आपके अनुयायीलोगोंके दूसरा कोइ नहीं मानसकता, आगे त्या०पृष्ठ ४४२ पंक्ति ११ में-दयानंदजी लिखते हैंकि-दशार्णराजा महावीरके दर्शनकों गया-वहां कुच्छ उसने अभिमानकिया-उसकेनिवारणकेलिये-१६, ७७, ७२, १६०००-सोलहअरब-सतत्तरकरोड-वहत्तरलाख सोलहहजार इंद्रके स्वरूप-और उससेंभी ज्यादे इंद्राणी वहां आइथी. देखकर राजा आश्चर्यहोगये, अब विचारनाचाहियेकि-इंद्र और इंद्राणीयोंके खडेरहनेकेलिये ऐसे ऐसे कितनेही भूगोल चाहिये? (जवाब.)-यह लिखना दयानंदजीका बिल्कुल गलतहै, आवश्यकसूत्रकीटीकामें दशार्णराजाका जहां बयानहै वहां ऐमापाठहैकि तद्गर्वखवतां नेतुं स्वसैन्यैच्छादिंतांबरः-शक्रःस्वर्गादवातारीदारु-ह्यैरावणं गजं ८ तस्यास्यानि विकुर्व्याष्टौ-प्रत्यास्यं दशनाष्टकं-दंते-दंतेष्टवापीश्च-प्रतिवाप्यष्टपत्रिकां ९ पत्रेपमेष्टपत्राणि-पत्रेपत्रेतथै-कके-द्वात्रिंशत्पात्रयुक्तानि-नाटकान्पञ्चूतानिसः-१० तदानीमाययौ शक्रो-दशार्णाद्विरदोपरि-श्रीमद्रीरगुणग्रामस्फीतगीतवशांतरः ११ (अर्थः) दशार्णराजाका गर्व नीचाकरनेके लिये इंद्र ऐरावण हाथीपर बैठकर स्वर्गस आया-उसहार्थीके आठ शूठथी-एकशूठपर आठआठदांत, और एकएकदांतपर आठआठ वावडीका आकार बनाथा. वावडी वावडीपर आठआठ कमल-एकएककमलके आ-

ठआठपत्ते-और-उनपत्तोंपर देवशक्तिसँ बत्तीमतरहके नाटकॉकी रचना इंद्रनेकिइ, सबबकि-देवोंकी ताकत मनुष्योंसँबढकर होती है. बस! इसजलसँकॉ देखकर दशार्णराजा गर्वरहितहुवा और सौचनेलगा मेरीरुद्धितो कुच्छभी चीजनही, देखिये! इसवातकॉ दयानंदजीने कितनी बढाइ? कौन कहताहै सोलहअरब इंद्र और उससँ ज्यादे इंद्राणी वहां आइथी! जिससँ उनकॉ खडेरहनेकेलिये जगहभी नमिले? दयानंदजीतो देहांतहोगये-अगर कोइआर्थसमाजी जैनशास्त्रके प्रमाणसँ अबभी सबूतकरना चाहे तो लिखकर जाहिर करे. सच्चजूठ आपही दिखजायगा.

२८-सत्यार्थ पृष्ठ ४४२ पंक्ति १६ में दयानंदजी लिखते है जैनके श्राद्ध दिनकृत्यमें लिखाहै वावडी कुवा और तालाव न बनवानाचाहिये. (जवाब,) सौचना चाहियेकि-जिसधर्ममें करुणा ही प्रधानहो उसके प्रवर्त्तक उसकी मनादी क्यों फरमावे? जैन-श्वेतांबरमंदिर जो इसवरुत भारतमें (३६०००) मौजूदहै तो उनकेलिये कुवे और वागभी हजारोंहीहोगें. बडेबडेशहरोंमें कइ जगह जैनश्रीमंतलोगोंके वागवगीचे वनेहुवे विद्यमानहै. अगर इस वातकॉ बुरीसमझते तो उनमे यहरसम कैसे पाइ जाती?—हां! अनार्यकर्म के लिये कारखानाखोलना-और-उसके लिये कुवावावाडीतालाववनाकर उसमें पुन्य मानना-जैनलोग-नहीं फरमाते. श्राद्धदिनकृत्यमेंभी इसीमतलवसँ मनादी है, दयानंदजी लिखते है एक नंदनमणिकारने वावडी वनवाइथी उससँ धर्मभ्रष्टहोकर सोलहमहारोगहुवे-और-मरकर उसीमें मेंडक होगया जैनलोग मानते है. (जवाब.) नंदनमणिकारने धर्मकीपुष्टिकेलिये वावडी नहीं व-

नवाइथी इसीलिये वह धर्मभ्रष्ट हुवा. सौचो ! धर्मकेलिये बनवा-
ता तो धर्मभ्रष्ट क्यों कहा जाता ! और उसकेमरते वखतभी उसका
इरादा अच्छारहता तो वह मेंडक क्यों बनता ? यह सबशास्त्रका-
रोंको मंजूरहैकि-जिसचीजमें जीवको मोहममत्व ज्यादा रहजाय
अगले जन्ममें वह उसीमें उत्पन्नहोजायगा. इसमें जैनोंने क्या बु-
राकहा ? और दयानंदजी क्यों नाराज हुवे ?

२९-ससार्थ पृष्ठ ४४२ पंक्ति ३१ में दयानंदजी लिखते है
जैनकेश्राद्धदिनकृत्यग्रंथमें लिखाहै मृतकवस्त्र साधु लेलेवे देखिये!
इनके साधुभी महाब्राह्मणके समान होगये, वस्त्रतो साधु लेवे प-
रंतु मृतकके आभूषण कौन लेवे ? बहुमूल्यहोनसें घरमें रखलेते
होगें तो आप कौनहुवे ? (जवाब.) यह लेख दयानंदजीकी अ-
ज्ञानतका सूचकहै. असलमें बातयहथीकि-जबकभी साधुस दा-
यमेंसें कोइ साधु-मृत्यु होजाय-तब उसके पहिनेहुवेकपडे तो ज-
लाहीदियेजायगें, लेकिन ! जो उसके बचे दूसरे हुवे वस्त्र-कमल
वगेरा रहते है उसको दूसरासाधु लेकर अपने काममें लालेवे, इ-
सपर दयानंदजी फरमाते है मृतकके वस्त्रतो साधु लेवे-परंतु आ-
भूषण कौन लेवे ? महाशय ! यह अर्थ आपने कहांसें निकाला ?-
जैनकेसाधुओंके गहनेआभूषण पहिलेहीसें नही होते, ऐसी मि-
थ्यातर्ककरना कौनसी बुद्धिमानीका काम था ? सत्यार्थ पृष्ठ ४४३
पंक्ति १ में दयानंदजी रत्नसारग्रंथका प्रमाणदेकर बताते हैकि-
जैनलोग-भूंजने-कूटने-पीसने-अन्नपकानेआदिमें पापहोनामानतेहै
अब देखिये ! इनकी विद्या हीनता-भला ! ये कर्म नकियेजाय तो
मनुष्यादि प्राणी कैसे जीसकें ?-और जैनीलोगभी पीडितहोकर

मरजाय—(जवाब.) अगर इनकामोंमें पाप नहीं थातो धर्मशास्त्रोंमें पर्वतिथीके रौज येकाम बंदरखने क्यों फरमाये?—इससें सबूतहुवा कि—भट्टी—चूल—चक्की वगैरा जितनीतरहके संचे—है उनके चलानेमें पाप जरूर होताहै, लेकिन ! गृहस्थोंकों इनके चलाये बिदून काम नहीं चलता—इसलिये फरमायागयाकि—हरहमेश बंदरखना न बने तो पर्वकेरौज जरूर बंदरखेकरो. पकायेहुवे भोजनमेसें दशांशखो-दशांशभी सुपात्रदानमें दियाकरो, दीनप्राणीयोकों अनुकंपालाकर दियाकरो, कहिये ! विद्याहीनता आपकी है या जैनोंका ?—कौन कहताहैकि—देहरक्षाकेलिये खंडनपेषनआदि—न करना ? रत्नसारमें मना फरमायी सो पर्वकेलिये है. जितने हिंसादिककर्म फिजूलके है जैन उन्हीकों नकरना बयान करते है. यह आपकी बुद्धिकाही अंधरेहिक—ग्रंथकर्त्ताके अभिप्रायकों नबुझकर वृथाकागज काले करगये.

३०—दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४४३ पंक्ति ८ में लिखते है—एकदिन जैनका एकलब्धि साधु भूलसें वेश्याकेघरमें चलागया, आर धर्मसें भिक्षा मांगी, वेश्या बोलीकि—यहां धर्मका काम नहीं. किंतु अर्थका कामहै तब उसलब्धिसाधुने साढेवारहलाख अशर्फी उसके घरमें वर्षा दी. इसवातकों विनानष्ट बुद्धिके कौन मानेगा ? (जवाब.) जिस जैनसाधुने अशर्फीयें वर्षाईथी उसकानाम नंदी-पेणमुनि था. और उनकों ऐसीचमत्कारी लब्धि सिद्धथी जिससें वे अशर्फीयां वर्षासकते थे. आजकलके जमानेमेंभी कइसाधुलोग तथा—गृहस्थ ऐसे मौजूदहै जो शरीरकीतलाशीदेकर विद्यावलसें मणोंबंद मिटाइवगेरा मंगासकते है. फिर अच्छेजमानेमें बडेबडे

लब्धिधारी साधुलोग क्यों न अशर्फी वर्सा सकतेहोंगे? अनुमान प्रमाणसेंभी सबूत होसकताहैकि बात सत्यहै, अगर कहाजायकि फिर वें भिक्षा क्यों मागते थे?—(जवाब.) भिक्षामागना साधुलोगोंका मुख्यधर्म है. दूसरोंकी महत्वता सुनकर रंज उठाना ठीक नहीं. यह अपने अपने भाग्यकीबातहै. अशर्फीबर्साना क्या! सिद्धसेन दिवाकरकि—जिनोंने मंत्रशक्तिसें उज्जेननगरमें शिवलिंग तोडकर उसमेसें जैनमूर्ति निकाली थी—क्या! यह दयानंदजीने नहीं सुना होगा? उज्जेनमें महाकालकामंदिर मशहूरहै मारवाडमें नाडोलनाडलाइगांवमें जाकर देखो तो मंत्रशक्तिसें उडालाये हुवे कइ मंदिर मौजूदहै. इत्यादि प्रमाणोंसें मंत्र और विद्याओंकी शक्ति जूठीनही कही जासकती.दयानंदजीकहते हैकि—इसबातकों विनानष्टबुद्धिके कौन मानेगा?—लेकिन! असलमें तो नष्टबुद्धि उन्ही की होगइथी जो निराकार इश्वरसें साकरजगत्की पैदाश फरमा गये—प्रलयकेसमय वेद इश्वरमें लीनहोजायगें—और जब दयानंदजीका निराकार इश्वर दूसरी सृष्टि बनायगा—उसकी आज्ञास रुषिलोग तप करेगें तब फिर वेदोंकों वें लोग पायगें. एसी असंभ बातें माननाही नष्टबुद्धियोंका कामहै,—

३१—सत्यार्थ पृष्ठ ४४३ पंक्ति १२ में दयानंदजी—रत्नसार भाग पृष्ठ (५७) का—नाम लेकर लिखते हैकि—जैनोकी—एकपाषाण की मूर्ति घोडेपर चढीहुइ उसका जहां स्पर्णकरे वहां उपस्थित होकर रक्षाकरती है, कहो जैनीजी! आजकल तुम्हारे यहां चोरी डाकाआदि—और शत्रुसें भयहोताही है तब तुम उसकास्पर्णकरके अपनी रक्षा क्यों नहीं करा लेतेहो? क्यों जहांतहां पुलिसआदि

राज्यस्थानोंमें मारेमारे फिरतेहो ? (जवाब.) जैनोंका कोइदेव घोंडेपर चढाहुवानही होता. वे-निर्मोही अर्हन्देवकों मानते है. कोइ जैनशास्त्रमें नहीलिखाकि-जैनोंकादेव-घोंडेपरसवाररहताहै. दयानंदजी सच्चे थ तो नामवतलाजाते. लेकिन ! बतलावे क्या ?-जिसवातपर अपनेही दिलमें धोखाहो उसकों शिवाय गोलमोल के दूसरीतरह कैसे लिख सके ? जैनलोग अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्मकों प्रधानमानते है. और अर्हन्देव जो सर्वज्ञ हुवे है उनके कहे हुवे मार्गकों अनुसरते है. निर्मोहीका ध्यानकरनेसे उनमें जो स्वतः निर्मोहता पैदा होती है वही उन्होंकों पापकर्मसे बचाती है. जैनलोग ऐसे बाहियातदेवका स्मर्ण क्यों करेगे ?-यहतो आपलोंगोंकीढी कमजोरी हैकि-इश्वरकों जगत्काकर्त्ताहर्त्ता सर्वशक्तिमान् मानकरभी कचहरीमें पुलिसके धके खाते फिरतेहो, उसका स्मर्ण क्यों नहीकरलेते ? क्या अब वो आपलोंगोंका पालनकरनेमें कायरहोगयाहै, ? बनानेकी ताकत रखना-और-पालन करनेमें मौन होजाना-क्या ! सर्वशक्तिमानकों लाजिमथा ?

३२-सत्यार्थ पृष्ठ ४५७ पंक्ति ६ में-दयानंदजीलिखते है-जैनोम-"जल छानकर पानी-सूक्ष्मजीवोंपर नाममात्र दयाकरना-और रात्रीभोजननकरना-येतीनवाते अच्छा है, वाकी जितना इनका कथनहै सब असंभवग्रस्तहै." (जवाब.)-तीनवातेभी क्यों अच्छी कहनाथा ?-सभी असंभवग्रस्त कहदेतेतो कोइहर्ज नहीथा. क्याकि-सत्यार्थप्रकाशमें-जहां भारतकेसभीधर्मकी नींदा किइ वहां जैनकी बुराइभी नकरतेतो पक्षपाती समझे जाते, अमंभवग्रस्त जैनमतहै-या-बैदिकमत ?-जरा अगाडी चलकर इसलेखकों पुरा

पढलो-स्वतः मालूम होजायगा,—

वेदैःपुराणैःस्मृतिभिश्चयेषां-मनांसि नित्यं परिगर्वितानि,
पृच्छामि संदेहपदानि तेषां-समीपतःशास्त्रविरोधभांजि. १

ब्रह्मापि पुत्रीमवसंवदात्मा-वृद्धोपि किं स्वांचक्रुमे न मोहात्,
पीनस्तनीभिःसहगोपिकाभि-र्लक्ष्मीपतिःसोपि चिरं चिखेल. २

सनीलकंठ स्त्रिपुरस्य दाहं-कोपाद्वितेने गगनस्थितस्य,
पूषांधकादींश्च मृधे जघान-मुक्तिप्रदः स्यात्कतमस्त्वमीषु. ३

वेदपुराण और स्मृतियोंके कथनसें जिनका दिल घमंडमें आगयाहो-उनको कुच्छ ऐसे प्रश्न पूछे जाते है जो दरयाफक्त करने योग्यहै, देखो! ब्रह्माने विकारवालाहोकर अपनी पुत्रीको कुदृष्टिसें देखा, सवाल पैदाहोताहै क्या! ब्रह्मा जैसे लाइकवरम-हात्माको ऐसा कर्त्तव्यकरना योग्य था? वैदिकलोग इसको छि-पानेके लिये ऐसा अर्थ भी करते हैकि-प्रजापति नाम सूर्यका और उसकी बेटी उषाहै, वेदोमें जहां कहाहैकि प्रजापति अपनी बे-टीसें फसा मतलब इतनाही समजो सूर्य उषाके पीछे चलता है, लेकिन! यह अर्थ सच्चानही-विद्वानोंकी सभामें यह झूठनही पसार होसकता, इधर कृष्णजीकी लीला देखोतो उनकेग्रंथोंमें साफ वयान हैकि-गोकुलगांवकी गोपियोंके अधरामृतसें-उनके उत्तंगस्तनकल-शोंके आलिंगन करनेसें-और उनकेशाथ कामक्रीडाकरनेसें कृ-ष्णजीका मन अतिहर्षित होताथा. इधर शिवका वयान सुनो तो उनोंने राक्षसोंके तीननगर जो आकाशमें थे गुस्सेमें आनकर ज-लादिये. और पूषांधकवगेराको लडाइमें मारडाले-फिर यहभी लिखाकि-शिवकालिंग-अत्रिरुषिके ज्ञापसें दृष्ट पडा, रामचंद्रजी

जबकि-उनकी सीता रावण लेगयाथा दिलखोलकर रोये, कहिये! वैदिकमतवाले महाशयो!-यही आपके इश्वरावतारोंका कर्त्तव्य था!-बतला दो! इनमें मुक्तिदाता कौनकों गिने?-अगर दयानंदजी कहदेवेकि-हम-अवतारोंकों कवमानते थे?-(जवाब.) यही तो आपको खोफ थाकि-इनकों मानेगें तो पकडे जायगें. दयानंदजी कइजगह लिखते है जैनोंके तीर्थकर भूल गये मालूम होते है. बतलाना चाहिये! वें-भूले थे-या-आपके ब्रह्मा विष्णुमहेश और रामावतार,? तीर्थकर पूर्णज्ञानी निर्मोही थे-वें-क्यों भूलने लगेथे?

३३-तपस्विशापात् न कथं विनष्टा-पूर्वारिका यादवमंडितापि,

हरि भूमन्काननमध्यदेशे-वाणप्रहारान्नकथं विनष्टः ४

बडे आश्चर्यकी बातहैकि-कृष्णावतार बैठेहुवेभी द्वारिकानगरी तपस्वीके शापसें जल उठी, क्या! औरोंकी तकलीफ मिटानेके लिये तो अवतार लेना और अपनी तकलीफकों आप न मिटासकना-यहभी कोइ प्रमाणयुक्त बातहै? अखीरमें द्वारिकासें भगकर वनमें गये-और वहां एकवाणके लगनेसें दुखितहोकर जलके प्यासेंही कालकरगये-बडे अपशोषकी बातहैकि-एसे कमजोरोंकों सर्वशांक्तमान्के अवतार मानेजाय!

चकर्त शीर्षस्वकरेण मातुः-निःक्षत्रियां यःपृथ्वीचकार,

स्नातिस्म तेषां रुधिरैस्त्रिकालं-सोप्युच्यतेन्यैर्मधुसूदनांशः ५

द्रोणो रणे पांडवकौरवाणां-द्विजोपि जज्ञे नयमावतारः

यत्सौप्तिके पर्वणि तस्पस्तालः-सुतोपि चक्रे वचनातिगं तत् ६

पर्युरामने अपनीमाताका मस्तक अपने हाथोंसें छेदन किया जितनेक्षत्रिय थे उनकों मारकर पृथ्वी-निःक्षत्रिया किइ, और उ-

नकेलोहीसें दिनमे तीनतीन दफा स्नान किया. वडी हंसीकीबात हैकि-ऐसे निर्दयोंकोभी इश्वरातार कहे जाय! इधर द्रोणाचार्य ब्राह्मणहोकर कौरवपांडवोंके संग्राममें युद्धकरके यमावतार बने.


पाराशरः कामवशान्नकन्यां-दिवा निपेत्रे यमुनाजलस्यः,

व्यामस्तु बंधोर्दयिताद्वयस्य-वैधव्यविध्वंसकरो न जज्ञे. ७

भार्याप्याहिल्या किल गौतमस्य-क्रुद्धस्य शापेन शिलाबभूव,

नीतो वशिष्टेन रूपाभिशाप्त-श्रंडालतां भूमिपति स्त्रिशंकुः ८

पाराशररूपिने यमनानदीमें धीवरकी कवारीकन्यासें भोग किया. इधर व्यासजीनें अपनेभ्राताओंकी स्त्रीयोंका वैधव्यविध्वंस कराया-देखिये! यह वैदिकरुषियोंके कर्त्तव्यहै. गौतमरूपिके शापसें उनकी अहिल्यास्त्री शिला बनगइ, कितनेककहते है इंद्र नाम सूर्यका और-अहिल्या नाम रात्रीका-जहां इंद्रने अहिल्याको खरावकिया लिखा-मतलब इतनाही समझोकि-सूर्यसें रात्रीकी खराबी होती है, ऐसे मनकल्पित अर्थ बनाकर दूसरोंकी तर्कतापसें बचजाना-यह मिथ्यावात कहांतक चलसकेगी?—कहिये? ऐसी अघटितवाते वैदिकअवतार और रुषियोंकी है-या-जैनोंके तीर्थ-कर और मुनियोंकी?—दयानंदजी कइजगहलिखत है जैनलोगवडे पक्षपाती होते है, लेकिन! खयाल करके निम्नलिखित बचनोंको देखिये! मालूम होजायगा पक्षपाती कौनहै?—

३५- पक्षपातो न मे वीर!-नद्वेषः कपिलादिषु,

युक्तिमद्वचनं यस्य-तस्य कार्यः परिग्रहः ९

भवबीजांकूरजनना-रागाद्याः क्षयमुपगता यस्य,

ब्रह्मा वा विष्णुर्वा-हरो जिनो वा नमस्तस्मै. १०

जैनोंका कहना है कि—हमकों महावीरवगेरा तीर्थकरोंका पक्ष नहीं—इधर कणादवगेरा मतानुयायीयोंसँ द्वेष नहीं, जिसके युक्ति प्रमाणसहित वचन है उनकों मनन करनेवाले हमहै. (९) जिसजि सपुरुषके रागद्वेषवगेरादोष दूरहोगयेहो—चाहे वह ब्रह्माहो—विष्णु शिव-या—जिन कोइहो उनकों हमारा नमस्कारहै. कहिये ! जैनों-कों पक्षहोतातो ऐसीवात क्यों फरमाते ? औरभी सुनिये !

प्रत्यक्षतो न भगवान् नृषभो न विष्णु-रालोक्यते न च हरो न हिरण्यगर्भः
तेषां स्वरूपगुणमागमसंप्रभावात्-ज्ञात्वा विचारयथकोत्रपरापवादः ११

नास्माकं सुगतः पिता न रिपवस्तीर्या धनं नैव तै,
दत्तं नैव तथा जिनेन न हृतं किंचित् कणादादिभिः,
किं त्वेकांतजगद्धितः स भगवान् श्रीरो यतश्चामलं,
वाक्यं सर्वमलापहर्तृ च यतस्तच्चक्तिमंतो वयं. १२

जैनोंका साफ कहना है कि—प्रत्यक्षमें तो न रुषभदेव मौजूद है—न ब्रह्माविष्णुमहेश है. हां ! उनके कथन किये हुवे आगमवचनोंसँ उनके गुण और स्वरूपकी तहकीकात करनी चाहिये कि—कौन तो इनमें सर्वज्ञ और—कौन असर्वज्ञ थे ?—कहिये ! यह जैनोंकी कैसी निष्पक्षपात वात है ? फिर वें वयानकरते है कि—बौधलोग हमारे पिता नहीं, सांख्य हमारे वैरी नहीं जिनेद्रोंनें अशर्फीयें नहीं दीह, कणादवगेरा मतवालोंने कुच्छ हमारा चोराया नहीं. हमतो जो सर्वज्ञपरमात्मा सच्चे उपदेशक होगये—उनके ग्राही है, बतला दो ! इसमें जैनोंने कौनसी पक्षपातकी वात फरमायी ?—

न सर्वज्ञा न नीरागाः—शंकरब्रह्मविश्ववः,
प्राकृतेभ्यो मनुष्येभ्यो—प्यसमंजसवृत्तितः

रागादिदोषजनकानि वचांसिविष्णो-

रुन्मत्तचेष्टितकराणिच यानि शंभोः

निःशेषरोषशमनानि मुनेस्तुसम्यग्-

वंदध्वमर्हतितु कोनु विचारयध्वं,

१४

दुर्योधनादि कुलनाशकरो बभूव-

विष्णुर्हर स्त्रिपुरदाहकरः किलासीत्,

क्रोचं गुहोपि दृढशक्तिहरं चकार-

वीरस्तु केवल जगद्वित सर्वकारी,

१५

शक्रं वर्जधरं बलं हलधरं विष्णुं च चक्रायुधं,

स्कंदं शक्तिधरं श्मशाननिलयं रूद्रं त्रिशूलायुधं,

एतान् दोषभर्यार्दितान् गतघृणान् बालान् विचित्रायुधान्

नानाप्राणिषु चोद्यतप्रहरणान् कस्तान् नमःस्यात् बुधः १६

नयःशूलं धत्ते नच युवतिमंके समदनां,

न शक्तिं चक्रं वा न हलमुशलाद्यायुधधरं,

विनिर्मुक्तं क्लेशैः परिहिताविधावुद्यतधियं,

शरण्यं भूतानां तमृषिमुपयातोस्मि शरणं.

१७

ब्रह्मा लूनशिरा हरि ईशि सरूक् व्यालुप्तशिशो हरः

सूर्योप्युल्लखितोनलोप्यखिलभुक् सोमः कलंकांकितः,

स्वर्नाथोपि विसंस्थुलः खलुवपुः संस्थैरुपस्थैः कृतः,

सन्मार्गस्सलनाद् भवंति विपदः पायः प्रभूणामपि.

१८

ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादि-रागाद्यंककलंकिताः,

निग्रहानुगहापरा-स्ते देवाः स्पुर्न मुक्तये.

१९

परिग्रहारंभमंगना-स्तारयेयुः कथं परान्,

- स्वयं दरिद्रो न परान-ईश्वरीकर्तुमीश्वरः २०
- नाट्यादिहाससंयुक्ता द्युपप्लवविसंस्थुलाः
लंभयेयुः पदं शांतं-प्रपन्नान प्राणिनःकथं. २१
- नशूलं नचापं नचक्रादिहस्ते-नहास्यं नलास्यं नगीतादि यस्य,
ननेत्रे नगात्रे नवक्त्रे विकारः-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेंद्रः २२
- नगौरी नगंगा नलक्ष्मीर्यदीयं-वपुर्वा शिरो वाप्युरोवा जगाहे,
यमिच्छाविमुक्तं शिवश्रीस्तु भेजे-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेंद्रः २३
- नभोगा नरोगा नचोद्वेगवेगा-स्थितिर्नो गतिर्नो नमृत्युर्न जन्म,
नपुण्यं नपापं नयस्यास्तिबंधः-सएकः परात्मा गतिर्मेजिनेंद्रः २४
- कोपे सति स्यात्कुतएव मुक्तिः-कामेथवा तत्प्रतिबंध एव,
रागेपि चस्यान्नफले विशेषः-तस्मान्नचैते हृदयेवधार्याः २५
- इमां समक्षं प्रतिपक्षसाक्षिणा-मुदारघोषामवघोषणां ब्रुवे,
नवीतरागादपरोस्ति दैवतं-नवाप्यनेकांतमृते नयस्थितिः २६
- कोपेन कश्चिन्मदनेन कश्चिद्-रागेण कश्चिच्च परितर्देहः
विहाय सवांश्च विमुक्तिहेतोः-श्रीवीतरागं शरणं विधेहि. २७

३६-ब्रह्माविष्णुमहेश-प्राकृतमनुष्योंसैंभीं वेसमझप्रवृत्तिवाले होनेसैं नहीकहाजाताकि-सर्वज्ञ-या-निर्मोही थे. विष्णुके वचन रागपैदाकरनेवाले सबूत होते है, दुर्योधनके कुलका नाशकरानेमें आप सामीलथे. इधर शिवकों देखोतो स्त्रीकों गोंदमें लिये बैठेहै, इंद्र-बलभद्र-और स्कंद तरहतरहके विकारोंसैं ग्रस्तहै, ब्रह्माका म-स्तक नमालूम क्यौं छेदनहोगयाथा ?-सूर्यचंद्रऔरअग्निवगेरा-जो -वेदमंत्रोंकरके पूज्य फरमायेजातेहै तरहतरहके दोषोंसैं दोषितहै, कहिये ! किसकों मुक्तिके अधिकारी समझे ?-न्याय-सच्चासच्चाव-

यान फरमाताहैकि-जिसकेपास स्त्रीऔर हथियारहोंगे वह जरूर कामीक्रोधी होगा. अगर क्रोपकरनेसे-कामभोग सेवनसे-और-राग वढानेसे मुक्तिहोतोहो-तो-सारासंसार मुक्त होजाता, इत्यादि प्रमाणोंसे सबूतपायाजाताहैकि-जिसने कामक्रोधादिशत्रुकों हरा दियेहो वही मुक्तिका अधिकारीहै.मुक्तिहुवेबाद फिर संसारमें नही गिरता. उपरलिखेहुवे काव्योमें जोकुच्छ निष्पक्षपात बयान दिया है कोइ शरूश प्रमाणसहित तोडनाचाहे तो तोडे; कितनेकलोग व्याकरण और तर्कशास्त्रकी विद्वत्ताका घमंडलाकर बेंमतलब लंबा चोडालिखाणकरडालतेहै वैसेकरनाहोतो वैसा मसालाभी मौजूद है,लेकिन! तत्वधातसे लडनाचाहिये. जैसे मुसाफिर सर्पऔर कांटेवाले रास्तेकों छोडकर चलताहै मुक्तहोनेकी इच्छावाला कुदे-वादिकंटकसर्पकों छोडकर चलेतो उसकों कौन बुराकहसक्ताहै? निदान!जैनोंक कोइ कायदे ऐसेनही जिसपर दोष आसके, उनकों असंभवग्रस्तकहना किसीसुरतपर नहीबनसक्ता.

३७-सत्यार्थपृष्ठ४४१पंक्ति११में विवेकसारग्रंथका पृष्ठ(५५) का-नामलेकर दयानंदजीलिखतेहै गंगादितीर्थ-और-काशीआदि क्षेत्रोंके सेवनेसे कुच्छभीपरमार्थ सिद्धनहीहोता ऐसाजैनलोगमानतेहै और अपने गिरनार शत्रुंजय और आबुआदितीर्थक्षेत्रमुक्ति पर्यंतकेदेनेवालेबतलातेहै विचारनाचाहियेकि-जैसे शैववैष्णवादि केतीर्थ जडस्वरूपहै वैसे जैनियोंकेभीहै,इनमेंसे एककीनींदा और दूसरेकी स्तुतिकरना मूर्खताका कामहै या-नही? (जवाब.)-जन लोग युक्तिप्रमाणसे सबूतकरदेतेहैकि-स्त्री और हथियाररखनेवाले देव मुक्तिके अधिकारीनही गंगातीर्थ-और-काशीक्षेत्रमें अगर स्त्री

शास्त्रसंरहित-त्यागीदेवकीमूर्ति विराजितहोतीतोउसको जरूरतीर्थ समझसकते, साफसाफ बयानहैकि-जहांजहां स्त्रीशस्त्ररहितदेवमूर्ति होगीजसीको तीर्थ समझाजायगा.तीर्थनामभी उसीकाहै जहांजाकर मनुष्यका दिल धर्मपररजुहो. कृष्णजी और रामचंद्रजी एक प्रभावशाली राजेथे, उनको मुक्तिहुवे मानना वैदिकलोगोंके निश्चयकीबातहै,ब्रह्मा और शिव-रिषि-और विद्याधरथे, इनको मुक्तहुवे मानना उनकेसेवकोंकेनिश्चयकीबातहै, युक्तिप्रमाणसे और उनकेआचरणसे पायाजाताहै वैं-सर्वज्ञ-या-निर्मोही नहीथे.इसा मसीहका यहूददेशमेंसंवत्(५७)विक्रमीके-असें पैदाहोना-लोगोंको उपदेशकरना-और शूलीपरचढना इतिहासकीबातहै.लोकिन!इश्वर-या-इश्वरकापुत्रहोना-और-सारेसंसारको त्राणशरणहोना इसाइ-योंके निश्चयकी बातहै. मुसलमानोंके पेगंबरमहम्मदसाहबका म-केमें सन(५६९)इस्वीके दर्मियान पैदाहोना,मतफैलानेकेलिये लडाइकरना और फिर मदीनेमेंजाकर परलोकसिधारना,इतिहासकी बातहै,लेकिन ! इश्वरका दूतहोना और मुसलमानोंको स्वर्गदेना, मुसलमानोंके निश्चयकी बातहै, गंगा और काशीमें जहांजहां वैदिकलोग तीर्थ मानतेहै वहां त्यागीदेवोंकी मुर्ति नहीनेसें वैं पारमार्थिकतीर्थ नही समझेजाते. शत्रुंजयगिरनारआबूवगेरामें त्यागीदेवोंकी मूर्तिहोनेसें-वैं-पारमार्थिकतीर्थ समझेजातेहै.कहिये ! इसमें जैनोने नींदास्तुति किसकीकिइ ? अगरजडका सत्कार नामंजूर थातो-आपके*मरेवाद आपके जडशरीरको-समाजीलोगोंने दो चंदन-दसमणआम्रकाष्ठ-चारमणपृत-पांचशैरकपूर-अढाइशेरवा-

लछड-आधाशैर केशर-और-दोतोलेकस्तूरीके साथ-क्योंदग्धकिया ?-क्या ! आपकाशरीर चैतन्ययुक्त था ?-महाशय ! जडवस्तुका सत्कार आप क्या ! आपके पुरुषोंने और चेलोंनेकिया-और-करतेहै, यहसत्कार किमसें छूटाहै, यहआपलोगोंकी जीदहैकि-मूर्तिके वारेमें नाराजीलातेहो, हमारा एकशरूश शहरअजमेरमेबास्ते इम्ति हानमिडलदेनेकोगयाथा, इतिफाकसें आर्यसमाजीयोंकी यज्ञशालामें जापहुंचा, वहां एक महाशयने पुछाकि-आप कहांसे आये ? उसनेकहा मैं जिलाउज्जेनसें आयाहूं, सुनकर खुशहुवे, औरकहनेलगे निहायतखुशीकीबातहैआपयहां तशरीफ लाये, आज होंमपुराहो गया आपदेरसें आये, वारहबजे होम शुरुहोताहै और तीनबजे समाप्तहोजाताहै, खेर ! चलिये ! हवनकुंड देखिये ! क्या अच्छा वेदानुसार बनायागयाहै, बाददेखनेके मुकाममजलिसमें गयेतो वहां फरमानेलगे देखिये ! यह हमारे स्वामीदयानंदजीकी मूर्तिहै, इसपरदेखनेवालेने दो सवालकिये, अवलतो ! आपने इसमूर्तिकों क्यों लटकाइ ? जबकि-आपने मूर्ति मानना फिजूल समझाहै, दायम-यज्ञ-या-होंमकरनेसें क्याफायदा पहुंचाताहै, उमदाचीजें जलाकर खाखकरदेना-शिवाय नुफ्शानके औरकोइदूसरीसुरतनही, अगर वही सामान गरीबगुरबोंकों खानेकेलिये दियाजातातो अलवते फायदाथा. देवपूजनतीर्थयात्रा और मंदिरमूर्तिकों तो फिजूलसमझना और यज्ञशालाबनाकर हजारेरुपये होमकेजरीये खाखकर देना कौनसे फायदेकीसुरतथी ? क्या निराकारइश्वर उनचीजोंकों खाताहै ? दूसरीबातयहहैकि-जब मूर्तिकोंबाहियातसमझतेहो तो स्वामीदयानंदजीकी मूर्तिभी बाहियात क्यों नही ? बाहियातची-

जकों मकानमें लटकाना कौनसीबुद्धिमानीकाकामहै? साफसाफ जाहिरहोताहैकि-वगैरमूर्त्ति माने किसीकाकामनहीचलसकता, मंदिरउडाकरयज्ञशाला बनाइ, किसीने पथ्थरकी मूर्त्तिमानी; आप लोगोनेकागजपर कायमरखी, किसीनेनैवेद्यलगाया-आपने हवन किया, बातएकहीहै, सुनकर कुच्छभीजवाब नहींदिया, और कहने लगे वरुतथे: डारहगया-भुजे कामजरुपीपरजानाहै, फिर बातकरुंगा अगरकोइ आर्यसमाजमहाशय होंमकरने-और-स्वामीदयानंद जीकीमूर्त्तिमाननेसें कुछ फायदासबूतकरसकतेहोतो बजरीये अखवारजाहिरकरे, मैंउसपरकुच्छलिखुंगा,

३८-सत्यार्थपृष्ठ४४१पंक्ति२५में-दयानंदजी लिखतेहैजैसे अन्यमतमें-वैकुंठ कैलाश गोलोक श्रीपुरआदि-पुराणी-तथा चौथे आसमानमें इसाइ-सातमें आसमानमें मुसलमानोंकेमतमें मुक्तिके स्थानलिखेहै वैसेही जैनियोंकी सिद्धशिला और शिवपुरहै. जिसकों जैनीलोग ऊंचा मानतेहै वही अमरिकावाले नींचा मानतेहै. यानी जैनोंकी सिद्धशिला भूगोलके नीचे होनीचाहिये, मुक्तिमेंसे पीछा नआनेसें सबूतहोताहैकि-उनकों वहां प्रीति और बहार आनेमें अप्रीतिहोतीहोगी, फिर वहमुक्तिकाहेकी संसारहोगया. (जवाब.)-दयानंदजी कहतेहै जैनोंका मुक्तिस्थान भूगोलकेनीचे समझनाचाहिये-यहउनकी अज्ञानताका नमुनाहै, वेदोंमेंतो किसी जगह पृथ्वी गोलवयाननहीकिइ, पृथ्वीसपाटहै, गोलाके आकार होना-फिरना-और-उसके नींचे आवादीहोना-युक्तिप्रमाणसे *सबूतनहीहोता, दयानंदजी कहतेहै हमारी मुक्ति सर्वव्यापीहै-

यानंदीयोंकी मुक्ति क्याहुइ ! मसलनजैसे औरतका पीहरहोगया,
जब मनचाहाचलीगइ-पतियाद आया सासरे लोटआइ.

४०-महाशय !-जैनोंकीमुक्तिकाहाल जोकुच्छहै इसकाव्यसें
मुनलिजिये !

नासंतताभावरूपा नचजडिममयी व्योमवद्द्व्यापिनी नो,
न व्यावृत्तिं दधाना विषयसुखधना नेक्षते सर्वविधिः
सद्रूपात्मप्रसादा दृगवगमगुणौघेन संसारसारा,
निःसीमात्यक्षसौख्योदयवसातिरनिःपातिनी मुक्तिरुक्ता, ?

(अर्थः)-कितनेकमतावलंबी अत्यंतअभावरूप मुक्ति मा-
नतेहै.जैसे बौधलोगोंकी मुक्ति,कितनेक मतधारी मुक्तिमें जडहोजा
ना मानतेहै,जैसे नैयायिक और वैशेषिकोंकी मुक्ति,कितनेक आ-
काशकीतरह सर्वव्यापी और कितनेकलोग मुक्तिसें पीछालोट
आना मानतेहै,जैसे आजीविकमतवालोंकी मुक्ति,दयानंदजी इसी
के अनुगायीवनेहै,किसी वेदमें मुक्तिसें लोटआना नहींलिखा,कि-
तनेक फरमातेहै मुक्तिमें खानपान भोगविलास और महेलभीमि-
लतेहै, जैसे यवनलोगोंकी मुक्ति, कितनेक मतवाले कहतेहै जी-
वकी मुक्तिहोतीही नहीं. जैमनीयमतवाले इसीबातपर पावंदहै,
कितनेककहतेहै इश्वर-भक्तोंकीरक्षाकेलिये-अवतार लेतेहै, वैदिक
मतवाले इसीपर आरुढहै,दयानंदजीवैदिकमतकेही सन्यासी कह-
लाते थे-लेकिन ! उनकोतों न्यारीखींचडी पकानाथा-वें-पुराणी
सडकपर कैमेकदम रखे.जैनलोग ज्ञानमयमुक्ति मानतेहै, मुक्तहुवे
वाद-(जैसे जलपर तुंवास्थितरहे वैसे)लोकाग्रभागमें-अशरीरीहो
कर स्थितरहना मानतेहै, मुक्तिहुवेपीछें लोटआनाभी जैनलोग

नहीमानते, किंतु लोकाग्रमें आत्मिकसुखमें मग्न रहना मंजूर रखते हैं, वहां बने रहनेसे उनको राग होने का जो दयानंदजी दोष लगाते हैं यह गलत है, सब वक्ति-उनको राग होता तो मुक्ति हुवे. कैसे समझे जाते?— बल्किन् ! जन्ममरणसे रहित हुवे बाद उनका गमनागमन स्वतः बंद हो जाता है, जैसे विना हवा-पानीमें-तरंग-न उठेगी.

४१-सत्यार्थ पृष्ठ ४२३ पंक्ति १७में दयानंदजी लिखते हैं-जैनीयोंके आर्हतलोग देहके परिमाणसे जीवका भी परिमाण मानते हैं, उनसे पुछना चाहिये कि-जो ऐसा हो तो हाथीका जीव कीडीमें-और-कीडीका जीव हाथीमें कैसे समासकेगा?-(जवाब.)-जैसे दिया जमीनपर रखकर उसपर बड़ा वर्तन ढांकदो तो बड़ेमें-और-छोटा ढांकदो तो-छोटेमें प्रकाशमान रहता है वैसे ही जीव छोटे या बड़े शरीरमें प्रकाशमान रहसकता है, दयानंदजी कहते हैं जीव तो एक परमाणुमें भी रहसकता है लेकिन ! उसकी शक्तियां नाडी आदिके साथ संयुक्त होकर रहती हैं उनसे सब शरीरका वर्तमान जानता है, (जवाब.) जब नाडीके साथ उसकी शक्ति-संयुक्त-मानी तो वह एक ही बात होगइ. शक्तिरूप गुण-जीवरूप गुणसे अलग होकर नहीं रहसकता. जहां जहां शक्ति है वहां वहां जीव है यह बात प्रमाणसे सबूत है, जीदीलोग जीदकरे जिसका कोइ क्या करे ?

४२-सत्यार्थ पृष्ठ ४३० पंक्ति ११ में-दयानंदजी लिखते हैं कि-जैसे अन्यस्थानोंमें-चामुंडा-कालिका-जवालाप्रमुखके आगे दुर्गानवमी तिथि आदि पर्व बुरे हैं वैसे क्या ! तुमारे पर्युषण आदि-व्रत बुरे नहीं हैं?—जिनसे महाकष्ट होता है. (जवाब.) दुर्गानवमी वगेरा पर्व-जैनलोग-इसलिये बुरे फरमाते हैं कि-उनमें पशुओंका वध

कियाजाताहै, जैनोंके पयुर्षणपर्व इसलिये बुरेनहीकि-उसमें पशु-
 ओंका वधनहीकियाजाता, बलिकन्! जीवोंकी रक्षाकिइ जाती है,
 कहिये! इसमें दयानंदजीकों कष्ट क्या आनपडा?-क्या! उनकी
 दुकाने खुली नरहनेसँ खानपानकी चीजें नही मिलसकतीथी-इ-
 सलिये हिंसाकी पुष्टि करगये. फिर इसीपृष्ठपर पंक्ति १८ में दया-
 नंदजी लिखते हैकि-वह (तुमारी शासनदेवी)-राक्षसी और दु-
 र्गाकालिकाकी संगीबहन क्यों नहीं? जिसने एकपुरुष और ब-
 करेकी आंखे निकाल लिइथी, (जवाब)-जैनके आवश्यकसूत्रके
 प्रतिक्रमण अध्ययनकी टीकामेंएककथाहै वहां ऐसालिखाकि-दशा-
 र्णपुरनगरमें एकगृहस्थ रहताथा. वह खुद धर्मश्रद्धासँरहित और
 उसकी-स्त्री-धर्मरक्ता थी. जिससँ वह रात्रीकों भोजनतक नही
 खातीथी. इसबातपर उसका पति उसकी हंसीउडाताथाकि-रात्री
 भोजनमें बुराइ क्याहै? स्त्रीने कहा बहुतबुराइहै-पति बोला, अ-
 च्छा! हमभी नियम लेलेयगें, स्त्रीने कहा तोड दोगें! पति-बोला!
 कभी न तोडुगा. ऐसाकहकर कितनेकरौज तो नियम रखा, और
 फिर पिछा खानेलगगया स्त्रीने कहा देखो! बुराइ, तोभी-न-माना
 जैनमें शासनदेवी उसकों बोलते है जो धर्मके नियमोंका भंगकरे
 उसे शिक्षादे, उसनेभी चेतायाकि-तू-नियमभंग मतकर, लेकिन
 उसने नही माना, शासनदेवीने उसकी आंखे *पतनकरडाली.
 दूसरेदिन उसकी स्त्रीने शासनदेवीसँ बहुतनम्रताकिइ-और-पति-
 कोंभी नियमपालनकेलिये सावधान किया. शासनदेवीने उसश-

* आवश्यकसूत्रटीकाका-पाठ, देवता तं प्रहृत्याथ—दृग्गोलौ च
 व्यपातयत्,

खशकों जौंदगीतक अपनी खता यादरखनेकेलिये असली आंखे नही बिठाइ-बल्किन्! एकजगहपर कसाइलोगोंने एकबकरा जो तुर्तका माराहुवाथा उसकी आंखे लाकर उस व्रतभंगकरनेवालेके बिठाइ, वह पूर्ववत् देखने तो लगा-लेकिन! लोगोंने उसकानाम ए-डकाक्ष जाहिरहुवा. और सबलोग कहनेलगे नियम तोडनेवालेका यह हालहै. कहिये! दयानंदजी! जैनकी शासनदेवीने इसमें क्या बुराकिया? और भक्तोंसे कबकहाकि-तुम-मैरेलिये सांढबकरेभैसे मुर्धेवगेरा मारकर अर्पण करो? बाततो क्या थी? और दयानंद-जीने क्या बनाइ?-दयानंदजीने शासनदेवीकों-काली-चामुंडावगे-राकी बहेनबनाना चाहा-लेकिन! परिश्रम व्यर्थ गया, सच्चहैकि जूठोंकी जय नही. जिनकों उपरके लेखका शक होवे जैनागमआ-वश्यकसूत्रकी टीका अध्ययन प्रतिक्रमण देखलेवे, क्या! दयानंद-जीकों लिखतेवरुत मालूमनही रहाकि-मैरी जाल प्रकटहो जायगी? असलमें तो वैदिकमतके रिषिलोगही हिंसक थे-जिनोंने यज्ञकरनेका महाहिंसकमार्ग चलाया, और यज्ञोंका मांसप्रसाद खाया. कहिये! भैरवके भाइ कौनबने? जैन-या-वैदिक? रामायणमें लिखाहैकि-वशिष्ठजीने विश्वामित्रकों उसकी सेनासमेत मांस खिलाया और-मदिरा पिलायी, भारद्वाजने भरतकों सेना-समेत मांसखिलाया, कहते है रामचंद्रजीनेभी-खाया. रामायणका बालकांड और अयोध्याकांड इसका गवाही है, इनवातोसे पाया जाताहैकि-वैदिकमतवाले धर्मके रास्तेसे दूरहै, अगर कहाजायकि जैनके नेमनाथतीर्थकर जब विवाहनेकों गये थे स्त्रीके पक्षवालोने मांसपकाया था फिर मांसका निषेध कैसे करसकतेहो? (जवाव.)

एक नेमनाथ क्या जैनके कोइभी तीर्थकर या साधुने मांस नहीं खाया, जैनकेकानूनसें यह सबूतहोताहैकि—मांसमदिरा खानापिना धर्ममार्गनहीं. इसीलियेतो नेमनाथतीर्थकरने विवाह नहींकराया और पिछा लोट आये.

४३—सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३३ में दयानंदजी कल्पभाष्य पृष्ठ १६ का—नाम—लिखकर बताते हैं, जैनाचार्योंने छोटेसे पात्रमें उंट बुलाया, भला छोटेसे पात्रमें कभी उंट आसकताहै ? (जवाब.)—कौन कहताहै कि—छोटेसे पात्रमें उंट बुलाया, कल्पभाष्यका प्रमाणदेते हैं तो उसके अक्षरेअक्षर क्यों नहीं लिखे?—लिखे क्या ! जिनकों झूठलेखलिखकर दूसरेकों कलंकदेनाही मंजूरहो खुलेखुला वयान कैसे देसके?—असलमें मजमूनतो यहथा और दयानंदजीने उल्टा वैठाया, जैनके आवश्यकसूत्रके प्रतिक्रमणअध्ययनकी टीकामें वयानहैकि—एकनगरमें एकमकानपर गुरुशिष्यवगेरा साधुलोग आनकर ठहरे, पीछाडी पेशावकरनेकी जो जगहथी—उसकी—देखभालरखनेकेलिये गुरुने शिष्यकों कहा हमेशा सायंकाले देखलियाकरकि—उसमें कोइ जीवजंतु न आनवैटे, तब शिष्य बोला रौजरौज क्या देखना ? क्या ! वहां उंटतो वैठाही नहीं, (उचैचतत्रसंत्युष्ठा—निविष्टाःकिं-विश्रुंखलाः)—गुरुनेकहा—जा—देखतो सही, शिष्य रात्रीकोंजव देखनेगया तो क्या देखताहै ! वहां गुरुके वचनकों प्रमाणीकरनेके लिये शासनदेवताने उंटका रूपवनाकर देखादिया. (उष्णरूपततःकृत्वा—निविष्टातत्रदेवता,)—चेला डर खाकर पीछा आया—और—गुरुजीमें कहने लगा वहांतो उंट दिखताहै. गुरुने कहा

देख ! मेरा कहना तेने नही माना. मकानकी सारसंभाल जरूर रखना चाहिये, आगेपर खयाल रखना. चेला हाथजोड कहनेलगा आपका कहना सत्यहै. आगेपर खयाल रखुगा. बस ? तात्पर्य तो यहथा-और-दयानंदजीने देखिये ! क्या लिखादिया ?-कौन कहाहै जैनाचार्योंने पात्रमें उंट बोलाया.

४४-सत्यार्थ पृष्ठ ४५ ? पंक्ति २ में-दयानंदजी लिखते है जैनियोंके एक दमसार साधुने क्रोधितहोकर उद्वेगजनकसूत्रपढकर एकशहरमें आग लगादी-और-वह-महावीरतीर्थकरका अतिप्रिय था. बतलानाचाहिये इसकी दयाक्षमा कहागइ थी ? जब महावीरके संगसेंभी उसका आत्मा पवित्र नहुवा तो अब महावीरके मरे पीछे उसके आश्रयसें जैनलोग कभी पवित्र नहोगें, (जवाब.) जैनके एक दमसारनामके मुनि एक नगरमें गये जहां ऐसे लोग बसते थे जो-कोइभी साधु वहां जाय बिदूनतकलीफ दिये नरहे, दमसारमुनिने उनकों प्रथम-उपदेश दिया-और-धर्मियोंकों तकलीफदेना बुराहै समझाया-लेकिन ! उनोंने तो फिरभी उनकेसाथ वैसाही बर्ताव किया जो पहिले किया करते थे. उक्तमुनिने देखा, ये लोग इसतरह नही समझेगें-उसीवख्तजो उद्वेगजनकसूत्र-धर्ममें विघ्न पहुंचानेवालोंके चित्तकों उन्मत्तकरडालनेकी ताकतवाला था पढा, उसीदम नगरके लोग भ्रांतचित्तहोवेहुवे इधर उधर डोलनेलगे, अखीरमें जब उनमहाराजके पासआनकर अपराध क्षमा करवाया और आगेकों वेसा न करनेंपर कबूलहुवे तब उक्तमुनिने अपनीविद्या पीछी समेट लिइ-अर्थात्-समुपस्थानसूत्र-पढाकि-जिससें उनलोगोंके चित्त पुनःस्थिर हुवे, देखिये ! यहकाम उनोंने

किस इरादेपर किया था और दयानंदजीने उसकामतल किसरा-
स्ते उतारा. व्यर्थद्वेषलाकर क्यों अपनी कमजोरी बतागये?—फिर
आपलिखते है उससाधुका आत्मा महावीरकी संगतसें न सुधरा
तो महावीरके मेरे पीछे उसकेआश्रयसें जैनलोग पवित्र कभी न
होगे. (जवाब.) कौनकहताहै उसका आत्मा नसुधरा?—उसका
विगडांही क्या था? धर्मकीरक्षापर ध्यानदेना मनुष्योंके लिये कौन
कहेगा विगाडकी सुरतहै?—महावीरतीर्थकर जैसे सर्वज्ञ और नि-
र्मोहीकी संगतपाकर योग्यपुरुष कैसे न सुधरेगें?—जरूर सुधरेगें,
ऐसोंकी संगतसें न सुधरे तो क्या कामीक्रोधी ब्रह्मा-विष्णु-महेश
वगेराकी--या-मांसाहारी वैदिकरिषियोंकी संगतसें सुधरेगें, कभी
नहीं. आपके भर्तुहरिजीही कहगये हैकि—ब्रह्माविष्णुमहेशकों जि-
सकामदेवने स्त्रीकेदास बनादिये उसकामकों मेरानमस्कारहै. महा
वीर तीर्थकर निर्वाण होगये तो क्या हर्ज है उनके सत्यवचनोंका
समूह तो निर्वाणनही हुवा. जैनलोग उनके आश्रयसें क्यों न
पवित्रहोगे? दयानंदजीके नाराजहोनेसें होता क्या है? दयानंद-
जीके मरेबाद उनकी एकहीपोथीकी संगतसे पंजाबीआर्यसमाजी
लोग घासमांसकी लडाइलडकर फूटफाजिताकर चुके है, दयानंद-
जीनेतो विधवाविवाह स्यात् मुंहसें नही निकाला होगा—हां! ग्या-
रहपतिकरनेकी बात नियोगद्वारा कही थी—लेकिन! चेलोंने क्या
तामील किइ उसपर खयालकरते है—तो—उसमें विधवाविवाहकी
ध्वनिहै, कइ दयानंदीयोंकी बनाइ छोटीछोटी उर्दूकिताबें
देखते है—तो उनमें विधवाविवाहका दर्शावहै. दयानंदजीके
पधारनेपर—थोडेही दिनहुवे कि—यहहालहै—तो—नमालूम आगे

क्या होगा ?—दयानंदजी लिखते हैं उस दमसारमुनिकी दया क्षमा कहां गइ थी? (जवाब.)—उनोंने कौनसे जीवोंके गलेपर छूरी फेरी थी जो—उनकी दयाक्षमा चलीजाय. दयानंदजी द्वेषकेमारे चाहे सो लिखे, इनबातोंसे जैनोंका एकबालभी बांका नहीं होसकता, उसमुनिका इरादा लोभलालचका कब था? उनका इरादा आगामीकालपर धर्मीपुरुषोंकेलिये—रक्षाकरनेका था,

४५—सत्यार्थ पृष्ठ ४५१ पंक्ति ५ में—दयानंदजी लिखते हैं एककोशा वेश्याने थालीमें सरसोंकी ढेरीलगा उसके उपर फूलोंसे ढकी हुई—सुइ—खडीकर उसपर अच्छेप्रकार नाच किया. परंतु सुइ पगमें गडने नपाइ और सरसोंकी ढेरी विखरी नहीं. यह अतीव झूठ नहीं तो क्या है? (जवाब.) काशीवेश्या—नाचघरमें सरसोंकी भरीथाली धरकर उसमें खडी सुइ—और—सुइपर फूलरखकर इसतरहनाची थीकि—जब नाचतीहुइ उसथालीके पास आजाती थी—उछलकर उसफूलपर चारअंगुल उंचे—तीनचकर देतीहुइ फौरननीचे उतरआती थी. फूलकों सूइकों और सरसोंके दानोंकों स्पर्शतक न करती थी. जाहिरातमें यही कहाजाताथाकि—देखो ? इसने सरसोंकी भरीथालीपर क्या उमदानाचकिया?—दयानंदजी के मगजमें यहबात क्यों न समाइ ?—और—अतीव झूठ इसमें क्या था ?—आजकलभी ऐसे नृत्यकार पुरुष—और स्त्री—मौजूदहै जिसकी कलादेखकर बडेबडे सभ्य चकित रहजाते है, नृत्यकलामें अन्य देशवाले भारत बासीयोंके नीचे है, अबभी—बडेबडे शहरमें कथकलोग वह नृत्यकला बतलाते है जिसको देखकर अकलकामनही करती. काशीवेश्याने अपने शरीरको ऐसीतालीम दिइ थी जिससे

वह सर्वोत्तमकला बतलासकती थी. इसमें दयानंदजी अतीव झूठ समझे तो उनकी मरजीकी बात है. बुद्धिमानलोग झूठ नहीं कहसकते,—

४६—सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३१ में दयानंदजी लिखते हैं, जैनके तीर्थंकर-महावीरकों सर्पने काटा-रुधिरके बदले दूधनिकला. और वह सर्प ८ में स्वर्गकों गया. भला! शरीरके काटनेसे दूध निकलना किसीने नहींदेखा, सिवाय इंद्रजालके दूसरीवात नहीं. उसको काटनेवाला सर्प तो स्वर्गमें गया-और-महात्माश्री-कृष्णआदि तीसरेनरककों गये, यह कितनी मिथ्या बात है? (जवाब.) महावीरतीर्थंकरके शरीरसे दूध नहीं निकला, किंतु वह रुधिरही सफेदरंगकाथा, जैसे पद्मनीस्त्रीकेपसीनेमें खुशबू और शंखिनी केवदबु-होतीहै, वैसे रुधिरकीरंगतमें फर्कहोना-क्याताज्जूवहै, सर्पने जब महावीरतीर्थंकरकों काटा तब उन्होंने उसे ज्ञान सुनाया. सर्पकों जातिस्पर्णज्ञान हुवा और जानगयाकि-मैं-पहिलेभवमें गुस्सा खोर शरूश था-जिससे सर्प बनाहूं. अब गुस्साछोडदेना चाहिये. ऐसा सौचकर उसने जीवोंको काटना खानाछोडदिया. धर्मक्रियाके प्रभावसे वह आठवेस्वर्गमें दाखिल हुवा, कहिये! इसमें क्या असंभववातथी?—क्या! महात्माओंके उपदेशसे पापीलोग धर्मीनहीं बनसकते?—अब महात्माश्रीकृष्णकी बात सुनलो-वैं-नरक किस कामकेकरनेसे गये. जैनशास्त्रोंके लेखसे सबूत है कि-कृष्णजीने अपनीजीर्दगीमें (३६०) संग्राम किये, पीछलीउमरमें जब-द्वारका जलउठीथी-वनमें चलेगये और वहां भी जलके प्यासे मरगये, तप करना या दीक्षितहोना उनसे नहीं व-

नसका, चाहे राजाहो-या-रंकहो-पापसँ नरक और पुन्य-सेस्वर्ग-सीधीमडकहै, इसमें जैनोंने क्या मिथ्या कहा,?—अगर वे तपस्या करते तो पापक्षयहोजाता. यह उनकेसेवकोंके निश्चयकी बातहैकि—(सामर्थको नही दोष गोसाइ)—जैनलोग कृष्णजीको इ-श्वरावतार नही किंतु एकराजाहुवे मानतेहै, जब नरकगतिभोगकर फिर मनुष्यजन्ममें आयमें और तपकरेगें तभीउनका निर्वाणहोगा,

४७—सत्यार्थ पृष्ठ ४४० पंक्ति २८ में—दयानंदजी लिखते है. जैनलोग—“त्रिपृष्ठ-द्विपृष्ठ-स्वयंभू-पुरुषोत्तम-पुरुषसिंह-पुरुषपुंडरी-क-दत्त-लक्ष्मण-और-कृष्ण-ये-नववासुदेव-तथा-अश्वग्रीव-तार-क-मोदक-मधु-निशुंभ-वली-प्रह्लाद-रावण-और-जरासिंध-ये-नवप्रतिवासुदेव-भी-नरकगये और रिषभदेवसँ लेकर महावीर प-र्यंत चौइसतीर्थकर मोक्षकों प्राप्तहुवामानते है, भला! इनके साधु गृहस्थ-भौर-तीर्थकर-जिनमें बहोतसँ वेश्यागामी-परस्त्रीगामी और चोर आदि-सब-स्वर्ग और मुक्तिकों गये-और श्रीकृष्णआदिमहा-धार्मिकमहात्मा सब नरककोंगये यह कितनी बडी बुरी बातहै”?—(जवाब.)उपरलिखे नववासुदेव-और-नवप्रतिवासुदेव राजोंने आप-समें लडाइये लडकर हजारांह लाखांह मनुष्योंको मारडाले-और वासुदेवोंने प्रतिवासुदेवोंको मारे, तपकरनेनहीपाये, इसीलिये वे नरककों गये, इसमें दयानंदजीकों क्या बुरालगा?—क्या! पापकर्म सँभी-कभी मोक्ष होसकताहै?—दयानंदजी जरा पक्षपातरूपजामेसँ बहार होकर बातकरते तो आनंद आता. दयानंदजी कृष्णजीकों महाधार्मिक और महात्मा समझतेथे तो उनकी मूर्त्तिकों देखकर नाकमें बल क्यों डालते थे?—और उनके चेले समाजीलोग-महा-

त्माकृष्णजीकी मूर्तिदेखकर क्यों हंसी उडाते है ?-क्या ! जिसको महात्मा समझना और उसकी मूर्तिसें द्वेषरखना यहभी कोइ न्या-यहै. रहे जैनके चोइसतीर्थकर सो उनोंने राज्यछोडकर दीक्षा लिइ, बडे बडे तप किये, परिसहदेनेवालोंपरभी रहेम किइ. कइदु-ष्टोंने उनकेशरीरको हथियार और आगसें काटाजलाया, लेकिन! वें समाधिसें नही गिरे, है कोइ ! ऐसा योगीराज ! जिनके कानोंमें खीले ठोकदियेजाय और ध्यानसें नडिगे ? देवांगना नाटक दि-खलावे और मोहित न हो ? दयानंदजी ! आपको माळूमहुवा ! जैनतीर्थकरोंने किसतरह धर्मपालनकिया और मुक्तिपाइ ? जो श-रुश निस्पृहहोकर तपकरेगा मुक्ति क्यों नहोगी ? आपके ब्रह्मा-विष्णुमहेश-रावण-और-जरासिंधुवगेरा ऐसाकरतेतो उनकोभी मोक्ष मिलता, कहिये ! हठवादी कौन ठहरे ? जैन-या-आपलोग ? जैनके तीर्थकरोंको कोइ वेश्यागामी सबूत करदेवें तो हम बेशक ! कहदेयगें वें मुक्तिके अधिकारी नही थे. अगर कोइ आर्यसमाजी जैनकेतीर्थकरोंको वेश्यागामी प्रमाणकेशथ सबूतकरदे तो हम (५००) रूपये इनाम दिलायगें रहे जैनमुनि-सो-उनके नामलिख-वतलाना चाहियेथा कौन वेश्या-या-परस्त्रीगामी थे ? दयानंदजी अगर सच्चे थे तो पत्तेवार नाम लिखते, गुम्मनामके लेख लिखना नामदौका कामहै, जो साधुवनकर फिर गृहस्थहोजाय कौन उसे मुनि कहताहै ? कामक्रोधके होतेहुवे कौन कहताहै मुक्ति मिले, दयानंदजी जैनके सभी तीर्थकर और साधुओंको वेश्या-या-पर-स्त्रीगामी लिख दे-तो-उससें होता क्याहै ? विना प्रमाण किसीका लेख मान्य नही होसकता.


४८—सत्यार्थ पृष्ठ ४५० पंक्ति ३२ में दयानंदजी लिखते हैं जैनके महावीरतीर्थंकरके पगपर खीर पकाइ और पग नजले, यह झूठहै, (जवाब.) महावीरतीर्थंकर जब बनमें ध्यानारूढ खडे थे, गो-वालियोंने उनके दोनोंपांवाँके बीच आगजलाकर खीर पकाइ, जिससें उनके पैरोंको तकलीफ जरूरहुइ, लेकिन! बिल्कुल दग्ध होकर खाख इसलिये नहींहुवेकि—बहोतकालतक आग नहीं ज-लागइ थी. दयानंदजीका इरादा यहथाकि—बिल्कुल दग्ध क्यों न-होगये?—(जवाब.) बिल्कुल दग्धतो जब होते बहुतकालतक आग जलाइ जाती,

४९—सत्यार्थ पृष्ठ ४०७ पंक्ति २५ में—दयानंदजी लिखते हैं कि—अबजो बौध और जैनी लोग सप्तभंगी और स्याद्वाद मानते हैं सो यहहै, एसाकहकर बिनासमझे सप्तभंगीका बयान भाषामें लिखाहै, (जवाब.) बडेअपशोषकीबातहैकि—जिसन्यायको आप नसमझना और उसकेखंडनकरनेको तत्परहो जाना, दयानंदजी तो क्या—लेकिन! उनकेबडेरे व्यासजी और शंकराचार्यभी इस न्यायको बिनासमजे खंडनकर गये हैं.—लेकिन! उनको तारीफ जबहोतीकि—समझकर खंडनकरते. व्यासजी ब्रह्मसूत्रमें लिखते हैं कि—(नैकस्मिन्नसंभवात्)—अर्थात् एकवस्तुमें अनेकविरोधी धर्मोंका समावेश नहींहोसकता. जैसे शीतआतप—और—सर्पनकुल समानाधिकरणहोकर नहींठहरसकता वैसें सप्तभंगीभी एकवस्तुमें नहीं ठहरसकता. (जवाब.)—व्यासजी जो हेतु बतलाते हैं सो ग-लतहै, सबबकि—भिन्नभिन्न अपेक्षासें एकही वस्तुमें भिन्नभिन्न धर्म भी समावेश होसकते हैं, यह जो कहाजाताहैकि—इश्वर—साकारभी

है और निराकारभी है, निर्गुणभी है सगुणभी है-एकभी है अनेक भी है, कहिये विरोधिधर्म एकवस्तुमें नहीं रहसकते थे-तो-येये-वाते क्यों मानी गई? इसी लिये कहाजाताहैकि-व्यासजी और शंकराचार्यजी जैनोंके स्याद्वादन्यायकों मननभी करते जाते थे. और अज्ञानतासे खंडनभी करते थे. पक्षपातरूप चश्मे-उनोने अपने नेत्रोंसे नहींहठाये थे, रहे दयानंदजी! सो-उनकों यहभी मालूमनहींकि-वोधलोग-स्याद्वादन्यायकों मान्यरखते है-या-नहीं?-असलमें बोधके ग्रंथ दयानंदजीने नहीं देखथे, देखे होतेतो ऐसा कभी नहीं लिखते, बोधलोग तो स्याद्वादसप्तभंगीके शत्रुहै, उनके शास्त्रोंमें तो उसका खंडनकिया हुआ मौजूदहै, दयानंदजीने इतनाभी नहीं सोचाकि-जो लोग पदार्थकों क्षणभंगुर मानते है वे स्याद्वाद न्यायकों क्योंकर मानने लगे थे?

५०-शंकरस्वामीकों कितनेक लोगकहते है सर्वज्ञ और अद्वैतवादी थे, लेकिन!-यहदोनोंवाते गलतहै, यदि सर्वज्ञ थे-तो-मंडनमिश्रकी स्त्री-सरसवाणीके सामने कामचर्चामें क्यों हारगये?-और जवाबदेनेकेलिये छमहिनेकी मुद्रत क्यों मागी?-रहा उनका अद्वैतवाद-सो उसकाभी हाल सुनलिजिये!-वे-कहते थे सबदुनिया ब्रह्मरूपहै, और जो नाना प्रकारके प्रपंच दिखाइदेते है, सब मायाजन्यहै, इसपर यहसवाल पैदाहोताहैकि-माया-सत्यरूपहै-या-असत्यरूप?-अगर सत्यरूपहै तो दोतत्व सिद्ध हुवे-एक ब्रह्म दूसरीमाया, अगर असत्यरूपहै-तो-उससे नानाप्रकारके प्रपंचकी पैदाश कैसे हुई?-जिसकों माता कहना उसकों बंध्याभी कहना यह कौन बुद्धिमान मनन करसकेगा?-इसलिये अद्वैतवाद झूठाहै,

झूठेवादकों बयानकरनेवालोंकी क्या ताकतहैकि-स्याद्वादन्यायकों खंडन करसके?—जिस शंकराचार्यकी तारीफ दयानंदजी बडेजो-रसें सत्यार्थप्रकाशमें करगये देखिये ! उनोंने वेदकी हिंसाकों अ-हिंसा फरमायी, और धर्ममार्गकहा, लेकिन ! कोइ प्रमाण नही दे-सके, पक्षपातमें पडकर यहभी कहगयेकि-वेदके प्रतिकूल सबपा-खंडहै, धन्य महाराज ! खूब विद्या सीखे थे, इशाइ और मुसल्मा-नभी तो कहते है बाइबल और कुरानके शिवाय सबपाखंडहै. शंकराचार्य-कुमारपालराजाकेवख्तमें हुवे सबूतहोते है, वें-बौधोंके शाथ मतकेवारेमें लडे, दयानंदजी कहते है उनोंने जैनकोंभी हराये लेकिन ! महाशय ! जैसे आपने दिग्विजय किया वैसे उनोंनेभी किया होगा. कुच्छ वाममार्गपरभी शंकराचार्यकी निगाह थी. उ-नोंने श्रीचक्रकी स्थापना किइ, श्रीचक्र वाममार्गीयोंका मुख्यदेव है. शंकरदिग्विजयग्रंथके (६५) में अध्यायमें उसकीबडी कीर्त्ति गाइहै, शृंगेरी और द्वारिकावगेराके मठमें श्रीचक्रकी स्थापनाहै, हम नही कहसकतेकि-शंकराचार्यजीने-सप्तभंगीन्याय-समझा था, जैसे व्यासजीके कहदिया शंकराचार्यभी उसीसडकचले, साय-नाचार्य-माधवाचार्य-विद्यारण्य-और-दयानंदजीभी उसीरास्ते च लकर सप्तभंगीकों झूठ बतलागये, अच्छा ! अब हम सप्तभंगी न्यायकों नीचे लिखबतलाते है जिसकी इच्छाहो समझकर खंडन करे, तारीफ उनकी किइजायगी जो समझकर खंडन करेगें,

५१-- स्याद्वादन्याय क्या कहताहै सुनिये !

(अनुष्टुप्वृत्तं.)

सर्वं अस्ति स्वरूपेण—पररूपेण नास्ति च,
अन्यथा सर्वभावानां—एकत्वं संप्रसज्यते,

१

(शार्दूलविक्रीडितम्.)

या प्रश्नाद्विधिपर्युदासभिदया-वादश्च्युता सप्तधा,
 धर्मधर्ममपेक्ष्य वाक्यरचना-नैकात्मके वस्तुनि,
 निदोषा निरदेशि देव! भवता-सासप्तभंगी यया,
 जल्पन् जल्परणांगणे विजयते-वादी विपक्षं क्षणात्, २

तत्र च स्यात् कथंचित् स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेणास्त्येव सर्वं
 घटादिद्रव्यं, न पुनःपरद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेण, (तथाहि)-घटो द्र-
 व्यतःपाथित्वरूपेण अस्ति, नास्ति जलादिरूपेण, क्षेत्रतःपाटलि-
 पुत्रकत्वेन-नास्ति कान्यकुब्जादित्वेन, कालतः शैशिरत्वेन-नास्ति
 वासंतिकत्वेन, भावतो रक्तत्वेन-नास्ति पीतत्वेन, एवं सर्वं अन्य-
 दपि ज्ञातव्यं-स्वद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया कथंचिदस्ति-परद्रव्यादिच
 तुष्टयापेक्षा नास्ति च घटइतिउल्लेखः-अन्यथा इतररूपापत्या
 स्वरूपहानिप्रसंगः इति-अवधारणं चात्र भंगेनाभिमतार्थव्यावृत्त्यर्थ
 मुपात्तं-अन्यथा अनभिहिततुल्यतैवास्य-वाक्यस्य-प्रसज्येत, प्रति-
 नियतस्वार्थानभिधानात्-(तदुक्तं)-वाक्येवधारणं तावदनिष्टार्थनि-
 वृत्तये-कर्तव्यमन्यथानुक्तसमत्वात् तस्य कुत्रचित्-(१)-तथाप्यस्त्येव
 कुंभइति-एतावन्मात्रोपादाने-कुंभाद्यस्तित्वेनापिसर्वप्रकारेणास्तित्व
 प्राप्तेःप्रतिनियतस्वरूपानुपपत्तिः स्यात्-तत्प्रतिपत्तये स्यादितिश-
 ब्दः प्रयुज्यते-स्यात्कथंचित् स्वद्रव्यादिभिरेवायमस्ति-न परद्रव्या-
 दिभिरपि-इत्यर्थः, यत्रापिचासौ-न प्रयुज्यते-तत्रापि व्यवच्छेदफ-
 लैवकारवत् बुद्धिमग्निः-प्रतीयते एव,-सोप्रयुक्तोपि वा तन्नैः-सर्वथा
 त्प्रतीयते-यथैवकारो योगादिव्यवच्छेदप्रयोजनः, २, ततएवकार-
 स्यात्कारयोः सप्तस्वापेभंगेषु ग्रहणंकर्तव्यं इतिप्रथमोभंगः-(अ-

थद्वितीयभंगः प्रदर्श्यते, स्यान्नास्ति एव,—घटादिद्रव्यं—स्वद्रव्यादि भि-
 रिव—परद्रव्यादिभिरपि—वस्तुनोसत्वानिष्टौ—हि—प्रतिनियतस्वरूपा-
 भावात् वस्तुप्रतिनियति—नस्यात्—नचास्तित्वैकांतवादिभिः अत्र
 नास्तित्वमसिद्धमितिवक्तव्यं कथंचिद्वस्तुनि तस्य युक्तिसिद्धत्वात्
 नहि कचिदनित्यत्वादौ सास्ये सत्वादिसाधनस्यास्तित्वं विपक्षे ना-
 स्तित्वमंतरेणोपपन्नं—तस्य साधनत्वाभावप्रसंगात्—तस्मात् वस्तुनो-
 स्तित्वं नास्तित्वेनाविनाभूतं—नास्तित्वंच तेनेति—विवक्षावशाच्चानयोः
 प्रधानोपसर्जनभावः—एवमुत्तरभंगेषूपिज्ञेयं—अर्पितानर्पितसिद्धेरिति वा
 चकवचनादितिद्वितीयभंगः—यहवर्नन यहां भगवतीसूत्रकीटीका*—
 नयप्रदीप—और—स्याद्वादमंजरीग्रंथके आधारसें लिखागयाहै, जि-
 नकों शंसयहो उनग्रंथोंको देखलेवे. इसकीभाषा यहां इसलिये
 नहीलिखीकि—जो—पुरातार्किकरुहोगा—वही इसन्यायका समझेगा,
 फिर क्यों लंबान करना?—निदान! स्याद्वादन्याय किसीसेंखंडन
 नहीहोसकता. सबबकि—वह—सच्चाहै, व्यासजी—शंकरस्वामी—या—द-
 यानंदजीवगेरा चाहेसो कहे—जैनीकों उत्तमें कोई क्षति नही. जि-
 सअपेक्षा वस्तु अस्तिरूपहै उसीअपेक्षा वह नास्तिरूपहो ऐसा जै-
 नलोग कब फरमाते है? हां! दूसरी वस्तूका इसमें असद्भाव
 बतलाकर नास्तित्वधर्म सबूत करते है, जैसे एकपुरुष समझो अ-
 पने बेटेकी अपेक्षा बापहै लेकिन! अपनेबापको अपेक्षासेंतो वह
 बेटाही है. कहिये! एकहीपुरुषमें अपेक्षा भिन्नसें दो विरोधीधर्म
 रहे गये या—नही?—ऐसेही गुरु और शिष्य—स्वामी और सेवक
 जिसपर उतारना चाहो उतरसकेगा. नही मालूम! व्यासजी—शं-

करस्वामी-और दयानंदजी-इससच्चेन्यायसें क्यों चीडे ? और अपनी अज्ञानता जाहिरकर गये,

५२-सत्यार्थपृष्ठ४४३जो-तीनअनुष्टुपवृत्त-लिखकर दयानंदजीने जो श्वेतांबरदिगंबरके साधुओंके लक्षणबतलायेहै बिल्कुल गलतहै, ४४४पृष्ठ५२-पंक्ति२-में दयानंदजीलिखतेहै“दिगंबरोंका श्वेतांबरोंके साथ इतनाही भेदहैकि-दिगंबरलोग-स्त्रीका-संसर्ग नहींकरते और श्वेतांबरकरतेहै,इत्यादिवातोंसें मोक्षकों प्राप्तहोतेहै, (जवाव) शास्त्रोंके अर्थकों उलटाकरना सबसेंभारी जुर्महै, दयानंद जीकी आदतथीकि-जगहजगह अर्थकों बदलदेना, स्त्री-अगर अच्छेप्रकार धर्मपालनकरे तो उसीजन्ममें मुक्तिकों हासिलकर सके ऐमा श्वेतांबर मानतेहै-और-दिगंबर कहतेहै चाहे जितनी धर्मक्रिया स्त्री-करे उसीभवमें मुक्ति हासिलनकरसकेगी, दयानंदजीने इसवातकों नसमझकर ऐसा अनर्थ माराकि-कुच्छ कहानहीं जाता. मुनासिवथा सच्चावयानकरते,लेकिन ! क्याकहाजाय ! दयानंदजीनेंसघडी जन्मही नहींलियाथा जोसच्चालेखलिखे, श्वेतांबर दिगंबरकी भिन्नता-नामका विषय इसग्रंथके प्रथमतंरंगमें लिखेचूके है,उसकों पढकर सबहाल मालूमकरलो, एकशिवभूतिमुनिने सनातनजैनश्वेतांबर आमनायसें फटकर विक्रमसंवत्(१३९)में-दिगंबरमत निकाला, जैसेआपलोग वेदके सच्चेअर्थसेंवदले वैसे वें जैनकेआगमोंसें वदले जैसे आपलोग वैदिकनही वैदिकाभासहै वैसे दिगंबरलोग जैननही जैनाभासहै,उनोंनेजोनंगीमूर्ति माननेकी प्रथा निकाली जैनआगमसें विरुद्धहै, दिल्ली और मध्यखंडवगेरामें जो इनकीरथयात्रा अन्यलोगोंद्वारा अटकाइजाती है इसकायही

सबबकि-नंगीमूर्ति मानना फिजूलहै, देखिये ! गुजरात-कच्छ-दखन-पूरवमारवाड-और-पंजाबमें जहांजहां श्वेतांबरलोग शिंगारी हुइमूर्ति रथयात्रामें निकालतेहै क्यों कोइनही अटकाता?—यह दिगंबरोंहीकी अज्ञानताका नमुनाहैकि-जैनकी अबनतिकरारहेहै, वेही लोग अपने शास्त्रोंको गुप्तरखकर-जैनकेनामको कमजोरी दिलातेहै, शास्त्रछपाकर अधिक लोगोंको दियेजाय इसमेंश्वेतांबर लोग फायदा समझतेहै, देखिये ! मुर्शिदाबादनिवासी रायबहादूर धनपतसिंहजीने मूलसूत्रभी छपवाकरशहरशहरमें भेजदियेहै, यह दिगंबरोंहीका हठवादहैकि-धर्मशास्त्र छपवानाठीकनही. इनके कु-आचरणोंसे दयानंदजी या औरकोइलोग जैनको कलंकदेनाचाहे तो उनकी भूल है,

५३-सत्यार्थपृष्ठ४४ ४पर-दयानंदजीने-जो-हुंढियेलोग मुंहपर पटी बांधरखतेहै उसपरलंबीचौडी वक्तृतादेकर जैनधर्मको कलंकितकरना चाहा यहभी जैनकेशाथ कुच्छसंबंधनहीरखता. किसी जैनआगममें मुंहपर पटीबांधनानहीलिखा, जैसेदिगंबर जैनाभास वैसे हुंढियेभी जैनाभासहै, जब जैनशास्त्रोंके लेखसे दिगंबर और हुंढिये जैनही नहीं-तो-उनके कुभाचरणोंसे जैनको क्या!-दिगंबरोंने द्वादशांगसूत्र उथथापन किये-और हुंढियोने वत्तीससूत्रके शिवाय दूसरे सबसूत्र उथथापनकिये, कहिये ! इनकेवचनोंपर क्या परतीत लाइजाय?—मलीनरहना कोइजैनशास्त्र नहींफरमाता हुंढियोंकी मलीनता जहानभरमे मशहूरहै, अगरमलीनरहना तीर्थकरोंको मजूरहोतातो-वे-कपडोंको प्रक्षालनकरना क्यों फरमाते? चाहे साधुहो-या-गृहस्थ-मलीनरहना किसीको मुनासिवनही, दयानंद

जी इसीपृष्ठपंक्ति ४में-लिखतेहैकि-जैनोंका केशलुंचन सर्वत्रप्रसिद्ध है, अब कहिये ! जैन लोग ! तुमारादयाधर्म कहांरहा ? चाहे अपनेहाथसे लुंचनकरे-या उसकागुरुकरे, परंतु कितनाबडाकष्ट उसजीवकोंहोता होगा ? जीवकों कष्टदेनाही हिंसाकहातीहै, (जवाब.)-साधुलोग-या-गृहस्थ-जो धर्मपालनकेलिये तपकरंतहै जीवकों कष्टतोहोताहो है, लेकिन । इसकामकों अगर हिंसामानीजायतोफिर जितनेधर्म शास्त्र सभीव्यर्थसिद्धहोजायगे, यह दयानंदजीकीहीअज्ञानताका नमुनाहैकि-वे-धर्मपालनकेलिये तपकरनाभी हिंसामें सामील करते है, जैनकेकल्पसूत्रवगेरामें खुलेखुलावयानहैकि-जिसकी ताकतहो वह केशोका लुंचन करे, जिसकी ताकत नहो-रोगोहो-बालक-यावृद्धहो-उनकेलिये हुकमहैकि-उसेसें या कतरनीसें केशोंको साफकरावे. जैसी शक्तिहो वैसाकरे कोइहर्जकीवातनही. दयानंद जीके कुतर्कसें जैनोंको कोइक्षति नही पहुंच सकती, दयानंदजी प्रथमावृत्ति सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४०१ की अंतिम पंक्तिसें आगे लिखते है हुंढिये लोगोंके केशोंमें जूआ पडजाय तोभी नही निका लते-हजामतनही बनवाते-जब उनका साधु आताहै जैनीलोग उसकी डाढीमूँछ नोच लेते है, शरीरकों कंपावे तो उसकों कच्चासाधु समझते है. (जवाब.) जब हम पहिलेभी लिखचूके हैकि-जैनशास्त्रोंके लेखसें हुंढियापंथी जैन नही किंतु जैनकेघातकहै तो फिर उनके कुआचरणोंसें जैनकों क्या गरज रही !-ज्यादे दरयाफत करना चाहतेहो तो उनलोगोंसें पुछो,

५४-जैनलोग थालीकेआकार गोल-और सपाट-जो-छाख-योजनलंबाचोडा जंबूद्वीपमानते है उसमें दोसूर्य और दोचंद्र पृथक

पृथक् घांणीके बैलकीतरह फिरते कहते हैं, उस जंबूद्वीपके दखन-कीतर्फ भारतवर्षक्षेत्र जिसमें हमतुम रहते हैं बहुतछोटा हिस्साहै, जंबूद्वीपकी चौतर्फ दोलाखयोजनका वलयाकार लवणसमुद्र मानते हैं. जिसको हमतुम महासागर बोलते हैं उसलवणसमुद्रका एकतर्फका कनारा है, अगर कोई सिधादखन दिशाको महासागरमें जहाजलेकर जायगा फिरपिछा न लौटेगा, सबबकि दोलाखयोजनजाकर पीछे चले आवे ऐसे जहाज आजकल कोइनही बनासकता, बड़ेबड़े विज्ञानी कबूलकर चूके हैंकि-समुद्रमें सिधादखनको जहाज चलावे तो जल तरंगोंकेमारे आगे जानही सकते, पीछा उत्तरकनारेकोही लौटते चले आयेंगे, बस ! ऐसे अगम्यलवणसमुद्रके आगे-चोफेरवलयाकार चार लाखयोजनका धातुकी खंड जैन लोग मानतेहैं, लवणसमुद्रमें चारसूर्य और चारचंद्र-तथा धातुकी खंडमें बारहसूर्य बारहचंद्र मानते हैं, इसकी चौफेर आठलाखयोजनका कालोदधिसमुद्र इसमें बेंतालीससूर्य-बेंतालीसचंद्र-और इस कालोदधिसमुद्रको चौतर्फ पुष्करार्द्ध द्वीप जिसमें बहत्तरसूर्य बहत्तरचंद्र-मानते हैं इसतरह इतनेद्वीपसमुद्रोंमें मिलाकर जैनलोगजो (१३२) सूर्य और इतनेही चंद्र आकाशमें अलगअलग फिरतेहुवे कहते हैं, इसपर दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५२ पंक्ति २३ में लिखते हैंकि-अब सुनिये ! भूगोलखगोलके जाननेवालो !-इतने सूर्यचंद्र जैनलोग मानते हैं, अगर आपलोगोंको वेदमतानुयायी सूर्यसिद्धांत नमिलता तो जैनोंके महाअंधेरमें पड़े रहते, (जवाब.) देखिये ! दयानंदजीकी अज्ञानताका नमुना ! जैनीलोग जितने द्वीपसमुद्रोंमें जितनेसूर्यचंद्र मानते हैं उनको एकही भारतवर्षका

धोखा देकर आप कैसे सच्चे बनते हैं? तनक सोचनातो थाकि-जैनलोग (१३२) सूर्यचंद्र एकीलेभारतवर्षमें कब कहते हैं?—सूर्यसिद्धांतग्रंथ जैनोंके सूर्यप्रज्ञप्ति-चंद्रप्रज्ञप्ति-ज्योतिष्करंडक-आरंभसिद्धि-त्रगेराग्रंथोंके सामने ऐसा है-जैसा सूर्यके सामने दीपकका उजाला, उसकी क्या सामर्थ्य हैकि-उक्तग्रंथकी सच्चाइके सामने बैठसके?—जैसा वेदोंकी सच्चाइका घमंड दयानंदजीकों था-वैसाही सूर्यसिद्धांतका समजलेना चाहिये, अगर कोई ज्योतिष विद्याकापाठी जैनके ज्योतिष्ग्रंथोंकों देखेगा स्वतःमालूमहोजायगा. दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४५३ पंक्ति १७ में-लिखते हैं अब देखो भाइ! इसभूगोलमें (१३२) सूर्यचंद्र जैनियोंके घरपर तपतेहोंगे, भला ! जो तपतेहोंगे तो वे-कैसे जीते होंगे? और रातकोंभी जैनीलोग ठंडकेमारे जकडजातेहोंगे (जवाब.) जैनोंकेघर इतने चंद्र सूर्य जब तपेकि-वे-एकजगहपर इतने मानतेहोवे, वे-तो-उपर लिखे मुआफिक लवणसमुद्र-धातुकीखंड-कालोदधिसमुद्र-और-पुष्करार्द्धद्वीप-जो-लाखहां योजनके हैं उनमें इतने चंद्रसूर्य मानते हैं. फिर दयानंदजी क्यों चिल्ला गये, क्या ! वैदिक मतके सन्यासीयोंका यही लक्षणहैकि-छलकपटद्वारा खंडनमंडन लिखना? दयानंदजीके उपर उनके निराकारइश्वरकी ऐसी घोर कृपाहुइथीकि-वे-अपशब्द लिखनेमेंही वहादूरी समझते थे, जैसे कोई औरत किसीसे लडाइलडे तो शिवाय गालियोंके और कुच्छ नहीं बोलसकती, सत्यार्थप्रकाशमें जहां जहां मतमतांतरोंका वर्नन लिखा शिवाय अपशब्द और हंसी उडानेके और कुच्छ लिख नहींसके हैं, लेकिन! याद रहे! यहकाम विद्वानोंका नहीं, भांड

और धूत्तोंका है, जैनोंके घर (१३२) क्या-उससेंभी-ज्यादे ज्ञान-सूर्य तपरहे है, वें-आपक अज्ञान अंधकारमें कभी नहीं गिरसकते, दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५३ पंक्ति २३ में एक और गप्प धरगये हैंकि-सुमेरु विना हिमालयके दूसराकोइनही, (जवाब.) किसी ज्योतिष्ग्रंथमें-यहनही लिखाकि-हिमालय-सुमेरुहै, न किसी धर्मशास्त्रमें भी हिमालयको सुमेरु बतलाया. दयानंदजीने नयीरो-शनीवालोंकी संगतसें खूब मनमानी विद्या सीखलीइथी. लेकिन! यादरहे-समाजीयोंके शिवाय दूसरा कोई इसपर भ्रमल नहीं करसकता.

५५-दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५६ पंक्ति २३ में लिखते है, जैनलोग कुरुक्षेत्रमें-चौराशी (८४) हजार नदी मातने है, भला! कुरुक्षेत्र बहुतछोटादेश-उसको न देखकर एकमिथ्याबात लिखनेमें इनको लज्जाभी न आइ! (जवाब.) जैनलोंग जो देवगुरु उत्तरकुरुक्षेत्र-कहते है इसभारतवर्षका कुरुक्षेत्र नहींकहते, किंतु उपरलिखे जंबूद्वीप-धातुकीखंड-और-पुष्करार्द्धद्वीपके कुरुक्षेत्रकी बात है, जिनको संदेहहो जंबूद्वीप प्रज्ञतिशास्त्र देखलो, जिसकुरुक्षेत्रको दयानंदजी बयान करते है क्या! और कोई नहींजानता? पानी पतकरनालवगेरागांवके पास जो कुरुक्षेत्रहै कुरुराजाके जमानेसें बसाहुवाहै, जैनलोग इसकुरुक्षेत्रमें चौरासीहजार नदी कब कहते है? दयानंदजी लिखते है जैनोंको ऐसीमिथ्याबात लिखते लज्जा भी नहीं आई? (जवाब)-लज्जा और शर्मतो जब आवेकि-झूठ बातकाबयान कियीजाय? सौचोतो! आपको इतनीभी लज्जानहीं आइकि-मैं-विनासमझे क्या लिखताहूं? वेदोंमें इंद्रकी तारीफ,

सूर्यकी इज्जत,—वायुवगेरा तत्वोंकी चर्चा, तरहतरहके जानवरोंको गलाघोटकर मारना—अश्वमेध—गौमेध—बलिदान वगेराका करना और—जहां राजाको अभिषेककरनेकी बात आइ मद्दिरापानकरना फरमाया, ऐसे अज्ञानकेखजानेको इश्वरप्रणीतकहना यही लज्जाका कारणहै, दयानंदजीने सोचाकि—अगर मैं प्राचीनअर्थको कबूल-खूगातो जैन बौधवगेराओंकी तर्कतापसं वचनामुश्किलहोगा. दयानंदजीने (५९) वर्षकी उमरतक जैनग्रंथोंका खोज लगाया दुवारा—सत्यार्थप्रकाशके बारहमें समुल्लासमें—जैनका वर्ननकिया, लेकिन ! फिरभी यथार्थभेद नहींपाया, प्रथम सत्यार्थप्रकाशमें जो नाम जैनग्रंथोंके लिखे थे नवीनसत्यार्थप्रकाशकी भूमिकामें बदलने पड़े, कहिये ! जिनके भ्रमकी निवृत्ति जिंदगीतक नहींहुइथी उन-केवचनोंकी कहांतक प्रमाणता किइजाय !

५६—सत्यार्थ पृष्ठ ४५६ पंक्ति १५ में दयानंदजी लिखते हैं जंबूद्वीप—लवणसमुद्र—धातुकीखंड—कालोदधि—और—पुष्करार्द्धद्वीपवगेरा—जो—जैनलोग लाखहां योजनके मानते हैं इस पनरांहहजारपरिधिवाले भूगोलमें क्योंकर समासकते हैं ? इसलिये यहवात केवलमिथ्याहै, (जवाब.) जैनलोग कब उनद्वीपसमुद्रोंको इसभूगोलमें मानते हैं ?—वृथा शंखनाद क्यों किया ?—क्यों नयीरोशनीवालोंकी झूठीदलीलपर कायम हुवे ?—किसवेदमें इसभूगोलको पनरांहहजारकी परिधिवाला कहाहै ?—जब अमरिकाकी तलाश नहीं हुइथी अंग्रेजलोग कितनी जगहको सारीदुनिया बतलाते थे ?—जिनके नित्यनये मिद्धांत बदलते रहे उनकेकहनेपर कौनबुद्धिमान् एतकात लासकताहै ? अंग्रेजलोगोंका यहभी कहनाहैकि—अवृत्तक सं-

पूर्ण दुनियाकी तलाश नहीं होचूकी है, नित्यनये टापु तलाशहोते जाते है, और यहभी कहाकरते हैकि-उत्तरध्रुवके (७२) अंशसे (७५) अंशतक मनुष्यकी गति नहींहोमकती, इसलिये (१५) पन-रांहजार परिधिका भूगोल मानना प्रमाणीकनही हुवा. यह द-यानंदजीकी कमजोरी हैकि-अपने नयीरोशनीवाले चेलोंके पिछे चलपडे, अनार्यलोग आर्योंकेपीछे जागृत हुवे है, आर्यभूमि अपने गर्भमें सर्वज्ञपुत्रहोनेका दावा रखती है, दयानंदजीने बडी भूल किइ-आर्य होकर अनार्योंके रास्ते चले,—

५७-जैनलोग-जो-समय-आवली-मुहूर्त्त-दिवस पक्ष-मास-वर्ष-पल्योपम-और-सागरोपमवगेरा कालकी संख्या मानते है इ-सपर दयानंदजी सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४१७ पर लिखते है जैनोके पल्योपम-सागरोपमका मापा ठोकनही. सबबकि-कुवेमें केशोंके वारिकटुकडोंको भरना और उनको अनुक्रमसे निकालना यह बात नहीं बनसकती (जवाब,) जैनलोग कब कहते हैकि-केशोंके टुकडोंसे अमूकशखशने कभी-कुवा-भरा और एक एकटुकडा क्र-मसे निकाला?—जैनलोगका कहनातो यहहैकि-अगरकोइ ऐसा कामकरे और उसमें जितना वख्तलगे उतनेवख्तका नाम पल्यो-पमकाल-बोलाजाय, दयानंदजी इसबातपर क्यों नाराज हुवे?—क्या! नास्तिकोंकी तरह अनुमानप्रमाणको इनकार करदेना चा हते थे? दयानंदजीके निराकार इश्वरने जो इससृष्टिसे पहिले सृ-ष्टि रचीथी और उससे पहिलेभी इसतरह अनंतकालपहिलेभी रची होगी ऐसा जो-मानाजाताहै उस अनंतकालको कोइ आर्य-समाजी गणितकरके बतलासकताहै?—अगर कहाजायकि-हां!अ-

नुमानप्रमाणसें बतलासकेगा-(जवाब)-फिर पल्योपम-सागरोप-मके प्रमाणकोंभी जैनलोग-क्यों न बतला सकेगे?-जब संसारको ही अनादि सवुतकरदेते है-तो-फिर पल्योपमसागरोपमके मापेकी सवुतीबतलाना कौन मुश्किलबातथी?—

५८-सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४९ पंक्ति २८ में-दयानंदजी लिखते है जैनोंके तीर्थकारोंकी उमर इतनी लंबी है जो आपलोग सुनकर हंस उठोगे, सबसे बडेतीर्थकर रिषभदेव हुवे उनकी उमर-चौरा-शीलाखपूर्वकी-कही, दूसरे अजितनाथतीर्थकरकी बहत्तरलाखपूर्वकी-तीसरेतीर्थकरकी साठलाखपूर्वकी-इसतरह बडीबडी उमर जो-जैनलोग मानते है विल्कुल असंभववात है, इन्ही जैनियोंके गपोडे लेकर पुराणियोंने जो दशदशहजारवर्षकी उमर लिखदिइ है यहभी संभव नहीहोसकती तो जैनियोंकीवात कैमे संभव होसकेगी? (जवाब)-इतनी बडी उमर जो पहिलेजमानेमें होतोथो इसबातकों शिवाय दयानंदजीजैसेके और कोई इनकार नहीकरसकता. जो जो मज्ञाशाली शरुश है, अनुमान प्रमाणकों कभी निषेधनही करसकते. और यहभी नही कहसकतेकि-पेस्तर आदमी बडी उमरवाले नही होतेथे? बडेबडे मकान कोट किले और पशुपक्षी जैसे पहिलेकालमेंथे आजकलकी अपेक्षा हजारदर्जे बढकर थे. पहिले दि-नोमें-जैसा-रुपरंग पुन्यवानी और तरखजाना था अब कहां है? जैमी ताकत अगलेलोगोंकी थी अब कहां पाइजाती है-दशहजार वर्षपहिले जितनी लंबी उमरवाले मनुष्य थे, वैसे अब कहां है?-सोचोकि-लाखवर्षपहिले-उससें ज्यादा उमरवाले होंगे-या-नही? करोड-और-कोटानकोटवर्षपहिले उससेंभी बढकर उमरवाले क्यों

नहोगे? वस! इसप्रमाणसें साबोतहै अगले जमानेमें जरुरबडीबडी उमरवाले मनुष्य होतं थे, फिर जैनोंके तोर्थकर चौरासीलाखपूर्वकी उमरकेहुवे किम प्रमाणसें गेरमुम्किन होसकते है? दयानंद-जीने शिवाय कमजोरोके और कोइ प्रमाण नही बतलाया, द्वेषके मारे यहीकहना बनाकि-जैनियोंके सब गपोडें है, लेकिन! यह नही सौचाकि-सत्यार्थप्रकाशमें-मैंही-गपोडें मारआयाहूं. मुक्तिमें जाकर पीछे लोट आना कौन बुद्धिमान् कहेगा गप्पनही? स्वर्ग नरकका इसभूगोलसें अलगस्थान न मानकर कहदेनाकि-जो यहां सुखी और दुखी है वही स्वर्गनरक-यहभी गप्पहै-या-और कुच्छ? संस्कार*विधिके पृष्ठ (१२९) पर लिखा पृथ्वी स्थिरहै और नवींन सत्यार्थप्रकाशमें लिखा घूमती है. यह गप्प हुवा-या-और कुच्छ? निराकारईश्वरने अग्निमूर्य और पवनरूप रिषियोंको प्रेरकर वेद बयानकिये यहगप्पहै-या-और कुच्छ? निराकारने किस मुखमें प्रेरणा किइ? कहिये! दयानंदजी! यह आपके गपोडें है या जैनोंके? अगर आप सत्यवक्ता थे तो अपनेजीवनचरितमें साफसाफ क्यौं न लिखगयेकि-हमारे मातापिताका यह नाम था, आपका छलकपट रफतेरफते सबलोग जानगये है, दयानंद-जीकों यह अभिमान थाकि-वेदोंमें तो (१००) वर्षहीका आयुष्य लिखा और जैनोंके यहां इतनी लंबी उमर क्यौं हुइ? (जवाब.) जब वेदही तीनहजारवर्षकी रचनाके सबुतहोते है तो उनमें उससें पहिलेकी बातें कहांसे निकमेगो? अगर वेदही प्रमाणोकथे तो उनके प्रेमोहोकरभी मनुजीने सत्ययुगमें (४००) वर्षकी उमरहोना

क्यों बयान किया ? सबूतहोताहैकि-पहिलेजमानेमें जंहरबडीबडी उमरवाले थे. एक दयानंदजीके नमानेसें क्याहोताहै ? जरा-महाभारत और रामायणमेंतो देखलो ! लाखलाखवर्षकी उमरके मनुष्यहुवे लिखेहै या नही ? क्या ! उक्तग्रंथोंके कर्त्ता मिथ्यावादी थे ?

५९-सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ (४४९) पर दयानंदजी लिखते है जैनोंके रिषभदेवतीर्थंकरका शरीर (५००) धनुष्य लंबा-किसीका (४५०)-और कोइकोइका(४००)धनुष्य लंबा था, इतनालंबा शरीर होना कभी संभव नहीहोसकता. इसलिये मिथ्यावातहै. (जवाब.) उपरकी कलमें अभीतो सबूतकरचूके हैकि-पहिले जमानेमें मनुष्योंकी उमर बडीबडी होतीथी. सोचनाचाहियेकि-जब उमरबडी होगी तो शरीरभी बडा क्यों नहोगा ? दूसरा यहभी मालूमकरलेना चाहियेकि-जैनशास्त्रमें मापा कितनीतरहका बयानकियाहै ? जैनमें मापा तीनतरहका-१, उत्सेधअंगुल-२, आत्मअंगुल-३, और प्रमाणअंगुलमापा-जिसमें प्रमाणअंगुल सबसें बडा-आत्मअंगुल उससें छोटा-और उत्सेधअंगुल-उससेंभी छोटाहै, इनके भेदानुभेद देखनाहोतो अनुयोगद्वारसूत्र-और-अंगुलसीत्तरीप्रकरण देखलो, यहां हमको थोडेमें बहुतकहनाहै, इसलिये जितना उपयोगी है उतनाही कहेगें. पहिले आत्मअंगुलका संक्षिप्त वर्नन सुनलो, जिसजिसजमानेमें जोजो मनुष्य अपनी अंगुलसें (१०८) अंगुल उंचाहो उनकी चौइस अंगुलका एकहाथ गिनना यह आत्मअंगुलमापा हुवा. कालभेदसें यह मापा छोटाबडाभी होसकताहै, रिषभदेवतीर्थंकरके जमानेमें जो गांव जितनीदूर था-वही अगर आजकलकी अपेक्षा गिनेतो गिनतामें ज्यादादूर कहनापडेगा,

अब उत्सेधअंगुलका बर्नन सुनिये ! महावीर तीर्थंकरकी आधीअंगुलकों एकपूरी उत्सेधअंगुलकहना यह अनुयोगद्वारसूत्रकी टीकामें लिखाहै. चक्रवर्त्तीका कांकणीरत्नभी एकउत्सेधअंगुलप्रमाण लंबा चौडा होता है, रिषभदेवजी उत्सेधअंगुलके मापसें (५००) धनुष्यके उंचे थे, सो महावीरतीर्थंकरके हाथके मापसें (२५०) धनुष्य हुवे, धनुष्य चारहाथका—उसहिसाबसें एकहजारहाथकी देह रिषभदेवकी थी, कहिये ! जिस रिषभदेवकों आज एककोटानकोट सागरोपमकाल अंदाजहुवा जैनलोग मानतेहै उनकेशरीरकी इतनी उंचाइहोना कौनआश्चर्यकी बातहै ? जो बात युक्तिप्रमाणसें सिद्धहो उसकों कौन इनकार करसकेगा ?—जिसकी आंखोंमें पीलेपनका रोग होजाताहै उसकों सबपदार्थ पीलेरंगकेही दिखलाइ दे-तो-बतलाओ ! किसका दोषहै ? दयानंदजीकों ऐसा असाध्य रोग होगया था जो असत्यपदार्थभी सत्य प्रतीतहोतेथे. दयानंदजी ४१९ पंक्ति ६ में लिखते है जैनलोग दशहजारकोशका एक योजन मानते है. (जवाब.) यहबात किसी जैनशास्त्रमें नही लिखी, दयानंदजी गुजर गये, अब कोइ उनका शिष्य—अपने सत्यवक्तास्वामीजीकी सत्यतापर घमंड रखता हो तो जैनशास्त्रसें सबूत करे, गुरुके सत्य वचनकों साबित करना शिष्योंकी फर्ज है, बस ! जो कोई सबूतकरदेगा हम उसकों (५००) रुपये इनाम दिलवायगें,—

६०—दयानंदजीने सत्यार्थ पृष्ठ ४१८ पंक्ति ३० में लिखाकि अडतालीशकोशकी जूं जैनियोंके शरीरमें पडतीहोगी. और उनोंने देखीभी होगी. औरका भाग्य कहां जो इतनीबडी जूंकों—देखे !

(जवाब.) किसी जैनशास्त्रमें अडतालीशकोशकी जूं नहीं लिखी. बात विलकुल गलत है, अगर सच था तो उसशास्त्रका नाम क्यों नहीं लिखा? लिखे क्या! जिनके दिलमें धोखा हो-वें-प्रमाणसहित कैसे बतलासके? दयानंदजी तो गुजर गये, अगरचे उनकी जगहपर उनके शिष्य समाजीलोग इसबातको जैनशास्त्रसे साबित करदेवे तो हमसे (१०००) हजार रुपये बतौर इनामके पावें, क्या जाने! वैदिकलोगोंके इश्वरावतार जो चारचारमहिनेतक सोते रहते थे-कुंभकर्ण-छमहिनेतक सोताथा, कहते हैं अगस्तिरिषि इतने बड़े थे जिनोंने समुद्र पेटमें भरलियाथा, शिवकी जटामें गंगानदी बहतीथी ऐसेएसे महात्माओंके शरीरमें अडतालीशकोशकी जूं पडतीहो-और-लिखना भूल गये हो तो विचार करलिजिये!

६१-दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४५४ पंक्ति १५ में लिखते हैं जैनलोग तीनकोश लंबा मनुष्य और उनकी तीनपल्यो पमकालकी उमर मानत है. ऐसे लंबे मनुष्य इसभूगोलमें बहुतथोड़े समासकेगें. वंबइ और कलकत्ते जैसे शहरमें तो तीन-या-चार मनुष्यही निवासकरसकेगें. (जवाब.) हम (५९) मी कलममें लिखचूके हैं कि-जैनमें जितना शरीरकी उंचाइकामापाहै उत्सेधअंगुलसें जानना. उत्सेधअंगुल महावीरतीर्थकरकी आधीअंगुलकों समझना यहभी पहिले लिखचूके हैं उसहिसावसें तीनकोशका आधा देढकोश हुवा, सो ऐसे मनुष्य-जैनलोग-धातुकीखंड और पुष्करार्द्धद्वीपवगेरामें मानते हैं, धातुकीखंड यहांसें आठलाखकोश-और-पुष्करार्द्धद्वीप यहांसें छपनलाखकोश दूर मानते हैं, कौनकहताहै इसभूगोलमें इतनेलंबे मनुष्यहै? दयानंदजी बड़े फरेवी थे, जितनालेख किया

धोखा देदेकर किया है. शर्म नहीं आइकि-झूठ बात जाहिर होने पर लोग मुझे क्या कहेंगे ?

फिर आप लिखते हैं इतने लंबे मनुष्यों के लिये घर और थंभे कितने बड़े होते होंगे ? (जवाब.)—जहां इतने लंबे मनुष्य होते होंगे वहां वृक्ष भी लंबे क्यों न होंगे, कीड़ी अगर फिकर करे कि हाथी का घर कितना बड़ा होता होगा ?—तो—उसका सौच करना वृथा है या नहीं ?—दयानंदजी के धर्माचार्य मनुजी ने जहां हिरण्यकश्यप दैत्य का बर्नन किया है वहां फरमाया है कि—वह इतना उंचा था—जिसकी कमर सूर्यकी बराबर पहुंचती थी. और उसका वाकी का शरीर सूर्यसे भी उंचा था. कहिये ! इस बात को सच समझना या—झूठ ?

६२—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४१९ पांक्ति १ में—लिखा कि—जैन लोग चारकोशलंबा—वीलू—और मखी मानते हैं. (जवाब.) उत्सेध अंगुल के मापसे चारकोशका आधा—दोकोश—हुवा—सो इतने लंबे शरीर वाले—चतुरिंद्रिय जीव द्वीपांतरमें—जैन लोग मानते हैं. अन्य द्वीपकी बात इस भारतमें लगाना ठीक नहीं. बड़े बड़े समुद्रोंमें जलचर मगर मच्छ वगैरा जीव जैन लोग एक हजार योजन लंबे होना मानते हैं—सो—उत्सेध अंगुल के प्रमाणसे (५००) योजन हुवा. जब लाखों करोड़ों योजन के लंबे चोड़े समुद्र हैं तो उनमें पांचसे योजन के मच्छ क्यों न होंगे ? छोटे समुद्रोंमें भी इतने बड़े मच्छ देखे जाते हैं जो स्टीम-मरके नीचे आजाय तो एक दफा उल्टा देवे. सौचो ! फिर बड़े समुद्रमें बड़े मच्छ क्यों न होंगे ? इसका इनकार करना प्रमाणसे बाधित है, जैन लोग भारत वर्षके समुद्रमें कब इतने बड़े मच्छ कहते हैं, जिस-

पर दयानंदजीकों सौचना पडा. समुद्रमें डूबेहुबे वेदकों फिरपाने-केलिये जो वैदिकलोग मच्छावतारका होना मानते है दयानंदजी ने उसकी लंबाई चौड़ाई क्यों न लिखी! क्या वादीयोंकी तर्कता-पसैं कुछ खोफ मालूम हुवाथा?—जब देवदानवोंने शेषनागरुपर-सी बांधकर पर्वतद्वारा समुद्रोंकों मथा—और— पर्वत डूबनेलगा-तब अपनीपीठके सहारे जिसकच्छपने उसकों रोकदिया—सौचो! वह कच्छप कितना बडाहोगा?—दयानंदजीने इसवातकों खुलासा क्यों नही लिखी?—क्या! शर्म मालूमहुइ?

६३—दयानंदजी सत्यार्थ पृष्ठ ४४७ पंक्ति ३० में—लिखते है जैनलोग हरितशाक खानेमें जीवोंका मरना मानते है यह अवि-द्याकी बातहै, (जवाब.) वनास्पतिमें जीवोंका होना सर्वसंमतहै सबवकि—उसमेंजल सींचनकरनेसे वृद्धिहोतीहै. लाजवंतीके पेंडकों हाथलगादोतो संकोच और—उठालो तो विकास होताहै—सौचोकि अगर उसमें जीव नहोता तो—ऐसा क्यों होता? असलीही हाल-तमें रही चली आती. इसलिये सच्चैकि—हिरतशाकके खानेसे जीव जरूर मरते है. दयानंदजी ४४८ पृष्ठ पंक्ति ९ में लिखते है उश्न-जल पीना जैनोंका भ्रमजालहै, जीवोंकों मारकर पीना उससे तो ठंडाजलही पीना अच्छाथा. (जवाब.) जलकों तताकरनेसे कौनकहताहै जीव नही मरते? जरूर मरते है, असलमें व्रतधारीयों-कों सजीव खानपानकरना शास्त्रका हुकमनही, कच्चाजल सजीव और तनाजल निर्जीव यह सर्वमान्यवातहै, जलकों तताकरनेसे उ-समें चारप्रहरतक दूसरेजीव पैदा नही होते. इसलिये सजीवसे निर्जीवजल पीना व्रतधारीयोंकेलिये अच्छा समझागया. गृहस्थ

लोगोंकोभी गुनासिवहैकि-जब व्रतकरे निर्जीवजल पीये. अगर स-
वालकियाजायकि-उसको जलके जीवमारेका पाप लगेगा यानही?
(जवाब.) जलतताकरनेका उसने कब त्याग कियाथा?—उपवा-
समें चारया-तीनतरहके आहारका त्याग होताहै, जलतताकर-
नेका त्यागनहीहोता,—और व्रतकी रक्षाकेलिये जलतताकरना भा
वहिंसामें दाखिल नही विदूनभावहिंसा पाप नही, इसलिये सबूत
हुवाकि-व्रतमें गर्मजलपीना अतिउत्तमहै, गर्मजलपीनेसे कामवि-
कार शांत रहताहै. चिकित्साविद्याकेजानकर वैद्यलोगभी उश्चकि-
या हुवाजल पीना ज्यादा पसंद करते है,—इसलिये कच्चेजलसे प-
काजल पीना दुरस्तहै,

६५—सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४४९ पंक्ति १ में—दयानंदजी लिखते
है—है जैनो ! अगर जो तुम्हारा मत सच्चाहोतातो सृष्टिमें—इतनीवर्षा
नदियोंका चलना—और इतनाजल क्यों इश्वरने उत्पन्नकिया ?—
तुमारे मतानुसार सूर्यकेतापसेभी क्रोडानक्रोडजीव मरतेहीहोंगे.
(जवाब.) कौन मूर्ख कहताहैकि—सृष्टिजल नदियां और सूर्य—इ-
श्वरने बनाये—जिनकीबुद्धि नष्ट होगइहो वही इश्वरको कर्त्ता माने,
जैसे इश्वरवादीयोंके मतमें स्वयंसिद्ध इश्वरहै उसी प्रकार जैनमतमें
स्वयंसिद्ध जगत् है. फिर क्या जरूरतहैकि—इसका रचनेवाला कोइ
मानाजाय, और निरागी इश्वर रागके फंदेमें क्यों फंसें ? अगर
कहाजायकि—शुभाशुभकर्मोंका फलदाता इश्वर नही तो और कौन
है ? (जवाब.) शुभाशुभकाफलदाता—खुद—कर्म है, जीव जैसाक-
रेगा कर्म उसके स्वतः उदयआयगे, अगर कहाजायकि—वदीका
फल वह स्वतःपाना नहीचाहता (जवाब.) कौन कहता है वह

चाहता है, जैसे लोहा नहीं चाहता कि—में—चूँवकपायाणकी तर्फ खें-
चाउ? लेकिन! खेंचा जरूर जाता है, इसी प्रकार कर्मरूपचूँवकपायाण
लोहरूपजीवकों स्वतःखेंच लेते हैं, इसलिये कोइजरूरतनही इश्वर
दंडदे, अगर कहा जायकि—फिर इश्वरकों माननाही वेफायदे हुवा
(जवाब.)—बतौर ध्यानका सहारा ध्येयरूप मानना क्या! फा-
यदा नहीं है? अगरचे है—तो—फिर वेफायदे कैसं कहतेहो? हां!
सिर्फ कर्त्तारूप नहीं मानते, क्योंकि—उसके स्वरूपमें दोष आता है,

६६—सत्यार्थ पृष्ठ (४५१.) पंक्ति १० में—दयानंदजी विवेक०
भा०१ का—हवाला देकर लिखते हैंकि—एकसिद्धकी कथा एकवै-
श्यकों (५००) अंशफों नित्यदेतीथी. भला! कथा वस्त्रका होता
है वह अंशफों किसप्रकार देसकता है, (जवाब.) जैनके साधुओ
कों कथा नहीं होती. औरोंकी बात औरपर समजना ठीकनहीं.
विवेकमारमें जो बात लिखी थी—अगर सच्ची थीतो उसका अक्षर
अक्षर लिखते, फिर (४५२) पृष्ठ प्रथम पंक्तिपर दयानंदजीलि-
खते हैं ऐसी ऐसी असंभवकहानी इनकी लिखे तो जैनियोंके थोथे
पोथोंके सदृश हमारा ग्रंथभी बहुत बढजाय. इसलिये अधिकनहीं
लिखते—थोड़ीसीबात छोडकर इमके शास्त्रोंमें सब मिथ्या जाळभ-
रा है. (जवाब.) जरा इममजमूनकों खयालरखकर पढलो—मालूम
होजायगा—वेद क्याचीज है, वैदिकलोग सत्यविद्याका पुस्तकवेद
बतलाते हैं लेकिन! हजारवैदिक एकठेकरो तो उनमेंसे वेदके जा-
ननेवाले एक—या—दो—निकलेगें. चारोंवेदमें क्यालिखा है इसकेजा-
ननेवाले औरभी कम निकलेगें. अगर वैदिकआचार्योंकों पुछाजा-
यकि—वेद—क्या वस्तु—और—उसमें क्या लिखा है? बहुतसे इसबा-

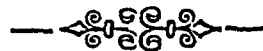
तकों नहीं बतासकेगें, फक्त यही जाहिरकरेगेंकि-हमारे बड़े वेद मानतेचले आये-और हमभी मानते है. वेदमें जो जो असंभववाते है इसीलेखमें हम पहिले लिख आये, पढनेसें मालूमहोजायगाकि वेदके थोथे पोथे है-या-जैनके? दयानंदजीने कुतर्करूपी तलवार हाथमें लेकर वेदरूपमहानगरका कतल आम किया, वेदके अस-ली अर्थसें शर्म आइ-और-वादीयोंकी तर्कतापसें घबडाये-जब-नये अर्थ खडे किये, दयानंदजीका फरमानाथाकि-सबके मतम-तांतर-सबके ग्रंथ-तीर्थयात्रा-मूर्त्तिपूजा-और-व्रतउपवास वगेरा मिथ्याहै, मुसल्मान और इशाइयोंकोभी वैदिक बनालेना अच्छा है, सबजातिवालोंका एकत्रभोजनहोना कोइहर्ज नहीं, आचार वि-चार-चौका-जातिभेद-मिथ्याहै, सबजातिकी लडकीसें-विवाह करो. पति परदेश जाय तब स्त्रीकेलिये एक दूसरा पुरुष घरपर नियतकरजाय-वह उसस्त्रीसें संतान पैदाकरता रहे, जब पति घर आवे तब उस दूसरेपतिकों विदाकरदेवे. संतानकों आप ले लेवे, पति अपनीस्त्रीकों दूसरे पुरुषसें मैथुन करानेकी आज्ञा देवे, आ-र्यसमाजके संन्याशीकों धन देना-दूसरेकों कुच्छजरुरत नहीं. पं-चयज्ञ करो-संध्यासेवन करो-अग्निमें होम करो, देखिये ! दयानं-दजीका ये फरमाना था, कहिये ! अब सत्यार्थप्रकाश थोथाहै-या जैन ? दयानंदजीने लिखाहै जैनाचार्योंने वेदकी संहिता नहीं प-ढीथी इसलिये नींदा करगये, (जवाब.) महावीरतीर्थकरके वडे शिष्य गौतमगणधर-अग्निभूति-वायुभूति-सुधर्मा-वगेरा वेदपाठी अग्निहोतृब्राह्मण थे, शक्यंभव भट्ट-कुमुदचंद्र (सिद्धसेन दिवाकर) और-हरिभद्रसूरि-पहिले वैदिकमतके आचार्य थे, उन्होने वेदों-

कों असत्यजानकर छोड़ दिया, और जैनमजहब अंगीकार किया, वेदोंकी चारोसंहिता मेरे पासभी मौजूद हैं, अपनी हस्त्रलियाकत उसका तरजुमाभी कर सकता हूं. जिसकिसीकों इम्तिहानलेनाही छपवाकर मेरे नजदीक इरसाल फरमावे, जवाब वमुजवटीकाभाष्यके दूगा, अगर कोई गुस्ताखी करेगा उसकेशाय गुस्ताखीसे पेश आनापडेगा. सबवाकि—यह जमानेकी खूबी है,

६७—दयानंदजीकों ग्रंथलिखते वरुत सौचनाचाहियेयाकि—जैनलोगप्रलयकिसकों कहते हैं?—पुद्गल किमकों मानते हैं? चौदहरज्वात्मकलोक क्या वस्तुहै? विनासमजे मनमाना लिखदेना कौनसी वहादूरी किइ? चौदहराज्य नही—किंतु रज्जूहै, और रज्जू एकमापकरनेके—पैमानेका नामहै, किसी राज्यधानीका नाम नही, उसमें आकाशपाताल सबमिलाकर यह गिणनाहै, केवलआकाशपर चौदहरज्जू मानना दयानंदजीका भ्रमहै, दयानंदजीने कौनसा दिग्विजय कियाथा लेकिन! उनकेरागीलोगोंने दयानंददिग्विजयग्रंथ तयारकिया, इधर प्रतिपक्षीयोने दयानंदपराजय—दयानंदपराभूति—मुखचपेटिका—और—दयानंदमतमर्दन तयार किये, दयानंदजीने सत्यार्थप्रकाशमें लिखा तभी उनकों बोलनेकी जरूरत हुइ, समाजीलोग अकसर! यहीकहते है हमारे स्वामीजीने जो कुच्छ लिखा वह सच्चहे, लेकिन! दुश्मन जिसवातकों मंजूर करे वह सच्चहोताहै.

६८—दयानंदजीने लिखाहै जैनमुनि विष्णुकुमारने नमुचिप्रधानको मारडाला, और दंडप्रायच्छित लेकर शुद्धहोगये क्या खूब वातहै? (जवाब.) नमुचिकों जैनमुनिविष्णुकुमारने इसलिये मारा

कि—वह धर्मकों डूबाता था, उसकों उपदेशद्वारा समझाया—लेकिन! फिरभी वह सामनाकरनेकों आमादाहुवा. इसलिये उसकों मारना फर्जहुवा, जोबात फर्जहो—उसमें गुनाहनही. गुनाह विदून प्रायच्छितनही. फिरदंडकी क्याजरुरतरही? कौन कहताहै उनोंने दंड लिया, दयानंदजी नाराज क्यों हुवे? क्या नमुचि कोई उनका रिस्तेदार था? कितनेक कहतेहै दयानंदजीने इशाइबनते रोककर समाजी बनाये यह गुण क्यों नही लेते? (जवाव.) सौचोतो—कुच्छभी नहीरोका और बनाया, वलिकन्! वैदिकमतमें विरोध फैलाकर जगह जगहपर भेद डालदिया, दयानंदजीकी और हमारी कलमकी लडाइ खतमहुइ, सत्यार्थप्रकाशके बारहवे समुल्लासका—जवाब भी पुराहुवा. इसमजमूनमें जहां कइ जीकर इनामका आया उसकेलिये एकवर्षकी मुहलत दिइजाती है. जिनकों खायेसहो बजरीयेकलम छपवाकर जाहिर करे,



[दुनियाके मतमतांतर.]

१—अगर दुनियाके दोहिस्से समझेजायतो एक आर्य और दूसरा अनार्य, जिसमें आर्योंके वनिस्पत धर्मकी तलाशीमें अनार्यलोग हमेशा नादुरस्त चलेआये, कोईधर्मतत्व अनार्योंका एसा नही जो आर्योंसे बढकरहो, अनार्यलोग विदून सौचे उसकामकों जरुरकरडालेंगे जिसमें पाप ज्यादेहोताहो. मगर आर्यलोग उसको कभी न करेंगे जिसमें पाप बढकर लगे. निदान! आर्योंका खया-

ल धर्मपर ज्यादाकहना कोइहर्जकी बातनही. देखिये! उसकी चंदमिसाले यहां पर कुच्छ लिखदिइजाती है. फ्रांसके एक अध्यापकने इम्तिहान कियाकि-खरगोश जानवर ठंडकी बर्दास्त-सबसे ज्यादाकरसकताहै, उसने एकखरगोशकों बर्फके संदूकमें बंदकरके एकगांवसे दूसरेगांव डाकमें भेजा, वहांजब बर्फकों पींगलाकर उसे निकाला जीताजागता निकसआया. आर्यलोग ऐसा इम्तिहान कभी नही कर सकते, अगर वह मरजातातो कितना बेजाहोता? अनार्यलोग बतौर इम्तिहानके जीतेकुत्तोंकीखाल धीरेधीरे इसलिये खेंचलेते हैकि-इसकों नयीखाल आती है-या-नही? आर्यलोग ऐसाकठोरकाम हर्गिज नहीकरसकेगें.

२-बंदरोंकी खोपरीयोंकों बरमोंसे छेदकर उसमेंसे मांस निकालना और कहनाकि-इम्तिहानलेते है, एकजानवरका अंग काटकर दूसरेकों लगाना और देखनाकि-जुड जाताहै-या-नही? जानवरोंकों जहरीले सर्पोंसे कटवाना और देखनाकि-इससे वह मरताहै या नही? नशकाटनेकी तरकीबकेलिये हजारांहकुत्ते निर्दयहोकर काटडालना-आर्यलोग ऐसाकाम प्राणसंकट आनेपरभी मंजूरनही करेगें, कइ जानवरोंकों भूखाप्यासारखकर इम्तिहानकरना अनार्योंहीका कामहै, मच्छलयोंकों तलभुंजकर और उंदरोंका मुरब्बा बनाकर खाना अनार्योंहोकी लीला है आर्योंकी नहीं. युरोपदेशमें डाककेजरीये सांपवींछू बगेरा जीतेजानवर पार्सलमें बंदकरके भेजनेकी रसम दिनपर बढ़तीजाती है, आर्यलोग इसरशमकों इसलिये बुरोसमझते हैकि-स्यात्-वह मरजाय तो कितना पाप दर्पेश हो? इसीलिये कहसकते हैकि-धर्मकीतलाशीमें

अनार्यलोग आर्योंसें हमेशा नीचेचलेआये.

३-अनार्यदेशमें जानेकी चंद सरते निचे लिखी जाती है,

(१) कइशख्श धर्मकी वृद्धिके लिये अनार्यदेशमें जानेका इरादा जाहिरकरते है उनकों चाहिये पहिले अपनेकोंही धर्ममें पावंद करे, और उसकेजरीये आर्यदेशमेंही उसका फायदा हासिल करे, बाद ज्यादे फायदा मालूम दे-तो-जानेको इजाजत संघसें मागे,

(२) कइशख्श हरकिसमके इम्तिहानके इरादेसें जानाजरूसमझते है. उनकों मुनासिबहै वहांजाकर धर्ममें द्रढ रहे, और बाद इम्तिहान हासिलके फौरन आर्यदेशमें चलाआवे, चाहे जितना वहां-वो-धर्ममें द्रढ रहाहोतोभो-अनार्यदेशमें भक्ष्याभक्ष्यकेसंसर्गका उसेजरुर दंडप्रायच्छित लेनाहोगा,

(३) अगर कोइ उक्तदोकलमके जरीये अनार्यदेशमें जानाचाहेतो उसकों चाहियेकि-निचे दर्ज कियाहुवा इकरारनामा संघकों लिखदेवे, इसमुताबिक जो शख्श जायगा उसकों वहांसें आनेपर मुआफिक इकरारनामेके समाज और बिरादरीमें सामोल करलिया जायगा. कोइशख्श इकरारनामेसें बदल जायतो उसगांवका समाज आर्यखंडके कुल्लसमाजकों इतला दे-जिसकेजरीये वह कुल्लसमाजसें खारिज समझाजाय.

[इकरारनामेकी नकल,]

(४)-श्रोजिनायनमः-स्वस्तिश्री अमूक नगरे-श्रीजैन श्वेतांबर संघ-और अमूक ज्ञातियोग्य-अमूक नगरसें-अमूकशख्शका जय-जिनेंद्र मालूमहो, मैं-अनार्यदेशमें जानेकी इजाजत चाहताहूं और

सच्चेदिलसें यह इकरारनामा पेशकरताहूकि-मैं-वहां जाकर मांस मदिरावगेरा अभक्ष्यका भक्षण न करुंगा, अगर करूं तो जींदगी-तक ज्ञातिविरादरी न पाउ, दूसरे अर्हन्नीतिवगेरा जैनशास्त्रमें जो कुच्छ दंडप्रायश्चित फरमायाहै उस मुआफिक लुंगा, शिवाय उसके शत्रुंजय-गिरनार-सम्मेतशिखरजी वगेरा एकमहातीर्थकी यात्रा करुंगा, इसलेखसें नफिरुंगा, अगरफिरुंतो तावेउमर ज्ञाति नपाउ,

(गवाही अमूक अमूककी.) } संवत्-
 गवाही नंबर-१- } सही-हस्ताक्षर-
 गवाही नंबर-२-

(५)-इस इकरारनामेकी नकल छपवाकर आर्यखंडमें जहां जहां बडेबडे शहरहै समाजमें भेजदिइजाय, जब किसीशख्शकों अनार्यदेशमें जानाहोतो इसपर सही करके जानेकी इजाजत संघसें हासिलकरे, शास्त्रोंमें लेखहैकि-अनार्यदेशभी कारणपाकर आर्य-और-आर्यदेश-कारणपाकर अनार्य होजाते है, इसवख्त जो देश अनार्य है वही कारणपाकर अगर आर्य होजायतो फिर वहां जानेकेलिये इजाजत या दंड प्रायश्चित्तलेनेकी जरूरत नहोगी, मुनाजाताहैकि-थोडे असेंमें यूरोपवगेरा देशोंकी रैल खुलनेवाली है, अगर खुलगइतो हजरांहआर्योंका वहां गमनागमन होकर खानपानकी योग्यसामग्री जारी होजायगी. रास्तेमेंभी खानपानकी शुद्धता रहसकेगी. अगर ऐसा हुवा तो-वें-देशभी आर्यतुल्य होजाय तो क्या ताज्जुब? उसवख्त-फिर दंडकी जरूरत नरहेगी.

(६)—फ्रांसके परिसनगरकी नेशनललाइब्रेरी आजकल दुनियाभरमें बड़ीहै जिसमें चौदहलाख छपीहुइ किताबें—तीनलाख नकशे—और देढलाख प्राचीनसिक्के तथा तमगे मौजूदहै वैसे पहिले जमानेमें आर्यखंडमेंभो बहुतसी थी, सबबकि—उससमयके ग्रंथ-अबभी—प्राचीन पुस्तकालयोंमें मिलते है, असलमें! विद्या और कारीगरीका खजाना भारतवर्षही था, क्या हुवा!—कुच्छसमयके फेरफार एकसा जमाना न रहातो ?—याद रहे ! धूपछांव सबजगह बदलती रहतो है, दुनियामें सबसे बंडीनहेर जैसे आजकल—सेपटी-टर्सवर्गसे लेकर चीनकी हदतक बनीहुइहै वैसे पहिलेदिनोंमें अपनेदेशमेंभी थी. यह कभी नहींकहाजासकताकि—अपनेअपने जमानेमें—सुखके साधन न बनेहो,

(७)—यह भूलकरभी मतसमझनाकि—जैसा मुल्कका—बंदोबस्त अबहै वैसापहिले कभी नहीं था, जब चक्रवर्ती वासुदेव—प्रतिवासुदेव—और—पंडलीकराजे—मौजूद थे—कैसे कहाजायकि—वें—अपनेदेशका बंदोबस्त नहीं करसकते थे—अर्बखर्बवर्षोंको जानेदो, कोटानकोटि—और—लाखवर्षभी अलगरखो—फक्त दो—अढाइहजारवर्षकाही हाल सूनलो ! अशोकराजाके हुकमनामेका खुलासाहाल तपसील-जेलयहहै, प्रयाग—जूनागढ—दिल्ली—कइजगहकी गुफाअें—चटान और खंभोंमें जोजो हुकमनामें मौजूदहै उनमें लिखाहैकि—अशोकराजाने रास्तोंपर कुवे बनवाये. सडकोंपर दरखत लगवाये, आदमी और जानवरोंके लिये सफाखाने बनवाये, अशोक—मगधदेशकेराजा—चंद्रगुप्तका पोता—और—इतिहासोंके लेखमें सबूतहैकि—सन (२५७) के पहिले यह पटनाकी गदीपर था, कहिये ! सडकें—दोंनोंतर्फ द-

रखत-कुवे-और-सफ़ाखाने पहिले थे-या-नहीं?—पहिले जितनी धरती बोड़जातीथी इतिहासोंके पढनेसें मालूमहोताहै अब उससें कम बोड़जाती है, अगर ऐसा न माने तो बतलाना चाहिये पहिलेज मानेमें अनाज सस्ता क्यों था?—देश निर्धन था तो दूसरे देशवाले दौडदौडकर इसकों लूटने क्यों आते थे?—जवाहिरात औरमणो-बंद सुवर्णकी मूर्त्ति क्यों बनाइजाती थी?

(८)—यह भूलकरभी मत समझोकि—पहिलेदिनोंमें कारीगरी कम थी, देखिये! जैसे पूर्वकालमें ग्रहनक्षत्रादिके वेधक-यंत्र-बनायेजातेथे अब कहां बनसकते है? डाककी चीठीयां जैसे अब जातीआती है, पहिले इससेंभी थोडे परिश्रमके साथ विद्याधरलोग आकाशगामीविमानोंके जरीये जल्दी पहुंचाते थे, पांचहजारवर्षपहिलेका वृत्तांत शास्त्रोंमें पढो तो बखूबी मालूमहोसकताहैकि—पहिलेदिनोंमें—आकाशगामी विमान विद्याधरलोग चलातेथे और देशाटनकरनेवालोंकों उससे बडाआराम पहुंचता था, पुलिसका बंदोबस्त जैसा अबहै नहीकहाजाताकि—पहिले नही था,—राजेलोग खुद—रात्रीकों रैयतकी रक्षाकरतेथे, अगर सवालकियाजायकि—किस राजेने ऐसी कचहरी खोली—जिसेंराजापरभी नालिश सुनीजाय? (जवाब.) हजरांह राजे ऐसेहुवे जिनोंने खुद अपनी सजाकेलिये न्यायालय खोलेथे—सभासदभी इसलिये मुकरर किये जातेथेकि—हमभी अगर न्यायसें चूके तो किताइ अलायदा करदियेजाय, किनकिनके नाम लिखे!—यह खूब यादरखोकि—वचनकी पाबंदी जितनी पहिलेथी—अब नही रही. बतलाइये! वातवातपर

रसीद क्यों लिइजाती है? क्या जरूरत हस्ताक्षरकी अगर ज्यादा इतमीनानहोता तो ?

९-जंगलमें मंगल पहिलेनही था-इसकी क्या सबूती है? क्या द्राक्षके बाग-और मेंवेके पैड-कदमकदमपर नही सुने? कितनेक कहते है रामचंद्रजी अयोध्यासें रामेश्वरतक गये वहां रामायणमें जंगलही जंगल लिखाहै (जवाब) रामचंद्रजीकों वनवासकी राह लेना था-इसलिये-वें-उसरास्ते चले थे-जहां राजधानी न आसके. दीनदुखीका-उद्धार जैसे पहिले किया जाताथा अबउससेकमहै ऐ-साकहनेमें कोइहर्ज नही. क्या! मजालहैकि-धर्मकी पावंदीमें आ-योंका कोइसामना करसके? अगर कहाजायकि-पहिलेजमानेमें इ-तने पुल-कहांथे? (जवाब,) यह कोइबातनहीकि-हरेकजमानेमें सुख और आरामके साधन न बनेहो रामचंद्रजीकी सेनाने समुद्रमेंभी-पुल बांध दियाथा-यह किसीसें छीपीहुइबात नही. पहिलेजमानेमें जितनी रहेमदिलीथी-अब उतनी कहां है? चौइससेंवर्षके पहिले जब बीतभयपत्तननगरके राजा उदयनने-उज्जेनके चंडप्रद्योतकों हरादिया और-केदभी करलियाथा-फिरभी रहेमदिलीसें पूछाकि अब क्या चाहताहै? उसने कहा मेराराज्य पीछा देदो, उदयनने उसीवरुत उसका राज्य लोटादिया, ऐसेबहादूर बहुतथोडे निक-लेगें जो-जीते हुवे देशकों फिर वापिस करदे,

१०-अगर कहाजायकि-टेलीग्राफ जिस्मे तारपर बीजली दौडाना पहिले कहांथा? (जवाब)-पहिले लिखआये हैकि-अग-लेजमानेमें आकाशगामीविमानोंके जरीये विद्याधरलोग समाचार पहुंचाते थे, जिनकेपास ताकतवर इथियारहो-वें-कमजोरकों क्यों

पकड़े?—जरासा थंभा गिरजाय—या—तार—टूटजाय—वहांही वीजली दौडना बंद होजाय, रेलगाडी पटडीपरसें उतरजाय तो जल—अग्नि और—पवन—कुच्छभी नोकरी नही देसके—विद्याधरोकोयहखतरा कहाथा, अंग्रेजोंकी अमल्दारीमें बहुत बंडाआराम यहहैकि—कोइ किसीके धर्मपर दखलनही देसकता. किसीकी औरत कोइ छिन-नहीसकता, चाहे जैसागेहना कोइ पहनो—मनादी नहीकि—तुमने ऐसा क्यों पहना ?

११—गरीवोंकेलडकेकों पढनेका जैसा अब आरामहै पहिले भी था. इतिहासोंसें मालूमहोसकताहैकि—पहिलेभी गांवगांवमें पाठशाला बनाइजातीथी,—विद्या और कलाकौशल्यताका निधान आर्यावर्त्तही सदासें चला आया. छापखानेकी रसम पहिलेभी थी. देखिये हरेकजगह शास्त्रोंमें पढतेहोकि—स्वनामांकित मोहर पहिलेभी लोग रखते थे, अब छापखानेका काम ज्यादा पसंदहै पहिले हाथका लिखा पसंद था, जमानेकी खूबी सदासें बदलती चलीआइ, जैसे खैलनेके तास इस्वीसन (१३५०) के असें—छापेगये पहिले दूसरी वजहकेछापेजातेथे, इससें चकितहोना कोइजरुरतनही,

१२—[अकलके चाबुक,] ?—बैमतलव ज्यादा मतबोलो, २—ऐसा गुप्तभी मतरहो जहां कोइभी तुम्हारेपास न आसके, ३—सबकेसामने ऐसागुस्ता मत दिखाओ—जिससें लोग तुमकों पागल समझे, ४—यह हमेशा यादरखो हम मोट्टीके पुतलेहै, यह घमंडभी मतलाओकि—यहकाम हमने किया, सबकार्य तुम्हारे पूर्वसंचितपुन्यसें सुघरतेहै, ५—कचहरीमें हाकिमकी धमकीसें मत गभडाआं—सौचकर इजहारदो, ६—मूर्खोंकी हांमें—हां!—मतमिलाओ, ७—तुम

नेकोइ ग्रंथबनाआ और गलती रहगइ-उसकों सुधारनेमें ऐब मत समझों, ८-सबकेशाथ मिलझुलकर चलना अच्छा होताहै लेकिन! बुरोंसे हमेशा दूर रहो, ९-दूसरेकी तारीफ करना अपनीही इज्जत बढानाहै लेकिन! झूठोंकी तारीफ मतकरो. इसमें अच्छेंकी बुराइ होती है.

१३-(१०)-कोइशख्श तुमकों सुन्नाचांदी बनानेकी तरकीब बतलावे-तो सिखलो-लेकिन! पहिलेसे रुपयेपैसे हर्गिज मत दो, काम फतेहहोनेपर देना अकलमंदोंका कामहै, ११-अकलके काममें ताकतकी जरूरत नहीं, १२-जिसकामकों थुरुकिया उसकों पुरा करना चाहिये, आधीहजामत नाइलोगभी नहीं रखते, १३-ऐसा देशहित और आमदनी किसकामकी जिसमे धर्म डूब जाय, १४-चीज नजरदेखकर लेनाचाहिये-दूसरेके भरसे लिइ हुइ न जाने कैसी निकसे? -१५-अगरतुम दौलतमंदहो तोभी फिजूलखर्च मतकरो, हां! धर्मकेकाममें जितना खर्चोंगे अच्छाहोगा, १६-हरबातमें बहुत चिडना अच्छानहीं. मिजाजकों मुकामपर रखेकरो, १७-नोकरोंपर हरवख्त हंटरलिये मतखडे रहो. १७-थोडेहफोंमें ज्यादे इबारत लाना अकलमंदीकी निशानी है, १८-यह हर्गिज मतसमझोकि हमबेभूलहै, १९-ज्यादे लिखावट मतकरो थक जाओगे. २०-साधुलोगोंकी तारीफ जबहै गरीब और दौलतमंदकों एकसा गिने, २१-अपनी भूलकों किसीके सामने मतजाहिरकरो-तुमकोंही निचादेखना पडेगा,

१४-(२२)-इतना सखतरौआब मतडालोकि-लोग-पासआनेसेंभी नफरत करे, हां! बिना रौआब रहनाभी ठीकनहीं, २३-

दौलतकी तंगीपर बड़ी तिजारतका काम मत खोलो,—२४—विवाह-याँ-और किसी काजकरीयावरमें इतना खर्चमतकरो, जिससे कर्जदार बनना पड़े, २५—गुम्ननाम चीठी लिखना डरपोकोंका काम है, २६—ज्योतिष-चिकित्सा-मंत्र-और-धर्मशास्त्रके पढेहुवे-हर-जगह-इज्जत पाते है, २७—अलभ्यवस्तुकी चाहनाकरना मूर्खोंका काम है, खूबसुरतस्त्रीकों देखकर पुरुष-और-खूबसुरतपुरुषकों देखकर-स्त्री-मोहितहोकर-मनकों बिगाडलेते है, लेकिन! नही सौचतेकि-जो चीज अपनी नही उसपर अपना अमल क्योंकरहोसकता है! २८, स्त्रीकों कुल्ल जायदादकी कुंची सुपर्दकरदेना अकलमंदीसें दूर है, २९—स्त्रीकों मरजी मुजब जेवर और पोशाक पहनाओ लेकिन! हेसियतसें बहारहोजाय ऐसाकाम मत करो, ३०—पूर्वपुन्यकेउदयसेंही संसारीकसुख मिलताहै, यहांधर्मकरोगे तो फिरभी पाओगे,

१५—(३१)—जैसे गुंजपर गेंद नही टीकती मूर्खके दिलपर नसीयत नही टीकती, ३२—उल्लूने वारांहवर्ष मेहनतकरके एकग्रंथ बनाया, उसमें लिखाकि-सूर्यमें रौशनी नही होती. उसपर चमगीदडोंने सही करदिइकि-वात-दुरस्त है, बस! इसतरह मूर्खोंकी वात मूर्खही मानसकते है, ३३—साधुलोगोंको चाहिये कोइ बेवकुफ वहेस करनेवाला आवे शिवाय खामोशीके दूसरा अमल नकरे, ३४—जो इसवरुत तुम्हारा प्रीतिपात्र है वही कभी-भीतिपात्र बनजायगा—दिलकी वात सौचकर कहा—दुनिया दगलवाजोकी सराय है, इसमें नेक थोडे वद ज्यादा देखोगे. ३५—साधुओंकी और राजाकी मुठी बंधीहुइ रहना चाहिये, खुल जानेसें योग और भोग

बेकदर होजायें, ३६-यह मतसमझोकि-भारत मध्यखंड दशपांचनगरोंका एकदेशहै, दौलत और बिद्याका खजाना यही खंडहै, गिरतीवखतमेभी दूसरे देशोंकों परवरिश पहुचानेवाला दूसराकौन होगा? देखिये!-बहत्तरकरोडरूपयेका माल-दरसाल-दूसरेदेशोंसे-इसमेंआताहैऔर(९९)नवाणुंकरोडका यहांसे-अन्यदेशोंकेलियेजाताहै,दूसरेदेशवालेअकसर-बजरीयेखूबसुरत औरतोंकेमालबिकवातेहै याते उनका माल आसानीसेबिके,देखो! एक अमरिकाके युनाइटेडस्टेटमेंही(७००००)हजार औरतेंहोटलोंपर सौदा बेचनेके लिये मुकररहै,भारतमें उत्तरसम नहोनेपरभी-मालका ज्यादा बिकना-कौनबुद्धिमान् कमजोर कहसकताहै?-

१६-राज्यरिद्धि-और-इज्जत-सब-धर्मरूपकल्पवृक्षकेफलहै, पहिलेजमानेमेंजोलोगज्यादेसुखीहोतेथे धर्मकों-ज्यादे-करतेथे-आजकल-जिसकेबहुतसुख-उसकोंबिल्कुलअधर्मादेखोगे, जबकिसीकों तकलीफहोकहाजाताहै धर्मकरो,सौचो! धर्म कुच्छ चीजनहीतो-ऐसा क्योंकहागया? सबूतहुवाकि-सबका-शरणदाता धर्म है,अच्छाअधर्म किसका नाम है. सुनिये! धर्म उसकानामहै जो दुर्गति पडते हुवे जीवकों अच्छी गतिमें धारणकरे. परलोकके रास्तेकों साफकरना या आत्मिक गुण प्रकटहोना उसकानामभीधर्महै,जिसने पूर्वभवमें धर्मकों सच्चे दिलसे कियाहो उसीकों यहप्यारालगेगा, दुनियामेंधर्म-अनेक तरहकेहै-लेकिन ! उनसबका-नतीजा-इसतरकीवसें लिखदिया जायगाकि-कोइमजहव इससें वहार नरहेगा,

१७-पहिले षड्दर्शनके नाम सुनिये,!--कइलोग-जैन-बौध-नैयायिक-सांख्य-वैशेषिक-और-जैमनीय-इनकों षड्दर्शनगिनते

है, कइजैन-बौध-सांख्य-शैव-मीमांसक-और-नास्तिककों-सामिल करके गिनते है, कइ-जैन-बौध-सांख्य-जैमनीय-वैशेषिक-और-योगमतकों मिलाकर षड्दर्शन गिनते है, कितनेक लोग-नैयायिक-और-वैशेषिककों शैवमतमें और कइ वैशेषिककों भ्रलगभी कहते है, कितनेक शैवमतका दूसरा नाम योगमतभी-बोलते है, अद्वैतवादी-और-वेदांती-मीमांसकके अंतर्गत समझना चाहिये, जैन और बौधका वयान इसी कितावके (१४१) पृष्ठसे लगाकर (१८१) तक लिखा गया पढना हो-तो पढलो !-जैनमें श्वेतांबर आम्नाय सबसे प्राचीन है. दि-गंबर मत विक्रमसंवत् (१३९) में निकसा, इन्होंने द्वादशांगसूत्र नमान कर नये ग्रंथ जारी किये, इसलिये इनको जैन-नही-जैना भास-समझना चाहिये, हुंढिये पंथी लोग जो मुखपर कपडे की पट्टी बांधर खते है ये भी जैन नही-जैना भास समझे, जैनसूत्रोंमें मूर्त्तिका मनन करना दुरस्त लिखा-इन्होंने-इनकार किया. विक्रमसंवत् (१०९) में-एक लवजी नामके शरुशने मुखपर कपडे की पट्टी बांधकर इसमतकी नींव-डाली, थोडे वर्ष हुवे इनमेंसे एक-भीखमजी नामके शरुशने-भीखमपंथ चलाया, मूर्त्ति नही मानना-जैसे हुंढिये लोगोंका मत है इसी तरह भीखमपंथका भी-जानलो, दोनों मत-शास्त्र विरुद्ध होनेसे त्यागने योग्य है.

१८-संवत् (१९२५) में-षूज्यधरणेंद्रसूरिसे लडकर-एक-रत्न-विजयजी यतिने तीन थुईका मत निकाला, उक्त-रत्नविजयजीय-ति-पहिलेतो कोइरौज-श्रीपूज्य-बने थे. लेकिन ! जब श्रीपूज्यधरणेंद्र सूरिने-राज्यवलसे मुकाम जावरेमें उनका लवाजमा छिनलिया मारे शर्मके साधु बने, संवत् (१९२५) के असें खाचरोदगांवमें-पहिले चातुर्मास किया-और-तीन थुईका-मत निकाला, शास्त्रके व-

चनकों-लॉप-करना इसकेबराबर कोइपापनही, लोगोंको भ्रममें डालनेकेलिये कभीकभीयहभी कहदेतेहैकि-तीनथुइभी सत्यहै, चारभी सत्यहै, लेकिन! यहकहना उनका इसमतलबपरहैकि-हरेक शख्स हमारे मजहबमें दाखिलहो, दुनियाका यह कुदरती नियम हैकि-नयीचीज-चाहेखोटीभी हो-लोग-उसपर आमादा होजाते है, सज्जनोंकी यह कहलावत यादरखो-[सभी घास जल जाय-गी-दूब रहेगी खूब]-अखीरमें झूठेझूठेहीहै. नयेमतकी नयीबात-तीनदिन रहेगी. संवत् (१९२८)में-जब-श्रीमत् झवेरसागरजीके शाय-राजेंद्रविजयजीकीचर्चाहोनेका-इकरारनामा लिखागया-लेकिन! सभामें नही आये-उसदिनसे उनके मतकी जड मालवेमें जमनेनहीपाइ-उज्जेन-इंदोर-और-रतलाम-जोकि-मालवेमें बडेश-हर समझेजातेहै-कोइश्रावकनेइनकोंनहीमंजूरकिये-रतलाममें जैन श्वेतांवर श्रावकोंके(७००) घर-जिसमें. कुल-४०-५०घर-उनके मतमेंदाखिलहुवे, जावरा-खाचरोद-राजगढ-कुकसी-झाबुआ-मंदसोरबगेराजोछोटेगांवहै उनमें जाकर इन्होंने अपनी तीनथुइकी प्ररूपणा चलाइ, नीमच-नीभाडा-आवर-और कुच्छहिस्सा-गुजरातकी सरहदपर-थराद-वीरमगाव-वगेरामें लोग-उनकेमतमें दाखिलहुवेहै, तीनथुइवालेश्रावक इसबातका ज्यादा अभिमान लाते हैकि-हमारे-गुरुजीने-बडीबहादूरीकिइ, लेकिन! असलपुछोतो-कुच्छभी नहीकिया. (३०)तीसवर्षकी मेहनतसे कुच्छ नतीजा

* वह इकरारनामा-जिसमें-रतनविजयजीकेहाथकी सही है रतलाममें शेठ-हरखाजी रिखवाजीके-घररखा हुवाहै-उसकी-नकल-जो-(त्रिस्तुतिमतखंडन) किताब-हमने बनाना-शुरु किइहै उसमें छपेगी.

नहीपाया. सर्वविरतिचारित्रकिसीके पासनहीलिया. आपही आप बिनागुरुके साथु वने-और-शास्त्रकेवचनकों लोपकर तीनथुइका पंथ निकाला. तीनथुइवाले श्रावक चाहेसो समझे-लेकिन!-और देशके श्रावक इनकों निन्हवोकीपंक्तिमेंगिनतेहै, देखिये! जब किसीतरहकी संम्मति-लेनाचाहतेहै तो-कोइदेशके श्रावक-इनकीसं-म्मति नही पुछते, सूरिपदवी किसीने नही दिइ-और-सूरि-वने, वंदितासूत्रकी गाथामें-समदिठीदेवा-पदकों तोडकर-समत्तससि-द्धं-जारीकिया. वगेरा फिजुलवाते पैदाकर अपने आत्माकों पा-पकर्मसें मलीन किया और नाहक फजीतहुवे.

१९-मेरा और राजेंद्रविजयजीका-शहरभमदावादमें-दोधं-टेतक-हठिभाइकीवाडीमें वार्त्तालाप हुवा, बहुतसा प्रसंग तीनथु-इके वारेमेंही चलाथा-अखीरमें उनोंने यही कहाकि-जिसवातकों मैं-जारीकरचूका-उसीकों अपनेमुखसें झूठ कैसे कहसकूं?-कित-नेक तीनथुइवालेश्रावक-कहते है-मुनिश्रीआत्मारामजीनेभी जैनत-त्वादर्शमें-पृष्ठ (४१७) पर-तीनथुइ-लिखी है, (जवाब.)-यहवात विल्कुल गलतहै. थोडीसमझवालोंकों धोरखादेकर वात बनाना-और सामने नही आना-कौनचतराइका कामहै? असलमें जैनत-त्वादर्शका लिखाणही मंदिरके संबंधमें है, जब जिनमंदिरके दर्श-नोंकों जाना तब अवकाश थोडाहो-तो-एकएकमंदिरमें एकएक-स्तुति-पढना-अवकाश ज्यादेहोतो-दो-या-तीनभी पढना, देखि-ये!-मतलब क्या था-और-तीनथुइवालोंने किसरास्ते उताराहै?-कहां प्रतिक्रमणकी-वात-और कहां जिनमंदिरकी?-जिसकों संशय हो-एक अलग पुजेपर छपवाकर भेजे-छापाद्वाराही उ-

सका जवाब दिया जायगा,

२०—मरिचिके चेलै कपिलने सांख्यमतकी नींव डाली. जैन-मतके पीछे सांख्यमत निकला, कइलोग सांख्यकारिकाको बहुत पुरानी कहते है, लेकिन! उसकी रचना पुरानी विदित नहीहोती, उसके रचयिता इश्वरकृष्णाचार्यने संवत्नही बतलाया—लेकिन रचना नयी है, इसमतमें कपिल-और-आसुरिकेबाद एक संखनामके आचार्यहुवे उसकेनामसे मतका नाम सांख्य कहलाया, पहिले इसकानाम कपिलमत था. सांख्योंका फरमानाहैकि—हमारे मजहबके पचीसतत्व जो कोइ जानेगा, उसकी मुक्ति होगी. चित्तको—सांख्य मतमेंज्ञानसेरहित मानागयाहै. बुद्धि-जड, शब्दादित नुमात्रसे आकाशवगेराकी पैदाश, और पुरुषको बंधमोक्षनही, सिर्फ प्रकृतिही बंधन और छुटकारा पाती है,

२१—सांख्यमतके साधु गैरवेवस्त्र पहेनते है, हाथमें त्रिदंड और बिछानेको मृगछाला, भक्तलोग जब उनको नमस्कार करे [नमोनारायणाय.] कहे—उसके जवाबमें—वै—[नारायणाय नमः] कहतेहै. सांख्यमतके दोभेद—एक ईश्वरवादी—दूसरे अनीश्वरवादी, कपिल-आसुरि-भार्गव-उलूक-पंचशिख-वरकृष्ण-और-सांख्य-ये-सांख्यमतके आचार्यलोगहै, माठर-तत्वकौमुदी-गौडपाद-आत्रय तंत्र-और-सांख्यसप्तति-ये-इसमतके शास्त्रहै, प्रत्यक्ष-अनुमान-और-शाब्द-ये-तीन प्रमाण मान्यरखेगये. सांख्योंने वेदकी हिंसाको मंजूरनहीरखी. काशीतर्फ-इनकेसाधु-ज्यादे देखोगे, मस्तकके केश क्षौर करवातेहै, और जहांतकवने ब्राह्मणके घरकाही भोजन जीमते है,

२२-मीमांसकमतका दूसरानाम-जैमनीय-समझे, इनमें दोभेद एक-कर्ममीमांसक-दूसरा-ब्रह्ममीमांसक-वेदांतीलोग ब्रह्ममीमांसक-और-भट्टप्रभाकरकों कर्ममीमांसक-समझना चाहिये, इनके साधु-गैरवेवस्त्र-त्रिदंड-मृगचर्म-और-कमंडलु-रखतेहै, कितनेक भी मांसक वेदहीकों परमतत्व कहकर ईश्वरकों नहीमानते. वेदही उनके गुरुहै, जब एक दूसरेके सामने मिलेगे [संन्यस्त-संन्यस्त] ऐसा शब्द बोलेगें,

(अनुष्टुप् वृत्तम्.)

एकमेवाद्वितीयस्यात्-ब्रह्मतत्त्वं महाफलं,
प्रपंच स्तंभकुंभादि-स्तेषामते निरर्थकं, ?

इसकामतलव इतनाही है कि-एक-अद्वितीय ब्रह्मतत्त्वही फायदमंद और स्तंभकुंभादि सब-मिथ्याप्रपंचहै, १-कुटीचर-२बहूदक-३, हंस-और-४, परमहंस-ये-इसमतके साधुलोग है, प्रपंच-मिथ्या-और-कठवल्लिका वगेरा-इनके शास्त्रहै,

२३-नैयाचिकमतका दूसरानाम अक्षपादहै, प्रमाण-प्रमेय-संसय-प्रयोजन-दृष्टांत-सिद्धांत-अवयव-तर्क-निर्णय-वाद-जल्प-चितंटा-हेत्वाभास-छल-जाति-और-निग्रहस्थान-ये-सोलहपदार्थ इसमतमें मान्यरखेगये है, लकुटीश-कौशिक-गार्ग्य-मैत्र्य-कौरुष-इशान-अपरगार्ग्य-पलांडक-मनुष्यक-अपरकुशिक-अत्रि-पिंगला-स-पुष्यक-वृहदाचार्य-अगस्ति-संतान-राशिकर-विशगुरु-और-रथापर-ये-(१८) अठाराह इनकेबडेआचार्य है, जयंताचार्यरचि-

त-न्यायतर्क-तथा-न्यायसार-जिसपर न्यायभूषणटीका है इसम-
तके मान्यवर शास्त्र समझो-इनकेसाधुलोग-दंड-कंबल-काखमें तुं-
बी-और-शिरपर जटा रखतेहै, हमेशा दातूनकरके कुरलेकरना-
कंदमूलफल खाना-और-पंचाग्नितापना-इनका मुख्यधर्म, बहुतसे
स्त्री-नही रखते, कोइकोइ रखतेभी है, लेकिन! रखनेवालोंका द-
र्जा कम, इसमतके गृहस्थ जब उनके साधुओंको मिले जब [ॐ
नमःशिवाय.] कहे-और-जवाबमें-वें-[शिवाय नमः] कहते है,

२४-वैशेषिकमतका दूसरानाम पाशुपत्य-कहा, नैयायिकम-
तके-और-इनके साधुओंमें बहुतसीबातें एकसी देखोगे, जो (१८)
बड़े आचार्य उपर लिखआये-उनको-येभी मानतेहै, द्रव्य-गुण-
कर्म-सामान्य-विशेष-और-समवाय-ये-छहपदार्थ-इसमतमें मनन
कियेगयेहै, तर्कसंग्रह-मुक्तावली और दिनकरी वगेरामें जोसप्त
पदार्थ-कहे-यह-नवीननैयायिककी अपेक्षा समझना-नैयायिक.
वैशेषिकोंने अभावको पदार्थ नहीं कहा, श्रीधराचार्यरचित-न्या-
यकंदली वगेरा-वैशेषिकमतके शास्त्र-है, आत्रेयतंत्रभी इसीमतका
शास्त्र था-लेकिन! विच्छेद होगया. दुखका आत्यंतिक वियोग
होना-इसीका नाम मोक्ष हुवा फरमातेहै, शिवने उलूकरूप धारण
करकेकणादमुनिके सामने इसमतका बयान किया इसलिये इसका
तीसरा नाम औलूक्यमतभी कहागया.

२५-रामानुजमतसंवत् (११८५) में पैदाहुवा उन्होंने शंकरा-
चार्यजीके मतको बेजा कहा, और सीतारामको भजना पसंद र-
खां, संवत् (१५३५) में-वल्लभाचार्यजीने राधाकृष्णजीका रासवि-
लास जारी कीया जिससे लोग-तुर्त उनपर रजुहुवे. शैवमार्गी-

योंने-वैश्वर्षोका-और-वैश्वर्षोने-शैवोका-खंडनकिया. शैवोंने-भ-
 स्म-रुद्राक्ष-और-बाणालिंग-चिन्ह बनाये, वैश्वर्षोने-तप्तमुद्रा-तुल-
 सी-गोपीचंदन-और-शालिग्राम-चिन्ह-जारीकिये-परस्पर द्वेषबढा
 और-एकदूसरोके आक्षेपपर ग्रंथबनने शुरुहुवे, इस्वीसन (१३८०)
 के असेमें एककीवरनामके शरुशने पतंजलशास्त्रका सार लेकर क-
 वीरपंथ निकाला, अकबरवादशाहके वख्तमें दादुजीनामके शरुश-
 ने दादुपंथ-चलाया. दिल्लीके पास छुडाणीगांवके रहनेवाले गरी-
 वदासजी जाटने गरीवदासपंथ जारीकिया, गुरुगौविंदासिंगजीने
 निर्मलपंथ चलाया, नानकसाहबके वख्तमें गोरखनाथजीयोगीने
 कनफटेका मत निकाला. पंजाबदेशमें भाइरामसिंह-सूत्रधारने-कु-
 कापंथ चलाया, दखनमें तुकारामभक्तने भक्तिपंथ निकाला, अं-
 दाज (१२५) वर्षहुवे गुजरातमें स्वामिनारायणमत-प्रचलित हुवा,
 संवत् (१९३०)के असेमें दयानंदसरस्वतीने आर्यसमाजमतनिका-
 ला. वेदोंके नयेअर्थ बनाकर असली अर्थकों रद किये.-विश्वपुरा-
 णकीरचनाइस्वीसन(१०४५)के-असेमेंहुइ,दादुपंथीनिश्चलदासजी-
 ने विचारसागर-और-वृत्तिप्रभाकर-ग्रंथ बनाये, जिनकों आजकल
 वेदांतीलोग काममेंलातेहै. मनुस्मृति भृगुनामकेआचार्यने बनाइ,
 इसकों वने (२५००) वर्षके अंदाज हुवे, महाभारतमें लिखाहैकि
 ब्राह्मणोंकी संध्यापाठके प्रभावसें सूर्य उदय होताहै, भागवतमें
 कृशभगवान् फरमाते हैकि-मैं-जितना अग्निमूर्य और चंद्रसें खोफ
 नही लाता उतना ब्राह्मणोंके कोपसें डरता हूं-असलमें यहलेख-
 ग्रंथकर्ताकी अत्युक्ति समझना चाहिये. एककविने-सारे भागव-
 तका सार निचे लिखेहुवे काव्यमें कहदिया—

(देखिये), आदौदेवकीदेवगर्भजननं-गोपीगृहेवर्द्धनं,
 मायापूतनजीवितापहरणं-गोवर्द्धनोद्धारणं,
 कंसछेदनकौरवादिहननं-कुंतीसुतापालनं,
 एतत्भागवतःपुराणकथनं-श्रीकृष्णलीलास्पदं, १
 एककविने सारोरामायणकासार-निचे लिखेहुवे काव्यमें-इ-
 सतरह वयानकिया, (सुनिये !)-

आदौरामतपोवनादिगमनं-हृत्वामृगंकांचनं,
 वैदेहीहरणं जटायुमरणं-सुग्रीवसंभाषणं,
 वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं-लंकापुरीदाहनं,
 पश्चात् रावणकुंभकर्णमरणं-एतद्विरामायणं. २

तवारिखफिरस्तेकिताबमें लिखाहैकि-जगन्नाथजीतीर्थका मं-
 दिर संवत् (१३७३) के अर्सेमें बनायागया, ब्रह्मीनाथका मंदिर
 संवत् (१४०६) के अर्सेमें बना, संस्कृतभाषामें बेरडी वृक्षका
 नाम-ब्रह्मी कहा,—बेरडीयोंके झुंडमें यह तीर्थहोनेसे ब्रह्मीनाथ नाम
 कहलाया,

२६-नास्तिकमतका दूसरानाम चार्वाक है, चर्वति भक्षयंति
 पुण्यपापादिकं-परोक्षवस्तुजातं-तत्त्वैतो-न-मन्यंते-इतिचार्वाकाः-
 शीलतरंगिणी ग्रंथमें लिखाहैकि-एक वृहस्पतिनामका-ब्राह्मण हुवा,
 उसकी एकबहेन बालविधवा थी. कइरौज बादवृहस्पतिकी स्त्री गु-
 जर गइ-और-वह कामविकारसे पीडित हुवा तवसे बहेनकों कहने

लगा दुनियामें भोगविलासकरना सारचीजहै, बहेनने कहा इससे नरक जानापडेगा, और दुनियामें नींदाहोगी, बृहस्पति कहनेलगा, पुन्यपाप-स्वर्ग नरक सब कहनेमात्रहै, कोइ स्वर्गनरक नही देखआया, पांचतत्वका पुतला मरेबाद खाखहोजाताहै, परलोक जाता-आता-कोइ नही, हरसुरतसे शरीरको आराम पहुचाना उमदा बातहै, अखीरमें बहेनका मनभी इसबातसे खुश हुवा, दोनों स्त्रीभर्ता बने, और खुलेखुला कहनेलगेकि-शरीरसे शरीरकामिलापहोनेपर क्या हर्ज है, बस! इसतरहहोते नास्तिकमत फैला, खानापीना भोगविलासकरना-और-आनंद उडाना-किसको अच्छानही लगता?—बहुतसे लोग इसीसेराजी रहते है, फिर ऐसे मतकी जड क्यों न फैले?—लेकिन! यादरखो!—अज्ञानीयोंकी बात ज्ञानी कभी नहींमानसकते, पुन्यपाप-और-स्वर्ग नरकका न होना-शिवाय नास्तिकके और कोइ नही फरमाता, जो-लोग-जैनको नास्तिक कहदेतेहै उनकी भूल समझो, पुन्यपाप-स्वर्गनरक-ओर-मुक्तिवगेराकोमननकरे कभी नास्तिक नहीसमझेजाते, अगरजैन-लोग-ईश्वरको जगत्काबनानेवाला नहींमानते इसअपेक्षा नास्तिक कहा तो उससे होताक्याहै? फिजूलबाते बनाकर कोइ किसीको बुराफरमावे उनकी समझकीही बुराइहै,

२७-पुसलमानोंकी कितावोंमें लिखाहैकि-हजरतआदमसे पहिले मनुष्य नहीथे, और जिंदथे-जो चारलाखवर्षपहिलेसे, उनकेबाद शैतानकी औलादने कुच्छदिन दुनियामें गुजरानकिया, फिर आदम पैदा हुवे, उनकी उमर (९३०) वर्षकी थी, सबसे पहिलेपेगंबर यहोथे, शेष-अद्रेस नूह-हूद-सालह-इब्राहिम-लूत-इ

समाइल-असहक-याकू-बयूसुफ-शअव-मूसा-हारु-अलियास-अ-लीसय-समयूल-दाउद-सुलेमान-यन्स-जिकरिया-यहिया-इशा-और-मुहम्मदसाहब-इनके पंगंबर हुवे, इनमें मुहम्मदसाहबको ज्यादाअफजल मानतेहै, किताब कुरानकी आकाशसे इन्हीकेलिये उतरीथी, मुहम्मदसाहबकी बेटी फातमा-दामादअली-और उनके दोबेटे हस्सन-हुसेन-लडाइमें काम आये, ये अपने नानाके मजहबको फैलाना चाहतेथे, दुश्मनोंने इनको लडाइमें मारडाले, इनके मृतकबरकीनकल ताजिये कहलाये, फारस और अरबमें ताजिये बनानेकी रसम नही, मुहम्मदसाहबका हिजरीसन मुसल्मानोंमें ज्यादाे माना गयाहै, रमजानमहिनेकी तारीख (२७) मीको कुरानशरीफ आकाशसे उतराथा, तारिख (१३) रबीउलअव्वल-सन (३१) हिजरीके रौज मुहम्मदसाहबका अंतकाल हुवा, उस रौज मुसल्मानलोग-रौजा-रखतेहै,

२८-कुरानमें लिखाहैकि-इसदुनियाको खुदाने बनाइ, खुदाही नाश करेगा, जो कुछ बंदेको आराम और तकलीफ होती है खुदाही देताहै, कुरानको मुसल्मान लोग [कलामेइलाही]=(यानी)-इश्वरवाक्य समझते है, [लाइलाह इल्लीला-मुहम्मदरसूलअल्ला]-यह मुसल्मानोंका पाक कल्माहै, मतलब इसका इतनाहीहैकि-तूं-अल्ला-यानी-परमात्माहै तेरे शिवाय दूसरा कोई नही, मुहम्मद तेरा दूतहै, मुसल्मानोंमें गुरुको पीर-या-मुर्शिद-और-चेलेको-मुरीद कहतेहै, मौलवी-हाफज-मुल्ला-और-काजी-इनके मजहबी बुजुर्ग है, अरबमें-मक्का-मुसल्मानोंका बडातीर्थ और आबेजमजमका पानी पीना अच्छा समझते है, अरबदेशमें जब-दो-

मुसल्मान मिलते हैं परस्पर सलामके बदले एकदूशरेका हाथ चूमकर गले लगते हैं, रुमदेशमें जब-दो-मुसल्मान मिलते हैं अपनी अपनी छातीपर हाथरखकर सिर झुकाते हैं, इरानदेशमें जब दो मुसल्मान मिलते हैं एकदूसरेसें फरमाते हैं. आपका साया कभी कम नहो,—मिश्रीमुसल्मान जब आपसमें मिलते हैं तो एकदूसरेसें पूछते हैं आपका पसीना किसकदर निकला करता है, अफगानिस्थान-और-हिंदुस्थानके मुसल्मान जब मिलते हैं तो कहते हैं [अस्सलामअलेकुम.](यानी) सलामतहो-तुमपर,

२९-अजमेरमें जिस ख्वाजेसाहबकी दर्गा है हिजरीसन (५२७)मेंसजस्थानमें पैदाहुवे-और हिजरीसन (६०७)में अजमेरमें आये, यहां सैय्यदहुसेनमुशहरीकी लडकीसें उनकी स्यादी हुई, आप सुन्नी-और-इनके सुसर सियाथे, अखीरसन (६२८) हिजरीमें अजमेरहीमें उनका अंतकाल हुवा, उनकी वहां दर्गाह बनाइ गइ, मुसल्मानलोगोंका सालभरमें यहांपर एकमेला भरता है, हजरतइब्राहिमकों अल्लाहतालाका हुकम हुवाथाकि-तूं-अपने बेटे इसमाइलकों राहखुदामें कुरवान करदे, जब उन्होंने उस हुकमकों मंजूरकरलिया और कुरवान करनेकों तयार हुवे-तब-खुदाके हुकमसें फिरस्तेने उनके लडकेकी जगह एक बकरेकोलाकर रखदिया-और-लडकेको बचालिया, उसरौजसें मुसल्मानोंमें बकरीइदकी रसम जारीहुइ, खुदाका हुकम लडका कतलकरनेका था-लेकिन ! लडकेको कौनकतलकरे गरीबबकरेपर सबकोई मारनेकेलिये आमादा होजातेहैं, हरेक मुसल्मानोंको इब्राहिमजीकी पावंदीपर खयालकरना चाहिये, बिदूनहुकम बकरेकी जान लेना

और खुदाके बंदे कहलाना-सौचलो ! कहांतक सच्चहै ? मुसल्मानलोग जो बातबातमें खुदाकी कसमखालेतेहै अच्छा नहीं करते जिसकों अपना पैदाकरनेवाला समझना-उसकी झूठीकसमक्यों खाना ?-इसमें उनकी बेअदबी होतीहै,

३०-इशाइयोंकी किताबोंमें लिखाहैकि-इश्वरने जब्रायेले दूतकों गालीलदेशके-एकनगरमें जो-नासरत-कहलाताथा-किसी कुंआरीके पास भेजा-जिसकी मंगनी यूसफ नाम-दाउदके घरानेके पुरुषसें हुइथी, उस कुंआरीका नाम-मरियम-था. जब्रायेल दूतने आनकर मरियमसें-कहा-है ! मरियम !-परमेश्वर तेरेसंगहै और-स्त्रीयोंमें-तूं-धन्यहै. मरियम उसकों देखकर कुच्छ घबराइ, लेकिन !-दूतनेकहा ! मरियम ! मतडर, इश्वरका अनुग्रह तुजपर हुवाहै, देख ! तूं ! पुत्र जनेगी, उसका नाम इशा-रखना, मरियमने कहा ! यह किसतरहहोगा ?-में-पुरुषकों नहीं जानती हूं, दूतने कहा-पवित्रआत्मा तुजपर आवेगा-और-सर्वप्रधानकी शक्ति तुजपर छाया करेगी. इसलिये वह पवित्रबालक इश्वरका पुत्र कहावेगा, मरियमने कहा-मैं परमेश्वरकी दासी हूं-मुजकों आपके कहने मुताबिक फलहो, दूत चला गया-मरियमने इश्वरकी तारीफ किइ, और कहा-मेराप्राण-परमेश्वरका गुणानुवाद करताहै. मेरा आत्मा मेरेत्राणकर्त्ता इश्वरसें आनंदित हुवा,

३१-पहिले लिखआये हैकि-मरियमकी स्यादी यूसफसें हुइथी, लेकिन ! उनके इंकठे होनेकेपहिले वह दिखपडीकि-पवित्र आत्मासें गर्भवती हुइहै. उसकों कलंक लगाना ठीकनहीं-चूपकेसें छोडदेना चाहिये-इसइरादेमें थाकि-उसीरौज इश्वरके दूतने आ-

नकर यूसफकोँ ख्वावमें कहा, हे! दाउदके संतान यूसफ! तू! अपनीस्त्री मरियमकोँ अपने घरलानेसेँ मतडर!—उसकोँ जो गर्भर-हाहै पवित्र आत्मासेँ है, वह पुत्र जनेगी. उसकानाम इशा रखना, वह जगत्कात्राणकर्त्ता होगा, यूसफने उसीमुआफिक किया, इशाका जन्महुवा—लोगोंकी समझमें इशा यूसफके पुत्र थे—लेकिन! इशाइयोंके निश्चयमुआफिक इश्वरके पुत्र थे, यूसफके पिताकानाम एली—था, एलीकेपिताका—मत्तात—मत्तातकेपिता—लेवी—और—लेवीकेपिता—मलकी—इसतरह इशासे लेकर आदमतक पीढियां गिने तो (७६) होती है, इशाइमतमें मानाहैकि—आदम प्रथममनुष्य था दुनियाके सबलोग उंसीसेँ पैदाहुवे, आदमकोँ इश्वरने बनाया, वस! आदमसेँ पहिले कोइ नही था.

३२—इशा जब-(३०) वर्षकी उमरके हुवे एकरौज योहननामके भविष्यत्वक्ताके साथ—यर्दननदीके कनारेपर गये, और उसमें डूब लगाइ—अर्थात्—स्नानकिया, और तूर्त्त जलके उपर आगये, उसीवरत्त उनकेलिये स्वर्ग खुलगया, और इश्वरके आत्माकोँ कपोतकी तरह आकाशसेँ उतरते देखा, कहतेहै उसवरत्त आकाशवाणी हुइ—उसमें फरमाया गयाकि—यह—मेरापुत्रहै—में—इसपर निह्वायत खुश हूं—इशामसीह उसवरत्त इश्वरसेँ परिपूर्ण होकर यर्दननदीसेँ लोटे—और फिरतेहुवे जंगलतर्फकोँ गये,

३३—वहां शैतानने आनकर उनकी परीक्षा किइ, पहिले यह कहाकि—अगर तुम इश्वरके पुत्रहोतो पथ्थर रोटियां बनजाय, उन्हांने जवाव दिया—हे! शैतान! मुन!—लिखाहै मनुष्य फक्त रो-टियोंहीसेँ नही लेकिन! हरव्वातसेँ जो इश्वरके मुखसेँ निकसती है

जियेगा, फिर शैतान-मसीहकों एकपवित्रनगरमें लेजाकर एकमंदिरके शिखरपर खडे किये, और कहा-तुम-अगर इश्वरकेपुत्रहो-तो अपनेआप निचोगिर जाओ-देखें! तुम्हारे हाथपांवकों लगता है-या-नहीं!-अगर सच्चे होंगे तो-इश्वरके दूत तुमकों हाथोहाथ उठा लेंगे, जवाबमें मसीहने कहा-शैतान! तूं-इश्वरकी परीक्षा मत-कर!-फिर शैतानने वहांसे मसीहकों एकपहाडपर लेजाकर दुनियाका सवराज्य-और-विभव दिखलाया-और-कहाकि-मुजे सि-रञ्जुकाके सिज्दा करो-तो-ये-सबचीजें तुमकोंदेदूंगा, मसीहने जवाब दियाकि-शैतान! दूर हो! और अपने पैदाकरनेवाले इ-श्वरकों नमस्कारकर, बस!-इसतरह शैतानके इम्तिहानमें मसीह किसीसुरत बाज नहीं आये, कहते है उसवरुत इश्वरके दूतोंनेआ-नकर मसीहकी तारीफ किइ और धन्यवाद दिया,

३४-एक वरुत गालीलदेशके कानानगरमें विवाहका भोज था-वहां-इशाभी गये थे. कहते है वहां जब दाखरस खूटगया था मसीहने-छ-बडेबडे जलकेभरे मटके अपनीचमत्कारी विद्यासे दा-खरस बनादिये, एकरौज गालीलदेशके नासरतनगरमें जब म-सीह गये और-उपदेश सुनाया-लोगोंने उन्होंकों-गुस्साखाकर बहार निकालदिये. एकदफे-कफर्नाहुमनगरमें-एकशरुशके घर-एकआदमीकों-भूत लगा था उसकों मसीहने निकाला, वात इ-सतरहहुइकि-जब-उसभूतलगेहुवे आदमीके पास पहुंचे-खुद वह भूत बोला-है! इशु!-हमकों यहांही रहने दीजिये! आपको हमसे क्या काम? क्या! हमे नाशकरनेकेलिये आये है? मैं-जानताहूं-तुम-इश्वरके पवित्रजन हो, मसीहने कहा-चूप रह!-और इसकेश-

रीरसें बहार निकल आ, भूत-उसीवरत उस आदमीको गिरा-
कर बहारनिकलआया, सबलोग चकित होगये,

३५-एकशहरमें एकशखशको कोठ हुवाथा-जब मसीहका
वहांपरजानाहुवा उसने प्रार्थना किइ-मुजे-आप अच्छा करसकते
है?-मसीहने उसके शरीरपर हाथ फेरा-और-कहा अच्छा होजा!
तुर्त उसकाकोठ जातारहा, इसतरह कइरोगीयोके रोगमिटाये, ए-
कदफे पहाडपर खडेहोकर उपदेश किया. और ख्रीष्टोयधर्मकी
उत्तमता बयान किइ, मसीहका फरमानाथाकि-कोइशखशने कि-
सीसबबसें अपनी औरतको त्यागदिइहो-उससें दूसरा विवाहकरे
वह परस्त्रीगमनकरनेवालाहै, भलमनसाइसें चलना और गमखाना
किसीसुरत बुरानही, तुम किसीचीजकी चिंता क्यों करते हो?
धर्मकी खोज करो-इश्वरकी तर्फसें सबचीजे तुमको दिइजायगी.

२६-एकदफे मसीह नाइननगरको जाते थे-शाथमें कइचेले
और आदमीभी थे, जब-वे-उसनगरके पास पहुंचे जहां-एकविध-
वाके मरेहुवेलडकेको लोग कंधेपर धरके मशानको लेजाते थे-उ-
सकीमाता रोतीहुइ पीछे जारहीथी-कहते है मसीहने उसके पास
जाकर कहा-है! जवान! मैं! कहताहूं-तूं! उठ उसीवरत मराहु-
वा लडका जींदाहोकर उठखडाहुवा-और-उसकी माको सोंपदि-
आगया, यहूदीयोमें और दूसरेदेशोमें यहवात फैलगइ-लोग बडे
खुश हुवे, कइजगह औरतोके भूत निकाले, अंधोको अच्छेकिये,
लंगडोको चलतेवनाये, उनके शिष्योका कहनाहैकि-मसीहने जि-
तने आश्चर्यकाम किये-पूरीतौरसें-लिखे नहीगये. एकदफे गाली-
लदेशोमें होतेहुवे जब मसीह जाते थे अपने शिष्योको फरमायाथा-

कि-मनुष्योंका पुत्र मनुष्योंके हाथ पकड़ाया जायगा-वें-उसकों मारडालेंगे, और फिर वह मराहुवा तीसरेरौज जीउठेगा, शिष्यों ने नही समझाकि-किसके बारेम-और-क्या! फरमाते है? पूरीतीरसें पुछनेकों डरतेभी थे इसलिये ज्यादाे नही पुछा. मसीह फरमातेथेकि-मैं-इश्वरका-भेजाहुवा-और-जगतका प्रकाशक हूं-मेरे पीछे चलेगा अंधकारमें नही गिरेगा,

२७-मसीह जब यिरुशलीमनगरमें गये वहां उपदेश सुनाया जिसतरह दुश्मनोंद्वारा पकड़ाये गये-और-कूशपर प्राण त्यागकिये उसका हाल सुनिये!-मसीहके बारांह चले थे, उनमें एक-यहूदा-इस्करियूतीनामकाभी शिष्य था, वह एकरौज-प्रधान*याजकोंके पासजाकर मिळा, और कहनेलगा अगरमें मसीहकों आपके हाथ पकडवा दूं-तो-आपलोग मुजे क्या देगें? उन्होने उसकों (३०) रुपये देनाठहराये, बस! इतनेहीपर वह राजीहुवा-और मसीहके पकडवानेके उपावमें लगा, एकरौज गेतशिमनीस्थानमें मसीह गये थे-मौका देखकर-यहूदाशिष्य-प्रधानयाजकोंकों-और-फरीसीयों (कपटीमनुष्यों) की-तर्फसें प्यादोंकों लेकर आया, मसीह ज्ञानीथे उनोंने जान लियाकि-मुजकों पकडनेकेलिये आये है, कहा! किसकों हुंढतेहो? उनोंने कहा-इशूनासरीकों-मसीहने कहा वह-मैं-हूं, यहूदीयोंके प्यादोंने उनकों पकडकर बांधे-और-पहिले उनकों प्रधानयाजकोंके बडे शिरदार हन्नसके पासलेगये,

२८-हन्नसने-उनकों महायाजकोंके पास भेजे, वहां पुछा गयाकि-क्या? तुम इश्वरके पुत्रहो?-मसीहने कहा-हां! तव महा-

* यहूदीयोंके पूजारी.

याजकोंने उनकों दोषके योग्य ठहराये. कोइकोइ उनपर थूकने लगे, और कहा भविष्यत्वाणी बोल! ऐसा क कर बहुतसी नीं-दाकिइ, फिर रूमीयोंकी तर्फसें जो-पिलात-आर-हिरोद-गवर्न-रजनरल थे उनकेसामने मसीहका विचारहोना शुरू हुवा, पिला-तने उनकों वचानेकेलिये बहुतेरे-उपाव ाकये-लेकिन! अखीरमें प्राणदंड देनेकी आज्ञा दिइ, अध्यक्षके योद्धाओने मसीहकों अ-ध्यक्षभुवनमें लेजाकर सारी पलटन उनकेपास इकठी किइ, लाल-वागा पहिनाकर कांटोंका मुकुट उनकेसिरपर रखा, और घुटनें टेककर ठट्टा कियाकि-हैं! यहूदीयोंक राजा! प्रणाम!-पिलातने फिरभी कहा-मैं-इनमें दोष-नही पाताहूं तुम जानो! यहूदीयोंने कहा-हमारी व्यवस्थाके मुताबिक यह वधकरने योग्यहै, क्योंकि इसने अपनेकों इश्वरका पुत्र कहा. जो इसे छोडना चाहते है* कैसरके मित्र नही. अखीरमें पिलातने उनकों क्रूशपरचढाये जा-नेकेलिये-सोंपा. वें-उनकों लालवागा उतारकर असलीकपडे प-हिना क्रूशपर चढानेकों लेगये,

२९-उसवख्त वहां लोगोंकी बडीभांड थी, बहुतस्त्रीयें वि-लाप करती थी. मसीहने उनकीतर्फ देखकर कहा, मेरेलिये कोइ मतरोओ! धर्मपुस्तकोंका यह वचनपुरा हुवाकि-वह कुकर्मियोंके संग गिनाजायगा, क्रूशपर चढायेजानेकेबाद प्रधानयाजकोंने अ-ध्यापकोंके संग ठट्टा कियाकि-क्या!-जिसने औरोंकों वचाया अपने आपको नहीवचासकता? जब दोपहर हुवा सारेदेशमें ती-नघंटेतक अंधकार रहा. तीसरेपहर मसीहने बडे शब्दसें पुकारके

* रूमिरान्वयके महाराजा थे.

कहा, हैं! मेरे इश्वर! तूने क्यों मुजेत्यागाहै? मैं-अपनाआत्मा ते-
रेहाथमें सोपताहूं, ऐसाकहकर प्राण त्यागे, उनके सरीरकों यहू-
दीयोंकी रीतिमुआफिक कबरमें रखागया, कहते हैं तोसरेरौज
उनका पुनरुत्थानहुवा (यानी) फिर जीउठे, और (४०) रौज
तक फिर दुनियामें रहे, कइआश्चर्यकाम किये, और अखीरमें चं-
लोंकों यहआज्ञा फरमागयेकि-तुम! दुनियाकों उपदेश करो, जो
कोइ विश्वास लायगा. उसका त्राण होगा, मैं-पृथ्वीकी अंततक
तुमारे संगहूं, ऐसाकहकर स्वर्गमें गये और इश्वरकी दाहनीतिर्फ
बैठे, यह बयान-मत्ती-मार्क-लूक-और-योहनलिखित इशुस्त्रीष्ट-
जीवनवृतांत किताबसें लियागया, जिनकों ज्यादाे हालदेखनाहो
उक्तकिताब देखले, इशाइलोगोंका फरमानाहैकि-जगत-इश्वरने
अपनी कुदरतसें बनाया, बाइबल उनकी धर्मपुस्तकहै, इशाइमत-
का बयान पुरा हुवा,

३०-एकविद्वान् ऐसे शहरमें गया जहां विद्याकी पूरी तेजी
थी. शहरमें घुसते ही उसे एकमच्छीमारकी लडकी मिली,-उससें
पुछा तूं-किसकी लडकी है? उसने जवाब दिया, जलमध्येदीयते
दानं-प्रतिग्राही न जीवति-दातारो नरकंयांति-तस्यकुलेहं वालि-
का, १, आगे बढनेपर भीस्तीकी लडकी मिली, पुछा गया तूं-कौ-
नहै? उसने जवाबदिया-चतुर्मुखी नतो ब्रह्मा-वृषभारूढो न शं-
करः तोयधारा नतो मेघः तस्य कुलेहं वालिका, २, अगाडी चलने
पर दरजीकी लडकी मिली. उसकों पुछा तूं कौनहै?-(जवाबदि-
या)-ग्रीवाशीर्षे न विद्येते-हस्तपाद विवर्जितः सजीवं पुरुषं अत्ति-
तस्य कुलेहं वालिका. ३, अगाडी जानेपर सुथारकी लडकी मि-

ली. पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाब दिया, यंत्रेतंत्रविधिं नित्यं करोति खंडखंडतां-राजाप्रजा न जानाति-तस्य कुलेहं बालिका, ४, अगाडी बढनेपर लुहारकी लडकी मिली उसको पुछा तूं कौनहै? (जवाब दिया.) स्वासोत्स्वासंच गृण्णाति-जीवंतंइवसर्वदा कुटुंबे कलहो यत्र-तस्यकुलेहं बालिका, ५, अगाडी चलनेपर कुंभारकी लडकी मिली. पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाबदिया-पर्वताग्रं रथोयाति-भूमौ तिष्ठति सारथिः-चलते वायुवेगेन-तस्यकुलेहं बालिका, ६, अगाडी जानेपर लेखककी लडकी मिली, पुछागया तूं कौनहै? उसने जवाबदिया-कृष्णमुखी न मार्जारो-द्विजिह्वा न चसर्पिणी-पंचभर्ता न पांचाली-तस्य कुलेहं बालिका, ७,

३१-अगाडी गया तो-कुवेपर एक औरत जल भररही थी. पासजाकर कहा-पानीयं पातुमिच्छामि-त्वत्तःकमललोचने?-दास्यसि चेन-इच्छामि-नौदास्यसि चदेहिमें-८ (अर्थः)-हैं! कमल समान अच्छेनेत्रोंवाली! मैं! पानी पीनाचाहताहूं-अगर देयगी तो नहीं लुंगा-नहीं देयगीतो जरूर लुंगा, दूसरा अर्थ यह निकलता हैकि-अगर तूं! किसीकी दासी है-तो-जल नहीं पिउंगा-अगर अच्छे खानदानकी औरतहै-तो-जरूर पिउंगा, निदान! उससे जल पोइकर अगाडी बढा, रास्तेमें एक लेख*वाहक मिला. उससे पुछागया क्या-चीजलिये जाताहै (उसने जवाबदिया.)-अपदोदूरगामीच-साक्षरो नचपंडितः-अमुखः स्फुटवक्ता च-यो जानाति स पंडितः (९) विद्वान् समझ गया इसके हाथमें लेखपत्रहै, राज्यमहेलतक पहुंचा तो एक व्याकरणकापढा हुवा पंडित मिला, उससे पुछा आप किस स्थितिमेंहै? उसने जवाबदिया-द्वंद्वो द्वि-

गुरपि चाहं-मद्गेहे निस्यमव्ययीभावः-तत्पुरुष ! कर्मधारय !-येना-
हंस्यां बहुबीहिः १०-मेरेघरमें-मैं-और-मेरीऔरत सिर्फ दोही
मनुष्य-और-दो-गौ-है-रूपये पैसेके अभावसे असल अव्ययीभाव
समास मेरेघरवर्त्तरहाहै. इसलिये ऐसा उपाव बतलाइये जिससे-में
बहुव्रीहिसमासवालाबनु-अर्थात् मेरेघर धनधान्यकी वढवारी हो,
इसछंदमें छतरहके समासभी कहदिये और अपना मतलबभी खो-
लदिया, विद्वान्ने जवाबदिया, महाशय ! विद्या और लक्ष्मीकी
अकसर लडाइ रहती है, लेकिन ! याद रहे ! लक्ष्मी-विद्याकी दा-
सी है, रूपये पैसेपर जबतक हर्फ नही उकेरे जाते कामनही देते,-
इसलिये सबुतहुवा विद्या-बडीचीजहै,

३२-मनकी इच्छाविदूनभी जो अधर्मीकों मानदेना पडताहै
उसमें मोहनीकर्मका उदय जानना, झूठीहुंडी-नोंट-झठदस्तावेज-
और झूठाशिका-बनाना महापापहै, इससे स्थूलमृषावाद विरमण-
व्रत टूटजाताहै, जुआखेलनेका खाग आठमेव्रतमें-मांस और म-
दिराका त्याग सातमेव्रतमें-शिकार और चौरीका त्याग पहिले
तोसरेमें-और-वेश्यापरस्त्री निषेध चतुर्थव्रतमें दाखिलहै, तमाखूकी
बीडी खादिमआहारमें होनेसे दुविहारकेप्रत्याख्यानवाला पियेतो
बेमुनासिब नही, लेकिन ! तमाखू एकीलीहोनाचाहिये, दूसरीत-
रहका मसाला जैसे चिलम-या-हुक्केकी-तमाखूमें मिलायाजाताहै
ऐसाहोनाठीकनही, तमाखू-चलम-और-डूका-तीनोंही असलमें
खागदेने योग्यहै.

३३-पंचाशकसूत्रकी टीकामें खुलासाहैकि-जोशखश-जिन-

मंदिरकी नैकीसें नौकरीकरे-सूत्रधार-या-रंगरौशनकरनेवाला-नैकीसें जिनमंदिरका कामकरे और देवकेखजानेसें तनखाह लेकर खावेतो कोइपाप नही, हरामखोरीसें जालसाइसें बदनियत-या-चौरीसें-देवद्रव्यखायगा महापापका बंधकरेगा,कोइशख्श लिखारी है,और नैकीसें धर्मपुस्तक लिखकर ज्ञानद्रव्य लेवे उसकोभीकोइ पाप नही, कोइश्रावक जिनमंदिरकी नैकीसें नौकरीबजाकर देव द्रव्य खावे तो-वह-देवद्रव्य-नही अपनी नौकरीके दामहै इसलिये उसकेखानेमेंकोइहर्जनही, श्रावकलोग मंदिरकी नौकरीकरनेसें परहेज इसलियेकरतेहैकि-स्यात्-कभी बदनियतसें देवद्रव्य खाया जायगा तोअच्छीनही, लेकिन!जोशख्श बदनियत न करे-और अपनेआत्माकोबचाकर नौकरी करेतोउसको व्याजबीतनखाहलेनेमें कोइहर्जनही,हरेकमंदिरमें नौकरोंकी तनखाह व्याजबीतरहसें मुकररकरनीचाहिये जिसमें उनलोगोंकीनियत ठीकरहे और देव द्रव्यकाविगाड नहो-चावलवदामवगेराको-वेचकरभंडारमेंजमाकरानाचाहिये-मीठाइ-और हरेफलवगेरा-नौकरोंको-देदेना,लेकिन! एकहीपरनियतनही जो-नैकनियतहो उसकोदेनाअच्छा-कइगांव नगरोंमें-यतिऔर श्रावकवगेरा-मंदिरकी चीजोंसें अपनेनिजका काम लेतेहै महापापबंध करतेहै,अगर कोइको जरूरतहोतो-मंदिरके खजानेमें उसका व्याजबी किरायादेकर काममें लावे कुच्छहरकत नही,बिनाकिरायादिये देवमंदिरकी कोइचीज उपयोगमें लाना बडेपापबंधकाकारणहै.

लिखेगयेहै. औरभी-सुनिये!?, उपदेशमाला-२, प्रवचनसारोद्धार-३, वसुदेवहिंड-४, धर्मरत्न-५, पंचाशक-६, उपमीतिभवप्रपंच-७, अंगविद्या-(इसमेंनिमित्तज्ञानकाबयानहै)-८, भद्रबाहुसंहिता-(विच्छेद होगइ.)-९, चंद्रोन्मीलन-और-१०, मेघमहोदधि-(इनदोनोंमेंभीनिमित्तज्ञानहै)-११, सम्मतितर्क-१२ स्याद्वादरत्नाकरावतारिका-१३, अनेकांतजयपताका-१४, स्याद्वादमंजरी-१५, षड्दर्शनसमुच्चय-१६, प्रमाणसुंदर-१७, हेतुखंडन-(ये सातग्रंथ तार्किकोंके पढनेलाइकहै)-१८, हेमचंद्राचार्यरचितजैनेंद्रव्याकरण-१९, चंद्रप्रभा-२० बुद्धिसागर-तथा २१-विनयविजयरचितव्याकरण-(ये चार शाब्दिकोंको पठनकरनेयोग्यहै.)-२२, हैमीनाममाला-२३, हैमनिघंटु-२४, हैमलिंगानुशासन-२५, अनेकार्थनाममाला, २६, देशीयनाममाला और-२७, पायलच्छी-(ये छहग्रंथ कोशग्रंथोंके शिरोमणि है.)-अमरकोश-बौद्धाचार्योंकाहै, जैनका-नहीं. २८, द्वाश्रायकाव्य-तथा-२९, मेरुतुंगाचार्यरचित-नेमिदूत वगेरा-कइ काव्यग्रंथहै-कहांतक लिखे, ३०-हेमचंद्राचार्यरचित-अलंकारचूडामणि-तथा-३१, बाग्भट्टालंकार-रसीकग्रंथहै,-३२, योगशास्त्र-३३, योगविंदु-३४, योगविंशति-३५-अध्यात्मविंदु-तथा-३६, योगदृष्टिसमुच्चय-(ये पांचशास्त्र योगकों प्रतिपादनकरनेवाले है.) ३७, ज्योतिष्करंडक-३८, आरंभसिद्धि-३९, त्रैलोक्यप्रकाश-४०, जन्मांभोधि-४१, भुवनप्रदीप-४२, यंत्रराज-४३, प्रतिष्ठाकल्प-और-४४, नारचंद्र (ये-आठग्रंथ-ज्योतिष् और निमित्तज्ञानके प्रकाशकहै.) ४५, नमस्कारकल्प-४६, सूरिमंत्रकल्प-४७, वर्द्धमानविद्या-४८, रिषि-

मंडल-४९, शक्रस्तवकल्प-५०, लोगस्सकल्प-५१, भक्तामरकल्प
 ५२, पद्मावतीकल्प-५३, चक्रेश्वरीकल्प-५४-अपराजितमहाविद्या
 ५५, रोगापहारिणी-५६, विषापहारिणी-५७, बंधमोक्षिणी-५८
 श्रीसंपादिनी-५९, परविद्याउच्छेदिनी-६०-दोषनिर्नाशिनी-और
 ६१, अशिवोपशमिनी महाविद्या-(ये-सतरांह-ग्रंथ-मंत्रविद्याके
 प्रतिपादक है,)—घंटाकर्ण-और-वसुयारा-बौद्धमतकेग्रंथहै जै-
 नके नही,

३५-(६२), औषधिकल्प-६३, युगप्रधानगंडिका-६४, ल-
 लितविस्तरा-६५, तत्त्वार्थ-६६, उच्चाटनसूत्र-६७, समुपस्थापन-
 सूत्र-६८, पूजाप्रकरण-६९, अष्टक-७०, षोडशक-७१, अंगुल-
 सप्तति-७२, कालसप्तति-७३, संबोधसप्तति-७४, हेमचंद्ररचितद्वा-
 त्रिंशका-७५, सिद्धसेनदिवाकररचितद्वात्रिंशका-७६, यशोविजय-
 कृतद्वात्रिंशका-७७, भवभावना-७८, धर्मबिंदु-७९, ज्ञानबिंदु-८०
 उपदेशपद-८१, कर्मग्रंथ,-८२, क्षेत्रसमास-८३ द्वादशारनयचक्र-
 ८४, नयप्रदीप-८५, प्रशमरति-८६, पंचवस्तु-८७, विवेकविलास
 ८८, लोकप्रकाश-८९, हैमन्यास-९० त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित-
 ९१, प्रभाषिकचरित-९२, आचारदिनकर-९३, आचारप्रदीप-
 ९४. वृंदारवृत्ति-९५, श्राद्धकौमुदी-९६, श्राद्धदिनकर-९७, ध-
 र्मपरिक्षा-९८, लोकतत्त्वनिर्णय-९९, सिंधूरप्रकर-१००, कर्पूरप्र-
 कर-१०१, हिंगुलप्रकर-१०२, शांतिचरित-१०३, पार्श्वचरित-
 १०४, श्रीपालचरित-१०५, समरादित्य-१०६, भुवनभानु-१०७
 श्रेणिक-१०८, अभयकुमार-१०९, कुमारपाल-और-११० पांड-
 वचरित,-१११, अर्हनीति, (इसमें दीवानी फोजदारीके कानून

है.) टीका-भाष्य-निर्युक्ति-चूर्ण-वगेराकी गिनतीकरे-या-संपूर्ण जैनग्रंथोका बर्ननलिखे तो बहुतकुच्छअर्सा-और-स्थानचाहिये, इसलिये इतनेहीमें संकोचकरके दिग्दर्शन कियाहै,

३६-यह हरवरुतयाद रखोकि-अशुभकर्मके उदयसे व्यापारमें नुकशान और शुभकर्मकेउदयसे फायदा होताहै, मनपसंदकी चीज न मिलना यही जीवोंको दुखकाकारणहै लेकिन! उसके मिटानेका उपाव-शिवाय-संतोषके और कोईनही. झुरते क्यों हो? देवगुरुधर्मकी सेवाकरो इसीसे अच्छा होगा. अपने आत्माको पापकर्मसे बचाना इसकानाम स्वदया और दूसरेजीवोंके प्राणोंकी रक्षाकरना इसकानाम परदयाहै, मनके इरादे बिदून जो कार्यकरोगे उसमें हिंसाहोगी-बह द्रव्यहिंसाहै भावहिंसा नहीं, भावहिंसा बिदून पाप नहीं, संसारका स्वरूप देखकर जो तुमको ज्ञानीयोके वचनोंपर आस्तिकभाव पैदा होताहै उसीका नाम सम्यक्तकी दिप्ति जानो, जब तीर्थोंकी यात्राको जातेहो-या-शास्त्रसुनने बैठतेहो-उसवरुत जो तुमारे रोमरोम प्रफुलित होजाते है उसीकानाम सम्यक्तकी लहेर समझो. पुन्य-या-पापकर्मका-बंधहोना-मनःपरिणामके तालुक है. एकसरखी क्रिया करतेहुवेभी-सम्यक्ती-और-मिथ्यात्वीमें-इतनाफर्क हैकि-एकज्ञानी-और-दूसरा अज्ञानी,—

३७-कोइ मर्द-या-औरत-अपने प्यारेके मरे पीछे-शोकसंताप न रखकर रौनापीटना-न-करेतो बतलाओ उसने लोकविरुद्ध किया-या-नही? जवावमें कहा जायगा. लोकविरुद्ध नहो वल्किन् ! अच्छा किया, कइ औरतें ऐसीहै जो पतिकेमरे वाद

वर्षरौजपीछेभी शोकरखकर देवदर्शन-तीर्थयात्रा-और-व्याख्यान सुनने नही जाती-बतलाओ ज्ञानीयोके ज्ञानमे वह गुनहगार है-या-नही ?-(जवाबमें) कहाजायगा गुनहगारहै, कइदेशमें औरतें पर्देनसोन रहती है उनमेंसें किसीने देवदर्शनतीर्थयात्रा-और-व्याख्यान सभामें आते पर्दा नहोकिया बतलाओ उसने लोक-विरुद्ध नहीं जवाबमें कहा जायगा--लोकविरुद्ध नही बल्किन् ! अच्छाकिया, वह रसम किसकामको जिससें धर्मकों धक्का पहुचे, कइमर्द और औरत-शोकके कारण-प्रभावना-या-स्वधर्मावात्सल्यमें सामील नही होते, बतलाओ ज्ञानीयोके ज्ञानमें-वे-दोषके भागीहै-या-नही ? (जवाबमें) कहा जायगा दोषके भागीहै,

३८-शोककेवख्त धर्मकरना समझदारोंका कामहै, जिसवख्त तुमाराअत्यंतस्नेही मनुष्य याद आजाय शिवाय ज्ञानचर्चाके औरकुच्छ खयालमें मतलाओं, और दिलकों नसीयतदेतेरहोकि-मोह करना मुनासिब नही, भोजनका स्थाल तयार है लेकिन ! तुमारे भाग्यमें नहोगातो धरा रहेगा. खूब सुरत औरत मौजूदहै लेकिन-तुमारे भोगावलीकर्मका अभाव होगा तो कभी उपभोगमें न आसकेगी. इसीतरह खूबसुरत-मर्द विद्यमान होतेहुवेभी-औरत उससें भोग-या-संयोग-हासिल-न करसकेगी. उमदापलंग विछाहुवाहै लेकिन ! तुमारे भाग्यमें न होगातो हर्गिज उसपरन-सोय सकोगे, धनदौलत-मकान-ओर गहनेकपडे-वहुतथे-लेकिन! तुमारेभाग्यमें नही थे इसलिये हाथसें चलोगे-सौच क्यों करतेहो जानकार होकर अज्ञानी बनना है तो-मरजी तुमारी !

अन्नं नास्त्युदकं नास्ति—नास्ति मुद्गयुगंधरी,
धान्येषु लवणं नास्ति—तन्नास्ति यद्विभूज्यते, !

दुनियामें दुखी वह समझाजाताहै जिसकेघर खानपानकेलिये अन्नजल-और-नमकभी-नही, तुमारेघर सबकुच्छहै फिर किसवा-तसें दुखी समझतेहो ? यूंतो संसारमें सब दुखी है, तनक ज्ञान दृष्टिसें विचार लो. और धीरशांत बनो,

३९—जिसकेशाथ पहिले तुमारा दोस्ताना हो-और-पीछेसें विनाकारण टूट जाय तो समझलो ! तुमने पूर्वभवमें वेगुनाहै उन-केशाथ विरोधकियाथा, जिसका तुम बुराकरो-और-वो-तुमकों चाहेतो जानलो पूर्वभवमें तुमने उसपर रहेम किइथी, जिसें देख-कर तुमको राग उत्पन्नहो-वह-तुमारा पूर्वभवका हितकारी-और जिसकों देखकर द्वेष आवे पूर्वभवका द्वेषी समझो, रागद्वेषकों क-मकरनेका उपाय लेना भच्छा है, सत्तामें तो ग्यारह बारहमें गुण स्थानपर पहुंचोगे रागद्वेषका नाश होगा. कइदेशोंमें ऐसारिवाज देखागया जब कोइ पर्दानसीन औरत जिनमंदिरमें दर्शनको जावे तब अपनेशाथकीदासीयोंकोंभी प्रतिमाजीके सामनेतक लेजातीहै बतलाओ ! यह वें अदबीका कामहै या-नही ? [जवावमें] कहा जायगा बेशक ! वेंअदबीकाकामहै, अगर मंदिरके बहार रखकर जावेतो वेंअदबी नही. दासदासी एकतरहकी चपरास है, देवदर-वारमें मानकों निचा करके जाना चाहिये इसीतरह गुरुके मका-नमेंभी अदबरखकर जाना ठीकहै, अगर सवालकियाजायाके-दा-सदासीकोंभी धर्मप्राप्तिहोजायगी इसलिये-मंदिरमें और-गुरुओंकी

व्याख्यानसभामें शाथ लेजानेसें क्या हर्ज है? (जवाब)-शाथ लेजानेसें देवगुरुकी अवज्ञा होगी, तुम मंदिरमें-या-गुरुओंकेसामने पहुचचुके-और-पीछेसें कुच्छदेरके बाद आवे तो हर्जनही, कइदेशोमें बडे घरानेकी स्त्रीयें-शाथलाइहुइ दासीयोंद्वारा साधुलोगोंसें अर्जकराती है कि-मुजे-प्रत्याख्यान-कराइये. कहिये! उसने गुरुकी बें अदवी किइ-या-नही? (जवाबमें) कहा जायगा बेशक ! बेंअदवी किइ, खुद अपने मुखसें बोलना चाहिये-पास खडेहुवे-सासु-सुसरेकी शर्म-न-करे-और-साफसाफ-बोले तो क्या हर्ज है ?-सासुसुसरेसे गुरुओंका दर्जा-बढकरहै,-देवगुरुके सामने संसारीक सगोंकों ताजीमदेनेसें अविनय किया सबुत होगा, दुनिया दिवानी है इसका लिहाज करके लोकोत्तर पुरुषोंका अविनय करना ठीक नही,

४०-जैन शास्त्रोंमें जो-निन्हव-सात कहे गये है-सो-उपलक्षण मात्र जानना. जैसे दशअच्छेरेके शिवाय कइ ओरभी हुवे लेकिन ! सामान्य रूपसें दशही कहे गये-सतीस्त्रीयें अनेक हुइ लेकिन!मुख्यताकरके सोलहकहीगइ,ऐसेनिन्हवभी कइहुवे-और-होयगें लेकिन ! मुख्यतासें सातही कहे गये इस जमानेमें भारतक्षेत्रके जीवोंकों-क्षायिकसम्यक्त-अवधिज्ञान-और- जातिस्मर्णज्ञान-नही होसकता, सबवकि-त्रिच्छेद हो गये. ग्यारहमें गुणस्थानपर कषाय का उपशम होता है तोभी वहांसें जो गिरना फरमाया-सबव-उसका मिथ्यात्वका उदय जानो. आत्माके उत्तम अध्यवसायका नाम गुणस्थान कहा, अव्यक्त मिथ्यात्वसें व्यक्तमिथ्यात्वमें आना इसीअपेक्षा-प्रथमगुणस्थान कहागया, छठगुणस्थानसे लेकर चौ-

दहमें गुणस्थानतक बर्तनेवाले साधुपदमें गिनेजाते है, जैनशास्त्रोंमें जिसजिस मतका बयान आया-और उनकों-मिथ्या-कहे गये सबव उसकायहजानो-वें-झूठ है उनके तत्व युक्तिप्रमाणसे खंडित हो जाते है, और-उनके मननकियेहुवे देव-रागद्वेष करके ग्रस्तहै.

४१-चलती सवारीमें-सामायिक-प्रतिक्रमण-करना मुनासि-बनही. जमीनपर स्थिर होकर करना चाहिये. वृक्षसें-या-कीलसें बंधा हुवा जहाजभी स्थिर नहीं कहा जाता-मुनासिब है निचे उ-तरकर सामायिक वगेरा करना, चेडाराजा और कौणिककी जब बारांह वर्षतक लडाइ हुइ उस वखतभी हाथीपरसें उतरकर चेडा राजाने प्रतिक्रमण किया लिखा है, धन्यवाद देना चाहिये ऐसे पुरुषोंकी धर्मक्रियाकों-जो-लडाइके वखतभी-धर्मकों नहीं भूलते थे. आजकल कइ लोग कहदेते है हमकों फुरसत नहीं मिलती लेकिन ! यह सब झूठे बहाने हे, हजारकार्य छोडकर जैसे एश आराममें लीन होतेहो-अगर-देवगुरुधर्मपर सच्चाराम होतातो उ-नपरभी लीन रहते.

४२-जीवति-जीविष्यतिचेति-जीवः-चैतन्यलक्षणो जीवः-तद्वीपरीतः अजीवः-१, पुनाति पवित्रीकरोति आत्मानं इतिपुन्यं, [अन्नं पानं च वस्त्रं च=आलयःशयनासनं-शुश्रूषा वंदनं तुष्टिः-पुन्यं नव विधंस्मृतं,]-२, पातयति आत्मानं इतिपापं, ३, आश्र-वंति प्रविशंति आत्मनि कर्माणियेन-स आश्रवः-४, संत्रियते प्रा-णातिपातादि-पापकारणं येन परिणामेन-स-संवरः-५, कर्मणांप रिशाटनं निर्जरा, ६, जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलान् आदत्ते यत् स बंधः मोचनं कर्मपाशवियोजनं आत्मनो-मोक्षः,-ध्यान उसका

नाम जिससे मनके परिणाम स्थिर किये जाय द्रव्यमनपरुपी-और-भावमन-अरुपी-कहा, कितनेक लोग आगकी धुनीके सामने बैठकर ध्यान करते है और कहते है देखो ! ध्यानका प्रताप हमे आगभी नही सताती, असलमें-वै-लोग-एकतरहकी जडोकॉ जलमें घीसके शरीरपर लेंप करके बैठते है, वनस्पतियोंमें कइ ऐसीभी है जो चौरासीधुनी लगाकर सामने बैठो आग बिल्कुल न सतायगी, अगर आकका दूध-या-कदलीका रस-कुमारीवना-स्पतिके-रसमें मिलाकर शरीरपर लेंपकरलो-और-आगकी एक धुनीके सामने बैठजाओ-आशा है आगसें न जलोगे, पींपर-कालीमीरच-और-साँठ-खूब चवाचवाकर खाओ-और-उपरसें तुर्त आगके इंगारे मुखमें लेलो, आशा है नही जलोगे,-

४३-अंकोलके तेलमें ऐसीताकतहै कि-जिसजिसवृक्षके बीजोंको इसमें भीर्गोंकर जमीनमें बोदिये जायतो आशा है पहरभरमें वृक्ष उत्पन्न होसकेगा, बाजीगर लोग देखेहोगें इसीसें काम लिया करते है, हडताल-सिंदूर-और-आसगंध-कदलीके रसमें पीसकर-जो-स्त्री-तिलककरेगी-और-जहां जायगी इज्जत पायगी, भृंगराज-अपामार्ग लज्जालू-और-सहदेवी-जलमें पीसकर-जो-शरुश-तिलक करेगा-और-जहां जायगा इज्जत पायगा.

४४-(पंच समवायका वयान.)-१, काल-२, स्वभाव-३, नियति-४, उद्यम-और-५, कर्म-इनपांचोंमें कौन ताकतवर-और कौन-कमजोर रहेगा, सुनिये !

(कालवादी कहताहै.)

कालः स्रजति भूतानि-कालः संहरति प्रजाः,

कालः सुप्तेषु जागर्ति—कालोहि दुरतिक्रमः, १,
फलंति वक्षाः कालेन—काले वीर्यं अवाप्यते,
काले पुष्पवती नारी—सर्वं कालेन जायते, २,

(स्वभाववादी.)

(वसंततिलका छंदः)

हंसा गतिं पिकयुवा कलकूजितानि,
नृत्यं शिखी परमसौख्यगुणा मृगेंद्राः
सौरभ्य शैत्यललितं मलयद्रिवृक्षाः
कैः शिक्षिताः सुकृतकर्मकृतः कुलानाः १,
निम्नोन्नतं वक्ष्यति को ? जलीना,
विचित्रभावं मृगपक्षिणां च,
माधुर्यमिक्षौ कटुता मरीचे,
स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धं, २

(नियति वादी.)

नहि भवति यन्न भाव्यं-भवति च भाव्यं विना प्रयत्नेन
करतलगतमपि न पश्यति-यस्यतु भवितव्यता नास्ति
तादृशी जायते बुद्धिः—व्यवसायोपि तादृशः
सहायाः तादृशा श्वैव-यादृशी भवितव्यता, २

(उद्यमवादी.)

उद्यमेन-हि-सिध्यन्ति-कार्याणि-न-मनौरथैः,
 नहि सुप्तस्य सिंहस्य-प्रविशन्ति मुखे मृगाः, १,
 आलस्यं हि मनुष्याणां-शरीरस्थो महान् रिपु,
 नास्त्युद्यमसमो बन्धुः-कृत्वायं नावसीदति, २,
 उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः,
 दैवं प्रधानमिति कापुरुषा वदन्ति,
 दैवं विहाय कुरू पौरुषमात्मशक्त्या,
 यत्ने कृते यदि-न-सिध्यति कोत्रदोषः, ३,

(कर्मवादी.)

सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता,
 परो ददातीति कुबुद्धिरेषा,
 अहं करोमीति वृथाभिमानः
 स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः १,
 दैवे विमुखतां याते—
 न कोप्यस्ति सहायवान् ,
 पिता माता तथा भार्या—
 भ्राता वाथ सहोदरः, २,
 वने जनेशत्रुजलाग्नि मध्ये,

महार्णवे पर्वतमस्तके वा,
सुप्तं प्रसक्तं विषमं स्थितं वा
रक्षन्ति पुन्यानि पुराकृतानि, ३,

न ज्ञूतपूर्वोनच केनदृष्टो—हंसः कुरंगो न कदापिवात्ता,
तथापि तृष्णा रघुतंदनस्य-विनाशकावे विपरीतबुद्धिः४,
धनानि ज्ञूमौ पशवश्च गोष्ठे-ज्जार्या गृहघारि जनःश्मशाने,
देह श्वितायां परलोकमार्गे-कर्मानुगो गच्छति जीवएकः५,

यथाधेनुसहस्रेषु-वत्सो विंदति मातरं,

तथा पुराकृतं कर्म-कर्त्तारमनुगच्छति, ६,

सुहृदो ज्ञातयः पुत्रा-भ्रातरः पितरावपि,

नानुस्मरन्ति स्वजनं-यस्य दैवमदक्षिणं, ७,

विपत्तौ किं विषादेन-संपत्तौ हर्षेण किम्, .

ज्वितव्यं ज्वत्येव-कर्मणामीदृशी गतिः, ८

अचिंतितानि दुःखानि-यथैवायांति देहिनां,

सुखान्यपि तथा मत्स्ये-दैवसत्रातिरिच्यते, ९

किं त्वं न वेत्सि जगति-प्रख्यातं लाजकारणे मूलं,

विधिलिखिताक्षरमालं-फलति कपालं न ज्ञूपातः, १०,

अरक्षितं तिष्ठतिदैवरक्षितं-

सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति,

जीवत्यनाश्रो विपिनेप्यरक्षितः--
 कृतप्रयत्नोपि गृहे विनश्यति ११
 प्राप्तव्यमर्थं लज्जते मनुष्यो--
 देवोपि तं लंघयितुं न शक्तः,
 तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे--
 यदस्मदीयं नहि तत्परेषां, १२
 माधाव माधाव विनैव दैवं--
 नो धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः
 चेद्धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः--
 श्वा धावमानोपिलज्जेतलक्ष्मीं १३,
 यः सुंदर स्तघ्निता कुरुषा--
 या सुंदरी सा पतिरूपहीना,
 यत्रोज्ञयं तत्र दरिद्रता च--
 विधे विचित्राणि विचेष्टितानि, १४,
 विधौ विरुद्धे न पयःपयोनिधौ--
 सुधौघसिंधौ न सुधा सुधाकरे,
 न वांठितं सिध्यति कट्यपादपे--
 न हेम हेमप्रज्ञवे गिरावपि १५
 ज्जीमं वनं ज्जवति तस्य पुरं प्रधानं,

सर्वो जनः सुजनतामुपयाति तस्य,
 कृत्स्ना च भू ऋवति सन्निधिरत्नपूर्णा
 यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य, १६
 नमस्यामो देवान् ननु हतधियस्तेपि वशगाः
 विधिर्वैद्यः सोपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः
 फलं कर्मायत्तं यदि किममरैः किंच विधिना,
 नमस्तत्कर्मैर्ज्यो विधिरपि न येर्ज्यः प्रज्ञवति, १७
 जातः सूर्यकुले पिता दशरथः क्लोणीभूजामग्रणीः
 सीता सत्यपरायणा प्रणयिनी यस्यानुजो लक्ष्मणः
 दोर्दंडेन समो नचास्ति भुवने प्रत्यक्षप्रज्ञः स्वयं
 रामो येन विभवंवितोपि विधिना चान्ये जने का कथा, १८
 ज्ञग्राशस्य करंरुपीमिततनो मूर्त्तिर्निर्द्रियस्य क्रुधा,
 कृत्वाखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे जोगिनः
 तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथा,
 लोकाः पश्यत दैवमेव हि नृणां वृद्धौक्षये कारणं, १९
 कांतं वक्ति कपोतिकाकुलतया नाथांतकालोधुना,
 व्याधोऽधो धृतचापसज्जितशरः श्येनः परिभ्रामति,
 इहं सत्याहिना स दृष्ट इषुणा श्येनोपि तेनाहतः
 तूर्णं तौ तु यमालयं प्रति गतौ दैवी विचित्रागतिः २०,

४५—काल-स्वभाव-नियति-उद्यम-और-कर्मका संवाद पुरा हुआ, आपलोगोंको मालूम हुआ ?—कौन ताकतवर रहा ?—अकलसे दर्याफतकरके बतलाओ ! निश्चयनयसे कर्म-और-व्यवहारनयसे अपनीअपनीजगह सब प्रधान है, उद्यम खालीजासकताहै, कर्म-खालीनहीजाने, असलमें-सुखदुखके दाता-कर्महै, स्वजन कुटुंब-परिवार-और-दोस्त-जब-भाग्य-खोटे आयगें कोई साथी नबनेगा. रुपया लेकर कोई नहींआया, नकोई साथ लेजायगा. खूब सुरत औरतका तुमको घमंडहै-तो-यादरखो ! वह-तुमारेशाथ न चलेगी, शरीरही तुमारा जवाबदेनेवालाहै तो-नोकरचाकरोकी क्या चलाइ ?—कंजुसोंकी सबसे ज्यादा खराबी होगी,—अगर सुखी होनाहै-तो-धर्मपर-निगाह बढाओ-और-सुकृत-हासिलकरो, जिसको जैनमतमें कर्म-कहा-उसीको दूसरेमतवाले-विधि-विधाता होनहार-भाग्य-पुन्य-कृतांत-तकदीर-और-इश्वर कहकरबयान करते हैं,—

४६—कर्म-आठतरहके-है. १-ज्ञानावरणीयकर्म-आंखके-पटे-समान-कंठा, जैसे किसीशख्तकी आंखोपर पटावांधदियाजाय-तो-वह-देखनहीसकता-ज्ञानावरणीयकर्मके उदयसे जीव-ज्ञान-नही पासकता. २, दर्शनावरणीयकर्म-चौकीदारसमानकहा, जैसे पहरेवालाशख्त-राजाकी मुलाकात नहीहोनेदेता-दर्शनावरणीयकर्म जीवको-धर्मपर श्रद्धा नहीआनेदेता, ३, वेदनीयकर्म-सहेतलीपटी तलवारसमान कहा, जैसे सहेत लगीहुइ तलवार कोइशख्त जवानमें चाटे और तकलीफ उठावे-वैसे-ऐशआराम भोगताहुवा जीव अपने आपको दुर्गतिरूप तकलीफ हासिलकरेगा. ४, मोह-

नीयकर्म मदिरासमान कहा, जैसे मदिरापीइकर आदमी मदीघहो-जाताहै मोहकर्मरूपमदिरासें जीव-मोहांध-बनताहै, धनदौलत-स्त्री पुत्र और निजशरीरपर रागलाना इसीकानाम मोहनीयकर्म है, ५, आयुष्यकर्म-बेंडीसमान कहा, संसाररूपी केदखानेमें जीवकों आयुष्यकर्म एकबेंडी है. ६, नामकर्म चितारेसमान कहा. जैसे चितेरा तरहतरहके चित्र बनाताहै नामकर्मके जरीये जीव-रूपरंग और-शरीरवगेरा बनाताहै. ७, गोत्रकर्म-उसका नामहै-जो-उंच-या-नींच-जातिका पाना. ८, अंतरायकर्म राजाके भंडारीसमान कहा. जैसे भंडारी-नहोतो-कुच्छदेरतक राजाभी-खर्च-नहीकर-सकता वैसे अंतरायकर्मके उदयसें-जीव-स्त्री-पुत्र-घर-हाट-हवेली कपडा-गहेना-वगेरा चीजोंसें वंचित रहताहै.

४७-ज्ञान-और-ज्ञानीयोंकी बेअदबी करनेसें ज्ञानावरणीय-कर्म बंधताहै, शास्त्रके वचनों लोपकरने जैसा कोइपाप नही. सचे देवगुरु धर्मकों झूठे समझना दर्शनावरणीयकर्मका उदयहै, पांच इंद्रियोंकी विषयपुष्टिकेलिये जीवोंका बधकरनेसें-मारपीटकरनेसें-और-उनकों तकलीफ पहुंचानेसें अपनेकों अशातावेदनीयकर्म बंधताहै, उनका बचावकरनेसें-मारपीट-न-करनेसें-अपनेकों शा-तावेदनीयकर्म-बंधताहै, शातावेदनीयकर्मके उदयसें-जीवकों-अग-लेजन्ममें-अच्छारूप मिले. अच्छा खानपान-अच्छीस्त्री, और-स्त्रीकों अच्छापुरुष मिले, तरहतरहके दुख-और-मानभंग-होना-अशातावेदनीयकर्मका फल है, मोहनीयकर्मके उदयसें रागद्वेष-का मक्रोध और लाभ ज्यादाेरहेगा. धर्मकरना रुचे नही. शिवाय का-मभोग-और-एशआरामके-और कुच्छबात नही-यहसब मोहनी-

यकर्मके लक्षण जानो, इसको कमकरनेके उपाव लेने चाहिये, म-
हारंभ-महालोभ-पंचेंद्रियजीवोंकी घात-और-मांसभक्षणकरनेसें
जीवकी दुर्गतिहोगी. धर्म और धर्मीजनोंकी सेवा करनेसें. अच्छी
गति होगी, नामकर्म दोतरहका-शुभ-और-अशुभशुभसें-यश-और-
अशुभसें अपयश होताहै, उंचगोत्रका मदकरनेसें-अगलेजन्ममें नि-
चगोत्र मिलेगा, अंतरायकर्मके उदयसें जीवकों हरबातकी अंत-
राय रहेती है, फायदा विचारो और होवे-नही. अच्छाखाना
चाहो-और-मिले नही. अच्छेकामभोग चाहो और अभाव रहे,
दानदेनाचाहो और दिया-न-जाय. जिसकामका इरादाकरो
और बन-न-पडे, यह सब अंतरायकर्मके फलहै, जब सबपापसें
रहितहोगे तुमारी मुक्ति होगी. निस्पृहहोकर तपकरोंगे सबकर्मसें
छुटकारा पाओगे, इश्वर किसीकों सुखदुख नही देता, जैसा कर्म
जीव-करेगा-वैसाफल-भोगेगा, —

४८-इसजमानेमें सर्वज्ञ-और अवधिज्ञानीनहीरहे, किसतरह-
मालूमहोकि-किसजीवके ज्ञानावरणीयवगेराकर्म कितनाहै?(जवाब.)
-जिसकीजन्मपत्रीमें सूर्य-ऊंचक्रा-मित्रक्षेत्री-या-स्वगृहीहोकर पडा
हो उसकेज्ञानावरणीयकर्म-थोडाजानना, इसीतरह चंद्रमासें दर्शना-
वरणीयकर्म-मंगलसें अशातावेदनीय-बुधसें मोहनीय-बृहस्पतिसें
नामकर्म-शुक्रसें गोत्रकर्म-शनिसें आयुष्यकर्म-और-राहुसें अंतराय
कर्मका-विचारकरना, वर्षपत्रमें-जो-एकविशेषग्रह-मुंथानामसें ल-
मायाजाताहै-वह-भविष्यत्जन्मके उपार्जितकर्माकासंचय जानना,
चिकित्साशास्त्रकी सचावटमें जैसे दस्त-और-उल्टीहोनेकी-दवा-
गवाहीदेतीहै ज्योतिष्शास्त्रकी-सचावटमें चंद्रसूर्यकाग्रहण गवाही

देताहै,वर्षाकालमें-जव-शुक्रसें सप्तमराशिपर चंद्रमा आजाय और उसपर शुभग्रहोंकी दृष्टिपडेतो वरसातजरुरहो, इसतिरह शनिसें भी-पंचम-सप्तम-और-नवमराशिपर चंद्रमा आजाय और-शुभ ग्रहोंकी उसपर दृष्टिपडेतो वरसातजरुरहो,ग्रहोंके उदय-अस्तके समयभी वरसातका होनासंभवहै,सूर्यके आगे-या-पीछें-बहुतसेंग्रह-आजाय उसवरुतभी निश्चयकरके दृष्टिहोगी ऐसाजानना,बुध-शुक्रका-या-बुध-गुरुका-अथवा-गुरुशुक्रका-मिलापहो-उसवरुत-भी दृष्टिजरुरहोगी. श्री हेमप्रभसूरि-त्रैलोक्य प्रकाशग्रंथमें फरमाते हैं कि—

चलत्यंगारके वृष्टिः—उदये च वृहस्पतौ

शुक्रस्पास्तमने वृष्टिः—त्रिधा वृष्टिः शनीश्वरे—१,

उदयास्तमने चारे—वक्रं याति शनीश्वरे

जलनाडीं गताःखेटा—महावृष्टिकरा मताः २,

४९-हरेकज्येष्ठमहिनेके-शुक्लपक्षमें-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-और-ज्येष्ठा-यह पांचनक्षत्र अंदाजदशमीतिथिसें लेकर पूर्णिमातकहोतेहै, इननक्षत्रोंकेदिनोंमें देखनाचाहियेकि-आकाशमें बादल-विजली-वर्षा-बुंदपात-और पूर्वोत्तरकी हवाकिसकिसवरुत चलतीहै?—अगरचित्रानक्षत्रमें यहलक्षणदेखोतो अषाढमहिनेमें अच्छीवृष्टिहोगी ऐसाजानो, स्वातिनक्षत्रसें श्रावणमहिनेका विचार करो,विशाषासें भाद्रवेमहिनेका-अनुराधासें आसोजवदीका-और ज्येष्ठासें आसोजसुदीका-विचारकरो, यहां जो आसोजवदीकही उसको गुजरातदेशकी अपेक्षा भाद्रवावदीजानना, सबबकि-गुज-

रात-और-दखनके शिवाय और जगह महिनेकी शुरुआत वदीसें मानीजातीहै,-फिर पूर्णिमा-या-प्रतिपदाकेरौज जो मूलनक्षत्र होताहै-उसकी सर्वघटिका देखो.जिसवरुतसें मूलनक्षत्रलगे औरउतरे उसकी सबघडीयां जितनीहो-अर्थात्-(६०)के-अंदाजहोंतीहै -उसकी आधीआधीघडीकी-एकएकतिथि-अषाढकृष्णप्रतिपदासें लेकर आश्विनशुक्लपूर्णिमातक(१२०)तिथियोंका विचार इसतरह करोकि-मूलकी-जिसघटिकामें वर्षाहो-उसतिथिमें वर्षा नहोगी-और-जिसघटिकामें-अत्यंतधूप-अमुझा-वायुबंध-और-मनुष्योंको घबराहट-ऐसेलक्षण देखोउनउनतिथियोंमें अच्छीअच्छीवर्षाहोगी ऐसाजानो,चित्रा-स्वाति-और-विशाषाकेलिये-अषाढश्रावणऔर भादवेकी जोवातकहीगइहै उनकीभी घडीयोंकेहिसाबसें वृष्टि देखसक्तेहो-वहांएकएक तिथिकेलिये दोदोघडीका हिसाब लगाना होगा,-

४९-यहनीचेलिखेहुवे(१४)वाक्यरत्न-हरवरुत यादरखो,१, जिसकी औरत लडकाछोडकर मरगइहो-मुनासिवहै दूसराविवाह नकराना-घरमें दंगारहेगा,दंगेसें दौलतकी हानिहोगी.अगरतुमकों कामविकारकी शांति नहीहुइहै-तो-खेर!विवाहकराकेभी उसलडकेकों नयीऔरतसें ज्यादाे समझो,२,जिसशरुशकी औरतकों संताननहोतीहो-विवाहकियेवाद बारहवर्षतक राहदेखनाठीकहै वाद अगलीऔरतके खानपानका बंदोबस्तकरके दूसरा विवाहकराना मुनासिवहोगा. ३,इसजमानेमें लंबीउमर-रहीनही इसलिये लाजिम है पचासवर्षकेवाद विवाह नकराना,बुढीउमरमें विवाहकरानेसें-कुल-कलंकित होताहै,४,औरतसें-मर्द-तीनगुनीउमरवालाहो तब

तकतो किसीकदर विवाहकाहोना ठीकभी कहेगें.लेकिन!इससे ज्यादाउमर मर्दकीहै-तो-उसविवाहकों बैमुनासिबहुवा कहेगें,

(दोहा.)-साठवर्षका होयके-जो-नर-व्याह करंत,-वो बुढा वह बालकी-तंतु काह करंत,-१,-(५)कोइशरूश किसीवजहसे विरादरीबहार कियागयाहो-और-वह-सामीलहोनाचाहे तो मु-आफिककायदे अहंनीतिके प्रायछितदेकर सामीलकरलो. विरादरीके मुखीयोकों चाहिये किसीकों अदावतसे विरादरीबहार न करे, खोटाकलंक लगाना नरककी निशानी है, लिहाजमें पडकर किसी-दोषितमनुष्यकों विरादरी बहार न-करनाभी अन्याय और अधर्मका कारण है,—

५०-(६) हरेकशरूशकों-चाहियेकि-सालभरकी पैदाशमेंसे रूपये आठआना धर्मकाममें (यानी) सप्तक्षेत्रमें लगावे, इतना न बनेतो चारआना-दोआना-अखीर एकआनातो जरूर लगावे, रूपयेमेंसे एकआनाभी नखर्चेगा तोर्थकरके हुकमकों तोडनेवाला समजाजायगा, हजारोंरूपयेका व्याजआताहै उसकोंभी पैदाश समझो और धर्मांश उसमेंसेभी निकालो. औरत अपने पतिमें जो कुच्छ मांगलेती है उसमेंसेभी धर्मका-आधाचौथाइ-दशांश-षोड-शांश-निकाले, और तुर्त धर्ममें लगादेवे, कइ श्रावक कहदेते हैं साधुलोग शिथिलाचारी होगये जिससे धर्म दिप्तिमान् नही हांता, लेकिन ! असलपुछोतो श्रावकलोगही शिथिलाचारी बनगये है, धर्मकाममें कंजुसकेसिरदार बनना और स्त्री-पुत्रकेलिये हजारांह रूपये उडादेना, स्त्रीकेलिये हजारांहका गेहना बनवाना-और-जिनप्रतिमाकेलिये एकनिलकभी नही देना-अपने और आंतके

लिये-कइतरहकी-नयीपुशाके-और-साधुजनोंकेलिये एकचदरतक नही देना, कहिये ! धर्मका नाश किसने किया ? सौचकर जवाब दो. दिगंबर-हुंढिये-भीखमपंथी. और-तीनथुइवाले जो जैनशास्त्र-केकानुनसे निन्हवहै उनकेशाथ खानपान और बेटीव्यवहार न रखना चाहिये-और रखते हो कितनीबडी भूलहै, असल पुछो तो इससे धर्ममें वडी न्यूनता पहुंच रही है, इसवातकों सौचो,-

५१-(७)-मातापिता-पुत्र-स्त्री-वगेराके अंतसमय जो सात-क्षत्रकेलिये द्रव्य निकाला जाताहै वह तुर्त अपनेगांवके समाज (संघ)के सुपुर्दकर-दो, कितनेकलोग उसद्रव्यकों अपने बनाये हुवे जिनमंदिर-या-उपाश्रयमें लगाते है उनकों पुछना चाहिये क्या ! यह द्रव्य अब तुमाराहै ? जो अपनी हुकमतसे लगातेहो ? असलमें यह धर्मद्रव्य होगया, इसकों संघकी सलाहसे जहां मुनासिब समझाजाय लगाना चाहिये. कइशखश अपनीलौकिक दिखलानेकेलिये उसवखत इतनेहजाररुपये हमने धर्ममें किये मुखसे कहदेते है, फिर पैसा एकभी नहीलगाते, उनके जैसा कोई अधर्मी नही, विरादरीवालोंकों मुनासिबहै उसके वहांका खान पान छोड देवे, जो लोग शर्ममें पडकर उसके पाससे धर्मद्रव्य नहीमांगते-वे-ज्ञानियोंके ज्ञानमें दोषकेभागी है, साधुलोगोंकोंभी मुनासिबहै उपदेश देकर धर्मद्रव्य धर्ममें लगानेकी काररवाइ करे, इतनेपरभी नमानेतो समझना उसका पापही उसे दुर्गतिमें डालेगा, लेकिन ! हां ! उसकों संघसे वहार जरूर करदेना चाहिये, इसमें जो शखशपक्षपातकरेगा महापापी वनेगा. कितनेक शखश उस सातक्षेत्रके धर्मद्रव्यकों अपनेदुस्तरेमें वतौर अमानतके जमा

करलेते है—कोइकोइ व्याजके हीलेसें जमाकरते है, और फिर उस द्रव्यको सालभरमें जोकुछ सातक्षेत्रमें अपनेनामसें खर्च किया—उसमें नामे लिखदेते है उनको पुछाजाय यहकाम कोनसें कानुनसें करतेहो ? तो जवाबमें शास्त्रसें विरुद्ध ठहरते है, जब धर्मद्रव्य अपने घरमेंही रखना ज्ञानीयोने नहीफरमाया तो जमाकरना कहां रहा ? जिनजीवोंको संसारमें बहुतकालतक रहनाहै—ऐसे कपटधर्मियोंको यह लिखाण बहुतबुरा मालूमदेगा. लेकिन ? उनसें हमको कोइ परवाह नही. हमको यहां ज्ञानियोंके वचन दिखलाने है. जो लोग धर्मद्रव्य देते नही और विरादरीमें तडडालकर अपनी वाह वाह करारहे है, याद रखो ! यह तारीफ उनकी परलोकमें शाय न चलेगी. नरक तिर्यंचगतिमें पापकर्म-भोगते वरुत कोइ त्राणशरण नहोगा. रुपयापैसा हाथका मेलहै, इसका घमंडकरना नोचंपुरुषोंका कामहै, जो शरुश देवद्रव्यका कर्जा लेकर पोछा नही देते संघकी फर्ज है राज्यमें नालिशकरके वसुलकरना,—

५२-(८)—कितनेक श्रावक ऐसे देखेगये है—जो—साधुजनोंके शाय बैङ्जतिसें पेश आते है. लेकिन ! यहनहीं सौचतेकि—हम-किस-दर्जेपरहै !—संसारछोडकर मुक्तिकीसाहलेना सहजवातनही. खानपान और ऐशआराम किसको अच्छा नही लगता. धन्यवाद दो—उनको—जिनोने संसारछोडाहै—साधुलोगोंको शिवाय धर्मके किसीका आधार नही, तुमको कोइ मारने आयगा फौरन मात-पिता और भाइ तुमारे साहायक बनेगें. साधुओंका कोइसाहायक नही, ऐसे नावालिशोंका अपमान करना कितना बुराहै ? साधु-लोग परमात्माके शरणमें बैठे है, उनको सताना याद रखो ! तु-

मारेनाशहोनेके दिनहै, तुमकों किसीकी शर्मनही है तो खेर! पर-
मात्माकी शर्म तो रखो. शास्त्रोंका वचनहै साधुजनोंकों खानपान
वस्त्रपात्र-पुस्तकपंन्ने-और-मकान-देना और उनसे धर्म सुनना.

५३-(९)-हरेकशखशकों-भंग-गांजा-तमाखू-मांस-मदिरा-
जमीकंद-सहेत-रात्रीभोजन-परस्त्रीगमन-विनाछानाजल-तीनदि-
नकेवादकाअचार-और-दोघडीकेवादका मखखन-इतनीचीजें त्या-
गकरनाचाहिये, इनमेंफायदा नही नुकशानहै, (१०)-कितनेकदेशमें
लडकालडकीकी जन्मपत्री लोग नहीवनवाते. लेकिन! वनवाना
मुनासिवहै, जन्मपत्रीसे धर्म-और-संसारदोंनोंका विचार किया
जाताहै, वल्किन्! किसगतिसे आया औरकहांजावेगा मालूमहो
सकताहै? कितनेक कहदेतेहै जन्मपत्री क्या-कर्मपत्री देखना चा-
हिये (जवाव)कर्मपत्रीहोका दूसरानाम जन्मपत्रीहै, ऐसा नहोतातो
सूर्यसे ज्ञानावरणीय-चंद्रमासे दर्शनावरणीय-वगेराआठकर्मोंका
विचार क्यों कियाजाता?-और-जैनाचार्योंने ज्योतिष्ग्रंथ क्यों
वनाये? इसका जवाव दो, आजकल-ऐसेमनुष्य-ज्यादेरहगये-जो
-मतलवभी-पुछजाय-और-नींदाकरे. ऐसोंसेवचनाचाहिये,

५४-(११)-हरेकश्रावककों मुनासिवहै एकसो आठ-जैन
तीर्थोंमेंसे किसी एकजैनतीर्थकी हरसाल यात्राकरे, जोशखशजिस
तीर्थभूमिमें वसताहो उसकों दूसरेतीर्थकीयात्राकरनाचाहिये, (१२)
वडेवडेतीर्थोंमें जहां ज्यादा खजाना इकटा कियाजाताहै उसख-
जानेसे अगर दूमरेशहरोके हजारोंहजैनमंदिर जो जीर्ण होगयेहै
उनकीमरम्मत कराइजायतो कितनी उमदावातहो? -बहुतधन इक-
टाहोनेसे विगाडनेवालाभी मिलजायगा, इसलिये जोउपरलिखेमुजब

जाणोंद्वारमें लगादियाजाय वही अच्छाहै, १३, जीव-इरादाकुछ करे-और उदयकर्मकेजोरसें होजाय कुच्छऔर! कहिये! कर्मबलोष्ट रहे-या-नही? कर्म-आपकरना-दोष दूसरोंकेशिरडालना कितनो भूलहै? जब पुन्यका उदय आयगा सबकामठीकहोगा, इष्टप्राप्तिकोचिंता विल्कुल मतकरो, जोबस्तु तुमारे भाग्यमें बंधी है स्वतःआनमिलेगी. बतलाओ! कमलनी और सूर्यका संयोग कौन कराता है? दुसरी मसाल देखो!-योगीने विचाराथा शिवकुमारकों जालकर सुवर्ण पुरुष बनालउ, लेकिन! बनगया आप! समझशकोतो समझलो पुन्य बलवान् ठहरे या कौन? (१४) कोइ शखश तंबोलमें खुशहै कोइ मीठेभोजनजिमनेसें-कोइ सवारोपर चढकर कोइ इतर फुलेलसें-कोइ जवाहिरातसें, कोइ अच्छेकपडेसें,-कोइ सुंदर औरतसें, कोइ औरत-सुंदरपुरुषसें-कोइ रात्रीमें-कोइदिनमें-कोइ वरसातकी-झडीमें-औरकोइ-बागकी शैरमें खुशहै, लेकिन! ज्ञानी लोग सबसें ज्यादा खुशीकाकारण धर्म फरमातेहै.-

दुनियाके मतमतांतरका विषय पुराहुवा-वाचकर नौर करो.

(मकसीतीर्थकारखानेके-दृष्टी-और-मेने-जर-जाउसाहबके प्रश्नोका उत्तर.)

१-(प्रश्न.)-किसीशखशने रात्रीको चतुरविधआहारप्रत्याख्यान-या-त्रिविधआहारप्रत्याख्यान-कियाहो-वह-स्त्रीसंभोगमें-अधरपान करे-या-नही? (जवाब.)नकरे,मवबकि-परस्पर थुंकल-

गनेसें व्रत टूटजाताहै,द्विविधआहारप्रत्याख्यानमें करेतो व्रत-नटूटे, श्राधविधि वगेरा ग्रंथमें इसका खुलासा हैं.

२-(प्रश्न)-उपवासव्रतमें कामभोगकरनेसें व्रत टूटे या-नही ?
(जवाब.)-उपवासव्रतमें कवलआहारका त्यागकियाहै रोमआहारका त्यागनही, कामभोग-रोमआहारमें दाखिलहै, इसलिये-संभोगकरनेसें-उपवासव्रतनहीटूटता, मैथुनसेवनेसे जोपापलगनेवाला है-वो-तो-लगेहीगा. लेकिन !-उपवासटूटगया-नहीकहना.

३-(प्रश्न)चौदहनियमधारनेवाला-रात्राकों चतुर्विध-त्रिविध-द्विविधआहारप्रत्याख्यान-न-करे-और-नियमधारेतो कुच्छ हर्ज है ! (जवाब.) कोइ हर्जनही.चौदहनियममें यहकोइप्रतिबंध नही कि-रात्रीकोंचतुर्विधआहारप्रत्याख्यानवगेरा जरूरकरना.

४-(प्रश्न)-कलंकीराजा कवहोगा ?

(जवाब.)-महानिशीथसूत्रके पांचमेंअध्ययनमें पाठहैकि-सेभयवं केवइयंकालं जाव एस आणा पवेइया ? (गोयमा) जावणं महायसे महासत्ते महाणुभागे सिरिप्पभे अणगारे-सेभयवं केवइएणं कालेणं सिरिप्पभे अणगारे भवेज्जा?(गोयमा)-होहो दुरंतपंतलखणं अदट्टव्वे रोदे चंडेपयंडे निस्सेरे निकिचे निग्घणे नित्तंसे कूरप पावमई अणारिये मिच्छदिट्ठी-ककी-नामराया-(अर्थ.)गौतमस्वामीने महावीरस्वामीसें प्रश्नकियाकि-हैं ! प्रभु ! यह उपरवर्ननकिइहुइ-आज्ञा-(यानी)-यथार्थसमाचारी पांचमेंआरेमें कवतक चलेगी. (जवाबमें) फरमायागयाकि-हैं ! गौतम ! जब महानुभाग्य-श्रीप्रभ अणगार होयगें तव्रतक, गौतमस्वामीने फिरपुछा-श्रीप्रभअणगार कवहोंगे ? महावीरस्वामीने जवाबदिया-जब कलंकी नामकाराजा

होगा, जो महाखोटेलक्षणवाला और अदृष्टकल्याणी-कठोर-प्रचंड-वेशर्म-निःकाम-निर्दय-क्रूर-पापी-अनार्य-और-मिथ्यादृष्टि-होगा, -इसपाठसें सबुतहुवा कलंकीराजा-श्रीप्रभअणगारकी हयातीमें होगा, श्रीप्रभअणगार-कौनसें उदयमें युगप्रधान होंगे उसका खुलासा युगप्रधानयंत्रसे देखाजायतो आठमेउदयके प्रथमयुगप्रधान सबुतहोतेहै, इमवरुत उदय तीसरा शुरुहै, जब आठमाउदय आयगा-श्रीप्रभयुगप्रधान होंगे. उसवरुतकलंकी राजा पैदाहोगा, महानिशोधसूत्रमें ऐसाभी पाठहैकि-वह-साधुओंको तकलीफ पहुंचायगा और इंद्र आकर उसको जानसें मारेगा, आठमाउदय पांचमेंआरेके कितनेवर्षबीतेबाद आनाचाहिये उसका हिसाबलगाते है-तो-साढेदशहजारवर्षबाद आताहै, समझशकोतो समझलो कलंकीराजा कबहोगा ? -पांचमेंआरेके-एकीशहजारवर्षमें-तेइसदफे धर्मका उदय-और-उतनीहीदफे धर्मका अस्तहोना जो जैनशास्त्रोंमें फरमायाहै उसमें(२००४)युगप्रधान-(यानी)प्रभाविकआचार्य होंगे, श्रीप्रभअणगार आठमेउदयके प्रथमयुगप्रधान पहिलेलिख चुके, दीपमालाकल्पमें तथा पांचमेंआरेकी सझायमें जो कलंकीका होना-संवत्-(१९१४)में-वतलाया, वह-भागमवचनसें-वर्खिलाफ-और-गलत समझनाचाहिये. दीपमालाकल्पमें यहभी लिखा हैकि-कलंकीराजा-विक्रमकेसंवत्को लोपकरके अपना नयासंवत् स्थापनकरेगा. सौचोतो-यहवातभी अबतक नहीवनी-फिर किस सबुतसें कहाजाताहै कि-कलंकीराजा होयगा.?

५-(प्रश्न)-एकपक्षमें (छह) तिथि-अर्थात्-दूज-पंचमी-अष्टमी-एकादशी-चतुर्दशी-पौर्णिमा-और-अमावास्यामेंसे-कोइभी-

तिथि-दो-होती-दोनों-पालना-या-एक ?-अगर दोनों-पालना कहोगे तो-उक्ततिथिमेंसे कभी कोई तिथि-दूटनाय तो क्या ! न-ही मानना चाहिये ?

(जवाब.)-जैनशास्त्रकाफरमाना है कि-दो तिथिहोजायतो पहिली छोडकर दूसरी पालना, और क्षय हो तो पूर्वदिनमें मानना, जैसे अष्टमीका क्षय होतो सप्तमिकेरौज अष्टमी मानना चाहिये, अमावास्य-या-पौर्णिमा-टुटते-तेरसकों तोडकर चतुर्दशी-पौर्णिमा-और-अमावास्या-पूर्ण-पालना, इसतरह हरेकतिथिकेसंबंधमें जानलो, जैन शास्त्रके कानुनसेदेखोतो बारहमाहिनेकी-जो (१४४) पर्वतिथि-है, उनमेंसे-न तो (१४३)-न-(१४५) होगी.

६-(प्रश्न,)किसीवर्षमें-दो-श्रावण-या-दो-भादवेमाहिने हो तो पर्युषण-किसमाहिनेमें कियेजाय ?-भादवा सुदीचौथ-टूटी हो या-दो-होगईहो-तो-संवत्सरीकप्रतिक्रमण किसरौज करना ?-इस तरहपर्युषणके आठदिनोंमें-औरभी कोईतिथि-घट बढ हुई होतो-किसतरह करना ? और भादवासुदीपंचमी-टूटी होतो-कौनसे रौजपर्युषण बैठाना,

(जवाब.)-दो-श्रावणहोतोभी-भादवेमेंही-पर्युषणपर्व करना चाहिये, अगर कहाजायकि-अषाडसुदी (१४) चतुर्दशीसें (५०) रौज लेना कहा यह कैसे सवुतरहेगा ? (जवाब.) कल्पसूत्रकी टीकामें पाठ है कि-अधिकमास-कालपुरुषकी चूलिका-यानी-चोंटी है, जैसे किसीपुरुषका शरीर उचाइमें नापा जाय-तो-चोंटीकी लंघाड नापी-नही जाती, इसीतरह कालपुरुषकी चोंटी जो अधिकमासकहा गिनतीमें नही लिया जाता, कल्पसूत्रकी टीकाकापाठ-

कालचलेत्थविवक्षणात् दिनानां पंचाशदेव,—अगर लिया जाताहो पर्युषणपर्व—दुसरेवर्ष श्रावणमें—और—इसतरह अधिकमहिनोंके हिसाबसे हमेशां उक्तपर्व फिरते हुवे चले जायगें, जैसे मुसलमानोंके ताजिये—हरअधिक मासमें बदलते रहते है, दूसरायहभी दूषण आयगाकि—वर्षभरमें जो—तीनचातुर्मासिकप्रतिक्रमण किये जाते है उनमें पंचमासिकप्रतिक्रमणपाठ—बोलना पडेगा, शीतकालमें और उश्रकालमें—तो—अधिकमहिना गिनतीमें नही लाना—और चौमासेमें गिनतीमें लाकर श्रावणमें पर्युषण करना किस न्यायकी बात हुइ? अगर कहा जायकि—पचासदिनकी गिनती लिइजातीहै—तो—पीछले ७०)दिनकी जगह—(१००)दिन होजायगें, उधर दोष आयगा, सवत्सरीके पीछें(७०)दिन—शेष—रखना,—यहबात समवायांगसूत्रमें लिखिहै—उसका पाठ—वासाणं सवीसइराए—मासे वइकंते सत्तरिराइं दिएहिं—सेसोहिं, इसलियेवहीप्रमाणवाक्यरहेगाकि—अधिकमास—काल पुरुषकी चोंटी होनेसे गिनतीमें नही लेना, अधिक महिनेकों गिनतीमें लेनेसे तीसरा यहभी—दोष—आयगाकि—चौइसतीर्थकरोंके—कल्याणिक—जो—जिसजिसमहिनेकी तिथिमें आतेहै गिनतीमें वेंभी बढ जायगें, फिर क्या !—तीर्थकरोंके कल्याणिक(१२०)सेभीज्यादे गिनना होगा ?—कभी—नही, इस हेतुसेभी अधिकमास नही गिना जाता, अधिक महिनेके कारणसे—कभी—दो—भादवे—हो—तो दूसरे भादवेमें पर्युषण करना चाहिये, जैसे—दो—अषाडमहिने होते है तबभी दूसरे अषाडमें चातुर्मासिककृत्य कियेजाते है वैसे पर्युषण—भी दूसरे भादवेमें करना न्याययुक्त है, भादवा सुदी चोथ दूटीहो—तो—ज्यारसकैरौजसे पर्युषण बैठाना, भादवा सुदी चोथ—दो—हो—तो—पर्युषण तेरसकी तिथिसे बैठाकर पुरे आठरौज गिनना

संवत्सरीक पर्व दूसरीचौथके रौजमानना, भादवासुदी पंचमी टूटी हो-तो-ग्यारसके रौज पर्युषण बैठाना चाहिये, सबकी-चौथ संबत्सरीपर्वका-दिनठहरा-उसकोतोडना-प्रमाणसें विरोधी है, इसतरह पर्युषणके आठरौजमें औरभी कोइ पर्वतिथि टूटीहो-तो उसकी प्रथमतिथि घटाकर पहिलेदिन उसको मानना उपर पांचमे प्रश्नमें लिखही चुकेहै, निदान ! सबबातका सारयह हुवाकि-तेरससे लगाकर चौथतक कोइभी-तिथि-टूटीहोतो ग्यारससें और बढीहोतो-तेरससें पर्युषण मानकर आठरौज पुरेकरलेना, और शुरुदिनसें चौथेरौज बडाकल्प-पांचमेरौज-महावीरस्वामीका-जन्म महोत्सव-आठमेरौज-चैत्यपरिपाटी-और-संवत्सरीक प्रतिक्रमण वगेरा-कार्य-करलेना चाहिये,

७-प्रश्न-मुनिजनोको पीलेवस्त्र रखना कौनसे शास्त्रमें लिखा है ? (जवाब.)-निशीथसूत्रके अठारहमें उद्देशमें-पाठहैकि-साधुलोग नयेवस्त्रको-कथा-लोध-या-पद्मचूर्ण वगेरासें रंग चढावे. [पाठ] जेभिखु-णवएमे वथ्ये लद्धे-तिकड्डु बहुदिवसिएणं-लोधेणवा-ककेणवा-पउम सुन्नेणवा-वन्नेणवा-उल्लोलेज्जवा-उवदेज्जवा-उल्लोतंवा उवदंतंवा-साइज्जइ-इत्यादि,

८-प्रश्न-इसकालमें भरतक्षेत्रके मनुष्य-मरकरकितने-स्वर्ग और-कितनी नरकतक जासके. (जवाब.) वृहत्कल्पसूत्रकी टीका वगरामें पाठहैकि-छेवठासंहननवाला-मनुष्य-उपर-चतुर्थदेवलोक तक-और-निचे-दूसरी नरकतक-जासके, आजकल भरतक्षेत्रमें छेवठेसंहननवाले मनुष्य है, इसलिये वही कहना मुनासिब आया जो उपर लिख चुके,

[भाउसाहबके प्रश्नोंका उत्तर समाप्त हुवा.]

[इसलेखकों मत पढो—तुमकाँ नागवार गुजरेगा.]

स्त्रीपुत्रपर मोह-न-करो, देवद्रव्य तुर्त देदो, हरकिसीकी बरातमें-जानेका इरादा-नरखो, जो औरत तुमसें नफरत लातीहै उससें मत बोलो, पराइ औरतसें प्रेम-न बांधो, अपनी औरत-कोंभी दिलकी बात मत कहो, ज्यादा कामभोग मत सेवो, रज-स्वला औरतसें तीनदिन संभोग-न-करो, हरहमेश मिठाइखानेका शौख-न-रखो, राज्यकी नौकरी करनेका इरादा कम करो, धर्म शास्त्रसुनते किसीसें बात-न-करो, सभामें जाते और प्रमाणीक बात कहते शर्म-न-लाओ. अन्यायके तर्फदार मत बनो, रसायन विद्या-विच्छेद हो गइ-इसके पीछे मत पढो, हुक्का-चिलम-या बीडी-तुम पीते हो-यही बुरी बात है फिर औरतकोंइसके फंदेमें क्यों डालतेहो ?-संसारके कामकों पीछेऔर-धर्म कार्यकों पहिले करो, बीमारीमें कोइ आनकर तुमकों कहे धर्म करो उसपर नाराज मत हो, एक लोभी आदमीकों नींदआइ-ख्वाबमें देखाकी मुजे कोइ-एक रुपया-देता है, उसने कहा-दो रुपयेसें-कम-न लुंगा, उतनेमें नींद खुल गइ और रंजीदा हुवाकि-मैने-एक रुपयाभी नाहक छोडा, सौचने लगाकि-फिर लेटजाउ-और-एकही कोइ देवेतो लेलूं, कहिये ! अैसाभि कोइ बेवकुफ आदमी होगा संसारमें ?-स्वभावसें दलेर बने रहो, और एक एलम ऐसा सीख लो-जिससे रुपया रौज हमेशा पैदा हो जाया करे. जो काम स-

वकी सलाह लेकर करनेका है उसको अपनी इच्छासे मत कर-
डालो, नसीयतमें तुमको कोई कडुआ वचनभी कहे-तो-उसको
अच्छा समझो, घरसे बहार निकलो जब हरवख्त पांच सात रुपये
या-पैसे पास रखे करो-न मालूम किस वख्त काम आ जाय !-

[जैनका इतिहास.]

१-रिषभदेवसे लगाकर आजतकका कुछ मुख्तसिरहाल
बतलाकर ग्रंथ पूरा करता हूं, इसकालचक्रकी आद्यमें पहिलेराजा
रिषभदेव हुवे, और-वै-खुद तीर्थकरभी थे, धर्मप्रवर्तक कहो-या
तीर्थकर-एकही बात है. जैनमें अवतार लेना नहीमानागया,
मोक्षपाकर फिर संसारमें आना अयोग्य बात है, जोइश्वर भक्तों-
पर खुशहोगा-कभी-नाराजीभी लायगा. रागद्वेषका होना महान्
दोष है, सर्वशक्तिमान् गर्भमें आवे-और-भक्तोंकी साहायता करे
कौन बुद्धिमान् मनन करसकता है ? देखिए ! सारी दुनिया अ-
पनेदेवोंसे गुजारीश करतीहै कि-गर्भवाससे मुत्लक मुलत्व छूटजाय,
बड़े खेदकी बात हैकि-जिससे दुनिया छूटने चाहे उसीमें इश्वर
आनकर फसे ?

२-प्रथम तीर्थकर रिषभदेव विनीता (अयोध्या) नगरीमें हुवे,
उनका बडाबेटा भरत और भरतका-सूर्ययशा-हुवा, जिससे सूर्य-
वंशी खानदान चला, रिषभदेवका दूसरा बेटा-बाहुवली-और
बाहुवलीका-बेटा-चंद्रयशा-हुवा, जिससे चंद्रवंशी खानदान चला,

रिषभदेवके प्रथम पुत्र भरतचक्रीने भारतमध्यखंडमें अष्टापदवगेरा तीर्थोंकी स्थापना किइ, शत्रुंजय तीर्थ-जो देवताओं करके पूजनीकथा-उसरौजसें-मनुष्योंकाभी पूजनीकहुवा, हरेक कालचक्रमें इसीतरह होता है,

३-दूसरे तीर्थकर अजितनाथ हुवे, दूसरा सगर चक्रवर्ती इनहीके वरुतमें हुवा, इसने देवोंकी मददसें लवण समुद्रकी खाडीकों जगतीके कोटके भीतर फैलाया, जिससें क्षेत्रमर्यादा पहिलेसे बदल गइ, इसीसगरचक्रीके बेटे जन्हुकुमारने गंगाकी नहेर अष्टापद तीर्थकी चौफेर लेजाना चाहा कुच्छ लेभी गयाथा, गंगाका दूसरानाम इसीलिये जान्हवी कहलाया, इसके बाद सावथ्थी नगरीमें तिसरे तीर्थकर संभवनाथ हुवे, इनके बाद अयोध्यामें चतुर्थ तीर्थकर अभिनंदन हुवे, किसकिस तीर्थकरोका-कितने कितने वर्षोंका अंतर पडा-इसकी गिनतीकल्पसूत्रसें जानना, इनकेबाद पांचवे तीर्थकरभी इसीअयोध्यामें हुवे, इनकेपीछे छठे पदमप्रभ तीर्थकर कौशांबीनगरीमें हुवे, सातमें तीर्थकर सुपार्श्वनाथ वाणारसीमें हुवे, इनकेबाद आठमें तीर्थकर चंद्रप्रभु चंद्रपुरीमें हुवे,

४-इनकेबाद नवमें सुविधिनाथ तीर्थकर काकंदी नगरीमें हुवे, इनके निर्वाण हुवे पीछे कुच्छकालतक धर्म विल्कुल नाश होगया था, जब दशमें तीर्थकर शीतलनाथ हुवे फिर-धर्म-जाहिर हुवा जो आजतक चलरहा है, पैदाश हरिवंशकीइन्हीके जमानेमें हुइ, इनकेपीछे ग्यारहमें तीर्थकर श्रेयांसनाथ सिंहपुरीमें हुवे, पहिला त्रिपृष्ठ वासुदेव इन्हीके जमानेमें हुवा, इनकेबाद बारहमें

तीर्थंकर वासुपूज्य चंपानगरीमें हुवे, दूसरा द्विपृष्ठवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनके पीछें तेरहमें तीर्थंकर विमलनाथ हुवे, तीसरा स्वयंभूवासुदेव इन्हीके जमानेमें हुवा, इनके बाद चौदहमें अनंतनाथ तीर्थंकर अयोध्यामें हुवे, चौथा पुरुषोत्तमवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनके पीछें पनराहमें तीर्थंकर धर्मनाथ रत्नापुरीमें हुवे, पांचमा पुरुषसिंहवासुदेव इनके जमानेमें हुवा, इनके बाद तीसरे मघवाचक्रवर्ती—और—चतुर्थ—सनत्कुमारचक्रवर्ती—क्रमसें हुवे,

५—इनके बाद हस्तिनापुरमें सोलहमें शांतिनाथ तीर्थंकर हुवे, आप खुद छठे चक्रवर्तीभी थे. सतरहमें तीर्थंकर कुंथुनाथ—और अठारहमें तीर्थंकर—अरनाथ—इसी हस्तिनापुरमें हुवे, ये—दोनोंभी खुद चक्रवर्ती थे, इनके पीछें पुरुषपुंडरीक—छठे वासुदेव—और इनके बाद कुरुवंशी सुभूमनामके नवमें चक्रवर्ती हुवे, इनके वख्तमें यमदग्नितापसके पुत्र परशुराम हुवे, कई लोगोंने इनको इश्वरावतार माना है, इनके बाद दत्तनामके सातमे वासुदेव हुवे, इनके पीछे उन्नीसमें तीर्थंकर मल्लिनाथ मिथिलानगरीमें हुवे, इनके बाद बीसमें तीर्थंकर मुनिसुव्रत राजग्रहीमें हुवे, अयोध्यामें दशरथराजाके पुत्र जो—रामचंद्रजी—और—लक्ष्मणजी हुवे है उक्त मुनिसुव्रत तीर्थंकरके बाद हुवे समझे, जैनशास्त्रोंके लेखसें सबूत है कि—रामचंद्रजी और लक्ष्मणजी—जैनधर्मके अनुयायी थे, सीताको रावण ले गया तब रामचंद्रजीने लंकापर आसोजसुदी दशमीके रौज चढाई किइ और फतेहपाइथी—इसलिये उसरौजसें दुनियामें विजयदशमी (-यानी-)-दशहरापर्व जारी हुवा. रावण—सुग्रीव—अंगद—और—हनुमानवगेरा असलमें मनुष्य थे, विद्याके बलसें तरहतरहके रूप बना

लेते थे, जैनशास्त्रोंके पाठसें सबूतहैकि-लक्ष्मणजी आठमे वासुदेव थे, इनकेवाद चंपानगरीमें श्रीपालराजा हुवे जिनोने सिद्धचक्रयंत्रका आराधन किया,

६-इनकेवाद एकीसमें नमिनाथतीर्थकर मिथिलामें हुवे, हरिषेणनामके दसमें और-उनकेवाद जयनामके ग्यारहमें चक्रवर्ती इन्हीके अंतरमें हुवे है, इनके पीछे समुद्रविजयराजाके पुत्र बाइसमें तीर्थकर नेमिनाथ-शौरीपुरमें-हुवे, ये-तीर्थकर बालब्रह्मचारी रहे (यानी)-स्यादी नही किइ, इन्हीके चचेरेभाइ कृश्र्णजी नवमें वासुदेव हुवे, जैनशास्त्रके लेखसें सबूतहैकि-कृश्र्णजी और बलभद्रजी-दोनोंभाइ-जैनधर्मके अनुयायी थे, कौरवपांडवोंका महाभारतयुद्ध इन्हीके वख्तमें हुवा किसीमें छीपी बातनही, इनकेवाद बारहमें ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती हुवे-इनके पीछें तेइसमें तीर्थकर पार्श्वनाथ बाणारसीनगरीमें हुवे, इनकेवाद चौइसमें तीर्थकर महावीर क्षत्रीयकुंडग्राममें हुवे, जो जो तीर्थकर होते है, संसारकों छोडकर तप करे और जब केवलज्ञान होजाय दुनियाकों धर्मका उपदेश देवे यह उनका मुख्यकर्त्तव्य है,

७-रिषभदेवसें लेकर महावीरतीर्थकरतक चौइसहुवे-इन्होंके सबशिष्य कितने हुवे इनकी गणना किइजायतो लखहांतक पहुंचती है, लेकिन! हां! जिन्होंकों गणधरपदवी प्राप्तहुइथी-वें-गिनतीमें (१४५२) होते है, महावीरतीर्थकरके बडेशिष्य ग्यारह थे, जितनेचक्रवर्ती और-वासुदेव इसलेखमें लिखआये सब जैनधर्मकों माननेवाले थे, महावीरतीर्थकरके वख्तमें और उनकेवाद जो जो बडे बडे जैनीराजे हुवे (जैनबोधके भेदमें)-लिखआये, इ-

सीकितावके प्रथमतरंगमें पृष्ठ (१६९) पर देखलो, बीतभयपत्त-
ननगरका राजा उदयन-कौशांबी नगरीकाराजा उदयन-विशां-
लानगरीका राजा-चेटक-नवमल्लिक-और-नवलच्छिक-अठाराह
राजे-और बलमित्र-भानुमित्र-नरवाहन-तथा-कुमारपाल-वगेरा
कइजैनीराजेहुवे कहांतक लिखे?—

८-महावीरतीर्थकरके जो ग्यारहबडेशिष्यहुवे उनमेसे पांचमे
सुधर्मास्वामीके-शिष्य-जंबूस्वामी हुवे, इन्होंने करोडे रूपये छोड-
कर तपस्या इखितयार किइ, इनके चैले प्रभवस्वामी हुवे-इनके
बाद शय्यभवसूरि-जोकि-पहिले-वेदपाठीब्राह्मण थे, वेदोंको अ-
सत्य समझकर छोडदिये, इनकेबाद यशोभद्रसूरि हुवे, फिर संभू-
तिविजय-भद्रवाहु-स्थूलभद्र-आर्यमहागिरि-आर्यसुहस्ती-सुस्थित-
सुप्रतिवद्ध-महावीरतीर्थकरके निर्वाणवाद (३७६) पीछे-श्यामा-
चार्य-जिन्होंने-प्रज्ञापनासूत्र रचा, इंद्रदिन्न-दिन्नसूरि-सिंहगिरि-
वज्रस्वामी-जिन्होंने बौधोंको दुसरीदफे परास्तकिये, (प्रथम-म-
हावीरतीर्थकरने किये थे,) महावीर निर्वाणके पीछे (५८४) वर्ष-
बाद वज्रस्वामी-देहांत हुवे, सिद्धसेन दिवाकर-जोकि-पहिले कु-
मुदचंद्र नामसे ब्राह्मण थे, पीछेसे जैनधर्मके साधु बने,—

९-महावीर निर्वाणकेबाद (६८४) वर्ष पीछे गंधहस्ती आ-
चार्य हुवे, महावीरसे (९८०) वर्षबाद देवर्द्धिगणिकमाश्रवणने-
वल्लभीनगरीमें (५००) जैनाचार्योंको इकट्ठे करके कंठाग्र ज्ञान
था-पुस्तकाकार लिखा. यह नही जाननाकि-इनसेपहिले कोइ
जैनपुस्तक लिखानही जाताथा, बल्किन्! बहुतसाज्ञान कंठाग्र र-
खते थे, जब अतिशयज्ञानी कमहोते गये लिखनेकी रसम ज्यादा

होतीगइ, उमास्वाति-ये-देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणसें पहिलेहुवे है, इ-
नको दिगंबरलोगभी मानते है, लेकिन! उनके बनाये हुवे ग्रंथोंको
पुरीतौरसें नही मानते, महावीरसें (९९३) वर्ष पीछे-कालिका-
चार्य हुवे-जिन्होंने-सबआचार्योंकी-संममतिसें-भाद्रपदशुक्ल च-
तुर्थीके रौज संवत्सरीकपर्व-स्थापन किया, महावीरसें (१००८)
वर्ष पीछे साधुलोग पौषधशालामें निवासकरने लगे, पूर्वकालमें व-
नखंड-या-उद्यानमें रहाकरते थे, ज्यूंज्यूं जमाना कमजोर सब-
कार्य कमजोर होतेगये, महावीर निर्वाणसें (१०५५) वर्षबाद ह-
रिभद्रसूरि हुवे, इन्होंने (१४४४) ग्रंथोंकी रचना किइ, महावीर
निर्वाणसें (११५०) वर्ष पीछे जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण हुवे, जि-
न्होंने बहुतसें शास्त्रोंपर भाष्य बनाइ, आचार्य गल्लवादी-जिन्होंने
वल्लभीनगरीमें बौधोंको परास्त किये.

१०-संवत् (७००) में-शैलंकाचार्य हुवे, जिनोंने आचारांग
और सूत्रकृतांगपर-टीका-बनाइ, संवत् (१०९६) में-वादिवेताल
शांतिसूरि स्वर्गवास हुवे, संवत् (११३५) में-अभयदेवसूरि-देहांत
हुवे-जिनोंने स्थानांगवगेरा नवअंगशास्त्रोंपर-टीका बनाइ, संवत्
(१२२६) में-वादिदेवसूरि-देहांत हुवे-जिनोंने चोरासी हजार
श्लोकप्रमाण-स्याद्वादरत्नाकर-ग्रंथ बनाया, जो अबपूरा नहीमि-
लता, संवत् (१२२९) में-हेमाचार्य-हुवे, जिनोंने राजाकुमारपा-
लकों प्रतिबोध दिया, और-बहुतसे ग्रंथ रचे, आचार्य मल्लया-
गिरि-जिनोंने कइ शास्त्रोंपर टीका बनाइ, मानतुंगसूरि-जिनोंने
भक्तामरस्तोत्र बनाया, मानदेवसूरि-जिनोंने लघुशांतिको रचना
किइ, देवसूरि-नेमिचंद्रसूरि-मुनिचंद्रसूरि-अजितदेवसूरि-सोमप्र-

भाचार्य-जिनोंने-सिंधुर प्रकरस्तव वगेरा स्तोत्र बनाये, जगच्चंद्र-सूरि-जिनोंने तपगच्छविरुद पाया, देवेंद्रसूरि-जिनोंने कर्मग्रंथकी रचना किइ, धर्मघोष-रत्नशेखरसूरि-जिनोंने-श्राद्धविधिग्रंथ रचा,

११-हेमविमलसूरि-जिनोंने त्रैलोक्यप्रकाश ग्रंथ-बनाया, आनंदविमलसूरि-विजयदानसूरि, हीरविजयसूरि-जिन्होंने अकबर बाहशाहको धर्मसुनाकर-जीव दयाके फुरमानपत्र बनवाये, विजयसेनसूरि-विजयसिंहसूरि-गणिसत्यविजयजी-उपाध्याय यशोविजयजी-तथा-विनयविजयजी-इन्होंने कइग्रंथरचे, गणिकर्पूरविजयजी-गणिकक्षमाविजयजी-गणि जिनविजयजी गणित्तमविजयजी-गणि पद्मविजयजी-गणिरूपविजयजी-गणिकीर्त्तिविजयजी-गणिकस्तुरविजयजी गणिमणिविजयजी-गणिवृद्धिविजयजी-जिनोकाबूसरानाम-बुटेरायजी-मशहूर है, ये पंजाबके रहनेवाले थे, इन्होंने पंजाबमें हुंढिये मतको खंडन किया, और गुजरातदेशमें आनकर सनातन जैनध्वेतांवर आम्नायकी दीक्षा इखितयार किइ,

१२-इनकेबड़े चले-गणिमुक्तिविजयजी हुवे, येभी पंजाबके रहनेवाले थे, इन्होंने गुजरात काठियावाड-वगेरा देशोंमें विचरकर धर्मको अच्छा उत्तेजन दिया, इनके गुरुभ्राता-न्यायांभोनिधि आत्मारामजी (आनंदविजयजी) हुवे, इन्होंने पंजाबदेशसे हुंढिये मजहबको विल्कुल उठादिया. गुजरात-पंजाब-मारवाड-और-राजपुतानेमें फिरकर हजारांहशख्शोंको धर्ममें पाबंद किये, इनकी प्रख्याती किसीसे छीपी हुइ नही, चाहे जिसदेशमें जाकर तलाश करो तारीफ मुनोगे, वर्त्तमानमें जोजो जैनके साधु लोग है उनमें-ये सबसे अधिकज्ञानी थे. यह आमलोग मंजूर रखते हैं,—

१३-मैं-इन्होंका एक हस्तदीक्षितशिष्य हूं, संवत् (१९३२) के असेंमें उक्त महाराज जब भावनगर पधारे-मैं-उनके व्याख्यान सुननेकों जाया करता था, उस वखतसेंही मुजकों उनका उपदेश अकसीर होकर लगा, बाद संवत् (१९३६) वैशाख सुदी (१०) मी-गुरुवार-वखतदसवजे-मुकाम-मलेरकोट-जीलालुधिहाना पंजावमें-इन्हीके पास मैंने दीक्षा लिइ, मेरा खास बतन-शहर भावनगर-जिले काठियावाड-गुजरात है, ज्ञाति विशाओशवाल पिताका नाम-मानकचंद्र माताका नाम-रलियातकवर था, जन्म संवत् (१९१७) का-उन्नीस वर्षकी उमरमें दीक्षा इखितयार किइ, मुजे-जो कुच्छ विद्याहासिल हुइ उक्त महाराजकी बदौलत स-मझे, मैंने जो कुच्छ इस ग्रंथमें दर्जकिया बहुत शास्त्रसें चुना है, झूठधर्मका उपदेश करना इसके समान कोइ पाप नहीं, और सच्चेधर्मका उपदेशक होना इसकी बराबर कोइ धर्म नहीं, मतम-तांतरके बारेमें मुजे बहुत कुच्छ लिखना था-लेकिन ! ग्रंथ बढ गया इससें कलम बंद करता हूं,—

१४-मैं-पेस्तर अखबारोंमें जाहिर कर चूकाहूँकि-जिसमहा-शयकों-धर्म संबंधी किसीतरहके सुवाल करना हो बजरीये अख-बारके मुजकों खबर दे, मैंभी-जवाब उसका छापेहीमें इरसाल करुंगा, सबबकि-इसजमानमें बहुतसे लोग जवाबपाकरभी बदल जाते है इसलिये यही मुम्किन समझा गया. अगर कोइ शख्स खबर सवाल करना चाहे तों दर्मियान एक मोतबीर शख्सके काररवाइ किइ जायगी-और-परदेशसें पुछना चाहे तो अखबार-द्वारा जवाब दिया जायगा, किताब मानवधर्म सांहिता-(शांतसु-

धानिधि) - पूर्ण-कर्ता हूं, मैं-पूर्णज्ञानी नहीं कि-बगैर चूकके लिख गया हूं, भूल मनुष्यमात्रके पीछे लगी हुई है, जानकार मुझे क्षमा करे, और जबतक मेरी जींदगी दुनियामें मौजूद रहे मेरे पास लिख भेजे-याते-दूसरी आवृत्तिमें दुरस्त किया जाय.

१५-जीव एकीला आया-एकीला जायगा, मनुष्य जन्म सच्चेधर्मपर श्रद्धा-दिलमें रहें-खानपानका आराम-और-देवगुरुकी सेवा-इतनी चीजें बडेही पुन्यके तात्त्विक है, मनुष्य जन्म पाकर जो लोग धर्म नहीं करते उनकी बडी भूले समझो-धनदौलत और सुखसंपदा धर्मरूप कल्पवृक्षकेही फल है, धर्मसेही आनंद मिला-और-मिलेगा, जिनको परलोकका रास्ता साफकरना हो संसारके बंधनसे-छुटकारा पाना हो-और-आत्मिकज्ञान हासिल करना हो-धर्म करे, इस ग्रंथमें हरजगह यहीनतीजा दिखलाया है, इसके पढनेसे आमलोगोंको फायदा हासिल हो-

(संवत् १९५५)-

हस्ताक्षर-मुनि-शांतिविजय,-

इतिश्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-मुनि-
शांतिविजयजीमहाराज-विरचित-मानवधर्मसंहिता
-वा-शांतसुधानिधिग्रंथका-चतुर्थ तरंग-समाप्त,-

[सिद्धार्थराजाने महावीरस्वामीके जन्म होनेपर जो कुछ खुशी मनाई उसका बयान.]

[हरिगीत छंद.]

श्रीवर्द्धमानजिनेंद्रजन्में-हर्षबाढों अतिमही,
सिद्धार्थराजाके भुवनमें-न्यात सब भेली भइ,
परिवारके सब पुरुषनारी-मुदितमन तहां आइयां,
सिद्धार्थराजा स्वतः उनकों-थाल भरभर लाइयां, १,
सब न्यात मिल भोजनकरे-आनंदभर धन ते घडी,
सिद्धार्थराजा त्रिशलारानी-खुद परोंसें तहां खडी,
शुभनालियरकी गिरी केंला-दाख नारंगी भली,
अंगूर जामन जामफल-दाडम अलूचा आमली, २,
लोकाट आम अनार आडु-सेव सरदा फालसां,
केमर कसेरु नासपाती-बीह कमरस कलरसा,
नींबु खजूर अंजीर खिन्नी-सुरस पौंढा आमला,
चकतर सरीफा बौर आदिक-हरितमेंवा मन रला, ३,
बादाम पिस्ता दाख खारक-बेल चारोली मली,
अखरोट खुरमा खोपरा-चिलंगोजियां मूंगीफली,
इत्यादि बहुविध खुशकेमेवा-अवसुंनो भोजन सही,
अतिमिष्टमोतीचूर लाडू-भगदमोदक मूंगही, ४,

मोदकमनोहरे सिंहकेशरी-सरस नुक्ती पाकके,
 तिलके सकरके केल मोदक-आम्ररस अरु दाखके,
 बर्फी जलेबी सूत्रफेणी-शकरपारा इमरती,
 पेढा गिंदोडा लालजामन-कलाकंद भला अति,
 खजला सुहाल खजूर मठडी-बालूसाही रेवडी,
 लौजात मोहनभोग सीरा-ल्हापसी मोठी बडी,
 पूरी कचौरी दालबाटी-बेंढवी खस्ता लुची,
 मांडें परोंटे दालचावल-खरिपूवा मनरुची, ६,
 चीले पकोडे गुलगुले-माखन मलीदा चूरमा,
 मीठी कढी अरु चर्चरी-इत्यादि भोजन सब जमा,
 पापड चणेकीदाल भुंजी-सेव खटरस पापरी,
 बहुविधचवीणा दहीं ताजी-नमक जीरासें भरी, ७,
 परवाल चौले सुहजने-सांगरवगेराकी फली,
 मटरा करेला वाकली-कचरो कचारेकी कली,
 खीरा करोंदा आल कौला-खेलरा ककडी तुरी,
 मिरची हरी मेंथी खरी-भिंडी वगेरा बहुहरी, ८,
 नींबूके रसयुत बहुपदारथ-वडे नानादालके,
 चौले चनेकी मूंगकी-पीठीके नानाचालके,
 कर्पूर अगर इलायची-इत्यादि मिश्रितजल सरस,
 मिश्रीमें मिश्रितकेवडा-अरु दुग्ध उपजे मनहरस, ९,
 तंबोल पानइलायची-बादाममिश्रित छालिया,
 केशर जवत्री जायफल-कर्पूर लवंग कथा लिया,
 भर बर्क सोनेमें लपेटे-हाथ सबकेमें दिया,

चंपा चमेली जुही मेंहदी-केवडा नीका लिया, १०,
गैदा गुलाब सिंगार मरवा-मदनसर शुभ मोगरा,
नानाप्रकार सुगंध ले-सन्मान बहुजनका करा,
सेले दुपट्टे रेशमी-पघडी कलावतूनकी,
जरके बनाये वस्त्र बहु-और-कोर साची ऊनकी, ११,
सब नारियोंको जरी साडी-कांचली अरु औढना,
बहुमूल्य वस्त्रदिये-किया सत्कार आदर बहुघना,
सिद्धार्थनृप महावीरस्वामीके-पिता जग यश लिया,
शांतिविजयकहे विवुध पुरजन-सबनको राजी किया, १२,

[संगीतशास्त्रकी बातें,]

जितने दुनियादार पुरुष-या-स्त्री-है सब-स्वाभाविक तौरसें जब बातचित-या-भाषण करते है तो-प्रथम सप्तकके भीतरही भीतरतक रहते है, कारण पाकर दूसरी-या-तीसरी सप्तकतक जाय-तो-जाय, लेकिन ! स्वाभाविक तौरसें तो प्रथमहीतक रहेगें, गवैये लोग-जोकि-बखूबी खुले हुवे गमकदार अवाजसें गाकर सहीसही स्वर लगाते है-जिनकी खरज-शुद्ध बनी रहती है-वै-अढाई सप्तकतक पहुच सकते है, जो लोग कानके हाथल-गाकर टेडी गर्दन करके नाकका स्वर लगाते है और मनमें समझते है हम तीन सप्तकसेंभी ज्यादा पहुंच गये-यह समझना गायन कलाकी विद्यासें बखिलाफ-है, शुद्ध आलाप उसको कहते है जैसा स्वाभाविक अंग उसका हो-वैसाही स्वरूप गाते वरुत बना रहे, सो-यह-काम-अढाई सप्तकतक होगा, ज्यादातक नही.

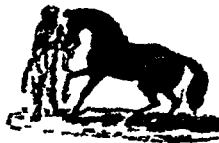
(कंठ साफ होनेकी तरकीब.)

(दोहा.) ~~कु~~मीर्च कुलिंजन बावची-वच पीपर अरु पान,
एक पहर मुखमें धरो-कंठ कोकीला जान, १,

[श्रीयुत-सौजाग्यचंद्रमुणोतका बनायाहुवा
गुरुभक्तिपर-पद,-जीजोंटीकी ठुमरी,]

(जलभरन जात यमुनाकेघाट-बड़े ठाठसें आवत
कामनीयां जल,-)-(इसचालपर,)-

विद्यासागर-न्यायरत्नश्री-शांतिविजय महाराज मुनि है, वि,
मिथ्यामतज्वर दूर करनको-बानी अमृतरसमधुर ध्वनि है, वि, १
भविजनके हितकारक तारक-तुम कीर्त्ति विख्यात सुनिहै, वि, २
दक्षपुरनगरमध्य चौमासो-भाग्य भलो और शुभकरनीहै, वि, ३
नरनारी मिल चरनकमलयुग-सेवो ये गुरु ज्ञानगुनीहै, वि, ४
सोभाचंदवंदित प्रमुदितचित्त-मेरे तो अब आप धनीहै, वि, ५,



[धर्म-अर्थ-काम-और-मोक्ष.]

(धर्म.)

१-जानना चाहिये धर्म-दौलतसँभी बढकर है, दोस्तभी अगर दुश्मन बन जायतो-बननेदो, पक्का दोस्त तुमारा धर्म है, जिम जगह अपना धर्म-भ्रष्ट-होता हो वहा रहना कोइ जरूरत नही दुनियादार पापका फल प्रत्यक्ष देख रहे है ! लेकिन ! नमालूम फिरभी धर्म पगनिगाह क्यौं नही बढाते ?-जिस बातका घमड लाते हो-जरूर उससे नीचा देखना पडता है-लेकिन ! नमालूम ! फिरभी उसको तुम क्यौं नही छोडते ?-संसाररूप-के देखानेसे-छुटनेका रास्ता धर्म है जानतेहुवेभी उसतर्फ कदम क्यौं नही बढाते ?-खूबयाद रखो ! नाजुक शरीर-लंबी उमर-उच्छी औरत-औरतको अच्छा पुरुष-हुकमहोदा-दौलत-और विद्या-पूर्वकृत धर्मसेही-पाये हो, स्वर्ग और मोक्षभी धर्मसेही मिलेगा-ऐसे मिलनसार दोस्तको-क्यौं भूलेहुवे हो ?

२-काया अनित्य है-सरना नही संसारमें इस जीवको किसीका-तरहतरहकी वेदना जीव-भोगता चला आया-अपशोष है अब तक-इसे ज्ञान नही हुवा, अकेला आया-और-अकेला ही जायगा-कोइ साहायक-शिवाय धर्मके-न-वनेगा, देखलो ! राजेलोंगोंको हजागंह नोकर होतेहुवेभी मरना नजीक आनेपर कोइ साहायक नही वनता, धन-योवन-और-उमरका भरसानही-पूर्वज लोग-जितने मर गये अगर एकएकभी उनमेंमें वने रहते-तो-उनके रहनेको जगहतक न मिलती, संसारका यही स्वरूप है-जो-आया-

वह-चला जायगा, धर्मका बोधपाना जीवकों महादुर्लभसें दुर्लभहै, खूब ! यादरखो !! यहशरीर मिट्टाकापुतला और-सारवस्तु-धर्म है-शास्त्रोंमें जो-विधिवाद-चरितानुवाद-और-यथास्थितवादका बयानहै पुरीतौरसें समझो. उमरभरमें बनसकेतो नवलाख नमस्कार मंत्र पढो, किये हुवे पापोंको किसी ज्ञानीगुरुके सामने बयान करके प्रायच्छित लो, नैकीसें-हासिल किई हुई दौलतसें अगर बनसके तो जिनमंदिर बनवाओ, इतनी ताकत नहोतो एक जिन-प्रतिमा बनवाकर तीर्थकी जगह-या-अपने शहरके जिनमंदिरमें स्थापित करो, पाठशाला-या-पुस्तकालयकी वृद्धिहो एसा प्रयत्न करो, नष्टहोतेहुवे अमूल्य शास्त्रोंका छापेद्वारा-या-लेखनीके जरीये जीर्णोद्धारकरके रक्षण करो, पैदाशमेसें अर्द्धांश चतुर्थांश-अष्टमांश षोडशांश-द्रव्य-धर्ममें लगाओ, बनसकेतो संसार छोडकर दोक्षा लो, और परलोकका-रास्ता साफ करो,

(अर्थ.)

३-दुनियादारलोग-धनकों-प्राणोंसेंभी-अधिकप्यारा समझते है-लेकिन ! ज्ञानोलोग-इसे-दुर्गतिका द्वार-दुखका कारण-और-पापका मूल-फरमाते है, कितनेक कहते है धनसें धर्मभी-तो-बन सकेगा, लेकिन ! अमलपुछो-तो-भावधर्म-मनसेंही-बनेगा-धनसें नही. हां ! दुनियादारोंको धनकी-कुच्छपरवाह जरूर है, इसलिये उसका बयानदेना यहां लाजिम आया,-पहिले इतनायाद रखलोकि-जहांतुमको कुच्छ पैदाश-नहोतीहो-वहांरहना कोइजरूरतनही दुश्मन-अधर्मी-और-हिंसककी पडोशमें रहना हरघरत बुराहै, दुसरेके

घर-रूपये-व्याजुधरना-उससेतो दुमरेकी चीज अपनेघर-रखकर
-उसपर धनदेना निहायतउमदाहै,-अकलमंदकों एकशहरके कौं-
नेमें पड़ेरहना अच्छानही,देशाटनकरनेसें इज्जत मिलेगी,लेकिन !
खानपानकी सामग्री-और-खर्चा-पासरखकर जाना यातेकिसीसें
लाचारी करना-न-पड़े,-

४—जिसचीजकों खरीदना चाहो-देखभालकर हाथमें लो-
और-पीछें दाम दो, दुनिया-दगलबाजोंकी सरायहै, घर-हाट-
कोट-किला-पुल-धर्मशाला-या-देवमंदिर बनवाना शुरू करो-तो-
मगसीर-फाल्गुन-वैशाख-या-श्रावणमहिनेमें-रोहिणी-मृगशिरा-
पुष्व हस्त-चित्रा-स्वाति-विशाखा-अनुराधा-ज्येष्ठा-उत्तराषाढा-
शततारका-उत्तराभाद्रपद-और-रेवतीनक्षत्रके रौज-जब-अपना
चंद्रस्वर चलताहो-नींव-डालो,प्रथमइंट-अपने-बायेहाथसें रखो,-
मकान उमदावनेगा-और-उममें रहनेवाले सुखचैनसें रहेगें, विना
चंद्रस्वर नींवडालोगे-या-उममें रहने जाओगे-तकलीफ उठाआ-
गे,-जिसदिशातर्फ घरका दरवजा हो-वही-उसकी अपेक्षा पूर्व-
दिशा जानना, सूर्योदयकी पूर्वादिशा-यहां-नहीलेना, दरवजेकी
अपेक्षा जोपूर्वदिशा कहचूके उसीतर्फ खजाना रखनेका मकान
बनाना चाहिये, अग्निकौनमें रसोइघर दखनतर्फ शयनघर-नैरु-
त्यकौनमें शस्त्रशाला-पश्चिमदिशातर्फ भोजनजिमनेका स्थान-वा-
यव्यकौनमें अनाजका संग्रह-उत्तरमें पानीरखनेकी जगह-
-और-इशानकौनमें देवमंदिर बनानाचाहिये, जिसघरमें पहिले-
चौथेपहरकों छोडकर दूसरे तीसरे पहरमें वृक्षकी-या-देवमंदिरकी
ध्वजाको छाया पडतीहो अच्छानही,-जिसघरके दरवजेके पास
जिनमंदिरकी पीठ आतीहो-वहभी ठीकनही, रहनेवालोंकों तक-

लीफ रहेगी, दुश्मनभी घर आवे तो उसका मानरखना और पान बीड़ी दानान्याय है, -तुमको कोइकार्य किसीसे कराना है और उससे वह इनकारहो-तो-अन्याक्ति करके कहो, न-मानेतो चूपरहो, जो-राजोरी कोइकार्य नही बनता, जो कार्य तुमसे न-होसके उसका प्रथममेंहो ऐमा जवाब देदियाकरो, जूठादिजासा देना फिजूल है. जिसकेशाथ तुमारा स्नेह है-उसकेसामने हरहमेश विरोधकीबाते मतकरो, सच्चसच्च और प्रेमयुक्त कहनाहोसोकहो;

(काम.)

५—स्त्री-पुरुषकी मोहबन छोपीनहीरहती, जबजब देखेगे प्रेम जाहिरहोगा, वारवार नेत्रमिलाकर स्थिरदृष्टिमें देखना इमीका नाम प्रेम है, जहां स्त्रीपुरुष-संभोग करतेहो-या-बिलकुलनंगे बैठेहो-उसवखत उनकोतर्फ देखनानही चाहिये, बिलकुलनंगेहोना बेवकु-फोंका काम है, एकवख तो सदैव पहने रहना चाहिये, किसी स्त्रीने तुमसे प्रेमवचन कहेहो-किसीबातका ओलाहना दियाहो-नेत्रमिलाये-या-रातिक्रीडा किइहो-उसवातको किसीकेसामने मत कहो, किसीका पर्दा खोलना अच्छोवातनही, औरतकोभी मुना-सिव आया किसीमर्दकी बात जो अपनेशाथ गुजरीहो-उसरेके सामनेनकहे, गुरुकेसामने प्रायछितलेतेवखत कहना बुराइनही, गुरुभी उसवातको जाहिर नकरे ऐमान्याय है, जिस औरतके सामने तुमने देखा और उसने मुंह फेरलिया-स्पर्शकरनेसे नाराज हुइ उससे प्रेमवांछना कोइ फायदा नही. दूररहनेसे-या-दिनरात पास बैठारखनेसे स्त्रीके शाथ प्रेमटूटजाता है, पचासवर्षका-मर्द-

और-सोलहवर्षकी-औरत-पंतान उत्पात्तिके लाइक-हुवे कहेजा-यगं, आनकल-जो-विचित्रता देखतेहो-जमानेकी खूबीहे,

६-गर्मीयोंके दिनोंमें जितना ज्यादाकामभोग सेवोगे तक-लीफ लठाओगे, असलमें मृतसर्पको जगानाही बुराकहा, ज्ञानी-लोगोंका फरमानाहै कि-गर्मीयोंकी मौसिममें पनरांहरोजके बाद कामभोग सेवनेवाला सुखी रहेगा, चौमासेमें तीनदिनके बाद-और-ठंडके दिनोंमें इच्छानुसार कामभोग सेवनेवालाभी-ज्यादे तकलीफ-नलठायगा, लेकिन ! इसमें शरीरको तकलीफ पहुंचा कर मुखमानना-शिवाय इसके-और-कोइवात हासिल नहीहोस-कती. क्याकहाजाय ! गृहस्थलोग इमकोविलकुलछोड-नही-सकते -नहांतक-कप-हो-अच्छाहै, -शयनकरतेवख्त इष्टदेवका स्मरणकरके सोनाचाहिये, -जिसको बरेबुरे स्वप्नआतेहो-नींदमें खौफलगता हो-उपसर्गहरस्तोत्र-तीनदफे पढकरसोयाकरे, रात्रीको बहुतजा-गना-या-लिखना अच्छानही, आरामकरनाही ठीकहोताहै-याते-खायाहुवा भोजन अच्छीतरह पचजाय,

(मोक्ष.)

७-मोक्षनाम मुक्तिकाहै, देवगुरुधर्म-मोक्षमाधनके निमित्त कारण है, इसलिये देव-और-देवमंदिरका-कुच्छबयान सुनिये ! जो सबलोगोंको उपकारी है, शिवाय अरिहंतके-औरोंमें देवके लक्षण सबुतनहीहोते, अरिहंतकहो-या-जिन-एकहीबातहै, जिनेन्द्रदेव जब-उपकारी सबुत हुवे-तो उनकी मूर्ति-और-मंदिर दु-

नियाकों अच्छेभाव पैदाहोनेके कारण क्यों नकहे जायगे !-जरूर कहे जायगे, वस ! सिद्धहुवाकि-उनकीमूर्त्ति-और मंदिर आमलो-गोंकों उपकारकहै, इसलिये पहिले मंदिरका बर्नन सुनिये ! जिन मंदिर वहांपर बनानाचाहिये जहांपर बीजडालनेसें औरजगहकी अपेक्षा बहुतजल्दी फल उत्पन्न होताहै,-हाडचर्मवगेरा शल्यवाली जमीनपर मंदिर बनायाजायतो बनानेवालोंकों अशुभका-सूचक है, फटीहुइजमीनमें-या-सर्प वगेराके बिलवालीजगहपर-मंदिर बनायाजायतो-बनानेवालेकों-रोग उत्पत्ति-और-महान्कष्ट हो-नेका द्योतकहै, अगर सवालकियाजायकि-जिनेंद्रदेवका मंदिर-और-मूर्त्ति-तो महान् उपकारक फरमाचुके-और उनके बनाने-वाला तकलीफ उठावे-यह-क्यावात ?-(जवाब.)-शास्त्रप्रमाणसें अयुक्त बनावे तो तकलीफका कारणहै-प्रमाणयुक्त बनावे तो कौन कहेगा बुराहै ?

८-जितनाउंचा-मंदिरहो-उतनेघैरेमें-पुख्ताकोट बनवाना चाहिये, विटूनकोट-मंदिरकी रवन्नकही नहीआती, देखिये ! जो जो पुरानेमंदिर बनेहुवे है उनकी चौतर्फ कोट बनाहुवा जरूर मि-लेगा, हरेकमंदिरमें जोजो मूलनायकप्रतिमा होतीहै उसकोअचल रखनाचाहिये-प्रतिष्ठाकेदिनसें चुनावगेरामसालासें जमाखना ठीक है कभी उठानानही, जोलोग हमेशा उठातेहै उनकों पुछनाचाहिये स्थापनाका-मुहूर्त्त तुमाराकहांरहा ? वल्किन् ! उसकाफल विल्कुल नष्टहोगया, जिसके ताल्लुक-या-जिसका-वह-मंदिरहोगा उसके लिये बुरेदिनोंकी निशानी है, असलमें जितनी पापाणकी प्रतिमा-मंदिरमेंहो-मव-चुनेमें-स्थिरकरदेनाचाहिये-याते-खंडितहोनेका-

डर-न-रहे, अगर कहाजायकि-खौफकेवरत मूर्ति उठाना पडे तो-देरहोगी. (जवाब) देरका क्या काम ?-तुर्त उठसकती है,—वाहियाततर्क करनामुनासिवनही, सौचो ! फिर बडीबडीप्रतिमा बनाना क्यों मंजुररखागया, खौफकेवरत दस आदमी उठानेके लिये कहांसें आयगें ? वस्तुतः सब मंदिरमें मूर्ति अचल रखना बहुतठीक बात है,

९.—जिसशख्शके हाथसें प्रतिमाका नख खंडित होजाय-उसको दुश्मनसें तकलीफ होगी, जिससे अंगुली खंडितहोजाय-उसको स्थानभष्टहोनापडेगा, जिससें हाथखंडितहोजाय-उसके कुटुंबका विनाशहोगा, जिसके हाथसें पांवखंडित होजाय-उसकी दौलत चौर लेजायगें-जिसकेहाथसें गर्दनखंडितहोजाय-उसके लिये सबतरह बुराहै, मूलनायकप्रतिमाकी दृष्टि किसतरह रखना उसकाखुलासामुनिये-मूलगर्भद्वारकी जितनी उंचाइ हो-उसके आठ भागकरना-और-उनमेंसें उपरका आठमाभाग-तथा-नीचेके-छ भाग-छोडकर-जो सातमाभाग रहा-उसके फिर सातभाग करना -उससातभागमेंसें नीचेके-छभाग-छोडकर-उपरका जो एकभाग रहा-उसभागमेंठीकमीलाकर मूलनायकप्रतिमाकी दृष्टिरखना चाहिये, इससें ऊंचीनीची रखोगे-तो-अच्छा नहोगा,-उसकेमालिकको दुख बोधकरहेगा.

१०.—जिसमंदिरका जीर्णोद्धार करायाजाय-और-मूलनायक प्रतिमा-न-उठाइगइहो-तो-नवीनस्थापना करानेकी जरूरत नही, अगर अठाइगइहो-तो-फिर प्रतिष्ठामहोच्छव नया करानाहोगा, जिसरंगके पाषाणकी प्रतिमाहो-उसीरंगकी कोइरेखा-उसमेंदि-

खाइदे-तो-कोइहर्जकीवातनही, अगर दूसरेरंगकी रेखाहो-जैसे कालमें सफेद-और-सफेदमें काली-तो-अच्छानही, बनानेवाले-कों दुखका कारणहै, रौद्रस्वरूपवाली प्रतिमाहो तो-जानलो ! बनानेवालेकेलिये बुराहै, अति स्थूलप्रतिमा-कारीगरके विनाशका सूचकहै, खरमोशके उदरसरीखा-उदरवाली-प्रतिमा दुर्भिक्ष-और-विनाशकाकारण जानो, बहुतपतलीप्रतिमाहो-तो-बनानेवालेके लिये बुरेदिनोंकी निशानीहै, नाशिका टेंडीहो-या-मुख-जैसा चाहिये-उसी प्रमाणसें छोटाहो-तो-बनानेवालेकेलिये तकलीफ-का-कारणहै, छोटीकमरवाली हो-तो-स्थापनकरनेवालेका हर सुरत-नाशहोगा, चक्षुगहित हो-तो-बनानेवालेकी आंखोंमें पीडा रहेगी. छोटीजंघावाली-होता-बनानेवालेकों कुटुंबसें वियोगरहेगा. छोटे अंगोपांगवाली-हरसुरत-विगाडका कारणहै, प्रतिमाका-मुख-ऊंचा-नीचा-या-टेडाहों-तो-बनानेवालेकेलिये तरहतरहकी विपत्तिप्राप्तहोनेका कारणहै, बहुतनीचीदृष्टिवालीभी-ठीकनही, इल्लिये प्रतिमा-बनवाना-या-तयार-लेना-तो-जानकारसें-दर-याफतकरके लेनाठीकहै, शास्त्रोक्तप्रमाणसें रहितहोना-अमंगलीक-और-प्रमाणयुक्तहोना मंगलीकका-कारणहै,

३१-पदमासनप्रतिमाका-समचतुरस्र-नापहोना चाहिये. एक घुटनेसें दूसरे घुटनेतक सिधीडोर नापलो, वहीनाप वामेघुटनेसें दाहनेस्कंधतक-औरफिर वहीनाप दाहनेघुटनेसें वामेस्कंधतक-एकसरिखा मिलालो. चौथानाप महाराजके नीचेके स्थलसें मस्तकतक एकसरिखा देखलो, इसीचारनापकानाम समचौरस प्रमाण मानाहै, ऐसी समचौरस और सुंदरप्रतिमा-पूजकपुरुषकों

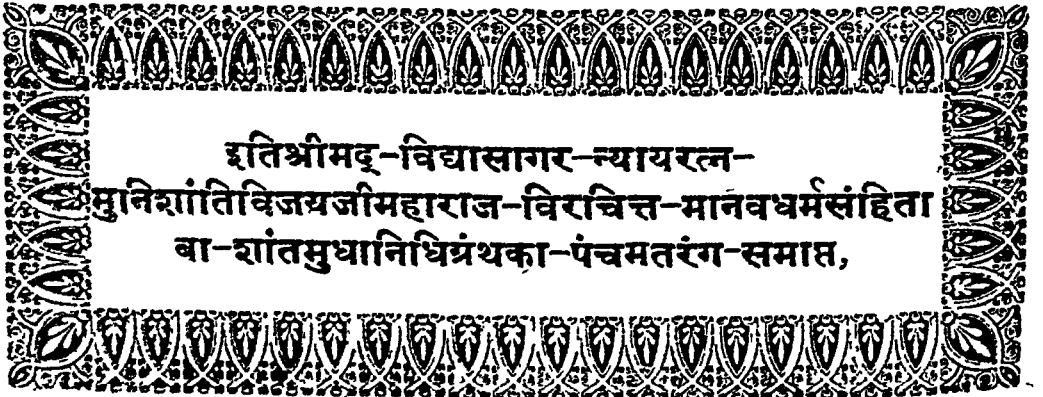
महान्मुखका कारण होगी. प्रतिष्ठाकराते वस्तु जब प्रतिमा बैठाना तब अपना चंद्रस्वर देखकर बैठाना चाहिये, ज्योतिषके मुहुर्त्तसे बढकर स्वरोदयज्ञान है, गणिविज्ञापयन्त्रमें लिखा हुआ है कि-निमित्तज्ञानका फल-लोग-नही जानते, इसलिये ज्योतिषद्वारा दिनशुद्धि देखकर स्वरोदयज्ञानसे कामलेना ठीक है, घरदेरासर अपने रहनेके मकानसे कुछ उंचा होना जरूर है जिससे अपनी हरसुरतसे उन्नति बनी रहे, घरदेरासरमें पाषाण-या-धातुकी-प्रतिमा-रखना ठीक नहीं. धातु-या-रत्नकी रखना अच्छा है, सोभी-ग्यारह अंगुलसे ज्यादा उंची-नहो, बड़ी प्रतिमा-बडे मंदिरमें स्थापन करना मुनासिब है, आजकल-मानक-पंजा-स्फटिक-लाजवर्द-निलम-संगेशम-और-पुखराजबगेराकी-प्रतिमा-देखनेमें आती है, पहिले दिनोंमें सब तरहके रत्नोंकी थी, बडे उत्तमपुरुष होगये जिनोंने संसारकी मूर्च्छा छोडकर धर्ममें ध्यान दिया, कइजगह देखा गया घरदेरासरमें भी-लोग-बड़ीबड़ी रत्नक रखते है, असलमें सारवस्तु-जगत्में धर्मही है, और-सब-मिथ्याप्रपंच आत्माको अहितका देनेवाला जानो.

१२—प्रतिमाके उपर छत्र उसतरकी बसें रखना जो-नासिका-और ललाटके ठीक मध्यभागपर ऊंचे-सिधीलकीरमें रहे, हरेक मंदिरमें घंटानाद होतारहेगा-तो-उसमें रत्नक बनी करेगी, हरेक मंदिरके शिखरपर ध्वजारखना जरूरी बात है, ध्वजारहित मंदिरमें पूजा करनेसे पूजाका फल नही होता, एकदिनभी ध्वजारहित-मंदिर रखना ठीक नहीं, ध्वजा-त्रिखूटी रखना चाहिये, कइलोग-लंबी-और-चौखूटी रखते है, कायदेसे बखिलाफ बात है ध्वजाका यही कायदा समझो कि-त्रिखूटी होना-कइदेवामें बंदरबगेराके कार-

णसें कपडेकीध्वजा-सावत-न-रहसकतीहो-तो-पीतलकी ध्वजा
तयारकरके उसमें अष्टमंगलीक-या-एकीलास्वस्तिक-बनाके लगा
देना चाहिये याते सदा आनंदमंगलरहेगा,

(संवत् १९५५-)

हस्ताकर-मुनि-शांतिविजय,-



इतिश्रीमद्-विद्यासागर-न्यायरत्न-
मुनिशांतिविजयजीमहाराज-विरचित्त-मानवधर्मसंहिता
वा-शांतमुधानिधिग्रंथका-पंचमतरंग-समाप्त,

(गहूली पहली.)

(जगतगुरु जिनवर जयकारी,) इस चालपर,—

- श्रोतारे सुनो गुरुगुणना रागी-जानारे तुम भाग्यदशा जागी,
 श्रोतारे सुनो गुणना रागी, ए देशी,
 जंबूमांरे भरतभलूं सुनिये-देशगुर्जर राजनगर गणिये,
 शोभारे तेह शहरतणी सुनिये-श्रोतारे, १
- शोभेरे जिनमंदिर जयकारी-के-शत उपर अठ निरधारी,
 नमेरे जहां नितनित नरनारी-श्रोतारे, २
- करमदल कापवा बलवंता-साधुरे जिनशासनमें रमता,
 एतारे पांचो इंद्रियने दमता-श्रोतारे, ३
- आव्यारे गुरु देशविदेश फिरी-भूमी राजनगरनी पवित्रकरी,
 श्रोतारे मन शंसय दूर हरी-श्रोतारे, ४
- संवत् ओगणीस चालीस विषे-गुरु गिरुवा एकविस सिष्ये,
 रही राजनगरमें कर्म पीसे-श्रोतारे, ५
- तृष्णा तरुणीथी मन तांणी-किरतिरमणी करी पटराणी,
 जेह उभयलोकमां गुणखाणी-श्रोतारे, ६
- विवेकने मंत्रीपद ताजा-संवेगकुवर किया युवराजा,
 संवर रहे हाजर दरवाजा-श्रोतारे, ७
- आर्जवपटहस्ती महाभारी-विनयरूप घोडा सिणघारी,
 मुनि आतमराज करे भारी-श्रोतारे, ८
- रथ संयमशिलतणा भरिया-सुभेट शमदमथी अलंकरीया,
 मुनिरे समतारसना दरिया-श्रोतारे, ९

के समकितमहेल मनोहारी-संतोषसिंहासन गुणकारी,	
वेठारे जहां मुनिमुद्रा धारी-श्रोतारे,	१०
चामर जहां धर्मशुकल करता-किरातिजशछत्र जहां फिरता,	
कर्यारे जेणे मोहरिपु डरता-श्रोतारे,	११
अलिकद्रव्यराज कर्यु अलगुं-भळुरे भावराजमां मन दलगुं,	
दुरितवन शिघ्र जेथी सलगुं-श्रोतारे,	१२
आतमरूप लक्ष्मी रुडी लेवा-सदा करे शांतिविजय सेवा,	
मीलेरे जेथी मुक्तितणा मंवा-श्रोतारे,	१३

(गहूली दूसरी,)

(भवी तुमे सुणज्योरे-भगवतीमूत्रनी वाणी,) ए देशी,	
भवीतुमे सुणज्योरे-गुरुमुखमधुरी वांणी,	
दिलमां धरज्योरे-समतारसगुणखाणी,	
पजावदेसमां जन्मलिया गुरु-वालपणे व्रत लीधा,	
व्याकरणाळंकार भणीने-दुर्मत दुरे किधा,	भवीतुम. १
नामसमानगुणे शोभंता-सुमतिगुप्तिना धारी,	
आतमनिज्रपद ध्यांनमां लिना-भिना जिनगुणक्यारी,	भवीतुम. २
आगम अनुसारी किरियामां-अप्रमत गुरुराया,	
तृप्णातरुणीथी मन तांणी-संयम तान लगाया,	भवीतुम. ३
गांमनगरपुर देसविदेमे-विचरंता व्रतधारी,	
चदृजनने प्रतिबोध दइने-दुरमति दुर निवारी,	भवीतुम. ४
शंमयजत्रु दुर निवारी-भयथी निर्भय कीधा	
सदमनन्व स्वरूप वतावी-लांचन अमने दीधा,	भवीतुम. ५

कुमत्वादलां दुर निवारो-कीधो हम सुपसाय,
 जलहलदिवडा जिनवाणीना-प्रकटाया गुरुराय, भवीतुम. ६
 ए उपकार तुमारो कहो गुरु-विसार्यो किम जाय,
 स्मर्णकरी उपकारीतणां सहु-गुणगातां दुख जाय, भवीतुम. ७
 ज्ञानवधे ज्ञानीगुणगातां-ज्ञानी गुणथी भरिया,
 शांतिविजयकहे गुरुगुणदरिया-केम तराये तरिया, भवीतुम. ८

(गहूली तीसरी.)

[इसमें महाराजश्री आत्मारामजीका-जीवनचरित-गुंफितहै.]

(साभलजोरे मुनि-संयमरागी,-उपशमश्रेणी चढीयारे,)

ए देवी,

आजनगरमें सुगुरु पधार्या-जिनआगमना दरियारे,
 ज्ञानतरंगे लहेरां लेता-ध्यानपवनथो भरियारे, आजनगरमें, १
 आजकालमां जे जिनआगम-दृष्टिपथमां आवेरे,
 गहनगहन तेहना जे अर्थो-प्रकटकरीने बतावेरे, आजनगरमें, २
 शक्तिनही पण भक्तितणे वश-गुणगावा उलसावुंरे,
 कर्णामृत गुरु चरित सुणावी-आनंद अधिक बढावुंरे, आज० ३
 दक्षिणदिशि जंबूद्वीपमांही-येही भरतमझाररे,
 उत्तरदिशि पंजाबदेस जहां-लहेरा गांव मनोहाररे. आज० ४
 क्षत्रीयवंश गणेशचंदघर-जन्मलिया सुखधामरे,
 रूपदेवी-कुक्षी सुक्तिमां-मुक्ताफल उपमानरे, आज० ५
 लघुवयमां पण लक्षणथी बहु-दीपंता गुरुरायारे,
 संगतथी मिली हुंढकजनने-हुंढकपंथ धरायारे, आज० ६

संवत ओगणीसे दसमांही-उज्वलकार्तिक मासेरे,	
पंचमीने दिवसे लिये दीक्षा-जीवणराम गुरुपासेरे,	आज० ७
ज्ञानभण्या वली देस फिर्या बहु-जुनां शास्त्र विलोकीरे,	
शंसयपडिया गुरुने पुछे-प्रतिमा केम उवेखीरे,	आज० ८
उत्तर न मिला जब गुरुजीने-ज्ञानकला घट जागीरे,	
सुमतासखी घट आन वसी जब-हुंढपंथ दिया त्यागीरे,	आ० ९
धर्मशिरोमणि देसमनोहर-गुर्जरभूमि रसालीरे,	
जहां आवी सुविहितगुरुपासे-मनशंका सहु टालीरे,	आ० १०
परमकर्यो उपकार तुमे बहु-श्रीगुरु आतमरायारे,	
जयवंता वर्तो आभरते-दिनदिन तेज सवायारे,	आ० ११
दुपमकालसमे गुरुजी तुमे-वचनदीवडा दीधारे,	
शांतिविजय कहे जेथी ह्यमारा-विपमकाम पण सिधारे	आ० १२

(गहूली चतुर्थी.)

(इसमेंभी-उक्तमहाराजका जीवनचरित-शेषहै.)

आजनगरमें मुगुरु पधार्या-रत्नत्रयीना धारीरे,	
ज्ञान अपूरवदान दइने-जडता दूर निवारीरे,	आ० १
संवत ओगणीसे वत्तीसे-राजनगर मोझाररे,	
संयमलिया सुविहितगुरुपासे-सोलह शिष्य परिवारर,	आ० २
चरणकरण गुणधार अनुपम-श्रीगुरु आतमरायारे,	
जिनशासन शिगार महामुनि-नत्वरमणनां धामरे.	आ० ३
नयगम भंग प्रमाण कगेने-जीयादिकतुं स्वरूपरे,	
ध्रुव उरूपान नाशर्था गुरुने-जाण्युं निखिल अनुपरे,	आ० ४

जाण्या द्रव्यगुणपर्याय-धर्माधर्म आकाशरे,	
पुद्गलकाल अने वली चेतन-नित्यानित्य प्रकाशरे,	आ० ६
परम कर्यो उपकार तुमे गुरु-दुर्मत दुर नसायारे,	
जयजयकार थयो जिनशासन-आनंद अधिक सवायारे,	आ० ६
जो न होत आ वखत तुमारा-वचन दीवडा रुडारे,	
तो दुषम अंधारी राते-लेत अमे मत कुडारे,	आ० ७
विद्यानी वधती करवामां-जेहना विविध विचाररे,	
ये गुरुना उपकार कहो किम-भूले आ संसाररे,	आ० ८
देस बहु विचरो गुरुराया-क्रोडकरो शुभ कामरे,	
अंतरघटमां शांतिविजय पण राखेछे दढहामरे,	आ० ९

[गहूली पंचमी.]

(भवीतुमे अष्टमीतिथि सेवारे-इसचालपर.)

रहोगुरु राजनगर चोमासुरे-गुणनिधि गुण तुमारा गास्युं-रहोगुरु,	
तुमे रागथी नही रंगाया-नही द्वेषरिपुथी वंधायारे,	
महामोहथी नाही रंगाया-रहोगुरु.	१
धनमाल अने राजधानीरे-महासंकट आकर जानीरे,	
तुमे छोडी दुनिया दिवानी-रहोगुरु.	२
पांच इंद्रो सुभटथी सुरारे-आलसविकथ्याथी दुरारे,	
चार चौर किया चकचुरा-रहोगुरु.	३
ज्ञानदोरीथी मनकपि वांध्युंरे-तीर तत्व रमणतामां साध्युंरे,	
जेथी समकित अदभृत लाध्यु-रहोगुरु.	४

- गुरु विद्यावेलडीये विटायारे-जेनी कल्पतरुसम कायारे,
 एतो समता जलथी सिंचाया-रहोगुरु. ६
- तुमे शास्त्रसुधारस पिधोरे-महामोहरिपु वश किधोरे,
 तुमे अनुभव प्यालो पिधो-रहोगुरु. ६
- तुमे ज्ञानरतनभडाररे-करवा हमपर उपकाररे
 थाज्यो नोधारांना आधार-रहोगुरु. ७
- तुम आणा सदा शिर धरस्युरे-तपनियमविशेषे करस्युरे,
 कहे शांतिविजय अनुसरस्युं-रहोगुरु. ८



